### Printed by

## R. C. Mittra, at the Visvakosha-Press

9, Visvakosha Lane, Bagbazar,

CALCUTTA.

्र — कार्यकार अंग्रिकीर वार — कार्यकार अंग्रिकीर वार — कार्यकार अंग्रिकीर वार — कार्यकार कार्यकार

### To

#### His Excellency

The Right Hon'ble Thomas David Gibson
BARON CARMICHAEL OF
Skirling, G. C. I. E., K. E. M. G., M. A.

## The Tirtha-Bhramana

Written by an illustrious

Bengali of the 19th Century

IS

mos\* respectfully dedicated by the Editor

as a token of his loyal devotion and admifation

for His Excellency's great interest in the cause of the

Bengali Literature.



 ✓বছনাথ সর্বাধিকারী

# তীর্থ-ভ্রমণের সূচীপত্র

| विवद                       | , 2                  |               | পৃষ্ঠা   |
|----------------------------|----------------------|---------------|----------|
| भूथवक …                    | •••;                 | • • •         | 1.       |
| গ্রন্থ-পরিচয় ···          | •••                  | •••           | 1•       |
| ু <b>ভাষার</b> ুপরিচয় ু   | •••                  | •••           | ৩৸/•     |
| গ্রন্থকারের কুল-পরিচয়     | •••                  | •••           | 8, 1     |
| গ্রন্থকারের পরিচয়         |                      | •••           |          |
| রোজ-নামচার পরিচয়          |                      |               | eno/•    |
| গ্ৰন্থের হতনা              | •••                  | •••           | >        |
| ভীর্থ-ধাতার পূর্ববটনা 🧸    | •••                  |               | 9        |
| তীর্থবাত্রা রাধানগর হইতে   | ্রাধাব <b>লভপু</b> র | •••           | ৬-১•     |
| রাধাবলভপুর হইতে বাল্       | ì                    | •••           | >•-><    |
| বাল্গীর লক্ষীনাশ্বায়ণ এবং | । তাঁহার তেলি-।      | স্বাইত ং      | 3        |
| পূলারি-ব্রাহ্মণগণের        | আচরণ                 |               | <b>ર</b> |
| সোণামুখীর কথা              | •••                  | •••           | 20       |
| অপ্তাল-চটীর পরিচয়         | <b>:···</b>          |               | >6       |
| মধুবনের কথা                | · ·                  | •••           | 74       |
| নির্ধামতপুরের কথা          | •••                  | •••           | >9       |
| মেঁটেসিঁহুরে পাহাড় ও রা   | লাহরিশচক্রের ব       | <u>টার্ছি</u> | ۶ کاد    |
| গোবিস্পুর ও তঁৎকালীন       | মগধের সীমা           | •••           | 44       |
| জরাসন্ধ্র ও পরেশনার        | পাহাড়ের কথা         | •••           | ₹•       |
| বোধগন্ন : •>•              | •••                  | •••           | ₹8       |

| विषय                     |                      |            | পৃষ্ঠা           |
|--------------------------|----------------------|------------|------------------|
| গয়াধামের বিবরণ          |                      | •••        | • २৫             |
| গয়া হইতে পড়োড়ি        |                      |            | ৩৮               |
| সরস্রাম বা সাপেয়াুমের   | ক পা                 |            | ৫৯               |
| শিবসাগর ইইতে কাশী প      | ৰ্য্যস্ক পথের        | পরিচয়     | ৹৯-৾৪∙           |
| কাশীর বিবরণ              | •••                  |            | 83               |
| রাকার-তলাও হইতে প্রয়া   | গ পথ্যস খে           | থের পরিচয় | 86:89            |
| প্রয়াগের বিবরণ          | •••                  | •          | 89               |
| প্রুয়াগ হইতে কানপুর প্র | ্যন্ত পথের           | পুরিচয় :  | 87               |
| কানপুরের বিবুরণ          | •:-                  |            | 68               |
| বিঠুর "                  | · ,                  | *          | ¢ •              |
| কারকুজ ,,                | •                    |            | ¢>               |
| न(क्वी ,,                | • • •                |            | ¢۶               |
| অযোধ্যা ,,               | •*                   | •          | 60               |
| মিধিলা ও নৈমিষারণ্য      | •••                  | •          | ee               |
| সেকেন্দরার বিবরণ         |                      | 1111       | ٠٠، و ه          |
| সেকেন্দরা হইতে মধুরাণ    | <b>ৰ্যান্ত পথে</b> ঃ | পরিচয় .   | (b-12            |
| ব্ৰজ্পুমের বলদেবের বিব   | রণ 👯                 | ··· .      | 63               |
| পুরাতন গোকুল ও নৃতন      | গোকুলৈর              | বিবরণ      | ٠.               |
| মপুরার বর্ণনা            | •••                  |            | <b>6</b> 3,52.₩8 |
| শ্রীবৃন্দবনের বিবরণ      | •••                  | £          | P8-705           |
| ব্ৰঞ্জমির চারি বটের পা   | ब्रेहब               | ·          | <b>5</b> ∶₹      |
| बक्ज्मित ठाति त्रत्वृत श | রিচয়                |            | > 8              |
| শ্রীগোরাকের পদ-চিহ্ন ও   | ্ষ <b>ভূগো</b> সা    | শীর পরিচয় | >>4              |

| विषद्र                           |                  | পৃষ্ঠা         |
|----------------------------------|------------------|----------------|
| খানস্করকীউ ও খানানকের            | পরিচয় …         | > 2 €          |
| শ্ৰীগোকুলানন্দ ও লোকনাথ গে       | াস্বাদীর পরিচয়  | >0.            |
| শীরাধাবল্লভনীর পরিচয় 🕠          | ;                | <b>&gt;</b> 08 |
| বৃন্দাবন হইতে জয়পুর পর্যাস্ত    | প্রথর পরিচর      | >06->8>        |
| अञ्चर्दत्र विवत्र •              |                  | >83            |
| জন্মপুর হইতে কৃষ্ণগড় পর্যান্ত গ | প্ৰের পক্সিচয়   | >65            |
| কৃষ্ণগড় রাজ্যের বিবরণ           |                  | >0?            |
| কৃষ্ণগড় হইতে পুন্ধর পর্যাস্ত প  | পর পরিচয় ···    | >64            |
| পুক্ষরের বিবরণ                   |                  | >64            |
| আলমীর্টের বিবরণ •                |                  | >46            |
| আক্ষীর হইতে পুনরায় মধুরাগ       | ানন ও পথের বৃত্ত | ান্ত ১৯৮-১৮০   |
| পড়াসনি হইতে বগড়ু প্রামে ব      | মাসিবার কালে গ   | <b>শ</b> ৰে    |
| অনর্থক অর্থদত্তের বিবরণ          | 1                | <i>&gt;⊎≥</i>  |
| শোঁক গ্রামের বিবরণ               |                  | 592            |
| বুন্দাবনেয় ব্ভাস্ত •            |                  | 593            |
| <b>ভাষত্নর-বিগ্রহের পরিচয়</b>   |                  | > <b>9</b> 8   |
| কালাবাবুর কুঞ্জের বিবরণ          | ·· ··            | ,,             |
| বুলাবনের ঝুলনের বৃত্তান্ত •      | · ·              | ,,             |
| দালাবাবুর কুঞ্জের ঝুলন-রুভান্ত   | •••              | 596            |
| রঙ্গনাথের পরিচয়                 |                  | , 544          |
| ুর্ন্দাবনের কুন্তমেলা •          |                  | >99            |
| গিরণারের মৌনীবাবার বৃত্তান্ত     |                  | 592            |
| तमावासके वाव श्राधकाव साम        | ০ আগেডাগানীলি    | গ্ৰ স্ক্ৰ      |

| বিষয়                        |                |         |       | পৃষ্ঠা ,         |
|------------------------------|----------------|---------|-------|------------------|
| বুন্দাবন হইতে হরিধার পর্যা   | ন্ত পথের       | কথা     | •••   | <b>&gt;6,2-5</b> |
| মিরাট সহরের বুভাস্ত          | •••            |         | ·     | ऽ৮२              |
| কড়কি সহরের বৃধ্যান্ত        | •••            |         | •••   | <i>&gt;</i> ⊁8   |
| কড়কির লহরের কথা             | •••            |         | •••   | 7F#              |
| জলাপুর সহরের বিবরণ           | •••            |         | •••   | ነ <del>৮</del> ૧ |
| হরিবারের বৃত্তাস্ত           | :              |         |       | 366              |
| কন্ধলের কথা                  | •••            | -       |       | 197              |
| হ্রিখারে কুস্তমেলার পরিচয়   |                | Ť       |       | \$8              |
| কনখলের সাধু-সন্ন্যাসীর বৃত্ত | ক্ত            |         |       | ₹•€              |
| মহাকুন্ডের বিবরণ             |                |         | •••   | २•৮              |
| শ্রবণানন্দ মোহস্ত ও অক্তা    | ন্ত, গোণ       | হামিগণে | ার -  |                  |
| স্নান্যাত্রার বৃত্ত'স্ত      | ••• ,          |         | •••   | २७०              |
| বিকানীররাজের স্নানযাত্রা ও   | वांक-ए         | প্ৰাদি  | বিবরণ | ۶۱۶              |
| হরিদার হইতে বদরীনারায়ণ      | পৰ্য্যস্ত      | প'পের   | বিবরণ | २३৯-२६ूट         |
| বদরীনারায়ণ যাত্রার পরিচয়   | •••            | £       | •••   | ร้วล             |
| শ্বৰীকেশের বিবরণ             | •••            |         | ••• 3 | २२১              |
| লছ্মন-ঝোলার কথা              | •••            |         | ء ••• | ृ२२२             |
| ব্যাসাশ্রম ও ব্যাসঝোলার বি   | र <b>प्र</b> १ |         | •••   | ્ રવ¢            |
| দেৰ-প্ৰয়াগের কথা            | •••            |         | •••   | ,,               |
| টেরি-রাজ্যের বিবরণ           | •••            | ٤       | •••   | ृ २५७            |
| গলোভরী ও ষমুনোভরীর ব্        | ভাস্ত          | c       | *** : | ₹ ₹              |
| শ্রীনগরের বিবরণ ।            | •••            |         | •••   | २२৯              |
| ক্ষত্ৰ প্ৰাপেৰ কথা           | •••            | - (     | •••   | 30)              |

| বিষয়                           |                           |        | পৃষ্ঠা       |
|---------------------------------|---------------------------|--------|--------------|
| ু<br>গুপ্ত-কাশীর কথা            |                           | •••    | રે૭૪         |
| তুষনাথের মন্দিরদর্শন-প্রস       | 7                         |        | २७२          |
| তিযুগ-নারায়ণের বৃত্তান্ত       | ,                         |        | २७8          |
| ঝিলমিল-চটির পরিচয়              | A.                        | ·      | २७६          |
| গোরীকুও ও মুওকাটা গ             | ণশের বৃত্তান্ত            | •••    | **           |
| ভীমগড়ার কথা '                  | •••                       | •••    | २०७          |
| কেদারনাথ-তীর্থের ভীষণ           | ত্বর পরিচয়               | •••    | २७१          |
| মহাপন্থা ও হিম <b>লিজেখ</b> রের | বৃ <b>ন্তাস্ত</b>         | •••    | .j ₹8•       |
| পঞ্চলার কথা                     | •••                       |        | ₹88          |
| পিপড়কুঠীর কথা                  | •••                       | •••    | ₹8¶          |
| গরুড়গঙ্গার কথা                 | •••                       | •••    | ₹8৮          |
| বদরীনারায়ণ পাহাড়্ব,ও বি       | গ্ৰহের কথা                | •••    | ₹8≽          |
| ব্রহ্মকপালে পিওদানের পুণ        | াফ্ল-কণ্ণন                | •••    | ₹ <b>¢</b> ₹ |
| সহস্রধারার বৃত্তান্ত            |                           | •••    | २८७          |
| বদরীনাস্তায়ণ হঠতে পুনরা        | য় বৃন্দা <b>বন-যাত্র</b> | ার কথা | २८७-२१•      |
| গোবিন্দক্ঠীর পরিচয়             | •••                       | •••    | २८१          |
| কৰ্ণ-প্ৰয়াগের বৃত্তাস্ত        | •••                       | •••    | २६४          |
| ব্ভা-কেদারের বৃত্তান্ত          | •••                       | •••    | <b>२</b> ६>  |
| কাশীপুরের পরিচয়                | •••                       | •••    | <b>२</b> ७२  |
| নৈনিভালের বৃত্তান্ত             | •••                       | `      | २७०          |
| কোয়েধনর পরিচয়                 | •••                       | •••    | ₹ *8         |
| বেশড়াগ্রামের কথা               | ••• •                     | •••    | २७७          |
| মানসরৌবর ও মাঠগ্রামের           | क्था                      | •••    | २७१          |

| ্বিষয়                                |                     |          | ্পৃষ্ঠ1               |
|---------------------------------------|---------------------|----------|-----------------------|
| হাদশ বন-পরিক্রম-বৃত্তা <b>স্ত</b>     | •••                 | •••      | २१५-२৮७               |
| <b>অ</b> কুর <b>বাটের কথা</b>         |                     |          | २१५                   |
| মধুবনের পত্লিচয়                      | •••                 | •••      | २१२                   |
| বেছণাবনের কথা                         | •••                 | •••      | <b>S</b> .            |
| অষ্টদথীর কুণ্ডের বৃত্তান্ত            | •••                 | •••      | ,,                    |
| গোৰ্দ্ধন-বৃত্তাস্ত                    | •••                 | •••      | २ १                   |
| দীপগ্রাম ও লাঠাবনের বিবর              | 19                  | •••      | २१৮                   |
| কাশ্যবনের বিবরণ                       | €                   | •••      | ২৭৯                   |
| বরসানের কথা <sup>১</sup>              | •••                 | •••      | २४∙                   |
| নন্দগ্রামের কথা                       | •••                 | •••      | २४४                   |
| জাবট ও থদিরবনের কথা                   | • .                 | •••      | २४२                   |
| নন্দ্বাটের বৃত্তান্ত                  | ···• *              |          | २৮၁                   |
| <b>ভাণ্ডীর</b> কনের বৃত্তা <b>ন্ত</b> | •••                 | •        | ,,                    |
| নন্দধোষের গৃহের পরিচয়                | •.                  | •••      | ÷ke                   |
| বৃন্ধাবন হইতে জলদ্ধর পথে              | ব্ভান্ত •           | ·•       | २৮१-७२∙               |
| वृन्तावनशास्य स्ववाति-पर्यनारः        | ম্ভ ব্লনভ্ৰমণাৰ্থ য | গাতাকালী | 7                     |
| পুত্রন্বয়ের নামে আম                  | যাক্তারনামা গু      | iria '   | 464                   |
| চৌমুয়াগ্রামের বৃত্তাস্ত              | •••                 | •••      | <b>`</b> २ <b>৮</b> ৮ |
| বল্লভগ্ড়ের বৃত্তান্ত                 | •••                 | •        | • २ % •               |
| দিল্লী সহরের বিবরণ                    |                     | •        | <b>ं</b> २৯১          |
| পাণিপথ সহরের বিবরণ                    |                     | *        | ংক্ত                  |
| কণাল সহরের বিবরণ                      | •••                 | ۰۰۰      | १२८                   |
| ধানেশ্বর ও কুরুক্তেরের বিব            | 39                  | ***      | ,                     |

| বিষয়                              |                       |     | পৃষ্ঠা      |
|------------------------------------|-----------------------|-----|-------------|
| চক্রবৃহের বৃতাস্ত                  |                       |     | รลิง        |
| পৃপুদক তীর্থের বুৱাস্ত             | •••                   | ••• | . ,,        |
| স্থানেশ্বর শিবের বৃত্তান্ত         | ``                    | ••• | ,,          |
| ভীষণকুণ্ডের বিবরণ                  |                       |     | ২৯৭         |
| বাণগন্ধার বিবরণ                    | •••                   | ••• | ,,          |
| কর্ণখেড়ার ,,                      | •••                   |     | ,,          |
| সনহদের ,,                          |                       |     | ২৯৮         |
| শন্ধীকুণ্ডের <u>,</u> , "          | •••                   | ••• |             |
| চক্রতীর্থের ,,                     |                       | ••• | 9           |
| বশিষ্ঠ-প্রাচীর ,,                  | •••                   |     | 9.5         |
| মহাপীঠ ছৰ্গাকুপের বৃত্তান্ত        |                       |     | ,,          |
| কুবেরভীর্থের পরিচয় ।              | •••                   | ••• | <b>७•</b> २ |
| বৈপায়ন-হদের কথা                   | •••                   | ••• | ,,          |
| থানেশ্বর সহরের থিবরণ               |                       | •   | ,,          |
| অম্বালা সহিরের বিবরণ               | •••                   | ••• | 9.9         |
| লুধিয়ানা সহরের বিবরণ              |                       |     | ۷۰۶         |
| <b>ফাণ্ড</b> ভয়ারা সহরের সাধুর বু | ন্তান্ত               |     | ৩১•         |
| ছশিয়ারপুর সংরের বৃত্তাস্ত         |                       |     | ٥٢٥         |
| জালামুখী দেবীর বিবর্ণ              | ···                   |     | ⊛،و         |
| গোরক্ষনাথের বিবরণ                  | •••                   | ••• | ৩১৭         |
| জালন্ধরের বিভিন্ন ভীর্থের ব        | <b>হপ</b> 1           |     | ৩১৯         |
| জালকৰ হইতে দিলী পৰ্যাস্ত           | পথের <sup>®</sup> কথা | ••• | ৩২১-৩৬৮     |
| মাদওন সহরের পরিচয়                 | •••                   | ••• | ં ૭૨૪       |

| বিষয়                         |                   |          | পৃষ্ঠা              |
|-------------------------------|-------------------|----------|---------------------|
| রেওয়াড়েশ্বর কৃত্ত ও তীর্ধের | বিবরণ             |          | <b>७</b> २७         |
| রে ভয়াড়েশ্বর তীর্থের বেড়ার | বৃত্তা <b>ন্ত</b> | ·        | <b>૭</b> ૨8         |
| লোমশমূনির বিবর <b>ণ</b>       |                   |          | <b>ু</b> ২৬         |
| <b>नव्रन</b> ःशीरठंद्र ,,     |                   |          | <b>७</b> २ <b>१</b> |
| মভীসংর ও মণ্ডীরাজের বৃত্ত     | স্থ               |          | ૭૨৮ .               |
| পারমণ্ডীর কথা 🥫               |                   | ••       | సింజ                |
| বেজওর গ্রামের কথা             |                   |          | ৩৩১                 |
| বাসুনকোঠী গ্রামের কথা         | •••               |          | ૭૭૨                 |
| মণিকৰ্ণ-ভীৰ্থ-গ্ৰদঙ্গ         |                   |          | ೨೦೨                 |
| মণিকর্ণতীর্থে পাকের নিয়মের   | বিবর্গণ           | •••      | 908                 |
| কুলাস্ত পীঠের কথা             |                   |          | <b>ಿ</b>            |
| ব্দ্ধনালের কথা                | <u>.</u> ເ        |          | ৩৩৬                 |
| ক্ষীরগন্ধার কথা               | ;<br>             |          | <b>৩৩</b> ৭         |
| বিষ্ণুকৃত ও রামকুত্তের বৃত    | স্ত               |          | ঠিওম                |
| কুলুরাজার দেবালয়ের বিবরণ     |                   |          | ,<br>505            |
| কুলুদহরের কথা                 |                   | <b>•</b> | 985                 |
| ফুটাথল-গ্রামের কথা            | •                 | •        | , ৩৪২               |
| বৈদ্যনাথদেবের প্রসঙ্গ         | •                 | •••      | •88                 |
| বৈদ্যনাথ প্রভৃতি বিভিন্ন দেব  | দেবীর কথা         | •••      | <b>೨8</b> €         |
| ভাগভূপাহাড়ের বিবরণ           | •••               | •••      | ' ৩৪৭               |
| মন্তরামবাবার বৃত্তান্ত        |                   | •        | <b>08</b> 5         |
| বজুেখনী দেবীর বৃত্তান্ত       |                   |          | 985                 |
| কাংপড়া সহরের কথা             | •••               | •••      | ৩৫১                 |

| বি <b>ষ</b> য়                       |             |      | পৃষ্ঠা       |
|--------------------------------------|-------------|------|--------------|
| গঁণেশ্বাটীর পাহাড়ের বিবরণ           | 1           | •••  | <b>৩</b> ৫৩  |
| চিন্তাপুৰণী দেবীর বৃত্তান্ত          | •••         |      | ٥¢ <b>د</b>  |
| নয়নাদেবীর বৃত্তা <b>ন্ত</b>         | *           | •••  | 964          |
| অয়ালা সহরের বৃত্তান্ত               | ••          | ***  | <b>9</b> 58  |
| যমুনা নদীর বৃত্তান্ত                 |             |      | ৩৬৭          |
| <b>ৰিলীবঁ</b> ্বিবরণ o               |             | ৩৮>- | <b>C F F</b> |
| দিলী সহরের বিভিন্ন দরবজা             | র নাম       |      | <i>৬৬৯</i>   |
| দিল্লীর নাগরিকগণের পরিচয়            | •           |      | دوق          |
| দিলীর তেত্রিশ বাজারের নাম            | Ι ,         |      | ৩৭ ១         |
| দেওয়াস-ই আমের কথা                   |             |      | ৩৭৪          |
| মোতি মসজিদের কথা 🗇                   |             |      | ७१६          |
| দেওয়ান-ই-থাদের ক্থা                 |             |      | #            |
| বাদশাধী অন্তঃপুরের বিবরণ             |             |      | ৩৭৬          |
| বাদশাহগাদা।মর্জ্জালের বৃদ            | ভান্ত       |      | ,            |
| কালকান্দ্ৰীর বৃত্তান্ত               |             | •••  | <b>৫</b> १৯  |
| পৃথীরাজার যজভূমির কথা                |             |      | ৫৮১          |
| <b>ৰোগ্মায়া দেবীর কথা</b> "         | •••         |      | 640          |
| কুস্তীশ্বর শিবের বৃত্তা <b>ন্ত</b> ° | •••         |      | <b>৩৮</b> ৪  |
| ষমুনাতীরে নিগমবোধের ঘাটে             | ট মেশাও অনু | I TO |              |
| দেব-দেবীর প্রদঙ্গ                    | •••         | 0    | ৩৮৬          |
| দিল্লী হইতে প্ৰান্তা পৰ্যান্ত পৰ     | থর কথা      | ィトラー | -8२৮         |
| বৃন্দাবন <b>হইতে খদেশাভিষু</b> ধে    | योक्।       | •••  | ೨৯.          |
| সেকল্পাবাঞ্চের বুতান্ত               | •••         | •••  | ८६७          |

| বিষয়                                  |                |               | <del>পৃষ্ঠ</del> 1 |
|--|----------------|---------------|--------------------|
| •স্বাগ্রা সহরের বৃত্তাস্ত              |                |               | ৽৽৽৽               |
| তাজমহলের পরিচয়                        |                |               | 9 6 0              |
| বটেশ্বর শিবের কথ                       |                | •••           | 8•3                |
| পাল্লা সহরের বৃত্তান্ত                 |                |               | 8.0                |
| শাটকোগ্রামের কথা                       |                |               | 8 • 8              |
| কালপীর পরিচয়                          | ••• ξ.         | •••           | 8 • ৮              |
| চরধা-মরধা দস্যুদ্ধের পরিচ              | 1              |               | 852                |
| আলা সাহেবের হাওয়াথানার                | কথা            | •••           | , 8₹•              |
| এলাহাবাদ সহরের বৃত্তান্ত               |                | •••           | 82)                |
| কাম্যকুপ ও মুকুন্দ বন্ধচারী            | র বিবরণ        | •••           | 8 - 8              |
| গোতম আশ্রম-বৃত্তাস্ত                   | ··· ,          | •••           | 8 2 %              |
| প্রয়াগে মা <b>ঘ</b> মেলার বিবরণ       |                |               | 8२७                |
| প্ৰয়াগ হইতে কাশীধাম পৰ্য্য            | ন্ত পথেব্ৰ কথা |               | 852-854            |
| সমরনাথ শিবের পরিচয়                    | •••            | •••           | 8 <b>3</b> •       |
| বিষ্ণাবাদিনী <b>দে</b> বীর ক <b>থা</b> | •              | •••           | <b></b>            |
| বোগমায়া দেবীর কথা .                   | •••            | . • •         | £ #                |
| মিজ্জাপুর সহরের কথা                    | •••            | •••           | . 805              |
| চণ্ডালগড়ের পরিচয়                     | •••            | • • •         | 8©¢                |
| ছোট-কলিকাভার কথা                       | •••            | •••           | 8 59               |
| কাশীর বিবরণ                            | •••            | ·. • ·        | 803-669            |
| বিশেষরদেব ও মন্দিরের কং                | ৰা             | •••           | . 8೨೩              |
| অরপূর্ণাদেবীর কথা ু                    |                | •••           | 883                |
| কেদারেশর দেবেব কথা                     |                | Ç <b>44</b> + | . 885              |

| विषद्र                    |                  |       | পৃষ্ঠা       |
|---------------------------|------------------|-------|--------------|
| দীক্ষণ-মানসের দেব-দেবীর   | পরিচয়           |       | 888          |
| তিশভাঙ্কেশ্বর দেবের বিবর  | 19               | ··· · | 88€          |
| লোলার্কভীর্থের পরিচয়     | , ,              |       |              |
| ছ্ৰ্গাকুণ্ডের বিবরণ       | •••              |       | •            |
| পশ্চিম-মানসের দেব-দেবীর   | <b>গুত্তান্ত</b> | •••   | 88%          |
| মণিক বিকাদি ভিন্ন জিল তী  | থের দেব-দেবী     | র নাম |              |
| ভৈরব-জাতার বৃভাস্ত        | •••              | •••   | 889          |
| উত্তর হানদের প্রধান দেব   | দ্বীর নাম        |       | 885          |
| পঞ্জীৰ্ধ-প্ৰসঙ্গ          |                  |       |              |
| পঞ্চক্রেংশীর বিবরণ, ন     |                  | •••   | 20           |
| ৰোড়শযাত্ৰা-বিধি          |                  | •••   | 8 <b>¢</b> ₹ |
| কাশীর গলিপথের বৃত্তান্ত   | ••••             |       | 849          |
| কাশীর গঞ্জ ও বাজারের স    | রিচয়            |       | 20           |
| সিপাহী-বিজোহের বিবরণ      |                  | 84    | ۶ <b>۲</b> ۱ |
| নিপাহী-বিজোহারত্ত-প্রসঙ্গ | ŗ                | ·     | 8%•          |
| কাশীতে বিদ্রোহ            | • • • •          |       | 868          |
| জৌনুপুর সহর সুঠন ও হ      | গ্ৰাকাণ্ড        |       | 893          |
| জৌনপুরের কাজি সাহেবে      | র ঘোষণা-প্রচা    | 3     | 899          |
| এলাহাবাদের সরকারী খাব     | জনাধানা লুঠের    | কথা   | 8 <b>9</b> ৮ |
| শিশদৈৱের উত্তেজনা         | ·                | •     | 86.          |
| শিপ ও সিপাহাঁগণের যুদ্ধ   | •••              |       | 847          |
| প্রবাসী বালালীগণের হুদ্দ  | ti ,             | •••   | 8 <b>৮</b> 9 |
| atatateseasantate         |                  |       |              |

| <b>विव</b> ष्ठ                      |               |                | পৃষ্ঠা         |
|-------------------------------------|---------------|----------------|----------------|
| কাশী হইতে পাটনা যাত্ৰা ব            | কালীন প       | থের বিবরণ ১১   | o <u>-</u> €8€ |
| ইন্দ্রায়ভীর্থ-প্রদঙ্গ              | •••           | •              | 628            |
| গাজিপুরের বিবরণ                     | •••           |                | 623            |
| বক্সারের বিবরণ •                    | •••           | •••            | وذع            |
| সারণ-ছাপরায় বিবর <b>ণ</b>          |               | •••            | ezé            |
| পাটনা সহরের বিবরুণ                  | •••           | ε ••• ε        | 429            |
| গয়াসহরের বিবরণ ও <b>গ</b> য়া      | <b>কু</b> ত্য | •              | €00            |
| <b>চট</b> ্বাষ্ঠীব্ৰের পরিচয়       | •••           | •••            | €88            |
| পাটনা হইতে কলিকাভা-যা               | iai.          | ··· <b>c</b> 8 | 9— ¢9¢         |
| জালেম-জোলম দস্যাৎয়ের র             | ্তান্ত ঁ      | •••            | ¢89            |
| पूरक्र दिवद्र ग                     | ••• ,         | •••            | 484            |
| সীভাকুঙের বৃত্তাস্ত                 | •…            | •••            | 689            |
| ছহ্মুনির আশ্রমের কথা                | ?             | •              | 20             |
| ভাগ্লপুর সহরের কথা                  | •••           | •••            |                |
| রাজমহলের কথা                        | •••           | · · · ·        | 662            |
| <b>জ্বিপুরে</b> র বৃক্তা <b>ন্ত</b> | •••           | ••• c          | 448            |
| মুর্শিদাবাদের বৃত্তান্ত             | .:.           | •••            | 469            |
| সম্বদাবাদ ও থাগড়ার কথা             | •••           | •••            | 469            |
| ব্হরমপুর সহরের কথা                  | •••           | •••            | 662            |
| <b>অ</b> গ্ৰন্থীপের বৃত্তান্ত       | •••           | G              | c <b>৫৬১</b>   |
| নবৰীপের বৃত্তাস্ত                   | •••           | ٠              | <b>લ્ર</b> કર  |
| অভিকা-কাল্নার দেবালয় খ             | লির বৃস্ত     | ₹              | 640            |
| শান্তিপরের পরিচয়                   | • •••         | 0 *** =        | 444            |

#### W0

| শিকে-ডুমুরদহের কথা               | •••    | ,669        |
|----------------------------------|--------|-------------|
| লগণী-চুঁচ্ডার বৃত্তান্ত ···      | •••    | <i>৬</i> ৯  |
| কলিকাভায় প্রভ্যাবর্ত্তন-প্রদক্ষ | , ···  | <b>e</b> 9> |
| রাধানগরে স্বগৃহে প্রভ্যাবর্ত্তন  | , ,,,, | . (19       |
| টিপ্পনীর পরিশিষ্ট                | ¢      | r>6>6       |

## মুখবন্ধ

্তীর্থ-ভ্রমণ বদভাবার একথানি অপূর্ব্ব গ্রন্থ। এ প্রকার গ্রন্থ তৎপূর্বে বঙ্গভাষায় আর নিধিত হইরাছিল কিনা জানি না। শামাদের কোন প্রবীণ সাহিত্যিক+ এই অপূর্ব গ্রন্থ আছে খালোচনা করিয়া জানাইয়াছেন,—"বাঁলালীর পক্ষে ইছা একটা নুভন ঘটনা বলিতে হইবে। কোন বাগালী বোধ হয়, ইহার পুর্ব্বে কিছা পরে ভীর্থ-পর্যাটনে নির্গত হইয়া এ প্রকার ভ্রমণ-বৃদ্ধান্ত লিখিয়া বান নাই।" বাস্তবিক বলিতে কি; এক্লপ দৈনিক-বিবরণ বা রোজ-নামচা লিখিবার পদ্ধতি আমরা মনে করিতাম বে, ইংরাজী প্রভাবের ফল--এখনকার জিনিস। কিন্তু এই প্রস্থ **আলোচনা করি**য়া আমাদের সেই ধারণা তিরোহিত হইরাছে। তাই এই তীর্ধ-ভ্রমণ-কাহিনী এক অপূর্ব্ধ গ্রন্থ বলিয়া বোষণা করিতে সাহসী হইতেছি। ু দক্ষিণরাড়ীয় কায়স্থকুল-গৌরব স্বর্গীয় বছনাধ সর্কাধিকারী মহাশার এই ভার্ব-ভ্রমণের রচিছিতা। সন ১২ জ্বালের মান মাস হুইতে ১২৬৪ দালের ৯ই অগ্রহারণ পর্যস্ত প্রার চারিবর্বের এমণ-काहिनी ७ डाहात बीवन पर्टेना नहेंद्रा शहकात वह डीर्स विवतन লিপিবছ করিয়া গিরাছেন। বৈ সমরের কথা লিখিত হইয়াছে, দে সময়ের এথনকার মত দ্রদেশ-বাতা সহজ্পাধ্য ছিল না, তথনও এখনকার মত রেলপথ প্রস্তুত হয় নাই। অথবা বিজয়রাম বিশারদের তীর্থ-মললবর্ণিত মহাশর কৃষ্ণচন্দ্র বোবালের ভার

পভিতৰৰ জীবুক কুক্ষমণ ভটাচাৰ্য।

তাঁহার প্রভাবপ্রতিপত্তি বা সহায়সম্পত্তি ছিল না। । अप्र ভিনি পদত্রকে কত দুরদেশে পর্যাটন করিয়াছেন, কত কন্ত সহ করিয়া অনসংখ্রণ আব্ধাবসায় বা দৃঢ়সহিফুতার পরিচয় দিয়াছেন, তাহা প্রকৃতই বিশারজনক ও শত মুখে প্রশংসার যোগ্য। স্বাধিকারী মহাশ্র কি কারণে তীর্থ-ভ্রমণে বাহির হইয়াছিলেন, সে কথা তিনি নিজেই প্রকাশ করিয়া গিয়াছেন, তাঁহার জীবনী-প্রদক্ষে তাহার আলোচনা করিয়াছি—এখানে পুনরুল্লেখ নিপ্রাঞ্জন। তবে এখানে এইমাত্র বলা প্রয়োজন বে. গ্রন্থকার সাহিতাক্তগতে প্রতিষ্ঠালাভের আশায় গ্রন্থ রচনা করিতে অগ্রসর হন নাই, অথবা তাঁহার এই অপূর্ব গ্রন্থ কোন দিন যে সাধারণ-সমক্ষে প্রকাশিত হইবে, এরপ আশাও তিনি কোন দিন হৃদরে পোষণ করিয়াছিলেন বলিয়া মনে হয় না। তিনি সন ১৯৬ - সাল ১১ই ফাল্কন তীর্থবাত্রায় বাহির হন, সেই দিন হইতে গ্ৰহে প্ৰত্যাগমন পৰ্যান্ত প্ৰভাহ যাহা দেখিয়াছেন বা ষাহা কৰি-মাছেন, তাহা নিজের তথির জন্ম এবং আত্মীয় স্বন্ধনকে শুনাইবার স্থ্রিধা হইবে ভাবিয়া লিখিয়া রাখেন। সময়ে সময়ে তাঁহাঁর এই তীর্থ-ভ্রমণ-কাহিনী প্রিয়পুত্র ও নিকট আত্মীয়-স্বস্থানর নিকট ভনাইতেন, সকলে আত্মহারা হইয়া তাঁহার মুখে ভার্থ-বিবরণীর সঙ্গে দেশের অবহা, দশের কথা ও সমাজের পরিচয় ভূমিয়া পরিতৃপ্ত হইতেন। শুনিয়াছি, কোন মনীধী † অনেক দিন পূর্বে এই অপুর্ব গ্রন্থ প্রকাশের জন্ত গ্রন্থ কারের উপযুক্ত বংশধরদিগ্রক

পাছিত্য-পরিবৎ হইতে প্রকাশিত মং-সম্পাদিত তীর্থ-মললের ভূমিকা
আইবা।

<sup>🕇</sup> পণ্ডিতবর শীবুক্ত তারাকুমার ক্রিবকু।

অফুরোধ করিয়াছিলেন, কিন্তু নিভাস্ত বিশ্বয়ের কথা যে, তাঁহার বংশধরেরা তাঁহার এই মহামূলা সম্পত্তি এতদিন প্রকাশ করিতে পারেন নাই। তাঁহাদের একটা আশকা ছিল-গ্রন্থকার ধে ভাষার তাঁহার মনের কথা প্রকাশ করিয়া ুনিয়াছেন, তাহা হয়ত ঠিক এখনকার ভাষা নহে, সাধুভাষার অমুবর্ত্তক দাহিভ্যিকগণ হয়ত তাহাতে অনেক দোষ বাহির করিতে পারেন, ইত্যাদি নানা কারণে তাঁহারা তাঁহাদের প্রজার সামগ্রী বাহিরের সাহিত্যিকগণের আলোচনার বিষয়ীভূত করিতে বিরত ছিলেন। গ্রন্থকারের উপযুক্ত পৌৰ ( আমাদের পরিষদের অগ্রতম সহকারী সভাপতি ) माननीत्र छार्कात त्वर्थमान मर्स्वाधिकात्री बहानत्त्रत्र वर्षः स्थानात्त्रत সভাপতি ম-মেহোপাধ্যায় হরপ্রসাদ শাল্পী মহাশয় ও স্বহৃদ্বর রায় সাহেব দীনেশচক্র সেন মহাশন্ন মূলগ্রন্থ পাঠ করিবার স্রয়োগ পাইয়াছিলেন। রাম্পাহেবের আগ্রহে এই গ্রন্থের একথানি নকলও প্রস্তুত হইগাছিল এবং তাঁহারই নিকট সর্বাপ্রথম আদি এই উপাদের পৃত্তবের সন্ধান পাইরাছিলাম। পরে মহামহোপাধ্যার শামী মহাশয়ের সহিত এই পুস্তক প্রকাশের পরামর্শ হয়। শাস্ত্রী মহাশয় সাহিত্য-পরিষদের কার্য্য-নির্বাহক-সমিতিতে তীর্থ-ভ্রমণের কৰা প্ৰকাশ করেন এবং কাৰ্যানিকাহক-সমিতি এই তীৰ্থ-ভ্ৰমণ ও এই সঙ্গে তীর্থ মঙ্গলের সম্পাদস-ভার আমার উপর অর্পণ করেন। ক্লীশ্বরেচ্চার উভর গ্রন্থই প্রকাশিত হইল।

- প্রকেট বলিয়াতি, তীর্থ-ত্রমণের গ্রন্থকার সর্বাধিকটো মহাশর তীর্থবাত্রার বাহির হইরা সচকে বাহা দেখিরাছেন ও শুনিরাছেন, ভাহাই অতি সরল কথার আত্মনৃত্তির ক্ষান্ত লিখিরা গিরাছেন। ভাঁহার এই বর্ণনার কেবল তীর্থ-মাহাত্ম বলিয়া নহে, এখনকার নানা স্থানের সমাজচিত্র, লোকচরিত্র, রীভিনীতি, আচারব্যবহার, সংক্ষিপ্ত ইতিহাস ও ইতিকথা ইত্যাদি বহু জ্ঞাতব্য
বিষয়ই স্থানলাভ করিয়াছে। সর্কাথিকারী মহাশন্ধ বে সময়ে এছ
রচনা করেন, সে সময়ে এ দেশে ভাল গছগ্রছ বেশী প্রচলিত হয়
নাই, তথনও সাধারণে ক্রতিবাসী রামারণ ও কাশীদাসী
মহাভারতের ভার পছগ্রছেরই বেশী আদর করিতেন, তৎকালে
প্রসাদভাগবিশিষ্ট স্থালিত গছে রচিত অল গ্রন্থই প্রচারিত ছিল।
এ হেন সময়ে সাহিত্যিক হইবার বাসনাশ্ভ-হদরে তিনি বেরূপ
ভাষার সারল্য, রচনা-নৈপ্তা, লিপি-কুশলতা ও মনের ভাব প্রকাশে
সক্লতা দেখাইরাছেন, তাহা বাস্তবিক বিশ্বরের কথা!

#### গ্রন্থ-পরিচায়

ভাঁহার এই বৃহৎ গ্রন্থে বিশেষভাবে কি কি বিষয় বর্ণিত 
ইইরাছে, ভন্নথ্যে আমাদের কোন কোন বিষয় অবশুক্তাতব্য, 
ভাঁহার বর্ণনার কিরূপ হালরের ভাষা ব্যক্ত ইইরাছে, এই পরিচরপ্রসক্তে ভাহার একটা সমালোচনা প্রকাশ করাও কর্তব্য মনে 
ক্রিভেছি।

তীর্থবাত্রার বাহির হইরা আনাদের গ্রন্থকার ১৯৬০ সালে 
রু০এ কান্তন প্রথম বালসীর লক্ষীনারারণ-শিলা দর্শন করিবেন।
গ্রন্থকার লিথিয়াছেন,—"দর্শন পাওয়া ছুছর, পরসা লইরা কৃত্রিম
শিলা দর্শন করার। পুজারি বে আবাণ আছে অতি ছর্ত্ত। বে
সব বাত্রী ছিল, … তাহারা ঐ ঠাকুরের পুছরিশীতে প্রান
ক্রিয়া পুজারিকে আলাহিদা প্রসা গোপনে দিয়া বথার্থ সূত্তি
দর্শনাভিলাবে দাঙাইয়া থাকিল। পুজারি পাবঙ্গ, শপ্র করিয়া
এমত চাতুরী করিয়া অন্ত দর্শন গোপনে ক্রাইল। সকলে

বিখাদ করিয়া দর্শনান্তরে সান-জ্ঞলাদি ধারণ এবং বে বাহা দিবে,
তাহা দিয়া আইল।" কিন্তু ভক্ত গ্রন্থকার সেই পুঞারির চাডুরী
ব্বিতে পারিয়াছিলেন, তিনি শ্রীমান্তরের পুর্কাদকের ছারের
নিকট ছল্পবেশে রহিলেন। "বধার পুঞারির, খণ্ডর প্রভৃতি কয়েকজনা স্ত্রাংলাক তাঁহাদের আত্মীর-স্বজুনদির্গের দর্শনার্থে সমস্তারে
লইয়া বিদিয়াছিল সেই হানে তাহাদের সমস্তারে রহিলাম। বে
সময় তাহাদিগের দর্শন কুরাইল, তাহাতে বধার্থ দিলা দেখাইল,
তাহাতে লক্ষীনারায়ণ-দিলার বে চিহ্ন ব্ধাশান্ত তাহা দীপ্রমান্।"
এইয়পে ভক্ত প্রকৃত ভক্তির সামগ্রী দর্শন করিয়া নয়ন-মন সার্থক
করিলেন।

তৎপরে তিনি (২১ এ হান্তন) সোণাম্থী গ্রামে প্রসিদ্ধ কথক গদাধর-শিরোমণির বাসস্থান দর্শন করেন। এই গদাধর শিরোমণিই বর্তমান কথকতার প্রবর্তক। তৎপরে শ্রীরামপ্রের বাট, গোপালপুর, অভাল, মধুবন, নিরামতপুর প্রভৃতি দর্শন করিয়া ২৬ কাল্কন মেটেসিলরে পাহাড়ে আসিলেন। এখানে পঞ্জেটারাল ছরিল্ডল্ল শেওরের ছইটা স্থলর মন্দির দর্শন করেন। এখান হইতে দশ ক্রোশ পশ্চিমে গোবিলপুরের চটীতে আসিয়া গ্রহ্মার লিখিয়াছেন—"এই চটা অবধি মগধরাজ্য। \* \* এ স্থানের মহুযাগণ দোভাষী, আধাবোটা আধা-বালালা বোল।" — সর্বাধিকারী মহাশরের এই উক্তি ছইতে ব্রিলাম বে, তৎকালে গোবিলপুর ছইতেই মগধ বা বেহারের সীমা ধরা ছুইত, মধ্যে বালালার সামিল ছইলেও এখন এইছান মানভূম জেলার নগর ছাইয়ারি পরগণার অন্তর্গত, বেহার গবর্ণমেন্টের শাসনাধীন। ২১ কাল্কন তিনি পরেশনাথ পাহাড়ে গিয়া সরাব্রি বণিক্দিপের

কুলবেওতা সন্ধাৰতঃ পাৰ্থনাথ স্থানীর প্রত্যানির্থিত দিগ্দরস্থি
দর্শন করেন। তিনি লিখিয়াছেন, "একজন মোহস্ক' স্কপ
জটাধারী ভত্মনাথা তথার আছেনই, তাঁহার চেলা সকল সরাবগির
বিলক্।" আমরা সাধারণতঃ জানিতাম বে, সরাবগি বা জৈনআাবকদিগের শুক্ত বা বাতগণের স্বত্ত পরিচ্ছদ, স্বত্ত বেশভ্যা,
কথন শৈব মোহাজদিগের মত জটা বা ভত্ম ধারণ করেন না,
কিন্তু এই প্রস্থ হইতে আমরা বেশ বুরিতেছি বে, চারিন্থিক শৈব,
শাক্ত প্রভৃতি হিন্দুদিগের মধ্যে থাকিয়া জৈন বভিগণিও কতকটা
শৈব-মোহাস্থ ভাবাপর হইরা পড়িয়াছিলেন।

ভই তৈতা প্রছ্কার বোধগরার আগেন। "এখানে গরাস্থর বিক্লুর সহিত মুক্ করিন, এই স্থানে কর-পরাজর হর ।" এ ছাড়া তিনি এই প্রানিক স্থানের আর কিছু পরিচর দেন নাই। এমন কি খুটার ১৯শ শতাব্দীর প্রারক্তে বুকানন হামিগটন এই স্থান করিরা মহাবোধির ধ্বংসাবশের্বকে 'রাজ্বান' বা একটা 'গড়' নামে উল্লেখ করিরাহেলে! বেখানে ভগবান শাক্যবৃদ্ধ মহাবোধি লাভ করেন, বৌদ্ধজগতে বেস্থান, সর্ক্তপ্রধান পুণাক্ষেত্র বিদ্ধান পুণাক্ষেত্র বিদ্ধান প্রতি আল্লেখন করিরা প্রতি আলিক আলিক বিষয়ের করিবার এই প্রস্থানিক প্রথানিক করিহার নাহেবের স্ক্রুটি পতিত হইরাছিল। তিনিই প্রথম এখানকার বৌদ্ধ-কীর্তি উদ্ধারে মনোবাদী হইরাছিলেন। সরকার বাহাত্রের অর্থে কনিংহাম এখানকার খনন-কার্য্য আরক্ত করিবোন, অর্থান বিদ্ধান গ্রহণ বিশ্বার অর্থান বিদ্ধান বিদ্ধান করিবার স্থানকার বাহাত্রের অর্থান করিবার হারা বাহাত্রের অর্থান করিবার এইরা এখানকার বাহাত্রের স্থান করিবার এইরা প্রথম বানাকার স্থানকার করিবার ক্রিয়া এখানকার খনন-কার্য্য আরক্ত করিবোন, অর্থানন

১৮৭৬ খুঠান্দে এক্ষরাজ মহাবোধি-মন্দিরের সংস্কার করাইবার জন্ত তিন জন কর্মচারী পাঠাইরাছিলেন। তাঁহারা কার্যাক্ষেত্রে উপনীত হুইরা স্বকার্য্যাধনে অক্ষম হুইলে ছোটলাট সর আস্লি এডেন প্রথমে জে, ডি, বেগলার ও পরে রাজা রাজেজ্বলাল মিত্র মহোলয়কে কার্য্য-পরিদর্শক নিষ্ক্ত করেন। তাঁহাদের মঙ্গে ও এক্ষরাজের উভোগে মহাবোধি-মন্দিরের সংস্কার সাধিত হুইল। সর্কাধিকারী মহাশরের সময়ে বাহা কেহ স্থাপ্র ভাবে নাই, তাহাই হুইল। এখন বোধগারা সমগ্র সভ্য-জগতের ক্রইবা স্থান। বোধগারার অভাবধি নেই পূর্বাতন মোহাজের গদী ও তাঁহার উর্মাধিকারী বর্ত্তমান।

বোধগরা হইরা সর্কাধিকারী মহাশর গরাবাদে গমন করেন।
গরাধামে সেত্রা ও পরালেরা বাতীর উপর কিরপ কর আদার
করেন,—গরার গিয়া কি ভাবে তীর্ক্তা করিতে হর,—গরার
কোন্কোন্হান স্টব্য ও কোন কোন্ মহাআর কীর্তি আছে,
ভাহা পরে বিশদভাবে বর্ণিত হইরাছে।

ী প্রাক্কত্য সারিরা ধ্রুনা প্রাম, পড়োড়ি, সাসেরাম, জাহানাবাদ, মোহনিরা, কর্মনানা, জগদীশের সরাই ও গুলাইপুর হইরা কাশীধামে আগমন করেন। গরা হইতে কাশীধামে পদত্রজে আলিতে তাঁহার ৮ দিন লাগিরাছিল। তিনি ১২৬০ সালের ৩১০ তৈত্র হইতে ১২৬১ সালের ১২ই বৈশাধ পর্যান্ত এবং তৎপরে প্রত্যাপ্রমনকালে ১২৬০ সালে ১৭ই পৌর হইতে ১২৬৪ সালের ১৬ই আখিন পর্যান্ত কাশীধামে অবহান করিয়াছিলেন। দীর্ঘকাল কাশীবাসের কারণ তিনি এথানকার নানা তথ্য সংগ্রহে বধেষ্ট ছবিধা পাইরাছিলেন। পাশ্চাত্য ও প্রাচ্য জনেক মহাআহি

আমাদের সর্বপ্রথান মুক্তিক্তে কাশীধামের পরিচয় দিয়া গিয়াছেন বটে, কিন্তু আমাদের ভক্ত তীর্থ-শ্রমণকার সংক্ষেপে হইলেও বে ভাবে কাশীর পঞ্চকোশীর বিবরণ লিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন, আধুনিক আর কাহারও প্রছে আমরা দেরপ পরিচয় পাই নাই। বাহার কাশীশ্বর বিবেশবরের আরতি-দর্শনের প্রবিধা হয় নাই, ভিনি এই তীর্থ-শ্রমণে তাহার উজ্জ্বল চিত্র পাইবেন। প্রস্কার আরতির বর্ণনা শেষ করিয়া লিখিয়াছেন, "চতুত্পার্শ্বে সকলে লাভাইয় ঐ সকল বাস্তথ্যনি, স্ততিপাঠ, চামর, মোরছল, আড়ানি ইত্যাদির ব্যক্ষনে কি চমৎকার দেখিতে হয়, তাহা কি কহিব! বে দেখিরাছে, সেই জানিতে পারিবে।"

১২৬১ সালের ৭২ই বৈশাথ কাশ্ হইতে বৃন্ধারন অভিমুখে যাত্রা করিলেন। মেড্রাভিন্নি, তথ্যমানাদ, গ্যোপীগঞ্জ, বেথি, হুফ্রানগঞ্জ ও ঝুণী হইরা ১৭ই বৈশাথ প্রথাপে আগমন করেন। প্ররাগে পদার্পণ করিরাই তিনি প্ররাগ্রীদিগের ছুর্ব্বেরারের পরিচর পাইরা লিথিয়াছেন, "প্রয়াগীদিগের সৈম্ম আভিশর ধনগ্রাহী, নির্দ্ধর। প্রথম মাত্রী আনিবার সম্ম আভিশর শিপ্ত। আপন ছুর্বের পরিচর ক্রিটিত পারিলে ছুইতার শেষ।" (৪৭ পূঃ) কিন্তু বিতীয়বার প্রয়াগে আদিরা তিনি এই প্রয়াগীদিগের সম্বন্ধ লিথিয়াছেন,—"প্রয়াগী যাত্রীদিগের প্রতিব্যন্ত দোরাত্ম করে, তাহা গতবারে চক্ত্ত দেখিয়া জ্ঞানহত হুইনাছিল। কিন্তু এই প্রয়াগীদিগের চরিত্র সভ্যুগ্রের রাজ্বণের জ্ঞায়। প্রয়াগীদিগের ব্রহ্মাস্থটান ভাল আছে। সন্ধ্যাহ্নিক পূজানীভাদি পাঠ করিয়া থাকে! বেণীমাধ্যের ক্ষঃ।" (৪২৮ পঃ) প্রথমবার ১৭ই বৈশার্থ হুইতে ২০এ বৈশার্থ পর্যান্থ এবং

ভংপরে প্রভাগমনকালে ১:৬০ সালে १ই পৌষ হইতে ১০ই পৌষ পর্যান্ত গ্রন্থকার প্রমাণে অবস্থান করেন। তাঁহার অক্ষর-বটের বর্ণনা ক্ষতি হৃদ্যপ্রাহা—"কামাকুপের তীরে অক্ষরতা । ঐ বটর্ক অভাবধি জীবংমান আছে, তাহার উপরে গাঁথিয়া বর করিরাছে। রোজ-বাতাস কি বৃষ্টি কিছু পার না, তথাচ প্রতি বংসর চারি পাঁচ গাড়ী ভাল কাটিয়া কেলিতেছে। কেরার প্রায়ে কুড়ি হাত নিমে অক্ষরার ভূমি মধ্যে বটর্ক আছে, বিনা আলায় তথায় যাইবার ক্ষয়তা হয় না। ঐ স্থানে গুই বৃক্ষ, এক বৃক্ষ সমূপে আছে, কিঞ্চিং অক্ষরার মধ্যে প্রবিষ্ট হইলেই দেখা বার। কিন্তু ঐ বট আসল অক্ষরতা নহে। আসল অক্ষরতা তাহার পর কুড়ি হাত নীচে বাইলে দর্শন হয়ু বক্ষভাবে আছে। (৪২৬ পূঃ)

আজকাল ইংরাজ বাহাছক বে ভাবে অক্ষরবটের উপর গাঁথির।
আলো বাইবার পথ করিয়া দিয়াছেন, তাহাতে দিবসে বাত্রিগণের
বতত্র আলোকের নড় প্রায়োলন হর না। সহজেই সাধারণের
অক্ষরবট দর্শন লাভ হইরা থাকে। কিন্তু আসল অক্ষরট দর্শন
ক্ষরকানের ভার্গ্যে বটে রালতে পারি না।

আক্ষরত্টর পার্বেই কাষ্যক্প আছে। কিরপে মুকুল ব্রহ্নারী
দিলীখর হইবেন কামনা করিয়। ঐ কুপে ভুবিয়া প্রাণত্যাগ করেন,
ও-পরে তিনিই অক্বর বাশোদ হইয়া অন্মগ্রহণ করেন; পাছে কেহ
তপভা না করিয়া সহলেই অভীইসিছি হইবে আনিয়া ঐ কাম্যকুপে
বাপু দেন, এই আনন্ধা করিয়া দিলীখর "পরে কাম্যকুপে সীমা
সন্ট্রা ঢালিয়া বিয়া তাহার উপরে কেলা করিবেন।" ইত্যাদি
প্রবাদস্ক আখ্যারিকা ও প্রয়াদের মাখ্যেলার কথাও গ্রন্থকার
বাল দিয়া যানু নাই,। প্ররাগ-সহছে লিধিয়াছেন—

"এই প্রয়াগকে এলাহাবাদ কহে। অতি উত্তম সহর, অনেক ধনাচ্য মহাজন আছে। এথানকার জলবাতাস অতি উত্তম, শরীর অফ্লেল থাকে, সকল মন্ত্যা বলিছ; আহার্যা উত্তম পরিপাক পার। সহরে ৫১ হাজার হরের বসতি। প্রয়াগী ৫০০ ঘর সর্বাজ আছে। মহনে মহলে এক এক বাজার আছে। ভাহাতে উত্তম উত্তম বাজা-দ্রবাদি পাওয়া বার।"

২০ বৈশাধ সর্বাধিকারী মহাশদ্ধ প্রদাগ ত্যাগ করেন। 
হুলাগঞ্জ, ইনানগঞ্জ, গোলামীপুর, ভূধরের সুরাই, চৌধুরীর সরাই,
কুত্তরপুর ও থাজুয়া হইরা ২৬এ বৈশাধ কামপুর, তৎপরে বিচুর ও
কাঞ্চকুজ দর্শন করিয়া ২৭এ বৈশাধ লখনৌ আসিয়া পৌছিলেন।
কানপুর, বিচুর, কাঞ্চকুজ ও লখনৌ সন্থুরের মাহা কিছু জুইবা ছিল,
ভাহা দেখিয়া বর্ণনা করিয়াছেন। তল্পধ্যে কএক স্থান উল্লেখযোগ্য—

কানপুরে "প্রার ৩০০ শত বাগানী আছেন। অনেকে স্তীপুরপরিবারসমেত আছেন। এক কালীবাড়ী আছে, তাহাতে আনেক
আভ্যাগতের হান হয়।" "কানপুরের উত্তরপন্মিন ৮ কোল বিঠোর। ইহা বালীকি মুনির তপোবন, নীতার ব্রবাদ-ছান,
লবকুশের জন্মভূমি। একণে পুরা দেতারার বাজীরাও মহারাষ্ট্রের বাড়ী এবং কিছু পদাতিক আছে। তাহার দত্তকপুত্তের
পুত্র নানাসাহেব।"

বিঠোর, হইতে কান্তকুজ ৬ জোল। ঐ থানে কন্টোজ-আন্ধানিগের বাস। গণার তীরে পুরাতন নগর সহরত্বা। এই কান্তকুজ হইতে পঞ্জন আন্ধা ও কান্ত গৌড়রাকো আইসেন। ভাহাতে আমরাও আছি। অনেক পণ্ডিত সর্কাশারে স্থানিক্ত আছেন। বেলাধারী সকলে প্রাচীন গ্রন্থে বিধান্। আনেক দেবালয় নগর মধ্যে হানে হানে :পূর্কাকারের হাপিত আছে." ইত্যাদি। তথনকার লথ্নোসভরের জ্ঞাতব্য ও দ্রুইবা বিষয়ের পরিচয় দিয়া লিখিরাছেন,—"পোমতী নদীর তীবে বক্লো। পোমতী গঙ্গার এক শাখা, সর্মুননীর সহিত্যিকন আছে।"

২৭এ বৈশাধ হউতে এই জৈষ্ঠ পর্যায় লধ্নোসহরে অবস্থান করেন; তৎপরে অবোধ্যায় আসেন। অবোধ্যা সম্বন্ধ লিথিয়া-ছেন—"অবোধ্যায় জীরামনচন্দ্রের রাজধানী বন-জঙ্গল হইরাছে। মধ্যে মধ্যে বুগতি এবং রামদীতার প্রতিমূর্ত্তি আছে। জীরামনব্দীতে মেলা হয়। রামাৎ-বৈষ্ণব আছে। পাঁচ ছর হাজার বৈষ্ণব জীরামের জন্মভূমি এবং হুগমান গড়ীতে আছে, সর্বাল জ্ঞানসাধনে উন্মত। ... বৈ স্থানে রামচন্দ্রের জন্মভূমি, ঐ হারে এক বৃহৎ হুগমান আছে, তাহাকে কিছু থাত দ্রবা না দিশে পথ ছাড়িয়া নের না। বে স্থানে রাজ-সিংহাসন ছিল, উচ্চ বীপের জ্ঞার হইরা আছে: রাজধানী প্রায় দশক্রোশ পর্যান্ত ছিল। বার্থী-বরের চিন্দ্ পাথর এবং ইটসকল স্থানে স্থানে আছে।"

৬ই জৈ ছ ইংতে ১৫ই জৈ প্র প্র গ্রন্থ গ্রন্থ মিথিলা ও নৈমিবারণ্যে ভ্রমণ করেন। কিন্তু নিতান্ত ছঃথের বিষয়, অপরাপর স্থান-স্থকে তিনি বেমন বিশ্ব বর্ণনা করিয়া উজ্জ্বল চিত্র রাখিয়া গিরাছেন, মিথিলা-স্থকে সেরপ কিছু বলিয়া বান নাই। ভারত্বের অতি প্রাণীন কালের জ্ঞান-চর্চার প্রধান কেন্দ্র বিভাগীঠ মিথিলা-স্থকে তিনি নির্কাক্ রহিলেন, তাহা নিতান্ত বিস্মন্তনক। নৈমিবারণা-স্থকে তেমন বিশেষ কিছু না বলিয়া এইমাজ লিথিয়া গিয়াছেন, "ব্ধার বাটা সহস্ত খ্যির তথোবন, অতি স্থোন ছর নির্জন স্থান, অনেক সাধু সাস্ত আছেন, নৈমিধারণ্যে বেষত মনের আনন্দ করে, তাহা কি কহিব, নানাগুলে বন স্থানাতিত।

১৬ই জ্যৈর অযোধ্যার পথ হইরা সেকেন্দরার আগমন করেন।
প্রথম দর্শনকালে তথানকার প্রধান দ্রপ্তীয় বাদসাহী মস্কিদের
উল্লেখ করিতে ভূলিলেও প্রভ্যাগমন কালে এথানকার অক্বর
বাদসাহের প্রসিদ্ধ সমাধি মস্কিদকে শ্রমক্রমে সেকন্দর বাদসাহের
মস্কিদ বলিরা উল্লেখ করিরাছেন।

১१ই देकार्छ त्मरकन्मत्र। इहेर्छ मर्व्याधिकाती महामन्न त्वर्छेत्र, একদল, বিগরাই, মিঠেপুর, শকুয়াবাদ, ও রাজার টাল হইরা ২১এ জ্যৈষ্ঠ উশানী গ্রামে পৌছিলেন। এথানে আসিয়া তিনি আত্মীয় প্রজনকে সতর্ক ক্রিবার জন্ত সংবাদ দিয়াছেন,— "এক জেনাশ থাকিতে প্রীবৃন্দাবনের কুঞ্জবাদী বাউদদাদ ও ঠাকুদ্দাদ ব্রশ্বাদীর সহিত সাক্ষাং হয়। তাহাদের কর্ম বাত্রী লইয়া বাওয়া। मर्था क्रनिशाहिलाम स्व कालीत दक्ताना. व्यवालात व्यवाली ७ तुन्ता-বনের ক্ঞবাসী তিন তুল্য, তাহারা যাত্রীর গ্রায় ভাকাতি করিয়া অর্থ হরণ করে। বিশেষতঃ আমার মান্স যে বাড়ী ভাড়া করিয়া থাকিব। ছই তিন বংসর থাকিতে হইবেক। বাউলদাদকে কহিলাম, আমি কুঞ্জবাদীর কুঞ্জে থাকিব না, আলা-হিলা বাদার থাকিব। আর আমার নঙ্গে বে টাকা ছিল, সকল भित रहेशारह।" + + + अहे कथा वाउँन अनिहा कहिन. 'মহাশ্র বুঝিয়াছি, মহাশ্র বুঝি ওনিয়াছেন, বে কুঞ্জবাসীরা জুরাচোর। বাহা শুনিরাছেন, তাহার কিছুই বিখ্যা নহে। কিছ মানুৰ তাহা একবার জাত হওয়া আবশ্রক।' এই কথা বাউল্লান ক্ষাতে ঠাকুরদান বন্ধবাসী কহিল, যে বাউল-উত্তম মাতৃষ, আর

ভাহা একবার জ্ঞাত হওয়া আবৈশ্রক।' এই কথা বাউলদাস কহাতে ঠাকুরদাস ব্রজবাসী কহিল, বে বাউল উত্তম মাহুদ, আর টাকাকড়ি যাহা দরকার হইবে, ভাহা পাইবে।" এইরপে গ্রহ্মবার ব্রজবাসীর মধ্যে যে হৃদয়বান্ বিশ্বাসী ভাল লোকও আছেন, ইলিতে ভাহার আভাস দিয়া গিরাছেন।

২২এ জৈ গ্ৰাকানী হইয়া পরে ৯ জোশ ৰাইয়া তাঁহার বল-দেব দর্শন হইল। এই বলদেব হইতেই প্রীকৃষ্ণ-বলরামের লীলাস্থান এজভূমি আরম্ভ। বলদেবের বিবরণ-প্রদক্ষে গ্রন্থকার লিথিয়াছেন, • "এজ স্থাপিত চারিদেবের এক দেব প্রকাশ্ত মৃতি, পাণ্ডাগণ ভীমাকৃতি—অতি নির্দ্ধি নিঠুর।"

বলদেবে একয়াত্রি বায় করিয়া তৎপরে ব্রহ্মাগুলাট, গোক্ল, মহাবন, নৃতন 'গোকুল ও মধুরা দর্শন করিয়া প্রীর্লাবনধামে প্রবেশ করিলেন। প্রীর্লাবনে বাছোয়তির জয় তাঁহার কিছুকাল বাস করিবার সহজ থাকিলেও এবং বাউলদাস ব্রহ্মানী তাঁহাকে স্বতম্ম থাকিবার বয়য়'বনেলজ' করিয়া দিলেও ২৪এ জাৈঠ হইতে ৬ই'আয়াঢ় পর্যাস্ত ১০ দিনমাজ ব্লাবনে থাকিয়া স্থামবাজারনিবাসী কর্মীপ্রসাদ বােষ মহাশরের আগ্রহে তাঁহাদের সহিত ৭ই আয়াঢ় জয়পুর-প্রকর প্রভৃতি তার্থ দর্শনে বাহির হইলেন। ৮ই আয়াঢ় বয়াবন ছাড়িয়া মথুরা, শশা, শোক, কুজীরা সহর, হেলেনা, মৌ, বিশ্ডা, সেকেলয়া, দেশা ও মোহনপুরা হইয়া ১৮ই, আয়াঢ় জয়পুর-য়াট দরজায় আসিয়া অবস্থান করেন। ১৯ এ আয়াঢ় হইতে ২০এ আয়াঢ় ৫ দিন জয়পুরের য়াহা কিছু ত্রন্থা, দর্শন করেন। এথানে গ্রন্থভার লক্ষ্মীর অংশে অবতীর্ণা জয়পুর-য়াল করেন। এথানে গ্রন্থভার লক্ষ্মীর অংশে অবতীর্ণা জয়পুর-য়াল করেন। এথানে গ্রন্থভার লক্ষ্মীর অংশে অবতীর্ণা জয়পুর-য়াল করা, জয়পুরের দেবদেবা ও শিলাদেবীর কর্থা বেশ উজ্জ্বল ভাষার

বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন। শিলাদেবীর কথা আমরা প্রথম ভারত-চন্দের অর্লাম্পণে প্রতাপাদিত্য-প্রস্কে পাই।—

"শিলাদেনী নামে, ছিলা তাঁর ধামে

অভ্নয়া বশোরেখরী।"

কিন্তু মহাত্রাক প্রতাপাদিত্য কিরুপে শিলাদেবী পাইয়াছিলেন, সে কথা ভারতচল্র লিখিয়া যান নাই। আমাদের তীর্থভ্রমণকার জয়পুরে স্বচক্ষে শিলাদেবী দর্শন করিয়া লিখিয়াছেন. "এ দেবী পূর্বে মধুরাতে কংসরাজার রক্ষন্তলে শিলারপে ছিলেন। ঐ শিলাতে দেবকীর সম্ভানদিগকে আচাডিয়া বিনষ্ট করিতণী ধংকালে বোপমায়াকে এ শিলার উপর আছড়াইতে পিয়াছিল, শিলা স্পর্শমাত দেবী অইভুজা হইর। শৃত্তপবেঞামন করিলেন। ঐ যে শিলা তথায় ছিল, ষংকালে প্রতাপাদিতা ষশোরনগর চইতে এতদ্বেশে আসিয়া ছিলেন, ঐ প্রস্তুরে এক দেবীমূর্ত্তি নির্শ্বিত कत्राहेश चामा नहेश यान । यानीत-नगरत एनती व्यालक इटेश প্রতাপাদিত্যের রাজ্য রক্ষা করিয়া থাকিডেন। দেবীর কুপায় কেই রাজ্যের প্রতি আব্রেমণ করিতে পারিত না। যংকালে মানসিংহ বাঙ্গালা দেশ জয় কয়িতে আসেন, তৎকালে বাঞ্গালা দেশ জয় করিয়া দেবীকে সঙ্গে লইয়া গিয়া জয়পুরে এ, পাছাড়ের উপর স্থাপিত করিলেন। দেবীর নিকট প্রতিদিন মেয<sup>্</sup>মছির ছাগ নরবলি দিয়া পূজা করিতেন। এইমত বলি প্রদান করাতে শিলাদেবী ল্যাকাৎ হইয়া প্রত্যক্ষ হইবেন। থরে রাজা সঞ্জায় জনসিংহ নরবলি নিষেধ করিয়া ছাগলাঁদি বলি দিভেন. ভাৰাতে দেবী ক্ট হট্যা বামদিকে মুধ ফিয়াইয়া আছেন। এ পর্যান্ত ঐরপ দেবী মুধ ফিরাইরা আছেন দৃষ্ট स्ব । অতি উট্ডম মূর্তি, অষ্টভূজা দেবী, হুগঠন, দর্শনে শরীর শোমাঞ্চিত হয়।"

সর্বাধিকারী মহাশয় সচক্ষে শিলাদেবী দর্শন করিয়া রায়ঋণাকর ভারতচক্রেরই সমর্থন করিয়াছেন, স্লেথচ যশোর-খুলনার
ইতিহাসলেথক প্রাণা করিতে চান বে, মণোরেখরী-মৃত্তি মলই
প্রগণার অন্তর্গত কণিলম্নি নামক স্থানে বিরাজ করিতেছেন।

· আনাদের গ্রন্থকার সদূলে ২৪এ আনাবাঢ় জরপুর ভ্যাপ করিয়া বকড়, পাড়ু ও বাঁদরিহৃদ্রি হইয়া ২৭এ আশবাঢ় ক্রফগড় আনাগমন করেন। কুঞ্গড় সম্বন্ধে গ্রন্থকার লিখিয়াছেন, "বাদরিপ্রদরি হইতে দশ ক্রোশ ক্রঞ্গড়, পাহাড়ের উপর সহর। কৃঞ্গড়ের রাজা স্বাধীন, বোধপুরের রাজার আতুপুত্র, রাজধানী অতি উত্তম। বৃদ্ধ রাজা বড় ধার্মিক, পীড়ক নংখন-পালক। রাজ্যের শৃত্ধলা ভাল আছে। মুতপ্ক ভিন্ন তৈলপক দ্ৰব্যাদি বিক্ৰয় করিবার অমুষ্তি নাই। পুর্নিমা, অমাবুস্যা, একাদশী, সংক্রান্তি, রবিবার এই কয় দিবদে খুতের কড়াই আলাইবার অসুমতি নাই। রাজ্যের মুঁথোঁ প্ৰতি কি ময়দান ইত্যাদি বাহাতে ভয়ানক পথ আছে, ভাহাতে ভালমতে রক্ষকগণ নিযুক্ত আছে। অন্ধক্রোশ অস্তর অস্তর এক এক থানা, ভাহাছে জনাদার একজনা ও দশ সভয়ার প্রতি ঘার্টিতে আছে। এই মত রাজ্যরক্ষা এবং পথিকগণের ছিত করিতেছেন। কোনক্রমে কাহারও অপচয় না হয়। দধি যেমন উত্তম ঐু স্থানে মিলে, এমন দধি মথুৱা ব্যতীত কোধাও (मिथ नाहे।" हेल प्रीपः।

<sup>\*</sup> শ্রীসভীশচন্ত্র মিত্র রচিত ঘণোহর-খুলনার ইতিহাস, ১ম ৭৬, ১৫৪-১৬০ পুঠা।

পূর্ককালে আদর্শ হিল্কা নাণ কিরণে প্রকাপালন ও ধর্মভাবে রংল্য ক্ষা করিতেন, ক্ষা রুঞ্পড়-প্রদক্ষে আমর। ভাষাইই কীণ স্বভি পাইতেছি।

তৎপরে সর্বাধিকারী মহাশয় বাণনদী ও কাউড়ি হইয়া বুড়া-পুলরে উপিন্থিত হইলেন। তিনি পুলর সম্বন্ধে লিখিয়াছেন. "পুষরতীর্থ সকল তীর্থের শুরু। এই স্থানে তিন পুষর—বুড়াপুষর. यथा पुष्ठत, कनिष्ठे पुष्ठत । युङ् । पुष्ठत भित्यत युख्छ छ । स्था पुष्ठत বিষ্ণুর যজ্জভূমি, কনিষ্টপুক্র ব্রহ্মার যজ্জভূমি। যথায় ব্রহ্মা বসিয়া ৰজ্ঞাদি করিয়াছিলেন, ঐ কুণ্ডের নাম ব্রহ্মপুকর। ঐ কুণ্ডের পরিক্রম করিতে পঞ্জোশ পরিক্রম দিতে হয়। এত বড় রুছং কৃত দীর্ঘ প্রায় সমভাবে বিস্তৃত হইয়াছে। এই কুণ্ডের চতুষ্পার্যে দেবালয় এবং বসতাদি হইয়া স্থাভিত আছে। কণ্ডের জল ফুশীতল, সুনির্মাল, অগাধ জ্বল। কমলের বন খেত শতদল প্রাফটিত হইয়া কণ্ডের গোভাজনক"। জলজন্ত মকর ক্জীর ইত্যাদি নানাজাতীয় আছে। মংস্থা ন্যাজাতি, ভাহারণ নিঃশঙ্কচিত্তে ক্রীড়া করিতেছে। হংস বক প্রভঙ্গি আর জার জলচর পক্ষিগণ মর্বাদা জলকেলি করিয়া কমল-কুমুদ-মল ভক্ষণে স্থী হইয়া বিহারাদি করিয়া ভ্রমণ করিতেছে : "ইত্যাদি ভাবে পুষ্ণরতীর্থের উৎপত্তি, মাহাত্মা ও আধ্যায়িকা সমস্ত বিষ্ট্রের বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন। এই পুষ্কর-প্রসঙ্গে সর্বাধিকারী মহাশয় একটা বিশেষ সংবাদ দিয়াছেন, "ঐ পর্বতের নাম সাবিত্রী পাহাড়। ঐ পাহাড় ভিন ক্রোশ উচ্চ। \* \* • সাবিত্রীদেবীর মন্দির পর্বতের শিরোভাগে। ঐ মন্দির মধ্যে সাবিত্রী সরস্বতী ছই মূর্ত্তি আছেন। \* \* \* মন্দিরের পশ্চাতে এক কুণ্ড

আছে। ঐ কুণ্ডের ক্ষল অতি উত্তম। ঐ কুণ্ডের দক্ষিণপার্থে এক বাদ্ধণের কল্পা তপতা করিতেছেন। প্রার চল্লিশ বংসর একাসনে তপ-এপ করিতেছেন। দেবীর ভোগান্তে পৃঞ্জারি প্রসাদ দ্রবাদিরা আইসেন, ভাহাই ভক্ষণ করিয়া ভপতা করেন। বার্গাণী ব্রাহ্মণ কলা অল বহসে বিধবা হইয়া সারিব্রার নিকটে সাধন করিতেছেন। ঐ পর্বতে রাত্রে কেছ থাকে না। পূজারিগণ প্রাতে বাইয়া পূজাভোগ দিয়া তাবং দিবা ঐ হানে থাকিয়া সন্ধ্যার আর্তি শীতল দ্রব্যা দিয়া পর্বত হইভে নীচে আপন আপন বাটীতে আইসে; কেবলমাত্র ঐ তপন্থিনী তথার থাকেন। ঐ পর্বতের মধ্যে নানাজাঁতি হিংম জন্ধ আছে, এজন্ত কেছ রাত্রে থাকে না। বৃদ্ধি কেছ গায়ত্রী-পূরণ্ডরণ জন্ত পর্বতে থাকিবার মানসে থাকে, রাত্রে দেবীর মন্দির ভিতরে ঘার ক্ষম করিয়া থাকে, কিন্তু ঐ তপন্থিনী নিঃশক্ষ আছেন।"

ভই আবেণ গ্রন্থকার আজিমীর দর্শন করেন। ৭ই আবেণ রুঞ্চগড় হইয়া পড়াসনি, হছ, বগড়, বড়েনা, ও বাউড়ি হইয়া ১১ই আবেণ জিইপুর আবেদুন। ২২এ আবেণ জয়পুর ত্যাগ করিয়া ঘাটদরজা, পুরা, দোশা, সেকেলরা বেশোরা, ছোকরাবার, পাগরজানি, শোক, সনা, ও মধুরা হইয়া ২০এ আবেণ রুলাবনে ফিরিয়া জাগিলেন। ২০এ আবেণর রোজনামচার গ্রন্থকার নিজের কথা এই রূপ লিথিয়াছেন, "পথে আমার নাসার বাামহ হয়। তাহার পর তের ক্রোপ পদর্কে আসিয়া সকলের সমস্ভাবে বুলাবনে পহিছি।"

ঁ২০এ প্রাবশ ইইতে ৪ঠা চৈত্র প্রয়ন্ত সর্কাধিকারী মহাশর বুন্দাবনে বাস করেন। কানীধাম ব্যতীত আবার কোন তীর্বে এরপ দীর্ঘকাল থাকিতে তাঁহার স্থাবিধা হর নাই। বুন্দাবনে আনেক দিন থাকায় তাঁহার এই প্রধান বৈষ্ণবধানের পূর্ণ পরিচয় স্ংগ্রহের যথেষ্ট স্থবিধা হইয়াছিল। নরহরি চক্রবর্তীর "ব্রজপরি-ক্রমা" অনেকেই পাঠ করিয়াছেন, মণ্রার ম্যান্তিষ্ট্রেট গ্রাউস্ সাহেব বছদিন থাকিয়া বছলোকের সাহায্যে সবিস্তর এথানকার কীর্ভিকথা "মণ্রা" নাম দিয়া প্রকাশ করিয়া গিয়াছেন, তাহাও আমিরা দেখিয়াছি। কিন্তু আমাদের তীর্থ-ভ্রমণকার আমাদের উপযোগী, আমাদের দ্রষ্টব্য ও জ্ঞাতব্য যে সকল কথা লিখিয়া গিয়াছেন, তাঁহার অভাব-সরল শিষ্ট কথার বেরপে ভাবে বৃদাবনকাট্নী লিপিবদ্ধ করিয়াছেন, এমনটি কিন্তু অপর কোন পুস্তকে পাই নাই। অথবা তক্মধ্যে কোন কোন বিষয় আমাদের জানা থাকিলেও এ পর্যাস্ত অপর কোন গ্রন্থে লিপিবদ্ধ হয় নাই ৷ বাগালী ভত্তের যদ্ধেই वुन्नावरनत नुश्वकीर्त्ति উদ্ধाद स्टेशाहिन, वानानी देवश्वव मध्यनारमत উভোগেই বৃন্দাবনের পুন: প্রতিষ্ঠা হইয়াছিল, বৃন্দাবনের দর্বত্তই ভক্ত বাঙ্গালীর কীর্ত্তি বিরাজমান। বৈষ্ণবভক্ত আমাদের বাঙ্গালী গ্রন্থকার বিশদভাবে সেই বাঙ্গালীর কীর্তি ঘোষণা করিতে বিমুখ হন নাই। তিনি বাঙ্গালীর কীর্ত্তিকাহিনী, প্রকাশ, করিয়া বঙ্গ-বাদীকে ও বঙ্গভূমিকে গৌরবান্বিত করিয়াছেন; সেই সঙ্গে ইহাও দেখাইয়াছেন বৃন্দাবনে তথন্ত ক্ষপ্রেমের প্রস্রবণ ছুটিতে-ছিল: বুলাবনে প্রতিক্ঞা, বুলাবনের প্রতি ধূলিকণার একদিন বে কৃষ্ণপ্রেম মুধ্রিত হইয়াছিল, তথনও বৃন্দাবনের প্রকৃতি তাহার সাক্ষ্য দিতেছিলেন। বুন্দাবনের ঝুলন-প্রস্তুপে ভক্ত গ্রন্থকার প্রকাশ করিয়াছেন.—

"শ্ৰীধানে যত দেবালর আছে, সকল স্থানেই বুলন হয়। ব্ৰহ্মবাসিনী সকলে আপন আপন গৃহমধ্যে থুলে এবং শ্ৰীশ্ৰীৱাধা- কৃষ্ণ ঝুলনের গীত গার, তাহাতে কাহাকেও কাহার লজ্জা নাই, কি খণ্ডম, কি ভামর, কি সামী, কি পিতা, কি ভাতা, বে কেহ গুরুতর বাক্তি.পাকুক তাহাতে শরা নাই, বরং তাহারা সমুধে আইসে না। সকল স্ত্রীলোক প্রাবণ মাসে উন্নাদিনী হইরা রাধা-ফুর্ম্ফ-লীলাবর্ণনে মগ্র থাকে।

৬ বর্ষ পূর্ব্বে তীর্থ-ভ্রমণকার বৃন্দাবনে বেরূপ রুফপ্রেম ও ইফাভক্তি প্রত্যক্ষ করিন্ন্ছিলেন, এখন তাহা প্রায় লুপ্ত হইরা আসিতেছে ।

ফান্তনী, পৌর্নিদানীতে বৃন্ধাবনে ফ্লবোল ও ক্সংমেলা দেখিরা

ই চৈত্র বৃন্ধাবন পরিত্যাগ করিলেন এবং হরিলারে ক্স্তমেলা
দেখিতে চলিলেন। প্রথমেই মাটগ্রাম হইর। কোবরি, তৎপর
খএর, খুরজা, গোলাচি হাপর, মিরাট, মজফরনগর, কাজিকাপুর,
রুড়কি ও জলাপুর হইরা ১০ই চৈত্র মঙ্গলবার হরিলারে পৌছিলেন।
চৈত্র-সংক্রান্তিতে ক্স্তমেলা হইবে, কিন্তু তথন হইতেই বাটা মেলা
ভার। "থাকিবার বাটা ভাড়ার জন্ত সহরের সর্ব্বিত্র অমণ করা হইল,
এক এক বর এক শত্র টাকা পর্যান্ত ভাড়া।" এরপ বরও সর্ব্বাধিকারী মহালয়ের পছল হইল না। ক্স্তমেলার মধ্যে তিনি
কিরপভাবে বাস করিলেন, তাহার এইরপ পরিচন্ন দিয়াছেন,—

গঙ্গার নিকট ক্ষড়ির উপর ঘাসের ছাপ্পর তৈয়ার করাইয়া ভাহাতে তিন ঘর হইল। একঘর স্ত্রালোকদিগের, এক ঘর দাসীদিগের আর সম্ভ্যারী যাত্রীদিগের। এই ছই ঘর পূর্ববারী। যে
ঘর দিকণধারী হইল, তাহাতে আমরা সকলে রহিলাম। চতুর্দিকে
ঘাসের টাটির প্রাচীর হইল। দক্ষিণদিকের পূর্বকোনে পারধানা
হইল। তাহার বাহিরে দরোয়ানদিগের দেউড়ী হইল। পূর্ব

দারী বাড়ী হইল, সমুধে পরিদর রান্তা রহিল। তাহার পূর্বে গলার লহর। এ গলাতীরে রম্বরের স্থান।

্ডই হৈত্ৰ হইতে ৩০এ চৈত্ৰ পৰ্যান্ত কুশাবর্তে তীর্থপ্রান্ধ, নীল-পর্কতে চণ্ডী ও নীলকণ্ঠেশর, বিৰকেশ্বর, কনথল, স্থার্জ্ঞ, নীলধারা, ত্রিধারা, পর্যধারা, পর্যান্ত দর্শন স্পর্শনাদি তীর্থযাত্রীর সমূর্য কর্তব্য পালন করেন। নীলপর্কত ও কনথলের বর্ণনা অতি বিশদ ও অনেক জ্ঞাতব্য তথ্যপূর্ণ।

তংশরে কৃত্তমেলার কথা। এরপ উচ্ছেল ও সবিস্তর কৃত্তমেলার বর্ণনা আমরা আর কোথাও পাই নাই। তীর্থ-ভ্রমণে ২৪
পৃষ্ঠব্যাপী কৃত্তমেলার বর্ণনা আছে। তাঁহার কৃত্তমেলার বর্ণনা
এত স্পাই, এত উচ্ছেল, এত স্থললিত ও স্থান্থলাই। যে, পাঠ করিতে
করিতে মনে হয়, যেন আমরা প্রত্যক্ষ সেই বিরাট উৎসব
সন্দর্শন করিতেছি। এই মেলার বিশালতার একটু পরিচয়
দিতেছি—

"হরিশ্বারে ক্জের মেলাতে বহু দেশস্থ নানার্রপ মহুষোর একঅ
মিলন হইরাছে। প্রায় দেড় ক্রোড় মহুষা, তৃত্তির জীবকুরী
আছে, চৃতৃদ্দিকে তিনক্রোশ পর্যান্ত মহুষোর বসতি হইরাছিল।
আমরা বে স্থানে প্রথম আসিয়া ঘর বাদ্ধিরাছিলান, তাহার
চৃতৃদ্দিকে ময়দান ক্রড়ির উপর ছিল। কিন্ত হই তিন্দিন মধ্যে
এমত বসতি হইল যে, তিল খুইবার স্থান রহিত হইল। এই
সকল মক্তৃমি লইরা পরম্পের বিবাদ হইতে লাগিল। স্থানাভাব
এ পর্যান্ত হইল—মন্থ্যা সকল কেবল বসিয়া এবং ভ্রমণ করিয়া
কাল্যাপন করিল। গলার নৃতন লহরের পূর্বপার নীলধারীর
পশ্চিম প্রায় তিন ক্রোণ ব্যক্ষের জন্মল ছিল। ঐ জন্মলের

মধ্যস্থলে এই মেলার রক্ষার্থে এক কালাপণ্টন ছিল। তৎপরে ক্লপ্লে সকল লোক শৌচক্রিয়া করিত। কিন্তু এত মহযোর সমাপম হইল, ঐ অপরিফার ভূমি যত ছিল সকল স্থান পরিষ্কৃত হইয়া নগরের স্থায় বদতি ও বাজার হইল ১ হরিছারের উত্তর-प्रक्रिंग नम्राकान रेखक ख्वीरकन नागारेन कश्चन, शृर्स-शन्तरम চারিক্রোশ ইস্তক নীলপর্বত নাগাইদ জোয়ানপুর, এই চতু:-সীমার মধ্যে সর্কত্তে নগর, সহরের ভার মহুষ্যের বসতি এবং বাজার স্থাপিত হইল। সকল পথে এমত লোক গতায়াত করিতে লাগিল যে, প্লথ চলিতে গেলে মহুষ্যের ঠেলাঠেলিতে প্রাণ ওষ্ঠাগত হয়, গলদ্ঘর্ম হইতে হয়। তথাচ শ্রীযুক্ত কোম্পানি বাহাছরের তর্ফ হইতে এমত বন্দোবক্ত ভইয়াছিল যে, যে পথে লোক গমন করিবে, সে পথে পুনরাগমনের লোক আসিতে পারিবে না। এই বন্দোবস্ত জন্ত স্থানে স্থানে বক্ষকগণ ষ্টিহন্তে ভ্রমণ করিতেছে। \* \* \* বাজার সাজাইবার কথা কি পর্যান্ত লিখিব, অগণিত দোকান। মনোহারী দোকান নানাবিধ দ্রব্যাদিতে স্থশোভিত. দিরীওয়ালাদিপের প্রাফ পাঁচশত দোকান। \* \* \* \* কাশ্মীর, অমৃতস্হয়, নুরপুর, লুধিয়ানা, রামপুর ইত্যাদি প্রদেশের পশ্রীনার উত্তম উত্তম বস্ত্র সকলের প্রায় ছইশত দোকান। বৃন্দাবনের এবং কাশীর, অমৃতসহর, শিয়ালকোট, পেশোয়ার, মূলতান, ভোট, রামপুর ইত্যাদি সহরের মহাজ্বন সকল পাহাড় হইতে উলবুজাদি আনাইয়া চারিশত দোকান লুইপটীতে হইয়াছিল। পদ্ধবস্তাদির দোকাম এবং স্থার বস্তাদি নানাদেশীয় দোকান পাঁচখতের কম নছে। পিতল, কাঁসা, ভামা, দন্তা, লোহার বাসন এবং অক্সান্ত তৈজ্য নানাপ্রকার আমদানী হইয়া কমবেশ একশত

দোকান ছিল। ক্লাক্ষ, ভদ্ৰাক্ষ, স্ফটিক, পদ্মবীজ, তলসী, বিশ্ব, পলার দোকান অগণিত। এইরূপ শ্বেতপাধরের থালা, বাটী, त्त्रकाव, हँ का, कत्रजी, त्मक, टोकी, त्कोठ, त्कात्रा देखानित দোকান, নানাজাতীয় মেওয়া, নানাজাতীয় মদলা, পান, ভাষাক, তরি-তরকারী, নানা রকম ফলাদি, নানা প্রকার আচার ও মোরব্বার শত শত দোকান হইয়াছিল। মেঠাই বা হালয়াইয় দোকানের সংখাই ছিল না। এতদ্দেশী লোক রহুই করিতে চাহে না। পুরি, কচুরি লইলেক, গঙ্গার তীরে বসিয়া আহার করিলেক, মেলাতে বেড়াইতে লাগিল, এইমত অনুেক মনুষ্যের অবস্থা। এজন্ত পুরি, কচুরি অধিক বিক্রিয় হয়। অমুতস্হরের দোকানদারদিগের পুরি কি উত্তম হয়, তাহা বলিচেত পারি না। এমত পাতলা পুরি কোঝাও হয় না, তথাচ ভাহারা হাতে গঠিয়া ভাজিতেছে--চাকি বেলুন স্পর্শ করে না। সাহরণপুরের দ্যোকান-দার এবং দিল্লীর দোকানদার সকলে উত্তম উত্তম নালা রক্ষ মিঠাই তৈয়ার করিয়া, মিঠাইতে ঘর বাড়ী দালান রথ ইত্যাদি নানা মত কারখানা করিয়া দোকান সাজাইয়ছিল। নীল-ধারার ছই কলে কঞ্ল পর্যান্ত সপ্তধারাবধি কড়ির উপরে থাকী, বৈষ্ণৰ, রামাং, নিমাং, গিরী, পুরী, ভারতী ইত্যাদি বৈষ্ণৰ স্ত্র-দারের আসন হইয়াছিল। দশ হালারের ঝণু হইবে। ইহাঁরা অযোধ্যা, জনকপুর, মিথিলা, নৈমিষারণা, তপোবন, কান্তকুজ, বিঠোর, কদলীবন, পঞ্জাব, কাশ্মীর, বালালা, উড়িষ্যা, গুজ্রাট, বোৰাই, নাৰ্থবার, বারাবভী, কাঞী, অবস্তী, জন্নপুর, ভন্তপুর, श्रीशानिवन, मार्डाशंत, विकानीत, अखन श्रव, बांगी अम्मान নর্ম্মণা, আবু, গিরণার, লোহাগল, রামপুরা, কুলেনি, মঞ্জি,

দেপাটু, কুলু, সিম্ল্যা এবং আর আর শত শত পর্বত ও বন হটতে সকলে আসিয়াছেন। আপন আপন ভল্লন-সাধনে সর্বাণ ষয় আছেন। \* \* \* অনেকে নানা শাস্ত্রে পণ্ডিত \* \* । শ্রীদইচ্ছাতে প্রতি দিবদ এত দ্রবাদি উপস্থিত হয়, যে সকলে আহালাদি করিয়াও দাতব্য হয়, কেছ<sub>ে</sub> সঞ্চ রাথে না। সঞ্রের . মংখ্য ধুনির কাঠ, যাহাপর্বত হইতে শ্রম বারা আনোহর। \* \* বে সমস্ত আ্থড়াধারী মে'হস্তগৰ আদিলাছেন, ইহাদিগের শিব্য বড বড রাজা আমীর লোক সকল আছে হিংাাদিগের মানস-মতে খরচ-বরচা সকল দিয়া থাকে। এক এক মোহস্তের সমভাবে হাজার বারশত, পোনের শত, ছই হাজার, কাহার বা ইছার অধিক' চেলাগণ সুমুভাারে আছে। 🔹 💌 সানের সময় আমাপত্তি হইয়া বিবাদ না হইবার জন্ত এমত সুমুক্তি করিল যে. পরস্পরে কাহার সহিত কাহার প্রথমধ্যে কি বাটে সন্দর্শন হইবার সংযোগ বৃহত্ত না প্রথমে পোসাঞিদিগের সান। প্রথমে শ্রণাননকে স্থান। করিতে আনিলেন। সাহরণপুরের থোদ মাজিষ্টের ও কাপ্তেন সাহেব অগ্রগামী হস্তী আরোহণে একশত সিপাহী লাঠিচাতে, পুলিশের পদাতিক্সণ পদব্রজে অগ্রপশ্চাতে লোক ভদ্বাৎ করিতে করিতে, পাঠি ফিরাইতে ফিরাইতে চলিল, ভন্মধ্যে গোপাঞিষের সমভাধের চল্লিশটী উট, একশত সভয়ার ঘোটকের উপর, বার হন্তী, হন্তীর উপরে তাদের নিশান, গোদাঞি যে নুস্তীতে আরোছণ করিয়াছেন ভাহার রূপার আমারি, স্বর্ণ-থচিত ঝুল, শুণ্ডে অর্ণমিশ্তিত, গলদেশে পুচ্ছে রূপার তবক ইত্যাদি আভরণ, আমারি উপরে প্রবণানল মোংস্ত, ছই পার্থে ছইশত চামর, রূপার দাঞ্জি, এক কারচোবের ছত্তি, রূপার দাঞ্জি,

শিরোপরে আশাশোটা, পঞ্জা, বল্লভ, পঞ্চাশ আডানি, মোরছোল, এই সকল আসবাব। অগ্রে উটের উপর (ও) স্বোডার উপর ভৱা এবং তাস। কাড়া বাদ্য আছে। এই স্কল অগ্রে অগ্রে বাদ্যধ্বনি, পরে হাঝার এগার্শত চেলার সমভ্যারে এবং চুইশভ পর্মহংস, এক শত দণ্ডী ও অপরাপর অভাগিত যাত্রীতে ক্মবেশ এক হাজার সমভাারে সাম জন্ম হাতা কবিয়া নগবের পশ্চিম দিক হইয়া, প্রতির প্রধার দিয়া যে, পথ আছে, ঐ পথ দিয়া হরপিড়ির ঘাটে পঁছছিয়া, জলে নামিয়া প্রথমত: নিশানকে ঐ খাটের জলমধো বাদাধ্বনি করিয়া আহতি করা তইল। পরে के निर्मानक मश्रेवात शतिकम कविश मकल स्नानांनि कविन। মান করিবামাত্র উক্ত দাহেবগণ তাপুন আপুন পদাভিকগণ সমভাবে ঐ সকল ব্যক্তিকে নৌকার পুল পার করিয়া, নীল-ধারার নিকটে রুড়ি হইয়া যে পথ লহরের ধারে ধারে আছে. ঐ পথে আসিয়া বিভীয় পূলে পার করিয়া পুন: পশ্চিমপারে আসিয়া পশ্চিমমুখে যে পথ আছে. ভাছাতে আদিয়াত চৌরাস্তাতে উঠিয়া যাহার যে স্থানে আখড়া, তাহাকে সেই স্থানে প্রভাইরা দিল। এইমত গমনাগমনের প্রথা করিয়া রাজপুরুষেরা সকলে সদলে সমভাারে থাকিয়া ক্রমে ক্রমে বার গোসাঞি, মোহস্ত (ও) আথড়া-ধারীদিগকে পর্ব্বোক্ত পথ দিয়া আদিয়া উক্ত রীতিক্রমে সকলকে লানাদি ক্রিয়া সমাধান করিল। বার আথডার মোহস্কের কাহার আসবাৰ নিশান, হস্তী, বোড়া, উট, আশাশোটা, চামর, মোরছোল हेजानि आज़ानि पक्षा काशांत्र कम नरह, वतः शुक्रवारवेत वनस्त्री আথডার গোসাঞিয়ের সমভাারে এগার হস্তী ও হস্তিনী আছে। ইহা-দিগের গমনকালে কি শোভা তাহা একমুখে বর্ণনা করা যায় না।"

গোসাঞিদিগের লান শেষ চঠলে তৎপরে সল্লাসিগণও গোসাঞিদিগের মত শোভাষাতা করিলেন। "সন্ন্যাসিদিগের শিষ্য অনেক রাজা এবং ধনাচ্যগণ আছেন। \* \* গদিয়ান সন্ন্যাসি-গণ হস্তিপৃঠে আরোহণ করিয়া স্নানে যাত্রা করিলে পর সমভাারে কমবেঁশ পাঁচ হালার সন্ন্যাসী, মহুকে জ্বটাভার, বিভূতিভূষণ, ক্ষুদ্রাক্ষ ক্ষৃটিক পদ্মবীজ্বের মালা ধারণপূর্বক কাহার কটিতটে কৌপীন লাল রঙ্গের উপরে বহির্কাস, কাহার লৌহ কি পিওলের শুঝাল, কটিবেষ্টিত, কাঠের কোপীন, কেছ০ কেছ উলঙ্গ-গাঁ**জা** চরদ্ভাগ ধুত্রাতে চকু ঢুলু ঢুলু সকলে শিবাকৃতি হইয়া "হর হর গলাধর বম্ বম্" গালবাল্ভ করিয়া রঙ্গে ভঙ্গে স্নানে গমন করিতেছেন, দেখিতে কিবা শোভা, তাহা কহিতে পারি না। 'কত খত উর্দ্ধ-বাছ অবধৃত মৌনত্রতী কনেক সম্প্রদায় ষোগিবেশে শিলা ভত্তর লইয়া হর-গুণামুবাদ কীর্ত্তন করিতে করিতে গমন ( করিতেছেন)। পুর্বোক্ত পথে রাজপুরুষগণের সমভ্যারে হরপিডির ঘাটে লান ক্রিয়াপুল হইয়াপার করাইয়া পুন: পুলে পার ক্রিয়া পশ্চিম পারে আদিয়া, যাহার যে আদন তথায় তাহাকে পছছিয়া দিয়া পরে থাকী বৈষ্ণবদিগে রানার্থে লইয়া যাইল। \* \* ঐ সকল বাজিদিগকে প্তছাইয়া রাজপুরুষ্গণ আপন আপন পদাতিকগণ সমভারে কথাল যাইয়া রাজগণের সান জক্ত তহিরে রহিলেন। প্রথমত: বিকানীরের রাজা স্নানে যাত্রা করিলেন। রাজার সম-ভাবে ত্রিশ হাজার লোক। প্রথমে ঘোড়ার উপর ভঙ্কা ভাহার পর বাণ নিশান হুই শভ, তাহার পরে খাদগেণাদ ভাল ভাল ম্ব্রতানী বনাতে কারচোবের কর্ম, তাহার চুইশত স্বর্ণ রূপার আশাশোটা, পঞাশ রূপার ছড়ের বল্লন, পঁচিশ পঞ্চা, দশ ছত্ত্ত,

অতি উত্তম রেশমী কাপড়ে অর্ণতারে তারকুণী, কারচোর অর্ণের দাণ্ডি, মুক্তার ঝালর, একছত্ত রাজার মন্তকে আর উদ্রেপ এক আড়ানী খেতচামর, ছই পার্খে ছই স্বর্ণ দাণ্ডি, মোরছোল, ভজ্রপ ত্রি**শ হতী সু**স্ভিজ্জ, পৃচি**শ যো**ড়-সুওয়ার অস্ত্রধারী যায় বন্দুক রাজার অগ্রহণং আর চুই পার্যে রক্ষার্থে আছে। কাপ্তেন ও মাজিষ্টর সাহেব আপন পদাতিকগণ সমভ্যারে লইয়া অগ্রে অর্থে লোকের ভিড ঘচাইয়া দিতেছে। এইরূপে গমন করিয়া সহরের পশ্চিমদিক হইরা যে পথ দিয়া আর আর সকলে স্নানার্থে আদিয়া-ছিল, দেই পথ হইয়া রাজাকে স্থান জন্ত আনিয়া হয়পিডির ঘাটে ল্লান করাইয়া, কুশাবর্ত্তের ঘাটে পিওদান করাইবার জন্ত আনয়ন করিল। রাজা ঘাটে প্রভিয়া শ্রাদাদি করিলে:। নয় সের সোণার নয় পিওাদান, এক হন্তী মায় আসবাব, আর ভাল এক ঘোড়া, স্থবর্ণের কড়া, মোতির মালা, হীরার অঞ্জরি, শালের জোড়া, মুলভানী জোড়, পাগ, দেংপাটা (ও) হাজার মোহর দক্ষিণা দিয়া আপন পাণ্ডাকে তাবং দ্রবাদান করিয়া তক্তারামার উপর উঠিয়া যাত্রা করিলেন। তক্তারামার ধৌল হার, রূপার নির্মিত স্বর্ণহিত স্থাভিত, আর চতুর্দোলে স্বর্তানী বনাতের উপর কারচোবের কাজ করা উত্তম ঘের্রটোপে বেরা, বাঁলে দোণার মুথ, উপরে সোণার। এই মত চাহ্নি চতুর্দ্ধালে চারি রাণী আর দমভাারী সকলে হস্তিপৃষ্ঠে এই মতে সকলে কুশাবর্ত্তের ঘাট হইতে উত্তর দিকের পুল পার হইয়া গলার প্রস্থিপার নীল্ধারার পশ্চিম দিয়া যে পথ, তাহা দিয়া আসিয়া দক্ষিণের পুল দিয়া পশ্চিমপার হইয়া কথাল বাইবার চৌরাহে প্রছিয়া তথা হইতে কালালীদিগের দান জন্ত সিকি আধুলি টাকা ফেলিতে ফেলিতে কৃত্ৰল পৰ্যাস্ত

প্রস্থান্ত ক্রমে ক্রমে রাজাদিগের স্নাম-দান কর্ম সমাপন ফরাইতে প্রায় রাত্তি এক প্রহর পর্যান্ত সম্পূর্ণ মেলাছিল।

গ্রন্থকার ছবিদ্বারের কন্তমেশার বিবরণ বেরূপ সবিস্তার লিখিয়াছেন, আমরা তাহা হইতে অতি সামাক্ত অংশমাত্র উদ্ভ করিয়া দেখাইলাম। কৃস্তমেলার বিবরণে আময়া সেকালের ভাৰতীয় আন্তৰ্জাতিক প্ৰদৰ্শনীৰ সন্ধান পাই ৷ এই মেলা উপলক্ষ্য কবিষা ভারতের সকল প্রদেশের সকল সম্প্রদায়ের জনসভ্য, অত্ন বিভবশালী ঐশৰ্যোৱ মহাড়ম্বরে উদ্পু কোটীপতি হইতে সম্পূর্ণ ভোগবিলাসবর্জিত জ্ঞানপ্রভায় উদ্ভাসিত মুক্ত পরমহংস প্রায় জ্ঞানী অজ্ঞানী স্কুল প্রকার মানব, বিভিন্ন সম্প্রদায়ের ব্যবহার্যা অসংখ্য দ্রবাসস্ভার এবং ভিন্ন ভিন্ন সম্প্রদায়ের আহার্য্য অসংখ্য খাল্যসামগ্রীর পরিচয় রহিয়াছে। এই মেলায় আংসিয়া অল্ল সময়ের মধ্যে বছ বিষয় শিথিবার, দেথিবার ও ভাবিবার हिन। त्मरे लाकहिति खर्व मश्मिनत्म मत्भा त्मकाल सर्थ-জগতের চিত্রের আভাস পাইতেছি। গ্রন্থকার ভারতবাসী হিন্দু-নীধারণের ধর্মনিষ্ঠা, কর্ত্তব্যপরায়ণতা, সম্প্রদায় ও পদোচিত আভিজাত্য লইয়া নমাজে প্রাধান্ত, আত্মর্য্যাদাবোধ, ধর্মা-চরণের জন্ত সকল প্রকার ক্টসহিষ্ণুতা এবং সাম্প্রদায়িক আড়ধর ও দানশীলতার যথেই পরিচয় দিয়া গিয়াছেন। সময়ে রেলগাড়ী বা পথঘাটের এখনকার মত স্থবিধা ছিল না, তস্বরের ভয়ে যে সময় পথ চলা অতিশয় বিপজ্জনক ছিল, দে সময়েও হিলুজনসাধারণ ধর্মের জন্ত, পুণালাভের **জন্ত** ও পার-লৌকিক উন্নতি-প্রাপ্তি-আশায় কিরূপ অকুতোভয়ে শত শত কোল দুরে গমন করিতে কিছুমাত ক'ইবোধ করিত না, ভাষার পরিচর ঐ ক্সনেবার পাইয়াছি। এই সে দিন হরিবারে মহাকুস্ত হইরা সিরাছে। অনেকে তাহা স্বচক্ষে দশন করিরা আসিয়াছেন; সেদিনও ধর্মভীক হিন্দুসমাজের কতকটা সজীবতা দেথা সিয়াছিল বটে, কিন্তু এই মহাকুন্তের ৬০ বর্ষ পূর্বে আমালের ধর্মপ্রাণ গ্রন্থকার যে কুন্তমেলা দেখিরা আসিয়াছিলেন, কুন্তমেলার বিবরণ হইতে আমনা বেশ ব্ঝিডেছি যে, হিন্দুসমাজের নানাদিকে এখন যথেষ্ট বিপর্যায় হইরাছে, লোকের মতিসতিরও যথেষ্ট বির্বর্তন ঘটিয়াছে। আলোচ্য "তীর্থ-ভ্রমণ" গ্রন্থ ইত্ত সেকালের ও একালের নানা অবস্থার তুলনার সমালোচনা করিবার অনেক উপকরণ পাওরা গিয়াছে, এক্লণ উপকরণ অন্তর্জ হর্শভ।

৮ই বৈশাধ সর্বাধিকারী মহাশর হরিবার পরিত্যাগ করিয়া উত্তরাপণ্ড দর্শনে বাত্রা করিবেন। এইবার ক্রমেই তাঁহাকে হিমালয়ের উচ্চ প্রদেশে উটিছে ইইবে। তাঁহার সংবাত্রী ছিলেন সন্ত্রীক কালীপ্রসাদ ঘোষ, কাশীর শিবরতন বাবু, ভোলানাথ মুখোণাধ্যার, রামচরণ চক্রবর্তী, নবক্রফ চটোপাধ্যার, মুখোনাথায়ের মাতা ও স্ব্যেষ্ঠ বধু, কালীবাবুর প্রেছিতের বধু ও তাঁহার ছল বৎসরের কন্তা, কালীবাবুর জ্ঞাতি-সম্পর্কে পিনী, দেওয়ান নক্ষ্মার বস্ত্রর ভগিনী বিক্পারা ও কাঙ্গালী নাপিতের ভগিনী, বুন্ধাবনবাসিনী চারিজন বাঙ্গালী স্ত্রীলোক, এ ছাড়া তাঁহাদের সঙ্গে একজন চাকরাণী গুইজন চাকর ও গুইজন দারোয়ান। তাঁহাদের মধ্যে কেবল বাবু কালীপ্রসাদ ঘোষ সন্ত্রীক ছ্ইজনে গুই ঝাপানে, বাকি সকলে পদপ্রজ্ঞে চলিলেন। হিমালয়ের উপর উত্তরাপথ কি ভীষণ ছ্র্ম্ম, পর্গুলো কির্ম্প দারুল

কট্টপাধ্য, তাহা আর বুঝাইয়া দিতে হইবে না। এখনকার দিনে অনেকেই পদব্ৰকে তীৰ্থভ্ৰমণ দুরের কথা-উপবৃক্ত বান-বাহনের সাহায্যেও হিমাণয়ের উত্তল মার্গে উঠিতে নারাজ, কিন্তু তথন-কার দিনে ছোট বড় সকল হিলুই ধর্মোদেশে কত কট্টই সহিতে পারিতেন, অমূশ্নরোগাক্রাস্ত কেবল আমাদের ভুক্ত গ্রন্থকার মলিয়া নহে, লক্ষপতি দেওয়ান নলকুমার বহুর ভগিনী প্রভৃতি বেরপ সংসাহস, ক্টসহিষ্ণুতা ও ধর্মপিপাসার পরিচয় দিয়াছেন, এখনকার দিনে বালালী স্ত্রীপুঁক্ষমাত্তেরই তাহা অনুক্রণীয় সন্দেহ নাই। ভক্ত সর্কাধিকারী মহাশয় সদলবলে অবিশ্রাস্ত বৃষ্টিতে ভিজিতে ভিজিতে কমল মৃতি দিয়া হিমাণয়ের বন্ধুর প্রদেশে চলিয়াছেন। ুক্রমে ছ্বীকেুণ দর্শন করিয়ন লছ্মন-<u>কোলায়</u> উপনীত হইবেন। লছমন-ঝোলায় আসিয়া লিখিয়াছেন, 'ঝোলা দেখিয়া সকলের জ্ঞান হত হটল। তাহার কারণ ঐ ঝোলার আফুতি-পাহাড়ের উপর হুইতে পাঁচশত হাত রশি, বিপরীত পারে পাহাড়ের উপর গাছ আছে, তাহাঁর সহিত বন্ধন। বেমন সিঁড়িমই এই মত থাক থাক বুংলা, ছই পার্খে দড়ির রেলবন্ধ, কোমর পর্যান্ত উচ্চ। তাহার উপরে ছই পার্শে মোটা ছই রশি আছে, ভাহাধরিয়া ঐ ঝোলার উপর উঠিয়া ঐ থাদি কার্চের উপর পদক্ষেপ করিয়া ভীতব্যক্তি উপরের রজ্জুধরিয়া ৮গঙ্গা পার হয়। একজন মতুষ্য যাইতে কি আসিতে পারে। যদি কেহ যাইতেছে আর বিপরীত পার হইতে কেহ আদিতেছে, তাহা হইণেই বড় ক্রিন হয়। ঝেলার হুই মুখ উচ্চ পর্কতের উপর, মধ্যস্থল নিম হইয়া ঝুলিয়া আছে. ঐ স্থান আইলে প্রাণ সশ্ভিত। ভাহার कावन (व, छानीवली अन्ना चारहम, डाहाव वन এठ व्याखवडी

যে, দশ বার শত মন যে প্রস্তর তাহাকে ভাঁটার ক্রায় গড়াইয়া আবে বুহং∷বুহং বুক্ষণকল দওকাঠের ভায় ছিয়ভিল করিয়া ক্রেতের লারা দেশ দেশান্তরে ভাসাইয়া লইয়া যায়। জলের শক এমত বিপরীত হইতেছে যে, ঝোলা হইতে হালার হাত নীচে গ্ৰার জল, তথাচ তাহার কলকল শব্দে কর্নে তালালাগে এবং নিকটের ব্যক্তির সহিত কর্থাপকথন করিতে হইলে উচ্চৈঃম্বরে कहिए इस, जरव वाका कर्गकूरत श्रायम करता (बाना हरेल এক হাজার হাত এই বিকটরূপ গলার জল, তাহাতে ঝোলাতে অর্দ্ধ হস্ত অস্তর অস্তর পদক্ষেপ করিতে হয়। কিছুদ্র গমন করিয়া ষাইলে ঝোলা হেলিতে ছলিতে খাকে, মধ্যস্থলে আইলে অতিশয় আনোলিত হয় এবং এক পার্য উচ্চ এক পার্য নিয় হয়। তৎকালে "আহি মধুসদন, আহি মধুস্দন" এই অন্তর্গাস হয়। আবার এক আশ্চর্যা এই যে, পূর্ব্ব পূর্ব্ব সাধুদিগের বাচনিক এমত শ্রুত ছিলাম যে, লছমন ঝোলা পার ১২ইবার সময় দৈববাণী গুনা-ষায়, ষেন পক্ষীর ভাষ শব্দ করিয়া কৈছে, 'পভি! সাবধান পগ্-ধ্যান, মুখে বল রাম নাম, হিঁয়া কহি নাহি হার্ম আপ্না।' এই শত শুনাপথ হইতে শুনা যায়, তাহা ঝোলাতে উঠিবার সময়ে আপন স্বকর্ণে শুনিয়াছি। তাহা বিশেষ ভদারক করিয়া দেখা হইয়াছে, কোনজ্ঞ মহুষ্য কি পক্ষী কিছুই নহে—দৈববাণী ভাষার সন্দেহ নাই। পরে ঝোলাতে উঠিগ্ন আপুন ইপ্তমন্ত্র জপ করিতে করিতে পার হওয়া চইল।"

গ্রন্থকণর বেরপে লছমন-বোলা পার হইবার পরিচয় দিয়ছিন, ভাষতে পাঠক ব্ঝিতেছেন কি দারুণ সভ্টজনক শ্রন্থায় ব্যাপার। মাত্রিগণের ইহার পর যে প্রজেশের লাঘ্য হইবে, ভাষা নহে, এই লছমনঝোনা হইতেই পথক্লেশ আরম্ভ। তৎপরে গ্রন্থকার ছর কোশ পথ আসিয়া ফুলাড়িতে শক্ষণের তপোবন্দর্শন করেন। তাহার ছর কোশ দ্রে পাহাড়ের চড়াইর উপর বিজলীথাম— "ছর জোশ জুনিক চড়াই, ইহাতে প্রাণ ওঠাগত। বিশেষতঃ প্রথম পর্কতের উপর এতদ্র উঠিতে হইতেছে, কিন্তু জণদীখরের এরূপ দয়া প্রকাশিত আছে যে, স্থানে স্থানে জলের ঝরণা এবং বৃক্লের ছারা। পাহাড়ে চড়িতে যত ক্লেশ তাহার প্রমশ্ভির উত্তম উপার আহছে। পর্কত অতিশ্ব স্থরম্য,। বন, জল, স্থল, ফ্লে ফুলে পর্কত স্থাভিত।"

বিজনী হইতে দশ জোশ দ্রে বাস্থোলা ও বাসাশ্রম, এই ব্যাসাশ্রম হইতে ছয় জোশ গিয়া লছমন ঝোলার লায় এক ঝোলা

পার হইয়া বথাঁজনে দেবপ্রালা, গলোওরী, য়মুনোত্রী, য়ালীবাল, টেরির রাজধানী শ্রীনগর, শিরোবগড়া ও রুজ্পলায়া। এই সকল স্থান দর্শন করিয়া সবলে ওপ্রকাশীভে আগমন করেন। এই ত্র্ম হিমালয় পর্কতের উপরেও গ্রহকার সদলে প্রতাহ ৮।১০ জোশ ইটিয়াছেন। শুপ্রকাশীভে গলার জল গোমুথ দিয়া আর য়মুনার জল গিত্রমুব দিয়া উপর হইতে কুণ্ডে পতিত হইতেছে। ১ জনকে সয়্যাদী, বল্লচারী ও দ্ভী আছেন। ইহারা বোগশাবন করিতেছেন।

তংপর দিন সকলের ত্রনার্থ দুর্শন। "ত্রনাথের পাহাড় আট কোশ উক্ত চড়াই, বড় বিকট পথ, পাকদণ্ডিতে উঠিতে হয়। এক এক পদিচিহতে পদক্ষেপ করিয়া যটি আশ্রমে আট কোশ চড়িতে হইবে, মধ্যে মধ্যে পর্বত উপরে রক্ষানি আছে, বৃক্ষমূলে বিশ্রাম। এই মত তাবং দিবাতে। পর্বতের শিরোভার্যে যে তুম্বনাথের মন্দির আছে, তাহাতে মহাদেব লিঙ্গরূপে বিরাজিত। 🔸 • এই পর্বত বরফে আছোদিত। মন্দির বরফে ঢাকিয়া থাকে।"

তৃত্বনাথ দর্শন করিয়া গ্রন্থকার পাটন-চটা ইইয়া হিমালয়ের তৃত্বপুলে ত্রিগ্র-নারায়ণ দর্শনে আদিলেন। "এখানে চতৃত্বি নারায়ণের মুর্তি আর্ছে, আর মহাদেবের তিন যুগের ধুনি আলিতেছে। \* \* সাধনার স্থান নগরত্ব্য—আনেক সয়াদী, ত্রজ্বারী মোহস্তরণ তপস্তা করিতেছেন। তপস্তার উত্তম স্থান—এই হিমালয়ে গিরিয়াজ ও মেনকার বাসস্থান, গোরীর অন্মহান। \* \* এ পর্কতে ফল কূলে বৃক্ষপণ স্থাোভিত সজীবিত। পর্কতের স্থানে স্থানে ভাল ভাল ঝরণা আছে। অস্ত অস্ত্র পর্কত ইইতে এ পর্কতের মন্থ্যপ্রণ মিইভাষী, জ্বীগুণ, বালিকা যুবতী কি বৃদ্ধা সকলের মন্থ্যপ্রণ মিইভাষী, জ্বীগুণ, বালিকা যুবতী কি বৃদ্ধা সকলের মন্থ্যপ্র কিন্তু ব্লাভাব—কর্মাণ গ্রেষান এবং আচ্ছাদন। সকলের মন্তর্কে কন্থবের টুপী কিন্থা পার্গড়ী।"

অনস্তর ঝিলমিল-চটা, মুওকটা গণেশ, উষ্ণপ্রস্থার গোরীকুও ও ভীমগড়া হইরা কেদারনাথে আগমন করিলেন। কেদারনাথে আসিবার পথে সাজসজ্জ ছিল—"গাত্রে তুলুভেমা জামা, তাহার উপর লুই, বনাত কম্বল মুড়িল দেওরা, হাতে আপন আপন ষষ্টি, ক্ষন্ধে পূজা ভেটের জ্ব্যাদি।" পথের এইরূপ পরিচম্ন দিয়াছেন—"গল্পাগর হইতে কেদারনাথ পাহাড় চারিশত ক্রোশ উচ্চ। এ পর্কতের শিরোভাগে, উঠিয়া গমন করিতে হয়, বরক্ষের পর্বত কত বুগের বরক্ষ জমিয়া আছে, তাহার নিরাকরণ করিতে পারা ষার্ম না। এই তিন জ্বোশ পর্যন্ত তুগাদি জ্বেম না, ক্রেক ধ্বলাকার। চলিতে পারের সাড় থাকে না। যেনন ঝিন্ঝিনা হইয়া পা জ্বাড় হয়, সেইনত বরক্ষে প্রক্ষেপ প্রের আচৈত্ত ভ

হয়। পথের ভীষণত কি কহিব। বরফে আচ্ছাদিত পর্বত। ভাহার বর্ষ্ণ্রকল কাটিয়া পথ হইয়াছে, এক এক পদক্ষেপ হইতে পারে এই পরিদর পথ। যে যে স্থানে পদের কোন চিহ্ন আছে, তাহার উপর পদক্ষেপ করিতে হয়। যদি সমুধে কেছ আসিতেছে, তাहा पिथिया कि शिः आम शाम शाम शमक्त्र करेत, उरक्रमश विशम ভয়। পশ্চিম দিকে পদক্ষেপ হইলে বরুকে কোমর পর্যান্ত কোথার অস্থায়ী হইয়া ভূবে, পূর্বাদিকে পদক্ষেপ হইলে কোথায় বায় ভাহার নিরাকরণ হয় না, তাহার কারণ পাহাড়ের 'গোড়েন; কমবেশ দশ হাজার হাজ, নিমে মলাকিনী বহিতেছেন, তাহার উপরে বরফ আচ্ছাদিত আছে। মধ্যে মধ্যে কোথাও কোথাও বরফ গলিয়া কাঁক হইয়াছে, ড়থায় জানা যায় যে, মলাকিনীর প্রোত বহিতেছে। নাথের মন্দির দেখা যায়, পুল হইতে এক ক্রোণ। এ বংসর একশত এগার হাত ব্রফ পড়ে, ত্বাহা কাটিয়া মন্দির বাহির করে। মন্দিরের চিহ্ন ইহাতে পার যে, যত উচ্চ হইয়া বরফ পড়ক, মান্দরের উপর য়ে তিশূল আছে, তাহা আরুত হইবে না। যে সকল বাড়ী, ঘর, কুণ্ড, ভীথ, দেবালয় আছে, সকল বরফে ঢাকিয়া আছে—কেবল ধ্বলাকার, ভাষ্তে অন্ত চিহ্ন কিছুমাত্র নাই, দেখিতে সুশোভিত। পুরাতন যে বরফ আছে, তাহার বর্ণ কিঞ্চিৎ মলিন, নুতন যে বরফ তাহা জাতি ভাল, সাফা লবণের ভার দানাদার। \* \* কেদারের মন্দির বরক্ষে ভূবিয়াছিল। অভাবিধি মন্দির ভিতরের সকল বর্ফ যায় নাই, সর্বাদা জল পড়িতেছে। এই বরফ জন্ম শ্রীপকেদারনাথ ও শ্রীশ্রীপবদরীনারায়ণের প্রাত্তিতীয়ার পর অক্ষতৃতীয়া পর্যান্ত ছয় মাহা হার কৃত্ব থাকে। 🛊 🛊 মন্তিরের

নিকট কোন মন্ত্রা কি জীবগন্ত পশুপক্ষাদি কিছু থাকিবার ক্ষাতা হয় না। এই ছয়নাস দেবগণে পূজা করে, এ কথা পূর্বাবিধ সকলে শ্রুত আছেন। একলে দেবগণের পূজা করার এই চিহ্ন পাওয়া বায় যে, বরের ভিতবের ঐ ঘুত প্রদীপ আলিত থাকে, আর অর্থেরে চাউল ও নীলকমল দিয়া যে পূজা হয়, তাহা ঐ মন্দির মধ্যে থাকে। ১ ১ ক মন্দির প্রদক্ষিণ করিয়া সম্মুখে আসিতে বরকে স্পান্নরহিত হয়।"

মহাপ্রস্থানের কণা অনেকেই শুনিয়াভেন—কিন্ত কোথায় ও কোন পথে যাইতে হয়, ভাহা হয়ত অনেকেই জানেন না। আমা-দের গ্রন্থকার কেদার হটতে সেই মহাপথ-সম্বন্ধে লিথিয়াছেন --"এখান হইতে তিন ক্রোশ উত্রমুথে গমন করিয়া ্যাইতে পারিলে হিমলিসেখন শিব, যাঁহাকে স্পৰ্ক রেবামাত্র দেহ ব্রজতুল্য হইয়া সকায়াতে স্বর্গে গমন করিতে পারেন। কিন্তু এই তিন ক্রোশ পথ যাওয়া অতি ছঙ্কর, তাহার কারণ দিবারাত্র ব্রফ জলের ক্লায় ব্রি-ষণ হইতেছে. এই শীতবীর্ঘো কেহ মহাপদ্বাতে গমন করিতে পারে না. যদি কেহ সাহস করিয়া ঐ পথে গ্রমন করে, তাহা কুদাচ প্তছিতে পারে না। তাহার কারণ ঐ প্রতে প্দক্ষেপ কবিতে ষদি কিছু শব্দ হয়, তবে এমত ব্রফ থসিয়া পড়ে যে তাহাতে প্রাণ-রক্ষার সম্ভাবনা নাই, তাহার নামুখুনী বর্ফ। যে অঙ্গে ঐ বর্ফ ম্পূৰ্ম হয়, তৎক্ষণাৎ সেই অন্ধ্যসিয়া পড়ে। **ঐ** স্কল কারণ জন্ম এই কুক কোম্পানী বাহাছরের এবং টেরির রাজসরকার হইতে ০৬ জন পার্বতীয় মত্য্য রক্ষক আছে—কোন ক্রমে কেছ বিনা অনুমতিতে ঐ পথে না ষাইতে পারে। যে স্কল রক্ষকপণ আছে. ভাষারা লোমসমেত ছম্ব ভেড়ার চামড়ার জামা, ইঞ্চার টুপী, তাহার উপর ক্ষল আছে।দনে থাকে। অগ্নির কুণ্ড সমভ্যারে ঐ রক্ষকশণ এক ক্রোশ পর্যান্ত ক্টে ঘাইতে পারে, তাহার পর গমনের ক্ষমতা নাই।"

কি ভাবে সাধনা করিলে মহাপছা অতিক্রমু করিয়া হিমলিকে-খর স্পূর্ণের অধিকার জন্মে, গ্রন্থকার তাহাও বিশদভাবে বর্ণনা • করিয়া গিয়াছেন। বলিতে কি তিনি যেরূপ কেলারনাথ ও মহা-পস্থার বর্ণনা করিয়াছেন, অপর কোন গুস্তকে আমরা এরূপ পরিচয় পাই নাই। কেদারনাথ দর্শন ও তীর্থকতা সুমাধা করিয়া "শত বংসরের বরফ ৰেগওয়ার, সহুত্র বংসরের ফটিক হওয়ার আকর-খান দেখিয়া" ভীমগড়া, গৌরীকুণ্ড, অসিমঠ, বামনীচটী, তৎপরে অলকননা পার হুইয়া ক্ষেত্রপালু পিপড়কুঠী, গরুড়গঙ্গা, কুমারচটী, জোষীমঠ ও পাণ্ডকেশ্বর হইয়া বদরীনারায়ণে আসিলেন। কেদার-নাথ হইতে বদরীনারায়ণ আসিতে ১১ দিনে ১৪ জোণ পথ হাঁটিতে হইয়াছিল ! বদরীনারায়শের পাহাড়ে উঠিবার সময় গ্রন্থ-.কার লিথিয়াছেন, "মৌজের চটির নিকট হইতে আটজোশ চড়াই বদ্রী শ্রায়ণের প্রাহাড়। 🧚 \* চারিকোশ যাইয়া বরফ ভূমি, বরফের উপর দিয়া চলিতে হয়। স্থানে স্থানে প্রস্তরভূমি আছে। কেদারনাথে যেমত বরফ তাহা ছইতে এ পাহাড়ে বরফ কম আছে, কৈন্ত্ৰীত অভিশয়। শ্রীরের ম্পন্দন রহিত হয়। জ্ল-ম্পূর্শ করা অভিশয় কঠিন। আটিকোশ বাইয়া এক কাঠের পুল অনুক্রনাতে আছে, তাহা পার হইয়া কিঞিৎ পরে বদনী-নারায়ণের মন্দির । \* \* \* বাসাতে আপন আপন দ্ব্যাদি রাথিয়া তপ্তকুণ্ডে স্নান-তর্পণাদি করিয়া বদরীনারায়ণ দর্শন করা হইল।" গ্রন্থকার এখানে পরাশর, ব্যাস প্রভৃতি ঋষিগণের তপভার স্থান, বদরীনারায়ণের মহিমা ও প্রাকৃতিক দৌন্ধী দর্শনে বিমুগ্ধ হইমাছিলেন, তাই নিধিয়াছেন,—"বৈক্ঠ এই স্থান তাহার সংশ্ব নাই। মহাপ্রসাদ বাজারে বিজয় হয়, অন্প্রসাদ সকলে সকলকে দিতেছে মুনোবিকার বিজুমাত্র লাই।" বদরীনারায়ণে আসিয়া কোথায় কি দেখিতে হয়, কিরপভাবে তীর্থকৃতা করিতে হয়, হিমালয়ের এই তুরশুলে কি কি দ্রব্য ও প্রমাদি পাওয়া বায়—এখানকার স্থবিধা অস্থবিধা সকল কথাই তিনি নিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন। এই বদরানারায়ণ হইতে ভোট বা ভিস্তাতের পথ সম্বদ্ধে বায়—"এখান হইতে ভোটের রাজা নয় দিনের পথ উত্তর-পশ্চিম দেশ। ভোট গমনাগ্রমন হইতেছে; অভিশর বয়ফ, বরক্ষের উপর হইয়া চলিতে হয়। ুভোটের জুতা ভির অক্ত জুতা পারে চলে না কুশের জুতাতে গমন হয়।"

৫ই জাঠ স্বাধিকারী মহাশ্র সদলে বদরীনারায়ণ ছাড়িয়া পাশুকেশ্বর, কুমারচটী, জোষীমঠ, পিপড় হুঠী, ক্ষেত্রপাল, নন্দ্রপাগ ও শিথকুঠী হইয় মেলচৌরী আসিলেন। এথানে ঝাপান ও কাণ্ডিওয়ালারা বিদার হইল। প্রতির দিয়াছেন,—"এই ঝাপান ও কাণ্ডিওয়ালাদিগের চিনথাকি টিকলি পর্যান্ত লইয়া যাইবার হুল অনেক মত কহা, হইল এবং এথানের ঝাপান থত টাকায় যাইবে, ভাহা হইতে পাঁচ টাকা অধিক পাইবে। ভাহারা কোনমতে চারিদিবসের পথ নীচে আসিতে শীকার হুইল না। ভাহার কারণ ক্রে য়ে, "আমরা ইহার নীচে গেলে বাঁচিব না; নীচে অভিশর রৌদ্র আমাদের বরদান্ত হুইবেনা, সকলের ব্যামাহ হুইবে। আমরা বরফদেশের পাহাড়ের মস্বা, মেলচৌরীর নীচের জায়গা আমাদিগের কোন ক্রমে সম্ব্যা, মেলচৌরীর নীচের জায়গা আমাদিগের কোন ক্রমে সম্ব্

হইবে না। এজন্ত ঝাপান ও কাণ্ডিওরালা বিদার হইল। পুনরার এখানে ঝাপান ও পিঠু লওয়া হইল।"

সে দিন মেলটোরী হইতে লোহাগড়ে আসিয়া তংপর দিন
(১২ জৈঠি) সকলে বুড়া-কেলারে উপস্থিত হইডেন। "এথানে
কেলারনাথ আছেন কৌশল্যা নদীর পূর্বপারে।" তংপরৈ কানাগির চটি, চিকলি, রামনগরের বাজার, চিনথা, কাশীপুর, নৈনিতাল,
সখল-মুরাদাবাদ, শিরসা, গোমা, দানপুর, কোয়েল ও বেশরা দর্শন
করিয়া ২৪ জ্যৈঠ শ্রীকুলাবনে ফিরিলেন। ভক্ত গ্রন্থকার এথানে
তাঁহার উত্তরাথপ্ত-শ্রমণের এইরূপ সংক্ষিপ্ত পরিচর দিরাছেন.—

"বদৰ্ষি প্রীবৃন্দাব্দধ্য ইইতে তীর্থবাক্রা জক্ত উদ্ভর্গণ্ডে গ্রমন ইইরাছিল, ত্রদব্ধি ছই স্ক্র্যা আহার, কি শ্ব্যা পাতিরা বালিশ মন্তকে দিরা শর্মন হর নাই; কোন বালুকামর ভূমিতে এবং পাহাড় পর্বতের বনে জলনে হিংপ্রক্রম্বিদের সন্মুখে প্রমণ গ্রমন, ছোট বড় পর্বতের বনে জলনে করিতে ইইরাছে। এমত এমত পর্বত আছে, ক্রম্থেক চারি পাঁচ দিবস—প্রতি দিবস দশ বার ক্রোশ করিরা চড়াই করিরা সীমা পাওরা বার না। ঠিক থাড়া চড়াই কত হান আছে, উচ্চে উঠিবার সমর এক এক পদক্ষেপ মৃত্যুকালের বাসের ভার নি:খাস ভ্যাগ করিতে হয়। বিনাব্রিটতে যুবক কি বৃদ্ধ, কি বালক কাহারও পদক্ষেপ করিবার সাধ্য নাই। উত্তরাই অর্থাং নামিবার সময়ে ততোধিক ক্রেশ। বিশেষতঃ পর্বতে শীতের অত্যক্ত প্রভাব, আহার-দ্রব্য বিবিধ দাল বব প্রম্কা-মিলিত আটা। এই আহার করিরা এক লক্ষ পর্বত সন্তর লক্ষ ঝাড়ির পরিক্রম করিরা প্রবৃন্ধাবনধানে কিছা হরিবারে আলিতে হয়। বালুকামর ভূমিতে এবং পর্বতের প্রস্তর্বনে

বনের কণ্টকে পদ ক্ষত-বিক্ষত হইরা উঠে, দেহে অন্থিমাত্র থাকে,
রস-রক্ত কিছুই দেহে থাকে না, বর্ণ বিবর্ণ হর, আকৃতি বিরুত হর,
এত কষ্ট করিলে উত্তরান্তিও যে সব শ্রেষ্ঠ তীর্থ আছে, তাহা দর্শন
ক্ষাৰ্শন করিতে গারে। তীর্থাদি প্রমণ করিলে নানা দেশ এবং
নানামত রম্যাও তাহাদের ক্ষত ব্যবহার দেখা বায়।"

উষ্ণপ্রধান দেশবাসীর পক্ষে হিমপ্রধান উত্তরাপথের তীর্থ-শ্রমণ কিরপ প্রমসাধা, কটসাধা ও বিপজ্জনক উদ্ভ অংশ পাঠ করিলে সকলেই অবগত হইবেন। কিন্তু কিছুদিন পূর্বেও বালালী স্ত্রীপুরুষ ধর্মের জন্ম ঐ সকল কট স্বীকার করিতে পশ্চাৎ-পদ ছিলেন না, তাহা আমরা এই তীর্থ-শ্রমণ গ্রন্থ হইতে বেশ ব্রিতেছি।

গ্রন্থকার হিমালয়ের কেবল তীর্থ-পরিচয় বা দুটবা স্থানের পরিচয় দিরা ক্ষান্ত হন নাই। তিন্তিদেশীয় নরনারীর আরুভি-প্রাকৃতি, আহার-ব্যবহার, রীতিনীতি, হাবভাব প্রভৃতি জ্ঞাভবা অনেক কথাই স্বচক্ষে দর্শন করিয়া লিপিবক করিয়া গিগাছেন এবং অবশেষে উত্তরাখণ্ড বাত্রার এইরূপে উপসংহার করিয়াছেন,——

"কেদারনাথ গমনে চারি দিবসের পথ কেবল গোলাণ গাছ, পুষ্প প্রক্ষাতি হইরা বন পর্বাভ হশোভিত, গদ্ধে আমোদিত, আর পথে পথে কত শত স্থানে কুল শেকালিকা করবী ইত্যাদি আছে। বদরীনারারণ বাইবার পথে তিন দিবসের পথ সেউতি, ছই দিবসের পথ গোলাপ প্রস্থার বন, বরাক ক্লের গাছসকল ক্ষবাপুষ্পের ক্লার অস্তর হইতে দৃষ্ট হইতেছে,—এইক্রপে পর্বাতে ভ্রমণ করিলে দ্বংথ ক্লেশ মারা মোহ কিছু থাকে না।"

পুর্ব হইতেই বৃন্দাবনে ৮নন্দকুমার বহুর কুঞে তাঁহার বাসা

ন্থির ছিল। ২৫০ জৈঠ হইতে ২১এ ভাল পর্যান্ত এখানে থাকির। দীর্ঘ পথকেশের কতকটা প্রান্তি দূর করিলেন। ২২এ ভাল ব্রজ্পার চৌরালি কোশ পরিক্রমার বাছির হইলেন। এবার ব্রজমগুলের দকল বন উপবন ও দকল দীলান্থানই দেখিয়া দইলেন। বেথানে বাহা কিছু দুইবা আছে ও বিশেষত পাইরাছেন, সমস্তই তীর্থ-ভ্রমণে বিবৃত হইরাছে।

২০এ মাৰ সৰ্বাধিকারী মহাশন্ত সদলে কুরুকেত্রাভিমুখে যাত্রা করিলেন। বুকাবন হইতে চৌমুলা, কুশী, হোড়েল, পরওল, वज्ञ छग फ, कविमावान, निज्ञी, ट्लिकाड़ा, श्रुकानि, बाहे, वर्त्नोनि, मामहान, পानिপथ, क्बीन ७ वहाना इटेब्रा थात्मश्रद छेपनी छ হইলেন,—"মুণায় কুকুকেত্ৰ ভীর্থ''। কুকুকেত্র ভারতীয় আর্য্য-জাতির সর্বাধীন ধর্মকেত। তীর্থ-ভ্রমণে সংক্ষেপে এই অতি-প্রাচীন পুণাক্ষেত্রের বেরূপ পরিচয় আছে, অপর কেই এরূপভাবে বর্ণনা করিয়া যান নাই। 'মুত্তিকাসমুদ্ধেও তিনি লক্ষ্য করিয়া জানাইয়াছেন, কুরুকেত্ত্বের তাবৎ মৃত্তিকা রক্তবর্ণ, কিন্তু এক্ষণে স্কল ভানে রক্তবৰ্ণ দেখা বার না। ♦ ♦ ♦ পথিমধ্যে বে ভানে বৃষ্টি-জল বন্ধ আতে, তাহা বিশেষ তদারক করিয়া দেখা व्हेन—न्नरक्तत्र आम कन. मृखिकात्र नीटि त्रक्तवर्ग, हेशांट वांश হয় অধিক বৃষ্টিজল পরিপূর্ণ হইলে সকল লাল জল হয়। অন্তিপুরা নামে বে তীর্থ আছে, তাহাতে কুই-পাওবের বৃদ্ধে যত ব্যক্তি হত হইয়াছেন, তাহাদিগকে একত্র করিয়া বে স্থানে সংকারাদি করেন **এবং কুরুকুলবণ্গণ বর্ণায় সহমূতা হন, সেই স্থান বাঁপ হই**য়া আহে ।"

> रे काइन कुक्तकरवात ठीर्थ-क्षीक त्मव कतिया शिशित.

তেওড়া, সাহাবাদ, টগরি নদী, বাণগঙ্গা, অহালা, রাজপুরা, স্রেন্দা, বলের স্থাই ও লক্ষ্রের স্রাই হুইয়া লুধিয়ানা স্হর পাইলেন। এখানে দেখিলেন, "উত্তম স্থান, পশমিনা বস্তাদি এবং উর্ণাবস্তাদি নানামত জন্মিতেছে। \* \* • পশম ৰাহাতে শাল জন্ম. উল বাহাতে লুই জন্মে, ভাহার বিক্রয় ছইতেছে।" পুল পার হইয়া মহারাজ রণজিং সিংছের ফোলবের হুৰ্গ দেখিতে পান। তথা হুইতে ১২॥। ক্ৰোশ বাইয়া ফাপ্তগ্ৰাড়া महत्त्र এक अहात्र मत्था माधु मर्मन करत्न। विभाधु ३२ वरमत কাল দাঁডাইয়া তপন্তা করিতেছেন। "কাহারও সহিত বাক্যালাপ নাই, মৌনব্রতের ভার, স্মাহার ক্রমে ইল্ল করিয়া এক্ষণে কেবল এক পোয়া ছয় কিঞ্চিং বাতাসা, দেহ ক্লুশ হয় নাই।" ফাভওয়াড়া हरेट अवा नही, दाराना, स्टाना, स्नियांत्रपुत अ जाहांत्र अर्फ ক্রোশ দূরে বাহাত্রপুর গ্রামে শুরু নানকের গদি দর্শন করেন। এই স্থার উত্তরপশ্চিম প্রান্তে ছাউনী মধ্যে শ্রামপুকুরনিবাসী প্রীরাধা নাথ চট্টোপাখ্যায় ও বাহাত্ত্রপুরে "ঢাকুরিয়ানিবাদী ত্রীযুত দীন নাথ চটোপাধ্যায়ের সহিত সাক্ষাৎ হয় :

এই হশিয়ারপুর হইতেই আমাদের তীর্থ-ভ্রমণকার আলামুথী দর্শনের উদ্বোপ করিলেন। তথা হইতে বোটা, আমবাগ, রাজ-পুরা ( এখানে ২৪ বাহবিশিষ্টা মহিবমর্দিনী দেবী ) ও চম্পা (চ্ছা) দর্শন করিয়া ২৩ ফাল্কন শিবরাধির দিন আলামুথী তীর্থে আগমন করেন। তাঁহার আলামুখীর বর্ণনা বেশ হাদয়গ্রাহী ও কৌতৃহপোদীপক।

"মহাদেবীর মন্দির পর্বতের মধান্তলে, মন্দির দক্ষিণ্যারী,
মহারাজ রণজিৎ সিংহকুত অর্থমণ্ডিত চতুর্দিকে কলস আছে,

ভাহার উপরে খর্মের ছত্র আছে, সমুখে ছই খর্মমণ্ডিত বাছা আছে। মন্দিরে মধ্যে মহাদেবীর জ্যোতি জ্ঞানত আছে। মন্দিরের মধ্যম্পে এক কুণ্ড আছে, ঐ কুণ্ডের উত্তরদিকে চারি জ্যোতি আছে, মধ্যম্পে ছই জ্যোতি, ভাহার মধ্যে এক জ্যোতি প্রবল, আর ছই জ্যোতি কথনও প্রকট কথনও অপ্রকট থাকে। ঐ কুণ্ড মধ্যে সকলে পূলা হোম করে, ঐ জ্যোতি হইতে জ্মি জ্ঞানিত করিয়া লইতে হয়, অফ্ত জ্মি স্থানিত হয় না। \* \* • ছাগবনি জ্মিনিত হইতেছে— মাহার যথন ইছা। মহাদেবীর জ্যোতি প্রায় পর্কতের সকল স্থানে আছে, কোথাও প্রপ্ত কোথাও প্রকাশিত। জালক্রম্পাঠের পরিক্রম ৪৮ জ্যোল।"

বলা বাহল্য ধর্মপ্রাণ গ্রহকার ৪৮ ক্রোশই পরিক্রম করিয়াছিলেন এবং বাহা কিছু জ্ঞাতব্য ও প্রষ্টব্য, তাহাই প্রকাশ করিয়া
গিয়াছেন। জামাদের এখানকার কালীঘাটের হাল্যার-ক্ঞাগণের ব্যবহার জনেকেই বিলক্ষণ জানেন, কিছু সর্কাধিকারী মহাশ্ব জ্ঞালামুখীর পরিচয়ে কিরূপ লিখিয়াছেন, একবার পাঠ
করুন—

পাণ্ডাদিগের বাটীর ক্সাগণ দেখিতে অতি স্থলরী। ১বংসর অবধি ২০ বংসর বরঃক্রম পর্যান্ত সকলে মহাদেবীর মন্দিরে আদিরা ধান্ত্রীদিগের নিকট অর্থ বাজা করে। দেখিতে দেবীরপা, কাহারও মনে বিকার নাই, অর পাইলেই সম্ভট, বস্ত্রাল্ডারে ভূবিতা হইরা অনারাসে সর্ব্ধর ভ্রমণ করিতেহে, থাঞ্জুব্যাদি সন্মুধে ধরিলে অনারাসে ভকণ হয়।"

व्यानामुबी वर्गनानि कवित्रा ताका উर्यन्तरसञ्ज त्रावधानी नाव-

ওন হইরা দকলে ফভেপুর, শীমুণ্যা, হামিরপুর, লখুড়, গোপালপুর ও রাজার তলাও দর্শন করিরা রেওরাড়েখর তীর্থে আদিলেন।

এখানে গ্রন্থকার রেওয়াড়েখর তীর্থের ধেরূপ পরিচর দিয়া-ছেন, তাহা নিতাক্ত বিশ্বরঞ্জনক ও হৃদয়াকর্থক। এরূপ তীর্থের কথা আমরা আর কোধাও শুনি নাই। একটু পরিচর দিই—

"রেওয়াডেখর তীর্থক্ত মধ্যে প্রস্তর, উপরে মৃত্তিকা, তচুপরি वुक्तांकि इटेबाटक, के शक्ति करन खांत्रिया त्वजाब, जाशंत्र नाम त्वेजा. পুথক পুথক নাম আছে। কুণ্ডের জল অতলম্পর্ণ, দীর্ঘে-প্রন্থে ছই ক্রোশের পরিক্রম। এই জল-মধ্যে সাত বেড়া, আছে - ব্রহ্মা, বিষ্ণু, শিব, হনুমান, ছগা, গণপতি (ও) ধ্রমধারী অর্ধাৎ লোমখ মনির-এই সাত^বেড়া আছে। ইহার মধো ছয় বেড়া বার মাস ভাসিরা বেড়ার। মহাদেবী ছর্গার বৈ বেড়া, প্রাবণ ভাত ছই মাস ভাসে, দশ মাস মহাকুণ্ডের ঈশান কোণে থাকে। উক্ত বেড়া সকল বেড়া হইতে বুহং। ব্রহ্মার'বেড়ার উপরি নলের এবং খাদের বন, এক অংখখ, এক বটু এই ছই বৃক্ষ আছে। বুক্ষের বেড ১৮০ হাত ২ হাত হইবে, থাড়াই তিন হাত, তাহার পর শাধ্য পলবে শোভিত বেড়া দীর্ঘে-প্রস্থে ৬ হাত স্ইবে। বিষ্ণুর বেড়াতে নলের গাছ ও বান আছে, দীর্ঘ-প্রস্থে ৩ হাত। শিবের, গণেশের ও হর্মানের তিন বেড়া বাসময় ছোট বেড়া। লোমশ মুনির বেড়া দৈর্ঘ্যে ও প্রস্তে ৫ হাত, অর্থে ক নলের গাছ এবং খাসে বন **হইয়া আছে। • \* • কুণ্ডের তীরে যে বন আছে, ঐ** বনের সহিত একজ হইয়া থাকে। বাহার যে মুর্তি দর্শনের মানস হয়, ভাবনা করিলে সেই বেড়া ভাসিয়া আসিয়া দর্শন দেন, আপন মনোনীত পূজা ইত্যাদি করিলে ইচ্ছামতে ভাসিয়া স্থানান্তরে

গমন করেন।" আমাদের কোতৃহণী গ্রন্থকার এথানকার অপুর্ব আশ্চর্য্য বাপার দেখিয়া বেড়া পরীকা করিয়াছিলেন—

°এ বেডা সকল কি মত স্থাপিত, তাহা বিশেষ পরীক্ষা করিয়া দেখা হইল যে, নিম্নে বৃহৎ বৃহৎ প্রস্তর আছে, তাহার উপরে বৃক্ষাদি হইয়াছে। ঐ বৃক্ষ ধরিয়া বছনত দেবিয়াছি থকানক্রমে ্ছেলাইতে পারা বার নাই। ঐ বেড়াতে ধ্বজা দিবার জন্ত খনন করিয়া বাশ পুভিতে হয়, ঐ বেড়ার উপর পাণ্ডারা আর্চ হইয়া বিশেষ বলপুৰ্বক বসাইল, তাহাতেও হেলিল না, পরে বেড়া হুইতে মৃত্তিকা কুওয়া হুইল। কিন্তু তীরে যে স্থানে বেড়া ছিল, তথায় জল অধিক নছে, তাহাতেও অধিক জাগিয়া থাকে না, কেবল গাছ-খাস ভাসে। আর স্মতলম্পর্ণ জল যেখানে, সেখানেও ু মত অনুমৃত্তিকা আৰু গছি-বাস ভাসিতেছে দেখা যায়, কিছ কাছারও এমন সাধ্য হয় না যে, বেড়ার বিপরীতদিকে ডুব দিয়া অন্ত দিকে উঠিতে পারে । বত নিমে ডুবে, সর্বত্তই পাণর माथात्र न्त्रमां इत्र। \* \* \* कूछ-পরিক্রমার্থে গমন করিয়া, পিব্লিক্ষুমর অর্দ্ধেক পথ ষাইতে দেখা গেল যে, ব্রহ্মার বেড়া ভাসিয়া উত্তর দিক হইতে যাইতেচে। উহা বংকালে মধান্তলে উপস্থিত হইল, আমরা মনে করিলাম যে, পুর্বা দিকের বাতাস, এজন্ত পশ্চিম দিকে দাম ভাষার ক্লান্ন বাইতেছে, কিন্তু ঐ মধ্যন্তলে মাইরা স্থির হইল, তাহার পর ঝড়ের <sup>1</sup>তার বাতাল বহিতে লাগিল, এক অঙ্গুলিও সরিল না।

"বেড়াগুলির এইরপ আল্চর্যা ঘটনা সন্দর্শন করিয়া লাছোরের সন্দার নেহাল সিংহ বছ লোক জলে নামাইয়া পরীকা করিয়া দেখিয়াছিলেন, কিন্তু কিছুই নিরাকরণ করিতে পারেন নাই। এইর্মণে বছকাল হইতে এখানকার ব্যাপার দেবমায়া বলিয়া অবধারিত হয়। পৌরাণিক আখ্যায়িকাও প্রচারিত আঁছে।"

"এই হলে লোমশ মুনি তপন্থা করিয়া জলের উপরি দীড়াইয়া আপনার ইউসাধনু করেন। \* \* \* চকু মুক্তিত করিয়া এমত যোগে আছেন যে, তাঁহার গাত্তে নলগাছ ও বাদ হইয়া গিয়াছে। ইহা দেখিয়া দেবপণ মুনি প্রতি মনোভাটুসিছ বর . দিয়া গেলেন, মুনির মানস হইয়াছিল, আমার প্রতি যেমন পাবাণ হইয়াছ, সেইমত পাবাণ হইয়া থাক। এই মুনির মানসে দেব-গণ এবং মুনি পাবাণ হইয়া ভাসিতেছেন।"

"রেওরাড়েখর কুও হইতে ৩ ক্রোশ পর্যতের উপর এক দেবী আছেন, তাঁহার নাম নয়নাদেবী। এছলকে মুকলে নয়নপীঠ কছে। \* \* এই তাঁরে ভোটিদেশীয় এবং মহাচীন দেশের ময়্ব্য আইসে। তাহারা ধনাচা ব্যক্তি। চীনদেশীয় ব্যক্তিগণ ব্রহ্মার বেড়ার অভিশর মান্ত করে, আনক দানাদি করিয়া থাকে এবং প্রস্তরে নাম-ধাম খোদিত করিয়া দেয়। ভোটের যে সমস্ত স্ত্রী-পুরুব আইসে, তাহারা সকলে মন্ত-মাংসভোকী, অভিশর উন্মন্ত, তাবং রাজ কুগু-পরিক্রম এবং গুজন করেন"

তীর্থ-লমণকার যে রেবাড়েশ্বর-কুপ্ত ও নয়নপীঠের স্কান দিয়া-ছেন, তাহা ভারতের সমতলবাসী হিন্দু সাধারণের প্রায় °সম্পূর্ণ অপরিজ্ঞাত। আমরা ভারত মহাসাগরের মধ্যে সচল শৈলমালার কথা ভানিয়াছি, কিন্তু পার্বতা প্রবেশে হ্রন বা বহুৎ জলাশর-মধ্যে ভক্র-লভা-সমাছের এরূপ সচল পারাণ্যভের সন্ধান আর কোঁথাও পাই নাই। ঐ স্থান ভূতত্ববিদ্ ও বৈজ্ঞানিকের অন্তুসন্ধান ও প্রীক্ষার ক্ষেত্র সংলাহ নাই। বেবাড়েখর কৃথে তীর্থকতা সারিরা গ্রন্থর পার্বতা মণ্ডীরাজ্যের রাজধানী মণ্ডীনগরে আগমন করিলেন। সে দিন মণ্ডী
নগরে বড় ধুমধাম। "মণ্ডীনগরে এক দেব-মেলা হর, রাজার
অধিকারে বত পর্বত ও গ্রাম্ব আছে, তাহাতে বত দেবদেবী
আছেন, সকলে শিবচতুর্দশী-রাজিতে মণ্ডীনগরে আসিরা অটাই
দেবমেলা ইইবে, তাহাতে ১৫০ দেব-দেবী পাহাড় ইইতে আসিরাছেন। সকল দেব-দেবীর সহিত পাহাড়ের বাস্ত ও পাহাড়ীয়া সকল
লোক আসিরাছে। ইহাতে নগরে বছ-লোকের সমাগম ইইরাছে,
তিলার্দ্ধ স্থান নগ্রর মধ্যে নাই। ২ ২ আমরা যে দিবস
মণ্ডীনগরে উপন্থিত, সে দিবস মেলা, ২ ২ পাহাড়ের দেবদেবী বড় প্রত্যক্ক। ২ বাজ্যর শাসন এইরপ আছে বে, ছোটভাতিতে খাক্মস্রবাদি বিক্রয় করিতে পারে না এবং দোকান কিছা
অলের বাউডি স্পর্শ করিতে পারে না।"

সকলে মণ্ডীতে উৎসব দেখিয়া পারমণ্ডী হইয়া নিতান্ত পিছিল
"হড়গড়ানে" চড়াই ও উত্তরাই পথ হইয়া মণ্ডীরাক্স হাড়াইয়া কুরুরিক্তের রাজধানী বেক্তেয়ে পৌছিলেন। এখানে রাজধানী দর্শন
করিয়া তৎপরে পার্কত্যাকা ও বিপাশা নদীর সক্ষে সান করিয়া
বিওড় হইয়া বাসুনকোঠীতে আসিলেন। "এখানে অনেক
রান্ধণের বাস এবং অক্তান্ত ক্লিতির বাস। জী-পুক্ষ সকলেই
ক্ষণবন্ধপরিহিত। মংক্ত, মাংসীসকল ক্লাতি আহার করে।"

মণিকরণ নাম। ইভার মধ্যে পার্ব্ধতী-গলাও হরেক্সগলার জলে বে ছলে দক্ষ হইতেছে, তাহাৰ উপরে ছই কুণ্ড আছে। নীচে বে কুও আছে, তাহাতে ছই হাতের অধিক লগ আছে, লগের আন্দালন। কিন্তিং উপরে যে কণ্ড আছে, ভারতে এক হাত জল। চুই কুণ্ডের জল অভিশয় উষ্ণ অধাৎ পর্ম, আল স্পাশ্মাত দগ্ধ হয়। অনতিশয় ধুম, সর্বদা ধুম উঠিতেছে, আছেকার হইয়া পাকে। ঐ কুও মধ্যে অল পেচরাল কটা মালপো পারদ ভাল তরকারি ভাজি ইত্যাদি যাহা কুণ্ডে দিবে, ভাহা স্থপক হইয়া अर्थाष्ठ इत्, व्यक्षि-मःश्रात्र-शांक वहविध त्रक्रानत्र, अग्रक्षांति ज्वा দিলা অষ্ত্রেপাক করিলেও এতাদুশ অধ্যক্ত হর না।" লীলা-मरबद्र कि का करी नीना ! এই इर्जम श्राप्त विना कथि-मश्कारत विना जेनात्मव शाहात्वा व्रक्षनकार्या हिनाजहरू-जेकश्रवात्मव উক্ত জলের তাপেই পাক-কার্যা সুসম্পন্ন হইতেছে। কি নিয়মে ঐ কুণ্ড মধ্যে পাক করিতে হয়, বিচ'ক্ষণ গ্রন্থার ভাষাও লিপি-বছ করিয়া গিয়াছেন। রেবাড়েশ্বর ক্রণ্ডের বেডার পরিচয়ে আমরা চমংক্লত হইয়াছিলাম, কিন্তু মণ্টিকর্ণের উষ্ণ-কুতে বন্ধস-প্রক্রিরা ভভোধিক বিশ্বর্থনক। পুরামে এই স্থান 'কুলিন্দ' নামে অভিহিত। আমাদের পূঞাপাদ গ্রন্থকার ভাষাই "কলাম্ব-পীঠ" নাথে পরিচিত করিয়াছেন। ইহা "সকল দেবদেবীর তপভা এবং বিহার-স্থান।" "এখানে পূর্বে মন্তান্ত দেশের মন্তব্য কদার কেছ ফ্কিরীবেশে আসিত, এজন্ত লোকানাদি ছিল না।" বাঞ্চিক এই ছুর্গম তীথের বিষয় সাধারণ গৃহত্বের সম্পূর্ণ অঞাতই ছিল, ভাই কোন প্ৰ্যাটক বা ভীৰ্থৰাত্ৰী এই মনোৱম ও চমংকাৰ नीना-चारमङ পরিচর विश्व<sup>\*</sup>यान माहे। छोर्थ-अधनकात विव्यवकार

এই তীর্থের পরিচর দিরা গিরাছেন এবং তাহা পাঠ করিতে করিতে আগরা এখানকার বহতর উষ্ণ-প্রস্তবণ ও স্থপ্রাচীন তীর্থসমূহের অভিনব সংবাদ প্রাপ্ত হইরাছি।

গ্রহ্কার মণিকর্ণে তীর্থক্তাদি শেষ ক্রিয়া বিফুকুক ও জরিগ্রাম হইরা বামনকোটাতে আগমন করেন। এখান হইতে "নদী পার হইরা ৪ ক্রোশ থাড়া চড়াই পর্কতে উঠিঃ বিজ্ঞানীশ্র মহাদেব" দর্শন করেন। এই শিবলিজ-সম্বন্ধে বণিত হইরাছে "বার বংসর আহার বজ্ঞাত হইরা খানু খানু হইরা ভয় হন। পরে ঐ সকল খণ্ড একজ করিয়া মাখন দিয়া বাধিয়া দিলে পূর্বমন্ত শিক্স্টি হর।" বিজ্ঞানীর দর্শনাস্তেও ক্রোশ নামিয়া রাজা জ্ঞান-সিংহের রাজ্ধানী ক্রুসহর দর্শন করেন। এখানে তিনি বহু দেব-দেবীর মন্দির দেখিয়া আদেন।" এখানকার পরশুরামের মন্দির সম্বন্ধ গ্রহ্ণার আমাদিগকে আনাইয়াছেন—"ঐ মন্দিরের বার বংসর আহার একবার বার ধোলা হয়।"

কুরু হইতে বেঞ্জব, বোপড়, ডোলচি, কুষাদ, অক-কুফক,
দুকীখন, পোমা হিরাবাদ, নিবানর, সমকট, ও ভালাহান হইরা
বৈছনাথ আগমন করেক। এই বৈছনাথ সাধারণতঃ 'বৈজনাথ'
নামে পরিচিত। হিমবংথতে এই বৈছনাথ তীর্থের মাহাস্থ্য
বর্ণিত আছে। প্রবাদ অনুসারে "ত্রেভানুগে দশস্ক রাবন দেবদেব
মহাদেবের নিকট কঠোর পঞ্চলী: ইভাদি • • তপন্তা করিয়াছিলেন। • • দশস্ক কঠোর তপরারা দেবদেব মহাদেবকে
সাক্ষাং প্রভাক করিয়া আপন কক্ষ-মধ্যে ধারণ করিয়া লক্ষাপুরে
লইয়া বাইবার মনন করিলেন। দেবের মায়া— • প্রথিবধ্যে
বৃহ্ণ বারা এই মায়া প্রকাশ করিলেন বে, রাবণের প্রপ্রাবের পীড়া

উপছিত হইলে শিষ্ডিকে পৃথিমধ্যে রাখিরা প্রস্রাবে বসিলেন;

ড়েদবধি বৈজনাথজি বার্থণগুতে রহিলেন।" এ হলে ১॥• জোশ
পরিক্রম, ইতোমধ্যে জনেক দেবদেবী আছেন, জনাধি শিব আছেন
ও প্রধান দেবী আছেন।" এখানে গ্রন্থকার বৈজনাথের বিভিন্ন
দেব-দেবী ও মন্দিরাদির পরিচর লিপিবছ করিয়া গিরাছেন।
বৈজনাথ হইতে ফিরিবার সমন্ত কোল দূরে 'বোবারণা' নামে
প্রাচীন নসরের বিবরণ দিরাছেন। প্রাচীন প্রাণাদিতে এই দান
প্রাবরণ, কর্মপ্রাবরণ বা কুথপ্রাবরণ নামে নির্দিষ্ট হইরাছে।
তৎপরে পরওল, ধরমলা ও ভাগত হইরা নাথনা গ্রামে আগম্ন
করেন। এই নাখনার আছিকোল দূরে প্রিপরিবাসী প্রসিদ্ধ সাধ্
বাক্সিছ মন্তরাম বাবাকে দর্শন করেন। তিনি মন্তর্গম বাবা সম্বদ্ধে
লিখিরাছেন, "মন্তরাম বাবার বর:ক্রম একশত বংসরের অধিক

• কিছু চাকুবে পঞ্চাশ বংসরের অধিক বোধ হয় না।" তার্থক্রমণে এই সাধু মহাত্মার অসাধারণ শৈবশক্তির পরিচর আছে।

অতঃপর গ্রন্থকার নগরোট হইরা কাংগড়ার স্থাসিত আলক্ষর-পীঠ বা জোরালাতীর্থ দর্শন ও বিশদভাবে এই তীর্থের বর্ণনা করেন। এখানকার প্রধান অধিঠাতী দেবীর নাম বল্লেখরী। "মহারাজ রণজিংসিংহ বাহাত্ত্র প্রজ্ঞানির্থিত মন্দির করিরা অর্থে মন্তিত করিয়া দিরাছেন।" বলা বাহলা, অধুনা এই দেবী হিন্দুর প্রধানা উপাক্তা বলিয়া পরিচিত হইলেও ইনি বৌদ্ধ বল্লখান-সম্প্রদারের নিকট পূর্ব হইতেই বল্লধান্থেখনী ব্লিয়া প্রিভত হইয়া আসিতেছেন। তিক্সত, ভোট প্রভৃতি স্থানের বৌদ্ধসণ অভাপি এই দেবীর পূকা হিতে আসেন।

नर्साधिकाती महानद्र ६९ नमत्र काल्यात नमन करतम--- तिहे

সময় কান্ত্ৰ সহব ভালিতে আবস্ত হইয়াছে। গ্ৰন্থকার লিখিয়া-ছেন, "কমবেঁশী হাজার দোকান ছিল, এক্লণে সহর ভালিয়া ভাগশুও পাহাড়ে সহর হইতেচে। • • • • রাজা সংসারচন্ত্র সপরি-বারে নেভোর পাহাড়ে বন্দী আছেন, এই রাজ্বান্থ সহিত ইংরাজ বাহাহরের বুদ্ধ হয়।"

ঞালদ্ধর-মাহাত্ম্যে এখানকার ৩৬০ তীর্থের পরিচয় আছে,
 তীর্থ-ভ্রমণে তাহার সংক্ষিপ্ত পরিচয় দেওয়া আছে।

জালাদেবী বাঁ জালব্ধর-পীঠের পরিক্রমা শেষ করিয়া গ্রন্থকার গোগাপীরের আন্তানা ও রৌপামভিত গুহামধ্যে চিন্তাপুরণী দেবী দর্শন করেন। তৎপরে হশিগারপুর, রাজরাজেখরী, সস্তোকগড়, রায়পুর ও কোটপ্রাম হইয়া নয়ুমাদেবী দর্শনে আঁগমন করেন। "এই স্থানে ভপ্ৰতীয় নয়ন পতিত হয়, এজন্ত নয়নপীঠ কছে। দেবীর নাম নয়না।" এথানুকার তীর্থক্কত্য সারিয়া পুনরায় সম্ভোকগড়, মানপুর, হশিয়ারপুর, •কাকড়া, লুধিয়ানা, বিদ্ডা বা রিভাপুর, অম্বালা, পিপুলি, কর্ণাল, পাণিপথ, রশৌলি, এবং শেষে पित्नीत 'कारवनी खत्रका' वहेंगा यमुनात निगमरवास्थत चारि छोर्थ-লান করিয়া মোগল-রাজধানী দিল্লীসমুরে আগমন করেন। আমরা নানা গ্রন্থে দিল্লীর বিবরণ পাঠ করিষ্ণছি ;—দিল্লীর পুরাতম্ব, ইতি-হাস ও ভূঁতত্ব-সম্বন্ধে আনেকে আনেক কথা লিখিয়া গিয়াছেন বটে, কিন্তু দিপাহী-বিদ্রোহের পূর্ব্বে অর্থাৎ দিল্লী-রাজধানী প্রকৃতপ্রস্তাবে ইংরাজ-শাসনাধীন হইবার পূর্বেকিরপ শোভা, সম্পদ ও সমৃদ্ধির লীলা-নিকেতন বলিয়া পরিচিত ছিল, দিল্লীর প্রত্যেক দ্রষ্টব্য অলি-পলির কথা, শেষ মোগল বাদসাহের দরবার ও অস্তঃপুরের পরিচন্ত্র, দিলীর নাগরিক হইতে হাট-বাজারের কথা, দিলীর স্থাসিদ

দেওরান ই-আম, মোতি-মস্জিদ্, দেওরান্-ই-খাস, গারকদিপের
• মজলিস, বাদশাহী উভানাদির সংক্ষিপ্ত পরিচয় এরপভাবে কেছ
লিখিয় বান নাই। গ্রছকার প্রাচীন ইক্সপ্রক্তি পুরুষজার কেলার
মধ্যে বোগমায়া ১দবীর মন্দির, পুথুরাজার যজ্জভূমি ও রাজধানীর
ক্ষমর পারচয় দিয়াছেন। পুথুরাজার যজ্জভূমির চিক্ত সম্বজ্জে
লিখিত কইলাছে—

"দুনিগণ রাজসিক যন্ত করিল। অইধাতুনির্ম্মিত এক শুস্ত বজারুও মধ্যে স্থাপিত করিলা কহিলাহিলেন যে, 'এই শুস্ত মধ্যস্থল নাগরাজের মহুকোপরি হাপিত করিলাহ যত দিন্দ শুস্ত থাকিবে, ওতদিন তোমার রাজ্যন্ত হইবে না।' এই বাক্য রাজা প্রবণ করিলা মনে সন্দেহ হওলাতে এই শুস্ত হেলান করিতে অর্থাৎ উঠাইবার জন্ত নাউতে ঐ শুস্তের গোড়া দিয়া রক্তপ্রাব হইল। মুনিগণ রাজার মনে সন্দেহ জানিয়া রাজার প্রতি কৃপিত বাক্যে কহিলেন, 'বদর্থে শুস্ত হাপিত ভোলা পূর্ণ হইবে না এবং ঐ শুস্ত ইবং দক্ষিণপশ্চিমে হেলা বহিল।' শুস্তর উপর দেবনাগর ক্ষম্পরে সকল বুড়ার থোদিত আছে।"

এখানে গ্রন্থকার যে প্রবাদ উদ্ধার করিবাছেন ভালা প্রকৃত নতে।
বলা বাহলা, এই স্থানই টালকবির 'পূণীবাজরাসো' নামক গ্রন্থে
"ইক্রপ্রস্বপড়" বলিরা পরিচিত্র এই গড়ে ভারতগোরব নেব হিন্দুনুপতি পূণীবাজ রাজত্ব করিতেন বলিয়া, এই ভান পরে 'পিথোরা কা কিলা' বলিয়া অভিনিত হব। তীর্ণ্-অন্নলকার বে অইবাতুনির্মিত ভাতের উল্লেখ করিরাছেন, ঐ ভভটী অহাপি দিলীর লাট বলিয়া প্রসিদ্ধ। উহার গাত্রে বে খোদিত লিপি আছে—
ভাহা হইতে জানা বার বে, পুখীবাজের বহু পূর্বে স্মাট্ আলাকের সময়ও ঐ তন্ত বিজ্ঞান ছিল, প্রবর্তীকালে মুদ্দমান বাদশাহের।
সেই প্রাচীন নিপি উঠাইয়া দেই থানে পারদী লিপি বদাইবার
চেটা করিয়াছিলেন। পূথীরাজ হইতেই ইক্সপ্রস্থের শেষ হিন্দুগৌরব বিল্প্ত হয়, তাহা হইতেই ঐ তন্তহেল্ক-দম্মীয় প্রবাদ
প্রচলিত হইয়া থাকিবে।

ইল্প্রত্থপ্রস্থাপ শেষ করিয়া গ্রন্থকার লিবিয়াছেন—"ইল্প্রপ্র্

 ইল্পের্যুক্তর্থর ৩০ ক্রোশ, গলাদেরী তীর্থ। মুক্তেশর শিব

 পাশুরদিগের য়াপিত ও তথা হইতে হস্তিনা ০ ক্রোশ, ব্রধা ক্রক্র
 কুলের আদিরায়্যর'

গ্রন্থকার ১৬ই বৈশাধ হহঁতে ১২ই জৈটে প্রায়ন্ত দিলী পরি-ভ্রমণ করেন, এবং এই সময় মধেদ্বাহ। কিছু দেখিয়াছেন, জইবা সমস্তই লিপিবছ করিয়া গিয়াছেন।

১৩ই জৈটে এছকার দিল্লী পরিত্যাগ করেন। চৌমুরিয়া, বদরপুর, ফরিদাবাদ, রালা লহুরসিংটুহর রাজ্য বল্লামগড়, বগলা, প্রওল, বনচারী, ংগড়েন, কোটবন, কুনী, সাড়ই ও চৌমুরা হইলা ১৭ই জাট ব্লাবনে আম্মিনেন। ১৮ই জোট হইতে ৮ই অগ্রহারণ প্রায় বলাবনে অংশিশা করেন।

৯ই অগ্রহায়ণ সকলের নিকট বিনায় শইয়া অনেশাভিমুখে বাত্রা করিলেন। মধুরা ও নওরজ্বান হইয়া করে সরাই আসিয়া সদলে বলরায় আবোহন করেন। এখান হইকে জলপথে প্রথমে গোঘাট, তংপরে সেকুলরীবাগ হইয়া আগরা সহরে উপস্থিত হইলেন। আগরায় বাহা কিছু পাওয়া বার এবং বাহা কিছু এইবা সমস্তই সংক্ষেপে লিপিবক করিয়া গিয়াছেন। তাহার তালমহলের বর্ণনা বিশাদ ও অব্দর্গাহা।

আগাসার পর বেধানে বেধানে তাঁহাদের বজর। লাগিরাছিল ও বে বে স্থান দর্শন করিবার স্থবিধা হইরাছিল, সেই সেই স্থানের নামোলেধ করা যাইকেচে:—

প্রথমে নাগরীয়া, পরে তুলার কারবারের জারগা চিনবাস ও তৎপরে বটেশর। "বটেশর সহরতব্য ভান, ভাদভিয়া রাজার রাজ্য। রাজবাটী আছে এবং বটেশ্বর ও গৌরীশক্ষর আরে চতভূজি লারায়ণের সেবা (ও) দেবালয় আছে" ইত্যাদি। গ্রন্থকার যে সময়ে বটেখর দর্শন করেন, তৎকালে এথানে বড় মেলা বসিহা-ছিল। "এজভূমের মধ্যে এই বটেখরের মেলা প্রধান মেলা। সকল দেশের দ্রব্যাদি পাওয়া যায়।" এই মেলার সংক্ষিপ্ত পরিচয় তীর্থ-ভ্রমণে লিপিবছ হইছাছে। এন্মের-বিক্রমপুরের পর পালা-রাজধানী, নভগা ( এখানে রাজা মহেক্রসিংহের কেলা ), এখান-কার ধোপাঘাটে গন্ধার উপর গ্রন্থকার ততীয় প্রহর রাত্রি পর্যান্ত কতক শুলি আশ্চর্যা ব্যাপার দর্শন করেন। 'নওগার পর ঘাট্রো. हें हेंबा. हर क्षानी, व्यारमानी, करत, यमूना ७ हवलनमीत शक्स, অক্ষা, কালপী, কোলহেদ, গড়াত, হামিরপুর, বেটুরা, মোওই, পড় হা, কোরণি, বারা, প্রদন, চেলাভারা, মোগলপুর, জোধারপুর, ধোরপুর, ফরি, লভেটা, হটমগুর, রাজা বিখনার্গণতের ওক্সাপিত জর্মিগ্রাম, প্রসিদ্ধ ডাকাইড সন্দারের নামে প্রসিদ্ধ চর্থা ও মর্থা आम. क्रफार्ड बार्ड, गड्डा, नकनपुत, कन्यानपुत, महं, बाक्यपुत, কামতাপুর, রাভড়, নকট, প্রদোধা, প্রতাপ্পর, সঙ্ডা, নশীপুর, यम्ना, त्मत्रशक्, व्यानिमारक्रित हा अप्राचाना, यहत्व छशक्ष, तक् प्राचाहे, ও মওয়া হট্যা এলাথবাদ বা প্রয়াপ। গ্রন্থকার বাতাকালে প্রয়াপে মাত ৪ দিন এবং প্রত্যাপমনকালেও মাত ৪ দিন অবস্থান করেন।

প্রায়াগ হইরা লকটুরা, বারা, ইটুহারা, রত্মলাবাদ, কলিঞ্র, সমরনাথ, নীওগাঁ, বেরাশপুরা, রামপুর ও নগর আম হইরা বিদ্ধা-বাসিনী দশন করেন।

গ্রহ্বার বিদ্যাচলত বিদ্যাবাদিনী দেবীতান ও পার্যবর্তী মৃজাপুরের দ্রইবা ও জ্ঞাতব্য বিষয় বিশদভাবে অবঁচ সংক্ষেপে বর্ণনা

করিয়া গিয়াছেন । প্রীর ৮ম শতাক্লীতে বাক্পভির "গৌড্বধকাবোঁ" আমরা বেরূপ বিদ্যাবাদিনীর উপলক্ষে বলিদানের পরিচর
পাইয়াছি, উনবিংশ শতাক্লীর মধ্যভাগে আমাদের তীর্থ-অমণকার
সর্কাধিকারী মহাল্লমও তাহারই প্রভিধনি করিয়াছেন—প্রভেদের
মধ্যে বাক্পভির সময় নরবলির আধিকা ছিল, কিন্তু বটাশপবর্মেণ্টের
স্থানিমন নরবিল নিষ্কি হওয়ায় তাহার তানে পশুবলি। তীর্থ-অমণে

লিখিত ইইয়াছে—''মহাকালীর স্মুথে প্রতি দিবস আনিয়্মিত বলি
প্রদান হয় । ক্ষিরধারে স্থান পরিপূর্ণ আছে। বিদ্যাচলবাসী প্রায়
সকলে মৎক্ত মাংসভোক্লী এবং দেবীতান অক্ত স্থবাপানাদি আছে।

মূলপুর হইতে চ্পালগড়ে আদিয়া বজরা লাগে। এই চপ্তনিয়ড় এক্ষণে চুনার বাওঁনার নামে খ্যাত, পূর্ব্বে চরণাদ্রিগড় নামে প্রসিদ্ধ ছিল। ইহার তিনক্রোণ দ্বে সাহেবদিগের থাকিবার নুতন বালালা শোভিত ছোট-কলিকারো। এখান হইতে ৬ ক্রোণ আদিয়া কাণীরাজের রাজধানী রামনগর বা ব্যাসকাশী। তৎপরে আদিয়াট, কেদারবাট হইয়া নারদ্বাটে বজরা লাগান হইল। সে দিন সকলে বিবেখর, অয়পুর্ণাদি দর্শন করিয়া বজরাতেই তীর্থোপ্রাস করিয়া রহিলেন। তৎপর দিন সকলে প্রভিক্ত্যাদি সারিয়া চৌবটি বোগিনার ঘাট ও কেদারেখর দর্শন করিয়া বালালিটোলার এক ভাড়া বাড়ীতে উঠিলেন।

১২৬৩ সালের ১৭ই পৌষ হইতে ১২৬৪ সালের ১৬ই আখিন
পর্যান্ত গ্রন্থকার কালীধানে অবস্থান করেন। এই দীর্ঘকাল কালীবাসহেত্ পৃত্যাপুত্ররূপে কালীধানের বিবরণ সংগ্রহের স্থবিধা
হইরাছিল সে কথা পর্কেই লিখিয়ছি। মধ্যে ১০ই ক্রৈষ্ঠ তিনি
অবদেশাগমনের উদ্বোগ করিয়াছিলেন। কিন্তু সেই দিনকার দিলীর
সংবাদপত্রে মিরাট ও দিল্লীর সিপাহী-বিলোহ সংবাদ পাইয়া
সকলেই বিচলিত হইলেন। মনে করিয়াছিলেন যে, কাল-বৈশাথী
থামিলেই অদেশবাত্রা করিবেন, কিন্তু এখন আর কাশীত্যাগ করা
হইল না।

গ্রন্থকার তংকালে লোক-মুথে ও সংবাদপত্রপাঠে সিপাহী-বিদ্রোহ সম্বন্ধ বাহা কিছু জানিতে পারিয়াছেন, দে সমস্ত্রত লিপিবছ করিয়া গিয়াছেন। ২৯এ বৈশাগ (১৮৫৭ খুং অং, ১০ই মে) ছইতে ৩০এ জৈচি (১০ই জুন) পর্যান্ত দিল্লী, মিয়াট, জাগরা, মধুরা, জালিগড়, জৌনপুর, কালী প্রভৃতি হানে বিদ্রোহীরা বেরূপ জত্যাচার করিয়াছিল, বেরূপে বিদ্রোহ দমন করা হয়, গ্রন্থকার সংক্ষেপে সেই সকল কথা লিপিবছ করিয়া গিয়াছেন। সমসামত্তিক হইবার যদিও সিপাহী-বিদ্রোহের ইতেহাস লিপিবছ করিয়াছেন, কছ সে সময়েয় একজন প্রসিদ্ধ বাঙ্গালীর রচনা বলিয়ারিকেন ছেন, কছ সে সময়েয় একজন প্রসিদ্ধ বাঙ্গালীর রচনা বলিয়ারিকের লে মানদের দেশীর রাজভারবর্গর, প্রধানতঃ বাঙ্গালীর রতকর্মের কথা বাহা ইংরাক ঐতিহাসিকগণ আনবস্ত্রক বোধে ছাড়িয়া পিয়াছেন, আমাদের বাঙ্গালী গ্রন্থকার তাহার কিছু কিছু লিপিবছ করিয়া গিয়াছেন। ইড্যাদি কারণে তীর্থ-অমর্থের 'সিপাহী বিদ্রোহের বিবরণ' অংশ বাঙ্গালীর নিকট বিশেষ মূল্যবান্ ও আন্তর্মর জিনিস। গ্রন্থকার পর্যাপাহারী সুঠক সিপাহীদিপকে

কিন্ধপ দ্বণিতভাবে বর্ণনা করিয়া গিয়াছেন এবং ক্সায়পরারণ ইংরাজ রাজপুরুষদিগকে ক্ষিত্রপ ভক্তি ও প্রীতির চক্ষে দেখিতেন, তাঁহার বিবরণ হইতে আমরা ভাহার কতকটা নিদর্শন পাইতে পারি।

১৭ই আবিন স্কাধিকারী মহাশ্র কাণীপ্রদাদ থাব প্রভৃতির সহিত নৌকাবোগে কাণী ছাড়িলেন। কাণী হইতে ৫ ক্রেশে আদিয়া প্রথমে গোমতী, তংপরে সৈংলপুর হইরা গান্ধিপরে আগমন করিলেন। এখানে তাঁহার প্রিরপুত্র স্থাকুমার সর্বাধিকারী মহাশ্র ডাক্তারী করিতেন। এছকার পুত্রের বাদার সপ্তাহ্ণাক আপেকা করেন। এই কর্মিন গান্ধিপরে বাহা কিছু দেখিবার স্মন্তই দেখিয়া কইয়াছিলেন এবং বিশ্বভাবে তাহা লিপিবছ করিয়া গিয়াছেন।

২৬এ আখিন গালিপুর হইতে নৌকা ছাড়িয়া বাবলাবন, বীরপুর, চৌসর, বগসর বা বক্সর, ভোলপুরের অন্তর্গত হরদি, ছবলি,
হালিম, মানিরা, ভবানিয়া ও পদহিনা, ডোমরার সামিল, লিভবানী,
রিবিলগল, সারণ চাপরা, ডুরিগল, শোণভদ্র, দানাপুর ও বাকিপুর
হইয়া-পাটনায় লাদেন। এখানে কালীবাবুর পরিবারদিগকে
রাখিয়া কেবল তিনি, কালীবাবু ও ভোলানাথ মুখোপাখায়
ভিন লানে পাজী করিয়া বহু কটে, গয়াভিমুখে চলিলেন। পথে
পুনপুনীভীর্গ, দিলীববের প্রধান সেনাপতি লাল্থীর নিবাস
ডুবরিগ্রাম, মশোড়ি, জাহানা, মকদমপুর, চালানবাগ প্রভৃতি
হইয়া তরা কান্তিক গয়াধামে খাগমন করেন।

এছকার উপরি উক্ত যে সকল স্থান দর্শন করেন, তাঁহার কিছু কিছু পরিচরও দিয়াছেন। প্রথমবাত বখন গ্রাধানে বান, তংকালে এখানকার হাটবালারের বেবন শোভা ও আড্বর দেখিরাছিলেন,

এবার সিপানীবিদোনের পর ভারার বিপরীত দেখিলেন। "প্রধা-ধাষের ৰাজার সকল দেখিলাম খ্রীভ্রষ্ট, পূর্ব্বমত দোকান সকল দ্রব্যাদিতে স্থাভিত নাই, মনুষ্যগণের স্থ<sup>°</sup>নাই, ব্যবসাহিগণ অভিশয় হ:খিত আছে। সাহেবগঞ্জে পূর্ব বেষত চক বাঞার ছিল. ভাছার কিছই শোভ নাই এবং সাহেবদিগের থাকিবার বালগা স্কল কেই দগ্ধ কেই ভগ্ন এই মত ইইয়াছে, কাছারির বাললা অধিন্ত, জেলধানার হার ভগ, ডাক্তারধানার হর উৎপাটিত, বাঙ্গালীদিগের অনেকে স্থাদেশে বাত্রা করিরাছে, অনেকে স্ত্রীপুত্র পরিবারদিগকে দেশে পাঠাইয়া একাকী আছে, ধুনিগণ অনেকে নিধ্ন হইয়াছে, গয়ালদিগের বাটীতে দ্বিওয়ান চাকর বৃদ্ধি. অর্ধ-হানি হাহাকার ধ্যনি। বিষ্ণুপদ দুর্লনে সন্ধ্যার পর চারি দও রাজি হইলে খার ক্র হয়। এই মত অবিচত হইয়া গয়াভূমে সকলে আনাছে।" গয়ার এইকাপ ছক্শা বর্ণনার পর গয়াকদিপের মুধে ভ্ৰমিয়াও স্বয়ং এখানকার অবস্থা জানিয়া সিপাহীবিদ্যোভের ছুৰ্বটনা বৰ্ণনা করিয়া গিয়াছেন। তিনি পুনরায় যখন গ্যা দুর্শনে আসেন, সে সময় পুনরায় বিদ্রোহীর ও আর্থমন আশভা ক্রিনা সকলেই স্শস্কিত ছিল, ধনদৌলত স্কলই গোপন করিয়া-ফেলিয়াছিল, এমন কি বেধানে প্রালেরা অবাচিতভাবে বাজীর थबह हालाहेवात अन्न कर्क मिर्टन, मिक्र यूरन शहकांत्र धार्थना করিয়াও তাঁহার গগালের নিকট হইতে কিছুই সংগ্রহ করিতে পারেন নাই। গ্রন্থকার সে সকলের গোলবোগ লক্ষা করিয়া লিখিয়াছেম, "গ্যাভূমি টলটল করিতে লাগিল, বোধ হইল বেন পুনরায় গ্রাম্বর উঠিগাছে, সেই মত মহাপ্রণয় উপস্থিত হুইয়াছে। चामारमञ्ज चन्नामि चाराज केत्रा रहेग ना. समर्थान कविशा शांकिरफ

**১ইল। • • • বিষ্ণুপদ দর্শন করিতে গমন করিয়া** দুর্শনাদি চরণ তল্পী লইয়া বাদায় আনসিয়া পেড়া ও পাধরবাটীর জন্ত অনেক তহির করিলাম, কিছই পাইলাম না। পেডার দোকান বন্ধ, পাধরবাটার দোকান মাত্র নাই, কেবত বাটা ইত্যাদি ভাঙ্গিরা ভূপাকার করিয়া রাখিয়াছে।" গ্রন্থকার অভিকটে এ রাত্রি অনিদ্রায় অভিবাহিত করিয়া পর দিন প্রত্যুবেই সকলে গরা ত্যাগ করিলেন। তথা হইতে প্রথমে ৭ ক্রোশ দূরে বেলাচটী এবং দেখানেও বিপদের আশকা করিয়া ৩ জোশ দুরে মকদমপুরের চটীতে আসিয়া অবস্থান করেন। এখান হইতে জাহানা, মণৌড়ী, নাদাওন, পুনপুনা ও পড়্মার চটা হইয়া সকলে পুনরায় পাটনার সৰজিবাগে আগতন করেন। পাটনার তিন দিন মাত্র থাকিতে হর। ঁতৃতীয় দিবস তিনি গঙ্গাতীরে ষট্বা ষ্ঠীব্রত দর্শন করেন। কোথায় কি ভাবে কিরূপ সমারোভে ষটের মেলা হয়, ভাহা লিপিবদ্ধ করিয়া পিয়াছেন। এই দিবদ সহয়াত্রী স্ত্রীপুরুষ সকণেই নৌকায় সাদিয়া উঠেন। পর দিন প্রাতে নৌকা ছাড়িয়া দেওয়া হয়। এ দিনকার রোজনামচায় চকৈর ঘাট, মাক্রগঞ্জ, বাবুয়াজির বাগান, বৈক্ঠপুর ও রুপস্থামের সংবাদ এবং রুপসের উত্তর তীর্বাসী স্প্রসিদ্ধ দন্ম্যস্দার ভালেমজোলেমের কথা বণিত হইয়াছে। তৎপরে ব্যাক্রনে বাড়, মকিয়াপুর মো, দরিয়াপুর, স্থাগাড়া, মুম্বের, জরাসন্ধণড়, সীতাকুও, জালিরা বা জহুমুনির আব্রম, ভাগলপুর, কংল গাঁ, পাধরখাটা, পীরপৈতি, গলাপ্রদাদ, সাঁকড়িগলির পাহাড়, কুড়িখোল, রাজ্মহল, নিম্ভলা, লক্ষীপুর, কান্গাটের বাজার, শিবগঞ্জ, ছাপঘটির মোহানা, শঙ্করের বাজার, জ্ঞানিপুর, वानावतत्र, गद्रमावाम, विद्यागक, पूर्णिमावाम, मद्रमावाम, श्राप्ता,

বছরমপুর, সাটুই, কপালেখর, কালীগঞ্জ, শিরণি, নলেপুর, বেল-হারিগঞ্জ, অজয়নদের মোহানা, কাঁটোয়া, দাইহাট-দেওয়ানগঞ্জ, মাটিয়ারি, থোগালপুরের চড়া, অগ্রহীপ, পাটুলী, বিব্ঞাম, আলুনে কড়কড়ে, ফুক্নপুরের বালার, মেচ্তলা, কাঁকলিলি, বালভাগা, বেলপুথরিয়া, সোণাভাঙ্গা, কেশেডাঙ্গা, মাতাপুর, জিমোহানী, মাধৰগঞ্জ, নবদীপ, নলেপুর, হাড়ডেঙ্গা, মির্জাপুর, মধুরাপুর, व्यक्षिकाकान्त्रा, भाश्चित्र, श्वश्चित्राष्ट्रा, ज्ञिद्रति-वनागण, जाकपर, শিজেডুমুরদহ, ত্রিবেণী, বাঁশবেড়িয়া, হুগলী, ফরাস্ডাঁপা, ভদ্রেখর, কাউগাছি, পরিটের বাগ, নবাবগঞ্জ, পাণ্ডারঘাট, বৈছবাতী, নিমাই-ভীর্থের ঘাট বা দিগঙ্গ, টিটাগড়, সেওড়াপুলি, মণিরামপুর, কানাই দেওয়ানের দহ, দেবগঞ্জ, সাত্বাবুর বাজার, জ্ঞীরণমপুর, চাণক, मार्ट्स, विशालकीय पर, त्रिम्हा, थड़पर, श्वरुव, शानिहाती, কোরগর, কোতরক, আগড়পাড়া, এড়িয়াদহ, উত্তরপাড়া, নসরীই, বরাহনগর, কাশীপুর, ভদ্রকালী, বালি, বারাকপুর, ঘুসড়ি, भागिथा, গোলাবাড়ীবাট, হাবড়া, রামকৃষ্ণপুর, শিবপুর, চিৎপুর, স্থরের বাজার, পরে বাগবাজারের বাদ্ধাঘাট। এইখানে অবভংগ।

এইরপে তিনি নৌকাপথেগদার পার্বে ও উভর কুলে যে সকল প্রানিদ্ধ দান দেখিয়াছিরেন বা পাইয়াছিলেন তংসমুদায়েরই উল্লেখ করিয়াছেন, কেবল নাম করিয়া ক্ষান্ত হন নাই, ঐ সকল স্থানের মধ্যে প্রধান প্রধান স্থানগুলির দ্রষ্টব্য ও জ্ঞাত্বা বিষয়াদিও সংক্রেপে লিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন। তীর্পুল্মশারচনার প্রার্থিক বর্ষ পূর্বের রিচত বিশ্বয়রাম বিশারদের তীর্থমশালে গলাতট্ব স্থাছে, ও এই তীর্থম্যৰ ইইতে তাহার

নাহিত্য-পরিবৎ ছইতে প্রকাশিত বংসন্পাদিত তীর্থদকল এইবা।

কিছু পরিবর্তন দৃষ্ট হয়। গঙ্গার স্রোতের ক্রমশঃই পরিবর্তন হইডেছিল।

বাহা হউক সর্জাধিকারী মহাশরের তীর্থন্ত্রমণ হইতে ইটানিপথে ও জলপথে উভর প্রকারে বালালার ধর্মপ্রাণ হিন্দুগণ বে ভাবে অনুর উত্তরপশ্চিম প্রদেশে তীর্থ করিছে বাইল্ডেন, তাহার আমরা বিশ্ব পরিচর পাইরাছি। সর্জাধিকারী মহাশর ১২৬৪ সালে ৩-এ কার্ত্তিক কণিকাভার প্রভাগমন করেন। তংপুর্কেই হাওড়া হইতে ইই-ইতিমান বেলওরে খুলিয়াছে, সেই সঙ্গে ইটাপথে ও জলপথে গমনাম্মনও এক প্রকার বন্ধ হইতে চলিয়াছে। স্করাং সর্পাধিকারী মহাশরের এই তীর্থন্ত্রমণ প্রকৃত প্রস্তাবে বালালী তীর্থবাত্রীর শেন্ধ বিবরণী বলিয়া-প্রহণ করিতে হইব।

স্কাধিকারী মহাশয় কলিক তায় ৭ দিন মাত্র থাকিয়া প্রজ্বলের সহিত দেখা সাক্ষাং করিলেন ও নানা তীর্থ ইইতে যালা সংগ্রহ করিয়া আনিয়াছিলেন, যাহাকে যাহা দিবার তাহা বিলি করিয়া দিলেন। ৭ই অগ্রহায়ণ কলিকাতা পরিত্যাপ করিয়া দৌকার অগ্রাম রাধানগর অভিমুখে যাত্রা করিলেন। কলিকাতা হইতে রাধানগর প্রাক্ত যে যে স্থান ইইয়া গিয়াছিলেন এবং যে যান দর্শন করিয়াছিলেন, তাহাও লিখিয়া রাধিতে ভ্লেন নাই। নই অগ্রহায়ণ তিনি আপনার প্রিয় জয়ভ্নি রাধানগরে ক্রিয়া আদেন। বছকাল পরে তাহার চিরশান্তির আবাসে শান্তিনাত করিবেন আশা করিয়াছিলেন, কিন্তু বিগতার কি অপুর্ক্ষ বিচার! যরে আসিয়া তিনি স্বিয় হইতে পারিলেন না, মধামা মাতাঠাকুরাঝীর আর্কালের সহিত ব্রিলেন, "মধ্যম লাভা বৈকুঠের বৈকুঠলাত হইয়াছে। এই ঐত্রমাত্র লাক্ষণ শেলের জার

বক্ষঃস্থলে আঘাত হইরা বোধ হইল বক্ষ বিদীর্ণ হইরা গেল, আর দত সহল্র শেলাঘাত হইতেছে— এই আশহাতে তাবংশরীরে কম্প হইরা চৌকী হইতে পড়িয়া বাইবার উপক্রম হইল।"— এখানেই স্কাধিকারী মধ্যশরের বোজনামচা বা তীর্বভ্রমণকাহিনী শেষ হইয়ছে।

উপরে বে পরিচর দিলাম, তাহা হইতেই এই আলোচ্য গ্রন্থের উপাদেরতা সহজেই উপলব্ধি হইবে। তিনি বেখানে বে বিষয়টি বর্ণনা করিয়াছেন, তাহা বেন প্রতাক্ষবৎ দেখিতেছি মনে হইবে। আরাদ ও বছ অর্থ ব্যর করিয়া বাহাদের ভাগ্যে আর্থ্যাবর্তের সমস্ত তীর্থপান দর্শনে হবিধা নাই, তাঁহারা ঘরে বিদিয়া এই গ্রন্থ হইতে তীর্থসমূহের বিশদ পরিচন্ধ আনিতে পারিবেন। গ্রন্থকার আর্যাবর্তের মধ্যে ছোটবড় কোন তীর্থের এমন কি তাঁহার সময়ে প্রসিদ্ধ অপরাপর নগর গ্রামাদির পরিচন্ধও বাদ দিয়া বান নাই।

এই এছখানি কেবল তীর্থপরিচর নহে, এই তীর্বজ্ঞনণে সম্বত্ত আর্থাবৈর্তের হিল্পসমাজের চিত্র আছে, ৬০ বর্ষ পুর্বের বধন হেলপথ হল নাই, যথন ইংরাজী শিক্ষা এরপ প্রসারিত হয় নাই, তৎকালে হিল্পগণ কিরুপ ধর্মপ্রাণ, দেববিজ্ঞভক্ত, সর্বভাগী, কইসহিষ্ণু, পরিশ্রমী, সংসাহস ও সভাপ্রিয় ছিলেন, এই তীর্বজ্ঞমণ ইইতে ভাচার যথেই পরিচয় পাওরা গিরাছে।

## ভাষার পরিচয়

উপরে এছ-পরিচর-প্রসঙ্গে তীর্থ-এমপের বহু হান উদ্ভ হইরাছে, ভাহা হইতেই এছের ভাষার অনেকটা পরিচয় পাওয়। যাইবে। সাহিত্যাচার্য শ্রীযুক্ত অক্ষয়চন্দ্র, সরকার মহাশ্র এছ-রচনা পাঠ করিয়া লিখিলাছেন,—

"এমন গ্রন্থ বালাগার আর নাই। সেই পরিচয় দিতেছি—সহজ বালাগার বালাগার নিজ ভাব-ভলিতে কিছু নেথা ক্রমে দেখিছে, একটা পাপের মধ্যে দাঁড়াইতেছে। এই গ্রন্থেইই ভাষা দেখিরা একজন মনীয়ী বলিয়াছেন, ভাষাটা ঘেন কেমন কেমন। অর্থাং লা আছে ইহাতে দেবভাষার গান্তীয়া, না আছে ইহাতে আধুনিক বিজ্ঞানের প্রাথগাঁ। তা নাই বটে, কিছু এই তার্গক্ষণ-বাণারে বালাগা আপনার ভাবভলি, ভর, ভালবাসা, ক্রমণের স্থ-ছংখ, ভক্তির উছে, াস, ক্ষতি সরল সহজ শালা কথার অতি স্করভাবে প্রকাশ করিয়াছেন। ভাষা বে স্কর, এমন কথা বিল না। বে থোদকারিতে ভাষার সৌক্র্যা ফুটিয়া উঠে, সে বোদকারি এ গ্রন্থে নাই বলিলেই হয়। আছে গ্রন্থকারের দৃষ্টির পরিচয়। এমন পৃত্যাকুপ্রাণ্ডিই অতি অল লোকেরই আছে।"

সুপ্রসিদ্ধ সংস্কৃত-শাস্ত্রবিং প্রবীণ সাহিত্যিক পণ্ডিতবর তারা-কুমার ক্বিরত্ব মহাশায় গ্রুছের ভাষা লক্ষ্য করিয়া লিথিয়াদ্ধেন,— "এই পুস্তক যে সময় লিথিত, সে সময় বঙ্গের ইদানীস্তন স্থসংস্কৃত ও স্থমার্জ্জিত মাতৃভাষা মাতৃ-গর্জে নিহিত ছিল। আশ্চর্যোর বিষয় এই, আধুনিক মাতৃভাষায় একজন সিদ্ধৃত্ব স্থাপেক কর্তৃক এই

গ্রাম্ব রচিত হইরাছে, এ কথা বলিলে অসঞ্জ হর না।" বাস্তবিক 'नर्काधिकाती महानव ७ वर्ष शृत्की व छात्रा वावहात कतिबाहिन, সে সময়ের ডলনায় এই গ্রন্থের ভাষাও উচ্চাসন লাভ করিবে, গন্দেহ নাই। মাননীয় সারদাচরণ মিত্র মহাশয় এই গ্রন্থের ভাষা সমা-লোচনা করিয়া যথার্থই লিখিয়াছেন, "তীর্থভ্রমণের ভাষা দে কালের ভাষা, হয় ভ অনেকে পাঠ করিয়া সময়ে সময়ে হাল্ড সম্বরণ করিতে পারিবেন না: কিন্তু কালাভায়ে ভাষার পরিবর্ত্তন অপরি-ভার্যা। আবার শেষ যাটি বংসরের মধ্যে সংস্কৃত ভাষার আলোচনা, সংস্কৃত শব্দ, প্রত্যয় ও সমাসের সমাবেশ ও ইংরাঞী সাহিত্যের অফুকরণ নিবন্ধন বল্লভাষার সম্ধিক পরিবর্জন হইয়াছে। • • তীর্থ-ভ্রমণের ভাষা ভাল, বাংগালা সরল, প্রাল্পর সকলেরই বোধগমা। আভিধানিক শব্দের ব্যবহার নাই বলিলেই হয়, অথ5 ওজবিভার অবভাব নাই। এ ভাষা সকলেরই পছল হওয়া উচিত। শামরা শাসের আডেয়র চাহিনা. শাসের মেঘগ্রজন চাহি না। এ কথাসতাবে, বেশ-ভূষণে বিহীকেও একট সুহী দেখায়; কিন্ত প্রকৃত সুত্রীর অলম্ভারের অভাবে ক্ষতি হয় না। শক্রলা বন্ধল-পরিহিতা হইলেও পরমা সুন্দরী।\*

মহামহোপাধ্যার হরপ্রসাদ শাস্ত্রী মহাশয় এই গ্রন্থের ভাষা সমালোচনা-প্রসঙ্গে লিখিয়াছেন,—

"নিতা দশ পনর মাইল পথ ইটিয়া তীর্থাদি দর্শন করিয়া তীর্থের, সমস্ত ক্রিয়া পৃত্যাকপুত্রকপে নির্কাণ করিয়া বৃত্নাথ যে সময়টুক্ পাইভেন, তাহাতে তীর্থ-ভ্রমণের বোজনামচা লিখিয়া রুবাধিতেন। সে রোজনামচা পড়িয়া জনেকেই বিস্মিত হইয়াছেন। তাহার বালালা—তৎকালে বিষয়ী লোকদের মধ্যে যে বালালা চলিত,

গাঁটা সেই বালালা। খুঁগীয় উনিশ শতকের আরস্তে তিন রক্ষ বালালা চলিত—( > ) ভট্টাচার্যাদিগের বালালা, ( ২ ) আদালতের-বালালা ও ( ০ ) বিষয়ী লোকদের বালালা। প্রথমটাতে টোলে যে সকল সংস্কৃত বই পড়া হয়, সেই সকল সংস্কৃত হই এর সংস্কৃত শক্ষ আনক থাকিত। বিভীয়টাতে পারদা, আরবী ও উর্দু শক্ষ বেশী থাকিত। ভৃতীয়টাতে সংস্কৃত ও থাকিত, আরবীও থাকিত, পারদীও থাকিত, কিন্তু কিছুই অধিক পরিমাণে থাকিত না, কোন কড়া শক্ষ থাকিত না, যাহা দেশে প্রচলিত, যাহা সকলে ব্রিত্তে পারিত, সেই অক্ষই থাকিত। যহুনাথের বালালা থাঁটা এই বালালা। ইহার পর বালালার অনেক পরিবর্ত্তন হইয়া গিয়াছে; তিন রক্ষ বাল্যালায় মিশিয়া এক রক্ষ অন্ত্রত পদার্থের স্টি

প্রকৃত প্রস্তাবে বলিতে কি, তার্থ-অনশের ভাষা প্রকৃত প্রাণের ভাষা—ক্রমের অভিবাজিন, ইহা খোদ-পোষাকী ভাষা নহে, মনে নত্জ্মা করিয়া অপরের ভাব প্রকাশের চেষ্টা নহে, ভাবিয়া-চিন্তিয়া নাজিয়া-অবিয়া শক্তিমর করিবার প্রয়োজন হয় নাই। যাহা দেখিগছেন, যাহা মনে উদয় হইয়াছে, তাহাই টুকিয়া রাখিয়াছেন। যে ভাষায় ভাবিয়াভেন, সেই ভাষাতেই লিখিয়া রাখিয়াছেন, তাই বলিতেছি, তার্থ-অনপরে রচনা খাঁটা বাসালা। মাহারা খাঁটা বাসালা দেখিতে চান, তাহারা অবশ্র এক বার এই তীর্থ-অম্ব পাঠ করিবেন। বাস্থালীর নিত্য ব্যবহার্য্য অথবা সে কালের সাধু ভাষার তীর্থ-অমণ বির্হিত হইয়াছে—ইহার বছ স্থানে বাস্থালী ভত্তের প্রকৃত হৃদয়ে। আরি নিজের কোন কথাই মহাশয় নিজের রোজনান্য লিখিতে বিস্থা নিজের কোন কথাই

বাদ দিয়া যান নাই--তাঁহার হৃদয়ের সরলতার সঙ্গে ধেন তাঁহার ভাষারও সরলতা প্রকাশ পাইয়াছে। যিনি যে, সময়ের কোকই **হউন**—তাঁহাতে সেই সময়ের কালধর্মের ছাপ পড়িবেই প্ডিবে— বিশেষত: শিক্ষিত ব্যক্তির পক্ষে। গ্রন্থকার এখনকার মত উচ্চ-ইংরাজী-শিক্ষিত না হইলেও তাঁহার সময়ে যেরপ শিক্ষা-দীকা শাকিলে শিষ্ট ও ভদ্ৰ-সমাজে মান-সমুম হইত, আমাদের গ্রন্থকারের ভাৰার অভাব ছিল না। তাঁহার বাস্যকালে উদ্ভিপারসীর আনোচনা এক কালে বিলুপ্ত হয় নাই, ইংরাজনী ভাষা সবে মাত্র প্রবেশ করিতেছে, কিন্তু তাঁহার বাল্যকালে যাঁহারা করা ব্যক্তি ও শিক্ষিত বলিয়া পরিচিত ছিলেন, তাঁহারা সকলেই উর্দুবা পার্নী ভাষার পণ্ডিত ছিলেন, তিনিও নিজে একদন পার্দীনবীশ। এখন বেমন স্চরাচর কথা-বার্তায় ১০টা বালালার সঙ্গে ১টা ইংরাজী বুক্নি বাহির হটয়া পড়ে, তংকালে ভদ্র-সমাজে পারসী বা উদ্দেষ্ট্রপ ছিল; -- মামাদের গ্রন্থকার ভাষার প্রভাব এড়াইতে পারেন নাই, এ কারণ তাঁহার প্রভূমধাে —

সহরপানা, নহর, পলিজ, মুলী, নামলা, উঠায়গির, কছলখার, আলাম, আলোয়ার, গোবরের, মেহরাপ, তবকুল, সরহজা, শিকিম, মাকুই, কুলপী, আবগারি, পুরমিট, প্রকরা, কিনার, রেতী, মুরচা, মজবুদ, পোন্তা, শেলেখানা, হুকুম, মহলা, পাবিদার, মদত্তগিরি, বলুকচি, পানাপোতী, আমললারি, মুহরি, মবলগ, লোকসান, কুহমুহরি ইত্যাদি শব্দ পাইছেছি। এ ছাড়া হিন্দী ভাষাও উপেক্তি ছিল না। তাহার ফলে অনেক লানে চাবেনা, চানা, ভাক, ঝাকি, বাদল, বিগড়া, প্লদ, ভেটিয়ারি প্রভৃতি শব্দ দেখিতেছি। তৎকালে ইংরাজী ভাষার প্রভাব ভক্ত-সমাব্দে অল আর প্রবেশ

করিতেছিল—তাহার নিদর্শন—কন্সারন ( Concern ), মেগাজিন ( Magazine ), বারিক ( Barrack ) প্রভৃতি কএকটী শব্দে লক্ষ্য করিতেছি।

এ ছাড়া এখন বে দকল শক্ষ ও পদ অসাধু ও বাকরণহাই বলিয়া পরিগণিত, তীর্থ-অন্য-রচনা কালে দেরপা ছিল না। এ কারণ তীর্থ-অন্য-রচনা কালে দেরপা ছিল না। এ কারণ তীর্থ-অন্য-রচনা কালে দেরপা ছিল না। এ কারণ তীর্থ-অন্য-রচনা কালে রাজ্ব নিজে সংস্কৃত ভাষাতেও ব্যংপর ছিলেন। তীর্থ-অন্য হইতে আমরা বেশ ব্রিতে পারি বে, আমাধের মাতৃভাষা বালালা বে সংস্কৃত, হিন্দী বা পারসা ভাষা নহে, অথবা সংস্কৃত প্রভৃতি অপর কোন ভাষার নিয়্মাস্থ্যারে এই ভাষাকে পরিচালিত করা চলে না বা উচিত নহে, তার্থ-অন্যকারের তাহা বেশ আনাছল। যে ভাষার সহজ ও গোঁজা কথার মনের ঠিক ভাব প্রকাশ করা বায়, অথচ ছোট-বড়, প্রতিত-মূর্থ কাহারও ব্রিতে কোন আয়াদের প্রয়োজন নাই, তার্হাই প্রকৃত আদেশ ভাষা। আমাধের গ্রন্থকার সেই আদেশেই চালয়াছেন—ভাই গ্রন্থ লিখিবার উদ্দেশ্পে মুটত্ব না হইলেও তাহার এই রোজনামচা বা ভার্থ-অন্য বাসালা ভাষার একথানি অন্তিতীয় ও প্রধান গ্রন্থের আসন অধিকার করিয়াচে।

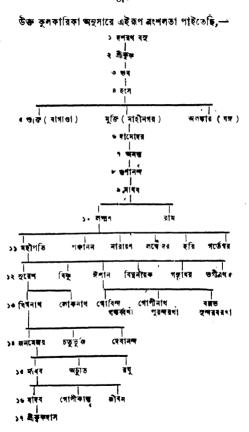
## গ্রন্থকারের কুল-পরিচয়

বালালা ভাষার বিনি একণ একথানি অধিতীয় এছ রচনা করিয়াছেন. তাঁগার কুল-পরিচয় জানিতে কাহার না ইচ্ছা হয়। অতি সংক্ষেপে তাঁগার কুল-পরিচয় দিতেছি। দক্ষিণরাড়ীর কুলকারিকায় বস্থবংশের পরিচয়-প্রসংগ সর্বা প্রথমেই স্বাধিকারিবংশের এইরূপ কুল-পরিচয় প্রদত ইইয়াছে। যধা,—

> শদশরধরমূজাত: শ্রীলক্ষেণ বিরেজে স্মজনি ভবনামা তৎমূত: শুদ্ধচেতা:। প্রকৃতস্থিলমধ্যে হংসনামা স্থাতজ

ভবস্থত ইহ লোকে তংমতা: ভব্কিকাম্বা:।। বাগাঞাসমাজঃ গড়ঃ ভাকিনামা ততো মাহিপুৰ্য্যাং যথে। মুক্তিকঃ সন। স্থাতেলাঃ স্থাঃ সংকৃতী বৃদ্দেশং ব্ৰহ্ম নরস্থার নামা বিরেজে ॥ ष्ण्यक्षिकार श्रीनमार्थानदाया-ন্ততো কল্পে বানস্তক: ভ্রুচেতা:। यक्र=धिवानी खनाननम्भा-ন্ততো মাধ্বস্তং ফুডা লক্ষ্ণান্তা: ॥ বস্তুল স্থাণ=চক্ৰপাণিম হাত্যা ' জইপ্রোদ্ধনক্ষতো বিবেজে। ততঃ শ্রীপতিশ্চারতো ভূরিতেবাঃ সতা রামস্থ কিতো সপ্রতিষ্ঠা: ॥ আছে) লক্ষণকৰ্মহীপতিবস্তঃ পঞ্চাননোহভূমহান তৎপশ্চাৎ কুণকীৰ্তিবিভবিপুলো নারারণাখ্য: সুধী:। খ্যাত: এবিকয় প্রিয়ং গরতি যো লখোদরোহ ভুত্ত ভ স্তৎপশ্চাছরিসংপ্রকে বিজয়তে পর্ডেখরো মৃত্যক: ॥ স্থাবেশে: বস্থবিষ্ণুরীশাননামা ততো বিমনার: ক্রিতৌ গুরুত্বয়া ৪

कार्डा प्राप्तकः प्रवेशकाशका (क) ख्ती शांद्रायां महीत्मा विदव्रकः। বস্থবিশ্বনাধস্ততো লোকনাথ: করুত্বঃ হুবেশারপু: সাধুশীল:।। জনমেজয়ো বস্ত চত্ত জনামধেয়ৌ দেবানন্দ ইছ বিশ্বস্থ তান্তব্যেহ্মী। শ্রীমাধব: কিল মুকুন্দ উদারকীট্রি-**ভ**াতাঁডতো২চাতরগুজনোজয়াখ্যা: ॥ মাধবত তন্ম ইমে বস্থাদ্বো হি কিল গোপীকান্তক:। জীবন: স হি বিরাজতে সমুং সাধুণীলব সুবংশদীপক: ॥ यापवापकान क्रुक्तनामकः औदाम देव यञ प्रवृक्षः। শ্রীরামন্ত তমুন্দ্র বাং স্কৃতিনো রছেশরাজ্জিরে॥ বিখেশ: কিল প্রাণবন্ধভবস্থাভাতততো জীবন: তৎপ-চাং ব্ৰহ্মবল্প: সুবিদিত: কাণীজগলাপকে)। থাতিন্তত ধনজয়োবসুংরো শক্ষাশ: গোপীপরা: বস্থবরো বিভিতঃ কালিকিক্ষরকুলবরো ধরণীখরদানর: ॥ তদক্রনোহি নটেজ ধানৈজপর: কুতিনা বিমুখে বস্থবিশ্বস্থতৌ নিত্যানল: কিল মুখবর্যো রামর্ধননল: সুত্রানশোর্যা: n তভাতুক: দেবকরামধলো এহাং কুলে বৃদ্ধিতমুখাসংজ্ঞ:। ন্ত্রীকৃষ্ণগানাধুক্তিও ভূগা: মুতা বভুবু: কিল কিম্বরন্ত ॥"



উপরোক্ত কুলকারিকারও কিছু পুর্বে স্কলিত দক্ষিণরাট্র স্মীকরণকারিকার এই স্কাধিকারিকুলের এইরূপ বংশ ও অংশ নিশীত হইয়াছে;—

"ৰূপ মাহিনপরত মুখ্যাদীনাং স্মীকরণং

- ১০। বহুবিখনাব: ইতাসপ্রদানাব বিরেজে নৃদিংহায়্রে মিত্রবর্ষে। গৃহাৎ নোহিপুলক্। দিবভাপি ক্লাং নবরেজে চুমুধা: সদা বিপ্রভক্ত: ।
- ১৪। তংক্ত জনীনেজয়-বদো: কুলং—
  বন্ধ: সোংপি জনমে স্থাধাঞ্চ দানং
  দেদে গোপীখোবে গণেশে চ বোবে।
  তত: সোংপি দেতে মুদং বেববাজে
  ততটক্ত পীতাম্বরে মুধাব্যা: ॥
  তিপে) জাপি মিতে মুদং দতকতো
  ধ্বাং বশ্চ পেতে মহেশে চ বোবে।
  তত: সোংপি দেবীবরাধ্যে চ শাস্তে
  গৃহীতা চ দেবেশকং বোবাদিংহং॥

গণেশত স্তাং গৃহুন্ পীতাধ্র তন্ত্রাং। কংসারিতনয়াং লক্ষা নবরঙ্গপ্তাং যয়ে।

১৫। তৎস্কু ভমাধ্ববসোঃ কুলং—
বিরেক্তির বস্থাধ্বাধাণ দুখাঃ
প্রদানাঃ মুখ্যে শুণী কেশবাব্যে।
ততো বাস্থাদ্বে বতৌ কৈবল্যাখ্যে
মুদং সোপি লেভে যশো বাস্থাদ্বে॥
ন ভোষং প্রপেদে যদ্ঘোষ্বর্যো
গৃহীয়া স্থানস্কঃ ততো মাধ্বক।
ততো বল্লভং নো বিরেজে চ ঘোষ
সুম্থাঃ সুধীরক্ততো পৌরীঘোষঃ॥

১৬। তৎক্তবাদববসো: কুলং—
বহুৰ্যাদবাখ্যা সদা বিপ্ৰভিক্তা ,
কুশীলা হুখীরা ক্ষিতেটা হুপ্রভিন্তি ।
বডৌ ঘোষবর্যো ভূশং রাঞ্চলে
প্রাণাচ্চ লেভে ততো গৌরদােষং ॥
জ্বলাঞ্জক শ্রীলবংস্থা মিত্রবর্ষাং ।
ততো যাদবং যো হিতীরেন লক্ষ্যা
মুদং সোপি লেভে কৃতীরেন কোণি ॥

০৭। তৎস্থত-কৃষ্ণদাস-বলো: কৃল
ক্ষুকৃষ্ণদাসে। মূল: দীপ্যমান:
প্রদানাবিলেভে রবে) ঘোষবর্যো।

মৃতোহদৌ ন রেজে যদৌ বোষকে চ

প্রপৃষ্ঠ প্রধান: রতিকান্তগোব: ॥

১৮। তংস্থত-শীরামবসো: কুলং—

প্রীরামে। বস্থাসধো ছিতিরং প্রীপ ভূষোষামুক্তে দল্পাৎ শ্রীহরিমিত্রকে গুণগুতে গোপাাদিকাস্তাহাকে। হর্ষং নৈব যথে হতঃ প্রকৃতকোপ্যাদানাদ্যো হাঙ্গে স্পেপি চ শভূষোষমগমৎ সর্বাধিকারী মহান্॥

১৯। বহু: সোপি রড়েখরো মুখাবর্ধা:
প্রদানাস্থরেক কিন্তৌ বিখনাথে।
শির্বশৌ মুদং নোক্বিলেভে চ মিজে
ভতো ভূরিভেলা: পঁদৌ ঘোষবর্ধা।
বযৌ সোপি ঘোষজনারিক দানাং
গৃহীত্বা ক ভূষিং গত: শ্রীলরাম:।
ভতোমং কভেবে শিবে চিজারাজে
পুটো ধা বিশীজ্যো বনে ধোষকে চঃ

২০। তৎস্থত-বিশেশব্বস্থা: কুলং-

মুখাং প্রীষ্ঠ বিধনাথ উদিতঃ স্বাধিকারী স্থী:
দানেনৈৰ কুলোক্তবং কৃতিবংং সংপ্রাপ্য গদাধরং।
তংপশচাদুঘুরামকং কুলভবং লক্ষ্ম বেতান প্যাদানাক্ষ্ম ভাষতে বিধিবশাদ্রামাদিনকো মহান্।
ছিতীয়ং গ্রহণ চক্তে মিত্র স্বেখরঃ পূনঃ।
মুখাশ্রেটাহপি বিধেশো ঘালৈনৈ গুণং যথী। ২>। তৎস্থত কিছম অধিকারী বনোঃ কুলং—
কুলে মহান্ শ্রীকিল কিছমে সংস্টালন লক্ষা মধুসুদনক।
মোহক লেভে কিল মুখ্যবর্থা।
মহাদিদেবে মুমুদেবকে চ॥
মিত্রে মনজামস্থতে প্রদানাৎ
জ্ঞাহ কৃষ্ণং স তু কোমলক।
শ্রেণীবিভঙ্গেন বিহীনত্তলা
ব্রীমি কিং ভক্ত ক্লক শোভাম॥

প্রাচীন ক্লকারিকা হইতে সর্কাধিকারি-বংশের পরিচয় উদ্ভূত করিবার কারণ এই বে. দক্ষিণরালীয় কার্থসমান্তে বস্ববংশের মধ্যে প্রথম হইতে এই বংশই দর্কাপেক্ষা সন্মানিত ছিলেন, তাই এই বংশের ক্লপরিচয় সর্কাণ্ডে বিগ্রত হইরাছে। এই বংশের বীহারা আধুনিক ইতিহাস লিখিয়াছেন— ঠালাদের বিশাস যে, ১২ল পর্বাারে মহীপতির পুত্র মুরেল বা স্বরেখরই মুসলমান অধিপতির নিকট হইতে "সর্কাধিকারী" এই বংশগত উপাধি লাভ করেন। বাস্তবিক তাঁহার সময়ে 'সর্কাধিকারী' উপাধি দেওরা হয় নাই। তৎপুত্র বিখনাথ কুলগ্রছে প্রক্রতাক্ষ বা দক্ষিণরালীয় ক্লীনিদিশ্লের মধ্যে সর্ক্রেশ্রত বিলয়া সন্মানিত হইলেও কোথাও তিনি 'সর্কাধিকারী' উপাধিতে ভূষিত হন নাই। তাঁহা হইতে অধ্যতন ৭ম পুক্ষর ক্ষলাস বস্তই প্রথম স্ব্লাধিকারী উপাধিতে ভূষিত হইরাছেন।

উক্ত ক্রেশ্ব বহুর আতৃশ্ব গোপীনাথ প্রনর থা গৌড়াখিপ কুল্ডান হোসেনশাহের রাজস্বনরী (Finance minister) ছিলেন। তিনিই ধনে মানে, কুলে-শীলে দক্ষণরাড়ীর কারস্থ-সমাজে সর্প্রথম সমাজপতি বা গোলিপতি হইরা ১৩শ পর্যারের সমীকরণ বা একজাই করেন, ইহাই দক্ষিণরাড়ীর সমাজে ১ম একজাই বলিরা পরিচিত। এই ১ম একজাই-সভার ক্রেমর বস্তুর পুত্র বিশ্বনাথ বস্তুই বস্তুরংশের প্রকৃত্তরাজ বলিরা বস্তুরংশীর কুলীনদিশের মধ্যে সর্প্রথম মালাচন্দন পাইরাছিলেন, তৎপরে দক্ষিণরাড়ীর কারস্থ-সমাজে যত বার একজাই হইরাছে, প্রত্যেক বারই বস্তুরংশের মধ্যে বিশ্বনাথ বস্তুর জ্যেষ্ঠ বংশধরমাজেই প্রথম মালাচন্দন পাইরা আদিরাছেন।

সর্বাধিকারী উপাধির সহিত শ্রেষ্ঠ কুল-মর্যাদার কোন সম্পর্ক নাই। অনেকের বিধাস বে, এই বংশ দিল্লীর পীঠান বাদশাহ মহন্দ্রদ তোগলকের অধীনে উড়িখার দেওরানী বা শাসনকর্তৃত্ব করিতেন, তাহা হইতেই 'সর্বাধিকারী' এই শ্রেষ্ঠ উপাধি-প্রাপ্তি ঘটে। তথনকার উপাধি অনেকটা বংশগত হইত এবং উপাধি-দানেরও বিশেবত ছিল বে, উপাধির সঙ্গে সঙ্গে পলোচিত মানসম্রম রক্ষ্ণ করিবার অন্ত্র, উপবৃক্ত ভূসম্পতিও দেওরা হইত। স্থতরাং উপাধিলাভের সহিত বার্ষিক ছই লক্ষ্ণ টাকা আবের (উড়িখার অন্তর্গত) রঘুনাথপুর পরগণাও উপহার পাইহাছিলেন। অনেকে মনে করেন, এই বংশের প্রবেখর বস্থই প্রথম 'সর্বাধিকারী' উপাধি ও রঘুনাথপুর পরগণা জারগীর পান। কিন্তু এই প্রবাদের মূলে কিছুমান্ত্র প্রতিহাসিক সূত্য আছে বিলিয়ামনে হর না। ১০২৫ খুটাক্ষে মহন্দ্রদ তোগলক দিল্লীর সিংহাসনে আরোহল করেন। বলা বাছলা, তৎকালে কোন মুসলমান-নুগতি উড়িয়ার স্থারী শাসনাধিকার বিভারে সমর্থ হন নাই। বলিতে কি, মহন্দ্র তোগ

লকের সময়েই পূর্ব ও পশ্চিমবলে মুস্লমান শাসনকর্তারা বাধীনতা অবলম্বন করেন। বলদেশেই হাঁহার শাসনাধিকার লোপ পাইয়াছিল, তৎকর্তৃক উৎকলে শাসন-কর্তৃত্ব উপলক্ষেত্রপাধি ও কাসগীর দান কথনই সম্ভবপর নহে। প্রকর থা স্থলতান আলাউদ্দীন্ হোসেন শাহের রাজস্ব-সচিব ছিলেন। ১৪৯৮ খুটালে স্থলতান হোসেনের অভ্যাদর। পূর্বেই লিখিমছি, স্বরেশ্বর বস্থ পুরক্ষর থার জোঠতাত ছিলেন। আলাউদ্দীনের ১৭৩ বর্ষ পূর্বের মহম্মদ তোগলকের সিংহাসন-লাভ। এরূপ স্থলে হোসেন শাহের সমসাময়িক গ্রক্ষর থাঁর স্বেগ্রত্বর বহু প্রক্ষর ব্যাম্বর্তিত স্বরেশ্বর কর্ষনই মহম্মদ তোগলকের সমসাময়িক হুইতে পারেন না।

পূর্বেই শিথিয়াছি, কুলগ্রন্থন্য হুবেগর হুইতে তাঁহার ৬ট পুরুষ অধন্তন প্রীরাম পর্যান্ত প্রকৃতরাজ বলিয়া সম্মানিত হুইলেও কেবল 'বহু' উপাধিতেই ভূষিত ছিলেন। প্রীরাম বহু হুইতেই 'সর্বাধিকারী' উপাধির প্রকাশ এবং উৎপুত্র রঙ্গ্রের হুইতে পরবর্ত্তী সকল বংশধরই 'সর্বাধিকারী' উপাধিতে ভূষিত হুইয়া আসিয়াছেন। এরূপ হলে মনে হয় বে, পুষ্টায় ১৭শ শতশের শেবে বা ১৮শ শতকের কোন সময়ে এই বংশ 'সর্বাধিকারী' উপাধি লাভ করেন। আমরা দক্ষিণরাটীয় কুলপঞ্জিকা হুইতে পাইতেছি, ১৮শ পর্যায়ে প্রীরাম সর্বাধিকারী প্রিয় পুত্র রঙ্গ্রের আলারসে বিবাহ দিলা উৎকলবাসী মিত্রবংলীয় মোহনয়ায়ের কলা প্রহণ করেন অর্থাং মোহনয়ায় রঙ্গ্রেরের সহিত আলারসে প্রামান কর্মান কর্মান ক্রালার একমাত্র কলার বিবাহ দেন। বলা বাহলা, পূর্ব্বে সমালপতি, দলপতি বা ধনশানী দক্ষিণয়াটীয় কায়ম্বণণ আলারসে কলালান অতিগোরব ও সন্ধানজনক মনে করিতেন।

এরপত্তে কুলার পিচাকে বথেট বায়ভার বহন করিতে হইত এবং পাত্ৰপক্ষের খ্যাতি-প্রতিপত্তি ও সম্পত্তি-লাভের সম্ভাবনা ছিল। এ কারণ যে সে ব্যক্তি আগুরসে করাদান করিতে পারি-তেন না। বসুবংশের প্রকৃতরাজ রত্নেধর সর্বাঞ্জিকারীকে আন্ত-রুদে ক্সাদান করাতে প্রতিপন্ন হইতেছে যে, তাঁহার খণ্ডর মোহন রার উৎকলবাসা হইলেও মাল্ত-গণ্য অভি সম্রাক্ত ব্যক্তি ছিলেন। কুলএছে এই বৈবাহিত-সূত্রেই শ্রীরাম দর্জাধিকারীর আমরা উৎকল-সংঅব পাইয়াছি। স্বৈত্নেখর একজন ভগবস্কুক নিষ্ঠাবান্ বৈঞ্ব ছিলেন। ভক্তিও দানশীকতার জন্ত তিনি জগলাথদেবের মন্দিরে অবাধ প্রবেশাধিকার লাভ করেন, সেই সঙ্গে আর একটি বিশেষ সম্মান পাইয়াছিলেন। খ্রীমন্দিরে প্রবেশ্বকালে তাঁহার ও তাঁহার বংশধর-গণের মাধার ছাতা ধরিরা লইয়া বাঁওয়া হয়। এদিকে এই বংশের (कह (कह विनेश थारकन, ब्राइयंत्र मंद्रीधिकांदौरे मद्भिध्य কটক জেলা হইতে হুগুণীজেলাত রাধানগরে আদিয়া বাদ করেন। কিন্তু আমরা দক্ষিণরাদীয় কুলপঞ্জিকা হইতে পাইতেছি বে, রক্ষাখণ্ডের ক্ষোষ্টপুত্র বিখেষর (খানাকুল) ক্রফনগরের অধিদার সিংহবংশীয় কিশোর রায়েশ্ব ক্রাকে আন্তর্সে বিবাহ করেন। मकाधिकाति-वः स्न श्रवान चाह्न एक, श्रामीय व्यविनात त्रावटहोसूबी-বংশের সৃথিত কুটুম্বিতাপতেই তাঁছারা এখানকার অধিবাসী হইয়া-ছিলেন। তথ্ন খানাকুল কৃষ্ণনগর-সমাজের যথেষ্ট প্রভাব ও প্রতিপ্তি। রাষ্বংশ এ্থানকার সমাজপতি ছিলেন-কিছু প্রকৃত-রাজ বিখেবরের সহিত কুটুখিতা করিয়া তাঁহারা সমধিক সম্মানিত হন এবং বহু সম্পত্তি দিয়া এখানে সর্ব্বাধিকারি বংশের প্রতিষ্ঠা करवन ।

পূর্বেই লিখিরাছি, সে কালে আছবুসে কল্পাদান অভি গৌরব-জনক ও লাবার বিষয় ছিল। স্নভরাং তৎকালে দক্ষিণরাটীর কারত্ব-সমাজে ধনে-মানে বাঁহারা শীর্ষগানীয় ভাঁহারাই আন্তর্গে कञ्चामान कतियां अञ्च बाध इटेंटिन। त्राष्ट्रचेत्र मर्खाधिकाती उ তাঁহার বংশ তৎকালে কুল-মর্যাদার সর্বশ্রেষ্ঠ হওরার তাঁহার বংশধর-মধ্যে আছরস করিবার জন্ত খাতি ও প্রতিপ্তিশালী ধনকবের কায়স্ত্রমাত্তেরই আগ্রহ ছিল, তাহার ফলে উপযক্ত কুলকার্যা বাতীত দক্ষিণরাচীর সমাজের সর্বলেট ধনী ও মানীর বরে তাঁহাদের আভারস হইরাছিল, কলপঞ্জিকা হইতেই আনরা ভাছার পরিচর পাই। যথা—দশহরার গোষ্ঠাপতি পাশবংশীয় माधव बाद विश्वचायद शुळ किन्द्र मर्साधिकादौरक, चायुशालद विकार क्षेत्र का नाम कि का कि ভালকার দেওবান রামনুসিংহ সিংহ নিভাানন্দের পৌত্র প্রকৃত-রাজ রাজনারারণ সংবাধিকারীকে ও রায়েরকাটির প্রশিদ্ধ দেনবংশীর জ্বিদার মহেন্দ্রনারারণ রাজ্বাজ্নারারণের পৌত্ত শ্ৰীনাৰ সৰ্বাধিকারীকে স্ব স্ব-ক্তা এবং শোভাবালারের রাজা মাধাকান্তদেৰ ৰাহাত্ত্ব শ্ৰীনাধের পুত্রাধানাথ সর্বাধিকারীকে আপ্র পৌত্রী (কুষার ২ছেন্দ্রনারারণ দেবের ক্যা) দান করিয়াছিলেন।

এই বংশের জ্যেষ্ঠ বে কেবল প্রক্রতরাজ বলিয়া সম্মানিত ছিলেন তাহা নহে, তাঁহারা দক্ষিণরাদীর গোঞ্চীপতি, সমাজপতি, দলপতি এবং প্রত্যেক সম্মোলিকের নিকট দেববং পূজা পাইতেন। এখনও সে স্মান এককালে বিশুপ্ত হয় নাই।

किश्व वा कानिकिश्व गर्साधिकातीत नाति भूख--निकानम.

রামানল, ক্ষেবকরাম ও তিলকরাম। নিত্যানন্দের তিন পুরজনমেন্বর, 'প্রতাপনারারণ ও রামনারারণ। মুন্সী রামনারারণ
দর্শাধিকারী সংস্কৃত্ত পারদীভাবার পণ্ডিত ছিলেন। তিনি বিশ্বর
বালকের বিভাশিকার সম্বত্ত বার-ভার বহন করিতেন, বিদ্যাপ্রচারের জন্তুত্ত যথেষ্ট চেটা করিতেন। জীহার রাধানগর ও
থিদিরপুরের বাটা বিদ্যাপাঁ ও বিদ্যোৎসাহিগণের সন্মিলন-ক্ষেত্র
ছিল। তাঁহার পুলতাতপুত্র হরিপ্রমাদ ইট-ইন্ডিরা-কোম্পানীর
বাসালা দেশস্থ-সমুদার রেশমের কারবারের দেওরান ছিলেন।
সমন্ত বালালার রেশম-কুঠার উপর অসাধারণ প্রভৃত্ব হেড় তিনি
কালা হরিপ্রসাদ বিলয়া পরিচিত হইলাছিলেন।

মূপী রামনারায়ণের সহিত তাঁহার অগ্রামবাসী রাজা রামনোহন রাধের পিতা রামকান্ত রাবের বিশৈব সৌহন্ত ছিল।

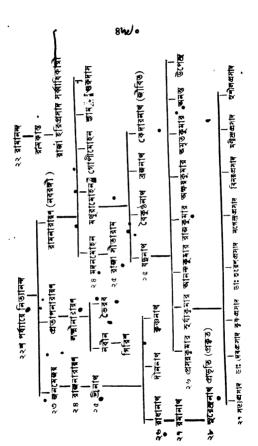
বামনাবারণ বিস্তর অথব্যর করিরা অনেক চেন্টার "নবরপের" কুণ করেন অর্থাৎ পুত্র-কৃষ্ণা ইন্টিকে পর্যারক্রমে উপযুক্ত কুণীন পাত্রী ও পাত্রে বিবাহ দিয়া আপনার কুলের বিশেষ গোরবসাধন কুরেন্"। তিনি আপনার ক্রেটার প্রভূত অর্থ উপার্ক্তন করিয়া-ছিলেন। কথিত আছে, থাজনার টাকা কিছু কম থাকাতে রামনারায়ণ পুত্র মদনমোহনকে অর্থ সংগ্রুহ করিতে বলেন। মদনমোহন নিকে ইক্ষার কোগাড় না করিয়া বতরের নিকট হট্তে আনিয়া দেন এবং পিতার নিকট তাহা উরেথ করেন। উপযুক্ত পুত্র অন্ত উপারে অর্থসংগ্রহ করিবার উপায় সম্বেভ বৈবাহিকের নিকট ঝণ করিয়াছে বলিয়া থাজনার টাকা থাজনা-ঘরে আব্রহণ রাথিয়া রামনারায়ণ তাহার চাবি পুখুরে ফেলিয়া দেন। পুত্রকে অনুষতি করেন যে, চাবি খুলিয়া অর্থ্যে উট্যার খতরের টাকা বেন প্রত্যর্গণ

করা হর, এরপ অবস্থার বিষয়বক্ষা নিজারোজন। এইরপে জ্যেষ্ঠ পুত্র মদনযোহনের উপর রাগ করিয়া কটক জেলার রখুনাথপুর ও অফাক্ত অধিকাংশ সম্পত্তির রাজ্য না দিয়া লাটে চড়াইরা বিক্রয় করাইরা দুন।

রামনারারণ আঁরবী ও পারদী ভাষার বিশেষ বাংপর ছিলেন বলিয়া "মুল্লী" উপাধি প্রাপ্ত হইরাছিলেন; কলিকাতার নিকটছ থিমিরপুরে অনেক বিবর-সম্পত্তি করিয়াছিলেন এবং থিনিরপুরে "মুল্লীর-বাগান" ও "মুল্লী-বাড়ী" অস্তাপি তাহার নামেই পরিচিত। ওয়াট্পজের নিকট অনেক জমি সরকারি রাজা প্রস্তুতের জল্প সভরেণ্টকে হান করেন। তাহা একণে 'মুল্লীগঞ্জ রোড' নামে খ্যাত। তিনি বে নবরক্তুল করিয়াছিলেন, উহাতে তাহার এক কল্পার সহিত হাইকোটের 'ভ্তপুর্ব জল্ প্রীযুক্ত সার্ধাচ্ত্রণ মিত্রের পিতামহ ভৈরবচক্ত মিত্রের বিবাহ হয়।

মুন্দী বামনারায়ণ পিতার তৃতীয় সন্তান, স্ত্তরাং প্রকৃত মুখাভাবাপল লা হইলেও নবরক্তৃত করিলা তিনি দক্ষণরাদীয় কৃতীনসমালে কোমল-মুখাদিপের মধ্যে শ্রেটতা লাভ করিলাছিলেন। তাহার
চারি পুত্র—মদনমোহন, মধুরামোহন, শামামোহন ও ওক্লাস।
মদনমোহনের জ্যেটপুত্র রালা সীতানাথ সর্কাধিকারী বড়লাটের
দেওয়ান ও পরে মুর্লিবাবাদের নবাব-নাজিম হুমায়ুন জার দেওয়ান
হইরা ব্যেই সন্মান লাভ করেন। মদনমোহনের অনুল মধুরামোহন স্কাধিকারীর জ্যেটপুত্র ইইতেছেন —আমাদের তার্থ-শ্রমণরচরিতা ধনামধন্য বছ্নাথ স্কাধিকারী।

পর পৃষ্ঠার ইহাদের বংশলতা উদ্ভ হইল।



## গ্রন্থকারের পরিচয়

বালালার সুসস্তান রাজা রামমোগন রায় ঠে গ্রামে কল্মগ্রহণ করিয়া ভুবনবিখ্যাত হইয়াছেন, সেই রাধানগর গ্রামেই রাজা সীতানাধ-ও তাঁহার ধুডাত ভাই ষ্চনাধ জন্মগ্রহণ করেন। এখন রাধানপর জেলা ছগলী, আরামবাগ সব্ভিভিজান, থানা খানা-কুলের অধীন একটি সামার কুলু গ্রামে পরিণত। এখন সামার হইলেও এক সময় এই স্থান খানাকুল-কুক্তনগ্প-সমাজের মধ্যে প্রধান বলিয়া গণা ছিল। এখানে বহু সম্ভান্ত ব্রাক্তন ও কায়ত বাদ ক্রিতেন, চতপাঠী ও বিস্থালয় স্কল্ই ছিল। এখানে রাস, দোল প্রভৃতি উৎসবে আনন্দের উৎস প্রাহিত হইত। ৮সরস্বতী পঞ্চার ধুমধানের সীমা থাকিত না। এসমর্য এথানে যেরূপ সোলার পুতুল ও 🦠 মানীর পুতৃণ প্রস্তুত হইত, তাহাতে নবদীপ-কুষ্ণনগরের কারিকর দিগকেও হারাইত। এখানকার খাঁস্থা এত ভাল ছিল বে. কলি-কাতা হইতে অনেক বডলোক স্থ করিয়া রাধানগরে বেডাইতে যাইতেন। কিন্তু পঞ্চাশ বর্ষ মধ্যে ম্যাক্রেরিরীর প্রকোপে রাধ্যনপুর উৎসন্ন গিয়াছে, এখন অঞ্চলময় হইয়া প্রভিয়াছে, তথাপি রাজা রামমোহন রাম ও ভক্ত যতুনাথের জন্মভূমি বলিয়া রাধানগর আমাদের নিকট পুণাভূমি ! এই রাধানগরের বক্ষ-বিধোজ নদার অপর পার্শ্বেই ক্রফনগর গ্রাম—স্থ প্রসিদ্ধ অভিরাম গোস্বামীর পাট। এই অভিরাম গোস্বামীর পাট আছে বলিয়া, আজও গৌডীয় বৈষ্ণবদৰ্শীৰে এই স্থান পৰিত ভীৰ্যস্থান বুলিয়া পৰিচিত।

রাজা রামমোহন রাজের জন্মের প্রায় ত্রিশবর্ষ পরে বাঙ্গালা ১২১২ সনে (১৮০৫ খুটাজে) বহুনাথ জন্মগ্রহণ করেন। তৎকালে রাধানগরের উজ্জন অবস্থা। দেশ, কাল ও অবস্থাতেদে তিনি উপযুক্তরূপে পার্ণী ও সংস্কৃত তাবা শিকা করেন। তাঁহার পিতার সময় হইতেই জ্মিদারী নিলাম হইরা যাওয়ার তাঁহাদের আর্থিক অবস্থা কিছু হীন হইয়া পড়ে। তথাপি বঁত্নাব সে সময়ের উপযুক্ত শিকালাতে বঞ্চিত হন নাই।

তাঁহার ছই বিবাহ-প্রথম বিবাহ রাধানগরের পার্শ্ববর্তী দেন-পুর গ্রামে গোপীমোহন ছোষ মহাশরের ক্সার সহিত হয়। এই প্রথমা পদ্ধীর গর্ভে তাঁহার চারি পুত্র ও হই করা জনাগ্রহণ করেন। পুত্রগণের নাম-প্রদারকুমার, স্থ্যকুমার, আনন্দকুমার ও রাজকুমার। তাঁহার বিতীরবার বিবাহ—হগলীর ওড়োপ গ্রামে প্রসিদ নাগবংশীর অনিদারবাজী। এই বিতীয়া পত্নীর গর্ভেও তাঁহার চারি প্র ও এক কয়া জন্ম। বিতীয় পক্ষের পুরুগণের নাম--অক্ষার্মার, অমৃতকুমার, অন্তকুমার ও উপেক্তক্মার। ষ্থনাৰ মধ্যমাক্তি ছিলেন, মুখে ষেন গান্তীৰ্য্য, স্বাধীনতা, দ্বা ও মণতা মাধান ছিল। তাঁহার আত্মীয়-স্কন অনেকেই বলিয়া **भरिकन (स, छीर्थनीका कत्रिवाद वा व्याधिश्रक्त इरेवाद शूटल डाहा**त মুখের ভাব কি হুলার ও চিতাকর্ষক ছিল, যেমন চোধ, তেমনি নাক—তেমনি কপালাদি। তাঁছার প্রেই মুখলী তাঁছার বংশধর-গণের মধ্যে বিরল নহে। তাঁহার ৫ম পুতা উকাল অমৃতকুমার এমনি অপুরুষ ছিলেন যে, আলিপুরের জলকোটে ধুখন তিনি ওকাণ্ডি করিতেন, জ্লখন বিচারক অনেক সময় বলিতেন— "পুপুকৰ উকালের মূথে বলি ওজবিনী ভাষানিগত হয়, তাহা হইণে অনেক কেতেই অয়লাভের সম্ভাবনা।"

বছনাবের বেষন স্লুক্তর গঠন আবার তাহার উপর সেইরূপ

বলিষ্ঠকার পুক্ষের সকল লক্ষণই বিজ্ঞান ছিল। দী বিলল প্ল-রোগে কাতর থাকিলেও তিনি যে কিন্তপ কটদহিত্ব ও পরিশ্রমী ছিলেন, তাহা তাঁহার তাঁহ-ল্রমণের ছল্লে ছল্লে প্রকাশ। তাঁহার বংশধরগণের মুখে ভূনিয়াছি যে, তিনি একটা আন্ত আদমণী কাঁঠাল জনায়াসে ভক্ষণ করিয়া হজ্ম করিতে পারিতেন। আমাবার এমন দিন গিছাছে, অমুশ্লের যাতনার থানিকটা জ্লাও তাঁহার পেটে তলার নাই।

অমুশ্ল-রোগে তিনি বছকাল কটতোগ করিছাভিলেন ভাছার বয়স যখন ৪৭ বর্ষ — তাঁহার পুত্রগণের মধ্যেও বে সময় কেছ কেছ উপধুক্ত হইয়াছেন, এই সময়ে তাঁহার অনুশূল রোগ কিছু বেশী মাআর রৃদ্ধি হুইগাছিল। গ্রন্থকার দেই দারুণ অন্ত বছণা-ভোগের পরিচয় নিজেই এইরূপ দিয়া গিয়াছেন, "সন ১২৫৯ সালের মাধ মাহাতে আমার অহণের ব্যামোহ হইলা শূল উপস্থিত হইল, শূল-ব্যাধির যেমত যাতনা তাগার কিছু নান ছিল না। এক এক দিবদ ষাতনাতে এমত মনে হইত বে, আ অবাতী হইয়া প্রাণ পরিভাগে করি। ভগবংবেচছায় নিবারণ হইত। ক্রমে।ক্রমে শ্রীর ছব্ল এবং আহার রহিত হইল। এক গ্রেবেরে শগ্রে ছিলান, ইতি-মধ্যে নিদ্রাভঙ্গ হইয়া বেদনার স্থত্ত হুটিয়া এক গেলাস জ্ঞল পান কারলাম, ভাহাতে নিবৃত্তি না পাইয়া ক্রমে বৃদ্ধি হুইয়া আঙ্শয় যাতনা হটতে লাগিল। সে যাতনার কথা যথন মনে হয়, তথন প্রাণবিষোগের সম্ভাবনা। হে ভগবান্। তেমন যাতন। ধেন काहात ना इस । (मह बाठनाटि अठाख ध्र्मन এवः वाकून इहे। शृहमध्या कामाव कनिष्ठा छो शृज्यत्रण गरेवा भवास्त्रत्व भवत्न किंग । আমি তিন চারিবার ডাকিলাম, উত্তর পাইলাম না, তাহাতে স্বোগ- বন্ধপার আল তন হইরা অত্যন্ত রোগের বৃদ্ধি হইরা আর কাহাকে
কিছুনা কহিরা 'প্রীপরিবার সকলি রুপা, সম্বন্ধ জীবনাবধি; এই'
মনে থির করিরা চণ্ডালগ্রন্ত হইরা প্রাণ পরিত্যাপ প্রধানকর বিবেচনা করিরা ঘর হইতে বাহির হই। বাহির বাটাকে আসিরা কিরপে
দেহত্যাপ করিব, তাহার উপার চিন্তা করিকে করিতে শ্রী৺রাধাকান্তদেব ঠাক্রের শ্রীমন্দিরের হারে বিলাম। ক্ষণেককাল বসিয়া
থাকিতে বেদনার কিছু শান্তি বোধ হইরা তন্তাকর্ষণ হইল।
তৎকালে রাত্র ভৃতীর প্রহর গত, নির্চাবেশে হন্ত মন্তকে দিয়া
শ্রীমন্দিরের হারে শয়ন করিয়া মনে উদয় হইতে লাগিল যে, মিছা
মায়ায় মৃত্ত হইরা সংসার কৃপ-নহকে ভ্বিয়া কেবল আমার আমার
করিয়া স্থান হইরা সংসার কৃপ-নহকে ভ্বিয়া কেবল আমার আমার
করিয়া স্থান হইরা গংসার কৃপ-নহকে ভ্বিয়া কেবল আমার আমার
করিয়া স্থান হইরা গংসার কৃপ-নার ক্রিয়া ব্যান করিয়া ব্যান করিয়া হেল করিয়া তোমার দর্শনালে দেশ শ্রমণ করিব।
এই চিন্তা করিতে করিকে তন্তাকর্ষণ হইল।"

যত্নাধের নিজের কথার তীর্থ-অনগের উদ্দেশ্য বুরিতে পারিতেইছা প্রথম বোগের ষ্ম্মণা, তংপরে ডাকাডাকি করাতেও
কনিষ্ঠা পত্নীর না উঠা। একীরণ তাঁহার স্ত্রী-পুত্র সংসারের উপর ত্পা
এবং জীবনের উপর মম তাঁহীন হইয়াশ্রী-পুত্র সংসারের উপর ত্পা
থবং জীবনের উপর মম তাঁহীন হইয়াশ্রী-পুত্র সংসারের উপর মারাধ্য
রাধাকান্তের তীম্লির হারে উপরিত হইবামাত্র—সন্তবতঃ তাঁহার
মোহ দ্রু হইয়াভিল—আয়ুহত্যা বে মহাপাপ, ভগবান্ রাধ্যকান্তই
তাঁহাকে সে প্রবৃত্তি হইতে নির্ভ করিয়াছিলেন। সেই দিন
হইতেই তাঁহার জান-চক্ষ্ উল্লুক্ত হইয়াছিল। তবে বে কর
দিন চলা-কেরা করিবার উপর্ক্ত শক্তিন না ইইয়াছিল, সে কর

দিন তাঁহাকে বরেই থাকিতে হইল—তংপরে এঞ্চ বর্ধকাল তিনি কিরুপে কাটাইরাছিলেন, তাঁহার তীর্থ-বাত্রার প্রারম্ভেই লেসকল কথা লিপিবদ্ধ করিয়া গিয়াছেন।

এই এক বৰ্ষ মতি কটে তাঁহাকে অতিবাহিত করিতে হইল্ল'-ছিল। উঁক ঘটনার কএক দিন পরে তাঁহার প্রাণতুল্য জ্যেষ্ঠপুত্র প্রসন্তক্ষার সর্কাধিকারী বাড়ী আসিলেন এবং সাত দিন বাটতে ধাকিয়া পিতার সমস্ত অবহা অবগত হইয়া উপযুক্ত চিকিৎসার কল ভাঁচাকে কলিকাভার বছবাজারের বাদায় আনিলেন। অনেক ভাল ডাক্তার দেখিলেন। অবশেষে রিশড়া-নিবাণী চম্রকুষার দে মহাশ্যের স্থৃচিকিৎসার ৩৪ণে রোগের কতকটা উপশ্ম হইল। চিকিৎসকের ব্যবস্থা হইল—ষভটা পারেন প্রভাহতাঁহাকে পদ্রদ্রে হাঁটিতে হইবে। কিন্তু এ সময় ভিনি বড় চর্ম্বল, তিনি নিজেই জানাইশ্বাছেন--- "ৰহবাজার ছদররাম বাঁড়জোর বৈঠকথানা **ভটতে** বাজার পর্যান্ত আসিতে এত ক্লেশ বোধ হটল বে, ক্রন্দন ক বিলাম। পর দিবস মলজার গোলপ্র রিখীর গারে আই মত কেশ। • • আমি এত হর্মল যে, একবার প্রদক্ষিণ ফেরিতে চারিদিকে চারিবার বসিয়া শ্রম দূর করিতে হয়। এই মত সপ্তাহ করিতে कर्क क्रांम भर्ताष्ठ समस्यत कमडा धवः अधिवृद्धि इहेबा निवाटक আর ও রাত্রে প্রজির ক্ষটি পরিপাক হইল। ক্রমে বল ও আহারের वृद्धि इहेब्रा व्यात्र वाद आना वाधित छैनम इहेन, तारात्र सम হয় নাই।"

ইহার কিছু নিন পরে কান্তন মাদে ভবানীপুর মোকামে তাঁহার ৩য় পুত্র আনন্দকুমারের ভত-বিবাহ সম্পন্ন হইল। চৈত্রমাদে বহুনাথ রাধানপরের বাটাতে আদিশেন। গৃহে আদিয়া তাঁহার আদৌ ভাল লাগিল না। নিয়মমত শগন ভোজন করেন, তথাচ কম্ব মেটে না। উষধ সেবনকালে ভাল থাকেন, ঔষধ ছাড়িলেই আবার বোপ হয়। "পূর্ব্ব ঔদাস্ত মনে আছে।" আখিন মাসে ৮পূজার ছুটাতে সকল পুত্র বাটী আদিলেন। তাঁহার মনের চাঞ্চলা দুবিয়া জোট পুত্র প্রসরক্ষার জিজালা করেন, "সর্বাণ কি জন্ত অন্ত মন ফ্লাছেন।" যত্নাথ আপনার মনের ভাব প্রকাশ করিলেন; শেষে খুলিয়া বলিলেন যে "০২ টাকা হইলে প্রিকাবন পর্যান্ত প্রছিতিত পারি।" সেই দিনই তীর্থাতার সকলে স্থির হইয়া গোল।

এই সামান্ত অর্থ লইয়া কিরুপে তথনকার দিনে পদরক্ষে অদ্ব বৃন্দাবনে বাইবেন, তাহারই পঁরীকা হইল। "৺তারকেখরের তারা নিরমপুর্কক হারণ করাতে বাানেহৈ কিছুমাত্র ছিল নী।" বহুনাধ ভারকেখর হইতে পদরকে অক্লেশী হাধানগরের বাটাতে আসিলেন।

ষতনাপের দৈনন্দিন-লিপি হইতেই বুঝিতেছি যে দেবতার উপর
তাহার অটল ভক্তি ও বিখাদের ফলে
তাহার কুলদেবতা রাধাকান্ত তাহাকে আরহতাারপ মহাপাপ হইতে
রক্ষ্য করিয়াছেন— দুসেই বিখাদের ফলেই বাবা তারকনাথ তাহাকে
নীরোগ করিয়া তাহার সাধ্য সকলেই বাবা তারকনাথ টাহাকে
শক্তিপ্রভাবে মানব কি না করিতে পারে ? ভক্তির পারমার্থিক
শক্তিতে তুর্বল যত্নাথ ৩২১ টাকা মাত্র লইয়া পদত্রজে দূর তীর্থযাত্রা করিলেন,—ইহা তাহার অসাধারণ মানসিক শক্তির পরিচয় !

সন ১২৬০ সালের ১১ই ফাস্কন মাস হইতে ১২৬৪ সালের ৯ই জ্বজার্ন পর্যান্ত প্রায় চারিবর্ধ কাল তিনি দ্ব তীর্থবাসে অতি-বাহিত করেন, সেই সময়ের দৈনন্দিন ঘটনা সমস্তই তাঁহার রোজ-নামচায় লিখিলা গিলাছেন, সেই রোজ-নামটাই 'তীর্থ-ভ্রমণ' নামে প্রকাশিত হইল। ইহার প্রসঙ্গ মুখবদ্ধের প্রারুভিট বিরুজ হইরাছে।

তীর্থ-বারার উন্মুক্ত বাতাসে বছনাথের ভক্তি, প্রেম, ধর্মবিখাস এবং ক্লান্নের বুলু যথেষ্ট বর্দ্ধিত হইরাছিল ও ক্লান্নের চর্ব্ধাণ প্রস্থিত ক্রান্নীর কার বছনাথ ব্যব্ধপ অসাধারণ সহিষ্ণুতা, কর্ত্বনিষ্ঠা ও অন্তর্গৃষ্টির পরিচর দিরাছেন, তার্গা বর্তনান কালে বিলাদী বাঙ্গালীর পক্তে নিতান্ত বিশ্বরুজনক সন্দেহ নাই।

প্রায় চারিবর্ধ পরে যতুনাথ বরে ফিরিলেন—রানা দেশ, নানা তীর্থ, নানা আতি, নানা সমাজ ও নানা প্রকার দেশের অবস্থা দেখিরা বহদ শিতা লাভ করিয়া আসিলেন। তাঁহার আসিবার সমর সমস্ত ভারতভূমি বেরপ সিপাইী-বিদ্রোহের আলোড়নে আলোড়িত হুইতেছিল, সাধু যতুনাথের কদর আবার পারিবারিক সংসার-কোলাহলে আসিয়া সেইরপ বিচলিত ও উর্বেলিত হুইয়া পড়িল। বরে প্রবেশ মাত্র কনিষ্ঠ বৈক্ঠনাথের মৃত্যুসংবাদে তিনি সংসার বিভীবিকার অভিভূত হুইয়া পড়িয়াভিলেন। প্রথমে রে ইদার ও বৈরাপ্য লইর তিনি তীর্থশ্রমণে বাহির হুইয়াভিলেন, বরে আসিয়াই আবার সেই সংসার-বৈরাপ্য ভাগিয়া উঠিল,—কিন্তু কদরে বৈরাপ্য চাশিয়া তাঁচাকে সংসার-সংগ্রামে লিপ্ত হুইতে বাধ্য করিয়াছিল। বহুনাধ হুংথ করিয়া সেই সময় বলিতেন 'রাধাকান্তের ইচ্ছা অবশ্রেই পূর্ণ হুইবে।'

তীর্থ ছইতে ফিরিরা যদিও তিনি দীর্ঘকাল জীবিত ছিলেন—
কিন্ত এই দীর্ঘকাল প্রতিভ্রতে ও সমাজ-সেবার অতিবাহিত
করিতেন। শারালোচনা, হরিনাব-ম্বণ ও হবিনাব-দার্থন উল্লের

ধর্মজীবনের । প্রধান অবলয়ন হইয়াছিল। কলিকাতার বিশ্বিজ্ঞালর প্রতিষ্ঠার পূর্বে প্রসন্ধর্মার রাধানগরে একটা সংস্কৃত-ইরাজা বিজ্ঞালয় স্থাপন করিয়াছিলেন, ননীর ধারে পাকা দালামে সেই বিজ্ঞালয় ছিল। (এখন অবশু সেই বিজ্ঞালয়ের উন্ধতির জাল, এই বিজ্ঞালয়ের উন্ধতির জাল, এই বিজ্ঞালয়ের বালকবিগের শিক্ষা ও স্বাস্থ্যোয়তির জাল, এই বিজ্ঞালয়ের বালকবিগের শিক্ষা ও স্বাস্থ্যোয়তির জাল, এই বিজ্ঞালয়ের বালকবিগের শিক্ষা ও স্বাস্থ্যোয়তির জাল সর্বাহার বিজ্ঞালয় মছনাথের পালিতেন। বিলতে কি সেই সংস্কৃত-ইংরাজী-বিজ্ঞালয় মছনাথের প্রাণম্বর প্রাণম্বর প্রাণম্বর প্রাণম্বর সাহাযো কলিকাতার সংস্কৃত ও অন্যাল্ভ কলেকে পড়িতে পাইতেন। আমের প্রত্যেক পারবারকেই তিনি আপেরার মনে করিতেন। এক দও তিনি আন ছাড়িয়া থাকিতে ভাল বাসিতেন না, কেবল গল্পান উপলক্ষে মধ্যে মধ্যে থিদিরপুরে আসিতেন।

তাহার আয়ায়য়লনী সকলেরই থাওয়া-দাওয়া, লেখা-পড়া,
কাপড়-চোপড় এবং বস্বাস একই ধরণে হই । বহুসংখ্যক নিরাশ্রয়
আন্মার তির লাতীয় লোক বহুনাথের ও তংপুত্রগণের আশ্রের
পাইয়া মানুষ হইয়া সিয়াছেনী। তাহাদের মধ্যে কেহ কেহ জেলার
ভাকিন প্র্যাপ্ত হইয়াছেন।

তাহার প্রোগ্য বংশধর আমানিগকে কিমিয়া কানাইয়াছেন—
"অগার ঈবরচন্দ্র বিভাগগের, আচাবা কৃষ্ণকমণ ভট্টাচার্য্য, সংস্কৃত
কলেজের কেডেমাটার তারিণীচরণ চট্টোশাব্যার, বাব্ দ্রীলাম্বর
মুখোপাব্যায়, ভিপ্টা মাজিট্রেট অগায় ঈবরচন্দ্র মিত্র প্রভৃতি মনীমিগণ যহ্নাপের সহিত সদালাপের জন্ত রাধানুগর প্রামে সর্কাশ বাইভেনঃ দ্বার্থ তার্থ-মাত্রো সাল করিয়া বহুনাধ গ্রামের কোলে বে

আশ্র দইয়াহিলেন তাহা ছাড়িতে চাহিতেন না। কোংল পিতৃপক্ষেতর্পণ করিবার উপলক্ষে পনের দিনের জন্ম নৌকাযোগে কলিকাতার আদিতেন এবং তর্পণাস্তে গ্রামবাদী ও আত্মীরগণের পূরার
কাপড় নৌকা গ্রামাই করিয়া দেশে ফিরিয়া যাইতেন। নৌকার
মামী ছেলৈদের 'প্রেম্চার কাকা', তস্তবায় পরমেবার তাঁতী
ছেলেদের 'পরমে কাকা'; কৈলাদে হাড়ি ছেলেদের 'কৈলাদ
কাকা'—পল্লীজীবন তথন এমনই স্বমুধুর ছিল এবং ছেলেরাও
ঘেমন পূজার কাপড় পাইত, 'পরমে কাকা' 'কৈলাদ কাকা' ও
'প্রেম্চার কাকা'ও ভাই পাইতেন।

"তখন রাধানপরে মাালেরিয়ার প্রাভ্তাব হয় নাই। প্রসরকুমার ও স্থাকুমারের বন্ধুগা স্বাস্থা-অনুরোধে ও বেড়াইবার জান্ত স্থ করিয়া রাধানগরে গিয়া আনন্দে সময় অভিবাহন করিতেন।

্ষ্থনাথের কুটুনবাড়ীর জিনিগু বাড়ীর ভিতর বড় বাইতে পারিত না। রাধাকান্তের ভোগ দিরা চঙীন-ওপে উপস্থিত আৰুণ-সক্ষনসেবার অহতে বিতরণ করিয়া তিনি অপার তৃপি লাভ করিতেন।

অংশের পীড়ার ও শেব বহসে নীনা রোগে বছনাথ নিতার কটপান। দিনে ছই বার লান করিছেন, পান ও তামাক বেনী খাওরা উহার অভ্যাস ছিল; অভ কোন বিলাসিতার তিনি বশবতী ছিলেন না।"

১৮, সালে ঝুলান-পূর্বিমার দিবস যতনাথের দেহাক্ত হয়। তাঁহার আছে এত ধুমধাম হইয়াছিল যে, ও অকলে এত ধুমের আছে হয় নাই বলিয়া জনশ্রতি, আছে।

পুর্বেই বলিয়াছি, স্বাধিকারী-বংশ চির্দিন সাহিত্যাপুরারী।

কেবল মুন্দী রামনারায়ণ বলিয়া নহে, ষ্ডুনাথের এক পুলভাত বৃদ্ধ বৃদ্ধান অন্ধ হইয়া পল্পে "জ্বচরিত্র" রচনা করেন। বহুনাবঙ অল বয়স হইতেই গান বচনা করিতে ভাল বাসিতেন। সে কালে প্রতি সম্রাম্ভ পরিবারেই সঙ্গীতের যথেষ্ট আলম ছিল, সকলেই কিছ নাকিছ সঙ্গাতবিভা শিকা করিতেনু। আমাদের বহুনাথও বাল্যকাল হইতেই সঙ্গীতপ্রিয় ছিলেন। যৌবন-বৃদ্ধির সঙ্গে তিনি একজন উপযক্ত সঙ্গাত-শাস্ত্ৰজ হইয়াছিলেন। তিনি ক্লফবিষয়ক ও ভাষাবিষয়ক অনৈক স্থলর গান রচনা করিয়াছিলেন, তাহার কতকগুলি "সঙ্গীত-লহ্গী" নামে পুস্তকাকারে মুদ্রিত হইরাছে। রামটাদ গোসামী, হবধর চোঙলার প্রভৃতি সংগীতজ্ঞদিগের মুখে প্রতাহ সন্ধার শম্ম স্বর্গতি স্ত্ব-গীতি শুনিতেন ও আপন ভূলিয়া ঁ আনকাশ বিদৰ্জন করিতেন। সঙ্গীত-লংগীর ভূমিকার তাঁহার মুপ্রদিদ্ধ পুত্র ৺প্রদরকুমার সুর্ব্ধাধিকারী মহাশয় লিখিয়াছেন বে, "রামচ'দে গোলামী ও ভূলধর চোঙেবার মহাশয় যথন তাঁহার পিড-রচিত দঙ্গীতের আলাপু করিতেন, বাস্তবিক যেন কর্ণে পীযুধ বর্ষণ **₹১**° এখানে বহুনাথের সঙ্গাত-রচনার নমুনা দিতেছি—

()

মিছে কেন মাথা-জালে বজরে অবরোধ মন।

মুগ-তৃষ্ণা সম সব ধন-মান পরিজন ॥

১তাজ জাতি-কু-জমান, গাও রে বিভূর গার,
ভব পার হবি যদি লওরে তাঁর শরণ।
আমার বৃক্তি ধর, পাপ-পথ পরিহর

ঈশার চরণোপাতে আমারা কর সমর্পণ ॥

( )

#### হরিশ্বণ গাও রে।

সংশারের কুবাসনা-যন্ত্রণা এড়াও রে ॥
উদুয় হ'রে তপন, করিতেছে আয়ু:হ্রণ,
এ দেহ হবৈ পতন সতর্কেতে রও রে।
যে পদ ভাবনা করি, ব্রহ্মা হলেন ব্রহ্মার,
শ্রশানেতে ত্রিপুরারি বোগাসনে রয় রে ॥
হরিনাম সারাংসার, করিতে জীব-উদ্ধার,
প্রচারিল ত্রিসংসার পাপ নাশিবারে রে।
এমন হুল ভ নাম, ভিহ্বা ভপ শ্বিশ্রাম,
পাইবে কৈবল্যধাস শ্বহরে বুঝাওরে ॥

সঞ্জীত-চঠের সঙ্গে তাঁহার নিজের সংখর যাতার দল ছিল। ব্রাহ্মণ ও কারস্থ-সন্তান নইয়া সেই সময়ে যেল গঠিত হয়। রাসের সময় বা পুরার সময় সেই সথের দলের গাওনা হইত। বেখানে গাওনা হইত, তথার পান-তামাক বাতাত কার কিছুই ল-মা হইত না। এই সথের যাতা উপলকে হচনাথ 'উয়াহরণ', 'চন্দ্রকান্ত' প্রভৃতি কএকগুনি নাটক বা যাত্রার পালাও রচনাক বিয়াছিলেন। তাঁহার উ্যাহরণ হইতে হুই একটা গানের নমুনা দিতেছি—

(;):

(কেন) বিরস বদন বিধুমুখী। মুলিন চল্লানন চল্লেডে বেমন নুগাল কলত দেখি।। নীলোৎপল ঞ্চিনি নয়ন-য়য়ল

য়য়ত তাহে কজ্জলে উজ্জল

বল গো একি বল কেন চল ছল

করে তুটী আঁায়ৢয়

করে তুটী আঁয়য়ৢয়

( ? )

সধি আমাতে কি আমি আছি।
ভোলনীপের কুপাতে পেয়ে প্রাণনাপে

পুন: হারায়েছি॥
স্থপ্রে ক'রে দেই নাগরের সক্
ক্রারলাম কত রুসের প্রসক্
পরে নিডাভকে হ'ল রুসভক
বিছেব-সাগরে ভূবেছি॥

উপরে যত্নাধের বেঁ কয় নী গান উদ্ব হইল, তাহাতে তাঁহার ভগবম্ভ কি, রসজান, ভাবুকুতা, রচনা-মাধুণা ও পদ-লানিতোর অভাব নাই। তিনি একজন প্রেমিক অপচ হার্সিক পুরুষ হিলেন।

বহুনাথ একজন নিষ্ঠাবান বৈক্ষণ ছিলেন অথচ চৈতন্ত্ৰ-সম্প্ৰদায়ী ছিলেন না। তিনি রাধাকাস্তলীকে নিবেদন না করিয়া কোন জিনিসই গ্রহণ করিতেন না। প্রাতঃকালে অনেকে শিশুরোগী লইয়া উাহাত্র অপেকার দীক্ষাইয়া থাকিত, তিনি রাধাকাস্তলীর পূজা করিয়া বাহিত্রে আসিয়া সেই সকল রোগী দেখিতেন, ইষ্টদেবের চরণামৃত দিয়া ক্রেকামল হাত বুলাইয়া ও কু দিয়া অনেক রোগী আরাম করিতেন। ক্রিকিৎসকের ক্রাবহার যে রোগ ভাল করিতে

পারে নাই—সাধু যতনাথের দেবভক্তির শুংশে দেরপ অনেক নোগ অনোয়াদেই সারিয়া গিয়াছে। তিনি তীর্থযাতা হইতে ফিরিয়া আসিঃ। শারদ-রাস বা কোফাগরী পূণিমায় তাঁহার রাধা-কাক্তের স্বতন্ত্র স্থাসের বাবস্থা করিয়াছিলেন।

রাধাকান্তের উপর তাঁহার যেমন প্রগাঢ়ভক্তি ছিল, অপর দেব-দেবার উপরও তাঁহার ভক্তির হাদ দেবা যাইত না। তিনি বাবা তারকেখনকে কিন্তুপ ভক্তি-শ্রদ্ধা করিতেন, পূর্বেই তাহার আভাদ দিয়াছি। তাঁহার শ্রামাদ্দীতেও আমিরা তাঁহার দেব-ভক্তিও মাতৃ-ভক্তির উচ্ছাদ পাইয়াছি।

দেব-ছিজে তাঁহার যথেষ্ট ভক্তি ছিল। তিনি বান্ধণাদিকে নিমন্ত্ৰ করিয়া কথন ওরকাঠী অপ্ওয়াইতেন নান। তাঁহার রাধা-কাস্তজীকে যে সকল দ্ৰৱা ভোগ দেওয়া হইড, ভাহাই তিনি ব্রাহ্মণাদি সকলকে আহার করাইতেন। রাধাকান্তর্জীকে ভোগ দেওয়া যাইতে পারে এরূপ জিনিসই তিনি আন্ত্রীয়-কুটুম্বের নিকট হইতে ভেট বা ভত্ব লইতেন-অপর কোন স্থেগ্রী লইডেন না। কেবল আ্যায়-অজন বলিয়া নহে, খানাকুণ-ভুফ্চনগর-স্মাচের সকলেই তাঁহাকে ভয়-ভব্তি ক্রিত। তিনি নিজে লোকের বাড়ী বাড়ী গিয়া মোক্দমা মিটাইয়া দিতেন, বিপদে-আপদে সহায়ভূতি দেখাইতেন। খানাকুল-কুফানগরের ত্রাহ্মণ্সমাজ পর্যাস্ত অনেক্সলে তাহার মত লইয়া একাদৰী প্রভৃতির বাবলা ভির করিতেন। বার মাস প্রাতঃস্থান, নামাবলীধারণ, নিজ্কত্তে পূপাচয়ন ও পূজাদি कविरुम। পुकामित्र भन्न दिना >हे। भगान्त मान्निम्पादक मूष्टि-ভিকাদিতেন। ভংপরে লানাতে আলীয়-স্কুন যিনি আসিতেন, তাঁহাদিগকে লইয়া ২টার পর আহার করিতেন। প্রভার সন্ধার পর অঃচিত তব-গীতি ভূনিতেন ও আনন্দাঞ বিদর্জন করিতেন। সংসাবে আদিলেও তাঁহার আদৌ সংসাবে আদক্তি ছিল না চিতিনি সর্কাষ্ট বলিতেন—"আমি বাগানের মালী মাানেকার, যা কিছু সুব তাঁর, আমার বলিলেই শান্তি পাইব।" •

দেব-হিজের উপর তাঁহার যেমন শ্রনাভুক্তির পরিচয় পাইয়াছি, তাঁহার রাজভক্তিও দেইরূপ অচলা ছিল। গত উনবিংশ শতাব্দীর প্রথমাংশেই তাঁহার জন। তথন বাসালার চারিদিকে অশান্তি-ভাকাচরি দুটপার্ট সর্পনাই হইত। ইংরাজেরা ক্রিপে সেই সকল অশান্তি নিবারণ করেন, কিরুপে ইংরাজের স্থশাসন-গুণে দেশে সক্ষত্র শাস্তি বিরাজ করিয়াছিল, যতনাথ তাহা স্বচকে দেখিয়াছিলেন-সেই সঙ্গে ইংরাঞ্-শাসনের প্রাক্তিও ইংরাজজাতির প্রতি স্বভাবত:ই ্ তাঁকার যথেষ্ট শ্রন্ধভক্তি হুইয়াছিল। সেই রাজভক্তির পরিচয় ভীর্থ-ভ্রমণের ছত্তে ছত্তে প্রকাশ পাইতেছে। ইংরাজ-শাগনের ষে কেছ বিরুদ্ধাচরণ করিঃগছেন, ভাহারই উপর তিনি ক্রোধ ও বিরক্তি ভাব দেখাইয়া গিয়াছেন। তীর্থ শেষ করিয়া স্বদেশে ফিরিবার মুখ্য °তিনি সিপ্তি-বিদ্যোভির অনেক গীলান্তল স্বচকে দেখিয়া আসিয়াছিলেন—ভাহাতে তাঁহার হৃদরে বিদ্রোহীদিগের উপর যথেষ্ট মুণা ও অবভাই ভলিম্যাছিল। তিনি বরাবর মুক্তকণ্ঠে বলিয়া আসিয়াছেন, 'ছুর্ডেরা অভ্যাচার করিয়া দেশেরই শতক্তা कतियाहि, हेरताकतास्कर किहूहे कतित्छ शांतित्व ना।' हेरतास्कर বাহুবল, যুদ্ধকৌশল এ রাজনীতিতে তিনি প্রকৃতই বিমুগ্ধ ছিলেন।

সুখের বিষয়, বহনাথের বংশধরগণ্ড বিভা, বিনয়, ধর্ম, দেব-ভক্তিও স্কেরিত্তার সহিত রাজভক্তির উপযুক্ত উত্রাধিকারী

হুইয়াছেন। তাঁহার জেইপুত্র প্রায়কুমার, ডাকার স্থ্যকুমার ও ্পেট্ ষ্ট-সম্পাদক বাজক্ষারের স্থনাম কে না ভানেও কেবল সংস্কৃত কলেভের প্রিজিপাল বা অধ্যক্ষের পদ বলিয়া নছে ধেমন শিক্ষা-বিভাগে প্রদর্কমার সর্বাশ্রেষ্ঠ সম্মান অর্জন করিয়াছিলেন, চিকিৎ-সক্ষিপের মধ্যে রার বাহাত্তর ডাক্তার সূর্য্যকুমার সর্বাধিকারী এবং ব্যবস্থাপক ও সংবাদপত্তের সম্পাদকদিপের মধ্যেও রার ব্যহাত্তর রাজ্জমার স্বাধিকারী সেইরূপ শ্রেষ্ঠতা লাভ করিয়াছিলেন। তাঁহাদের প্রকৃত পরিচয় দিবার এথানে স্থানান্ঠার, প্রভাকেয় পরিচয় দিতে হইলে একথানি বৃহৎ গ্রন্থ লিখিতে হয়। অবশেষে এই মাত্র বলিলেই যথেষ্ট হইবে---এক যতনাথের বংশেই আমরা ক্লিকাভার বিশ্ববিদ্যালয়ে এক সময়ে পাঁচলুন সদস্ত বা ফেলো পাই-बाहि—পুर्व मन्छ अमहःवात मुन्तिविकात्रीय कथा विल्डिह ना। স্থায় ৰাহাছর ভাকাব স্থাকুমার স্বাধিকারী, রায় বাংগছৰ রাজ-কুমার স্বাধিকারী, ডাক্তার স্থ্যকুমারের পুত্র মাননীয় ডাক্তার दिवञ्जमान मर्साधिकादी C. I. E, अयुक्त क्याधि: अमान मस्ताधिकादी ध्ववः छाउनात ऋद्रवश्यमान भन्ताधिकातो C. I. E. এই शीऽक्रात्स्व কথা বলিতেছি। এক বংশে পাঁচ অন 'ফেলো' বিশ্ববিশ্বালয়ের ইতিহাসে কথনও কোপাও ঘটিয়াছে কিনা জানি না। ইয়াতে ষ্ণুনাথের পুণ্যপ্রতিষ্ঠার পরিচর স্থাচত হইভেছে।

# এম্কারের রোজনামচা

পূর্বেই বলিচাছি, অগীয় যত্নাপ স্বাধিকারী মহাশ্র ভীর্য-ভ্রমণ উপলক্ষে (একথানি বাধা থাতার) দৈনন্দিন ঘটনা বা রোজ-নামচা লিপিবছ ক্রিয়া রাপেন। এছ্কারের বংশধ্রেরা দেই বোজনামচার থাতাথানি পুস্তকাকারে বাধাইরা মলাটের উপর
অর্ণাক্ষরে "তীর্থপ্রমণ" নাম বসাইরা রাথেন, তদমুসারে এই.
এছের নাম দেওরা হইরাছে। বাস্তবিক গ্রন্থকার নিজে কোন
নাম দিরা বান নাই। তিনি যে ভাষার গ্রন্থ লিখিয়া গিরাছেন,
তাঁহার স্বর্গিত আদর্শ অনুসারে সেই ভাষাই অবিক্রুত রাধা
হইরাছে। কেবল সাধারণের পাঠের স্বর্ধার জন্ত পদ-ছেদ ও
বিরাম-চিক্ত এবং যেথানে যেধানে অস্পঠ বা কীট্দট বোধ
হইরাছে সেই সেই উক্ত জংশ বন্ধনীর মধ্যে মুদ্রিত হইরাছে।

# তীর্থ-ভ্রমণ্



# সূচনা

সন ১২৬০ সালের ১১ ফাল্লনে তীর্থাতার দিন স্থির করিয়া উ**ক্ত** দিবদে প্রাতে রাধানগরের <sup>\*</sup>বাটীতে তীর্থ-গমনের শ্রাহ্বাদি ও ব্রাহ্মণ ও কায়স্থ ভোজন করাইয়া যথানিয়মাত্রসারে সংযত থাকিয়া উষাকালে বাটী হইতে রাধাবলভপুরে গোরাচাঁদ কওড়ির বাটীতে প্তছা হইল। তেঁহ সন ১২৫৭ সালে পুর্বেষ যাতী লইয়া ৮ গয়া গমন করেন। ঔহার কনিষ্ঠ প্রতা প্রীঈখরচক্ত কওড়িকে সমভাবে করিয়া আমি ও শ্রীনকুড়চক্র বস্থ ও প্রীরামধন সিংহ ্এবং সমভারি মুটে বিশ্বনাথ তাঁতি এই কয়েকজনা রাধানগরের বারী হইতে বুওয়ানা হওয়া হয়, এত কালবিলম্ব এবং · · · · গণের সমভাার ছাডিবার কারণ আমি কলিকাতা হইতে গ্রাধামে গমনের মানসে । ফারুনু বাটী পছছিয়া ১২ ফারুন যাতা কুরিবার মানদ ছিল। ... ইতিমধ্যে আমার ... পানিবদন্ত হয়। আমি তীর্থগমনোজ্ঞোগে গাত্রে বস্তাচ্ছাদনে তিন দিবস গোপন রাধিরাছিলাম। আমার তৃতীয়া পিসির কম্ভা তারামণি কিঞ্চিৎ

দোপান জানিয়া তৎকালে গমনে বাাঘাত করিল। পরে বসস্তের চিকিৎসক গৌরাঙ্গপুরনিবাদী পরীক্ষিত কুমারকে আনাইয়া শীঘ উপশ্মের চিকিৎসা করাইয়া গ্রমন করা হয়। তক্ষর স্কলের সঙ্গছাড়া হইয়া গদন করিতে হইল। কয়েকজ্বনে গমন করিতে করিতে ভুমরি-চটীতে বিশ্বনাথ তাঁতির ব্যামোহ আরম্ভ হইয়া পথিমধ্যে তিন চারিবার ভেদ হয়। তাহার মোটে বে সকল দ্রব্য ছিল, তাহা সকলে বিভাগ করিয়া লওয়া হইল। বছকটে বগোদরের চটীতে পছছা হয়। তথায় অভিশয় ব্যামোহের বৃদ্ধি হয়। এছন্ত এক দিবদ থাকা হইল। ঐ দিবদের রাত্তে বিশ্বনাথের মৃত্য হইল। পথিমধ্যে এত বিপদ হইল, তাহাতে ঈশ্বর কণ্ডড়ি অনেক শ্রম করিয়া তাহার চিকিৎসা ও সেবা করেন। পরে মৃত্যু হইলে দারগার নিকট যাওয়া · · · তথাকার · · · · টাদি क्त्रारेश मारामि क्त्रिए ... ... मूटे व्यक्टाद स्वरामि কতক ঐ ... ... ... ... ... রাধে মুদির বাটীতে রাধি · · · · কি প্রয়োজনীয় ফিনিস সকলে 🐺 🕶 🔐 কিছু লইয়া গয়া গমন হইল। ঈশারচক্র কওড়ির এই স্কল ৩ণে মনে মনে ছিল দুরদেশগমনে এমত লোক সমভাার থাকিলে ভাল হয়। পরে গ্রাধামে প্রচিয়া গোরাটাদ কওডির সহিত দাক্ষাৎ হইরা তথাকার কর্মকার্যা সমাপন করিয়া ১৯ তৈত্র স্বদেশ যাত্রা করা হইল। পথিমধ্যে শ্রীযুত রামধন সিংহের वारमार् इत्र। छाँहारक जुनि कतियां वारी शहका रहेन।

# তীর্থ-যাত্রার পূর্ব্ব ঘটনা

স্ন ১২৫৯ সালের মার মাহাতে আমার অম্পের বামোহ হইলা পুল উপস্থিত হইল, শুলবাধির বেমত যাতনা তাহার কিছু নান ছিল না। এক এক দিবদ বাতনাতে অমত মত্তে হইত. বে আর্বাতী হইয়া<sup>®</sup>প্রাণ পরিত্যাগ করি। তীর্ব-বাক্রার কারণ ভগবংশেছার নিবারণ হইত। ক্রমে ক্রমে শরীর অতিশর চর্বন্য এবং স্বাহার রহিত হইল। এক রাত্রে ঘরে শয়নে ছিলাম, ইতিমধ্যে নিজাভঙ্গ হইয়া বেদনার স্থত হইতে উঠিয়া এক গেলাস জল পান করিলমৈ, তাহাতে নিবৃত্তি না পাইয়া ক্রমে বৃদ্ধি হইরা অতিশরু যাতনা হইতে লাগিল। সে যাতদার কথা যথন ্মনে হয়, তথনি প্রাণবিয়োগের সম্ভাবনা। হে ভগবান ! তেমন ষাতনা যেন কাহার না হয়। সেই যাতনাতে অত্যন্ত ছর্বল এবং वाकिन इहे। शहमाश कामात किनिष्ठा जी शुज्जान नहेश भशास्त्रत শয়নে ছিল। আমি তিন চারি বার ডাকিলাম, উত্তর পাইলাম না, তাহ্রাতে রোগ্যন্ত্রণার জীলাতী হইয়া অত্যন্ত রাগের বৃদ্ধি হইয়া আর কাহাকে কিছু না কছিয়া স্ত্রীপুত্রপরিবার সকলি রুণা, 'সম্বন্ধ - জীবনাৰ্ধি' এই মনে স্থির ক্রিয়া চণ্ডালগ্রন্ত হইয়া প্রাণপ্রিত্যাগ প্রধানকল বিবেচনা করিয়া ঘর হইতে বাহির হই। বাহির বাটীতে আসিয়া কিরপে দেহত্যাগ করিব, তাহার উপায় চিস্তা করিতে করিতে শ্রীপরাধাকান্তদেব ঠাকুরের শ্রীমন্দিরের ছারে বদিলাম। কণেককাল বদিয়া থাকিতে বেদনার কিছু শাস্তিবোধ হইয়া তন্ত্ৰাকৰ্ষণ হইল। তৎকালে রাত্র তৃতীর প্রহরগত, নিজাবেশে इस बसरक मित्रा औधन्मित्त्रत चारत नम्मन करिया मरन जेमत्र इहेरछ

লাগিল যে মিছা মায়ায় মুগ্ধ হইয়া সংসারকুপনরকে ডবিয়া কেবল আমার আমার করিয়া স্কনকর্তা জগদীখরকে বিশ্বিত হইয়া এত ক্লেশ পাইতে হ'তেছে। হে জ্বাদীশবু। আমার শরীরে কিছু বল হইলে আমি স্ত্রীপুতের মায়া ছেদ করিয়া তোমার -দর্শনাশে দেশভ্রমণ করিব। এই চিন্তা করিতে করিতে তক্রাকর্বণ হইল। ইতিমধ্যে গ্রহের অফুভৃতি গৃহিণীর নিদ্রাভঙ্গ হইয়া আমার শ্যার দেখিল আমি তথায় নাই, এহাতে ব্যাকুলা হইরা তারামণি প্রভৃতি বারার শ্রীমত্যা মধ্যমা মাতাঠাকুরাণীকে ৰাগ্ৰত করিয়া আমার অবেষণে ঠাকুরবাটীতে আদিয়া দেখিলেন, শ্রীমন্দিরের বারে শয়নে আছি। আমাকে ডাকিবামাত নিদ্রাভঙ্গ হইল, মাতৃসপত্নী ঠাকুরাণী হাত্রধরিয়া ঘরে লইয়া গেলেন, কিন্তু আমার মনের চঞ্চতা এবং ওঁদাস্তা গেল না, নিস্তরে শ্যায় উপবেশন হইলাম। পরে রাত্রপ্রভাতে গৃহকার্যাদি সংসারাশ্রমের ধাছা নিত্য নিয়ম আছে, তাহা ক্রিতেছিণ। ওদাক্তভাবে এই মত ম্বরদিন করিতে করিতে আমার জ্যেষ্ঠপুত্র প্রাণতুলা শ্রীমান্ প্রসন্ত্রক্ষার সর্বাধিকারী আমার অভিশয় ব্যামের সংবাদে কাল্পের ছটি লইয়া বাটীতে আসিয়া সাত দিবদৰ্থাকিয়া আমাকে সমভাার করিয়া চিকিৎদার অন্ত কলিকাতার বহুবাজারের বাদাতে শইয়া-গেলেন। তথার নৌকারোহণে জলপথে গমন হইল। বাসার প্রছিয়া অনেক ডাক্তারকে আনাইয়া চিকিৎসার ব্যবস্থা করাইলেন। রিশড়া-নিবাদী জীয়ত চক্তকুমার দে বছম্ত পরিশ্রম এবং যুক্তি-মতে চিকিৎসা করিয়া প্রথমে জ্বর পরিত্যাগ করাইলেন; পরে শূল-ব্যাধির চিকিৎসা করিয়া অনেক উপশ্ম করিলেন। সর্বাদা পদরক্ষে ল্রমণ করিবার আদেশ অভিশয়। প্রথম দিবদ বছবাজারের ছদ্যরাম

বাঁড় জ্যের বৈঠকখানা হইতে বাজার পর্য্যন্ত আসিতে এত ক্লেশ त्वांध हरेन त्य कन्मन कविनाम । श्रव मिवन मननात शानश्क्रवीत ধারে আদিতে ঐ মত কেশ। আর আর অনেক মহব্য প্রাতে বৈকালে ঐ পুন্ধরণীর চতুম্পার্শ্বে ভ্রমণ করে। আমি এত ছর্বল বে একবার প্রদক্ষিণ করিতে চারিদিকে চারিবার বিদয়া প্রম দুর্ করিতে হয়। এই মত সপ্তাহ করিতে অন্ধ ক্রোণ পর্যান্ত ভ্রমণের ক্ষমতা এবং অগ্নিবৃদ্ধি হট্যা দিবাতে অল্ল ও রাত্রে স্থান্তর কটি পরিপাক হইল। ক্রমে বল ও আহারের বৃদ্ধি হইরা প্রায় বার আনা ব্যাধির উপশম হইল, রোগের শেষ হয় নাই। একঞ্চ বাটীতে স্বাসা হয় না। ইতিমধ্যে রাধানগরনিবাদী জীরাম মিত্র আমার ভতীর পুত্র শ্রীয়ত আনল কুমার সর্বাধিকারীর শুভবিবাহের শুভ স্বন্ধ রামসাগর-্নিবাদী শীব্ত রামকানাই ঘোষের কল্পার সহিত স্থির করিয়া (ছিলেন।) ফারুন মালে ভবানীপুর মোকামে বিবাহ দেওৱা হয়। বিবাহ দিয়া চৈত্ৰ মাদে ত্ৰাধানগাঁৱের বাটীতে আদা হয়। ভাহার কারণ রৌদ্রের বৃদ্ধি হইয়া গ্রমি বৃদ্ধি হওয়ার জন্ত তথার থাকিতে ডাক্তারের কদাচ মত্ত হইন নাং এজন্ত সেবনীয় ঔষধি সকল লইয়া বাটা আসা হইল। ব্যাধির শ্বেম হইল না, কিঞ্চিৎ অম্বলের সঞ্চারমাত্র বুছিল। নিয়মমত শরন ভোজন করি, তুথাচ কম্বর মেটে না। আর ঔষধি ষধন দেবন করি, তথন ভাল থাকি, ঔষধি ছাড়িলে ব্যামোহ • হয়, এহাতে অতিশয় চিম্ভা রহিল এবং পূর্ব্ব ঔদান্ত মনে আছে। এই মতে সন ১২৬০ দালের আখিন মাস হইল। খ্রীপশারদীয়া পুজার বদ্ধে সকল পুত্র বাটীতে আইল। আমার মনের চাঞ্চলাগতি দেখিরা জার্ছ পুত্র জিজ্ঞাসা করিলেন, "মহাশয়! সর্বাদা কি জন্ত অক্তমন আছেন?" ভাচাতে আমি কহিলাম, "সামার মানস হর্ষী যে আমি পশ্চিমকেশ

ভ্ৰমণ করিয়া আসি, কিছু তোমার তাদ্ধ কর্মকার্য্য নাই এবং পূর্ব-্ৰস্কিত বিষয় কিছু নাই। পৈতৃক অমিদারী বৃদ্ধিবিভব বাহা ছিল ভারা সকল লোপ হইয়াছে। নিজ্ঞামে যাহা আছে, তারার ভরুদা নাই. সর্বাদা বঞ্চা-জলেতে হাজে: কেবল মুড়াগাছাতে ঠিকাজমির .মধ্যে কিঞ্চিৎ আছে, তাহাতে যে মুনফা আছে, কারক্লেশে শ্রীভক্তির নিজ অংশের সেবা আরু বাধিক প্রান্ত ও পার্ম্বণ করেকটি গুচাইরা क्तिरम इत्र । माश्मातिक आहात्रामित्र अंत्रह्मे व व व आविष् आहि. ভাহা পরিকার করিয়া না লইলে হইতে পারে না। যে সমস্ত ভেজারতি আছে, তাহা আদার করিতে না পারিলে বুগা। প্রকালের কিছু বাজার দেনা আছে, এ স্কলের কি হয় এবং আমি मुत्रामान गमन कतिराम किकाल निर्माह हम, जाहाई मर्ममा हिखा করিতেছি।" তাহাতে প্রসর্কুর্মার কহিল, "মহাশর। কুথা পর্যান্ত পমনের মানস করিয়াছেন।" আমি কহিলাম, বে স্থানের জল বাতাস ভাল হয়। তাহাতে কহিলেন, "শ্রীবন্দাবমের স্থান স্ক্লাপেকা উত্তম। অকম হইলে প্রয়াগতীর্থে কিছু দিন বাস हव। একথা চক্রবার ডাক্তার কৃষ্ণিছেন, "বে কিছু ব্যুমোহের কম্মর আছে: বিনাপদত্তকে অনেক ভ্রমণ না করিলে নির্দোষ হটবে না। ইহাতে আমার মত তিন চারি বংসর পশ্চিমদেশে কি উত্তরদেশে থাকেন। আমারও তাহাতে মত আছে।" আমি কহিলাম বে তবে আমার ত্রীবৃন্ধাবন পর্যান্ত একবে গমনের মানস। ভাহাতে জিজালা করিল, "মহাপ্রের কত টাকা হইলে গমন হয় ?" छोहार्छ हिमाव कतिबा प्रथा हहेन ७२, प्रीका हहेरन औनुसावन পর্যান্ত প্রচ্ছিতে পারি, আর সংসারধরচের এবং আর সক্ষ বিষয়ের বাহা নগদ টাকা মাসিক চাহি, তাহার কথা কহিতে প্রার

রাত্র আড়াই প্রহর আমার শর্মাগারে নির্জ্জনে পিতাপত্তে ছইজনে বিশিয়া গত হইল। পরে একত্রে কলিকাতা গমন করা হয়। কার্ত্তিক মাসের শেষে প্রীযুত দোলগোবিন্দ মিত্রের নিকট অবধৌতমতে এক ঔষধি দেবন করা হয়। ভাহাতে ঘত ছগ্ধ এবং কঠিন গ্রম দ্রবাদি আহার করিতে হয় । ঔষধিদেবনে এবং শ্রী⊌ভা**রকেশবে**র তাগা নিয়মপূর্বক ধারণ করাতে ব্যামোহ কিছুমাত্র ছিল না। উত্তম-রূপ আরাম হট্যা তথা হটতে বাধানগবের বানী আসিবার উল্লোগ कतिया शिकारम्भ गमरानत मिन कांह्यन माहात अथरम हहेरत कहिया, খদেশবাত্রা পৌ্রমাসে পদবজে পরীকা জন্ম হইল। তাহাতে অক্লেশে বাটী প্রভা হইল িবাটাতে প্রভিয়া রাধাবলভপুরনিবাসী শ্ৰীঈশ্বর কওড়িকে আনাইরা জিজ্ঞাসা করিলাম, "ভূমি আমার সহিত · এবন্দাবন পর্যান্ত গমন করিয়া পুই বংসর পর্যান্ত থাকিতে পার কিনা।" তেঁচ থাকিবার স্থীকার করিলেন। ভাহার পর মধ্যম ও ভতীর প্রতাকে কহিলাম বে? স্থামি একবার তীর্থন্রমণে বাইবার মানস করিতেছি। তোমরা দেনা পাওনার উৎপৰের কাগলাত প্রস্তুত করহ। তাহার বন্দোবন্ত করিয়া বাইব। এই •কথা ভারাদিগকে প্রথমে কহিতে ভাহাদের কোন মতে মত ছিল না যে আমি এত কাহিল শরীরে দুরদেশে গমন করি এবং বাটীতে সকলে ভনিয়া কাহার মত হর না। বিশেষত: আমার কনিষ্ঠা ল্লী পঞ্চম মাস অবহংসভা ছিল, তাহার অতিশর ক্রন্দনারস্ত হইল। নানা কৌশলে এবং স্তীর নিকটে শীঘ্ৰ আসিব এই কপট বাক্যে এবং বিদেশে না গেলে এ রোগে মুক্ত হইব না এমত ভাব প্রদর্শন করিয়া নাগাইন অগ্রহায়ণ দেশে আসিব, এমত কহিয়া সকলের সম্ভতি করিলাম: কিঙ

মধ্যমা মাতা ও তৃতীরা পুড়িঠাকুরাণী প্রভৃতি অনেকে সমত্যারে বৃাইবার উদ্বোগী হইতে লাগিলেন এবং দেশস্থ অনেকেই গরা কাশী একত্রে গমনোস্থোগী ইহাতে অতিশর মনানন্দ হইল। এই গমনের কথা স্থির হইলে পর প্রসন্মরকে সন্ধান পাঠাইলাম। তৃহহারা খ্রীপঞ্চনীর ছুটিতে সকলে বাটাতে আসিরা আমার সহিত সাক্ষাৎ করিল। বাটার প্রচের ও শ্রী৮ ক্ষিউর সেবার ও ক্রিয়াদির এবং বাজারদেনা শোধের এবং বাটার জীলোকদিগের ভ্রিত ব্রচের বেমত নিম্ম করিয়া ক্ষ্মি করিয়া ভায়াঞ্চিগের পূল্পণের সন্মুবে দিলাম। সকলের সম্মতি ইইল। মহাজনুদিগের বন্দোবস্ত করিয়া পরে তীর্থযাতার দিন স্থির করিগাম।

প্রদর প্রভৃতি কলিকাতা গমন করিয়া আমার পাথের থরচা জল্প ০০ তিলা টাকা আর বাটার নিয়ম মত টাকা পাঠাইয়া ...
দিলেন। ৯ ফাল্পনে টাকা পাইয়া মার মাহার থরচের সকল দেনা পরিশোধ করিয়া ফাল্পন মাহার °থরচার্থে দিয়া তীর্থপ্রাদ্ধ এবং ব্রাহ্মণ-কারত্বের ভোল দিয়া ২০০ ছই টাকা চারি আনা নিকটে রহিল। তাহা কাহাকেও না কহিয়া ০১১ কাল্পন রাত্রে সকুলের নিকট বিদায় হই। কথোপকথন করিত্বে করিতে আমার ছিতীয়া কল্পা প্রীমতী ক্রফাকামিনী কান্দিতে লাগিল আর কহিল, "বাবা আমি ভোমার সঙ্গে বাবা; আমাদের গর্ভধারিগী নাই। আমাকে বংসরেক রাথিয়া দেহ পরিত্যাগ করিয়াছেন। এক্ষণে আমি কাহার কাছে থাকিব এবং কে আমার আবদার সহু করিবে?" এই কহিয়া মারারলী কল্পাসন্তান আমি বত মায়াছেল করিয়াছিলাম ভাহার সহস্রপ্রধান মারাছেল করাইল। মায়ার মায়াবাকের মাহিত ছইয়া চক্ষে কল আদিতে লাগিল। পাছে কেছ জানিতে পারে,

এজন্ত চক্ষের জল চক্ষে সম্বরণ করিয়া কল্তাকে নানা মত বঝাইয়া স্থির করিলাম। তাহার পর—অটম পুত্র শ্রীয়ত উপেক্সক্ষার मर्साधिकाती आमार्ग निक्र चहेश्रहत श्रीम श्रीक्छ, छाहात वांगी হইল, "আমি বাবার সঙ্গে যাব।" তাহাকে টাকা প্রসা দিয়া ভুলাইয়া সমভাবে যে সকল দ্রবাদি যাইবে তাহা একত কৰিয়া তিড বাগী সমভাবে মোট লইয়া ঘাইবে, তাঁহাকে ডাকিয়া মোট দেখাইয়া বান্ধিরা রাখিলাম। যত লোক কভিয়াভিল যাইব কাভার গ্ৰন হইল না ৷ রাত্রে সকলের সহিত কথোপকথনে আডাই প্রহর অতীত হুইল। পরে স্ত্রীকে নানামত প্রবোধবাকো সাক্ষনা করিয়া ক্রন্সনের কিছু সম্বরণ করাইয়া ক্রণমাত্র শয়ন করিতে রাত্র শেষ হইল। ু ঐ সময় উঠিয়া অর্থাং উষাকালে বাটী হইতে শ্রীভজিউকে প্রণাম করিয়া বৈকৃষ্ঠ ব্রজ সন্য ভীৰ্ষাত্ৰা মজুমদার সমভ্যারে ক্লফনগর যাই। এীযুত হলধর চোঙদার মহাশক্ষসক হইয়া কথোপকথনে রভার ধার প্রায় সকলে ছিলেন। তথা হইতে বিদায় হইয়া তিতু মুটে যুধিষ্ঠির স্কার্ত্ক সংক্ষ ক্রিয়া রাধাবলভপুরে গোরাটাদ কওড়ির বাটীতে

উপস্থিত হইবাম। সোরাচাদ বাটাতে ছিল না। ভূরশ্ট প্রগণার বামন-রাজার বাটাতে তাঁহার ভগিনী ছিলেন, ভূরশ্ট—হাওড়া জেলার অভি আগীন ছান। এই ছানের নামামুদারে রালীব-অেশীর লাভিলাপোত আজন্দিগের মধ্যে 'ভূবি' বা 'ভূবিডেজী' গাঞি ইইগাছে নিম্নিম্যর অংশিধচ্যোদ্যনাটকে ভূবিডেজী নগ্যের উল্লেখ আছে।

ভাগারই কিছুকাল পরে ১০ত শ্রীধরাচার্য্যের স্তাহকলনী হইতে জানা বার বে এখানে ১১৩ শকে পাতৃষাদ নামে এক কাছছ রাজা রাজত করিতেন। (বংলর জাতীয় ইতিহাস, রাজ্যভাও, ১৪১ পৃষ্ঠ স্তাইবা।) মুসলমান-শাদনকালে এখানকার তৎসহবোগে তথাকার বাত্রী আনিবার ব্যক্ত গিরাছিলেন। বাটাতে তাহার কনিষ্ঠ প্রাতা ঈশার ছিলেন। আগ্রহপূর্বক বাটাতে রাথিয়া গোরাটাদকে সন্থাদ পাঠাইল। তাহার আদিবার অপেকায় ১৬ কান্তন পর্যান্ত রাধাবস্তপুরে থাকা হইল।

# তীর্থ-যাত্রা

প্রতিদিবস বাটী ইইতে হাদর মজুমদার ও প্রীষ্ক অষ্ঠ নরেজ্ব প্রভৃতি গতারাউ করিত। ১৬ ফারুন সন্ধাগতে গোরাচাদ আপন ভগিনী ও যাত্রিগণ সমভাবে আঁসিরা পছছেন। তাহারা ১৬ ফারুন কওড়ির বাটীতে থাকে, পরদিন ১৭ ফারুন আমরা সকলে ঈখরকে সমভাবে করিয়া শ্রুটি তীর্পণাত্রার যাত্রা করিয়া জাহানাবাদের আড় পার কালীপুর (তথার বাজার ইত্যাদি আছে এথান হইতে চারিক্রোণ তথার) যাইয়া দেকিকেন অবহিতি করিয়া

কারত্বাসন বিল্পা হয়। তংগারে খুটার ১৬শ শতাকে এই ছান আকে। অধিকারে আসে: এই আক্ষাবংশে রার ৩শাকর ভারতচক্র জলাগ্রণ করেন। ভারতচক্রের "স্চাপীরের কথা" নাথক ক্ষুদ্র ক্বিতাগ্রতে তিনি এইলগে আপনার পরিচর বিরাচেন—

"তগৰ্মুগ্ন- অবতংগ, ভূপতি রাজের বংশ, সংগলাকে হতকংগ, ভূরণটে বুসতি।

শংসক্র রাজের স্থত, ভারত ভারতীবৃত, ফুলের মুখটা ব্যাত, বিলপাব স্থমতি।"
ভারতচক্রের পূর্বা হইতেই এই এক্সন-সালবংশের অবস্থা-বিপর্বাল ঘটে।
এবন ভূগপুটে দেই একেশ্রালবংশের প্রামান ও গড়ের ধ্বংসাবংশন পড়িবা আছে।

আহারাদি হয়। গোরার্টাদ গৌরহাটীর বাত্তীপক্ষে ঐ দিবস রহিলেন।

# ১৮ ফাল্পন--

কানীপুর হইতে কোতলপুর ৭ ক্রোশ, এই স্থান্দে রাস্তার দোকানে থাকা হইল। ইহার পশ্চিমদিকে মুনসেফের কাছারি, উত্তরদিকে বাজার। এখানে অনেক মহাজন লোকের বসতি আছে। তাবক দ্রব্যাদি ভাল পাওয়া যায়। পানের বুরজ অনেক আছে, ভদ্রলোকের বসতি অনেক আছে, উত্তম স্থান, নগর কহা যার, এই স্থানে স্থিতি।

# ১৯ ফাল্কন--

গোরাটাদের অপেকার কোতলপুরে থাকা হয়। মুনদেফের কাছারির বিচার এবং হাটবাজান্তর নগরের বসতি সকল দেখা হয়।
মেঠাই ও কদমা ইত্যাদির দোকান ভাল ভাল আছে, নগর ভ্রমণ
করিরা-নগরস্থ বাজুলালার সূত্র্য ভব্যতার বাধ্য হইয়া সন্ধার সমন্ত্রে
বাসীয়ে আসিরা দেখিলাম গোর্হাদ যাত্রী লইয়া পছছিয়াছেন।

#### ২০ ফাল্পন---

কোতলপুর হইতে ৪ ক্রোশ বালদী, যেথানে আঁ দলন্দীনারারণ শিলা আছেন, তেলিদিগের বাটীতে। তাঁহার সেবাপরাধে বালুদীও তাঁহাদিগের সকলেরই ধবল ক্র্টরোগ, ক্ষীনালামণ বিশেষতঃ দেবতার দ্রব্য ব্রাহ্মণের প্রাপ্য, তাহা না হইরা সকল দ্রব্য তেলিরা ল্যু, দর্শন পাওয়া হৃত্র, প্রদালইয়া কুলিম শিলা দর্শন ক্রায়, পূঞারি যে ব্রাহ্মণ আছে

অতি ছবুভি, এই যে অন্ত শিলা বিদেশী লোককে দেখার। তাহা 'কিমতে জানা হইল ? আমাদের সমভ্যারে এবং অন্ত অন্ত দলে বে मुत्र बाजी हिल, এहात मर्था गोहात बाहात पूर्णन देख्हा हिल, তেলি সেবাইত ও ু তাহারা ঐ ঠাকুরের পুরুরণীতে মান করিয়া ·পুলারি প্রাহ্মণরণের পুজারিকে আলাহিদা পরসা গোপনে দিয়া ষথাৰ্থ মৃত্তি দুৰ্শনাভিলাবে দাপোইয়া থাকিল। পুজারি পাষ্ড, শপ্থ করিয়া এমত চাতুরী করিয়া, অন্ত শিলা দর্শন গোপনে করাইল। সকলে বিখাদ করিয়া দর্শনান্তর সানজলাদি ধারণ এবং যে যাহা ভোগ দিবে, তাহা দিয়া **আইল**। ভোগ জবোর নিয়ম আছে। ঐ বাজারে যে ময়রা আছে তাহারা যে তৈলাভিষিক মেঠাই এবং ঝারা নবাত করে ভাহাই অভিশয় প্রেয়, কিন্তু ভোগ দ্রব্য ময়রাদের যে কেহ হয় হাতে করিয়া লইয়া যাইবে, এই নিয়ম-মত ভোগ জন্ত দিয়া সকলে বাহিরে আইল। আমি কিঞ্চিৎ বিলম্ব कतिया श्रीमन्तितत श्रविमात्कत चारतत निकार हमारवरन तरिवाम। ষ্ণায় ঐ পুজারির খণ্ডর প্রভৃতি কয়েকজনা স্ত্রীলোক তাঁহাদের আত্মীরস্বজনদিগের দর্শনার্থে সমস্তারে লইয়া বিসিয়াছিল, যেই স্থানে ভাহাদের সমভাারে রহিলাম'। যে সময় ভাহাদিগের দর্শন করাইল, ভাহাতে যথার্থ শিলা দেখাইল, ভাহাতে লক্ষীনারায়ণ শিলার যে চিহ্ন যথাশাল্প ভাহা দীপ্তমান, ঐ সকল লোকের সমভ্যারে দর্শন করিলাম। পরে গ্রামের বস্তি দেখিলাম। তেলি চাষা মুধ্রা নাপিত অধিক আছে। ব্রহ্মণ প্রায় একশত হর বাঙ্রে ও বালনী গ্রামে আছে, লেখাপড়া কেহই উত্তম জানে না, ক্লবিকর্পে কালহরণ করে। কৃষিকর্মে শন্তাদি এত জন্মার যে তাহাতে সংসার্থাতা এবং

নিতানৈমিন্তিক ক্রিরাদি নির্বাহ করিয়া ধনসঞ্চয় করে । প্রায় জনেকে রামারণ ইত্যাদি পাঁচালী গানের সম্প্রদার করিয়া দেশেং বাইয়া উপার্জন করে । বংকালে কুর্তুকর্ম না থাকে এ ছই কর্মে অক্ষম যে রাজ্মণ তেঁহ বিদেশে বাইয়া পাঁচককর্মে নিয়ুক্ত হইয়া ধনসঞ্চয় করে । এমতে প্রায় কেহ অয়বয় জয় বিব্রত নহে । এমতি প্রায় এতাদেশের সকল স্থান । গ্রামের পশ্চিমদিকে এক পুরুরণী আছে, সানবাদ্ধা ঘাট, শিবালয় ছই পাশে, উত্তরদিকে পুলিশের ফাড়িবর, ইয়ানে শিবমন্তির হারে বিসয়া জলযোগ করিয়া ওথা হইতে ২ ক্রোল পাত্রসারের,—রুহৎ গ্রাম, বাজার এবং ধনাঢ্যগণ, রাহ্মণ, কায়য়, তাছ্লি, তেলি ইত্যাদি মহাজনগণ সকল আছে । ক্রমিকর্মে এবং বাণিক্স করিয়া সকলে স্থা মাছে । অয়রক্রেশ প্রায় নাই, তাছুরি বনের কার্য এবং পত্রে ও বর্বলৈ সংযোগ নাই, তাছুরা বনের কার্য এবং পত্রে ও বর্বলে দিন নির্বাহ করিতেছে । ভিক্লোপ্রোগী কেহ নাই । এই স্থানে বাঞ্লারে থাকা হইলু ।

### ২১ ফাল্ডন—

আহে পাত্রসারের হইতে ৫ কেশ গোণামুখী আম, বনের
মধ্যে, এই ছর কোশ প্রার শাণবনে বনে বাইতে হর; হিংল্ল
গোণামুখী আহে, তল্পুকের ভর অভিশর।
এই এনোণামুখী আমে গদাধর শিরোমণির
বাসস্থান। বিনি বর্দ্ধমানের রাজবাটীর শ্রীমন্তাগবতের প্রসিদ্ধ কথক
ছিলেন। তাহাতে ধনোপার্জনের হারার অনেক অর্থস্কর এবং
গোণামুখী আম ইত্যাদি তালুক করিয়া বাসস্থানক অভি স্থরম্য

রমান্থান করিরা বনমধ্যে নগর বসাইরাছেন। বাজার হাট শ্রেণীয়ত বসান হয়। মুনসেক্ষের কাছারি, পুলিশের থানা এবং বাজালা, ইলরাজি ও ফারসী শিকা করিবার বিভাগর হাপিত আছে। আনেক মঞ্যোর বাস আছে। নিজ বালীতে দেবসেবা অভিথসেবা উত্তয়রূপ আছে। উত্তম এক বাগান, তাহাতে নানাফলপুশে স্পোভিত, গোবর্দ্ধন পর্কতের মন্দ্রিরাকৃতি দেবালয়,—এই মত বন মধ্যে নগর দেখিরা ত্রমণ করিয়া বাজারের উত্তর্গদকে এক দোকানে অবস্থিতি হইল। এথানকার মৃড্কি উত্তম।

## ২২ ফাজন--

লোগাম্বী হইতে বাহির হইরা ইচলার থালা। প্রামের অন্তেলার হইরা মাঠের পথে ও ক্রোন বাইরা দামোদর নদীর প্রীরামপুরের ঘাট। এই স্থানে নশীর ২ ক্রোন পাগার, বালুকাময় ভূমি, প্রাতে ছর দণ্ডের মধ্যে পার না হইলে, রোদ্রে বালি গরম হইলে কোনক্রমে বাওয়া বার না। নদীতে অতি অর জল, ছই পারে থাকে, মধ্যহলে বালির চড়া আছে। একে বালিতে চলা, তাহাতে রৌম্র হইলে বেনত ভাব হয়। এই নদীর বালির চড়া পার হইরা পশ্চিমপারে পছছিলে প্রীরামপুরে, ঘাটের উপরে তিনধানা লোকান আছে এবং প্রামের বসতি ও আম্রবাগান, কিছু অন্তরে পুদরণী ও প্রশোভান আছে। দোকানে জলপান দ্রবা, চাউল নাল ইত্যাদি জাহারের দ্রব্য সকল পাওয়া বার। তাহার পর মেট্যা-পাহাড়ের উপর হইরা ৪ ক্রোশ বাইতে হয়, বক্ষিপদিকে পথয়া প্রাম পাকে, গোপালপুরের পাকারাজ্যা পাওয়া বার, বে রাজা বর্দ্ধান ইতৈত

দিলী পর্যন্ত প্রথমে হয়। গোপালপুর বুদ্বুদ্ হইতে (৫) কোণ, যে স্থানে পাকার।তা পাইলাম, তথা হইতে ১ কোশ বাইরা চটী, রাজার ছই ধারে লোকান সকল থোলার ঘর, পথিকগণের থাকিবার স্থান বৃহৎ বৃহৎ ঘর, সকল ঘরের ভাড়া দিতে হয় না, ইাড়ি কাঠে পাতে এক পয়দা দিতে হয়। চাউল দাল, ঐ দোকানে লইতে হয়, আর আর তরি তরকারি মৎস্ত তৈল দিও ছয়াদি বিক্রয় করিতে আইসে; বাদায় বিদয়া সকল পাওয়া বায় এবং ধোপা নাপিত কুমার কামার চামার ইত্যাদি সকলেরই লোকান চটীতে, আর পুলিসের চৌকি থানা আছে, আর্ক্রোশ পর্যায় চটীর দোকানের ঘর। সকল ইলেরা ক্য়া পথিকগণের জল য়্লোছা জয় আছে। এই চটীতে খাকা হইল।

## ২৩ ফাল্লন—

অতি প্রত্থাবে গোণালপুর হইতে রওনা হইয়া অঞাল ৬ ক্লোল, দেই চটাতে, থাকা হইল। এথানেও পূর্বমত চটা, অধিকন্ধ রাস্তার উপরে মংস্ত তরকারীর বাজার হয়, আর রাস্তার ধারে রাস্তার থাদের থালে পুরুরণীর ভার জল থাকে। এই অঞালে অনেক বস্তি, বাজাণ প্রায় চলিশ বর আছে। এই চটাতে÷ বাজাণ দোকানদার অনেক আছে।

ইট-ইভিগান-বেলওয়ের অভাল টেসন হইতে প্রায় অর্থকোশ উত্তর-পূর্বে অবহিত। সংকারী জারিপের মান্ডিতে এই ছান অভাল-চটা নাবেই টিফিড।

### ২৪ ফাল্কন—

এই বনে প্রার > ক্রোশ ঘাইতে হয়, তাহার পর ফরেদপুর ৩ ক্রোশ, এ চটী ভাষা চটী, এখানে কেছ রাত্রে থাকে না, পরে ২ ক্রোন বোগর্জা, বৃহৎ চটী, গ্রামে অনেক ভদ্র মহুষোর বদতি আছে। এই প্রামে শ্রীবৃক্ত গোবিন্দ পণ্ডিতের তালুক। • চটীর বেমত নিয়ম তাহা সকল আছে। পণ্ডিত মহাশয় জিলা ২৪ প্রগণায় ডিপুটি কালেক্টরি কর্ম করেন। তেঁহ পথিকগণের মধ্বন ও বোগডা হিতার্থে রাস্তার প্রস্তাদিকে এক মনোহর স্থল-ফলের উন্থান এবং তাহার মধ্যে প্রায় দশ বিখা এক পুছরণী, তাহার চতুদ্দিকে পাথরের 'বাটবান্ধা, তাখার পশ্চিমদিকে व्यथान मनत बांठे, के शार्टित डेशरत स्वाटाना टेवर्ठक-থানা, নীচে ঘাটের চাদনীর স্থায় ছই পার্যে কুঠারি আছে. তাহাতে জলছত্ত্রে শুড় ছোলা অতিগ্দেবার দ্রাদি থাকে. তাহার সন্মুধ পশ্চিমদিকে পুশোভান তুলগীকানন, তাহার পশ্চিমে রাস্তার পূর্ব বে গেট আছে তাহার ধারে ধররে ৰকুলগাছের কিয়ারি, অতি মনোহঁর স্থান, পুকরণীতে বুহৎ রুহৎ মৎস্য সকল আছে, •কেলি দেখিবার জন্ত কিঞ্ছিৎ মুদ্ধি क्षित्रा निर्म ठाराता थारेयात अञ्च अठास वास रहेता क्षेत्र करत । नाना পूच्य डेप्टान मरश च्हारह, ज्ञायन च्हायन मध्रह সকল প্রাকৃটিত হইরা গছে আমোদিত বারে। পণ্ডিত মছাশরের

অণ্ডাল হইতে ১ ক্রোশ মধ্বন, বুহুৎ বন, কেবল মৌয়াগাচ,

বর্তমান রাণীগঞ্জ টেসনের ছই ফোণ প্রকিমেন্তরে বোগড়া প্রাম,
এবং রাণীগঞ্জ টেসনের উত্তর-পর্কিমে এক মাইল মধ্যে 'বাবু বোনিক্রমাণ
প্রিতের ক্রলার থাবা বেধা বার ;

জনছত্র অতিথসেবা আছে, বাগানের ফল ফুল বে কেহ লইতে পারে তাহাতে কোন বাধা নাই। এই দিবস এই চটীতে, মহাতারত বেণের দোকানে থাকা হয়।

বোগজা হইতে নিয়ামতপুর ৬ ক্রোপ, এই চটীতে বেলা ছয়

# ২৫ কাল্পন—

দণ্ডের সমর পছছিয়া থাকা হইল, রাত্র ছয়দণ্ড থাকিতে গমন

হর, পথিমধ্যে কিছু ভর নাই। এক জোশ অন্তরে অখারোহি
শ্বিদারতপুর

গণ প্রহুরী নিযুক্ত আছে। পথিকগণ অধিকরাত্র থাকিতে উঠিয়া গমন করিলে ঐ
প্রহুরী সমভ্যারে বাইয়া অন্ত সীমার প্রহুরীদিণের নিকটে
পছছিয়া দের, রাত্র থাকিলে তাহারাও ঐ মত সঙ্গে যার, বে
চটীতে যে দিন থাকা হয়ু রাত্রে থানায় যাইয়া সনাহিয়ত+
বহিতে আপন নাম, বাম, গমনপ্রথা, গমনের স্থান, শ্রাদি
সমভ্যারে কি, যত মনুষা, বে রক্মের স্ত্রীপুক্ষর, বিশেষ করিয়া
কিলাইয়া দিতে হয়। চৌকিদারী প্রতি মাসুবের চারি কড়া
কৌডির হিসাবে দিতে হয়।

## ২৬ ফাজন-

নিরামতপুর হইতে ৣ০ ক্রোণ আদিরা মেটেসিনরে পাহাড়, এই পাহাড়ের মাট লাল, তাহার পশ্চিম বরাকর নদী—পূর্বাতীরে

<sup>🛊</sup> স্বাহিরড-স্বাজ।

রাজা হরিশ্চল্লের । শিবস্থাপন, ছই মন্দির অতি প্রাচীন আছে, মেটেনিছুরে পাহাড় ও এক পূর্ব্বারী, এক উত্তরহারী, ছই মন্দির নালা হরিশ্চল্লের পার্চি কত দিনের তাহা কেহ কহিতে পারে না। এমত নির্দাণ করিয়াছে অভাবধি তাহার এক রতি চুণ কুণাও খলে নাই। দেখিবামাত্র নৃতন বোধ হয়। তাহার পশ্চাতে এবং সমূপে প্রত্তরনির্দ্মিত গোও প্করমৃত্তি আছে, মন্দিরের ভিতরে যে শিব আছেন শিক্ষপ। এই হরিশ্চল্লক্কত স্থাপিত শিব দর্শন করিয়া বরাকর নদ পদত্রজ্বে পার হইয়া পশ্চিমপারে যে চটী আছে তাহাতে ক্রণকাল বিশ্রাম করিয়া পরে ৩ ক্রোশ নৃশেচটি। এই চটীতে থাকা হইল,—প্রায় ৪০ থানা বহুৎ বহুৎ ঘর আছে।

#### ২৭ ফাল্লন-

রাত্র ছয়দণ্ড থাকিতে নূলেচটি ইইতে গমন করিয়া ৭ জেলাল

শ রালা হরিকজনেবং—লেখরতুন বা প্রকারের এক অসিদ্ধ নর-পতি। বর্জনান বরাকর নদীর উভর তীববর্জী জনপদ, পাঁচেট, মানজুর, সেনভুর ও সেনপাগাড়ী এক সমরে ইহার অবিকারতুক হইলছিল। শতরত মলিকের "চল্লপ্রা।" নারী বৈদ্ধত্বলপঞ্জিকা হইতে জানা বার বে রাজা হরিকল্প সেনভূবের বৈদ্ধারালবংশের পূর্বপূর্ব নাখ-সেনকে পাহাড়খণ্ড ধার করেন। এই পাহাড়খণ্ড পরে বৈশ্ব সেনখালের সুসরে সেনপাহাড়ী নাবে পারিতিত হল। এটার ১২ল লহাজাতে রাজা হরিকল্পেবর বিভ্নান ছিলেন। নিরামতপুর হইতে ক্লিন-পল্ডিমে লেখরবংশের প্রাচীন রাজধানী প্রচলককোটি কেনা বাল। '

পরে গোবিন্দপ্রের চটী । এই চটীতে গোপালের মাতার দোকানে থাকা হর। এই চটী পুর্বের পথে চাস চটীতে ছিল। এই চটী গোবিন্দপুর ও অবধি মগধরাজা, মংঅদেশ বরাকরাবধি মগধের দীমা বিরাটরাজ্য, তাহার পর জ্বরাসন্ধাধিকার মগধ। এ স্থানের মহ্বাগণ দোভাবী, ঝাধা খোট্টা আধা বালালা বোল। বৃহৎ চটী, অর্ক্লেনেক অধিক চটী, খোলার বৃহৎ বৃহৎ বর সকল, এক এক ঘরে ত্রিশ ব্রিশজন পথিক থাকিতে পারে। রাস্তার ছই পার্শে দোকান সকল, উত্তম শ্রেণীমতে দোকান সকল আছে।

# ২৮ কাল্পন—

🌣 🍇 উপরোক্ত সময়ে গোবিন্দপুরের চটী হইতে ৬ ক্রোন

এই সোবিশপুর কর্জমান মানতুম জেলাছ নগর-হাইয়ারি পরগণার
আন্তর্গত। এছকার এই যানের পূর্বে মংস্য বা বিরাটরাজ্যের সীমা এবং
পূক্তিমে, মগদরালের মীমা নির্দেশকরয়াছন। তাহার একপ বলিবার কারণ
এই এথবতঃ এখানে আবাংগাট্য ও আবা বারালা তারা এচলিত, ২য়তঃ এছার
হইতে ছই দিনের পথ অর্থাং ১২ জোল বাইয়া তিনি সরাস্বস্কৃত পাইয়াছিলেন।
এই স্বরাস্বস্কৃত্ত হতে মনে হর মগধপতি স্বরাস্বস্কর রাল্যসীমা এই পর্যুক্ত
ছিল, কিন্তু বর্তান মর্গথ বা বেহারের সীমা ইবার আরও প্রিচ্ছে, তবে
আন্তর্বিন ইইল বুটাল গ্রেপ্নেট এই হান বেহারের সামিল করিয়া লইয়াছেল
বটে। কিন্তু বিরাট বা ম্বুক্তবেশের সহিত এই হানের কোন সম্বন্ধই নাই।
পৌরার্শিক সংস্তর্গেশ বা বিরাট রাজ্য বর্তমান ক্রম্পুর হালা। মর্বজন,
মেহিনীপুর ও বিনালপুর ক্রেমার বিরাটের ক্টান্তি আছে বটে, কিন্তু তাহা এই
হান হুইতে বছরুর।

পাহাড়ের পথে যাইয়া রাজগঞ্জ , এই চটীতে বারথানা দোকান
আছে, এই চটীর নিকটে সাহেবদিগের
থাকিবার এক বালালা আছে, ডাকের
ঘোড়া বদল হয়, এই বালারের চৌধুরী ভগত নামে, তাহার
দোকানে থাকা হইল।

#### ২৯ ফাল্গন-

রাজগঞ্জ হইতে ৬ কোশ তোপটাচির চটী, এই চটী অবধি
পাহাড়ের ঘাট চড়াই উত্তরাই জরাসন্ধের গড়া, এই স্থানে পরেশনাথের পাহাড়াই, এ পথে এ পাহাড়ের তুল্য উচ্চ পাহাড় নাই। তিন
জরাসন্ধের গড় ৬ কোশ উর্দ্ধেতে উঠিতে হয়। পর্বত ফল-স্থলের
পরেশনাথ-পাহাড় লতার্কে স্থালাভিত, বনমধ্যৈ হিংস্রজন্ত্রগণ
আছে, পর্বতের শৃক্ষে পরেশনাথের মন্দির আছে, তাহাতে একম্রি

- এই ছান একবে সংকারী মানচিত্র 'বলিভিটা' নাবে পরিচিত, মানভূষ জেলার জয়নপর পরগণার অন্তর্গত।
- † এখানে পরেশনাধণাহাড়ের নিকট জরীপেছগড়ের "নিংশন খাকার মারু হর মগধণতি জরাসভের রাজ্যের পূপ সীমা প্রেশনাধ পাহাড় প্রায়ত বিজ্ঞ ছিল।
- া ২০শ তীর্ণজর পার্বনাধ্যামী আবণ মাসের গুজাইনীর দিন আবণা নক্ষরে এই পাহাড়ে কাসিরা দেহত্যাগ করেন, তাহার নামানুসারে এই পাহাড় পার্বনাধ বা পরেশনাথ নামে খ্যাত হইরাছে। কৈনপাত্রসমূহে এই ছান 'সমেতুলিধর'নামে প্রসিদ্ধান লৈকিছিল ইয়াত্রকটি প্রধান তীর্ধান। এখানে প্রচীন কৈনকীর্তির বহ ধ্বনোয়ানে পড়িছা কাছে। বহ কৈনতীর্ধ্বাজী এই ছান দর্শনে কাসিরা থাকেন। এই হান অতি বাহাকর। বর্তনান সমরে দিরিজী টেশন হইরা অনেকে পরিশ্বাধাণাহাড় দেখিতে হান।

প্রতির-নির্দিত বিবল্প, সরাবগি • বণিক্লিগের কুলদেবতা। একজন মোহজ্ঞস্বলপ, জটাধারী, ভল্মাথা, তথার আছেন, তাঁহার-চেলা সকল সরাবগির বণিক। ফাল্কনী পৌণ্মানীতে ঐ পর্কতের নিলেবে মধুবন আছে, সেই হানে পরেশনাথের মেলা হয়।

মধুবনের মধ্যে ৭ সাতু থানা দোকান আহে,
শধ্বন
 যাত্রিগণের তথার অবস্থিতি করিবার স্থান,
পর্কতের উপরে পুক্রণী এবং পুশোস্থান আছে। মধুবনে
আগর ওয়ালা বেগৈদিগের ধর্মণালা আছে। তোপটাটির পশ্চিম
২ ক্রোশ মধুবন ।

# ৩০ ফাল্গন—

পরেশনাথের পাহাড়ের নিকট মধুবন হইতে পাহাড়ের ধারে ধাুরে জরাসদ্ধের কেলার ধার হইরা ভূমরি ভ\*কোশ হাইরা ভূমরিচটা। ২০২ মাইলে চটী জ্মারস্কু ২০০ মাইলে সমাপ্ত। এই চটীর চতুর্দ্দিকে পাহাড়,

• সরাধনি—লৈন আবৰণ বৃদ্ধ ও দৈন তার্থকর উচ্চের মহাবলধী
শিষ্ট আচান গেছ ও জৈনশালে 'আবক', নমে পাচচিত ইইয়ছেন। কিন্তু
সরাবি বা আবক ব পরারা অধুনা সকলেই জৈন-ধরাবল্যা। এ গেশে ও
বাজিপাত্যে ইচার। 'মাড়োরাবা' নামে পরিচিত। ২০ল তার্থকর পার্থনাথ
শ্বামা ইবালেও এখান উপাক্ত। যে সকল আমে ইহারা দলবদ্ধ চইয়া বাস করেন্দ্রভাষে সকলের চেষ্ট্রীয় এক একটা পার্থনাথ মন্দির নিমিত ইইয়া খাকে।
প্রত্যেক সরাবিদি-বিশিক্পরিবার পার্থনাথের মন্দেররকার ও তাঁহার বখায়াতি
পুলাধির বায়-নির্কাহার্থ যে যাজানের কিয়নংশ রাধিয়া দেন। বলা বাছলা,
পরেশনাথ পাহাত ইতানিরের সর্ক্রিখান পুণাক্ষেত্র। পাহাড়ের ঝরণাতে উত্তম জল, ঐ ঝরণাতে মানাদি করিয়া তটীতে পঞ্চকোটের রামক্ষণ মদকের দোকানে থাকা হইল।

### ऽ टेडंब-

ভূমরি হইতে পাত ক্রোশ বগোদরের চটী, এই চটীতে ডাঁকখর ছিল, একণে আপটকা চটীতে গিরাছে, কেবল খোড়া বদল হয়। রাধে মুদির দোকানে থাকা হইল। বগোণর পাহাড়তলি স্থান,—পাহাড়ের নিকট বে বাঁধ অর্থাৎ বন্ধন করিয়া জল রাধা হইয়াছে, পুক্রণীর স্থায় ঐ জলে স্থানাদি করা হইল।

# ২ চৈত্ৰ— '

বগোদর হইতে আট্কা গা ক্রোল, পরে বরকাটা গা ক্রোল। একালে আটকা চটীতে ডাক্যর, তথ্পার কেরাণী ও মুন্দী আছে।
ক্রোট্কাও বংকাটা
চটী আরম্ভ ২২২ মাইলু পর্যন্ত। এই চটীতে
কলিকাতার পত্র ডাক্যরে দিয়া বরকাটা চটীতে প্রভা হইল শ
২০০ মাইলের পাথরে বরকাটা চটী আরম্ভ। এক পাণ্র ক্র্থাৎ
ক্রিকোশ। চটী পূর্ক চটীবং, শোকান ইত্যাদি আছে।

#### ৩ চৈত্ৰ—

বরকটি। ইবৈতে ৪ জোশ বরশোত। এই চটীতে থাকা হইল।
বয়শীত ভালা চটী, এথানে থাকিবার কারণ আঁমার
নাসাজর হইরা কেশ বোধ হয়, এই জয় ৪ জোশ আসিয়া প্রাতঃকালে অবস্থিতি কয়া হইল। এ দিবস অন্সন থাকা হইল।

# ৪ চৈত্র—

বরশোত হইতে বরহি ৫ ক্রোশ,—এ চটীতে বৃহৎ বৃহৎ বর
সকল অক্সান্ত চটীর ক্সান্ন, অর্দ্ধক্রোশ পর্যান্ত দোকান; সকল
পাহাড়ের ধারে চট, শোভাঁ অভিশন্ন, করবীফুলের অনেক গাছ ধারে ধারে আছে,
পথিমধ্যে ছুইটি পোল আছে। ভাহার পর ৬ ক্রোশ যাইরা
চোপারণ, এই চটীতে দোকানে পথিকদিগের থাকিবার ঘর
চোপারণ, এই চটীতে দোকানে পথিকদিগের থাকিবার ঘর
চোটা, অধিক ঘর নাই, হন্দ পনর বোল খানা ঘর আছে, ভাহার
পর অঞ্লানে দোকানের নার। এই চটীতে
অথ্যে পছছিতে পারিলে ঘন পণিত্রা বান্ন,
নচেৎ অভিশন্ন ক্রেশ। পাহাড়ের মধ্যে চটী, ভয়ানক স্থান, এ চটীর
দোকানদারের নিকট হাঁড়ি পাওয়া যান্ন না। দ্র হইতে
বাজারে বিক্রন্ন করিতে আইসে, তথার ক্রন্ন করিতে হয়।
এ চটীতে ঘরভাড়া আছে।

# a 253-

চোপারণ হইতে পাঁহাড়ের হেট ঘাট ভালিয়া বিকট বিকট জন্দল হইয়া এই মত ৬ ক্রোশ বাইয়া ভেলুয়া। এথানে এক বৃহৎ পাধরের পোল আছে; স্থান অভিশয় ভয়ানক, দিবসে চোরের ভয়, এজন্ত এ চনীতে পথিক ক্ষেত্র থাকে না। পর্বত অতি ভূরানক, বন তভোধিক, পার্বভীয় ব্যক্তিগণ বড় চোর, এজন্ত এই স্থানে গাড়ী থাকিবার হাতা অর্থাৎ চতুর্দিকে বেষ্টিত প্রাচীর, হারে কপাট আছে, মহাজনদিগের মাল-বোঝাই গাড়ী সকল থাকে। পুলিশের রক্ষকগণ প্রহরীতে নিষ্ক্র বিশিষ্ট রূপে আছে। ঐ পর্কভের গার্পাকীয়া সকল এমত চৌর্যাকৃতিতে বাংপাল, তাহার মধ্য হইতে গার্জী লইয়া কাননে প্রবেশ করিয়া হরণপূর্পক পর্বতে গমন করে। পর্কতের পথে কুথায় যায়, কেহ সন্ধান করিতে পারে না। , যাত্রি-র্মধ্যে সঙ্গছাড়া হুইয়া অগ্রপশ্চাং হইলেই তাহার ক্রবাাদি হরণ করিয়া পলায়। পথ বিকট পাহাড়ের হেট ঘাট অর্থাৎ নীচে উপর করিতে করিতে পথিক ক্লাস্ত হয়; এমত কঠিন পথ যে অক্সহানে ভাকের ঘোড়া ও ক্রোশান্তর বদল হয়, এই পথে এক এক ক্রোশ অস্তরে ঘোড়া বদলের আরোবল অর্থাৎ অম্পালা আছে। তেলুয়ার পূলে কুকর পাথরে গাঁথা। তেলুয়ার বিকটপথে গহন বদ হয়া ভ ক্রোশ যাইয়া বারা

ৰারা চটী, এখানে কুশলানদীর পোল আছে, এই পোলের এক পোরা অস্তবে চটী; পুলের নিকট তিনটী দোকান আছে, ২৭৮ মাইলের পাথর আছে, এই অবধি পাকা রাস্তা ছাড়িতে হইল। এই চটিতে স্কার পূর্ব্ব প্রছা হয়।

#### ৬ চৈত্র—

বারা হইতে ২ ক্রোশ বৃল্ফেন্সরঙা, পাকা রাস্তা হইতে ঈশানমুখে গ্রাম্য পথে বাইতে হয়; এছানে সাত থানা দোকান আছে।
তাহার পরে ৪ ক্রোশ বাইয়া কুশলানদী।

পরে ২ ক্রোশ বোধগরা। এখানে গুরাহর বিফুর সহিত যুদ্ধ করেন,—এই ছানে করপরাজর হয়। বোধগরা ধর্মারণ্যে রাজার মন্দির আছে। এই বোধ-গরাতে এক জন মোহত্ত আছেন, তাঁহার অনেক রাজা শিব্য, তাঁহাদের দত্ত বহু ধন এবং ভূম্যাদি সম্পত্তি আছে, সর্ক্ষা
৪০০।৫০০ শত নাগা চেলা সমভারে থাকে। বোধগরা টেরির র
রাজা০ মৌহস্তকে নিজর দিয়াছেন। এই স্থানে বাত্রিগণ পহছিরা
বে কেছ তীর্থপ্রান্ধ না করিয়া আইদে, সেই রুয়ক্তি এই বোধগরাতে তীর্থপ্রান্ধ করিয়া গরাধাম প্রবেশ করে এবং বাধ্যক্তিও
গরাল তাহারা অগ্রসর আসিয়া আপেন বাত্রী লইরা বায়।
প্রায় সকল গরালের গোমস্তা ইত্যাদি লোক বোধগরাতে থাকে।
বার্থানা প্রধান পোকান আছে, তত্তির বাজার জ্ব্যাদি সকল
পাওয়া বার। এই স্থানে আহুারাদি করিয়া বেলা ছর দণ্ড থাকিতে
মোহস্তের আম্বাগান হইরা গ্রমন। বাগান প্রায় তিনু ক্রোশ, রৌজ
পাওয়া বার না, গাছের ছারাতে ছায়া।

এই ৩ ক্রোশ পরে গ্রাধান। ব্রহ্মধোনির পাহাড়। এই গ্রাধান স্থানে পতুছিলে যাত্রীদিগের নিকট হইতে সেতৃয়া সকল ধ্বজা-দুশনী লয় অর্থাৎ বিষ্ণুমন্দিরের ধ্বজা দেখাইয়া প্রতি ব্যক্তির নিকট এক টাকা করিয়া লয়, ইহা স্তুরাদিগের নির্ম। ইহাদের যাত্রীর নিকট ব্রহ্মধানিশাহাড় পাইবার এই নিয়ম আছে। প্রতি যাত্রীর নিকট ধ্বজাদর্শনী এক টাকা, পথের ধ্বোরাক্তি অর্জ টাকা, আর গ্রালদিগের নিকট যাত্রী প্রভ্রেষ দিলে কাহার বাটীর দক্তর যাত্রীতে যত টাকা গ্রালকে দিবে, ভাহার সিকি কাহার ছয়্ম মানা

"৫টকারি'বা 'টকারীছি রাজা' পাঠ হইবে। টিকারী সহব পরাস্পন্যর ১৫ মাইল উত্তর-পশ্চিমে কুরহর নদী তীরে অবহিত। নাদির শাহের আংক্রথের পর বোগল-সাফাল্যে বিশুখনা ঘটনে বর্তমান রাজুকলের পূর্বপৃথ্য বীঃসিংহ কর্তৃক এই রাজ্যের প্রভিষ্ঠা হয়।

ર¢ (૭)

কাহার অর্দেক গয়ালে সেডুয়ায় অংশ আছে। কেবল চৌধুরীর নিয়ম এই আছে—য়াত্রীতে মত দিউক প্রতি য়াত্রীর (নিকট) ছই টাকার হিসাবে পায়। ইছা তির য়াত্রীদিগের বাটীতে পতছাইয়া দিলে প্রত্যাগমনের প্রান্ধের সময় য়থাযোগ্য বিদায় দেয়, এই মতি ইহাদের পাওনা। এই ব্রহ্মযোনির পাহাড়ের নিকট হইয়া নগরে প্রবেশ করিয়া উপর মহলার বামনিঘাটে ফল্পনীর নিকটে ধবল চৌধুরী গয়ালের বাটীতে উপস্থিত। সন্ধার সময় য়ওয়া হইল। তাঁহার ছই কক্সা ফুলাদই ও চম্পাদই আছেন, তাঁহার লাতার দৌহিত্র শ্রামলাল পাঠক, তাঁহার পা-পূজা পুর্বের সন ১২৫৮ সালে য়থন গয়াপ্রান্ধার্থে গিয়াছিলাম করা হইয়াছিল, এই জক্স তাঁহাকে দর্শন করিয়া প্রণামী দেওয়া হইল। তেঁহ রীতিমত তুল্পী, কলি, পেড়া সকলকে প্রসাদ করিলেন। ঐ রাজি তীর্গোপ্রাস্ক করা হইল। গয়ালের বাড়ীর দোভালার উপর বাসা হইল। রাজে বিকুপ্দাদি দর্শনার্থে গমন করিয়া এক প্রথব রাজ পর্যান্ত বিকুপ্নাদি দর্শনার্থি গমন করিয়া এক প্রথব রাজ পর্যান্ত বিকুপ্নাদি দর্শনার্থি গমন করিয়া এক প্রথব

#### ৭ চৈত্ৰ—

ক্ষোরকর্ম, বস্ত্র কালনার্থে দেওয়া, জিয়ার নূতন বস্ত্র ক্রয়,
ফল্লতে লান ও তর্পনাদি করিয়া আলারাস্তে নগর ভ্রমণ, সন্ধাগতে
বিষ্ণুপদ দর্শন। বিষ্ণুমন্দির যাইতে প্রথম
, বিশ্বপদ
, বারে মালাকারগণ, ফুল তুলসী মালা বছবিধ
মত লইয়া থাকে, তাহার পুর্বাদিকে এক রামাত বৈষ্ণবের
আথড়া আছে, তাহাতে সীতারাম রাধাক্ষণমূতি নির্মিত এবং
আনক রক্ষের শাল্থামশিলা বিরাক্ষিত। তাহার পর

ছারে গরেখরী দেবী—গরাধামের অধিষ্ঠান্তী দেবী মহাদেবীর মহাপীঠ ও গদাধর ভৈরব; এহানে ছাগাদি বলি প্রদানহয়। তাহার পরে অহল্যাবাইয়ের স্থাপিত প্রীরামদীতা খেতপ্রস্তরে নির্দ্ধিত, আনাহিদা ঠাকুর বাটা, দেবাইতগপ আছেন, ভোগ ইত্যাদির বন্দেজ্মত আছে। প্র বাটার প্রেশিকে প্রীপ্রদাধরের মন্দির এবং গণেশ ও আরু আর দেবদেবীর মূর্ত্তি বিরাজিত। তাহার পর ছারে ১৪৮৪ ঘর গরালের বৈঠক কাছারি। তাহার পরে বন্দিবর, পূর্ক্ষিকে বোলবেদী; পশ্চিমদিকে বিক্যুমন্দির অতি উদ্ভব্ধ পাথরে গঠিত, দোনার কলস, সমুথে নাটমন্দির, এমত মন্দির ও নাটম্দির আর কোগাও নাই। হোলকার বাহাছরের স্ত্রী আধুলাবিট্যেব এই কীর্ত্তিন।

# ৮ চৈত্র—

ফল্লতে স্থানতপ্ণাদি কিঞা। প্রথমে ফল্পনদীতে প্রাক্ত করিয়া পিগুদান। প্রথম দিবদে এই প্রয়ন্ত। কেহ বা বিজ্পদে ঐ দিবস্∙পিও অপ্প কেরে। ইা⊌গ্রাধামে পিওপ্রাকাদি তিন

অংল্যাবাঈ—মালব-এদেশের রাজা থওে রাওমের পজা। থওে রাওমের মৃত্যুর পর ইইরা পুত্র মালারাও অলকাল রাজুহ করিছা ১৭৬৬ থা আছে পর-লোক সমন করেন এবং অংল্যাবাঈ থরং রাজ্যেরা হইয়ছিলেন। ইনি অভিশর ধর্মপরারাণা সাধ্বী ছিলেন। দেবাজেলে তিনি বে সকল পেবালয়, মালির, অভিধিশালা অভৃতি অভিটা করিয়া গিয়াছেল, সেই সকল কীর্তি ওাছার পবিত্র নাম প্রাত্মেরবর্গির কছিয়াছে। কেদারনাথ, রামেরর, কালা, ইক্তে অভৃতি ছানের পেবালয় এবং গয়ার বিকুশ্দমন্দির ও নাটমন্দির অংল্যাবাঈরের কীর্তিভ্রমণ আলিও বতারমান আছে। তিশ বংসর স্পৃথ্বার সহিত রাজকার্যা সম্পর্কার সংক্রাক্তর পর্বাক্তর বাজ্যের এই কেরা-বর্তার বিরুষ্ঠি বাজ্যের করিয়া ১৭৯৫ থা আছে এই বেরা-বর্তার বিরুষ্ঠি বাজ্যা পর্বাক্তর প্রমান করেন।

প্রকারে। প্রথম শ্রেণী—ক্ষাপরেল ৪৫ বেদীতে শ্রাদ্ধ; দিতীয়—
দর্শনী ৩৫ বেদীতে শ্রাদ্ধ; তৃতীয়—একদৃষ্ট ৪ বেদীতে শ্রাদ্ধ।
গ্রাম্বরের শরীর পঞ্চক্রোশব্যাপিত। এই
পঞ্চক্রোশ গরাক্ষেত্র—এক ক্রোশ বাপিত
শ্রুক্ত, ইহার মধ্যে সমীপত্র-প্রমাণ পিও গ্রাশিরে অর্পণ
করিলেই পিতৃমাতৃধ্বর্গের কিঞিৎ শোধ হয়। পিতৃকার্য্য এই
তীর্বে, অক্সান্ত তীর্বে আয়কার্যা। গরাম্বর এমত পরোপকারী
যে, আপন প্রাণ বিফুপদে অর্পণ করিয়া পরের হিত করিয়াছেন।
ভগীরথ যে ৮গঙ্গাকে পৃথিবীতে আনিয়াছেন/মাপন কুলোদ্ধার
জন্তা। গরাম্বর পিও-প্রদান-বিষয়ে পার্থরহিত। ফল্কন্দীর তীরে
বিক্রমন্দির। ফল্ল হইতে অনেক উচ্চ প্রস্তরের দিন্তি ঘাটে আছে।
এই গরাধানে যে যে তীর্বে পিওলান করিতে ১য় পেই সকল

> ফল্প, ২ প্রেতশিলা, ৩ অর্কুণ্ড, ৩ রামশিলা, ৫ রামকুণ্ড, ৬ কাকবন, ৭ উত্তরমানস, ৮ উদিচিং, ৯ কম্মলা, ১০ দক্ষিণমানস, ১১ জুভানন, ১২ মাতৃশিবাপীঃ, ১০ ধর্মবিলা, ১৪ অক্ষদরোব্র, ১৫ কাকবনশ।

## ধোলবেদী

১ ব্ৰহ্মপদ, ২ ক্ষমপদ, ৩ বিঞ্পদ, ৪ কার্তিকপদ, ৫ গার্হয়-পদ, ৬ আবাহিনীপদ, ৭ সতাপদ, ৮ দক্ষিণামিপদ, ৯ অথখপদ,

- डेनोडो। † कः
- 🛊 মতক্ৰাপী। 💲 অর্বিশ্বন।
- गार्रभछात्रमः ७। व्यार्यनोप्रभमः । अ। आवस्थालमः

বেদীৰ নাম---

১০ হ্র্যাপদ, ১১ চক্রপদ, ১২ দ্বীচিপদ, ১৩ মার্কণ্ডপদ, ১৪ কর্ণপদ, ১৫ ইক্রপদ, ১৬ গণেশপদ। এই বোল বেদী মণ্ডপ ।
মধ্যে আছে। তৎপার্ফে চারিবেদী—তাহার নাম কুরঞ্চপদ, 
অগত্যাপদ, কাশ্রাপপদ, গজকরণপদ।

# অষ্ট তীর্থ

> রামগনা, ২ দীতাকুণ্ড, ৪ গরাশির, ৪ মৃতপৃষ্ঠ, ৫ আদিগরা, ৬ ধৌতপদ, ৭ গরাকুণ, ৮ ভীমগরা।

গৌপ্রচার—এই স্থানে এন্ধা গো-বংস দান করেন। এই পাহাড়ে গোবংসের পদচিক্ত স্পুষ্টরূপে আছে; এস্থানে পিওদান এবং গোদান।

গদালোল—ভ৾•মের গদাক্তি এক প্রস্তর পুক্রণীতে পোতা
'আছে, ইহাকে ভীমের গদা কহে। এখানে শ্রাদ্ধাদি।

বিষ্ণুপদ—গরাস্থরের মস্তক্ উপরে; তগবান্ যে প্রচিষ্ট্রিয়াছেন, তাহাতে কাপরেল গরার তিন দিন পিওদান; শেষ দিনে পিওদান করিয়া অক্ষরটে দানাদি করিয়া স্থফল লইতে হয়।

্বে পমন্ত বেদী নিথা হইল, ইহার চারিবেদীতে বাঙ্গানিতে আদ্ধ করে না, মহারাষ্ট্র, তৈলীঙ্গি, পঞ্জাবী এবং খোট্টারা আদ্ধ করে, এক্ষয় ৪৯ বেনী নিথা হইল।

প্রতি বেণীতে পার্কণশ্রাদ্ধ করিয়া বার পুরুষের পিও দিয়া পরে পিতৃমাতৃকুল, জ্ঞাতি-কুটুৰ, অমাত্য-বন্ধুবাদ্ধবের — যে জ্ঞাতি হউক সকলে সকল জাত্বির পিও গয়াক্ষেত্রে প্রদান করিতে প্রারে। সকলের পিও দেওয়া হইলে মাতৃপিতৃযোড়ণী করিতে হয়,

১০। মাইডেয়পর। 😘 গলকবিব। 🗸 🛊 জৌঞ্পর।

অর্থাৎ বোল বোল পিও দেওরা বেমত কেন না নির্দ্ধ পারও হউক। মাত্যোজনী সমর ক্রেন্দন করিতে হয়। মাতা গর্ভেতে ধারণাবধি যথন বেমত ক্রেন্দ ভোগ করিরছেন তাহার নাম উল্লেখ করিরা প্রত্যক্ষ পিওদান। এইমত প্রতিবেদীতে করিতে হয়। ইহাতে এক এক দিবস এক এক বেদীর কর্ম করিলে অধিক শ্রম হর না, ভাস হয়। পিও—যব, গোধুম, তপুলচ্ব এক এক বির্মা ঘত, মধু, চিনি, তিল এবং ছগ্প ও বাহা উপকরণ পাওরা বার, এক এ করিয়া পিও সমীপত্রপ্রমাণ পাকাইতে হয়। বড় হইলে ক্ষতি নাই। কেবল মহারাষ্ট্র আহ্মণেরুল অলের পিওদান করে, আর কোন দেশীয় লোকের নহে।

এক বিশ্বপদে পিগুদান করিলেই গলা করা দিছ হয়। তবে যে এত স্থানে পিগুদি দিতে হ'ব তাহার কারণ পঞ্জোশ মধ্যে দেব দানব গল্পর্কা মুনি অধিগণ যে যে স্থানে পিগু দিয়াছিলেন, সেই সেই স্থানে পিগু দিতে হয় । তাহাদের এক একজন যেখানে আছা করিয়াছিলেন, মানবে সেই সকলের বেদীকে একঅ করিয়া আছি করে, তাহাকেই কাপরেল্কহে।

প্রেকশিশার আলাহিদা আল্লণ। গ্রাহাদিগকে ধামী ওাদ্ধা কংহ। যেমত এতদেশে অ্থাদানী, পশ্চিমদেশে মহাবামন, দেইমত ধামী আল্লণ।

এই প্রেডাশনা স্থবণপাহাড় ছিল, বন্ধা এক্সকল্লিত .৪টি, কুশের রাক্ষণের জীবস্তাস দিয়া তাহাদের পুঞাদি করিয়া গ্রা-প্রাক্ষের রাক্ষণ করেন। ক্রিয়ান্তে ঐ রাক্ষণ-প্রেডশিলা দিগের স্থা-পর্বাত প্রেডাশিলা, রক্ষতপর্বাত রামশিলা, ক্ষ্মনালীর জ্ঞান্ধ, বালুকা তথুল হউবে, এই কহিয়া দান করেন। আর কহিলেন, কাহারও দান গ্রহণ করিও না, তোমাদিগকে চিরম্বুখী করিয়া দিলাম। বিধি-বাক্যে সকল স্ত্য হইল, আহ্মণগুণ স্থাথ কাল্যাপন করিত। কোন সময়ে<sup>ৰ</sup> ধর্মারণা বাজা সবস্থতীতীরে যজ্ঞাবন্ধ করিয়া প্রায় তৎকালের সকল অধিমনিগ্ৰ যজ্ঞাৰ্থে আনিয়া মুখাবোগ্য করিতেছেন। ব্রশ্নকলিত ১৪জন ব্রাশ্নণকে যজে আনিয়ী না দান দিতে পারিলে রুথায়জ্ঞ. এই চিস্তা সর্বাদা করেন। আহ্মণ-দিগকে অনেক ধনের লোভ দেখাইয়া পাঠান। তাঁহারা কোন-ক্রমে দান লইতে স্বীকার হইলেন না। রাজা মনে মনে এই স্থির করিলেন, গোপনে দান দিতে হইবে। আদ্ধণদিগকে যজ্ঞে অধিষ্ঠানের আবাহন করিলেন। রাহ্মণেরা রাজার যজে অধিষ্ঠানের দোটে নাই বিবেচন্ত্র, করিয়া গমন করেন। রাজা পাল্লাঘা ইত্যাদি বিধানমতে দিয়া তাম্বল দিলেন। তনাধ্যে এক এক বছমলা রত্ন প্রতি বিড়ী মধ্যে ছিল। হত্তে হত্তে দান করিয়াছেন। ব্রাহ্মণগণ কিঞ্চিৎ পরে বিড়ি খুলিয়া দেখিলেন, তাহার ভিতরে রত্ন আছাছে। দেখিয়া কোপানিত কলেবর হইয়া রাজা শ্রমার্ন্তাকে তিরস্কার করিয়া রক্ত কিরাইয়া দিতে গেলেন, রাজা এছণ করিলেন না। এই গুপ্তদানে পতিত হইয়া আহ্মণগণ আছেন, এ সংবাদ একার গোচর °হইলে ব্রাহ্মণদিগকে কহিলেন বে. ভোমাদিণকে এত দিয়াছিলাম তথাচ লাল্যা দানগ্ৰহণে আছে। যাও, আজ অবধি তোমরা সকলের নিকট দান গ্রহণ করিবে. তথাচ আশাপ্রণ হইবে না। আর স্বর্ণ-রৌপ্যের পাহাড়, ফস্তনদী পূর্ববং পাথর, জল, বালি হইল। এই অভিশাপ ক্রন্ধা করিয়া গমন করেন। তংকালে ঐ ১৪জন ব্রাহ্নণ ব্রহ্নার নিকট কৃতাঞ্জলি করিয়া গদগদভাষে ভাষিতে লাগিল, "আমাদিগকে স্থান করিয়া নিপাত করিলেন, আমাদের কি গতি হইবে ?" ব্রহ্মা বাহ্মপদিগকে কাতর দেখিয়া কহিলেন, "তোম্রা সকলের দান গ্রহণ করিবে, পতিত হইবে না।"

প্রেতশিলা—রামশিলাতে অর্ণ-রূপার চিহ্ন আছে। এই হুই
পাত্তের উপর উঠিয়া প্রান্ধ করিতে হয়। পুর্বেতে পাহাড়ে
রামশিলা

নিবাসী মদন দত্তের মাতা বৎকালে গলাধাম
প্রসমত্যারে বান, প্রেতশিলার উঠিতে না পারায় প্রান্ধ এক
বৎসর গলাতে থাকিয়া হুই প্রতের দিড়ি করিয়া তাহার প্রতি
সোপানে নামান্ধিত করিয়া পরে প্রান্ধ করেন। এই সিড়ি
করিয়া মহুবাগণের কত ক্লেশ্র শান্তি হুইয়াছে তাহা কি
কহিব। প্রশান্ত সোপান সকল। সোপানের মধাত্তের নাম
লিখিত আছে। প্রান্ন ২ ক্রোশ উদ্ধে উঠিতে
হুয়। অরপথে এক গহুবর আছে, তাহাতে এক সাধু
অব্যাচক আছেন। প্রতশিলার ইহার নীতে ব্রহ্মকুও। চতু:পার্থে

পর্কতের উপর এক বর পাথবের নিমিত। তাহাতে সকলে আনাদি করে। ঈশানে ঐ ঘণ্চিছ্ প্রস্তর। তাহার উপর পিও দান করিতে হয়। পর্কতে বৃক্ষণতাদি সকীব ফলফুলে সুশোভিত। ব্রহ্মধানির পাহাড়ে প্রায় ৩ ক্রোশ উর্ক্ষে উঠিতে হয়। সিড়ি করিয়া দিয়াছে। প্রথমে এক বার আছে তাহার পর অন্ধপথে আর এক বার। শ্লোপরে স্কাদেবের মন্দির। তাহার পশ্চিমদিকে ব্রহ্মধানি ছিল ব্যাক্তি। আপন জয় প্রীক্ষা করিবার জয়

ঐ যোনির পথ দিয়া গলিয়া বিপরীতদিকে গমন। কুজন্ম ইইলে
ঐ যোনিমুদ্রাপথে অক্রেশে গভায়াত হইত। জারজ সম্ভান কদাচ গ্রমন করিতে পারে না, অর্জপথে কন্ধ থাকিত। এক্ষণে সে পথ কন্ধ
করিয়া দিয়াছে। কারণ অনেকে অপমানিত হইয়া আয়্বাতী
হইয়াছিল।

রামগয়া.ও দীতাকুও—ফন্তনদীর পূর্ব্বণার। দীতাকুও নদী রামগয়। মধ্যে। যে স্থানে দীতাদেবী রাজা দশরথের বালির পিও দেন; ঐ স্থানে দকলকে বালির পিও দিতে হয়। রামগ্যানদীতীরে—পর্বত উপরে।

ভূতবোনিপ্রাপ্ত ইইয়া বাঁহারা মনুষোর প্রতি উপদ্রব করে,
তাহাদিগকে ভূতরোনি ইইতে মুক্ত করিতে ইইলে গয়াকুপ বে
আছে, ঐ কুপে বব, তঙ্ল, তিলচুপের তিনটি
পিণ্ড, প্রীক্লাকৃতি নারিকেল একটি, ন্তন
গামছা একখানা লইয়া ঐ মৃত বাক্তির নামগোতা উল্লেখ করিয়া,
অঞ্জলি দিবার যে মন্ত্র তাহা পাঠ করিয়া, ঐ কৃপে অঞ্জলিপ্রদান
মাত্র ভূতবোনি ইইতে মুক্ত হরী।

ধৌতপদ পর্কত উপরে। ইহার নিকট মহাদেবী আছেন।
এখানে ছাগাদি বলি প্রদান হয়। ধৌতপদের প্রাপ্তি একজন
ধৌতপদ
ক্রীলোকে পায়। তাহার কারণ ঐ ক্রী
পতিপুত্রবিহীনা, তাহার তরণপোষণের অঞ্চ উপায় নাই। এজন্ত ১৪৮৪ ঘর গয়লে বিবেচনা করিয়া দেখিলেন,
আমাদেরী কুলের ক্রীলোক হইয়া আহারের জন্ত কুকর্ম করিলে
কুলের কলক, এই জন্ত ধৌতপদে যাহা পাওয়া যায়, তাহাতে
কি ক্রীলোকের দিনপাত হয়। ভীমগয়া প্রত উপেরে। ভীম ইট্ট্ গাড়িয়া বেখানে পিও ভীমগয়। দান করিয়াছেন, ভীমের হাঁট্র চাপে পাপর কায় হইয়া করের হইয়াছে।

ব্রহ্মার বরে ফুদ্ধনদীর জল যে হগ্ম হইয়াছিল তাহার প্রমাণ

একলে এই আছে, বংসরাস্তে ভাজমাসে ইক্সবাদশীতে বিক্পদে

ত্ত্তির স্থাত হয়। ফল্পনীতে জনের স্থাত

প্রকাশ নাই—অন্তর্ভিভাবে বহিতেছে।
থনন করিলে জল উঠে। ঐ জল অতি উত্তম এবং সিগ্ত স্থাতিল। তাহাতে আর এক মাশ্রুগা আছে, বালি খননে জল
হইলে তাহাতে কৃত্র কৃত্র মংস্থাণ কেলি করে।

ধর্মারণা বোধগয়ার আঙ্কার। পাহাড় শর্মভীর নিকট।
৮ চৈত্র ক্রিয়ারত করিয়া ১৭ চৈত্র পর্যান্ত স্কাত্রে পিওদান করা হয়।

গরাপ্রাক্ষের নিয়ম—মাত্পিত্বিয়োগে যেমত নৃত্ন বন্ধ পরিধান, উত্তরীতে এক বস্ত্রে পাকা, হবিধানী হইয়া কুন্ধচর্যায় গ্রাথাছের নিয়ম কুন্ধানন-শ্যা, মৃত্তিকার সরা করিয়া দ্বন পর্যায় প্রতিকার হয়। বাহার ক্ষমতা আছে প্রতিদিবস ব্রাহ্মণভোজন যথাশক্তি করে, অক্ষম বাক্তি শেষ নিবসে অক্ষমবটমূলে অপ্বা বাদায় ব্রাহ্মণভোজন করাইয়া পিতৃকর্মের অবসর হয়।

পুরাক্ষেত্রের বিজ্মনিবরের পুরী মুধ্যে হিন্দুধর্মাবলমী ভিন্ন অন্ত ধ্যের ব্যক্তিগণ প্রবেশ করিতে পার না।•

পরার বিভিন্ন তার্ধ-মাহার্য ও পরাকৃত্য সকলে লাজীয় প্রমাণানি
 ৩৪

১৪৮৪ ঘর গরাল। তাহার মধ্যে অনেকের বংশ নাই।

হৃদ্দাধিত গ্রালের প্রার বংশ থাকে না, যে সমস্ত গ্রাল '

গ্রালের পরিচর আছে কেহ নিধনী নহে, সকলেই ধনাচা।

গ্রালদিগের ব্রদ্ধান্তনা প্রায় শৃক্ত। দৈবাৎ
কাহার আছে, কিন্তু একনিটা এই আছে,—বিষ্ণুপদে অর্পন্ন না
করিয়া কিছু গ্রহণ করে না। দিনাস্তে একবার বিষ্ণুমন্দির প্রদক্ষিণ
করিয়া পদচিক্ত দর্শনম্পর্শ করে। ভিক্কুক সকলেই। যাহার
দশহাজার টাকার অঙ্গভ্বণ অঙ্গে আছে, এক কড়া কড়ির জন্ত দেও লালারিত। জাহাদিগকে যদি কেহ কহে, ভোমরা এমত ভিক্ষা

জন্ত কিন্তন্ত ক্লেশ কর। তাহারা উত্তর করে যে, আমাদের যাহা
ধন-সম্পত্তি, এই মৃত ভিক্ষা ভিন্ন স্বন্ত উপারে হয় নাই।

১৪৮৪ ঘর গয়ালের এক কাঁছারি বিজ্ঞানিরের নাটমনিরে হয়। তাহার একজন প্রধান কর্মকারক আছে। তাহাকে সকলে নিযুক্ত করিয়াছেন। যাহণর যত যাত্রী আইদে তাহার স্থার এবং যে মত ক্রিয়া করিবে তাহার নিরূপণ লিখিয়া যাত্রী বিজ্ঞানে পিগুলান করিবার থেলিসা পীত্র পায়। যাহার যতদিন বিজ্ঞানে পিগুলানের নিয়ম আছে তাহাই হইবে। তাহার অধিক দিন প্রবেশ করিতে দেয় না। এক এক দিন এক এক গয়ালে বিজ্ঞানিরের ঘারক্রার্থে থাকেন। তাহার তাৎপর্যা এই বে, যত যাত্রী মন্দিরের ভিতরে প্রবেশ করিবে সকলের নিকট এক এক প্রাপ্রী পয়সালয়। এই মতে মহলগ পয়সা পায়।

''নাহিত্য-পরিবন্' হইতে প্রকাশিত ''তীর্থ-মঙ্গল' এছে পরা-বাত্রা-প্রনক্ষে সবিভার উদ্ভ ড ইইংছে। ১৭ চৈত্র অবধি ক্রিয়া সমাপন করিয়া সকল দেনা পাওনার হিসাব-নিকাশ করিয়া, কলিকাতা হইতে প্রসন্নকুমার যে টাকা পাঠাইয়াছিলেন তাহাতে দেনা শোধ করিয়া, গোরাটাদ কওড়ির ব্যামোহ জন্ম ঈশ্বর কওড়ি গোরাটাদকে লইয়া ১৮ চৈত্র স্বদেশ যাত্রাশকরিল। আমি শ্রীভকাশীধামের লোক অন্তেমণে রহিলাম।

১৮ই চৈত্রাবধি ২০ চৈত্র পর্যান্ত নগর ভ্রমণ এবং বাবু রমাপ্রসাদ রাষের মাতৃ অমুরোধে বিশেষতঃ থাকিতে হইল।

গ্যা সহরে বদতি সর্বজাতিতে দশ হাজার ঘর হইবে। মুদল-মানের বসতি সহরের বাহিরে। সহরের উত্তর্গাদকে সাহেবগঞ্জ. গহার তংকালীন তাহাতে চাদনী চকবাজারের জায় বাজাব। পরিচয পিতল কাঁদার জিনিসের এবং কম্বল, সভরঞ, গালিচা, লই ইত্যাদির দোকানের আলাহিদা আলাহিদা চকবন্দী। কাপড়ের দোকান সকল লাল দরজার ভিতরে বালার উপর। মনোহারী দোকান সকল পুর্কদিকে। ভূদি-শত্মের গোলা, বাশের সকল জিনিস্, পেটরা ইত্যাদি পাওয়া যায়। লাঠি অনেক বিক্র হয়। পশ্চিমদিকে লোহার জিনিস সকল। এই মত বাজারের শ্রেণীনতে স্থানে স্থানে জব্যাদি ক্রু বিক্রু হইতেছে। উত্তর পটতে জুতার দোকান, তাহার প্র পশ্চিমদিকে জিহালখানা অর্থাৎ কারাগার। ইহার প্রাচীর প্রায় ১১ হাত উচ্চ। অনেক চিরবন্দী ভীষণাকার, হস্তপদে শৃভালাবদ্ধ। তাহাতেও যে যে কর্ম জানে, তাহাকে সেই কর্ম বন্দীশালে করিতে হইতেছে। তাহার পশ্চিমে মাঞ্চারী ও कालकृष्ठेत्री, सक सानानठ, त्रिक्टिश्चेत, एउभूष्ठी माबिएट्टिइ ७ সদর আলা, সদর আমিন, মুন্সেফ ইত্যাদির কাছারি। কালেকটরি

কাছারিতে ডাক্ষর। তাহার পশ্চিমে আফিলের কুঠি—বৃহৎ বাটী। অনেক আফিল আমুদানী হয়। ক্রোর টাকার অধিক দাদন। এই আফিলের কুঠির হেডকেরাণী গুক্চরনিবাদী শ্রীকাস্ত মিত্রের পুত্র।

সবআসিষ্টেণ্ট-সার্জন অর্থাৎ ডাক্তার বাঙ্গালি বাবু এইজ্জন আছেন। অতি উত্তম ব্যক্তি, চিকিৎসক উত্তম।

ইহার পশ্চিম-উত্তর দিকে ছাউনী অর্থাৎ সৈন্ত ও সেনাপতি থাকিবার স্থান। পুলিশদারগা সহরের ভিতরে। ফটকে ফটকে চৌকীদার থাকে। গরা সহরু সহরপানাতে বেরা, মহলা মহলা ফটকবলী। চতুর্দিকে পাহাড়ে বেটিত। পাহাড়ের উপর সহর । স্থানে স্থানে বাজার আছে। সকল বাজারে পুরি, কচ্ডি, লাড়, পেড়া ইত্যাদি পকার মিষ্টার ও আর আর সকল বাজসামগ্রী পাওরা যায়। পাধরের বাসন সকলে উপরে। মহলার নীচে দোকান সকল, তাহাতে সকল পাওরা যায়—গরেশ্বী পাহাড়ের আমদানি। ১২ জোশু অস্তরে পাহাড়। ঐ পাহাড়ের পাধর ভাল।

#### ২৪ চৈত্ৰ

শ্রী প্রাধান হইতে রঘুনাপপুরনিকাসী শ্রীযুত রমাপ্রসাদ রাধের
বিমাতা এবং উাহার খাণ্ডড়ী, তৎসমভ্যারে লাকুড়পাড়ার
নসিরাম রায়, গোকুল ঘোষ আর কালিন্দী দাসী, পাঁচ ছয় অন
শ্রীলোক যাত্রী, এক পান্ধী, এক বয়লী গাড়ি, শ্রীশস্কুচন্দ্র কুওড়ি,
ব্যুলা গ্রাম
সকলে প্রাতে রওয়ানা হইয়া তিন ক্রোশ
শ্রাসিয়া য়মুনা নামে এক স্থান। তথায় তিন দোকান এবং বাগান
ত্ব

নদীর তীরে। তাহাতে শিবালয় আছে। ঐ স্থানে কাশীর গলাপুত্র নিসরামের সহিত সাক্ষাৎ হয়। প্রয়াগীরাহ্মণ গয়া হইতে সমভ্যারে আইসে। গলাপুত্রদিগের নিয়ম এই আছে, রে অপ্রে যাত্রী ধরিবে, সেই পাইবে। কিন্তু প্রতি দিবস যাত্রীর সহিত সাক্ষাৎ থাকিবে। যদি তিন দিন না দেরা হয় তাহাতে অক্ত গলাপুত্র আসিয়া ঐ যাত্রী ধরে। তাহাতে পূর্ব্ব গলাপুত্রের দাওয়া থাকে না। এজক্ত গলাপুত্রেরা প্রায় যাত্রীর সঙ্গ ছাড়ে না। কাশীর কেশেল অর্থাৎ বাড়ীওয়ালা তাহারাও সমভ্যারে থাকে। ঐ যম্নাতে মানাদি করিয়া তথা হইতে ৪ ক্রোশ পঞ্চাননপুর। তথার বাজার এবং পথিক্দিগের থাকিবার জক্ত দোকান্দর আছে। তথার আহারাদি করিয়া পরে ৫ ক্রোশ গো। তথার অবস্থিতি হয়।

#### २৫ हिख

গো হইতে ১০ জোশ পুনপুনা। • ত স্থানে সরাই, বসত, পুনপুনা বাজার ইত্যাদি আছে। তথার স্থিতি।

#### ২৬ চৈত্ৰ

পুনপুনা হইতে ৫ জোশ দাউ নগর, পরে ৫ জোশ পড়োড়ি। গুই স্থানেই সরাই, বসত, বাজার, খাজজবাদি পাওরা যায়। পথিকগণের থাকিবার স্থান

আছে। পড়োড়িতে স্থিতি।

পরা-বাংগাল্যে ও রালগৃহ-বাংগাল্যে— 'পুব:পুনা' নগধের অঞ্চুত্র প্রধান
 তীর্থ বলিয়া নিমিট্ট হইয়াছে—

''कोक्टोन् त्रज्ञ भूता भूताः भूतः बावत्रकः वनम् हावनकाव्यवादिः भूताः नती भूताः भूतःभूता ॥" (त्रवा-वाकाका ०।१०)

## ২৭ চৈত্ৰ

পড়োড় হইতে আকড়ি ৫ ক্রোশ। তথা হইতে সকলের বাস।
শোণের পাথার প্রায় দেড় ক্রোশ। জল অতি উত্তম। ঐ নদীতে
লানাদি করিরা ০ ক্রোশ বাইরা সরসরামা ৫ ক্রেমশ। পরাপ সহর।
বাদসাহী সরাই এবং এক উত্তম পুদ্ধরণী
আছে। তাহার মধ্যস্থলে এক বাড়ী আছে।
সহরে নানা জাতির বসতি। এই স্থানে ডাকবর এবং মুন্সেফি
রেজিপ্রারী কাছারি আছে। এখানে ছলিচা, গালিচা, সতরক্ষের
জোলহা অর্থাৎ তাঁতি অনেকু জ্ব্যাদি বারে বারে বিক্রম জ্ব্রু
ক্রিতেছে। এই স্থানে স্থিত। এই স্থানে ডাকে চিঠি দেওরা
হয়। সরসর্জি হইতে ৫ ক্রোশ শিকুরাগর সরাই। দোকান বাজার
বসতি আছে। এই স্থানে নান করিয়া পরে জাহানাবাদ ৫ ক্রোশ।
তথার ভাল সরাই ও বাজার বস্তুতি আছে। ঐ স্থানে স্থিতি হয়।
১৮ চৈত্রে

আইনাবাদ হইতে ও ক্রেকা মোহনির। এই স্থানে এক উত্তম প্রকরণী এবং নিবালয় ঝাধাবাটের উপরে আছে। চতুর্দিকে ঘাট, চতুপার্শে রাজ্ঞান ক্রিছের বুসতি, বৃহৎগ্রাম, প্রকরণীর প্রকাদেক রাজ্ঞার উপরে লোহার নানাজাতি স্থব্যাদির বিক্রমের দোকান এবং মনোহারী দোকান সকল চকের স্থায় বৈদে।

† প্রাচীন 'সংস্রাহাম' পরে 'সরস্বাম্' এবং একবে 'সাসেহামু' নামে প্রসিদ্ধ।' বৌদ্ধপ্রভাবকালে এখানে সহত্র সজ্বারাম ছিল, ভাহা হইতে 'সহত্রারাম' নাম হয়। এখানে মৌগ্সেল্লাট্ অলোকের অভুলাস্বলিপি পাওয়া প্রাহে । তাহার পূর্বাদিকে সরাই এবং বাজার। তাহার উত্তর পূর্বা দক্ষিণ তিন দিকে উলের এবং স্থতার ছলিচা আসন ইত্যাদি বুনিবার কারিকরদিগের ঘর। এখানে উত্তম উত্তম ক্রবা তৈয়ারি হয়। চারি টাকা গলের গালিচা বুনিতেছে, —ফরমাইশ হইলে যোল টাকা গজ পর্যান্ত বুনিবার নম্না আছে। এই হলে এক স্থতার গালিচা শস্ত্ ক ওড়ি পরিদ করে। মোহনপুরী খাসা এইখানে হইত। এই স্থানে স্থিতি হয়।

#### ২৯ চৈত্ৰ

মোহনিয়া হইতে ছয় ক্রোশ কর্মনাশা নদী। এই নদীর জ্ঞানপর্শ করিতে শাস্ত্রে নিষেধ আছে।

শুলালৈ সকল কর্মনাশ হয়। পূর্বের নদীতে পোল ছিল না। তথাকার ইতর জাতিতে পার করিয়া দিত। তাহাতে মহ্যাগণ ক্লেশ পাইত। এক্ষণে কোম্পানি বাহাত্বর পোল করিয়া দিয়াছে। বাজার দেকানদার আছে। অনেক বসতি, উত্তম হান। তথা হইতে জগদীশের সরাই চারি ক্রোশ। এই হানে হিতি হয়।

#### ৩০ চৈত্ৰ

জগদীশের সরাই হইতে ছলাইপুর আট ক্রোল। ছলাইপুরে

্ ভবিষ্যে ব্ৰহ্ণণঙে লিখিত আছে—এই ন্দীতে লান ক্রিলে গলালানের সমান পুণ্য হয়। বিশেষত: লোক-মুক্তি-ছেড়ুইু কর্মনালা গলায় আসিয়া মিশিয়াছে।

> "ভাগীরখ্যা সমং তত্র কর্মনাশা নদী দিলাই। সংগতিং পুণ্যোলাং আতা লোকভারণহেতবে হ" (৫৮/৪০)

সরাই এবং বাজার উত্তম আছে। তথার থান্ত দ্রব্যাদি প্রায় সকল পাওয়া যায়। এই স্থানে থাকা হয়।

#### छर्च ८७

হুলাইপুর হইতে বারাণদী অর্থাৎ কাশী তিন জোশ। বেলা এক প্রহরের সময়ে গলার পূর্ব্বপারে পছছা হয়। পরে দকল লোক আদিতে এবং গাড়ি পছছিতে দেড় প্রহর বেলা অভীত হয়। গলার পূর্ব্বপার কাশীপুরী। দেখিতে কিবা শোভা হয় তাহা বর্ণনের বাহির। স্থবর্ণময় যে কাশীপুরীর বর্ণনা আছে তাহার সংশম কি ? অতি মনোরম স্থান। দক্ষিণে অসি, উত্তরে বরুণা। ইহার মধ্যস্থলে কাশী,

#### বামনপুরাণে লিখিত আছে—

"বোজনা একাওকে পুন্ধে মুখংশপ্রভবেহিবারঃ। প্রমাপে বসতে নিভাং বোগাশারীতি বিক্রতঃ । চরণাক্ষিণাভক্ত বিনিগ্রা সরিষ্ঠা । বিজ্ঞতা বর্মকেতার সর্বপাপহয় ওভা । বর্মার ছিতীয়া চ ক্ষমিনেতার বিক্রতা । তে উতে চ ক্ষরিক্রে কোলপুলে বত্বতুঃ । তর্মার্য ত্যা বুলেভংকেকঃ বোগশাহিনঃ। কৈলোকাপ্রবর তীর্ষ সর্বপাপনোচনম্ । ন তাদৃশং হি প্রবনে ভ্যাং নীচ রমাতলে। ত্যাতি নসরী পুণা খ্যাতা বারাণনী ওভা ।"

( अत्र व्यशाद, २८---२৮ क्रिक )

এই পৰিত্ৰ অক্ষাণ্ড মধ্যে আহাপে আমার (বিকুর) কংশসভূত বে অব্যয়-পূক্ষ নিষ্ঠ্য বাস করেন, ওাহাঁরই ৭কিব চরণ হইতে সর্বপাণহ্রা মঙ্গলগারিনী বরণা এবং ওাহারই বাম চরণ হইতে অসি নামে বিখ্যাতা থিতীয়া বলী বিনিগত ছইলাছে। উভর নদীই লোক-মধ্যে পুজনীয়া দি এই উভরের মধায়লে আনন্দ-কানন, গৌরীপীঠ, মহাশ্রশান, উত্তরবাহিনী গলা, চক্রতীর্থ, মণিকণিকা। গলার পশ্চিমকুলে কাশী। এই কাশীধামের অনেক পারঘাট আছে। তাহার মধ্যে দশাখমেধের শীতলাঘাটে পার হইয়া ইটালিনিবাসী ঐতারাচাঁদ দের বাটী থালেশপুরাতে আছে. অতি উত্তম বাটা।' শালিখা-নিবাসী স্থামাচরণ বাড় য্যের বাটা. বিনি অনশনত্রতে কাশীধামে সঞ্জানে প্রাণত্যাগ করেন, তাঁচার এই বাটী। এই বাটীতে সকলে থাকা হইল। ঐ দিবস তীর্থোপবাস করিয়া সন্ধ্যাগতে শ্রীভবিশেশ্বরনাথের দর্শনাদি, রাত্রি চারিদণ্ড বিধেবরের আরডিদর্শন। আর্রিড চমৎকার। পাঁচজনা ব্রাহ্মণ মুইদিক বেষ্টিত করিয়া বৈদে। পূর্বাদিকের ষ্টুরে যে আহ্মণ বৈদেন তেঁহ সর্বামায়। তাঁহারা পুরুষামুক্রমে আরতির পাণ্ডান প্রথমে হয়ে অভিষেক। এক পোয়া হগ্ধ অভিষেকের ঘটাতে থাকে। ঐ ঘটার নীচে অতি কৃষ্ণ ছিন্ত আছে, তাহা ছারা ঐতহা বিশেশরের মন্তকে ধারা পড়ে। পরে একসের গঙ্গাঞ্জ ঐকপে ধারা দেওয়া হয়। তদত্তে ঘত এবং চিনি দিয়া মৰ্দন কবিয়া ধারা দেওয়া হয়। ভাহার পর চন্দ্রন লেপন করিয়া সর্বাঙ্গে সর্পাক্ততি করে। মন্তকে রক্তচন্দ্রন আতপ তণুল, হর্লা, বিবদলে অর্ঘ্য দিয়া নানাপুলের মালা

বোগশারী মহাদেবের সর্ব্বপাণনোচন ত্রিলোকের মধ্যে বে সর্ব্বশ্রেঠ থীর্থক্তের জাছে, বর্গে, মর্প্তের বা রসাক্তনে সেরপ স্থান আর নাই, ভাহারই মধ্যে পুণ্যএবা ও ভবরী বারাণনী নামে বিখ্যাতা নগরী আছে। হওরা দেখা যাইতেছে,
বরণা ও অসি এই নদীয়ারের মধ্যে অবস্থিত বলিয়া কাশীর 'বারাণনী' নাম
হুইরাছে। বিশ্বকোষ গর্ব ভাগ ''কাশী'শান্দে ও সাহি চ্যু-পরিবর্গ ইউতে প্রকাশিত
''কাশীপবিক্রমা'' নামক প্রস্থেপবিক্রত বিষয়া প্রস্থা।

দিরা ভূষিত করিয়া আরতি আরস্ত হয়। আরতি দেখিতে চমৎকার বোধ হয়। গাঁচজন ব্রাহ্মণে একেবারে পাঁচ পঞ্চপ্রদীপ করিয়া দিরা, ডম্বের বাস্থ এবং ঘণ্টা, ঘড়ি, কাঁসর একতালে বাজাইয়া শস্তু শস্তু এই শব্দে প্রথম আরতি আরস্ত করিয়া পরে স্ততিগাঠপুর্বক আরতি হয়। চতুম্পার্শে সকলে দাগুইয়া ঐ সকল বাস্থধনি, স্ততিগাঠ, চামর, মোরছোল, আড়ানি ইত্যাদির ব্যক্ষনে কি চমৎকার দেখিতে হয়, তাহা কি কহিব! যে দেখিয়াছে সেই জানিতে পারিবে। এই দিবদ তীর্থোপ্রাদ করিয়া থাকা হইল।

## সন ১২৬১ দাল ১ বৈশাপ

প্রাতে মণিক•িকার স্থান তর্ম্বণুদি সমাপন করিয়া বিশেষর-অন্তর্পুদা দর্শনাদি করিয়া তীর্থশ্রা করিয়া ত্রাহ্মণ সংবা কুমারী-দিগকে ভোজনাদি করান হয়।

#### ২ বৈশাথ

প্রাতে স্থানতর্পণাদ্ধি সমাপুন করিয়া দক্ষিণমানসে যাত্রার প্রক্ষান্ত ইয়া প্রথম কেদারঘাটে স্থানান্তর কেদারনাথ দর্শন করিয়া ক্রমে দেবদেবী, তীর্থগণের দর্শন স্পর্শন, পূজাদি করিতে করিতে তিলভাগুখারের দর্শনে দক্ষিণমানস সমাপন। পচিশস্থানে যাইতে হয়। দর্শন পূজাদি আছে। হই প্রহরের কম যাত্রা হয় না।

#### ৩ বৈশাখ

প্রায়ুত সানতর্পণাধি সমাপন করিয়া পশ্চিমমানদে যাঁতায় প্রবৃত্ত হইয়া প্রথমে পাতালেখর দর্শন করিয়া শৃত্যকের মহাদেব দর্শন সমাপন করিয়া বাইশ ছানে দেবদৈবী তীর্থস্থানে দর্শন শ্পর্শন লানপুজাদি কর্ম সমাপন করিয়া বেলা দেড় প্রছর গতে

নাদার আসিয়া আছারাদির উল্ফোগ।

#### ৪ বৈশাথ

প্রতে মণিকর্ণিকাতে স্নানতর্পণাদি করিয়া দক্ষিণ্মানদের 
যাত্রাতে গমন। প্রথমে মণিক্বিকেশ্বর দর্শন করিয়া জ্ঞানবাপী 
আদিয়া সমাপন। দক্ষিণমানদে দেবদেবী তীর্থতে ৬২ স্থানে 
দর্শন স্পর্শন পূজা ইত্যাদি করিয়া বেলা চারিদণ্ড থাকিতে 
বাসায় আদিয়া জ্বল্যোগ করিয়া আহারাদির উল্পোগ। এ যাত্রা 
একদিনে সমাপন ভাল হয় না। হই দিবদ হইলে সমগ্র 
যাত্রা করা হয়্। দক্ষিণ প্রায় পাচ ক্রোণ ভ্রমণ।

#### ৫ বৈশাখ

প্রাতে স্থানতর্পণাদি সমাপন করিয়া চৃত্তিগণেশ, বিশেশর, অন্নপূর্ণা, কেদার, চ্র্পাদেবী, শীতলাম্রদ্বীর বোড়শোপচারে পৃঞ্জাদি দেওয়া।

#### ৬ বৈশাথ

প্রাতে পঞ্চীর্থে লানাদি করিয়া গমন। প্রথমে অসি-সর্ক্রিলান, লেবে মণিকর্ণিকাতে লান করিলে সমাপন। পাঁচন্থানে গলাতে লান করিতে হয়। অসি, দশাব্যেধ, বরুণা, পঞ্গলা, মণিকর্ণিকা এই পাঁচ হানে লান তর্পণ; হানে হানে করিয়া বাসায় আসিয়া বাল্ধণতোজন ইত্যাদি কর্ম করিয়া পরে আহার করা হয়। সক্যাগতে বিখেষরের আরতি দশন করিয়া বাসায় গুমন।

#### ৭ বৈশাখ

কাশীধাম ভ্রমণ। •

## ৮ বৈশাখ

कामीश्रुतीत (मवरमवी मर्गन।

এই মত >>ই বৈশাধ প্রয়ন্ত কানীধামে দুর্শন স্পর্শন বাত্রাদি
নগরভ্রমণ ইত্যাদি কর্ম সকল। আর কিছুদিন কানীধামে
থাকিবার মানস ছিল। অতিশর রোজের প্রবলতা, তাহাতে
গ্রীমর্দ্ধি হইরা বসস্ত ওলাউঠা ছইরোগে বহু মসুষ্য কানীপ্রাপ্তি
হইল। তজ্জ্ঞ তারাচাঁদ দে কানীধামে থাকিতে দিলেন না।

সন ১২৬১ সালের ১২ বৈশাথ আহার করিয়া থালেশপুরার তারাচাদ্দের বাটা হইতে বৈলা একপ্রহর থাকিতে কাশীধামের অন্নপূর্ণা, বিশ্বেষর দুর্শন করিয়া বাবু রমাপ্রসাদ রারের বিমাতা, ও তাঁহার সমভ্যারী সকলে এবং আমি ও তিতু বান্দী আর আমার জামাতার কনিষ্ঠ লাতা প্রীমহেক্রনাথ মিত্র (দেশ হইতে মাতা ও লাতানিগকে না কহিয়া বায় ৷) তাহাকে সমভ্যারে করিয়া প্রয়াগতীর্থ হইয়া শ্রীকৃলাবন বাত্রা হইল ৷ এই দ্বিস কাশী হইতে ৪ জোল রাজার তলাও মেড্রমাডিহি ৷ রাজার তলাও এক উক্তম পুছরিণী আছে ৷ তাহার পশ্চিম-মেড্রাডিহি দিকে দোকান ৷ থাকিবার উত্তম স্থান এবং খাছস্রব্য পাওয়া বায় ৷ এই স্থানে থাকা হইল ৷

#### ১৩ বৈশাখ

মেছু রাডিহি হইতে ৫ জোশ তামেচাবাদ ! ৩থানে সরাই

শিলীবর আপৃতামাস এই ছানে নগর পত্তন ক্রেন, তাহার নামাত্সারে
 এই রান তামাসাবাদ বা তামেসাবাদ হইরাছে:

এবং বাজার আছে। অনেক মহুব্যের বসতি। তথা হইতে

সহারাজগঞ্জ ৫ জোশ। এথানে সরাই

বাজার আছে। এইপ্থানে স্থিতি।

#### ১৪ বৈশাথ

মহারাজগঞ্জ হইতে গোপীগঞ্জ ৫ ফ্রোন, উত্তম স্থান আনেক গোপীগঞ্জ ভদ্র ভদ্র লোকের বসতি আছে। বাজারে ধাস্থানুবা সকল পাওয়া যায় এ থাকিবার স্থান ভাল আছে। এই স্থানে স্থিতি।

# ১৫ বৈশাখু

গোপীগঞ্জ হইতে বেথি খেঁকোণ। পরে হাড়িয়া ৫ কোণ।
বেৰি সরাই ও বাজার আহাছে। এই স্থানে স্থিতি
হয়।

## ১৬ বৈশাথ

হাড়িরা হইতে হসুমানগঞ্জ ২ ক্রোঁশ। তথানে বান্ধার, গোলাগঞ্জ, সরাই আছে। অনেক ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিরের
বাস। পরে ৮ ক্রোশ ঘাইরা ঝুলীগ্রাম। বসতি
এবং দোকান সকল আছে। এই বান্ধারে থাকা হইল।

#### ১৭ বৈশাপ

কুনী হইতে নৌকার পূলে গন্ধা পার হইরা ১ ক্রোদ্ধ বাইরা বিধারাক বেণীঘাট প্রয়াগভীর্ব। ঘাটের নিকট পদাভীরে এক

পজা, বৰুনাও সর্বতী।

দোকানে থাকা হইল। চড়াতে যে সকল ৰাত্ৰী থাকিবার ,
প্রশ্নাপ ক্রায়। প্রয়াগীদিগের সৈন্ত আছে। প্রয়াগী
সকল অতিশয় ধনগ্রাহী, নির্দিয়-নিষ্ঠুর। প্রথম বাত্রী আনিবার
সময় অতি শিষ্ট। আপন ছর্গে প্রেরেশ করাইতে পারিলে
প্রয়াগীর ছুর্ববহার
দ্বা মাত্র নাই। প্রশ্নাগতীর্থে উপস্থিত হইয়া
বিধিপুর্ব্ধক মুগুন ও উপবাস হইল।

# ১৮ বৈশাখ

ত্রিধারাতে প্রাতঃসান তর্পণাদি করিয়া তীর্থশ্রীক, ব্রাহ্মণ-ত্রিধারা ভৌজন, প্রীয়াগ-মাহাত্ম শ্রবণ এই সকল কর্মা

#### ১৯ বৈশাপ

প্রাতে বিধারার দ্বান, পঞ্জোনী পরিক্রম, বেণীমাধব দর্শন,
ক্রোর ভিতরে অক্রবট দর্শন, সরস্বতীর গুপ্তভাব দর্শন।
ক্রোর প্রস্তরনির্থিত। অতি উত্তম কেলা, সরস্বতীর উপরে
প্রস্নার পশ্চিম ধারে। কেলার মধ্যে উত্তম
বাড়ীঘর এবং বড় বড় কামান ও গোলাগুলি বন্দুক ভরবারিতে স্পোভিত আছে। কেলার ১ ক্রোশ
অস্তরে পদাতিকগণের ছাউনি। সহরের ভিতরে বাজার স্ক্রল।
কিটগলে কাছারি, ডাক্রারধানা, ডাক্রর ইত্যাদি। কেলার
ক্রাহিত্য-পরিবর্ হইতে প্রকাশিত তীর্ষ্মল্য গ্রন্থ প্রয়াগবাত্তা-প্রারম্পর্কার প্রসাধিত ব্যাদিত ব্যাদিত ব্যাদিত প্রস্কার বাত্তার বাত্তার প্রসাধ

উত্তরে টিমার আফিস। এই প্রয়াগকে এলাহাবাদ কহে। অতি উত্তম সহর, অনেক ধনাতা মহাজন আছে। এখানকার জলবাতাস অতি উত্তম, শরীর অফ্নেল থাকে, সকল মহুধা বলিষ্ঠ; আহাগ্য উত্তম পরিপাক পাঁয়। সহরে ৫০ হাজার ঘরের বসতি। প্রয়াগী ৫০০ শত ঘর সর্কবি আছে। মহলে মহলে এক এক বাজার আছে। তাহাতে উত্তম উত্তম ধাছ্যস্রবাদি পাওয়া বার।

# ২০ বৈশাথ

প্রার্থীদিগকে বিদায় করিয়া বাবু রমাপ্রসাদ রায়ের বিমাতা প্রাভৃতি অদেশ বাত্রা করিলেন। আমি ও তিতুবাগাদী আর মহেন্দ্র নাথ মিত্র তিনজনে প্রবৃদ্ধাবন বাত্রা করিয়া সহরের অস্তে যে পাকা সরাই আছে এবং অনেক দোকান আছে এ স্থানে এ দিবস স্থিতি হইল।

#### ২১ বৈশাপ

প্রদাগ হইতে ৮ জোশ হুর্গাগঞ্জ, ২ জোশ ইমামগঞ্জ। পথিকহুর্গাগঞ্জ গণের থাকিবার স্থাই ও বাজার আছে।

>> বৈশাথ

ইমামগঞ্জ হইতে গোঁলামীপুর ৮ ক্রোশ, পরে ভ্ধরের সরাই; ২ ক্রোশ সরাই,—বাজার বাগান আহাছে। ২৩ বৈশাথ

ভূিধরের সরাই হইতে চৌধুরীর সরাই ১০ ক্রোশ।

## ২৪ বৈশাথ

চৌধুরীর সরাই হইতে ১২ জোশ কুঙরপুর, পথে বৃহৎ বৃহৎ ৪৮ আত্রবাগান আছে। তাহাতে দিবাতে আহারাদি করিরা রাজে সরাইতে থাকা হয়।

#### ২৫ বৈশাথ

কুওঁরপুর হইতে থাজুয়া ৫ ক্রোশ। এথানে অনেক লোকের বসতি। সরাই বাজার মধ্যে। এক বাগানে আহার হয়।

# ২৬ বৈশাখ

ধাজুয়া হইতে ৮ কোশ কানপুর। এথানে সরকার বাহাছরের পদাতিকগণের শিকার স্থান। ছাউনিতে জনেক বারিক আছে,

ছুর্গ নির্মিত নাই। মাঠের মধ্যে গোরাবারিক।
কানপুর
দেশীর পদাতিকগণের ছাউনি। অনেক সাহেব
কর্ম্মোপলকে আছেন। গঙ্গার নিকটে সহর। অনেক বাজার
গোলাগঞ্জাদি আছে। এথানে মেগাজিন যে আছে, তাহাতে
যুক্তের আয়োজন গোলাগুলি বারুদ যথেষ্ট আছে। প্রহরিগণ
অতি সত্ত্র্করপে পাহারা দিতেছে। অগ্নি লইরা এক ক্রোশ অন্তর
দিল্লা কেই যাইতে পারে না।

বাদসাহদিগের সময়ের বিড়বড় পোক্তা সরাই স্থানে স্থানে আছে। উত্তম উত্তম ঘর। পথিকগণের সরাই ভিন্ন থাকিবার কান নাই।

বে সমস্ত চাকুরে বাঙ্গালীরা আছেন, তাঁহাদের বাসা ছাউনির উত্তরদিকে। প্রায় ৩০০ শত বাঙ্গালী আছেন। অনুনকে স্ত্রীপুত্র-পরিবার সমেত আছেন। এক কালীবাড়ী আছে, তাহাতে অনেক অভ্যাগতের স্থান হয়।

কানপুরে প্যারেভের মাঠ অধিক প্রানন্ত। চাঁদমারি সর্ব্বপশ্চিমে

আছে। দক্ষিণে পদাতিকদিগের ছাউনি। নৃতন পদাতিক সকল অশিক্ষিত হইতেছে।

হরিছার হইতে কড়কি দিরা গলা যেথানে আসিরাছে, ঐ নহর কানপুরে গলাতে মিশিয়াছে।

জজ, মাজিট্রেট, কালেক্টর ইত্যাদি মায় দেওয়ানি ফৌজনারির কাছারি সকল আছে। লালকুরতির বালারে উত্তম উত্তম জিনিদ দকল পাওয়া যায়।

কানপুরের উত্তরপশ্চিম ৮ ক্রোশ বিঠোর। ইহা বালীকি মুনির তপোবন, দীতার বনবাদস্থান, লবকুশের জন্মভূমি। একং

পুণা সেতারার বাজীবাও মহারাটের বাড়ী
বিঠ্র\*

এবং কিছু পদাতিক আছে। তাঁহার দত্তকপুত্রের পুত্র নানাসাহেব। নামে একবাক্তি ঐ পদাতিক লইয়া ঐ
বাজীবাও সাহেবের কক্তা প্রভৃতি লইয়া, সদাত্রত ইত্যাদি দিয়া,
ধর্মাকর্মাদি করিতেছেন। অনেক মহারাটের ভরণপোষণ হয়।

বিঠোর হইতে কান্তকুজ ৬ ক্রোশ। ঐ স্থানে কনৌজবান্ধণ-

বিটোর—(বিঠুর বা বিটোর) যুক্ত এদেশির কাপপুর জেলার একটি
নগর। কাপপুর সহর হইতে ১২ মাইল উত্তরপশ্চিমে গলার বান্ধিপ্র
অবস্থিত। এই ছানের ব্রহ্মঘাট অতি প্রাচীন তীর্থ। কার্ত্তিক ওরপূর্বিমার
মেলা উপলক্ষে বহুতর হাত্রীর সমাগম হইরা থাকে। পেব পেশবা বান্ধীরাও
নির্পাদিত হইরা জীবনের শেবাংশ এই ছানে অতিবাহিত করিয়াছিলেন। তাহার
দত্তকপুত্র নানাসাহেব এই বিঠুরে বাদ করিতেন।

† <sub>বা</sub>নানাগহেৰ—খুৰুপন্থ নানাগাহেব ! দেব গেশবা বালীরাওর দত্ত কপুত্র। ইনি দিপাহী-বিল্লোহের সময় লক্ষতম প্রধান নেতৃত্ব গ্রহণ করিছা ইংগ্লি-বিক্লছে লক্ষধারণ করিয়াছিলেন। বিভূত বিৰমণ 'দিশাছীবিজ্লোহ' প্রসংজ লিখিত হবল। দিগের বাস। গলার তীরে প্রাতন নগর সহর তৃল্য। এই
কাল্লকুল হইতে পঞ্জন ব্রাহ্মণ ও কাল্লকু
গৌড়রাজ্যে আইদেন। তাহাতে আমরাও
আছি। অনেক পণ্ডিত সর্কাগ্রে স্থানিকিত আছে। বেদাধ্যায়ী
সকলে প্রাচীন গ্রন্থে বিধান্। অনেক দেবালয় নগর মধ্যে
স্থানে স্থানে প্রকাশের স্থাপিত আছে। শিবমন্দির অনেক
স্থানে, অনেক অটালিকা এবং বৃহৎ বৃহৎ বাটী ইটপাধ্রেনির্ম্মিত
ছিল, তাহার চিহ্নবাধ হয়।

কাল্তকুল — (কনৌল) বুজ প্রদেশের ফরকাবাব জেলার অল্প স্থান
সহর। ইহা কালীনতার পশ্চিমকুলে এবুং গলা ও কালীনদার সলমভান হইতে
বাক লোল দুরে অবভিত। পুলে এই নীপরের পাধ দিয়া পদা প্রাহিত হইত।
ইহা অতি প্রাচীন নগর। কনোলের অল্পান্ত নাম,—

''কান্যুক্তং-মহোদয়ং কল্পাকুকং গাধিপুরং। কৌশং কুশত্লক তংঃ' (হেমচল্রা)

রাষ্ট্রশে লিখিত আছে, কুশেষ পুত্র কুণনাভ এই পুর হাগন করেন। করিছকুজের নামের উংপত্তি সবদ্ধে নানা কিবদন্তা ও মত প্রচলিত আছে। পাল্ডাতা প্রচিন ভৌগোলিক টলেরি এই হান Kanogiza ও পাল্ডাতা প্রতিহাদিক মিনি Calinipaxa নামে উল্লেখ করিয়াছেন। চীনপরিবালক বুমন্চুরং খৃতীর ৭ম শতাকে এই হানে বছচর হিল্পেবমন্দির এবং বৌদ্ধ চৈত্য ও সজ্জারাম দর্শন করিয়াছিলেন। শিলাদিত্য হ্বমন্ত্রন এই হানেই রাজত্ব করিতেন। ওৎপরে ক্রমান্তর আয়ুর্, গুর্জর ও গহড়বালবংশ রাজত্ব করেন। সহড্বালবংশীয় শেব নুপতি জয়চানের হত্ত ছইতে মুসলমানের হত্তে হায়। ১০৪১ খং অক্ষে কনোলনগরে শেরশাহের সহিত বুদ্ধে প্রাজিত হইলা স্মাট্ছমারুন ভারত হাড়িল।পারস্যুল্পে প্রাজিত হইলা স্মাট্ছমারুন ভারত হাড়িল।পারস্যুল্পে প্রাজিত হইলা স্মাট্ছমারুন

ইহার পর গঙ্গা পার হইয়া লক্ষোসহরের নবাবের অধিকার। লক্ষোসহর অতি উত্তম স্থান, অনেক ধনাতা ব্যক্তি আছেন,

এদেশের সকল মহুধ্য মহাবল পরাক্রমশানী,
বড় উগ্রস্তাব, অলকথার বিবাদ হইলেও
তরবারি চলে। সরকার কোম্পানী বাহাছ্রের তরফ একজ্ঞন
রেসিডেন্ট, ছই দল সৈত্ত আছে।

নবাবের রাজ্য অধিকদ্র নহে, তথা চ ৫২ রাজার সিংহাসন।
সকলেরই সৈশুসমাবেশ আছে। এক হাজারের কম বন্দুকধারী
কাহারও সৈশুনহে। দশ হাজার পর্যান্ত অনেকের আছে। এই
সকল অন্ত্রধারী অন্থ রাজ্যের মনুব্য'নহে। লক্ষোরাজ্যে অনেক
ব্রাহ্মণ ক্রিরের বাস।

সহর সহরপানার • বেষ্টিও আছে। সহর প্রবেশ সম্প্রে বারপালগণ নাম ধাম জিজ্ঞাসা করিয়া অল্পধারী ভিন্ন-রাজ্ঞাবাসী ব্যক্তিদিগকে প্রবেশ করিতে দের না। নবাবসাহেবের অত্মনতি ভিন্ন কেহ প্রবেশ হইতে পারে না। গাড়ী ঘোড়া ইত্যাদি বিদেশী পথে গমন করিলে ধুলটি বলিষা পর্যা, বাজ্জিবিশেষে নম্নথানি (৩) মন্থ্যের গমনের হাত্রেরলানি বাব্দ এই মত স্থানে স্থানে দিতে হয়। সহজে না দিলে বলপূর্বাক লয়, তাহার বিচার নাই। অরাজকের ক্রায় রাজ্য। যাহার বল আছে, তাহারই প্রভুত্ত, হুর্বালের বল কেহ নাই। নবাবের বাটা হুর্গমধ্যে। অতি উত্তম বাটা, সপ্রমহল।

গোমতী নদীর তারে লক্ষো। গোমতী গলার এক, শাখা, সরষ্ নদীর সহিত মিলন আছে।

मध्य-भाना—य नगत्वव ठाडिमिक् छेभवुङ आठीव विशे (पत्रो ।

48

লক্ষোসহরে মচ্ছিভবন নামে এক বৃহৎ বাড়ী আছে। তাহার ভিতরে ফল-ফুলের বাগান এবং পুছরিণী আর থাকিবার জ্ঞার ভাল ভাল বর আছে। নবাবদিগের গোরস্থান এবং কোষাগার ইহার মৃত্তিকার ভিতরে। মৃত নবাবদিগের ধন-সম্পত্তি গজগির∗ করিয়া রাখে। অনেক প্রহরীগণ নিযুক্ত আছে। চতুপার্যে কামান वमान आहে। य विनिशांत्रमा आहि, नानमीचित्र छेखदा। যেমত বারিক ইংরাজী ব্যারাক (Barrack), দৈভগণের বাদ স্থান আছে, সেই মত বারিক কোথায়ও নাই। এস্থানে নবাবের সেনাপতিগণ থাকে। নবাবের ঐশ্বর্যা কত তাহার সংখ্যা অবলন পাকিয়াক হা যায় না। একজন বাকালি তাহার নাম বিশ্বনাথ কর্মকার, জ্বুরিকর্মে নিযুক্ত আছে। <sup>®</sup>তাহার মুধে -ভিনিলান, প্রতিবংদর ক্রোর টীকার জহরৎ ক্রয় করা হয়। সাত আট তোলা করিয়া জহরের বাব্বু পদক আছে। দশহাব্রার টাকা মুক্তার জোড়া—এমত মুক্তার পাঁচনরি সাতনরি মালা বেগমদিগের গলায় আছে। জুতার উপর হীরা দেওয়া।

২১ বৈশাধ অবঞ্চি জোট পর্যান্ত লক্ষ্ণোসহর,—অবোধ্যা‡ অমীণ করিয়া, অবোধ্যাতে শরষুপার হই। অবোধ্যায় শ্রীরাম-

नक्रनिबि-हैं वा भाषत्र निहा नीचा।

লক্ষোত্র ইংরাজদিপের "রেসিডেকী"। ইং। সাধারণতঃ বেলিগারদ নামে অভিহিত হয়। সিপাধী-বিজোহের সময় এই ছানে অবোধ্যার চিক ক্মিননার সূর্বেন্দ্রী লরেকের বিজোধী-হতে মৃত্যু হয়।

় অংবাধ্যা—পূর্ব্যশীর রাজস্থের আচীন রাজধানী। ক্ষিত আছে এখানকার রাজায়িগকে যুদ্ধে কেহ পরাত করিতে পারিত না, তাই তাঁহাক্ষিরের রাজধানী ক্ষোধানাবে প্রিচিত হইলাছে। অ্যোধার মধ্যে রাষ-

চক্ষের রাজধানী বনজঙ্গল হইয়াছে। মধ্যে মধ্যে বসতি এবং
আবোধা।

মেলা হয়। রামাৎ-বৈক্ষাব আছে। শীরামনবমীতে
মেলা হয়। রামাৎ-বৈক্ষাব আছে। পাঁচ
ছর হাজার বৈক্ষার শীরামের জন্মভূমি এবং হস্থমান গড়িতে
আছে, সর্বাণ জন্ধন গাধনে উন্মন্ত। এইখানে হস্থমান বৃহৎ
বৃহৎ আছে, কিন্তু কাহার হিংসা করে না, ববং স্তবন্ততি
করিলে পথিকের পথ দেখাইবার জন্ত অবো অবো গমন
করে। যে স্থানে রামচন্তের জন্মভূমি, ঐ লারে এক বৃহৎ
হস্থমান আছে, তাহাকে কিছু থাস্তজ্বা না দিলে পথ ছাড়িলা দের
না। যে স্থানে রাজিসিংহাসন ছিল, উচ্চ দ্বীপের স্তান্ন হইলা আছে।
রাজধানী প্রান্ধ দিল ক্রাণ পর্যান্ত ছিল। বাড়ী দরের চিন্তু পাথর
এবং ইট সকল স্থানে স্থানে আছে। এই অবোধ্যাপুরী স্থাবংশীর
রাজাদিগের প্রথমবাধি রাজধানী।

৬ জৈাঠ অবধি ১৫ জোঠ পর্যাস্ত নিথিলায় • গঙ্গা পার হইয়া

eোট বিশেষ প্রসিদ্ধ হান। লাহে অংবাধাকে নোকলামিকা পুরী বলিয়া উলিখিত হইবাছে।

"মবোধ্যা মধুরা মায়। কাশী কাঞা অবস্তিক। পুরা বারাবতা হৈব সংস্কৃতা মোকনায়িকাঃ !"

অতিৰংসর রামনবমীর সমতে এখানে মেলা হইলা থাকে; এই খেলার ংলক্ষ লোকের সমাসম হল।

মিখিলা—রাঙ্গবি জনকের প্রাচীন রাখধানী, ইহার জপর নাম বিদেহ।
 শ্রীমন্ত্রপুরতের নবম করে লিখিত আছে,—

''অংল কতহা নৃণাং মতুমান। মছবঁর:। বেংং মমসুং আ নিমে: কুমারং সমজায়ত। জন্মনা জনকং নোংকুলিবেংজ বিবেহক:। মিধিলো মধনাজ্ঞাতো মিধিলা বেদ নির্মিতা।" (১)১৩/১৩-১৪) ন্ত্ৰমণ। ইতোমধ্যে নৈমিবারণ্য নমণ আছে, যথার বাটি স্হস্ত ক্ষিকিল ও নৈমিবারণ্য অনেক সাধু সর্যাসী আছেন। নৈমিবারণ্য যে মত মনের আনন্দ জন্মে, তাহা কি কহির। নানা পুশো বন স্থাভিত।

#### ७० टिनार्छ

চোবেপুর, কোড়া, জাহানাবাদ, বেলুড়, মুশমপুর, মকরাননগর, ভোগনী এই ছফ মঞ্জিল না যাইয়া অযোধ্যার পথ হইয়া দেকেন্দরা্য উপনীত। দেকেন্দরাতে জিলার কাছারি, ডাকঘর,

সেকেলা ভাজনারখানা আছে। এই নগীরে অনেক ভদ্রশাকের কাতি। মুন্সেফের ও দারগার কাছারি রাস্তার ঈশানে বটতলায় খোলার ঘরে। এখানে মুগলমান মুন্সেফ, ব্রাহ্মণ দারগা। তহিার কিছু দূরে বাহ্মার। বাহ্মারে চলিশখানা দোকান আছে। ইহা ভিন্ন তত্তবাজার। পুরি কচুরি সেঁড়া মিঠাই পাওখা যারণ দোকানদারের বর এবং সরাই হুই আছে। যাহার যাহাত্তে ইচ্ছা হয় থাকিবার। দোকানে রাত্তে থাকা হইল।

\* নৈমিবারণ্য—প্রাণে লিখিত আছে, গৌরমুণ মুনি এখানে নিমিবনধা অত্রনৈক ভল্মীভূত করিলাছিলেন, এই চক্ত এইলান নৈমিবারণা নামে খ্যাত হইলাছে। বিজ্পরাণে লিখিত আছে, এই ক্ষেত্রে গোমতা নামে করিলে কর্মণাপ কর হর। তৃত এখানে প্রাণ এবং গৌত ক্ষিপন-সনকে এই স্থানে মহাভারত পাঠ করিলাছিলেন। গোমতাতীরবর্ষী এই নৈমিধারণ্য এক্ষণে সিম্পার বা নিম্পর (নৈমিব্যর) নামে খ্যাত।

## ১৭ জ্যৈষ্ঠ

সেকেন্দ্রা হইতে ৪ জোশ যাইয়া চতুর্থ্ রাস্তা। ঈশানের
পথে ফরেকাবাদ • ইত্যাদি। গমনের পশ্চিমের পথে আঁগরা সহরা
গমন হয়। ঐ পথবেরিয়া ৪ জোশ যাইয়া বেউরপ্রামে তিন দোকান,

এক বাগানের ধারে আছে। ঐ পোকানে
আটা, দাল লইয়া বাগানের তিতরে ফটী
করিয়া আহারাস্তে বৃক্সুলে বিশ্রাম করিয়া ৪ জোশ যাইয়া
একদল গ্রামের বাজারে যে সরাই আছে, তাহাতে থাকা হইল।

#### २० ट्रिश्रि

একদল "ছইতে রাত্রের আন্দাজ না জানিতে পারিয়া আমি ও তিতু আর মহেল্ল তিনজকন সরাই হইতে বাহির হইয়া এ ক্রেশ ষাইয়া রাস্তার থানা ঘরের নিকটে একসল ও বিগরাই এক নিমগাতির তুলাতে শয়ন করিয়া নিদ্রা গেলাম। ঐ স্থানে আমোর চারিদ্র ছিলাম। তাহার

- \* কংকোবাদ— কিল্পাবাদ) গলাবীপালি মঞ্জাবতী যুক্ত এদেশত কেরলাবাদ জেলার প্রধান সভর। ১৭১৪ থা অবদ নবাদ মহম্মন বী স্মাট্ কর্থ সির্বৈর্থ নামে এই নগর হাপন করেন। এখানে একটা মুভিকা-নির্মিত কেলা আছে, এক সময়ে তাহাই নব বেব প্রামান ছিল। পূর্বের এই নগর উত্তরপালিক প্রথমেন প্রধান বাণিজাকেশ্র ছিল।
- † আগরা--( আগা) আগা নগা যমুনার দক্ষি-দিকে কবছিত। এখাবে অনেক্রনিন পর্বায় সুসলমান সমাত প্রের রাজধানী ছিল। আগ্রার সুসলমান-আম্বোর এইটিক সংগ্র প্রসিদ্ধা তালবহল, নতিমন্তিক, কুমামন্তিক জাছালীর-মহল প্রহৃতি উল্লেখযোগ্য। আগ্রায় ছুর্গ রক্তবর্গ প্রস্তান-নির্থিত;
  ইহার নিকটে বেলওয়ে টেশন।

পর এইভাত হইল। পরে ৫ ক্রোশ হাইরা বিগরাইয়ের বাজার সরাই। দক্ষিণদিকে এক কাত্রবাগান, ঐ বাগানে কটী করিয়া আমহার। পরে অপরাত্রে ২ ক্রোশ বাইয়া নিঠেপুরের বাজার সরাই। রাভার চুইদিকে বাজার এবং সরাই আনুছে।

## ্য জ্যৈষ্ঠ

মিঠেপুর হইতে ৮ কোশ আসিয়া এক মাঠের ধারে বাগান

যাছে। ঐ বাগানের ক্যাতে সান করিয়া,

শঙ্গে কাঁচা ছোলা আর ৩৪ ও কাঁকড়ি
ছিল তাহাই আহার করিয়া, বৌদ্রন্ত বাগানের ভিতরে
বৃক্ষমূলে শয়ন করিয়া রহিলান। ক্যানল সকলের অভিনয় প্রবল ইয়া দথা করিতে লাগিল। পরে ও ক্রোণ ঘইয়া শ ক্যাবাদের ও বাজারে প্রছিয়া আটা দাল লইয়া সরাই ভিত্রে বীইয়া আহারাদি হইল। এধানে
অনেক ভদ্রলোকের বসতি আছে। দারগার থানা, তহনীলদারের

# কাছারি<u>।</u> ২০ জ্যৈষ্ঠ

শকুরাবাদ হইতে ১০ কোশ রাজার টাল। এখানে পথিক লোকের অভিশর কট। নৃতন সরাই হইতেছে। মাঠের মধ্যে রাজারটাল বৃক্ষাদি ছালার জন্ম কিছুই নাই। রঞ্জের কাঠ মিলে না। আকলকাতে রঞ্জ করিতে হয়।

শকুংবিদ-নুক্ত-প্ৰদেশের মৈনপুরী হইতে ১০ মাইল পশ্চিমে অব্যিত প্রাম। পুর্বেই ইবা অভিনয় সমূদ্ধিশালী নগর ছিল।

# २२ रेक्सर्छ

রাজার টাল হইতে ৫ ক্রোশ পরে উশানী। তথার বাগানের ধারে তিল, চনা, চাবেনা, • ছাতুর দোকান আছে। তাহাই জলবোগ করিয়া ৪ ক্রোশ ঘাইয়া খাদানি. हिनाजी এই সরাই বাজার পছছিবার এক জেশ ব্ৰহ্মবাদীর দহিত দাক্ষাৎ হয়। তাহারা এক্তে ঘাইবার জ্ঞ অতিশয় যত্নবান হইল। তাহাদের কর্ম খাত্রী লইয়া যাওয়া। প্রথমধ্যে শুনিয়াছিলাম যে কাণীর কেশেল, প্রয়াগের প্রয়াগী, বুন্দাবনের কুঞ্জবাদী তিন তুলা, তাহারা যাত্রীর প্রায় ডাকাতি করিয়া অর্থ হরণ করে। বিশেষতঃ আমার মান্স যে, বাড়ী ভাড়া করিয়া থাকিব। ছই তিন বংসর থাকিতে হইবেক। এজন্ত বাউল দাসকে কহিলাম, "আমি কুঞ্জবাসীর কুঞে থাকিব না, আলাহিদা বাগায় থাকিব। আর আমার সঙ্গে যে টাকা ছিল, সকল শেষ হইয়াছে। আমি অগ্রে আগ্রা যাইব, তুথার টাকা সংস্থান করিব, পরে জীবুন্দাবন পছছিব।" এই কথা বাউল শুনিয়া কহিল, "থহা-শর। বুঝিরাছি, মহাশর বুঝি শুনিরাছেন যে, কুঞ্জবাদীরা জুরাটোর। ষাহা ভনিয়াছেন, তাহার কিছুই মিথাা নহে। কিন্তু আমি কেমন মাকুষ তাহা একবার জ্ঞাত হওয়া আবেশ্রক।" এই কথা বাউৰ দাস কহাতে ঠাকুরনাস ব্রহ্মবাসী কহিল যে বাউল উত্তম মাতুর, আরি টাকাকড়ি যাহা দরকার হইবে, তাহা পাইবে। স্থতরাং

ভাগা ভোগা, মটর অভৃতিকে হিন্দী-ভাষার 'চাবেনা' বলে—যাহা চর্কব
 করিয়া খাইতে হয়।

তাহাদের সহিত একত্র হইয়া ২ ক্রোণ বাইয়া বাদানিপ্রাম।
তথার বাজার এবং সরাই আছে। ঐ সরাই
মধ্যেতে সকলে থাকিয়া বাজারের ভিতর
হুইতে তরমুজ, ফুটা, কাক্ডি, আন্ত আনিয়া জলবোগ করিয়া
ঐ সরাই মধ্যে থাকা হইল।

# ২২ জৈছে

খাঁদানি হইতে ক্লীবুলাবন-মধুরা ষাইবার ছই পথ। একপথ
পশ্চিমমূথে ডাকের গমনাগমনের, আগ্রা হইরা আর একপথ
ক্লীনমূথে বলদেব হইয়া, আমরী বলদেব তথা মহাবন দর্শনার্থে বলদেবের পথে গমনুকরি। ৯ জ্রোশ ঘাইয়া বলদেবদর্শন হইল।
. এফা-ছাপিত চারিদেবের এক দেব, আইকাণ্ড মূর্হি, পাণ্ডাগণ ভীমা-

কৃতি— অতি নির্দ্ধ নিষ্ঠুর। পূর্বদিকে বলদেব দুঙ্গ, ভোগমন্দির, বাজার আছে। সকল
দ্রবাদি পাওয়া বায়। বলদেবের মাধন নিছরি ভোগ দিয়া
দর্শনাদি করিয়া পুরী কচুরি প্রসাদ পাইয়া এ দিবস বলদেবে
বাস হইল।

বলদেৰ—মহাবন হইতে ৬ মাইল দুরে এই নগর অবস্থিত। এইয়াৰে বলরামের প্রসিদ্ধ মন্দির আহাচে। মন্দির-পার্বে ইট দিয়া বাধান একটা পুছরিশী আহে, ইহার নাম কীরসাগর বা বলভত্রকুও। বলরামের মূর্ত্তি ভিন্ন রেবতী দেবীর একটা প্রকাশ মূর্ত্তিও মন্দির-মধ্যে দেখিতে পাওয়া বার। ক্রেবি সম্বিদ্ধিতি ক্রিবিট্নি শ্রেজ-পরিক্রমার লিখিয়াছেন—

''দেখহ দোহনীকুও গোদোহন-ছান। বলভয়কুও এই ব্ৰহ্মার নির্মাণঃ"

## २० रेजार्छ

বলদেব হইতে ৫ ক্রোশ ব্রহ্মাণ্ডঘাট • বেখানে আফুক্ট মৃত্তিকা ভোজন করিয়াছিলেন। ঐ স্থানের মৃত্তিকা থাইতে স্বাছ আছে। ব্রহ্মাণ্ডঘাট, গোকুল- ঐ ঘাটে বমুনাতে সান তর্পণ করিয়া গোকৃল মহাবন উপানন্দের বাটীতে থাকিয়া মহাবন† পরিক্রম করিয়া আফুক্টের জ্লয়ভূমি, স্তিকাগৃহ, ষ্টাপৃ্জার ঘর, দ্ধিমন্থনের স্থান, প্তনাবধের স্থান, গ্লেদ্থলার‡ আসিনা, উদ্ধলে বন্ধন, ধ্লাথেলার স্থান সকলই নৈথিয়া পুরি কচ্রি আহার করিয়া থাকা হইল।

- রেজাওঘাট—মহাবনের পার্যবর্তী একটা আনিছ ঘাট। মহাবনের ২১টা তার্থের মধ্যে ইহা অল্পতম। শ্রুক্তী দৃত্তিকা ভক্ষণ করিবাছেন শুনিরা বলোলা তাহাকে ভংগনা করার তিনি মাতাকে বীয় মূব বালান করিবা দৃত্তিকার পরিবর্তে তাহার দুপের মধ্যে সুমত একাত দেখাইকা ছিলেন। এই ভানে উক্ত ঘটনা সংঘটিত হটলাছিল বলিয়া ক্ষিত্ত হয়।
- † মতাবন—মথুবা জেলাব নহাবন ইহনীলের একটা প্রাচীন নগর। মথুবা
  নগবের ও জোল দক্ষিণে বমুনা জপর পাবে কাবছিত। বহু প্রাচীন কাল
  হটতে এই বনভূমি উকুক্লেব লীলাকেত্র বলিরা পুলিত হইরা আদিতেছে।
  প্রদিদ্ধ পোকুল নগরী ইতারই উপকঠে অবলিত। মহাবন ধ্বতে ও ইংইন
  হটলে লোকে অই জোপ দুরে আদিরা বমুনাতীরত্ব পোকুলে পুনরার নুভন
  বাসভান নিজাপ করেন। এই মহাবন কুক্লের বাল্য-লীলানিকেতন। পুরাধে ইহাই
  পোকুল নামে উল্লিখিত হইবাছে। মহাবনের মধ্যে নকালর বিশেষ এইবা।
  সনাচন পোবামী মহাবনে বাস ক্রিকেন।
  - 🙏 (र्गम—(त्रम्क नसब) छोडा, त्राना।

## ২৪ জ্যৈষ্ঠ

গোকুল মহাবন হইতে ন্তন গোকুল\*, যাহাতে গোস্থামীদের বাদ আছে। গোকুলস্থ গোস্থামীগণ ধনাতা। গুজরাট দেশের প্রধান ন্তন-গোকুল প্রধান সঙ্গাগর সকল শিষ্য। আর আর নানাদেশীয় ধনাতাগণ শিষ্য। তজ্জ্জ্জ উত্তম মতে সেবাদি ইইতেছে। গোকুল দুশন করিয়া যমুনা পার ইইয়া ২ কোশ আদিয়া মুধুরায় প্ছছান ইইল। সহরের ভিতরে বাঙ্গালিঘাটের উপর, কুক্দাদ ফৌজনারের বাটাতে থাকা ইইয়া বিশ্রামণ্ডল মান্মুকুটদর্শন, প্রব্যাটে শ্রাজাদি করিয়া মুধুরামগুল দুশনাদি করিয়া ও ক্রোশ যাইয়া শ্রীর্ন্থাবন ধামে প্রবেশ ইইয়া দুশনাদি করিয়া ও ক্রোশ যাইয়া শ্রীর্ন্থাবন ধামে প্রবেশ ইইয়া দুশনাদি করিয়া বাউল-

- গোকুল—মহাবনের টীকায় লিখিত হইরাছে যে, আন্টোন গোকুল বা
  মহাবন ধ্বংসপ্রাপ্ত হইলে বমুনা-পুলিনে নুছন গোকুল নগর অভিটিত হয়।
  ১৪৭৯ খয়ালে বল্লভাচাযোর সময় হইতেই নবপ্রতিটিত গোকুলের জীবৃদ্ধি
  ইইলাছে। বল্লভাচাযাই বনামে বল্লভাচারী মত প্রচলিত করেন।
- † মধ্রা— খনামথাতে পুরী। অপের নাম মধ্পয়, মধ্পরী, মধ্রা। সকল
  প্রাণেই অলবিপ্তর মধ্রার উল্লেখ আছে। রায়াখণে লিখিত আছে,—লোলার
  লোঙপুর মধ্দৈতা মহাদেবকে প্রদান করেন। একটি অপুর্ব শূল লাচ করেন।
  ভগবান শূলপাণি মধ্কে এই বর প্রদান করেন যে, ষ্তদিন এই শূল তোমার
  প্রের হল্তে থাকিবে, ততদিন চলাচর মধ্যে কেছই তোমাকে বধ করিতে সমর্থ
  হইবে না। পঞ্চাননের নিকট এই অভূত বর প্রাপ্ত ইইল দৈতারাজ মধ্ একটী
  মনোরম পুর নির্মাণ করিলেন। তংপরে বথাকালে তরায় পঞ্জী কুজনসীর
  পর্তে লবণ বৈত্তা জন্ময়হণ করেন। পুর লবণ নিহার ছুর্বিনীত ও আবাধা
  থাকার মধ্ ডাহাকে শিবনত শূল অর্পণ করিবা বরণাবারে প্রহান করেন। জরে

দাসের বাটীতে বাদা করিয়াথাকা হইল। ঐ দিবদ ভীর্ণোপবাদ ছিল।

## २৫ क्रिक

বাউলদাস আমাকে এক আলাহিদা ঘর, রক্ষ্রের স্থান এবং পারধানার বন্দেজ করিয়া দিল। আমি ও তিতু আর কালানাপিত তিনজন রহিলাম। আর আর যাত্রীগণ অন্ত মহলে রহিল। বাউল ও তাহার তগিনী অতি সচ্চরিত্র, তাহু, রা সকলে আজাবহ। আমি প্রাতে যমুনাতে স্থান করিয়া আহারাদির উদ্বোগ করিতেছিলাম, এমতকালে শ্রামবাজার-নিবাসী কালীবারু রামানকদাদ

ছুৰাচারী ক্রবের দৌরাক্স তপোবনবানী ক্রিগণ অবিছ ইছা তদীঃ অত্যাচারকাহিনী সংবাধাপতি মহারাজ রামচল্রকে ক্রাপন করিলে, রামচল্রের
আনেশে শক্র কর্তৃক যুক্তে লবণ নিহত হন। তাহাতে ইল্রাধি দেবগণ ঐত
হইয়া শক্রেকে বর বিতে চাহিলেন। তিনি দেবগণ সমীপে এই বর আর্থনা
ক্রিলেন যে, এই দেবনির্দ্ধিত মহুপুরী মধুরা ইছেই রাজধানী ইটক। তাহাতে
দেবগণ ঐত মনে এই বর দিনেন যে, এই পুরী 'শুরসেনা' নামে খাত হইবে।
তথন শক্রেম্ব দেনা আনাইরা পৌরজনপদ হ।শন ক্রিলেন। আদশ্বর্ধ মধ্যে এই
হান শ্রেদেনির্দিত রাজ্য বলিহা গণ্য হইল এবং এই হান শক্রশেভিত,
রোগবির্হিত, সুরুমা হর্মারাজি স্থানিত হইয়া শোভা পাইতে লাগিল।

রামারণের উক্ত অমাণ ক্ইতে জানা যাইতেছে যে, উত্তরণাও রচনাকালেও এই হান মধুরা নামে খ্যাত ছিল না, তথনও মধুপুরী বা মধুরা নামে খ্যাত ছিল। মহাভারতে ও আহে সকল পুরাণেই মধুরা নাম পাওগে যার। সভবতঃ রামারণোক মধুপুরী বা মধুরাই কালে মধুরা নামে খ্যাত হয়।

অঞ্জতবিদ্পণ বলেন, বৰ্জনান সপুরাসহরের দক্ষিণপশ্চিমে 'মহোলি' নামে বে কুল আৰু আহিছ, তাহাই মনুদৈতেয়ে মনুপুরী। পরে আহিয়াল শত্তেশ্ব বে পুরী বৈরাগীর প্রমুখাৎ আমার বাউলদাদের বাটীতে প্রছা সংবাদ পাইরা লোক পাঠাইয়া লইরা গেলেন। আমার বাসা রহিল। সাক্ষাং করিতে যাওয়া হইয়া আহারাদি তথার হইল। বাসার সকল কর্মা। কালীবাবুর বাসাতেই আহারাদি।

নির্মাণ করেন, ভাষা বর্তুমান ভূতেখর মন্দির ও তারিকটবর্তী বর্তরান কাট্রা আনম অবস্থিত ছিল, কালে দে সমন্ত ধ্বংসাক্ষইলা গিরাছে, অবংশের ব্যুনা ছর্গ-শোভিত বর্তনান সহরই মধুরা নামে ঝাত ছইলাছে। কিন্তু রামারণের বচন হইতে লাই প্রাণিত ইইতেছে বে, বেবানে নগুবৈতা পুর নির্মাণ করিলাছিল এবং তৎপুত্র লবণ নানা প্রকার ভবন নির্মাণ করাইলাছিল, সেই স্থানে রামাযুক্ত শুক্রেনিধিগের রাজধানী মধুরা পতান করিলাছিলেন। সেই পুরী যমুনাতীর পর্যাগ বিস্তৃত ও বিশেষ সমৃদ্ধিশালী কিল। শ্রসেনিদিগের প্রজাব বিভারের সহিত বাদবণণ প্রকারান হইতে প্রকার ইতা ব্যুনার টিক উপরেই রাজধানী স্থাণন করিলাছিলেন। তাহাই প্রাণ ও ইতিহাদে 'মধুরা' নামে ঝাত। এই মধুরার সমৃদ্ধির সক্ষেত্র ভালান 'মধুব্র' বা 'মধুরা' নগরী পরিত্যক্ত হয় এবং বিস্কালে এই স্থান বিশ্বন' নামে ঝাত হয়।

মণুবাৰ শীকৃক জনামহণ কৰেন এবং কংসনিধন শ্ৰভৃতি সংঘটিত হইবে তিনি মণুবাৰ ৰাজ্যভাৰ আহণ কৰিছাছিলেন। মণুবাৰ এখনও কংসকাৰাৰাৰ, বিশান্তিখাটী প্ৰভৃতি প্ৰাচীন পীঠ বিভূমান আছে। এডছাতীত ভিল্ল ভিল্ল বুণে এখানে বে বে সম্প্ৰাবের অধিঠান হইলাছিল, উাহাদিপেরও প্ৰভৃত মুভিচিক আলিও ক্ষৰাবক্ষে বিবাল কৰিতেছে। প্রীভগবংবেছার অধ্যার প্রতি আপত্তি ছিল না। সর্বাত্তে ছুই সন্ধ্যা দর্শনাদি করিতাম। একদিন গোপালঠাকুর ব্রন্ধবাদীকে সমভ্যারে করিয়া কিছু কিছু প্রণামী দিলাম।

মধুরাপুরীতে, যম্নার তীরে অনেক আি শিব স্থাপন এবং
ঘাট পাকা বারা। প্রধান যে চরিবশ ঘাট সান দানের আছে

অংসিংহণুরী
স্থানে স্থাভিত আছে। মণুরা নগরের
উত্তরহার জয়িদংহপুরী, দক্ষিণহার কো গামে গ্রাম, নওরঙ্গাবাদের দক্ষিণ। এই গ্রামের নাম কো হইবার তাংপ্যা এই যে,

বংকালে শ্রিক্ষ মণুরাম ওলে দেবকাগর্ভে
আবির্ভাব ইয়াছিলেন, বস্থদেব প্রভাবে
কংসভয়ে শ্রিক্ষণেক জোড়ে করিয়া নন্দালর যাইভেছিলেন;
য়ম্নার মধ্যত্লে ঘাইতে শ্রিক্ষণ বস্থদেব-জোড় হইতে যম্নাতে

যাৰৰ রাজধানী মধুবাপুরী কালে হবিস্ত হইলা মধুবামওলে প্রিণ্ড হয়।
মনুদাহিতা এবং লিনি, আরিয়ান প্রভূতি পাশ্চাত বিভিন্নিকগণের জ্পে মধুবামঙল শ্রনেন নামে বর্ণিত এবং ইহার অধিকাণে বর্তনান মধুবা জেলার মধুবিত।
যবিও মনুদাহিতার মধুপুর বা মধুবার কোন উল্লেখ নাই বাট, কিন্তু এই শ্রদেন
জনপদ অক্ষ্ণি দেশের অন্তর্গত ব্লিয়া ব্ণিত হুগ্যাছে।

এই হান অতি প্রাচীন : প্রাণপ্রনাদে ইহাই বুক-বনরামের নীলাক্ষেত্র বিনিয়া বর্ণিত হটরালে। ঐতিহাসিক লগতেও মধুরার প্রসিদ্ধি বচদুর বিশ্বত। ইহাবে কেবল শুকুদের নীলাভূমি বলিগা প্রসিদ্ধা তাতা নহে, পরীয় ২য় ও তর লতাক্ষে এপানে অনেকঞ্জি বৌদ্ধবিহার ও সকবারাম প্রতিষ্ঠিত হওয়ায় এই যানের মাহায়্য তংকালীন বৌদ্ধপতে বিশ্বত চইয়াছিল। তাই কামবা প্রাচীন ভৌগোলিক টলেমির "Modoura of the gods" এবং আরিয়ান্ ও মিনির

মধ হন। ইহার বিশেষ বৃত্তান্ত শ্রীমন্তাগবত গ্রন্থে প্রকাশ আছে। বন্ধদেব প্রকে জলসগ দেখিরা প্রশোকে শোকাষিত হয় ঐ আন হইত কহিরাছিলেন "কো মেরে বালকো হরণ কিয়া" অর্থাৎ কে আমার সন্তানকে হরণ কুরিলে? এই কথা কহাতে যমুনার মধ্যস্থলে চড়া হইল। বস্থানে শ্রীকৃষ্ণকে পাইলেন। তদবধি ঐ স্থানের নাম কো হইল। ঐ গ্রাম যমুনার মধ্যস্থলে, কিন্তু আয়াবধি ঐ গ্রামে যমুনার জল পূর্ণ হয় না। গ্রামের ছই দিকে যমুনা। ভাগ কিয়েছাতে যমুনা যত প্রবল হউন তথাচ কো-প্রাম ড্বিবে না।

এই সকল স্থান মধুরানগর মধ্যে। ইহাতে অনেক দেবদেবী

Methora অসলে মুখুরার উল্লেখ পাই । মেগেছিনিসের বর্ণনান্তে আরিরান লিবিরাছেন যে, মেধোরা ( Methora ) ও ক্লিসোবোরা ( Klisobora ) প্র-দেনদিগের এই ছুইটা এখান নগরীর মুধা বিরা যুম্নাননী অবাছিত। পাশতাতা লেগক বার্বিত 'মেধোরাণ ও 'ক্লিসোবোরা' মথুরা ও কুক্পুর বা কেশবপুরের বৈদেশিক উচ্চারণ। খইপুর্ক চতুর্থ শতাক্ষে মথুরা ও কৃক্পুর জগহিখ্যাত ইইরাছিল এবুং এখানে বে শ্রুসের রাজত্ব করিছেন, ভাহার আভান পাওলা বার। স্থিনি লিবিরাছেন, এই ছুই অসিশ্লালয়নী গালিবোধা অর্থাৎ পাটনীপুত্র রাজ্যের অন্তর্গত ধাকা সক্তব ব্লিরা বেধি হল।

কৈন ও ৰৌদ্ধগণের নিকটও এই হান প্ণাভূমি বলিগা বহুদিন হইতে
আগৃত। জৈন্দিগের ১৯শ তার্থকর মন্ত্রিনাথ ও ২১শ তার্থকর নমীনাথ মধুরার
কম্ম ও জ্ঞানলাত করিরাছিলেন, একারণ ধামিক জিনগণের নিকট মধুরা পরম
পবিত্র জ্বীর্থ বিলিয়া অভিহিত। জৈনদিগের সহিত বৌদ্ধকীপ্তিও এছলে প্রভিষ্টিত
হইরাছিল। উপগুরুষ স্মাট্ অশোকের সমসাম্যিক। মধুরার বুদ্ধিয়াগণের অধিষ্ঠান হইলেও উপগুরুষ সম্যে গৃইপুর্ক হর্ষ শুলাক হইভেই মধুনার

স্থাপিত আছেন। নগরের মধ্যে কমবেশ একলক্ষ ঘর বসতি। ইহার মুদলমান ছর হাজার ঘর, বাকী নববই হাজার ঘর হিন্দুর বসতি সকল জাতিতে হইবে। ইহার মধ্যে চৌদ্দশত ঘর চৌবে, ছই হাজার ঘর সনাভিড ব্রাহ্মণ। তিজিল আর আহ্মণ আছে। এথানে সাম, যজুং, অক্, অথর্ম চারিবেদের ব্রাহ্মণ আছে। মৈথিলি, দ্রাবিড়ি ও কাশ্মীরিমহাপশ্ডিতগণ, ইহারা সর্ব্ধশান্তবেভা—বেদশাল্লে স্লপ্তিত।

চৌবে বে চৌদশত ঘর আছে, ইহাদিগবে<sup>ন</sup> নিঠে-চৌবে কহে। ইহা ভিন্ন কড়ু বা চৌবে পাঁচশত ঘর আছে। কড়ু বাচৌবে ইহাদিগকে কহে—কান্তক্ক ব্রাহ্মণের মধ্যে দোবে এবং চৌবে, পাঁড়ে,
উপাধ্যায়, ইহাতে যে চৌবে ভাহাদিগকে কড়ু বা-চৌবে কহে।
ইহাদের ষক্ষমানের কর্ম নহে। বাবদা-বীশিক্ষা এবং শাস্ত্র-অধ্যয়ন,
বিলিষ্ঠ হইলে সিপাহী কর্মে নিযুক্ত হয়। মিঠে চৌবে যাহারা ভাহা-

ঝেছধর্ম প্রবেশ লাভ করিয়াছিল। মধুরা হইতে আবিষ্কৃত শিলালিথি হইতে তাহার আভাগ পাওয়াবার।

ৰ ইপূৰ্ব ২য় শতাক্ষের শেষভাগে মধুবাই শকাহিপত। বিভাগ লাভ বরে।
মধুবার প্রথম শক্ষ্মপ্রপণ সকলেই মিজোপাসক বাংমার ছিলেন। তাহাদিধের
সমরে মধুবার সৌরগণের প্রভাব ও স্থাপুতা বিশেষ ভাবে প্রচলিত ২য়। মধুবার
প্রাকীর্ত্তির ধ্বংসভুপ হইতে ওংকালীন প্রতিষ্ঠিত ভয় স্থামূর্ত্তি আবিকৃত
হইয়াছে। পরবর্তীকালে এই শক্ষ্পতিগণের মধ্যে কেহ শেব, কেহ শারু,
আবার কেহ কেহ বৌদ্ধ হইয়াছিলেন। মধুবার বৌধ্ধ শক্ষ্পতিগণের মধ্যে
ক্রিছের নাম বিশেষ ভাবে উল্লেখযোগা।

মুসলমান-রাজ্যকালে মধুরার পূর্বতন ধ্বংমারণেবন্তুলি তাহাদিবের অত্যা-চারে স্থানতট ও ইতত্তভঃ বিকিত হওগার উত্তার বর্গনির্গরে প্রস্তব্ধিব্গণের দিগের যাত্রীর কর্ম্ম। যে সমস্ত যাত্রী মথুরা বৃন্দাবন আইসে,
মথুরার চোবেদিগের তাহাদিগের চৌবে হইয়া মথুরার পরিক্রম,
গরিচ্ম লান, দান, শ্রাদ্ধ, দর্শন, স্পর্শ করাইয়া
বিদায়াদি যাহা পার, তাহাতে দিন নির্ন্ধাহ করে। চৌবেদিগের
পড়ান্ডনা কিছুই নাই। সহস্র মধ্যে একজন অধ্যয়ন করে কি না
করে। ইহাদিগের দিদ্ধি থাওয়া, দওকুন্তিকরা\* কর্ম। ইহারা
দিবারাত চারিবার দিদ্ধি থার। দিদ্ধির চারিবারে চারি নাম—
কাকাবাদী, ভোগবির্ন্ধানী, দৌলতদাদী, সত্যনাশী। প্রাতে, মধ্যাহে,
বৈকালে, সন্ধ্যার পরি এই চারি সময়ে দিদ্ধি থাইয়া ভাঙ্গড় হয়।
ইহাদের গৃহকার্যা ল্রীলোকে করে, দেওয়া লওয়া কিছুই জানে
না। যাত্রী বারায়, কি ভিন্ধাতে যাহা উপার্জ্জন করে, আপন আপন
ল্রীর নিকটে দেয়। আপনারা প্রাভে উঠিয়া দিদ্ধি আর লোটা
ভূরি দইয়া বাগিচাতে গমন করেন। বাগিচা একটা স্থান ঘেরা

গালবোগ ঘটনাছে। কোন কোন গালাতা প্রস্তুত্ত্বিপ্ পূর্বতন জৈন-বৌদ্ধ-প্রের্টর প্রনির প্রতেশ শীক্ষা করিছে না পারিয়া সকল গুলিকেই বৌদ্ধ-প্রিন্টর বিলয়া প্রচার করিয়াইনী। যাওবিক গকে এখনও মধুরার বহ জৈনমুতি বিশ্বসান। কেলোকেলবাপুরের উপকঠিছিত শেঠপিগের প্রতিষ্ঠি রিলরের নিক্ত জৈন-ঘুলের শির্কান্তা-সমহিত একটা কুল প্রকোষ জমু বামীর জননা গৃহ বলিয়া প্রবর্গি হইয়া গাকে এবং উহোর ক্ষরণার্থ বেলার নিম্নেশ্ব একবামি শিলাফলকে ক্ষুথামীর নাম কোনিত আছে। এই জমুখামীই জৈন্দিগের শেব জাত্ত্বকলী ক্ষরের শিষ্য। ক্ষরি শেব তীর্থকর মহাবারের শিষ্য। মণিরাম শুক্ষোক্ত মন্দির নির্মাণ করিয়া ত্রাধ্যে হয় তীর্থকর চল্লপ্রস্কুর প্রতিমৃত্তি স্থাপন করেল।

দওকুত্তি = ডন ফেলা এবং কৃতি করা।

আছে। কাহার এক অশ্বপ্ত অথবা বট কিম্বা নিমের কি বক্তভমুরের, কাহার বা বাবলা। যে বৃক্ষ হউক, এক বৃক্ষ থাকিলেই বাগিচা হয়। কাহার কুয়া আছে, কাহার নাই। ঐ বাগিচাক্তে একজোড়া মুলার আছে আর কুন্তীর আথড়া। মৃত্তিকাতে এক চৰুতরা বান্ধা। সেই বাগিচাতে ধাইয়া সিদ্ধি থাইয়া প্রাতঃকতা করিয়া মলবেশ ধারণ করিয়া দশুকুন্তী করিয়া ছুই প্রহরের সময় পুনর্কার ভাক থাইয়া বহির্দেশে ষাইয়ালান হয়। তাহার পর বাটীতে আসিয়া দেখেন যে কটা তৈয়/বুহইয়াছে। তথন আপনি ঐ কটা তরকারি যাহা ব্রাহ্মণী তৈয়াই করিয়া রাখিয়াছে. তাহা সকলের পারশ+ করিয়া দিয়া? ত্রাহ্মণীকে এক পারশ করিয়া দিয়া, আপনার ধাইবারমত দ্রব্য লইয়া, আহারাদি করিয়া 'বাছিরে গেল। এখানে চৌবেনীরা পাহা ইচ্ছা তাহা করুন, চৌবেরা ভাঙ্গ খাইয়৷ নতু হইয়া রাত্র দেড়প্রহর সাত ঘড়ির সময় আসিয়া কহিলেন, "আহারের কি স্বাছে আন।" চৌবেনীরা আপন উপাৰ্জিত লাড়, পেড়া, অমৃতি, বর্ষি, রাবড়ি ইত্যাদি মিষ্ট মিষ্ট দ্রব্যাদি আহার করিছে দিলে ভালের মুখে অধিক মিষ্টাল খাইয়া বিহবলে নিদ্রা। ১৯তে স্থাকে না। এই भक cblcafe रात्र व विष्ठं कर्म । डेनाड्क स्तर श्वान विश्वाख्यां है। এই घाटि जानाटम त्य याश मान करत. होर्त्वामरगत आला। যাহার যে পুরোহিত চৌবে দান-দ্রব্য তাহার প্রাপ্য। চৌবেদক্র

পারণ—(হিলী পর্স্) অয়াদি পরিবেশন, ভোজার-সমুধে ভোঞাবল্প
য়াপন।

<sup>†</sup> বিজ্ঞান্ত বাট—মধুরার অসিদ্ধ ঘাট। কংসকে সংহারপুর্বক রাস্ত হইয়া উত্তব্য এই ঘাটে বিজ্ঞান করিগছিলেন। ইছা অসিক্ত তার্থ।

অধিক আহারী। চারিদের পাঁচদের মিষ্টান্ন অক্রেশে আহার করে। দেখিতে বলেতে মল্লভুল্য।

নানাদৈশীয় শেঠদিগের কুঠা এবং বাস। স্থরাট, বোম্বাই, श्वकत्राचे. डेड्डविनी, आङ्मीच, विकानीत, टाल्यूत, शाद्यालियत, উদয়পুর, জয়পুর, ভরতপুর, মাড়োয়ার. মথরার শেঠী পঞ্জাব, দিল্লী, লফ্লো, ফরকাবাদ, বিঠোর, কোটা, বুন্দেলথণ্ড, বেতুর, কাশী, মির্জ্জাপুর ইত্যাদি দেশ সকলের শেঠগণ, ∖অভান্ত ধনাচা আছে। তাহার মধ্যে একণে লছমীটাদ'ও রাধাক্ষ ও গোবিক্দাস তিন সহোদর। ইহাদের তলাধনী কেহ নহেঁ। রাজা পাটনীমল ও মনোহরদাস এবং সা বিহারীলাল অধিক ধনী। ইহাদিগের হইতে অধিক ্ৰধন লছমীটাদের। ইহার পৈতৃক ধন নহে। ইহাদের পিতা ক্ষুদ্র কর্ম করিত, ছোলা বিক্রন্ন করিয়া দিন নির্বাহ করিত। দৌভাগ্যক্রমে গোয়ালিছর রাজার দেওয়ান পারক মধুরামগুলে বাদ এবং দেবকুতা করিতে আদিয়া লছমীটাদকে পোষ্যপুত্র করিয়া, আপন গদির নালিক করিল। পারক মথুরা আদিবার কারণ-্ণায়ালিয়বরাজ অবিকারে এক সল্লাসী ছিল, তাহার বছ ধন ছিল। চারি পাঁচ ক্রোর টাকোর অধিক ধন। সন্ন্যাসী গত হইলে ঐ ধন রাজভাগুারে আইদে, কিন্তু রাজা বিবেচনা করিলেন যে, সন্নাসীর ধন ভাগুারভক্ত করা কর্ত্তবা নছে। দেওয়ান পারকজিকে কহিলেন, "এ ধন কি কর্ত্তবা ?" পারক কহিলেন. "তীৰ্থস্থানে কৃতা।" রাজ-আদেশ হইল, "এইক্ষণে কর্ত্তব্য।" এই অনুমতি হইলে পর পারক বিবেচনা করিল, আমার পুতাদি নাই--শেষাবস্তা হইয়াছে। এই ধন লইয়া

ব্রহ্মভূমে মথ্রাপুরীতে দেবদেবা করা কর্ত্তব্য। যদি এক উত্তম দেবমূর্ত্তি পাওয়া যায়। এই বিবেচনা মনে করিতে করিতে এমতকালে সংবাদ হইল যে, রাজধানীতে এক পুষরিণী খনন হইতেছিল তক্মধো এক প্রস্তরনির্মিত গৃহ বাহির হইয়াছে, পাথরের কপাটে রুদ্ধ আছে। এই সংবাদে রাজা ও রাজমন্ত্রী পারক আরে আর পাতে মন্ত্রী সৈত্যাধ্যক্ষণণ সমভ্যারে তৎস্থানে উপস্থিত হইয়া ঘর দেখিয়া দার মুক্ত করিতে রাজাজ্ঞা হইলে ভূতাগণ উপায় দারা দারমুক্ত করিল। তক্মধ্যে শ্রীভন্নারকাধীশের মুর্ত্তি বিরার্শিত আছে। তাঁহাকে উঠাইবার জন্ম রাজা অনেক উপায় করিলেন, কোনক্রমে তুলিতে পারিলেন না। পরে পারককে আদেশ হইল যে, তুমি আমার সেবা কর মণ্বীতে লইয়া যাইয়া। রাজাকেও এই কথা স্বপাবেশে কহিলেন। তৎপরে রাজার নিকট পারক বিগ্রাহ লইয়া মণ্রাবাদের বিষয় জানাইবামাত্র রাজাজ্ঞা হইল যে, সল্লাসীর যে ধন ভাগুারে আসিয়াছে, আর সপ্তাহ পর্যান্ত কোষাগার ছইতে যত অর্থ লইয়া যাইতে পার তাহা লইয়া তীর্থস্থানে কুতা কর। রাজ-আনেংশ পারকের মনোবাঞ্াপুর্ণ হইলে অপিন অর্থ লইয়া আর ঐ ধার-কাধীশ মৃতি লইয়া মথবানগরে আসিয়া বিশ্রাপ্রবাটে রিমাওয়ালা রাজার যে তুল নির্শ্বিত আছে (যে তুলে স্বর্ণ তুল করিয়া আশিমণ ম্বৰ্ণ বিশ্ৰান্তবাটে দান করেন, এজ্ঞ আর কেহ ঐ স্থানে তলা করিতে ক্ষমবান হয় না, ভাহার ভাৎপর্যা যেমত বায় জুলাতে রিমার রাজা করিয়াছেন ভাহার অধিক কিমা ভত্তা করিতে পারিলে তৎস্থানে তুল নির্মিত করিবে) ঐ তুলের দক্ষিণে এক মন্দিরে দ্বারকাধীশকে রাধিয়া সেবা করিত। আরু যে মন্দিরে একণে আছেন, ঐ স্থানে প্রস্তারের স্থাঠন মন্দির নির্দ্ধিত হইল। ঐ

মন্দিরে ছারকাধীশ ও মণুরানাথ আর মুরলী-মনোহর এবং লক্ষীনারায়ণ এই সকল দেবদেবী একত্রে রাধিয়া রাজদেবাতে সেবার
নিয়ম করিলেন। পারকের সকল বিষয় হারকাধীশের। শুক্তির
ভাণ্ডারে অসংখ্য ধন, হীরা, ভহরৎ, মতি, পারা, অর্ণরৌপাের
অলস্কার ও আসবাব সকলই আছে। রাজাধিরাজ নাম। পারক
আপন জীবদ্শাতে উত্তমরূপে দেবসেবা এবং ছত্র ও ধর্মশালাতে ব্যয়
করিয়া শেবাবস্থাতে দেবসেবাদি সংকর্ম্ম সকল প্রচলিত থাকিবার
জন্ত লছমীচাঁদ শেঠকে গদির মালিক করিলেন। একলে লছমীচাঁদ
বা ধনেশ্বর হইরার্ছে। ছাপার ক্রোর ধন শুনিতে উপাথাান। এই
ধন তিন সহোদ্রে রক্ষণাবেক্ষণ এবং দেবসেবাদি করিতেছে।
ইহাদিগের তমাংক্ষা শরীরে নাই।

দারকাধীশের বিভব ও তাদৃশ থৈ ঝুলনের হিন্দোলা তিনধানা

স্থবর্গে নির্মিত। তিন লক মুদ্রা মুল্য আর স্থর্গরোপ্যমন্তিত আশা-শোটা, বল্লম, ছত্ত্ব, আড়ানি, পঞ্জা, নিশানের ছড়, শতসহস্র ঝাড়-লঠন, দেওয়াল-গিরি •বাটীতে এক শ্রুস্ত রাজ্তরে সাজান। চতুর্দ্ধিকে মুকুরে মন্তিত রূপার বৃহৎ বৃহৎ হাঁড়া ও ওদনা, পরাৎ সকল, ভোগের থাল, বাটি, স্থর্গের রূপার ছই আছে। আভরণের মূল্য কি কহিব। নীলকান্ত, লালকান্ত, পোথ্রান্ত, মুক্তা সকল তিন চারি লক্ষ টাকার আভরণে স্থাভিত। স্থার্গরান্ত, গণানা কি আছে? পোবাক কত মত বছ মুল্যের স্থবর্ণথিচিত বন্ধানি আছে তাহার নিরূপণ্ট, কি 
থুপ্তি দিবস তিন সময় নূতন নূতন পোবাকসকলে শ্রুলার হয়। দেবালয়ে হাজার মনুষ্য প্রতিদিবস আহার করে। সেবার উত্তম বরাদ্ধ আছে। রাজভোগের ম্বরাদির থরচ অধিক্র।

প্রধান দেবালয় বারকাধীশের। তাহার বিশেষ কারণ প্রাচীন
মুর্জি মথুরানাথ এবং লক্ষ্মীনারায়ণ আমার মুরলীমনোহর চারি
বিপ্রাহ এক মন্দিরে আছেন। ইহার মধ্যে বারকাধীশ। আচল-বাজাউৎসবে চিত্রপট য়ে বারকাধীশের আছে তাহাই বাহিরে আইসে।
বে স্থানে প্রীমন্দির ঐ স্থানে প্রীকৃষ্ণ কংসবধান্তে রাজ্নিংহাসন
করেন। এজন্ত মধুরানাথ লক্ষ্মীনারায়ণ স্থাপিত থাকেন। যৎকালে
প্রীকৃষ্ণ বারকাগ্যন করেন, লক্ষ্মীনারায়ণ স্থাপিত থাকেন। যৎকালে

ইহার নিকটে কংস্টালা। যে স্থানে কংস্থাজার অন্তঃপুর ছিল যমুনাতীরে, একণে ঐ কেলা ভাঙ্গিতেছে। অনেক নিমে এক কাংসের অন্তঃগ্র একতালা ছিল। কংসের বাটী হইতে রঙ্গ-ভূমি পর্যান্ত কংসালয়। ইহার নাম মধুপুরী। প্রীক্তকের জন্মভূমি মধুপুরীর চারি হার। চারি হারে চারি অনাদি শিব আছেন। পুর্বহারে পিপুড়েখর। দক্ষিণহারে রঙ্গেখর যথায় কংস্বাজার

রক্স্মি। পশ্চিমহারে ভ্তেখর, এই হানে পাতালদেবী আছেন।

মধ্যার চারি শিব

মধ্যার চারি শিব

অক্সপতন হয়ী ভ্তেখর ভৈরব। উক্
স্থান হইতে এজ ৮৪ জোশ পরিক্রমের প্রথম হক্ত। উক্ত

হারে গোকর্ণেখর। এই চারি শিব মধুপুরী রক্ষা করিতেছেন।
গোকর্ণেখর মৃত্তিমান্—বম্নার তারে মিশির।

ধ্রবটীলা—বথার ধ্রমহাশর পঞ্চম বর্ষের বালক তপস্তা করেন, তাহার বৃত্তাস্ত শ্রীমন্ত্রাগরতগ্রন্থে প্রকাশ আছে।

স্থাঝবিটীলা—সনক, সনাতন প্রতৃতি সাতজন ঝবিতে এই স্বানে তপঞা করিয়ছিলেন। ঘলিটালা — বণিরাজার তপঞ্চার স্থান।
কংসটালা ⇒ — কংসরাজার মল্লবুদ্ধ-স্থান।
মহাবিজ্ঞানেবী — পর্ব্বত উপরে। প্রস্তরপিণ্ডাক্সতি। চৌবেদিগের ইউ-স্থান।

শ্রীকৃষ্ণের জন্মভূমি কংসের কারাগার মধ্যে। বথার মল্লাদিগের

শ্রীকৃষ্ণের জন্মভূমি

হান । এই স্থানে বস্থাদের দেবকী শৃষ্ণাবার্দ্ধ

হিলেন। ইহার কিঞ্জিৎ অন্তরে পোডরাকুণ্ড,
বাহাতে দেবকী প্রাস্থাবের বস্ত্রাদি প্রকালন করেন। এই কুণ্ডের
চতুর্দ্দিকে সানবার্দ্ধা ঘাট। জন্মভূমি মল্লেণ্ডাতে। ইহার
উত্তর্গনিকে পোতরাকুণ্ড। দক্ষিণদিকে কেশবদেবুমুর্জি আছে,
বজ্বাপিত, ব্রুভ্ভুষের চারিদেব মধ্যে একদেব।

বলদেবজিউর মন্দির পিপুড়েম্বর শিবের দক্ষিণ। বলদেব-কাদেবের মন্দির জিউর ঝাঁকি দর্শন – অতি কটে দর্শন পাওয়া যার গুঁবলদেবের গোস্বামিগণ ধনাতা। বড় বড়ধনী সকল শিষা। অর্ণরৌপোর আসবাব অধিক আছে।

সহরের মধ্যে টীলার উপরে কুজানাথের মন্দির। তাহার পুর্বের রাধাগোবিন্দজ্জিউ। তাঁহার নিকট রাধাকান্তরিজিউর মন্দির। চুড়িওয়ালা শেঠের বাটতে প্রীশমদনমোহন জিউ। এই সকল দেবালরে ঝুলন পনর দিন হয়। হারকাধীশের মন্দিরে একমাস।

কংসটালা—বনুনার উত্তরদীমার একটা প্রাচীন ছর্পের ধ্বংদাবশেব পড়িত
ছুই হয়, উইাকে সাধারণলোকে "কংসকা কিলা" নামে অভিহিত করে। কিজ
অক্তর প্রবাদ, স্রাট্ আকবর সাহের বিখ্যাত সেনানী ক্রয়ণুররাক্ত মানসিংহ
জুর্পুর্বির্বাণ করাইয়া হিলেন। কালবশে তাহাই ধ্বংদে পরিণত হইয়াছে।

চুড়িওরালা ছোট বাড়ী ঝুলনে এবং দাবিতে উত্তম দাবান হয়। দেওয়ালিতে আর ভরত-বিলাপে মধুপুরী স্বদজ্জীভূতা হইয়া স্লোভিত হয়।

মধুপুরীর যমুহায় যে সকল ঘাটে ল্লান-তর্পণ দানাদি করিতে হয় তাহার ঘাট সকলের নাম—

মথুরার পঁচিশ ঘাট ও তীর্থ। বিশ্রান্তঘাট মধ্যস্থলে। ইহার
মধুরারঘাট\*
ঘাট। বিশ্রান্তঘাট অমর্থাং শ্রীকৃষ্ণ বলদেব
কংসদৈত্যকে বধ করিয়া ঐ ঘাটে বসিয়া বিশ্রাম, সান করিয়া

\* মধুৰার ২৪ বাট—> গণেশবাট, ২ দণাবমেধবাট, ,০ চক্রতীর্বাট, ৪ কুক-প্রশাষাট, ৫ পোমতীর্বাট (বহুপেববাট), ৬ জ্রহলোক্বাট, ৭ বটাজর্ব-বাট, ৮ ধারাপতন্বাট, ৯ সঙ্গমতীর্বাট (বৈকুপ্তবাট), ১০ ন্বতীর্বাট, ১১ আস্কুত্ত বাট, ১২ অস্নিভ্যাট, ১০ প্রশাষাট, ১৪ ক্নবল্যাট, ১৫ ভিজ্ক-বাট, ১৬ স্ব্যাঘাট, ১৭ চিল্লামণিবাট, ১৮ প্রবাট, ১৯ ব্রিবাট, ২০ মোক্ষাট, ২১ কোটবাট, ২২ বৃক্ষাট, ২০ বল্ডজ্যাট, ২৪ বোগঘাট।

মধুৰার কেলা ছইতে বমুনাবাগ পর্যন্ত বিজ্ বমুনার বঁকে উক্ত ২০টা লানের ঘাট আছে। ঐ ওলির প্রত্যেকটাতে কোন না কোন ভীর্থপ্রস্ক উলিখিত হইবা থাকে। উত্তবে সংগ্ৰুগটা, নানস্থাটা, দলাখনেব্যাটা, চক্রংইণ্ডাটা, কুক্সকাল্যটা, কালীপ্রবেশ্ব মহাদেব্যালির, নোমতার্থ বা বহুদেব্যাটা, ক্রুগটোক্রাইটা, কালীপ্রবেশ্ব মহাদেব্যালির, নোমতার্থ বা বৈত্রপ্রাটা, নাক্রাইবাটা ও আসিক্ত্যাটা এবং দক্ষিণভাগে, অবিম্কুল্যটা, ক্রিলাজ্বাটা, ক্রেগ্যটা, ক্রিলাজ্বাটা, ক্রেগ্যটা, ক্রেগ্রাটা, ক্রেগ্রাটা ও বৃদ্ধাটা। ক্রেগ্রাইবাটে বিআর লাভ করিরাহিলেন। এবাবে পিতৃপুক্ষপ্রশেষ পিক্রাক ক্রিলেব ক্রিলেব ব্রুগ্রাকর ক্রেগ্রেশ্য আবিয়া ভারা ভক্ত ক্রিয়া থাকে।

নানাবিধ জ্বব্যাদি ভক্ষণ এবং আপন শিরোভূষণ মুকুট চিহ্ন-

এই বিশ্লান্তিখাটের সমিকটে কসেথাড়ি নামে একটা থাত আছে। প্রমাদ, কংদের মৃতদেহ অন্ত্যেতির জন্ম এইহান দিয়া বমুনাতীরে আনীত হয়। বোপঘাট ও প্রয়াগঘাটের মধ্যমূলে বেনী মাধ্যতার্থ ও পুলারঘাট অব্ছিত। প্রমাপঘাটে রামেশ্বর মহাদেব এবং পুলারঘাটে পির্মনেশ্বর মহাদেব ও বটুকনাথ
বিশ্লানা আছেন। উক্ত ২৪টা ঘাটে হাংলতীর্থ প্রধান। যথা— ১ অবিমৃত্তভীর্প, ২ বিশ্লান্তিতীর্গ, ৩ প্রয়াগতীর্থ, ৪ কন্থলভীর্থ, ৫ ভিন্ত্বভীর্থ, ৬ স্ব্য্যভীর্থ, ৭ প্রবর্তীর্থ, ৮ তীর্ব্রাল, ৯ ব্যিতীর্থ, ১০ ব্যাক্ষতীর্থ, ৭ বায়তীর্থ। ব্যাহপুরাণে লিখিত আছে—

উপরি টক ছাদশতীর্থের মধ্যে অবিমৃক্ত ঠার্থে মান করিলে মুক্তি হয়। সকল তীর্থছানে বে কল, এক বিশ্রান্তিতীর্থে দেবমূর্ত্তিদর্শনে দেই কল এবং স্থান করিলে বিকুলোক প্রাপ্তি হয়। প্রয়াগতীর্থে মান করিলে অগ্নিটোমের ফল এবং এখানে মৃত্যু হইলে বৈক্ঠলাভ হইয়া থাকে।

> "প্রাসং নাম তীর্থন্ত দীবানামপি ছুল ভম্। যদিন সাতো নরো দেবি স্বয়িটোমকলং লভেং। ইক্রলোকং সমানাম্ভ নরোহদৌ দেবি মোনতে। স্বধাত মুচাতে প্রাণান্ম মনলোকং স গছেতি।"

( বিরাহপুরাণ ১৫২ অধার, ৬৮—৩৯ (রাক ) কনখন অভি প্রফতীর্থ, এবানে স্থানমাত্র স্থাপনিভ ঘটে।

> "তথা কনথলং নাম তার্থং গুহুং পরং মম। লানমাত্রেণ ত্রাপি নাকপুঠে স মোদতে ॥" ৪০

> > ( वर्बाह्रभूद्रान ১८२ च: )

ভিন্দুকভীৰ্মানেও বৈকৃঠলাভ।

"অতি ক্ষেত্ৰং পরং শুহং তিবুকং নাম নামতঃ। তদ্মিন্ লাতো নরো বেবি মম লোকে মহীরতে ।"

( बडाइপুडांव ১৫२।8১ )

জ্ঞ স্থাপন। এই ঘাটে এক মন্দির মধ্যে বিদিবার গদি আছে, তাহার উপর মুকুট থাকে এবং নানা পুলাচন্দনে শোভাদ্বিত হয়।

রবিবারে, সংকারি বিবসে ও চক্রত্ব্য-গ্রহণে ত্র্যাতীর্থে নান করিলে রাজত্ব-কল লাভ হয়।

"ভত: পদং প্রতিবিং সর্বপাণ শ্রমোচনন্।
বৈরোচনেন বলিনা প্রারোবিত: পুরা ৪০০
তিন্দ্রন্ত তীর্ষে নর: মাবং সর্বপাণে: প্রয়ার্ডত।
ভবাধ মুলতে প্রাণামমলোকক সক্ষ্রি-৪০৪
আহিত্যাহনি সংস্রাতে। প্রথমে চল্রম্প্রান্ত: ।
ভিত্মিন্ রাতে। নরো বেবি বা্লপ্রকলং লভেং ৪" ০৬
(ব্যাহপুরাণ ১০২ আ:)

ঞ্বৰতীৰ্থ — ক্ৰবতীৰ্থে পিতৃশান্ত করিলে পিতৃপপের চুলি হয় এবং প্লানকারী বৈক্ঠ-লাভ করিল থাকে।

"প্ৰবেণ যত্ৰ সম্বাধ্য যেক্ষা প্ৰসং তপ:।
তত্ৰ বৈ সান্দাত্ৰেশ প্ৰবৰ্তোকে মহীগতে।
তথাত্ৰ মূচ্যতে প্ৰাণাম্মনোকে মহীগতে।
(ব্যাহপুরাণ ১২২ আ:)

ক্ষিতীর্থ—ক্ষিতীর্থে লান করিলে ক্ষিলোক প্রান্তি ও তথার সূত্যু হইলে বৈত্ত নাভ হয়।

"তছক্ষিৰে মহাদেবি ধৰিতীৰ্থং পরং মম।

ভত্ত স্নাভো নরো থেবি ক্ষিলোকং প্রপদ্ধতে । অংশাত্র মূচ্যতে প্রাণাশ্মম লোকে মহীরতে।" ৬০ (বরাহপুরাণ ১৫২ আ:)

মোকতীর্থ—ব্যিতীর্থের ছবিংশে মোক্তীর্থ, এগানে মান করিলে মোক-লাভ হয়।

> "ৰক্ষিণে ক্ষতিউৰ্ব্চ মোক্ষতীৰ্থং পরং মন। তত্ত্ব গৈ সানমাত্ত্বেশ মোক্ষমেৰ প্ৰপক্ষতে ।" ৬১ ( মরাহপুরাণ ১৫২ আঃ)

মাথুরী-ব্রাহ্মণ+ অর্থাৎ চৌবেদিগের অধিকার। স্নানদানাদি করিলে চৌবেদিগের প্রাপা। এই ঘাটে পূজা আরতি প্রতিদিবদ সময় সময়

কোটিঠার্ক—দেবসুল'ত কোটিঠার্বে রান বান করিলে ব্রহ্মলাকে প্রথম হয়। উহাতে রান করিলে পিতৃলোক-তৃত্তি, পিতা-শিতামহাদি উদ্ধারলাভ করেন। বংশ,—

> "তত্ৰ বৈ কোটিতীৰ্থং হি বেবানামপি ছুল্ল ভব্। তত্ত্ব মানেন দানেন মম লোকে মহীয়তে ১৬২ কোটিতীৰ্থে নক্ত: মাধা সন্তৰ্গ্য পিতৃদেবতাঃ। তানিভাঃ পিতরতেন তত্ত্বৈব মাপিতামহঃ । ৬০ কোটিতীৰ্থে নরমাধী অঞ্চলোকে মহীয়তে ।" ৩১

( यहारुभूता १ ५६२ पहः )

বার্তীর্থ—বার্তীংবী পিওধান করিলে পিতৃলোক-তৃতি, বিশেষতঃ এথাৰে জৈটবানে পিওধান করিলে প্রাণিওধানের কললাক হয়। বরাহপ্রাণের মডে এই হাঘলতীর্থ থেবগণেরও তুল্ভ। এখানে সান, ধান, এপ ও হোম করিলে সহস্রভাক কলনাক হয়।

উপরি উক্ত তীর্থগুলি ব্যতীত ব্রাহপ্রাণে ধারণাত্মক, পোকর্ণ, একা, শিব, লোম, সক্রতীণতন, দশাধ্যেব, নাগ, খিটাতরণ, অন্ত, অকুর, বংস্ক্রীড়নক, ভারীর, কেনি, কালিকোল, ব্যলাভ্রন, বকুল, গোপীবর, বহুপত্ত, কাল্লনক, ব্যলাভ্রনক, সংপীঠক, পিশাচ, ব্যুনা, কুকগলা প্রভৃতি তীর্থগুলিও মধুরামওলের অন্তর্গত বলিরা বর্ণিত হংরাছে।

মাপুর—মধুরার চোবে। এবাণ বে, বরাছ আবেডাবের বর্ম হইতে এই জাতির উৎপত্তি হইয়াছে। বধা,—

> "সকৌ দিলা কাঞ্চকুলা মাধুরং মাগধং বিনা। বরাহস্য তু দর্শ্বেশ মাধুরো লায়তে ভূবি ঃ"

মধুধার বিভিন্নতেশীর অধিবাদীর সংবা জাট ও চৌবে ব্রাক্সব্যবের সংবাহী অধিক। চৌবেপণ সাধারণ অধিবাদী অংশকা অবেকাংশে বলবান। মধুবার চৌবে হর। ঘাটের উপরে ঘর বাটি আছে। ঐ বাটির উত্তরদিকে নহবত উত্তমরূপে বাছ হয়। অগ্রহারণের শুক্লাদশনীতে কংসবধ-লীলা হয়। ঐ দিবসে কংসলীলাতে কংসবধ সন্ধ্যার সমন্ন করিরা, পরে শ্রীকৃষ্ণ বলদেবস্বরূপ যে হই বালক হয়, তাহারা ঐ ঘাটে আসিরা বিশ্রাম করে।

কংস-মেলার প্রকরণ।-মথরামগুলে যে সমস্ত চৌবে আছেন. र्देशालत वान-त्रक-युवा मकलाहे मझयुष्कत (वन धात्रण कत्रिज्ञा রক্ত্মির মৃত্তিকা অকে মর্দন করিয়া, গাঁদা-ভ:স-খেলা পুলোর মালা গলায় দিয়া, বাঁশের এক এক গদাক্ততি ষষ্টি ধারণ-স্বন্ধে কেহ মুখে রাখিয়া প্রচররূপে সিদ্ধি-পানে উন্মন্ত হইয়া 'শুরুসে শুরুসে' এই ধ্বনি করিয়া বিকটমুর্ভিতে ৰতা করিতে করিতে নগর ভ্রমণ। এমত বচ দলবছ হয়। কোন দল এই প্রকরণে উত্তর হইতে দক্ষিণে আসিতেছে, কোন দল উত্তরে, কোন দল পুর্বের, কোন দল পশ্চিমে ঘাইতেছে। এই মত চতদিকে ভ্ৰমণ হয়। ইতিমধ্যে যদি কোন ব্যক্তি এই ছুই দলের মধ্যে আসিহা পড়ে, তাহার প্রাণ্থংশর। পরে চারিদণ্ড বেলা থাকিতে কংগটীবার মঞ্চ উপরে এক ক্রতিম কংদম্ভি কাগভেতে আচ্ছাদিত—বুহৎ আকার করিয়া তাহার হত্তে ঢাল তরবারি দিয়া বসাইয়া বাথে। কলেব বাবায় হলা ৩ মলাকেব আলভাল ভার-প্রদর্শনের কার হয়।

ঐ রক্তৃমিতে বধার রকেশর লিব আছেন, ঐ স্থানে বছ বলিলেই ইলানের বলের পঞ্জিল পক্ষে বধেষ্ট ভয়। বুলাবনে মহে,ৎসব থিতে হইলে মধুরাবালী চৌবে এাজপ্রিপ্তেন মিঠাই ভক্ষণ করাইতে হয়। বুলাবন ভীর্ষে এই মহোৎসব (সক্ষর) হান বিশেষ পুশাসনক বলিয়া প্রসিদ্ধ। মহুষ্যের একতা মিলন হয়। এমত মেলাতে লোক একতা হয় যে স্থান পাওয়াধায় না। তিন চারি হাত জায়গার এক টাকা ভাডা হয়। বৈলা ছই দণ্ড থাকিতে জীক্লফ-বলদেবের স্বরূপ চৌবে-দিগের ছুই বালক সাজাইয়া এক হন্তী উপবে আরোহণ করিয়া, রক্ষভূমের চতুপার্যে ভ্রমণ করিতে করিতে, সন্ধার কিছু পূর্বে বংশী ও শিক্ষার শব্দ করিবামাত্র, ঐ কংসমূর্ত্তির উপর চৌবে সকল লাঠির আঘাত করিয়া খণ্ড খণ্ড করিয়া, এক এক টুকরা কাগজ লাঠির আগীতে বান্ধিয়া, বিপরীত লম্ফ-ঝম্ফ দিয়া, কংসটীলা হইতে নামিয়া শ্রীক্লফ বলদেবের চতদ্দিকে বেষ্টিত হইয়া 'কংস মারো মায়াপুরী আয়ো' এই শব্দ করিয়া নৃত্য করিতে করিতে শ্রীকৃষ্ণ-বলদেবকে স্করে করিয়া ঐ বিশ্রান্তবাটে <mark>আনিয়া তথা</mark>য় আরতি ইত্যাদি হয়। তৎকালে দৈখিতে এমত ভাব হয় যেন সেই কংস-বধের দিবদ উপস্থিত, পেড়া লুঠ হইয়া ঠাকুরের ভোজন হয়। আৰু ঐ ঘাটে কাৰ্ত্তিক মাসে বুমদ্বিতীয়া (বাহাকে ভ্ৰাতৃদ্বিতীয়া কহে) দিবদ লানের মেলা হয়, বছ মনুষা একত হয়। ঐ দিবদ যমুনাতে শ্বান ক্রিলে ধ্মধন্ত্রণা কয় না স্মানান্তে বস্তাদি ধ্যুনার জলে কাচিতে নিষেধ আছে। স্নানায়ে বাহার বাহা সাধা ইচ্ছামত দানাদি। আবার সকল সময়ে ঐ ঘাটে স্নানের অধিক ফল আছে। তাহা মপুরা-মাহাত্মা দেখিলে কি ভুনিলে জানিতে পারিবে। এই ঘাটের দক্ষিণ কোটা---

পাৰ্ক্ত এৰ্থবাট, বোগ চীৰ্গণাট, প্ৰৱাগঘাট, রামঘাট, ক্থালতীৰ্থ-ঘাট, তিক্ত ভাৰ্থবাট, স্থাঘাট, ধ্ৰুবঘাট, ধ্বিতীৰ্থ, মোক্ষতীৰ্থ, ক্লোটতীৰ্থ, বৃদ্ধিতীৰ্থ – এই বার ঘাট বিশ্রাম ঘাটের দক্ষিণদিকে। ইছার মধ্যে যে ধ্রুবঘাট ঐ স্থানে ধ্রুব মহাশ্র তপতা করেন। মধুবন মধ্যে বমুনার তটে মহামুলি নারদ ঋবির মহামন্ত্র প্রদান
দক্ষিণকোটী অন্তর হাটে দান করাইরা উপরে ক্রবের
তপের হান—বাহাকে প্রবটীলা বলে,
ঐ হানে মহামন্ত্রপ্রদান। পল্পলাশলোচন দশন, বজ্ঞাদি টীলা
মধ্যে। অভাবধি ঐ টীলাতে যজ্ঞের তিল বব পাওরা বার, ভশ্ম
ইইরাও পূর্বরূপ আছে। এই প্রবহাটে প্রান্ধাদি করিতে হর।
মথ্রামপ্তলের প্রধান কর্ম বিশ্রাস্ত্রঘাটে দ্রান। প্রবহাটে শ্রাছপিশুদান।

উত্তর কোটী---

বরাহক্ষেত্র, বস্থদেবদাট, বৈক্ৡিঘাট, ধারাপত, ঘটোভরণ, সোমতীর্থ, কৃষ্ণগঙ্গা, চক্রতীর্থ, সরস্বতীসঙ্গম, দুশাখনেধ, গার্গি, সারজী, নবসঙ্গম, এই ঘাদশ ঘাট বিশান্তঘাটের উত্তর্গিকে।

কৃষ্ণগলার তাৎপর্য—বল্পনে মহালয়ের গলাভাতরকোটা লানের ইচ্ছা হওরাতে শ্রীকৃষণ আপন
আচিস্তাশক্তি হারার ঐ যমুনা মধ্যে গলা দেখান। দশহরা দিবসে
অর্থাৎ কৈয়েই-মাদের শুক্লা দশনীতে কৃষ্ণগলালানে বহু মন্ত্রের
মেলা হয়। অত্যক্ত আনন্দ-উৎসব হয়।

ঞ্ৰবটীলা—ইহাতে ধ্ৰুব মুহাশয়ের মূর্ত্তি প্রকাশ আছে, চরণ-চিক্ত আছে। ঐ স্থানে এক সাধু আছেন।

বলিটীলা—বলিরাজার তপস্থার স্থান। বলিরাজার মূর্ত্তি আছে।

কলিবুগটীলা—কলিবুগের তপজ্ঞার স্থান।

সপ্তবিটীলা—সপ্ত-ৰবির তপজ্ঞার স্থান।

কংসটীলা—এই টীলাতে কংসের রাজসভার স্থান ছিল। এই

৮০

স্থানে ধুমুম্বজ্ঞারম্ভ করিয়া সভা হয়। ঐক্রিফহন্তে মৃত্যু অগ্রহারণের শুক্র-দশমীর দিন।

মধ্রামণ্ডল এজ তুমি চৌরালি ফ্রোশ পর্যন্ত। নিজ মধুপুরী
মধ্রা-মঙল বাহাকে মধুরা কহে, এই স্থান চারি মুগের
রাজধানী। সপ্তপুরী মধ্যে তগবানের যে সপ্তপুরীর আব্যা আছে—
আবোধ্যা মধুরা মারা কাশী কাঞী অবস্তিকা।
পরী ভারাবতী হৈব সংগ্রা বাকদাধিকাঃ॥

পুরী ধারাবতী চৈব সংস্থিতা মোকদায়িকাঃ ভাহাতে যে মথুরাপুরী এই স্থান।

সতাযুগে মান্ধাতা প্রভৃতি রাজ্য করিয়াছেন, ধ্রুব ও বলি রাজা সপ্তর্ষি প্রভৃতি সকলে তপজা এবং যজাদি করিয়াছেন ৷ তাঁহাদিগের নীলাতে কীর্ত্তি আছে। ত্রেভাযুগে লবণাস্থর প্রবল হইয়া, এই মধু-পুরীতে যত মুনিঝ্যিগণ ছিলেন, সকলকে ভক্ষণ করিয়া রাক্ষ্য রাজ্য করে। মুনিপদ্বীগণ ব্যাকুক্রাত্মা হইয়া পলাইয়া অযোধ্যানগরে শ্রীরামচক্রের নিকটে পতি-পুত্র-বিয়োগের হৃ:থে হৃ:খিতা হইয়া **জনপুর্নিতালোচনা** হইয়া গদগদ-ভাষে ভাষিতে লাগিল। শ্রীরাম**চন্দ্র** রাক্ষ্যের এতাদুশ দৌরীয়া 🏝ত হইয়া রাক্ষ্যকুলাস্তক-লোচন ঘণিত করিয়া রাক্ষ্যনিপাত জন্ত শত্রুম্বকে আদেশ করিলেন। রামাদেশে মথুরাতে আদিয়া লবণাস্থরকে বধ করিয়া শক্রয় রাজ্য করিলেন। তৎকালে মুনিপত্মীগণ শব্দুত্বের নিকটে জানাইলেন বে, ডমি রাক্ষণবধ করিয়া নিষ্ণটকে রাজ্যভোগ করিতেছ এবং সকল প্রজাকে সুধী করিয়াছ কেবল আমরা চিরবিরহিণী রহিলাম, আমাদের বংশলোপ হইল। ভাহাতে শক্রয় মুনিপদ্বীদিগকে কহিলেন, তোমরা আপন ইচ্ছাতে যাহাকে যে বরণ করিয়া পতি সম্বোধনে সস্তান উৎপাদন করিবে, ভাহাতে ভোমরা দোষী হইবে না। মুনি- পদ্ধীগণ কহিলেন, জারজবংশে কি উপকার হইবে, কেহ মায় করিবে না, সন্তান সকল লক্ষা পাইবে, কেবল কুলটা হওরা হইবে। তাহাতে শক্রদের আজ্ঞা হইল বে তোমরা কুলটা হইবে না, তোমাদের গর্ভের সন্তানসকল বুগান্তে অত্যন্ত মায় হইবে, তাহার পুত্র শীরামচক্রের বজ্ঞে প্রকাশ হইবে। এই সকল মাপুরীরাহ্মণ হইবে। জাবিছি, মৈথিলি ভিন্ন মাপুরী বাহ্মণ এবং মাগধ বাহ্মণ বেমত সেই মত মাপুরী বাহ্মণ হইবে। সেই বংশ চৌবে সকল।

দ্বাপরসূর্গে কংশরাজা রাজত্ব করেন। কংশবধ করিয়া ঐক্ত

কলিযুগ বর্তমান। প্রথমাবধি হিন্দু-মুগলমানের রাজ্য ইইয়া
একলে কোম্পানি বাহাছরের রাজ্য। মথুরা রাজ্যধানী উত্তম সহর।
সকলই ইইক-প্রত্তরনির্দ্দিত গৃহ সকল। অনেক ধনাতাগণ আছে।
একজন ধনী লছমীটাদ শেঠ আছে, কুবের জুল্য ঘাহার ধন, ছাপ্পার
ক্রোর মজুত, তদ্ভির সকল দেশে কুঠা আছে। আর মথুরানগরে
টোবেদিগের বসতি। স্থানে স্থানে বাজার আছে। ভরতপুরের রাজার
উত্তম এক বাটা প্রস্তরনির্দ্দিত। তাহার পর শেঠদিগের বানী। ছই
পার্শ্বে উক্ত বাটা সকল। তাহার নীচে দোকান। মধ্যে রাজা
হালগুরাহপটা, বাজ্জ অর্থাৎ কাপড়ের দোকান। মধ্যে রাজা
হালগুরাহপটা, বাজ্জ অর্থাৎ কাপড়ের দোকান। সদ্ধিদিগের
দোকান। আর আর সকল জ্বাদির দোকান আছে। অ্রাসকলের দোকান রীতিমত সর্বাদা সাজান থাকে। মসম্বেদ
এক ভাল আছে। ঐ মস্জেদে মুগলমানসকল ভজন করে।
তাহার চতুপার্শ্বে বাজার শাক্সব্জি ভরিতরকারি কশি
সালগম গাজর আলু ইত্যাদি সকল জ্বা পাওয়া বার। নীচে বে
বাজার আছে, তাহাতে উত্তম উত্তম জ্বাাদির দোকান আছে।

বিলাতি সকল উত্তম দ্রব্য পাওরা হার। আর আর আনেক বেশাতির দোকান আছে। ইহারা সকল দেশের দ্রব্যাদির ব্যবসা করে
না। দেশী মহব্যগণ মধুরাতে আইসে। ব্রহ্ম চৌরালি ক্রোশ মধ্যে,
মধুরা প্রধান সহর, সর্ব্বর উত্তম পরিসর পথ। পূথে গলিজ করিতে
পারে না। এথানে কালেক্টর, মাজিইর, কমিশনর, মৃন্সেফ, সদরআমিন, সদরআলার কাছারি আছে। সৈত্য ও সৈক্তাধ্যক্ষণ
ছাউনিতে আছে। ডাক্কার, পোইমাষ্টার ছাউনীতে। নেটভ ডাক্কার
সহরের মধ্যে আছে। বালালিঘটাতে বালালিদিগের বাস।

সাহেবলোক প্রায় পাঁচিশু জনা আছে। সকলে ছাউনিতে বালালায় থাকে। ছাউনি সহরের দক্ষিণদিকে—নুত্রলাবাদের উত্তর। ঐ নুত্রক্ষাবাদে বাদশাহ্রদিগের রাজ্যসময়ে সৈম্ভদিগের ছাউনি ছিল, এক্ষণে মেগাজিন হইয়াছে। ইহার আড়পার মহাবন গোকুল। ইহার দক্ষিণে ধর্মণারা নৃত্ন প্রারনির্মিত হইতেছে।

মথুরাসহর—সরস্থার পোল পার হইরা দশাখনেধের ঘাট 
অবধি নগুরক্ষাবাদের মেগাজিন পর্যন্ত চারি ক্রোশ সহর। প্রস্থে
এক ক্রোশ। ইতোমধ্যে সমান বঁসতি। মধুপুরীর কেহ দুঃধী নহে।
স্ত্রীগণ শ্রীসম্পারা। চৌবেদিগের স্ত্রীগণ ঘাঘরা ব্যবহার করে না,
শাড়ী উড়ানি, আর আর সকলে ঘাঘ্পা, কাঁচলি, উড়ানি ব্যবহার
করে।

ধান্ত ক্রব্য সকল উত্তম উত্তম পাওয়া বার। দধি বেমত মধুরাতে ক্রেম, এমত দধি কোথারও দেখি নাই। দধি হতে করিয়া লইয়া বাওয়া বয়র। ছানার তালের স্তার থাইতে স্থাহ। এমত দধি সর্বাদার বাজারে পাওয়া বার না, পূর্বাহে কহিতে হয়। তথাচ বাজারে বেদধি বিক্রম হয় তাহাও অক্ত হান হইতে উত্তম। মধুরাতে পেড়াও

উত্তৰ জল্মে. কিন্তু ঐিচ⁄গ্রাধানে যেমত পেড়া হয় সেরূপ নহে। সর্কোৎক্ট গয়াতে তৎপরে মথুরাতে জন্মে। এতদেশের মধ্যে থাকা মথুরা ভিন্ন কোণাও জন্মে না। কুমড়ার মেঠাই, খাঁন্তা কচুরি, মগধের লাড় উত্ম। আর আর মিষ্টার প্রার চলন্মত। কিন্তু মধুরার চৌবেরা মিষ্ট অধিক আহার করে, এজন্ত সকল দ্রব্যেতে অধিক নিষ্ট বাজারে বিক্রেয় হয়। কিন্ত বাঙ্গালি কি আরু কাহার ফরমাইশ হইলে সমান মিষ্ট করে। সদর বাঞারে যাহা বিজের হর. তাহাতে অধিক মিষ্ট নহে। এতদেশের চলনমত প্রমানা ইত্যাদির ভাল ভাল রেশমী পশমী এবং উলকাপডের দোকানসকল সদর-বাজারে সহরে আছে। মেওয়াওঁয়ালার দোকান ভরতপরের রাজবাটীর নিকটে। কাব্ণী, মেওয়া সকল যাহা এতদেশে আইদে তাহা পাওয়া যায় আনার, আকুর, সেও পাওয়া ষার। বিহি. নাদপাতি উপস্থিত সময়ে পাওয়া যায়। বাদাম, किमिन, यनका, (शक्ता, भाषाता, कांकनो मर्द्यमा शास्त्रा गांवा আনারের অনেক রকমের আমদানি আছে। কাবুলী বেদানা, কাশীরী মিঠা, খাটা, ছই আছে।" পাহাত্ত আনার ইত্যাদি সকল মেওয়া আছে, এতাদৃশ আহ নহে। মথুরাতে কপি সকল রক্ষ জন্ম। ফুল, ওল, হট ভিরুরকম হইভেছে। সালগম, গালার, বিট, বিলাভী পালক হইতেছে।

## দন ১২৬১ দাল, ৮ জ্যৈষ্ঠ

প্রী প্রিপরন্ধান শ্রী থরাধাক্ষকের বিহারস্থান। এই স্থানের রক্ষক চারিদেব, চারিদেবী, চারিবট, চারি ঈশর, চারি সর্রোবর। ব্রজ্ব শ্রীকৃষ্ণের পৌত্র; তাঁহার স্থাপিত ব্রক্তৃনে আছে। ব্রক্ চৌরাশি ক্রোশের মধ্যন্তলে ত্রীর্ন্ধাবন । মধ্রামগুলা। এই ধামে দেশের মন্থ্যগণ রাজা ও ধনাত্য, অরধনী ইত্যাদি ব্যক্তিগণ অনেক,

কানা দেবালয় স্থাপিত করিয়া দেবসেবা, সদাবত, ধর্মণালা, জলছঅ, বানর, কচ্ছপ, মযুর ইত্যাদি পশুপক্ষিগণের ধাস্থারতা স্থানে খানে দেওয়াইরাছেন .

• বুদাবন— একবৈৰপ্ৰিয়াৰে লিখিত আছে, দেবৰি নাগৰ একবিস নাগাগৰ ছবিকে বুদাবন নামের কালৰ পিছলানা কালে কৰি কহিলাছিলেন যে, প্রাক্তালে স্থাপ্ত হিলেন। রাজবি কেলার নিডানেলি স্থাপ্ত হিলেন। রাজবি কেলার নিডানেলিক কার্য্য সকল কেবল উকুকের ঐত্যুৰ্থ সম্পন্ন করিছেন। কেলার সমৃদ্ধ রাজেল কেইই জনো নাই এক জিলিবেও না। কিছুকাল পরে জৈলীববের উপ্পেশক্রমে রাজা রাজ্য ও ত্রৈলোক্যনোহিনী প্রিয়তমাধিপের ভার প্রায়ত করিয়া তপতার নিমিত্ত বনে গমন ক্রেন। রাজা উহিরির একান্ত তক করিয়া তপতার নিমিত বনে গমন ক্রেন। রাজা উহিরির একান্ত তক ক্রিয়া অধিকতর হিরির থান করিতে লাগিলেন। তৎকালে হিলি হত্বাল তপতার নিকট থাকিলা সতত তারোকে কলা ক্রিত। এইরপে তিনি বহুকাল তপতা করিয়া বোলকধানে প্রন্ন করেন, তাহার নামানুসারে ঐ তার্থ কেছার নামে প্রস্কিছ হয়।

কোনবাৰের কমলার অংশবর্ষণা অতি তপখিনী ও বোগশারবিশাংশা বৃশা নামে এক কলা ছিল। বৃশা বিবাহ করেন নাই। ছুর্নাসা তাঁহাকে ছবিমন্ত্র প্রধান করেন। বৃশা পরে গৃহত্যাগ করিয়াবনে বাইয়া এই হরিমন্ত্র প্রধান করেন। কুগলান্ কুক তাঁহার তপলায় প্রত হইগাবর বিধার জল্প তাঁহার নিকট উপস্থিত হন। বৃশা বেন হুলরকার পান্তমূর্ত্তি রাধাকান্তই তাঁহার পাতি হন, এই বর প্রার্থনা করেন। কুক তথান্ত বলিয়া সেই নির্ক্তন প্রবেশ বৃশায় সহিত অবস্থিতি করেন। তৎপরে বৃশা পরমানশে শীক্ষকের সহিত প্রার্গকরবানে গ্রমন করিয়া রাধিকার লায় সৌভাগ্যশালিনী ও গোপাপুৰ্ব মধ্যে প্রেটা হন। সেই বৃশাবে ছানে তপলা করিয়াছিলেন, সেই ছানই বৃশাবন বানে প্রসিত্ত ইহাছে।

· · · (৮)

1

এবং অভ্যাগতদিগের আহার, অঘাচক ও মৌনী এবং অন্ধ-আতুর-দিগের পাষ্ট্রন্ম স্থানে স্থানে দেওরা আছে। এইরূপে প্রতি গৃহে প্রীশীরাধাকক্ষ-রূপ প্রকাশ করিয়া ছয় গোস্বামীর,‡ চৌষ্ট্র মোহা-

বুন্দাবন নাম হইবার আরও এক পুণাজনক ইতিহাস আছে---

পূর্কাবাল কুশ্রেজ রাজার তুল্টা ও বেষবতী নামে ধর্মণাত্রবিশারদা কন্তাবল সংসারবিধাণিনী হইলা তণক্তাচরণ করেন। কালক্রমে বেষবতী নারারণকে পতিরূপে প্রাপ্ত হন, তিনিই স্প্রিক মনক-কন্তা সীতা নামে প্রিচিতা।

কুশগলের বিতীয়া কলা তুনসীও হরিকে গতিরূপে বাঞা করিয়া তপলা করেন, কিন্তু দৈবাং মংবি দুর্পাদার অভিদাপে শুখাহ্বকে পভিরূপে প্রাপ্ত হব। পরে কমলাকাল্ডকে কাল্তরূপে লাভ করেন। এসেই হ্রেবরীই হরির দাপে বুক্ষরপা এবং হরিও ভাহার শাপে শাল্ডাম হন। কিন্তু হক্ষরী ভূলসী আবার সেই শিলারূপী হরির বক্ষঃখলেই নির্ভন্ত অব্হিতি করিয়া খাকেন। সেই ভূলসীর নামান্তর বুলা, তিনিই ঐ খানে তপ্স্যা করেন, সেইজ্ল স্কীবিগ্র ভূষকে বুলাবন বলিলা থাকেন।

শ্রীমতী রাধিকার বোড়শ নামের মধ্যে বুলানান স্পতিপ্রসিদ্ধ : তাহারই
রম্ম জীড়াবন বলিয়াও উহা বুলাবন নামে প্রসিদ্ধ ।

- † বাদৰ-রাজধানী মধুরাপুরী কালে বহু বিস্তৃত হইবা মধুরামওলে বা এলধান নামে অনিছ হয়। যে সময়ে • বিরি পরিবেটিত মগধের রাজধানী গিরিএজ নাম ধারণ করিয়াছিল, সেই সময় হইতেই মধুরামওলের অধিকাংশ এজনামে খ্যাত হইবাছিল।
- ় ছর গোপামী—> বীক্ষণ, ২ বীসনাতন, ৩ বীরমুনাথ ভট, ৪ বীজীব-গোপানী, ৫ বীগোপাল ভট ও ৬ বীরমুনাথ দাস। বৈক্ষসমাজে এই ছয়জন গোধারৰ ভক্ন' বলিয়া বিখ্যাত। এই ছয় গোখামীর বঙ্গেই বুন্দাবন্ধান মহাণ, ও চড়ুবনীতি বন-নির্ণন্ন সাধিত হইয়াছিল। আলোচ্য এছে একাধিক বার এই ছয় গোধানীর উল্লেখ থাকার পর পুঠার সংক্ষেপে ঠাহারের পরিচর ছেওয়া গেল—

১ রূপ ৩ ২ সনাতনপোথানী— ফুপ্রসিদ্ধ বৈক্ষবাচার্য ও কবি। প্রীকৈতভ মধাপ্রভুব শিষার গ্রহণ করিরা বৈক্ষবংশের নাহার্য-কার্ত্রনে বন্ধণরিকর হন। সংস্কৃত
ভাষার ইঁহারা জনাধারণ পণ্ডিত ছিলেন। ই হাবের রচিত গ্রন্থতলি প্রেম ও মাধুর্য
ভাষপুর্ব। উভর আতার মহাপ্রভুর পরম ভক্ত ও পার্ধরর ছিলেন। ইঁহারা কর্ণাটিরাল সর্ক্রেরে ক্ষেপ্র। সর্ক্রেরে বংশে সনাতন, রূপ ও বর্ষত লক্ষ্মইণ করেন।
সনাতন সর্ক্রেরিট, রূপ মধ্যম এবং নীজীবগোখানীর পিতা বর্ষত সর্ক্র কনিট।
মহাল্রেরে রূপ সর্ক্রেটি এবং সনাতন ও অসুপ্র ভাহার কনিট আতা। স্বাম্ব

ত রঘুনাথ ভট্ট গোলামী — এগোঁরাক এবার্ডিড ছব গোগামীর অক্তম। পানা নদীর তীরবর্তী রামপুর আমে তপন দিলা নামে এনৈক সাধু বাস করিতেন। এনি নাম করিকে সাধ্য করিতেন। এনি করিক লাখ্য করিকেন। এনে মাধ্য করিকেন। এনে মাধ্য করিকেন। এনে আছির তিনি ওসন মিলার সাধ্য করিকেন। এনে আছের সহিত নবনীপ আমিতে চাহিলে তিনি উচ্ছাকক বারাপনী যাইতে আমেল করেন এবং ওগার আমার সাকে বিলান ছইবে এইকপ আমান নেন। একমুসারে মিলা সামীক বারাপনী যুাআ করেন। আমুসানিক ১৯২৭ শকে তপন মিলার এক পুত্র অন্তর্গন করেন, উচ্ছারই নাম রয়নন্ধ। পরে তিনি ভট্ট গোগামী উপাধিতে বৈজ্ঞবস্থাতে প্রভিট্টা লাভ করিবাছিলেন।

 স্তের 

ত বাদশ গোপালের: সেবা ও সমাজ, নিয় এবং ভক্তগণের

বারার উত্তম সঠেতক্স রাধিরা নিত্যধামে নৃত্যানন্দে ব্রজবাসী বৈক্ষব-

ভাগৰতের টীকা, ভাগৰত-সক্ত প্রভৃতি বহু গ্রন্থের রচনা করেন। তথাটাত ইংহার নিখিত বহু কুল কুল তথানিও আহে। ভতিরয়াকর গ্রন্থে বীকীব লোখানীর বিভৃত বিবরণ সংস্থাত হুইলাছে। বীকুলাবনে 'রাধাদানোগ্র'-সেখা ইংহারই প্রতিষ্ঠিত।

- ৫ গোপাল ভট্ট—জনৈক বিখ্যাত তৈওভভত। ইহার ভববৰ্ভভি-বিলান'
  বা হিরিতভিবিলান' নামক সংস্কৃত গ্রন্থ বৈক্রমনালে বিশেষ সমাযুক্ত। এই
  হরিতভিবিলান মতেই গৌড়ীর বৈক্রমনালের বাবতীয় ধর্মাযুক্তান পরিচালক
  হইরা থাকে। ইনি বাকিশাত্য-বৈধিক ত্রাহ্মণ, আত্মার প্রকারী। ইহার
  পিতার নাম বেইট ভট্ট। বর্তমান সম্বে শ্রীকুলাবনে যে রাধারমণ দেবা আছে,
  তাহা ইহার প্রতিনিত।
- ত রখুনাথ নাসগোথামী—জনৈক অসিদ্ধ ভক্ত-বৈক্ষণ। চগনী জেলার অন্তর্গত সংস্কোদের নিকটবর্তী হরিপুর রামে আর্ছচিবিশত বর্গ পূর্বে মহাসরাজ্য কারছ-বংশে জর্মহণ করেন। ই হার শিতা কোটাপতি গোবর্জন। উপাধি মজুমহার। রখুনাথের একুতি অতি বিচিত্র হিলা। বাল্যকাল হইতেই ওাহার সংসারে আসজি হিলা না। বংকালে হরিবাস হারহ সাপ্তরে গমন করেন, তব্দর্শ্বর ওাহার সরিবোধি করিছা তাহার কুপা-ভালন হর। ই সময়ে রখুনাথ তদীর প্রেহিত ও অব্যাপক বলরাম আচার্যের গৃহহ অব্যয়মকালে গৌরাজের নাম তানিরা তদীর চরণে আস্বসমর্পণ করেন এবং অবশেষে নীলাচলে বাইরা মহা-অত্ব সহিত সাম্বালত হন। সাংসারিক বেহবজন, অতুল ঐবর্যা ও পত্নীপ্রেম কিছুতেই ওাগকে সংসারে টানিয়া রাবিতে পারে নাই।
- চৌধটি মেহন্ত উক্কলীলার নারব, হনুমান, অলব, হঞাব, বলিঙ, বিভাবৰ, কটাকপুত্র (একা), বেগবাসে মুনি, সক্বপৃত্যক, প্রস্কাহন্ত, 'আনিকজ্মা, তব্যবে গোবামা, পরত, প্রানিত, ক্রপাসা, ইপ্রভাব, চক্রভাবি ক্রক্রি, বিধানিত, অর্জুন, ভাওরী, চল্লাবলী, জল্লা, সন্থা, ললিডা, বিপাবা,

विख! कम्लक्लाका, फुक्रविका, हेन्स्टब्स, दक्रपाची, क्राप्तवी, तक्रट्रिशा, सनिका, मांबरी, क्रांकणी, मध्ता, मध्तक्तना, कलक्छी, नाम्नीमुश्री, क्र्कछी, मधुमठी, बीता, वुन्नारन्यो, कलावछो, शिट्यममञ्जवी, लोलामञ्जवी, बारमाझामा, श्वप्रका, बानरवर्षा, যজপত্নী, চন্দ্ৰলভিকা, রত্বাবলী, গুণচূড়া, কপুরিমঞ্জরী, ভামমঞ্জরী, কামলেখা, কাম-মঞ্জী, কলভাবিণী, কলুৰগ্ৰী, খঞ্জনী, নীলকান্তি, কলাপিনী ও হকেশী ই হারাই শীগৌরাকলীলায় শ্রাণী, মুরারি গুপু, পুরন্দর পতিত, গোবিন্দানন্দ, পরাধাস প্ৰিভ, রামচক্রপুরী, হরিদাস ঠাকুর, বুক্দাবন দাস, মীনকেতন, রামদাস, শ্রীরঘু-নশন, বক্রেশর পঞ্জিত, গোপীনাথাচার্য্য, বল্লন্ড ভট্ট, গক্লড পশ্তিত, আচার্য্যক্রছ, জগলাথ আচার্ব্য, প্রভাগুলিভা, গদাধর দাস, খনমালী আচার্ব্য, রার রামানক. रमवानन পश्चित, महानिय, महत्र পश्चित, भौरमानत পश्चित, अवानम उक्काती, चक्रण शास्त्रावद, दनमाली कवित्राख, बायद शामां कि, अद्योधानम महच्छी, কৃঞ্দাস ব্ৰহ্মচারী, গদাধরভট্ট, অনন্ত আচার্য্য (কুলীন ব্রাক্ষ্ম ), রাধ্বপত্তিত, भाषबाहार्या, भक्तप्रवस, विकारताहल्लाडि, बलाउन क्योहार्या, बाभागन बन्ध, मानक ठीकुब, मञ्जूबोक थी, नडहुबि मबकाब, निवानम श्रम, युक्मशाम, श्रीविन ঘোৰ, ভূপভাঠাকুর, লোকনাৰ গোখামী, মাধবঘোৰ, বাহঘোৰ, শিবিমহান্তি, শুক্লাম্বর এক্ষচারী, জগদীশ পণ্ডিড, ভগবান আনচার্য্য, পর্মামন্দ সেন (কবি-कर्गभूत ), त्रामाहे ठे कुत्र, दिल इतिमान, (इन्हें इतिमान, सम्बदक्काराती, वालीनांध পণ্ডিত, চির্প্লীবদাস, জুলারানন্দ হাকুর, নবাই হোড়, জগদানল পণ্ডিত ও कामाति सम 'कोवर्डि महाख' नाट्य बाडि ।

† ছাৰণ গোপাল—গোপাল অৰ্থে একের রাখাল। বে সকল ভক্তপৰ
এনী নাম কাৰ্যপ্ত আনি আনন্দের সহিত স্থাস্ত্রে আবদ্ধ ছিলেন, ওছারাও
প্রোপাল নামে অভিহিত হইতেন। আহিতজ্ঞানীলার এখান এখান পাল্লবর্ধ
আকুকলীলার পাল্লপালীকণে অবতীর্ধ হন, ইছাই বৈক্ষপার বিহান। আহুক্
শীলায় নিম্নিধিত ব্যক্তিগ্রাধাণ বাল্প পোপাল নামে অভিহিত হইতেন,—

গণ আছেন। নৃত্যগীত মহোৎসব সর্ককণ হইতেছে। স্থানে স্থানে প্রান প্রতিদিবদ পাঠ হইতেছে। পঞ্চবন সংজ্ঞানমাত্র আছে। সহরের অধিক বসতি ও দেবালয় সকলই প্রস্তুর এবং ইষ্টকনির্ম্মিত গৃহ-মন্দির সকল। দ্রব্যদকল বাজারে পাওয়া বায়। বৈঞ্বদিগের অধিক প্রতাব। বঙ্গদেশীয় ব্যক্তি অধিক প্রতাব। বঙ্গদেশীয় ব্যক্তি অধিক প্রতাব, বিশেষতঃ বিধবাজাতি, শুড়ি, স্বর্ণবিশিক, তাতি অধিকাংশ

"বীদাসক স্থাসক স্বলক মহাবলঃ। স্বাহ উদ্দেশক স্বোককৃষ্ণ্যাসকো। লবকক মহাবাহগৰ্মবীববাহকে।।"

শ্রীকৃক্সনাম শ্রীনাম, ত্রাম, বহুৰাম, ত্রাক, মহাবল, ত্রাক, ভ্রমের, ত্রাককৃক্ষ, ত্রাম, লবক, মহাবাহ ও হারবাহর্শকর এবং শ্রীগোরারলীলায়—
আভিরাম ঠাকুর, ত্বলর ঠাকুর, ধর্মের পত্তিত, গোরীগান পত্তিত, কমলাকর
পিলালাই, উদ্ধারণ দত্ত, মহেশ পত্তিত, প্রবাহ্তম নগার, ঠাকুর প্রবাত্তম,
গরেম্বর ঠাকুর, কানাই ঠাকুর (কানা ক্রিক্রাস) ও শ্রীধর (বোলা-বেচা) এই
বাহশ শ্রন হাবশ গোপাল নামে গরিচিত ছিলেন।

যাদলৈতান্তরণাারি কালিন্দা: সপ্তপশ্চিমে। পূর্ব্বে পঞ্চবন: প্রোক্তং তত্তান্তি শুহুন্দুরন্ ॥"

গুল্বন, জীবন, গোহৰন, ভাজীবন, নহাবন, ভালবন, ধণিৱৰল, বংলা-বল, কুমুদ্বন, জানাবন, মধুবন ও বুলাবন, মধুবার আভর্গত এই বাংলা বন। সাতটি বন ঘণুনার পশ্চিম ও পাঁচটি উহার পূর্বপারে আবস্থিত।

শ্ৰীকুকের ঐাড়াত্মির মধ্যে বনুমার পূর্বপারস্থ তরালি পাঁচটি ও পশ্চিমপারস্থ তালালি সাতটি বনের মধ্যে গোকুল, বুশাবদ ও সধুখদ এই করটী মহাবদ এবং অক্সাক্তমলি উপদন বলিয়া পরিচিত। অভ্য অভ্য সকল জাতি আছে। দাভ, স্থ্য, মধুর, বাংসল্য এই চারিপ্রকার ভাব প্রবল আছে।

শ্রীরন্দাবনধামে যমুনাতে ঘাদশঘাট—

কালীৰহ, গোপালঘাট, স্থাঘাট, প(প্রাক্তনঘাট, বুগলঘাট, বিহারঘাট, আবিরঘাট, দিশারঘাট, চীরঘাট, ভ্রমরঘাট, কেশীঘাট, রাজঘাট, এই ঘাদশ ঘাটের নাম।

শ্ৰীবৃন্দাবনের বুষুনাতে ছাদশ ঘাট। ঐ সকল ঘাটে স্নানাদি করিতে হয়। কালীদহের ঘাটে• বে স্থানে কেলিকদম্ম হইতে

বাদণ বাট বাদের কালীর সর্পের মন্তক উপরি দাড়াইরা কালীরমর্দন করেন, সেই কদম্বমূলে যে বাট আছে, তাহার নাম কালীদহের বাট। কালীদহের সীমা চারি কোশ। এই বাটের উত্তর এক কোশ
বাইরা সফরি মূনির আশ্রম উচ্চ টালা মধ্যে। ঐ গ্রামের
নাম সনরক, বিতীর গ্রাম তনরক। এই হল বে চারি কোশ
তাহার উপর মূনির তপক্ষার আশ্রম ছিল। এই হলে এক বৃয়াল
মুংস্ত আপন বহু শাবক লহরী চারণ এবং কৌড়াদি করিত।
মূনি মহাশ্র দেখিতেন এবং কেহু হত্যা করিতে না পারে
তাহার উপার করিতেন। দৈবাধীন একদিন গক্ষ ঐ হানে
বাইরা ব্লোপরি হইতে বারংবার মংস্ত প্রতি দৃষ্টিপাত করিতে
মূনি মহাশ্র পক্ষিরাজকে নিবারণ করিলেন। তৎকালে আঘাত
না করিরা পরে মূনি আপন সাধনে ধানস্থ থাকাতে ঐ সমর
শাবক মধ্য হইতে ঐ বৃয়াল মংস্ত ধরিরা ভক্ষণ করে। পরে

<sup>\*</sup> उब-পश्चिम्मा, २०५ शृः बहेवा।

মুনি মংস্ত না, দেখিয়া গরুড তক্ষণ করিয়াছে, যোগবলে জ্ঞাত ' হইয়া, পক্ষিরাজ্বকে অভিশপ্ত করিলেন যে, এই হলের জল গরুড় ম্পর্ল করিবামাত্র প্রাণত্যাগ করিবে। এই অভিশাপ ইইলে পর পক্ষিরাজের ঐ এক বোজন মধ্যে কাহারও হিংদা করিবার ক্ষমতা রহিল না। এখানে নাগকুল সকল বিনাশ করিতে রহিলেন। অহি-বংশ দেখিবামাত ভক্ষণ। প্রায় বংশুদক্ষই নাশ কবিল। নাগমধো কালীয়নাগ আপন বংশরকার জন্ম জী लहेबा के उत-मर्सा वाम कतिन। कानीरबर्ज विव जैनगारत सन বিষত্তা হইয়াছিল। পানমাত জীবজন্ধ সকলই বিনষ্ট হইত, জলস্পর্শ করিতে পারিত না। পরে ছাপর যুগে ভগবান অঞ্জমগুলে মানব-লীলাতে গোপ-গছে আদিয়া গোপাক্তরপে ক্রীড়াসময়ে ঐ কালীয়নাগকে দমন করিয়া ত্রন পরিত্যাগ করান এবং নাগপত্নীদিগের স্তবে তট্ট হইয়া মস্তকে পদচিক্ষ দিয়া গৰুড-ভৱে নিছতি করান। ঐ জল মিষ্ট করা ইয়। ঐ ঘাটে স্নানদান-শ্রাদাদি করিতে হয়। অস্তাবধি কার্তিকী-শুক্লাচতুর্দশীতে কাদীয়-মন্ধনের মেলা ঐ স্থানে হয়। তাখাতে বছমফুষোর সমাগম হয়। ঐ কালীবহ মধ্যে এক কালীয় দৃপাঞ্জি বছফণাযুক্ত কাষ্টের কণ্ডলাক্সতি সূৰ্প নিৰ্ম্মিত করিয়া ঐ স্পশ্যুত্তি নৌকাতে রাখিয়া कन मध्य अमन हरू। পরে অপরাজকালে একজের ব্রুপধারী এক বালক করিয়া ঐ কদম্বুক্ত হইতে ঝন্ফ দিয়া ঐ নাগের উপর পতিত হয়। তাহাতে এমত চোঙ আছে, তাহার ভিতর মত্ব্য থাকিলেও দৃশ্ত হর না। যেরপ ছাপরদীলাতে ভালীয়-দমনের বর্ণনা আছে, যমুনাতে মল হইলে পর সকল গোপালগণ এবং গোপ-গোপীগৰ ক্লফ-অদর্শনে বিবন্ধ হইয়া ব্যুনাতটে সকলে রোদনপূর্বক জল নিরীক্ষণ করিতে করিতে কথন কিঞ্চিৎ চূড়ার অগ্রভাগ, কথন চূড়া, কথন মন্তক, কিছু কিছু জলমধ্যে দৈখিতে পাইরা হর্বস্কুক ইইরাছিল। তদ্ধপ ঐ লীলাতে ব্রজ্বাদী বাল-বৃদ্ধ-ব্র্বা স্ত্রীপুক্ষগণ ঐ হানের ছুই তটে এবং নৌকারোহণে জলমধ্য সকলে নিরীক্ষণ করিতে থাকে। যৎকালে শ্রীক্ষণচক্রকে কালীর-মন্তক উপরে দর্শন হয় এবং নাগপদ্ধী সন্মুথে তাব করিতে থাকে, তৎক্ষণাৎ পূর্বলীলার ভাব উদয় হয়। জলে-ছলে ব্রজ্বাদিনী ব্রজ্বালা ও ব্রজ্বাদীতে বেষ্টিত থাকে। সকলে হর্বযুক্ত হইরা জয়ধ্বনি করে। পরে শ্রীকৃষ্ণকর্প প্রকাশ হইলে আরতি করিয়া কোলাহল বাদ্ধ দারার গৃহে লইয়া যাইবার পূর্বকালে এক চরকিবাজিতে আয়ি দেওয়া হয়। তাহা হইলেই জলে হলে বৃক্ষমূলে ঘেথানে যত নানামত তামাদা ইত্যাদ্ধি: হইতেছিল, সকল মেলা ভক্ষ হয়া, আপন আপন গৃহহ গ্রমন।

গোপাল্বটে — ঐ কালীয়-দমন বাটের দক্ষিণ। এই স্থানে যশোদা, রোহিনী প্রভৃতি বৃদ্ধা বৃদ্ধা গোপিনীসকল জ্ঞীকৃষ্ণ জলমগ্প হওঁয়া শুনিয়া এলোকেশা, ছিন্নবেশা হইয়া 'গোপাল' 'গোপাল' করিয়া রোদন করিয়াছিলেন এবং 'ক্রোথায় গোপাল' বনিয়া ঐ স্থান হইতে ব্যুনার জল নিরীক্ষণ করিয়াছিলেন।

হুর্ঘাঘাট - এই ঘাটে যশোদা যৎকালে পছছিলেন, হুর্ঘাদেবকে মানন করিলেন যে, আমার গোপাল জলে ময় হইরাছে, আমি গ্লোপালকে পাইলে ভোমার পুজার নিয়ম করিব। কালীয়-মর্কনান্তর প্রীকৃষ্ণ প্রকট হইলে পর ঐ ঘাটে আসিয়া হুর্যপুঞা

ব্রদ-পরিক্রমা, ৩১৯ পু: ব্রষ্টবা।

করেন এবং স্থ্যদের দ্বাদশরাশির দ্বাদশ আদিত্যরূপ ধারণ করিয়া শ্রীনন্দলালকে ব্রহ্মসনাতনরূপে স্তব করেন।

পদ্ধন্দন্দটি - এই দাটে ঐক্ষ কালীয়মর্দনান্তর শ্রম-দর্ম নিবারণ জন্ত স্থাপন সাকোপাল সমভ্যারে বসিয়া সকলের মনোক্তটি করেন।

বুগল-ঘাট--- জী-শীরাধাকৃষ্ণ বুগল হইয়া স্নান, করেন এই ঘাটে।

বিহার-বাট—এই স্থানে ঐতী-গ্রাধারুষ্টেক গোষ্ঠমিলন হইয়া বিহার হয়।

আঁধের ঘাট— এই স্থানে গোচারণ সময়ে রাধালগণ সজে আঁথি-মুদানি থেলা করিয়াছিত্বেন।

সিলার-বাট—শ্রীরাধার বৈশভ্ষা শ্রীকৃষ্ণ আপন হত্তে করেন এই স্থানে বটমূলে। এজন্ত সিলারেঘাট নাম আছে। সিলারঘাটে নিত্যানন্দ-বংশ গোস্বামীদিগের মহাপ্রভুর সেবা এবং শ্রীশ্রীরাধা-কৃষ্ণ ব্যালমূর্ত্তি আছে। গোস্থামীমহাশ্রেরা ঐ স্থানে সপরিবারে বাস করিয়া আছেন। পূর্বস্থান বটমূর্ণে এক ছোট মন্দির আছে, ভাহাতে চিত্রপটে সিলারের চিত্র আছে।

চীর-ঘাটা —পূর্বে নিকুঞ্জঘাট কহিত। একণে বহুকাল হইল চীরঘাটরা ব্রজবাসীরা যাত্রীদিগকে ব্রস্তহরণের ক্ষম্বর্ক্ষ দেপাইবার জন্ম বথার্ব চীরঘাট বহুদ্র জন্ম না যাইরা এই নিকুঞ্জঘাটের কৃদ্মবৃক্ষে চীর অর্থাৎ ব্র্যাদি শাণাপরে রাখিয়া চীর-

<sup>\*</sup> शक्तम=(श्रीविक व्यवस्त । वस-श्रीव्या, २०० श्री वहेवा।

<sup>🕇</sup> अब-गतिक्यां, २९६ शः जडेग ।

ঘাট বলিয়া প্রকাশ করে, তদবধি নিকুঞ্জঘাট গোপন হইরাছে। এই স্থলে নিকুঞ্জ-বিহার করিয়া বিশ্রাম করিতেন।

ল্রমর্ঘটি—এন্থলে ভ্রমরাচারিথেলা অর্থাৎ রাথালনিগের সঙ্গে লাঠিম থেলা হয়।

রাজ্বাট—এই বাটে ব্যুনাতটে শ্রীক্লক সালোপাল লইরা গোর্চ-লীলাতে রাধালরাজা হইয়া ব্যুনার ঘাটে গোপিনীদিগের নিকট দ্ধিছঝের দান লইতেন।

ক্ষোর বন। এই স্থান কালীখদমনান্তর ব্রজভূমের সকল গোপ-গোপী বাহারা শ্রীকৃষ্ণের জলমগ্ম শুনিরা শোকাকৃল হইরা আসিরাছিল, ঐ সকলকে লইরা রাত্তিবোগে অবস্থিত হর। এ সংবাদ কংসরাজা শুনিরা দাবাগ্রি • দৈত্যকে প্রেরণ করেন। শ্রীকৃষ্ণ বল্যের ব্রজ্বাল্

বল-পরিজ্ঞা, ২৭৬ পুঃ স্তইব্য )

গোপ-গোপীতক এক হানে আছে। সকলকে বিনাপ করিরা আইন। দৈত্যরাক আদেশে আদিরা আপন প্রভুত্ব বৃদ্ধি করিরা করিবার করু বদনবিতার করিরা মারাধি হারা সকল দ্ব্য করিরা প্রাস্থান করিতে উচ্চত। এইরপ দাবানলের বিক্রম দেখিরা সকল গোপ-গোপী, নক্ষ-যোগা প্রভৃতি তীত হইরা রোদন করিতে দেখিরা সকলকে কহিলেন চক্ষু মৃদ্রিত করিরা থাক। অগ্নি-নির্কাণ হইরা সকল বিপদ খণ্ডন হইবে। এই কথার সকলে চক্ষু মৃদ্রিত করিবে পর জীক্ষ ও দাবানল ভক্ষণ করিরা দৈত্যকে বিনাশ করিরা এক কুও আপন অচিন্তা-শক্ষি হারা খনন করিলেন। ও কুণ্ডের নাম দাবানলকুণ্ড। এ জলে সকল স্থাতিল হইল। এক্ষণে এই কুণ্ড-তীরে কার্য্বিকী ভরাহাদশীতে দাবানলভক্ষণ-লীলার মেলা হয়। ও কুঞ্জের চতুন্দিক ঘটবান্ধা আছে।

অটল-বন—এই বনে গোপ-লীলাতে গোপালনিগের সমস্তারে শ্রীকৃষ্ণ গৌলখেলা খেলিতেন। গৌল খেলিতে খেলিতে এক

শ্বিদ এই গৌদ কালীয়দহ মধ্যে পতিত হয়।

ঐ গৌদ তুলিবার উপলকে কদম্বুক হইতে
ইদ-মধ্যে কাপ দিয়া কালীয়দমন হয়। একণে ঐ বনমধ্যে
অটলবিহারী ঠাকুর আছেন এ এক দেশোয়ালি বৈফবের দেবা।
বে হবে ঠাকুর আছেন উত্তম মনোরম হান।

বিশ্রাম-বাগ—গোর্চশীলাতে গো-চারণ করিতে করিতে এই স্থানে আসিরা বিশ্রাম করিতেন।

রাধাবাগ-গহররবনের অন্তর্গত। প্রীরাধা বন-ভ্রমণান্তর
আপন স্বিগ্র সমস্তারে এই বাগ-মধ্যে বিপ্রাম ক্রিতেন।
শ্রীরাধার নিজ বাগ।

গছবর-বন — এই বন-মধ্যে গো-চারণ করিতেন। অত্যন্ত নিবিঞ্ বন ছিল। মহারাসে এই বনে অন্তর্ধান হন। এই বনের পশু-পক্ষীগণ অন্তাবধি রাধা-কৃষ্ণক্ষনি প্রাত্তে জ্ সন্ধার করিরা থাকে। কেলিকদম্বর্কে রাধাক্ষ্ণ নাম বক্ষ:-নিম্নে খোদিতের ভার প্রকাশ হর। অনেক ময়্র-ময়্রী সর্ক্ষা নৃত্য করিতেছে। স্থানে হানে সাধুগণের আশ্রম আছে এবং অনেক দেবালর হইরাছে। ভোজনের উত্তম স্থান। মনঃত্রির ভাল হয়।

গৌ ঘাট—কেবারবনের নিকট। এই ঘাটে বৃন্ধাবনের গোচারণে গো সকল জলপান করিত। কার্তিকী শুরুষটনী তিথিতে
পো ঘাট
এই স্থানে মেলা হর অর্থাৎ এই শুরুষটনীতে
শ্রীকৃষ্ণ প্রথম গোর্ডাগীলার দিবস বংসগণ
লইরা বলদেব সমভ্যারে শ্রীকৃন্ধাবনে গোঠে গমন করেন।

বংশীবট — এই বট-মূলে (প্রাক্তক) বংশীধনি করিরা ব্রজগোপীদিগের মনোহরণ করিরা মহারাস করেন। ব্রজরাত্ত — ব্রজার

একরাত্ত রাসক্ষীড়া করেন। এই রানে এক

এক গোপী এক এক রুষ্ণ। এই রাসন্থলে

ত্তী কির পুক্ষের গমনাগমন ক্ষমতা ছিলুনা। এজন্ত মহাদের আপন

রূপ গোপন করিরা স্থিবেশধারণ করিরা রাসন্থলে গমন করেন।

প্রীকৃষ্ণ করিত স্থী জানিতে পারিরা নৃতন শুত্রর্থা স্থী কাহার
মুখের স্থী বলিরা সকল স্থীগণকে জিজ্ঞানা করিরা, কাহার ব্ধের
ন্বির না হুওয়ার জন্ত, শিবমূর্তি প্রকট করিবার জন্ত বন্ধ ধরিলেন।
তৎপরে মহাদেব কহিলেন, প্রীন্তীরাধার্কক্ষের মানবর্গীলাহ রাসক্ষেদ

রূপনার্থ স্থীরূপ-ধারণ। পুর্ক্ষে বে স্থানীবট ছিল, ভাহা ব্যুনাগত

হইরাছে। ঐ বটের শাধা লইরা ঐ স্থানের সমন্থানে বৃক্ষ হইরাছিল।
তথার এক ক্ষুদ্র মন্দির আছে, তাহাতে চিত্র ছারার রাসলীলা চিত্রপট আছে। বৃগলপদের চিক্ষ স্থাপিত আছে। একপে বটরুক্ষ গত
হইরাছে, লৃতন বৃক্ষ ঐ শাধা হইতে স্থাপিত করিরাছে। বংশীবটের
মূল হইতে গোপীনাথের যোগপীঠ অর্থাৎ বে স্থানে গোপীনাথ প্রকট
হন, সেই স্থান পর্যন্ত স্থড়ক আছে। পূর্ব্বে এরুপ সাধু সকল ছিলেন
যে, ঐ স্থড়ক মধ্যে গমনাগমন করিরা ঐরুক্তের লতা-সাধনের স্থল
দর্শন করিতেন। একপে স্থড়ক,মধ্যে প্রবিষ্ট হইতে পারে না। গোপীনাথের গোসাঞি ঐ স্থড়ক মধ্যে প্রবেশ জক্ত চারি পাঁচটি মশাল
আলাইরা তন্মধ্যে প্রবেশ করিরা কিয়দ্বর গমন করিলে পর, ছোর
আক্ষর্কারমর ভূমিমধ্যে এক একটি করিরা ক্রমশং সমস্ত মশালগুলি
নির্ব্বাপিত হইল এবং ভর প্রদর্শিত হইল। এক্ষণে বংশীবটস্থলে
চতুর্দ্ধিকে প্রাচীরবৈন্ধিত এক থানা আছে। তথার একজন জমাণার
থাকে, দশ বার ঘর লোক বাস করিরাছে। বংশীবটের রক্ষক
একজন ব্রন্ধচারীর চেলা। উাহার নিজ্ঞের সেবা আছে।

গোণীখর মহাদেব — রাদনী নার এগোণীবেশ ধারণ করিয়া আসাতে প্রকৃষ্ণ শিবমৃত্তি প্রকৃষ্ট করাইয়া বৃন্দাবন মধ্যে স্থাপিত করিয়া কহিলেন বে, "অন্ধান্ত থিকট করাইয়া বৃন্দাবন মধ্যে স্থাপিত করিয়া কহিলেন বে, "অন্ধান্ত থিকটো করিবে। আর বে কেহ বৃন্দাবননীলা দর্শনার্থ আসিবে, অত্যে গোপীখরের পূলা করিয়া দর্শনাদি করিলে, পশ্চাৎ বৃন্দাবনধামের মুগলয়প দর্শনের অধিকার হইবে।" একণে বৃন্দাবনধামে যে কেহ আছে এবং আইসে গোপীখ্রে হৃত্ত্ব ও

अब-পরিফ্রমা, २৯৪ পৃ: এইবা।

ষমুনার জল বিবদল দিয়া অত্যে পূজা করিরা পশ্চাৎ দেবালয়ে ভেট করে। এছলে পূজারি পূর্বে ব্রাহ্মণ ছিল, একণে যোগী।

ধীর-সমীর — এই স্থল যমুনাতটে, বংশীবট নিকটে। এই স্থানে মন্দ্ৰ মন্দ্ৰ সমীরণ অৰ্থাৎ বাতাস সর্বলা প্রবাহিত হইত,

এজন্ত ধীর-সমীরণ নাম। মহারাদে ব্রজাকনার দর্পত্-বিজন্ম শীর-সমীর দর্পত্-বিজন্ম শীর্কক অন্তর্হিত হইরা ব্রজাকনাক্রির দর্শন দেন। শীক্ষকের দর্শন পাইলে পর সকলে আপন আপন উজানি বস্তু ভ্নিতে পাৃতিয়া শীক্ষকের বসিবার আসন করিয়া দিয়াভিলেন।

মধু পণ্ডিত ঠাতুর আপন ইপ্রদেব জাত্বা ঠাকুরাণীর ব প্রমুখাৎ ভনিরাছিলেন বে, ত্রীতৃলাবনে অস্থাবধি ত্রীত্রীগোপীনাথ নিতাধামে নিতাশীলা করেন। সেইরূপ বংশী-ধ্বনি এবং

\* আহ্বা-ঠাকুহাণ্ট —নিত্যানন্দের পত্নী। ইনি স্থাণাদের কল্পা। স্থানাদের মৃত কল্পা বন্ধানে নিত্যানন্দ অনৌকিক প্রভাব থাবা প্রতীবিত করিলে, উহার সহিত নিত্যানন্দের বিষাহ হবঁ এবং বিবাহের যৌতুক্বরূপ আহ্বাবেনীকে পত্নীকলে প্রাপ্ত হন।

"বহৰা ৰেবীকে প্ৰভূ বিবাহ ক্ষরিলা। ৰেহুক্-ছলে জাস্বাহে আস্কাৰ কৈলা।" ( অবৈত্যকাশ)

ল্লংনন্দের চৈতল্প-নঙ্গলে লিখিত কাছে,—লাহ্ননীদেবীর পুত্র রাষ্ট্রন্ত।
'বস্থ-সর্ভে প্রকাশ গোঁসাই বীংভত।
কাহ্ননীনন্দ্র রাষ্ট্রন্স মহামল ঃ"

ৰাঘনাপাড়ার নিভ্যানন্দৰংকীর গোকামীগণ এই রামভছ বা রামাই প্রভুর সভান। शांभी-मक्त विशंद श्रिक्तियम हम। क्लान क्लान खांगावान বাক্তি দেখিতে পার। এই কথা শ্রবণ করিরা শ্রীবন্দাবনধাম আসিয়া নানা ভানে ভ্ৰমণ করিয়া কোণাও নিতালীলা দর্শন করিতে না পারিয়া পুনর্বার গুরুর নিকটে বাইয়া কহিলেন. আমি বচ পঁটাটন করিয়া আদিলাম, কোনক্রমে দর্শন পাইলাম না। ভালতে গুড়দেব ক্লিলেন, অবশ্ৰ দৰ্শন পাইবে। একথা শুনিয়া পুনর্বার বুলাবনে আসিয়া শুরুবাছা ঐক্য-জন্ম দচ্যাধনে মন:ত্বির করিয়া বছদিন ছিলেন। তাহাতেও দর্শন না পাওয়ায় প্রাণ-পরিত্যাপের সকল করিয়া এই ধীর-স্মীরের ঘাটে বসাতে ত্রিরাত্র গত হইলে পর, যে দিবস নিতান্ত প্রাণ-পরিত্যাগ জ্ঞার যমুনার, আাকড়িতে ক্সিলেন, সেই দিবস ভগবান রূপান্তবে সাকাং দিয়া কহিলেন. "আর প্রাণত্যাপ করিও না, দর্শন পাইবে।" জাহাতেও না উঠাতে নিশিযোগে বংশী-ধ্বনি করিয়া আদেশ করিলেন, "আমি কেশীঘাটের উপরে প্রকট হটব।" এই অমুমতি করিয়া গোপীনাথক্লপে যোগপীঠে প্রকট হইলেন।

প্লিন—বমুনার তট। প্লিন মধ্যে গোচারণ করিতে করিতে আর হইরা বমুনা-পূলিনে বিশ্রাম করিতেন। ঐ স্থানে একণে জনেক দেবালর হইরাছে। রামলীলা ও কৃষ্ণনীলা এবং সালিতে বন-লীলা হব।

জ্ঞান গুখড়ি — পুলিন-মধাস্থান। এই স্থানে শ্রীকৃষ্ণ গোপীদিগের জ্ঞানশিক্ষা মহারাসে দেন।

নিধুবন - এই বনে শ্রীরাধাকে রাজা করিরা শ্রীকৃষ্ণ কোটাল
• বল-পরিসনা, ৩১৯ পু: এইবা ।

বেশ ধারণ করিয়া কর লইয়াছিলেন। ব্রসাদি দেবগণে শুলালতা হইয়া এই বনে হিতি করেন। সকলই করবৃক্ষ। এই স্থান হইতে ' বৃদ্ধবিহারী' ঠাকুর প্রাকৃষ্ট হন। বন্ধগু হরিদাসের • গদি আছে। একণে অনেক কুঞা হইয়াছে।

নিক্ষবন— শ্রীশ্রীরাধাক্ষের নির্জ্জন-বিহারস্থান—নিত্য-রাস্থলী বাসকস্ক্রার স্থান। পূর্ণমাসীর নিকট বন। এই বনে অনেক তমালহুক্ষ এবং বছবিধ বৃক্ষ-লতাতে স্থানাভিত আছে। বনমধ্যে এক মন্দির আছে। তাহাতে চিত্রপটে বৃগলমূর্ত্তি লিখিত আছে। ঐ স্থানে প্রতিরাত্রে পূক্ষ-শ্যা করিয়া রাখিতে হয়। অস্থাবধি কোন মন্থ্য কি জীবজর্ত্ত কোনক্রমে বনমধ্যে থাকিতে পারে না। যদি থাকে, তাহার প্রতি আঘাত হয়। পূর্কালে শ্রামানক্ষ গোরামী। ঐ বনে ঝাড়ু দিতেন। দৈবাং এক দিবস শ্রীমতী জিউর নুপুর বনমধ্যে পাইয়াছিলেন। এজন্ত শ্রামানক্ষ কপালদেশে নুপ্রচিহ্ন দিলেন। তজ্জন্ত শ্রামানক্ষ গরিবারের নুপুরাকৃতি তিলক অস্থাবধি সাক্ষাং প্রত্যক্ষ হয়।

হরিবাস— বৈক্রগ্রন্থে ব্রন্থনে বহু হরিবাসের উরের আছে। কুলাবনে বৈক্র স্বাদের প্রবর্তক হরিবাস—ছরিবাস প্রামী নামে বিংয়াত। ইহার দুই প্রাতার বংশধরগণ কুলাবনে বিহারীজির নামে উৎপ্রত প্রবৃহৎ মন্দিরের রক্ষক ও সেবাইত। ভক্তসিকুতে লিখিত আছে,—ইহার শিতার নাম আশ্বীর। ১৯৪১ সম্বতে ভাড়মানের কুলাইমীতে ইহার প্রমাহন।

<sup>†</sup> ভাষানক পোখানী -ইনি গোপসন্তান। জীচৈতভাৰে উড়িবাাৰ বে প্ৰেন্থ ভাজার অনুমান বীজ বপন করিরাছিলেন, ভাষানক্ষের বজে সেই বীজ মহা-মহাক্লহে পরিণত হইরাছিল। ইংার প্রেন-ভাজার প্রভাবে রাজা সহারাজগণ প্রান্ত ইছার চরণে পৃতিত হইতেন।

মন্দিরমধ্যে পূর্লা-শব্যা করিয়া ঐ বর দৃঢ়রূপে কছা করিয়া সকল পথ কছা করিয়া চাবি আপনার নিকট রাখিয়া প্রাতে বর খুলিয়া দেখিলে ঐ পূর্লা-শব্যা মলিন হইরা শরনের চিছ বিলক্ষণ স্পষ্টক্রপে দেখা যায়। ঐ বনে ললিতাকুও আছে, অই সধীর কুঞ্চ আছে। অতি চমৎকার স্থাবিকত মনোরম স্থান।

লোটনবন—নিকুঞ্জবনের সম্প্রতী, এই বনে গোঠলীলাতে বেলা ছই প্রহর সময়ে বনের স্থাীতল ছালাতে লুটতেন অর্থাৎ সাকোপান্ধ গোপালগণ লইলা গড়াগড়ি দিতেন ৮

বনথণ্ডেশ্বর মহাদেব বুলাবনের আদি মহাদেব। কেলপীঠের ভৈরব, পুরাণ সহরে ছিতি।

# চারি বট

বংশীবট শ্রীবৃন্ধাবনে। রাসস্থপী অক্ষরট রামঘাটের দিকট। ভাণ্ডীরবটা এই স্থানে শ্রীদাম-গোপালের শ্রীদামের প্রতিমৃত্তি আছে। এ কুপের জলে সকল দেবতার আবির্ভাব আছে। অতি স্থাই কল। "এ কুপের জলে সকল দেবতার আবির্ভাব আছে। অতি স্থাই কল। "এ কুপের জলে সকল দেবতার ভাতীর
ভাতীর
গোষ্ঠশীলাতে গোপালগণের দৌড়াদৌড়ির ধেলার প্রতিজ্ঞা হইত। যে ব্যক্তি থেলাতে হারিবে, বংশীবট হতৈ ভাণ্ডীরবট পর্যাক্ত করী ব্যক্তিকে ক্ষমে করিয়া লইরা ঘাইবে, এইকপ ধেলা হইত। এই বন শ্রীদামের ধিহার

<sup>•</sup> अत्र-পরিক্রমা, ১৮٠ পৃঃ এইবা।

<sup>🕇</sup> बब-পत्रिक्मा, २४२ पृः बहेवा ।

হান। একপে এ অভিরাম - ক্ষনগরের পাট। এ এ প্রিলাপীননাথের দেবা, বল্পহরণলীলা মেচ মধ্যে। কদম্বক্ষাপরি এ ক্ষক, "মূলে গোণীগণ গোবিৎসগণ, নিম্নে যমুনা। এই রূপে গোপীনাথের প্রতিমূর্তি ঐ পাটে আছে। এ বুলাবনে গোপীনাথির দিকের অভিরামের প্রতিমূর্তি আছে। করোড়ির গোবামীদিগের দেবা। এই রূলে যে মালিনীর মূর্ত্তি আছে ছিভুজা। এই ভাতীরবট অভিরাম গোপালের কিন্তু অভিরামের গদিয়ান গোবামীরা মনোবোগী না হওরাতে এ দামগোপালের দেবা যে ব্যক্তিকরিতছে, দেই ব্যক্তি দ্বল করিতেছে।

জাঝী—নন্দপ্রামের উত্তর ছই জোণ। এছলে আয়ান ঘোষের বাটা। বথার ঐ ব্লাটা ছিল, তাহার উপরে শ্রীশ্রীরাধাক্ষমূর্তি সেবা আছে। জাবট হইরা শ্রীকৃষ্ণ গৌধন লইরা গোচারণে বাইতেন। শ্রীমতী অট্টালিকার উপর ধাকিতুতন। উত্তর চকু মিলন হইরা সঙ্কেত হইত। একক্ত ঐ বটের নাম সঙ্কেতবট। ঐ বটের মূলে শ্রীকৃষ্ণ গোঠের বেশে অভিসভসীর ঠামে দাখাইতেন। অস্থাবধি বৃক্ষে হেলনের পিঠের এবং চ্ড়ার চিহ্ন আছে। শ্রীরাধা বে স্থলে মান করিয়া বিদ্যাছিলেন, সেই বন ঐ বনমধ্যে। অতি নির্জ্জন মনোহর স্থান।

<sup>†</sup> अष-পत्रिकमां, ७३९ शृ: जहेरा।

# ব্রজভূমে চারিদেব

# वलात्व, श्रवात्व, त्कभवात्व, त्राविमात्व

বলদেব—গোকুলের পূর্ব্ধ তিন ক্রোণ। এই স্থানে বলদেবের বজুলাপিত মূর্ত্তি আছে। বলদেবকুও আছে। চতুপার্থে সান-বাদ্ধা ঘাট। পূজারিদিপের বাদ, বাজার আছে। থাকিবার স্থান ধর্ম-শালার স্থার। বলদেবজির বাটা আছে। মাধন, মিছরি, ভোগে বড় সভোব। সভার্গের রেবতীঠাকুরাণী সক্ত্থে আছেন। পূজারি বজবাসীদিগের ধনাকাজ্ঞা অতিশয়।

হরদেব—পোবর্দনে ছিলেন। তথা হইতে রাজধানীতে লইরা গিরাছে। ঐ স্থান বৃলাবন হইতে পূর্ব ১০ এক শত ক্রোশ। ধৎকালে বাদসাহের দৌরাস্থোঁ গোবিল-গোপীনাথ জয়পুর গমন করেন, তৎকালে হরদেব ঠাকুরের ৪ রাজধানীতে গমন।

কেশবদেব+--মথুরায় আছেন।

শূর্ত কেববদেরের নামালুসারে অপুরার ক্লেবপুর বা কেশোপুর ছইয়াছে। উর্ক্তের তিরোধানের পর তাঁহার পবিত্র স্থানিক কিবার অক্স
কৃষ্ণপুর বা কেশবপুর স্থাপিত হইয়াছিল। খৃইপুর্ক ৩য় ও এর্থ শতাব্যীতেও
কেশবপুরের খ্যাতি পাকাত্য ঐতিহাসিকপর কীর্ত্তন করিলা সিয়াছেন। মধুরাপ্রসন্দে ১৯-৮০ পুরার যে সকল তার্ব ও বেংতার উল্লেখ করা হইয়াছে; ওয়বো
নিয়োক করকটা বের ও তার্ব উল্লেখবোগ্য ঘলিরা সাক্ষিত্ত-বিবরর প্রস্তুত হইল-

সোৰণেবঃ—সন্নৰ টা-সক্ষের সেতৃর নিকটবর্তী কৈলাসণক্ষতে গোকর্ণকর ভীর্ব এবং ঐ সেতৃর নিরদেশে গার্গী ও শার্কী তীর্ঘ। প্রবাদ, গোকর্ণ, লাই বীত-রাগের মধ্যে একজন। ইনি মহাকেবের জনতার এবং ওালার গার্গী ও শার্কী দারী পারীয়র প্রাধার কালা নারা ।

গোবিক্দেব— শ্রীক্ষের পৌত্র বস্তু তিন মূর্ত্তি নির্ম্মাণ করেন। গোপীনাথ গঠন করিয়া তাঁহার মাতাকে দেধাইলেন বে, পিতামহের স্বরূপ হইরাছে কি না'? তিনি দেখিয়া কহিলেন, "বক্ষঃস্থল হইরাছে।" পরে মদনমোহন গড়িয়া দেখাইতে "পদ হইয়াছে" কহিলেন। পরে গোবিক্দেবের মূর্ত্তিনির্মাণ করিয়া দেখাইতে গোবিক্দেবের মূর্ত্তিনির্মাণ করিয়া দেখাইতে গোবিক্দেবের মূর্ত্তিনির্মাণ করিয়া দেখাইতে গোবিক্দেবের স্থাতিনির্মাণ

खारु चतु-- (स्वत्वत्री पर्नन मानाम मृक्ति। क्वांत्रिक खान्यनपूर्वक खान. পিতৃতপূৰ্ব দেবৰ্মকার করিয়া ইকুবাদাদেবী প্রতৃতি দর্শনাস্তর ক্ষেত্রপাল पर्मनात्म छटक्य निव सामानभूत मुझक्टेश क्यानी वा देवनीनात अपूत्र কটি থার নিকটে ভতেখন মহাদেব মন্দির ) বর্ণন করিতে হয়। এই শিব ধর্ণন ना कवित्त मथुबा-भविक्रम मध्य हैत ना । स्मर्थास कुकक्रीका स्मृत्यक, यांगहर ও কৃষ্ণট-ক্রীডন নামত কুকের ক্রীড়াভূমি আছে, এই সকল ধূর্ন করিলে অপর কোৰ পাপ থাকে বা 📍 এখানে কৃষ্ণ-পুজিত সংক্ৰিভূষিত কলেকটি সমুচ্চ অভ बाहि । अप्किन्पूर्तक वहे खर्खक मूल कदिल मकत भाग नृत हह । अधीन इट्रेंट मुक्तिश्रम नातात्र मार्ग बाहित् इतः वस्तर मारकीत गर्छत्रमात्र कात्र এছাল এकारस मध्य कविद्या शिकारुन। अहे शाम धार्माकन करिया, वर्शाक्राय विश्वविनायक अर: कुक्रभातिका कुलिका ও वामना नाम्रो आक्ष्मी पूर्णन कृतिया श्रार्कवद्व निव, महानिराञ्चवद्रोप्तवी ७ अन्छामञ्जी वर्तन कहिरत । डेक निव पर्तन व्यक्तित छोर्बराजा-कत निश्व इहेदर। এখাবে কুল-বলরাম গোপগণের সহিত কংস্বধ্যে মন্ত্ৰণা ক্ষিতাছিলেন, সেজক্ত এখান সংকতক নামে প্ৰশিদ্ধ। এখানে দিছেবরী নামে সংকর্তাক্ষরী ও অন্ত-স্থালন সংক্তর্ত আছে। তৎপর স্ক্লিপ্তর গোক্রের দর্শন করিবে। পরে সর্বতী নদী দেখিয়া বিছরাল श्रातक श्रा कर्णनास्त्र क्राप्त-प्रकृति ए क्या प्रतिश केस्त्रकां कि स्वित्र्य যাত্রা করিতে হয়।

পাৰ্বাতাৰ-উভাৰেনাট অভিন্থে বাজা করিলা বমুদার কলে মহাতীর্বে সিলা আন ও পিজ্চপুৰ করিতে হল। তংপারে বার্গ্যতীর্ব, ভল্লেম্বর, মহাতীর্ব ও সোমতীর্বে আন করিলা সোনেম্বর বেশিতে হল। (বলাহপুং নশুলানাং)

করিয়া শ্রীক্রঞের শ্বরূপ জানিয়া মন্তকে কাপড় দিয়া লচ্ছিতা ্হইলেন। তথন বহু জানিলেন যে, পিতামহের এইরূপ রূপ ছিল। বে তিন সুর্ত্তি নির্ম্বাণ করিয়াছিলেন, খ্রীবৃন্ধার্বনে স্থাপিও করিয়া সেবাদি করিতেন। পরে যুগভ্র হইলে পর, ছাপরের সকল লীলা সম্বৰণ ক্রিলে পর, কলির প্রথম সময়ের ব্যক্তিগ্ণ গতামু হইলে **এবুন্দাবন বনভূমিতে পরিণত হইরা সমস্ত লীলাস্থানের চিচ্চ** অদুত্র হয়। গোবিন্দ, গোপীনাথ, মদনমোহন প্রভৃতি মুর্ত্তিদকল মুক্তিকার আরুত হইরা রহিলেন, কেহ কিছু জানিতে পারিত না। কেবল মধুরানগরে চৌবেদিগের বদতি ছিল। বুন্দাবনের বন মধ্যে ময়ুর এবং বানরগণ বাদ করিত, আরু কিছুই ছিল না। মংকালে শ্ৰীক্ষণগোশাৰ্মী ভলনাৰ্থে বনবাণী হন, এই বৃস্থাবন নিৰিড় বন বিবেচনা ক্রিয়া বসিয়া সাধন ক্রিন। ঐ স্থানে রামপুরা ছইতে এক ব্ৰহ্মবাদীর একটি গাভী প্রতি দিবদ , আদিরা ঐ বনমধ্যে স্বস্তিকার ভিতর হইতে গোবিদদেব উঠিলে তাঁহাকে দ্বন্ধ দিত, একলা কেছ কানিত না। ব্ৰহ্মবাদী আপন গাভী-দোহনকালে ছগ্ধ পাছ না। এই ভাবে কিছু দিন অভীত হইলে ব্ৰহ্মণী বিনেচনা করিল বে,-গাভী বনে চরিতে বার, তথার কিরূপে ছগ্ধ অপহাত হয়, তাহার তদন্ত করিঙে ছইবে। এই স্থির করিয়া যৎকালে গাভী বনমধ্যে প্রবেশ করিল, ব্রজবাসীও গাভীর পশ্চাৎ পশ্চাৎ ভ্রমণ করিতে করিতে বন্দাবনের वनमध्य उमानद्राक्तद्र छत्न थे शास्त्री भद्रन कदिन । किहुकान शर्व গাভী পুনরার উঠাতে ত্রজবাদী দেখিল, যে গাভী ছগ্নভারে ভারাবিত তন ছিল, সে সকল ওক হইরা কীরলাব হইডেছে।

<sup>🕶 🤛</sup> পৃঠার পাদটীকা স্রপ্তব্য ।

ভাছাতে আশ্চর্যাবোধ করিয়া ঐ তমালতলে আসিয়া দেখিল বে. এক হড়ক আছে। উহা দেখিয়া ঐ দিবস গাভী লইয়া বাটী গমন করিল। পরদিবদ আদিয়া ঐ সুড়ঙ্গ খনন করাতে মৃত্তিকার অভাস্তর হইতে গোবিন্দদেবের মর্ত্তি বাহির হইব। উত্তম দেবমর্ত্তি শেখিয়া ঐ তমালবুকের মূলে বসাইয়া সামাভ্রমত পুলাদি কেছ কথন করিত। এইরূপ কিছুদিন বৃক্ষমূলে থাকিয়া 🕮 ক্লপ গোস্বামীর প্রতি অমুগ্রহ প্রকাশ করিয়া তাঁহাকে স্বপ্নাবেশে কহিলেন, "তুমি ভণভাত্ত আদিয়াছ। আমাকে ব্ৰহ্মবাদীয়া বোগ-পীঠ হইতে প্রকট করিয়া তুমানমূলে স্থাপিত করিয়াছে। তুমি এলবাদীদিগের নিকট হইতে চাহিয়া লইয়া সেবা কর-সিদ্ধি হইবে।" এইরপ অপাবেশে দেখিতে পাইয়া পর্যদ্বদ ভক্তবাসীর নিকট গোবিল্পদেবকে ৰাক্ষা করিতে প্রাপ্ত হইলেন। প্রীক্রপ গোস্বামী ৮গোবিন্দদেবের সেঝতে নিযুক্ত হইলে পরে ক্রমে স্নাত্ন গোৰামী ভ ভানাৰে আসিয়া মদনমোহনকে মধুৱার क्षीतिमार्गत वांनी बहेरक मानवरमार प्रानवन करवन। वह-দিবস পরে মধু পণ্ডিত গোস্থামী গোপীনাথের। প্রকট করেন। পরে জ্বমে জ্বমে মহাপ্রভু বুলাবন পরিক্রম করিয়া ঘাইলে পর নালোপার ছর গোরামী, চৌঝট মোহস্ত প্রভৃতি ভক্তবুন্দ

৮৭ পৃথার পাষ্টাকা এটবা।

ভক্তিবছাকরের ২৪ ভরকে লিখিত আছে,—

"বংশীবট নিকট পরন বন্য হর।

ভবা গোপীনাথ মহারকে বিলস্ত ঃ

জকুলাৎ বুর্পনি বিশেব ব্যা করি।

শ্রীব্যু পশ্রিত হৈলা সেবা-অধিকারী ঃ

আসিরা বৃশাবনে বাস করিবেন। প্রীজীব গোস্বামীর ভ জন-দ্রানে সকল গোস্বামীর বৈঠক হইরা শাস্ত্রালাপ এবং ভক্তি-भाज विठात रहेशा के श्वात शरातकानि रहेन। करेंब्रेट किछ দিন গত চটলে মানসিংচ+ বাজামজাতে বালালাদেশ কর করণাভিগাবে বৃদ্ধপাক্ষে সজ্জিত হইরা এদেশে তিনবার আগমুন करतन। किन्न करनाटि कठकार्या हारान ना। शाद शिशाविन-मिवरक प्रमीन कविशा मनन कविरातन, यनि वांकानाम सन করিয়া আসিতে পারি, তবে মন্দির তৈয়ার ক্রিয়া দিব। এই মনন করিয়া বাঙ্গালা-প্রদেশ কর করিয়া আদিয়া শ্রী দগোবিন্দ-দেবজিউর মন্দির উত্তমরূপ নির্মাণ করিয়া রুহৎ ও উচ্চ করিয়া দিয়াছিলেন। প্রস্তারের মনিরে ভালমত থোদিত কর্ম ছিল. নাটমন্দির অতি উত্তম নির্বিত ছিল। এতাদুশ কোদিত কর্মযুক্ত নাটমন্দির কোথাও ছিল না। ইহার বর্ণনা কিছু করিতে পারি না। বিশ্বকর্মার নির্মিত আর ঐ মন্দির কোথাও চিল না। ঐ মন্দিরে वहकान शाविनामय किलान। शाद मिलीत वामगार अक मियन আপন শ্রানাগারের উপর হটকে এ মনিরের উপর বে আলো हिन, छारा एक रहेबाहिन। शातिवन्त्रभएक विकास कतिबाहित्नेन, °এ আলো এত উচ্চ কোণা হুইতে দেখা বাছ ?° তাঁহারা কহিলেন "বুন্দাবনের দেবালয়ের আলো।" তৎক্ষণাৎ মন্দির ভাঙ্গিবার অমুমতি

৮५ गृहात भावतिका जहेवा ।

<sup>†</sup> মানসিংছ—গোবিশ্বীর যদিবে একবানি অপাট বোষিত দিলা-কলফ আছে! তংগাঠে লানা বাব বে, অকবর শাহের ৩০ রাজ্যাকে ক্রিরণ-স্নাহনের ভবাববানে অকবরের প্রসিদ্ধ সেনাগতি অবরাধিরাল মানসিংহ কর্তৃত এই যদির বিশ্বিত হইনাছিল।

হইল। তথার যে সমস্ত হিন্দুলোক ছিল তাহারা সংবাদ পাইবামাজ বুন্দাবনে সংবাদ করিল। ঐ সংবাদে দেবমূর্ত্তি সকল স্থানাস্তরিত
করিল। গোবিন্দ, গোপীনাথ, মদনমোহন জন্মপুরে রাজা সওরার
জন্মসংহ
লইল গেলেন। গোবিন্দ গোপীনাথ অন্তর্পুরে রহিলেন।
মদনমোহন করোজির† রাজাকে দিলেন। আর আর অনেক দেবমূর্ত্তি
তৎকালে জন্মপুরে যান। এথানে বাদসাহের হকুমে মন্দিরের চূড়া
সকল, তিন মন্দির ভগ্ন করিলে পর, মেড্ছদিগের প্রতাপের কিছু

\* জয়সিংছ—(স্বাই) জালুরের বিশাত অধিপত্তি এবং ভারতের একজন অধিতীয় জ্যোতির্বিদ। ইনি অধ্যরীজ মীর্জা জয়সিংহের পৌতা এবং বিজু-সিংহের পূর্তা। জয়সিংহ বাল্যকাল হইডেই বিভাসুরাগী জিলেন। ১৭৫৫ সংবতে (১৯৯৯ খুটাংলা) পিত্⊹সংগ্যানে আ্রোছণ করেন।

মঙারাল লয়সিংহ মোগল-সমাট্ মহক্ষণ শাহ কর্তৃক "স্বাই" ক্ষণিং ক্ষপর্
সকল রাল। ক্ষপেকা প্রেট এই উপাধি-ভূষণে ভূষিত হন। তিনি একজন
বিখ্যাত ক্ষোতির্ধিন, বুক্সান, র'লনী:তজ্ঞ ও ঐতিহাসিক ছিলেন। ক্যোহিবশাস্ত্র সম্বাহ্য ক্ষান্ত পাডিতা ছিল। ইনি হিলা, ক্ষপুর, উক্ষয়িনী,
ক্ষান্তা, মধুনা ও বারাণসীখামে, বহু ক্রিণ্ডে বুহুৎ বুহুৎ মানমান্ত নিক্রাণ
কংল ভাহাতে প্রহনক্ষ্য পর্থাব্দেশ্পবাদী ক্যোতিবিক্ষর সকল হাপন
কংল। প্রিকা-সংক্ষার তাহার কার একটা কার্ডি।

জরপ্রেবের দৌগাল্যে এবুলাবনের মননামানন বিগ্রহ জনসিংহ কর্ম্বক জয়পুরে স্থানান্তরিত ইন্টাছিল। জয়পুরেও গোবিসজীর মন্দির আছে। ১৭৪৩ শুষ্টাক্ষের সেপ্টেম্বর মানে স্বাই জনসিংহ প্রলোক প্রমন করেন।

† করোড়ির রাজা —করোলির রাজা হইবে। জয়পুরাধিপতি সবাই জয়সিংহ উচ্চার অচুল্ক করোলিরাজ গোপালসিংগকে মদনবোহনের বিগ্রহ প্রহান করেন। রাজা গোপালসিংহ নিজ রাক্ধানীতে ১৭৪০ বটাক্ষে নদনমোহনের জজ্ঞ অব্যব মন্দির নির্দাণ করাইরাছিলেন।

(><)

থর্ক হইলে পুনর্কার গোখামীরা প্রীর্ন্দাবনধামে আপন আপন গদিতে পুরাণ মন্দির ত্যাগ করিয়া এক এক ঘর ও তাহার নিকট-বর্তী স্থানে তিন দেবস্থরণ তিন্মৃতি তিন স্থানে প্রকাশ করেন। গোস্বামীদিগের স্মাসন, গদি, বজুকুত তিন বিপ্রাহের নিকট জ্য়পর-কড়োরিতে রহিল। পরে বহুদিন গতে সন ১২(१) সালে বড়ুনিবামী গোবিন্দাবের বর্তমান দেওয়ান নন্দকুমার বস্ত্র: তিন স্থানে তিন মন্দির ধালান করিয়া দেওয়াতে তাহাতে বিরাজ্যান আছেন। গোবিন্দাদেবের পুরাণমন্দিরের দ্ফিণে যোগণীঠ। ঐ

‡ দেওৱান নক্ষার বহু—২৪ পরগণার অন্তর্গত বড়ুপ্রাম নিবাদী রামচরণ বসুর পুত্র ৷ রামচরণ বসু কাসিমবাজারের কাস্তবাবুর জমিদারীর ম্যানেচার ছিলেন। নশকুমারও এখনে মওলঘাটে কোম্পানীর আড়রের গোমতা নিবক হইহাছিলেন, তংগবে কাসিমবাজাহের রেগম কুটির লেওংানী भाडेदाहित्सन । हेमान-डाउँन वथन शहिनात व्यक्षक (Commercial Resident ), তিনি নদক্ষারকে জানাট্যা আপনার দেওয়ান কংলাছিলেন। अवादन नमक्षाद्यत नि:यार्थ (हरेश प्रधानकात कृष्टित कांत्र e शक्तांत हरें एक ১০ ছাজার হইছাছিল। ভজ্জন্ত ব্রাটন শাংবের অমুরোধে মন্ত্রিসভাধিটিও ষডলাট জীভাতে e..., টাকা পারিভোবিক করিবাছিলেন "as a public mark of the approbation of the Government of his conduct." পত্রে প্রমে টি ভারাকে কলিকাতার প্রমে টি কাগ্র্গাইসের দেওরানীপদ দিল हिलात । छैं। इन्हें बुद्ध कुमावत अपन्याहन, (गाविसको छ (ग गीनास्थव असिक निविक कहा। এटक्टिक निक कन्नवान वस शाय देहेरमव कामध्यान वह सक्ष অতি সমার প্রভার মন্দির ও তাঁহার দেবসেবার মন্ত বিভার সম্পত্তি দান করিছা বান ৷ সুন্দাবনে তিনি বতর কুঞ্লবাটী নির্মাণ করাইলাছিলেন, তথার সব ১২৪১ সালে তাঁহার দেহত্যাগ ঘটে। তাঁহার বংশধরণৰ বড়ু ও কলি**ভাতা**র বাস করিতেছেন।

মন্দিরের মধ্যে একণে গিবিধারী বিশ্বমান। তাই চৈত্তর ও জগ-রাথ, বলদেব, স্বভদ্রা তিন মূর্ত্তি। এই সকল দেবদেবা একজন উৎকলবাদী ব্রাহ্মণ করিতেছে। গোবিন্দদেব প্রীবৃন্দাবনের প্রধান त्व । वाक्रांनी वाक्रंग देवक्षवरम् वांत्र हे हत्न चार्क । वाक्रांनी यांकी ম্বারায় যে টাকা ভেট হয়, তাহাতে দেবালয়ের উত্তমরূপে ধরচাদি হয়। অত্যে গোবিন্দদেবের ভেট না হইলে গোপীনাথ কি মদন-মোহনের মন্দিরে ভেট হইতে পারে না। সাত দেবালয়ে আপন আপন জায়গায় বেওঁয়ারিশ ব্যক্তি মরিলে তাহাদের ফোতি মাল-পতাদি পাওয়া যায়। যদি বেওয়ারিশ বাক্তির বুন্দাবনয়াতা করিয়া প্ৰিমধ্যে মৃত্যু হয়, তবে তাহাই সকল বিষয় গোবিন্দ্জির ভাগুরের দাবিল হইবে। কিন্তু দেবালয়ের প্রথামুদারে ঐ ব্যক্তির বেমত বিষয় ভাঙারে দাখিল হয়. তাহার কিয়দংশমহোৎসৰ ইত্যাদিতে ধরচ করিয়া আহ্মণ-বৈষ্ণব ভোজন করাইয়া দেয় । এই সকল দেবালয়ের যে সব দেবোত্তর স্থান ও রাটী আছে, তাহাতে বাস করিলে ভেট-নামা হয়। যত টাকা দেবালয় ভয়ালা লয়, তাহা ইচ্ছায় উঠিয়া গেলে ফেরত দের না। যদি উঠাইয়া দের তবে দের। পারস । বন্ধন বে কেই कत. > १ • ठोकांत्र कम इम्र ना । यछिमन शक्तित शहित्व शहित्व **गाकास**त रहेरन के ठाका स्वत-ভाश्चाद माथिन रहेरव। स्वानस একজন কামদার, এক ফৌছদার, এক ছড়িদার একজন কি চুই জন ভাণারী, একজন সরকার, এতদ্বিস্প্রারি, রম্বার, দারসেবক ইত্যাদি অন্ত অন্ত টহলিয়া আছে। যাত্রীদিগের ভেট এবং বে এয়াবিশ ক্ষোতিমালের ওদারক ফৌজনার ছড়িনারের কর্ম। তছবিল আমদানী

<sup>•</sup> ৩৮ পৃঃ পদটাকা স্তব্য।

এবং গৃহনা পোষাক এল্বাস ইত্যাদি ভোগের দ্রবা ও প্রসাদ দেওয়া সকল ভাণ্ডারীর জিমা। চুকুম কামদারের – লিখিত পড়িত সরকারের। এই মত দেবালরের বন্ধান কমা সকল ম্যাচে।

পুরাণ মন্দিরের দক্ষিণ গোবিন্দজির বোগপীঠ। এই স্থানে এক ক্ষুদ্র মন্দির আছে, ঐ ন্বারে চাবি দেওয়া থাকে। পুরাতন মেনিরে যে আন্ধান সেবাতি আছে, তাহার জিলার চাবি থাকে। যোগপীঠ দর্শনার্থে গমন করিলে প্রতি মমুষা এক প্রসার কম নৃত্যে, ব্যক্তিবিশেষে বিবেচনা করিয়। ঐ আন্ধানক দিতে হয়, নচেৎ দর্শন হয় না। ঐ বোগপীঠ প্রায় চারি হস্ত মৃতিকার নীচে। পদচিক্ষ আছে

যাত্রীদিগের ভেট, বাহা শৌধিন্দেবেজির নিকট হইবে, ভজ্রপ গোপীনাথ, মদনমোহনজিউর ভেট। ব্রজবাসী, কুগুবাসী এবং শুরু স্থানে ঐ ভেটের সমান ভেট। স্থার যে গোস্বামীদিগের সিদ্ধদেবা চারি স্থানে আছে—গোপালভট্টের সেবা ৮রাধারমণ্য শ্রীজীব-গোস্বামীর সেবা, ৮রাধা-

দামোদর, জামানক গোলামীর দেবা ৮জামল্লক, লোকশাথ গোলামীর+ সেবা ৮গোকুল্নিক। দাসগোলামীর† দেবা গিরিধারী এবং বাহাতে বৃক্ষা দৃতীর চিক্ক আছে, এই ছই দেবা এক মক্লিরে। দাত দেবালয়ের মধ্যে এই চারি। ইহাতে বাহার বাহা ইচছা হল

- লোকনাথ গোলাখী—ইনি নরে:ভম ঠাকুর মহালাংহে দীক্ষা-শুরু। ইরি
  জীবলাখনে বাদ করিতেন এবং বৈক্ষব-ধর্ম-প্রচারে ঘণ্ডই সাহাব্য করিছারিংকর।
- † দাস গোখামী--জ্বুদাগ দাস গোখামী 'লাল গোখামী" নামে স্থানিখাত। ইনি কাছত-সভান হইলেও হয় গোখামীর অভ্যতম।

তাহা দেওয়। এসকল দেবালয়ে দর্শনের নিবারণ নাই। শুক্রভেট
শব্দিং পোরামী সম্প্রনারের যে যে পরিবার তাহার সেই শুক্রকুণ্ডে 
ভেট হয় । শকল পরিবারের গোলামী-সম্প্রনার ভিন্ন ব্রাহ্মণ পণ্ডিতের
শিষ্য যাহারা, তাহাদিগের শুক্রভেট পূর্ণমানীর মৃশ্রাদি তক্রপ।
পূজা-ভেট ইচ্ছাধীন। সকল উপাসকের পূর্ণমানীর পূজাদি তক্রপ।
পূর্ণমানীর মন্দির নিক্ঞাবনের নিকট। তাহার যে বাড়ী তাহাতে
এক বৈক্ষব আছে, ভেট-পূজাদ্বারায় সেবাদি চলিতেছে।

যাত্রীগণ আসিথা যমুনাপূজাতে যোড়শোপচারে পূজা এবং অবস্থারাদি যাহার যে শক্তিমতে দিবেক, কিল্পা পঞ্চোপচারে পূজা বাহা করিবে, যাহার যে ব্রজ্ঞানী পুরোহিত্যরূপ হইবেন, তিনি ভাষা পাইবেন এবং ঐ ব্রজ্ঞবাদীর পা-পূজা করিতে হইবে। সর্বাত্ত্রিক বিনাধী করাইবেন।

বৃন্দাদেবীর পূজা-ভোগে যাহা যাত্রীগণ দিবে, ভাহা কুঞ্চবাদী গাইবে। বে কেহ বাট ভাড়া করিয়া থাকিবে, ভাহার উপর ভেট কি বৃন্দাদেবীর পূজাব কিছু এলাকা নাই।

দেবালরে ছই টাকার কম রে বাক্তি তেট করে, সে বাক্তি
শিচরাপা বন্ধ দেবালরে পার না। ছই টাকা ভেট দিলে লালরক্ষের
উপেলা অর্থাৎ চারি হাত কাচাবন্ধ, তিন টাকা দিলে হরিন্দারক্ষের
ঐ বন্ধ, কিছু বিশেব চারি টাকার উপর ভেট করিলে মল্মলের
গোটা দেওয়া পাঁচ হাতি চালর, অধিক ভেট দিলে কিছু বিশেব
বিবেচনা প্রদাদে এবং শিরোপাতে হয়।

শ্রীবৃন্দাবনের দেবালয়ের ভেট না হইলে দর্শনের ব্যাঘাত করে কেবল বাঙ্গালিযাত্রীর প্রতি। নচেৎ অন্তদেশীর ব্যক্তিদিগের প্রতি আপত্তি নাই। তাহারা ইচ্ছাধীন বাহা দের, তাহাই দইতে হয়। ভাহাদিগের দান অধিক এ পক্ষে নাই। ছ'আনা, চারি আনা অধিক জ রাজারাজড়া হইলে এক টাকা, সামাক্ত ব্যক্তিগণ চারি পাঁচ জনার এক পর্যা, কি কিছু ফল, কি ফুল ইছা ভিন্ন নয়। 'ভবে যদি কাহার প্রেম জন্মে, আপন ইচ্ছাতে অনেক দেয়।

ব্রজবাসীদিগের প্রেম অতিশর, কৃষ্ণ বলদেব, রাধারণী— রাজরাণী, আর 'বমুনা মাই কি জয়' ইহাই জানে। 'দেও প্রসা' একথা বাল-বৃদ্ধ-বুবা, স্ত্রী-পুরুষ সকলেরই।

## **बिबियमना**यादनकिडे---

সমাত্র গোরামী যংকালে শ্রীষ্ট্রনাবনে প্রন্যুমাটের উপর ট্টালাতে ভল্প করিতেন, মধুরার চৌবেদিগের ঘর হইতে ভিক্ষা कविद्या जानिया जाहातानि किस्टिंग । अथात्न मथुतारक मननत्माहन मानवरमह धारण कतिया के छोरविमरणत মলনমে চন বালকের সমভাারে মদনা নামক বালক চটরা খেলা করা এবং দৌরাত্মা করিয়া সকল বালকের ক্লটা ক্ষীর সর বলপুর্বাক নইয়া আহার করা এবং সকলের বাটীতে দৌরাক্সা করা, কাহার গাভীর বংস ছাড়িয়া দিয়া চুগ্ধ বংসচক পান করান, কাহারও গাতীর হয় দোহন করিয়া পান করা, এইমত সকলকে বিরক্ত করাতে সকলে তাক্ত-বিরক্ত হইরা ষ্থকালে ঐ স্মাত্ন গোস্বামী ভিকার্থ গিরাছিলেন, স্কলে মিলিরা कहिन, वावासि, এই मननार्क गरेवा वांता उरकारन शायामी দেখিলেন বে, এবালক সামান্ত নহে। স্বরং ভগবান মানবদেহ ধারণ कतिया मधुभूत्व चाह्म । अहे वित्वहमा कतिया शामक हरेया क्षित्वम (व. विकृष प्रवनीवाती क्लिटेश्टन चाट्टम । कोरविद्यान

কথাক্রমে লইরা আসিবার স্বীকার করিরা বালকের হল্ত ধরিবা-মাত্র অন্তর্ধান হইলেন। স্নাতন গোস্বামী অনাহারে সেই স্থানে রহিলেন। পরে গোম্বামীকে দৈববাণী হইল যে, আমার মূর্ত্তি এই মৃত্তিকার ভিতর আছে, তুমি উঠাইয়া এবুলাবনে রাধিয়া র্নের্বাদি কর। ঐ মদনমোহনের যোগণীঠ মধুরাতে। গোস্বামী আনিয়া যমুনার তারে পঞ্জন-ঘাটের উপর টালাতে পত্তের কুটার করিয়া তন্মধো স্থাপিত করেন। অনবণ শাক আর চুট্রিক ভিক্ষার আটার রাক্সা<sup>\*</sup>কড়ি করিয়া ভোগ দিতেন। তাহাতে এক দিন কহিয়াছিলেন যে, সনাতন, আমি অলবণ খাইতে পারি না, শাকে কিছু লবণ দিও। তীহাতে গোম্বামী কহিলেন, ভূমি রাজপুত্র বলিতে পার। আজ লবণ চাহিলে, কালি ক্ষীর সর চাহিবে, আমি ফ্কির মানুষ কোপায় লগাইব ৭ তোমার ইচ্ছা হয় এই অলবণ শাক আহার কর, নচেৎ আমা হইতে আর কিছু হইবে না। এই কথা কহিতে স্নাতনের প্রেমে বছ হইরা অলবণ শাক ভোজন স্বীকার করিতে হইল। পরে গোমামী কহিলেন, যদি ভাল ভোজনের ইচ্ছাহয়, আপুন সেবক করিয়া আন।

তেরাখামী সর্কাণ ভজনে ময় এবং শ্রীবৃন্দাবনের সকল লীলাস্থান নিবিড় বন হইরা চিক্ত না থাকার জন্ম তাহার উদ্ধার

ক্ষীলাখান-প্রকাশ

 এবং রাধান্তক লীলা-বর্ণন, গৌর-লীলার

 এছাদি করণ, এইরূপে বৈক্ষবগণ দইরা

সর্কাণ ভক্তিশাক্ত আলাপ করেন। এই ভাবে কিছুদিন গড

ইইলে পর এক সমর 
 শেশের এক মহাজনের বাণিজ্যের

জ্বাসমেত জাহাল বমুনা-মধ্যে এমন বিপাকে পড়িল বে,

কোনক্রমে রক্ষা পাইবার হেড়ুছিল না। মহালক্ষম জ্বিশ্ব

বিব্ৰত হইয়া সকল লোককে কহিতে লাগিল যে, ভাই, আমার এই জাহাল রকা পাইবার কিছু উপায় আছে কিনা ? ব্যক্তিগণ মধ্যে কেছ কেছ কছিল, ঐ বে চীলার উপরে এক বৃদ্ধ বাবাজি আছেন, বড় ভল্পনানল এবং বাক্সিদ্ধ। যদি তেঁহ তোমাকে কুপা করেন, তবে তুমি এ বিপদ হইতে মুক্ত হইয়া আপন দ্রবাদি জাহাজসমেত রক্ষা করিতে পার। শেঠ অর্থাৎ সভদাগর ঐ কথা শুনিয়া গোস্বামীর নিকট বাইয়া আপন বিপদবৃত্তান্ত সকল কহিল। তাহা 'শৃত হইয়া গোন্ধামী কহিলেন, ঐ কুটীর মধ্যে যে বালক আছেন, তাঁহার নিকট কহিলে উপার করিয়া দিবেন। সওদাগর কুটীর মধ্যে মদনমোহন**লি**উর মুর্ব্তি দেখিরা কহিল, ঠাকুর, যদি আমার জাহাজ উদ্ধার হয়, তবে তোমার উত্তমরূপ মন্দির করিয়া দিব। এই কথা প্রতিজ্ঞাপুর্বক বারম্বার কহাতে ঐ সওদাগরের সুকল বিপদ খণ্ডন হইয়া পুর্বামত জাহাজ চলিতে লাগিল। সঙ্গাগর আমনচিত্ত হইয়া শ্রী**৮জিউর** শ্রীমন্দির নির্দাণ করিবার স্ত্রপাত করিয়া প্রস্তরাদি আনাইয়া মন্দির নির্মাণ করাইয়া দিয়া হদেশে গ্রমন করিল। ঐ সকল বাণিজ্যের দ্রবাদি বিক্রম করিয়া অনেক লাভ হইল। মুলজান-দেশ ছ'তাবং মনুষ্য ঐ সওদাগরের বাচনিক সকল কথা ওনিয়া সকলে গোল্বামীজির চেলা হইল। প্রথমে ঐ সওদাগর-দত্ত মন্দিরে ছিলেন, পরে বাদসাহের দৌরায়্যা-সময়ে বৎকালে মন্দির ভালিবার हरूम इत्र, ७९काल क्रम्यूत इहेत्रा करताष्ट्रित ताकात मिक्ट यान । বংকালে গোখামীরা বৃন্ধাবনে প্রতিমৃত্তি হাপিত করেন, নৃত্তন দালান করিয়া তাহাতে স্থাপিত করিয়াছিলেন। এক্ষণে বছ নিবাদী নক্ষার বহু-দত্ত মলিরে বিরাজ্যান আছেন। বছক্ত সৃত্তি

করোড়িতে আছে। তথার গদির চেলা গোত্বামীদিগের গদি আছে। এথানে কামদার, সরকার, ফৌজ্লার, ছড়িদার, ভাঙারি-দারা কর্মনির্কাহ হয়।

ঐ পুরাণ মন্দিরের সম্প্র আর এক মন্দির বঙ্গদেশীর **অনৈক**মহান্ধন 'শ্রীমতী' ক্ষউর পাকিবার জন্ধ করিয়াছিলেন। তাহা শ্রীমতীক্ষিউর ভোগ এবং দিবাতে বার ইত্যাদি হইত। রাত্তিযোগে একত্র
মিশন হইত।

একণে ঐ পুরাণ মিলিরে এক বৈরাগী গৌরা**লগ্রভ্**র সেবা প্রকাশ করিয়াছে।

যৎকালে প্রীর্ন্ধাবন দশনার্থে গৌরহরি আসিয়াছিলেন, ঐ
টালামধ্যে বৈঠক করেন। সেই স্থানে সনাভন গোস্বামীর ভন্ধনাগার
হয়। একণে পদচিক্ত স্থাপিত আছে। তথা
শীগৌরাদের পণক্ষি
ইইতে বয়ুনা ও বেলবন দর্শন হয়। যমুনার
তীর পস্কলন ঘাট হইতে শীমন্দির যে টালা মধ্যে, ভাহাতে উঠিতে
১০ ঘাটিটি প্রস্তরের সোপান আছে। ঘাট পূর্বেই ইক-প্রস্তরে
বাধা ছিল। যমুনা প্রবল্গ হওয়াক্রে ঘাট ভগ্ন হইয়ছে। ঐ ঘাটের
দক্ষিণে স্ব্যাঘাট—প্রস্তরে বছ আছে। ঘাটের উপর নিব এবং
হকুমানজি আছেন। পুরাণ মন্দিরের উত্তরে সনাতনেশ্বর নিব আছেন,
পরে গোস্বামী: কর সমাজ আছে। তথার বৈক্তবগণের কুটীর আছে,
আঘালী পৌণমাশীতে উৎসব হয়। এই উৎসবে বছ সমারোহ
হয়। ঐ দিবদ যত বাঙ্গানী যাত্রী থাকেন, সকলে নিজ নিজ শক্ষিণ
অফুগারে ভেট দেন। অতি ছংখা ব্যক্তি হইলেও ছই আনা ভেট
না দিলে দর্শনে যাইতে পায় না। এই উৎসব রাধাকুতে,
গোবর্দ্ধনে, প্রীর্ন্ধাবনে, তিন স্থানে হয়—তিন স্থানে সমাজ আছে।

#### ত্রী শ্রীগোপীনাথজিউ —

মধু পণ্ডিত গোস্থামী ভাজবাজির আদেশক্রমে গৌড়দেশ হইতে প্রাবন্ধাবনে আসিয়া গোপীনাথের দর্শন না পাইয়া পুনর্কার গৌডদেশে ঘাইয়া আপন গুরুর নিকট অদর্শনের বুত্তান্ত কহাতে পুনরাজ্ঞা হইল, তুমি পুনর্কার শ্রীবৃন্দাবনধামে গমন কর। অবশ্র পর্বমত বংশীধানি এবং গোপীনাথের দর্শন পাইবে। এই বাকা শ্রবণ করিয়া পুনরাগমন করিয়া বহু অংহেষণ করিলেন, কোন ক্রমে দর্শন কি বংশীধ্বনি ভনিতে পাইলেন না। তাহাতে মধ পশুত গোস্বামী বিবেচনা করিলেন, শুরুবাক্য কদাচ মিথা হটবে না। আমার পাপদেহ জন্ম দর্শন-প্রবণ ু ইলুলা। অভ্তাৰ ও দেহ বাধাক ইবান্চে। ইহা মনোমধো বিচার কবিষা ধীবসমীবের 'ঘাটে প্রাণ পরিজ্ঞাগের উপক্রম করাতে গোপীনাথ দর্শন দেন এবং কহিলেন, আমার যোগ-পীঠ কেশীমর্দন ঘাটের উপরে মহিকার ভিতর আছে। তথা হইতে আমাকে প্রকট করিয়া সেবাদি করহ। এই বাকো ঐ যোগপীঠ মধা চইতে প্রকট করিয়া দেবাদি করেন। বচকালান্তে রাজা মানসিংহ মন্দির নির্মাণ করিয়া দেন। বালসাটেত্র দৌরাত্মো মন্দির ভরের অনুমতি প্রথমত হটলে জয়পুরের রাজা এই বিগ্রহ লইছা যান। তৎকালের প্রকট হওয়া মর্ত্তি কেছ করেন জয়পুরে আছে, কেছ করেন বৃন্ধাবন হইতে কাম্যবনে সকল দেবমুঠি রাখাতে গোপীনাথ কাম্যবনে রহিলেন,

কামাবৰ—এজ-প্রিক্লার লিখিত আছে,—

 "বুলাবনের পশ্চির হয় কায়াবন।
 অটাবেশ কোপ বেট বিচিত্র কারন।

প্রতিমূর্ত্তি জয়পুরে আছেন। গোস্বামীদিগের গদি জয়পুরে। বংকালে সকল দেবের প্রতিমূর্ত্তি প্রিরুলাবনে গোস্বামী মহাশরেরা স্থাপিত করেন এক প্রস্তর-ইইকে দালান নির্মিত করিরা ভাষাতে স্থাপিত করেন। একণে বড়ুনিবাসী নক্কুমার বস্থুর ক্কৃত্ত মন্দিরে বিরাজিত আছেন।

গোপীনাথজিউ প্রকট হইলে কিছু দিন পরে নিত্যানন্দের

ঘরণী জাহ্ববাজি বুন্দাবনধামে আদিয়া গোপীনাথের বামে
রহিলেন, শ্রীমতীজি দক্ষিণে। এইরূপ এ পর্যান্ত শ্রীবৃন্দাবনে
বিরাজিতা আছেন।

নিত্যানন্দ-সন্তান যাঁহারা প্রীধামে আইদেন, পুর্বে মধুরার পৌছিয়া সংবাদ পাঠাইলে যদি অধিক বার করিতে পারেন, তবে সাত দেবালয়ে নচেৎ তিন প্রধান দেবালয় হইতে কীর্ত্তনে সকলে যাইয়া সন্তাতিন করিয়া লাইয়া আইসে। প্রথমে গোণীনাথের মন্দিরে আসিয়া বিশ্রাম করিয়া পরে প্রথমে গোবিন্দভির ভেট প্রভূ-সন্তানের ভেট মন্দিরে হয়। পরে মদনমোলন গোণীনাথের ভেট করিয়া প্রাণীনাথের বারীতে যতদিন থাকিবেন, গোণীনাথের পায়স্প্রসাদ পাইবেন। যদি ওথানে না থাকিয়া অক্তম্বানে বাস করেন, যাত্রা-উৎসবে নিমন্ত্রণ হইবে। যথন প্রসাদের ইছে হইবে, সংবাদ দিয়া লোক পাঠাইলে পাইবেন। বেরার বাহিরে দেবালয়ের রক্ত্রের

দেই বনে কুঞ্চতা বহু শীলা কৈবা।
মুখলীর অনিতে পাবাণ এবাইলা।
কুলের চঙ্গ-চিচ্ন মটিল সে বনে।
অস্তাশি পর্বতে চিহ্ন দেব বিক্রমানে।
" (৩১১ পুঃ)

প্রভৃতি কেই প্রসাদ নইরা আসিবে না। আরে আর গোস্বামীদের নেবালরেও ভেট করিতে হয়।

যদিক্সাং গোস্থামী দগের শ্রীজিউর দেবালয়ে প্রবিষ্ট হইরা আরতি দেখিবার ইচ্ছা হয়, তবে বে দেবালয়ে ভোগ ইতাদির যত ধরচ এবং শ্রীজেউদিগের বন্ধ অর্থাং এক শুট পোষাক নৃতন দিয়া আরতি করিতে হইবে। কিন্তু আর আর প্রভূ-স্তানেরা আইলে যে গদির সন্তান, সেই স্থানে তাঁহার থাকার নির্ম সকল ঐ মত। ভাহার প্রভেদ কিছু নাই।

যাত্রীদিগের শুরুপাটে বে ভেট হয়, জাক্বা-পরিবার, ঠাকুর রামাইদ্বর পরিবার, এই তিন পরিবারের শুরুভেট এবং যে সকল পরিবারের শুরু-কুঞ্চ শ্রীধামে নাই কি শ্রহার ঠিকানা হয় না, ভাহাদের শুরুভেট জাক্রাজির নিকট হয়। কেশীদাটে জাক্রাজীর ঘাট আছে। কি বাটের উক্তরে শুরুমী রাণীর কঞ্চ এবং বাট আছে।

গোপীনাথের মন্দিরের পূর্বাদিকে মধুপত্তিত গোস্বামীর সমাজ-স্থান, তথার অনেক বৈষ্ণবের কুটীর আছে। গোপীনাথের পুরাণ মন্দিরে একলে কোন সেবা নাই। গো সকলের খাঞ্চবা থাকে।

## জাহুবাজির মহোৎসব—

শ্ৰীপ্ৰীরাধা-দামোদর শ্ৰীপ্ৰীমহাপ্রভুৱ নিকট দিলা ছিলেন। তেঁহ শ্ৰীক্ষপ গোস্থামীকে দেবার জন্ত দেন। তেঁহ শ্ৰীজাব গোস্থামীকে কাহণার মহোৎসব সেবাকেরিতেন। গ্রীজীবংগোস্থামী ঐ শিলার সেবাকরিতেন। তাহাতে গোস্থামীর বড় বড় ধনী মন্ত্রশিব্য বিবেচনা করিতেন, আমরা ঐপর্ব্য পরিত্যাগ করিয়া ভলনার্থ বৈরাণী হইরাছি, এ উত্তম উত্তম অবছারাদি কি করিব ? যদি যে দেবা করিতেছি মূর্তিমান হইতেন, তাহা হইবে জাহাকে পরাইতাম। এইরপ মানস জানিয়া রাত্রে স্বপ্লাবেশে কহিলেন, "আমার মূর্ত্তি ... করহ। ন্দামি গোলাক্বতি নহি।" গোস্থামী রাত্রে উঠিয়া স্থানাদি করিয়া, প্রদীপ আলিয়া দেখিলেন, শালগ্রাম হইতে প্রকট হইয়াছেন। ঘাড়ে চিহ্ন আছে, ঐ রাধাদামোদরভি জ্বুপুরে।

৮९ शृंक्षेत्र भावतिक। अहेवा ।

<sup>🕇</sup> ৮৭ পৃঠার পাদটীকা দ্রষ্টব্য।

<sup>া</sup> ৮৯ পুঠার পাদনীকা দ্রপ্রব্য।

গ্ৰ ৮৮ প্ৰায় পাদটীকা ভাইবা।

<sup>- \$</sup> ৮৮ পৃঠার পাদটীকা জটব্য।

উত্তরদিকে রূপ গোস্বামীর সমাজ, তৎসমূথে ভক্তি-শাস্তাদি গ্রন্থসকল, গোস্বামীর বৈঠকস্থান। এইস্থানে ত্ৰণ ও জীবগোহামীৰ বসিয়া সর্বাদা শাস্তালাপ হইত। এই কথা সমাঞ সর্বত প্রকাশ হইলে, জনৈক দিখিজয়ী পণ্ডিত শীরূপ গোস্বামীর স্হিত বিচারে হার হইয়া হারপতী পাইলে সর্বত হার হওয়া হয়। গোলামী এ কথার আদেশ জানিতে পারিয়া পণ্ডিতের স্থানে বিচারে পরাভব হইয়া তাঁহাকে জয়পত্র দিয়া আপনার হারি হওয়া স্বীকার করিলেন। ব্রাহ্মণ জয়পত পাইয়া আহলাদযক হইয়া গমন করিতেছেন, এমত কালে পথিমধ্যে শ্রীজীব গোস্বামী বমুনাতে লানাদি কবিয়া আসিতেচেন। এাহ্মণকে নুগন্ধৰ জীব-গোপামী বৰ্জনের কারণ জিজ্ঞাসা , করিলেন ে, কি জন্ম এত আহলাদিত হটয়া যাইতেছ। তথন ঐ ব্রাহ্মণ বারংবার আত্ম-সম্মান কবিয়া বিচারের কথা কহিয়া কহিলেন, "রূপ গোলামী আমার নিকট বিচারে পরাভব হুইয়া জয়পত্র দিয়াছেন।" জীব গুরুর পরাভব শুনিয়া অতিশয় লক্ষিত হইয়া কহিলেন, "জাঁহার শিষ্য আমি. আমার সহিত বিচার করিয়া অত্যে জয়ী হও, তবে ত্রীবুদাবনের জরপত্র লইরা ঘাইবে।" এই কথাতে পথিমধ্যে ছুই কনে বিচার আরম্ভ হটল। ৰাদামুবাদে শশুত পরাভব হইলেন। তথন শ্রীরপ-গোলামীর লিখিত জ্বপত্র ফেরত লইয়া প্রভুল হইয়া শ্রীত্রপ গোলামীর নিকট আইলেন। গোলামী ত্রীজীব গোলামীকে জিজাসা ক্রিলেন, "ভোমার এত বিশ্ব কি জন্ত হইল ?" ভাহাতে কহিলেন যে, "বে ব্ৰাহ্মণ বিচাৰ কৰিবা জ্বপত্ৰ লইবা বাইডেছিলেন, ভাঁচাকে বিচারে পরান্ত করিয়া জয়পত্র ফেরত আনিয়াচি।" এই কথা এচত-মাত্র রূপগোরামী অগ্নিবরূপ প্রজ্ঞানিত হইরা করিলেন বে, "কি! ব্রাহ্মণকে পরাভব করিয়া আইলে ? আমি কি বৃন্দাবনে জয়ী হইতে আদিরাছি ? আমার জয়ী হইবার প্রয়োজন কি ? ভজন করিতে আদিয়াছি । তাহাতে ব্রাহ্মণের অপমান করা। ব্রাহ্মণ এই জয়প্ত দেখাইয়া আপন জীবিকা-নির্ন্ধাহ করিয়া জীবন রক্ষা করিবে। জীব ! তুমি তাঁহাকে পরাভব করিয়া জন্পত্র লইয়াছ, ভাল কর নাই। তুমি যে কর্ম্ম করিয়াছ, ত্রাহ্মণের পরাভব করিয়া আপনার মানর্ছি করা, ইহাতে তোমার মুখাবলোকন করিতে ইচ্ছা হয় না। তোমার মুধ দর্শন করিব না।" এই কথা শ্রীজীব গোস্থামী শুনিবামাত আর শীবুলাবনধামে না থাকা বিবেচনা করিলেন, যথন ওক কট হইলেন, তথন আর আমার এছানে থাকা কর্তব্য নয়। এজীব গোৰামী স্থানান্তরে গ্লুমন করিবেন, এই সংবাদ অপর গোৰামিগণ ও ভক্তবুল ওনিয়া কোনক্রমে না যাওয়া হয়, তাহার অনেক চেটা পাইলেন। বেহেতু শ্ৰীজীব গোস্থাী সকল শাস্ত্রে সুপঞ্চিত, বিশেষতঃ গোম্বামীদিগের যত গ্রন্থ তাহার মূল একীব গোম্বামী। কিন্ত কাহারও কথা না গুনিয়া শ্রীধাম হইতে যাত্রা করিয়া নন্দ্বাটে এক কুটার -বান্ধিয়া ঐ কুটার মধ্যে ভজনে থাকিলেন। দিনাস্তে যমুনার জ্ঞালী ষমনার মন্ত্রিকা মিলাইরা ভক্ষণ করেন, তাহার কারণ ব্রম इंडेर्फ्ट क्लेंड इहेबा आमात्र मुश्रमर्गन कुतिरयन ना कहिबाहिन, उपन এ পাপদের রাধিবার ফল কি আছে ? শ্রীগুরুগোবিন্দচরণ ভাবনা ক্রিতে ক্রিতে ধনি এ দেহ ত্যাগ হয়, তাহা হইলে ভাল হয়। এইরূপ দৃঢ় প্রতিজ্ঞা করিয়া ভদ্ধনে রহিলেন। এইরূপে বছদিন গভ হুইল, এখানে একদিন গোস্বামীসকল একত্ত হুইয়া নানা শাস্ত্ৰালাপ হুইতে এমত এক প্রশ্ন হইল বে, কেহ ভাহার সিদ্ধান্ত করিতে পারিল না। তথন এীরূপ গোসামী কহিলেন বে. "জীব কোথার ? ইছার সিছার জীব ভিন্ন কেচ করিতে পারিবে না।" তথন সকলে কহিলেন বে, "তুমি জীব গোস্বামীর প্রতি কোপ করিয়া মুখ দর্শন করিতে না চাওয়াতে তেঁহ নন্দ্বাটে কুটীর মধ্যে সাধনে আছেন।" শ্রীরূপ গোস্থামী অমুমতি করিলেন, "একণে জীবকে আমার নিকটে আন্তুন কর।" একথা ভূনিয়া সকলে আহলাদিত হইয়া ভক্তজন মধো জনৈক তৎক্ষণাৎ শ্ৰীজীব গোস্বামীর নিকট ঘাইয়া, এই কথা কহিয়া कहिल, "मीध श्रक्रामय-निकार श्रीयुक्तायान हल।" श्रीकीय शासामी ভনিলেন যে ওকদেব কট ছিলেন তুট হইয়া কথাদৃষ্টিপাত করিয়া-ছেন, এই মহানলে প্রজুল হইয়া নলবাট হইতে নলনন্দনরূপ ভাবিতে ভাবিতে শ্রীবৃন্দাবনে আদিয়া, গুরুচরণ দর্শন করিয়া, উভয়ে প্রেমাননে মগ্ন হইয়া, নেত্রজ্ঞে মুরুক্ত পদে স্রোত বহিল। পরে পূর্ব্বমত একর্ত্তে থাকিয়া কিছু দিন পরে শক ... ... প্রাবণী শুক্লান্দণীতে শ্রীক্রপ গোস্থানীর তিরোভাব হয়। যে তেঁতুল বক্ষের মলে প্রথমে আসিয়া বৈদেন, তাহার সম্বাধ ভল্লন-কটীর। ভাহাতে গোস্বামীর কার্চপাতকা, করন্ধ, কৌপীন,(ও) বহির্বাস ছিল, প্রীজীব গোন্ধামী এই সকল বস্তুত্পপ্রাপ্ত হন। তেঁড়ল বুক্লের নীচে ভট্ন গোস্বামী শ্রীমন্তাগবতাদি পুরাণ প্রতি দিবদ পাঠ করিতেন, ভয় গোস্বামী একত হইয়া প্রবণ,করিতেন। বজ্পাদনের সংলগ্ন দক্ষিণ-পুর্বদিকে তেঁতুল গাছের নিমে গাছের পশ্চিমদিকে স্মাজ-স্মুধে যে কুটীরে ভল্পন করিতেন, তাহাতে গ্রন্থ সকল অস্থাবধি জীবংমান আছে। বৃহৎ বৃক্ষ কল্লেকটি শাথাখণ্ড হইলাছে। আৰ্বণী ৩০কা খাদশীতে ঐ স্থলে মহোৎসব হর। এীশীব গোস্বামীর পরিবার বে গদির গোত্রামী আছেন, তাঁচারা উৎসব করেন। আছ আর গোস্বামীদিণের গদির দেবালর হঠতে রীতিমত প্রসাদ

মিটার মাল্যাদি দিয়া সমাজ-পুজা এবং এক টাকা করিয়া দেন।

শীরপু গোস্বামীর তিরোভাব হইলে শীলীব গোস্বামী গোস্বামিগণ সমভ্যারে ভক্তবৃন্ধ নইরা ভক্তি-শাস্ত্র এ দেশে এবং গৌড়রাজ্যে এচলিত করিয়া শীশীরাধা-দামোদরের "সেবাদি উদ্ভমরূপ
করিয়া ইচ্ছামতে পৌণী শুক্লাতৃতীয়াতে তিরোভাব হইলেন। ঐ
দিব্দ মহোৎসব হয়।

গোস্বামীর গদি ক এই স্থানে জীব গোস্বামীর পরিবার যে শিষ্য শ্রীবৃন্দাবনদর্শনে আঁইসে ভাহাদের গুরুপাটের ভেট এই গদিতে গোস্থামীর গদি

হর। অভাবধি শ্রীজীব গোস্থামীর উৎসবে

অগ্রে শ্রীকপ গোস্থামীকে ক্রকাদি নিবেদন
করিরা পরে জীব গোস্থামীর সমাজ্পুরা হয়।

ত্রীরাধানামোদরের মন্দিরে আর এক মূর্ত্তি বৃন্দাবনচক্ত নামে আছেন। এই মন্দিরে পূকারি, ইন্থারে, বারসেবক, ভাণ্ডারী ইত্যাদি পরিচারকগণ উৎকলবাদী আন্ধণ এবং বৈষ্ণব। আর ছই ত্রীমূর্ত্তি মন্দিরে আছে, বাত্রাদিতে ঐ মূর্ত্তি বাহিরে আইদেন।

জন্মণাত্রার অভিবেক দিবাঁতে হর, এই মত পূর্বে ছর গোলামীতে করিয়াছেন।

# ন্ত্রী দ্রীরাধারমণজ্ঞি---

গোপান ছটু গোৰামীর সেবা—ছট গোপান এক লালগ্রাম নিলা সেবা করিতেন। আর আর গোৰামী এবং মোহান্তদিগের শ্রীমূর্ত্তি-সেবা। উাহারা আপন আপন সেবার মাধারন ধনকে নানা প্রকার সিলার এবং অর্ণব্রৌপ্যের অলকারাদি দিরা, হতে বেগু বেগু নিলা দিরা, নীল-প্রিড-বল্প পরাইয়া, চরণে নুপুর গুজার দিরা মনোমত সাজাইয়া, মন্তকে টেড়া চূড়াতে ময়রপাথা দিরা, চন্দনে চর্চিত-জন্ধ করিয়া, য়ৢগলপদে সচন্দন তুলসীমঞ্জরী অর্পণ করিয়া, আপন আপন ইট সমীপে মনোজীট সিদ্ধ করিতেন। ভট্ট গোপাল এক দিবস মনোমধ্যে ভাবনা করিয়া কহিলেন য়ে, য়িদ আমি একটি ছিভুক্ত মুরলীধর মুর্বিসেবা করিতাম, তবে সকলের মত সাজাইয়া, হাতে বাশী, মাথায় চূড়া দিরা সাজাইতাম। এই কহিয়া ঐ শিলাতে অলকাতিলকা দিয়া সাজাইলেন। ভট্ট গোপালের অচলাভক্তি দেখিয়া ঐ শালগ্রামনিলা হইতে রাধারমণলি প্রকট হইলেন,—পুটদেশে শালগ্রামিচিল। ঐ সুর্বির সেবা ভটুগোপাল বহুদিন করিয়া স্থবে ভজনসাধ্যেন কালহরণ করেছ আবণের ক্লফা-পঞ্চমীতে তিরোভাব হইলেন। এই দিবসে মহোৎসব হয়। জটুগোপালের চেলা দেশোয়ালি এক গোণালতটের সমাল

ক্র গদির গোঁহামী আছে। এই জীর দেবা— গোঁহামীদিগের বহু গোঁটা হওয়াতে বিভাগমতে দেবা করিয়া থাকেন। উত্তমক্রপে দেবাদি হয়। অস্তু কেহু ভোগের জুবা স্পর্শ করিতে পারে না। সকলই গোঁহামীদিগের নিজ হুন্তে দ্র। জীলোক দেবার জবা স্পর্শ করিতে পার না।

প্রীপ্রীরাধারমণন্দির প্রীমতী মৃত্তি প্রকাশ নাই। বন্ধার্ত এক বন্ধমৃত্তি গোপনে বাম পার্ছে আছে। তৎপরে শোভাবিত বন্ধাদি এবং ছত্র থাকে। প্রীন্ধি অতি স্কৃঠাম ধর্কাকৃতি। ইহাদিগের শিব্য বড় বড় ধনী সকল আছে। মন্দিরের হার চৌকাঠ রূপার থচিত। ক্ষণা সোণার অনেক আসবাব আছে।

ভট্টগোপালের সমাজ-মন্দির পশ্চিম। সম্বাভবাড়ী—ভাহাতে ১২৬ বালালি বৈষ্ণৰ পরিচারক আছে। দেশোগালির সেবা, কিন্তু উৎসব ইত্যাদিতে বালালি বৈষ্ণবাদি ভোজন এবং সঙ্কীর্তনাদি গান। ঐ দিবস অষ্টপ্রহর হয়। কীর্ত্তনাদিতে রাজি জাগরণ হইয়া পর দিবস প্রাতে নগরকীর্ত্তন করিয়া বৃন্দাবনে ভ্রমণ করিয়া হরিসঙ্কীর্তন করিয়া প্রেমানন্দে মর্ম হয়।

জন্মাইমীর অভিবেক — রাধারমণের, (ও) রাধা-দামোদরের ছই স্থানে দিবাতে সকল গোস্থামীরা পূর্বাবধি করিয়াছেন। পূর্বেছ ছব লমাইমীর অভিবেক গোস্থামীতে—অগ্রে জীব গোস্থামীর ও ভট্ট গোপালের সেবার অভিবেক করিলে রাত্রে আর সকল স্থানে গোবিল মদনমোহন ইত্যাদিতে অভিবেকপুলা ছোম হইত। সেই মত প্রধা অস্থাবধি চলিতেছে।

# শ্রীশ্রামকুন্দর জিউ---

ভাষানন্দ গোষামীর সেবা—গোষামী উৎকলবাসী। পূর্বে
নিক্সবনের দেবাকুলে ঝাড় দিরা পরিকার করিতেন। এই মত
ভাষ্থলর
ক্ষের সম্প্রে পাইলেন। নূপ্র পাইয়া বিবেচনা করিলেন,
এ বস্তু সামান্ত ব্যক্তির নহে। যাহার নূপ্র তাঁহার দর্শন না
পাইলে অন্ত কাহাকেও দিব না। এই বিবেচনা করিতে করিতে
যশোলা রূপান্তর হইয়া এক স্ত্রীর রূপ ধারণ করিয়া ভাষানন্দের নিকট আসিয়া কহিলেন যে, "বাবাজি! আমার বধু এই
বনে বনবিহার ক্ত আসিয়াছিলেন, তাঁহার পদের নূপ্র ফেলিয়া
গিয়াছেন, অতএব যদি তুমি নূপ্র পাইয়া থাক, আমাকে দেও।"

এ কথা ভনিবামাত্র শ্রামানল কহিলেন যে, "আমি নুপুর পাইরাছি, কিন্তু তোমাকে দিব না। তুমি কেন আসিয়াছ, তুমি কে ?" তাহাতে কহিলেন, "আমি ব্ৰহ্মবাদিনী। ,আমার ব্রু আমাকে কহিলেন বে, আমি নিকৃঞ্কবনে গিয়াছিলাম, শীঘ্ৰ শীঘ্ৰ আগিতে পদ হইতে নৃপুর বর্নের কোন স্থানে পড়িল, তাহা তৎক্ষণাৎ জানিতে পারি নাই। অভএব তুমি ঐ বনে বে শ্বামানন গোৰামী বৈষ্ণব ভল্প করিতেছেন এবং ঐ কুঞ্জের ঝাড় দিরা থাকেন, ভাঁহার নিকট যাইলে পাইবে। এজন্ত ভোমার নিকট আসিয়াছি।" স্থামানল কহিলেন, "বাহার পছের নপুর ভেঁহ না আসিলে দিব না।" এ কথা ভবিহা বশোদাবাণী জীমতীজিকে কহিলেন যে<sub>।</sub> "ভোমাকে না দেখিলে নুপুর দিবে না।" এ কথা ভনিরা বিবেচনা করিলেন হে, স্থামানল আমার ষ্থার্থ ভক্ত। वाहा इडेक, आमानमरक मानवरमरह मर्मन मिर्छ इटेरव, ইহা কহিয়া নিকুলবনে আদিয়া শ্রামানক্ষকে কহিলেন বে, "আমার নুপুর পাইরাছ, আমাকে দেহ।" তাহাতে কহিল বে, "আমার নিকট নৃপুর আছে, তোমার নৃপুর কি অঞ কাহার, তাহা কি প্রকারে জানিব ? তবে ভূমি বৈদ, পদ বাড়াইরা দেহ, আমি ঐ নৃপুর পদে দিয়া দেখিব, যদি ভোমার পদের মত হয়, তবে তোমাকে দিব।" একথা ভানিয়া জীৱাধা ভাষানক-অত্যে বুগল্পদ অতাসর করিলেন। তথন ভাষানক খ্রীপদ দর্শন করিয়া নুপুর বুগল পদে দিতে দিতে দেখিতেছেন, भगाउरम शाउ:कारमद काकन-मीश मननार मनाउस विश्वाधिक मःयुक्तः ।

চক্রার্দ্ধং কলসং ত্রিকোশং ধছুলিখং গোপাদং পৌষ্টিকং।

এই বিংশতি চিহুষ্ক পাদপন্ত। দেখিতেছেন। তন্মধ্যে রাছকেতৃ আদে শশধর দশ থপ্ত ইইনা নথ-ছলে লুকান্নিত আছে। ভক্তগণের মনোচকার স্থাপান-প্রমাদে পদাকাশে ভ্রমণ করাইতেছে। এবস্তৃত প্রিপাদপন্তের শোভান্নিত দেখিয়া আপনাকে ধুন্ত মানিয়া পদানরীক্ষণে নেঅশ্বলে পরিপূর্ণ ইইল। তথন প্রীমতীক্ষত শ্লামানন্দের প্রেম জানিয়া তাহার প্রতি কুপা করিয়া ঐ নূপুর হতে লইয়া শ্লামানন্দের ললাটে নূপুরের চিহু দিয়া দিলেন। ঐ নূপুরে যে থিল ছিল, তাহার বিন্দু-চিহু রহিল। ঐ অবিধ শ্লামানন্দ গোলামী ইইয়া নূপুর-চিহু তিলকধারণ করিল, শ্লামস্থলরের সেবা করিয়া বছ শিষ্যাপণ লইয়া প্রেমানন্দে ময় থাকেন। উৎকলদেশে প্রায় শ্লামানন্দ্র প্রত্ম ভক্তন-কৃটীর নিক্সবর্দে অক্লাবধি আছে। এই মত বছদিন সেবাদি করিয়া এবং নিজে ভক্তগণ লইয়া কাল্যাপন করিয়া প্রির্মাণ বিরমাণ হেলাই শুকুপিক্ষীতে গোলামীর তিরোভাব হন। ঐ দিবদ মহোৎদ্ব হয়। সমাজবাটী শ্লামস্থলর-মন্দিবের ঈশান্দিকে রাত্যার পুর্বদিকে। ঐ বাটাতে

উজ্ঞ্বলনীলমণি ও তাহার টীকার ঞীরাধার একোনবিংশতি পদ্ভিষ্ট এইরণ নিন্দিই ইইরাছে, —বামচরণে অসুঠনুরে ১ যব, তাহার তলে ২ চক্র, তাহার তলে ২ স্পতাক ধ্বল, তাহার তলে ২ বলী ও ৯ পূপ্প, কনিষ্টার তলে ১ অস্কুল, পাঞ্চিতে ১১ অস্কুল, ক্ষণিচরণের অসুষ্টমূলে ১২ শব্দ, তাহার তলে ১০ সাবা, কনিষ্টার তলে ১৪ বেছি, তাহার ডক্রন ১৫ কুবল, তাহার তলে ১৬ শক্তি, তর্জ্বলাহির অসুলি-তলে ১৭ প্রত্যা, তাহার তলে ১৮ বুধ এবং পাঞ্চিতে ১৯ মুখ্য ভিছ্ ।

( ভাগৰত ১০।৩০:২৪ লোকে বিখনাখ-চক্ৰবৰ্তীর টীকা এটব্য। )

বহু বৈষ্ণব আছে, বারে বৈষ্ণবদের বিহারীলী এক বিগ্রহ আছেন, বৈষ্ণবের সেবা শ্রামস্থলরের দেবালয় সাত দেবালয়ের মধ্যে। পূজারি, রস্থার, ভাণ্ডারী ইত্যাদি শ্রীমন্দিরের টহর্লদার সকল উৎকলবাসী।

## শ্ৰীশ্ৰীগোকুলানন্দ—

লোকনাথ গোৰামীর সেবা-এই দেবালয়ে রঘুনাথ দাস গোস্বামী গিরিধারী লোকনাথ গোস্থামীকে সৈবার জন্ত দেন। ঐ গিরিধারীর সেবা গোকুলানন্দের মন্দিরে আছেন। এই স্থানে থাকিবার তাৎপর্যা এই যে, দাদ গোস্বামী ঐ গোক্লানৰ গিরিধারী শ্রীগৌরাদ মহাপ্রভুর নিকট প্রাপ্ত হন। মহাপ্রভু ঐ গিরিধারী-উপরে বৃদ্ধান্ত্রির চিক্ত দেন। দাস গোস্বামী ঐ গিরিধারী লইয়া শ্রীরাধাকুতে থাকিয়া দেবাদি লোকনাধ গোলামীর করেন। ঐ কুণ্ডের তীরে তৎকালে লোক-নাথ গোস্থামীর দেবা গোকুলানন্দ ভিলেন। সেবা ঐ দেবালয়ে এক বৈষ্ণব থাকিত। দাদ-গোস্থামী বচ দিনীত্তে আখিনী ভুকা-খাদণীতে ংংকালে ত্রীকুণ্ডের তীরে তিরোভাব হন, ঐ গিরিধারী দেবা বে বৈষ্ণব গোকুলানলের ছিল, তাহার निक्रे (मन । भारत केंक् मियान शिरहां शांव केंद्रिण की कार खंद উত্তর দিকের তীরে দান গোলামীর সমাজ হয়। একণে ঐ স্থানে অনেক বৈক্ষৰ আছেন। আখিনী গুক্লাৰাদশীতে মহোৎসৰ হয়। পরে ঐ গিরিধারী ত্রীকৃত হইতে ত্রীবৃন্দাবনে ত্রীত্রীগোকুলা-নব্দের মন্দিরে লইরা আইসেন। লোকনাথ গোখামী

মাধবেক্সপুরীর শিষ্য, দাস-গোত্থামী বাদবেক্স পুরীর শিষ্য। লোকনাথ গোত্থামীর তিরোভাব প্রাবণী কৃষ্ণান্তমীতে, ঐ দিনে মহোৎসব হর এবং নরোভ্যম দাস ঠাকুরের সমাজ ঐ স্থানে আছে। নরোভ্যমান লোকনাথ গোত্থামীর শিষ্য, কিন্তু নরোভ্যম দাসা বহু শিষ্য করিবাছিলেন, এজন্ত "ঠাকুর মহাশ্য" উপাধি

\* মাধ্যবজ্ঞপুরী—ত্বিকুসংহিতা-প্রশেষ্ঠা বাস্তিবর্ধির শিব্য ভক্তিরসের আন্তর্জন কাশ্রীপতি, তৎপির মাধ্যবজ্ঞ। এজধানে অবস্থানকালে ইনি যে ধর্ম প্রবৃত্তির করেন, তাহা আহি, প্রেম ও বাংসুলো উজ্জ্ঞ নামক কলধারী কল্পবৃত্তির বিষয়ে বিভিন্ন বিষয়ে বিশ্ব করিয়াহিলেন।

নরহরি চক্রখর্তী লিখিয়াছেন,—

"কে কহিতে পারে লক্ষীপতির মহিমা। বাঁর পিরা মাধবেক্সপুরী এই সীমা। মাধবেক্সপুরী প্রেমক্ডিরসময়।

ৰার নাম করণে সকল দিছি হয় ঃ° (ভঙিরভাকর)

† নীরোভন হাস—অসুক্ষান ১০০ গ্রুণ্ড শকাব্দে রামপুর-বোরালিয়ার ছর কেশি দুরবর্তী গড়েরহাট গরগণার অর্থন ওবেরী আনে উত্তররাটার কারছ-বংশীর জনিগর রাজা কুজানন্দ গড়ের নারারণী নামী পত্রীর গর্জে নরোভম জন্ম-এবণ করেন। বাল্যকাল হইতেই নরোভম গৌরপ্রেম মনিরাছিলেন, পরে ব্ধন-ভানিলেন যে, সম্প্রতি শীরোরাল অপ্রকট কইবাছেন, তথন উচ্চার মুক্ষ্য কইবার উপক্রম কইরাছিল এবং বধন ভানিলেন যে, মহাপ্রভুর অর্থনানে বহত্তর ভক্ত ও প্রধান প্রধান পার্থবর্গন বুলাবনে গমন করিয়া বাস করিভেছেন, তথন উচ্চার মুলাবনেক্সপ্রতি মুল্ অসুরাগ জ্বিল। সংক্রা গৌরকধার্থসক্তে করে খেলা-খ্লা ছাড়িলেন, লেখাপড়ার পর্যান্ত অননোবোগ ঘটিল। ইহাতে পিরামাতা চিত্তিভ ক্রনেন। কিন্তু বালক নরোভ্যন সৌর-কথা ভানিতে না পাইকে নিভেজ ক্রমা করিয়াছিলেন, অঞ্চাবধি ঠাকুর মহাশরের পরিবার খ্যাত আছে। যাহারা প্রীর্ন্দাবনে আসিয়া গুরু-ভেট করে, ঠাকুর মহাশরের পরিবারের ভেট একণে গোকুলানন্দে হয়। নরোন্তন ঠাকুরের তিরোভাব কাতিকী ক্রফাপঞ্মী।

## এ এ বাঁকে-বিহারী---

নিধুবনা হইতে প্রকট হন। নিধুবনে শ্রীমতী রাইরাজার স্থান
পড়িতেন। একবিন প্রাতে নরোরম প্রাাননীতে স্থান করিতে বিল্লা স্থানালয়
ভীবে উট্টা নৃত্য করিতে লাগিনেন। তৎকালে তাহার রাজ্ঞানশৃত্য। ইহার
পর হইতেই নরোরমের নৃত্ন ভাব হইল। কথন হাসেন, কথন কালেন, কিছুই
দ্বির নাই। ইহা দেখিরা শিতামাতার মনে হইতে লাগিল, পুর উন্থান
হইরাছে। কথন কথন নরোরম রুদাবনে বাইবার লক্ত অতিবর আগ্রহ প্রকাশ
করিতে লাগিনেন। তপ্তিছার তাহার ননকামনা পুর্ব ইইল। তিনি পিতামাতাকে কাকি দিরা বুলাবনে শলাইল আগ্রিলেন। এবানে প্রোপনে লোকনাথ
প্রোমানির শিব্য হইলেন। কিছুদিন পরে প্রায়নী প্রিলাই কিলা পাইলেন।
ছৎপরে তিনি শ্রীমীর পোন্থামীর নিকট সমস্ত ভক্তিশান্ত শিক্ষা করিলেন।
শ্রীমীর পৌড়বেনে ভক্তিশান্ত প্রচার কবিবার অল্ক নরোক্তম, ভাষানন্দ ও
শ্রীনিবাসাহার্যা—এই তিন ব্যক্তির উপর ভার বিয়াছিলেন। শ্রীমীমই নরোক্তমকে
ভিত্র মহাবহা উপাত্তি প্রশান করেন।

† নিধ্বন—বিব্লাবনধামহিত তীপবিশেষ। আইক, রাধিকা, বৃশা প্রস্তৃতি সধীপাণসত এই হানে বিহার করিতেন। ইহার আদি নার বৃশাবণা বা বৃশাবৃদ্ধ। এই বৃশাবণা নার হইতে বৃশাবন নামের উৎপত্তি হইহাছে। এই বিধুখনে কৃত্রিম মুকাও চুনির গাছ আছে। প্রবাদ আছে, বীরাধিকা কৃষ্ণের নিকট সনি-মুকার অলভার চাহিলে তিনি মাহাখোগে মুকার ও চুনির গাছের ক্ষ্পী করেন। এই অপরিমের ও অমুল্য নিধির আছে ইহা নিধুবন নামে থাাতঃ এই বন নারাগণতট্ট কর্তৃক আধিছত চোরালি খনের শ্বর্গতঃ

অন্তাবধি নিবিড় বন আছে, চতুস্পার্শ্বে প্রাচীরবেষ্টিত অতি প্রাচীন
বাংক্বিফারী
বাজ-দিংহাসন আছে। বনমধ্যে রাধারাণীর
রাজ-দিংহাসন আছে। এক্সণে মন্দির
নির্মিত হইরাছে, তাহার পার্শ্বে হরিদাসের সাধ্যনের স্থান, মধ্যে
মধ্যে কুপ্ত আছে। নির্মুলে যে বিহারীকুপ্ত, তাহাতে বাকেবিহারী
প্রকট হন, এক্সণে বিহারী-প্রাতে শ্রীমন্দির ! ব্রজবাদী
গোস্থামীর সেবা। এক্সণে বাকেবিহারীজির গোস্থামী বহু গোন্ঠী
হইরাছে। বেহারিপুর নামে বদতি হইরাছে।

বিহারী জির দেবাদি — পুজর্মির গোলামী ভিন্ন আন্ত কাহার হইবার ক্ষমতা নাই, দর্শন পাওয়া কঠিন। ঝাঁকি-দর্শন বেলা ছই প্রহর সময়। সিলার হইয়া এক ঝাঁকি দর্শন, পরে সন্ধাার সময়ে আারতি দর্শন, রাজ ছয় দও পর্যান্ত ঝাঁকি-দর্শন হয়।

বিহারীজির ঝুলান প্রথম এক দিবস প্রাবণী শুরুছিতীয়াতে, জনকোটা-বাঝাতে প্রকার ভোগ। বিহারীজির নিকটে প্রীরাধামুর্টি প্রকাশ নাই। সংপ্রতি নিধুবন হইতে বলদেবমূর্টি প্রকট হইয়াছে। বিহারীজির বাটার সন্মধে এক বাটাতে আছেন।

## **बिजाशावद्यक्रक**\*—

আঁধের-ঘাটের নিকট শ্রীমন্দির হরিবংশ গোলামীর† প্রকাশিত।
রাধাবলভনী – রাধাবলভনীর মন্দির লাহালীর বাদশাহের রাজ্যকালে
বির্দ্ধিত হয়। রাধাবল্পতী সম্প্রদারের প্রবর্ত হরিবংশ গোলামী এই মন্দিরের
প্রস্তিভাতা। সুন্দার বাস নামক জনৈক্ কাংছের ব্যবে ১৬৪১ সংবতে মন্দিরের
নির্দ্ধান্দার্গ্রাবর হইবাহিল।

† হরিবংশ গোবামী—( হরিবংশ হিতকী) রাধাবন্ধতী সম্প্রধান-প্রবর্ত্তক একরম এসিদ্ধ কবি ও পণ্ডিত। ১১৫৫১ সংবতে আগ্রাহ ইনি নশ্বগ্রহণ কৈরে।

গোসামী রাধামস্ত্রদিদ্ধ অতি জাপক, গুরুতক্তি অতিশয় ভিল। সনাতন গোস্বামীর শিষ্য ছিলেন। ছরিবংশ বাধাবলভ গোস্থামী এক দিবস একাদশীতে শ্রীমডীক্রির ভাষুব প্রসাদ পাইরা ছর গোস্বামীর নিকট গিয়াছিলেন। গোস্বামী সকলে কহিলেন, "হরিবংশ ৷ একাদশীতে তামুল-সেবা ?" কহিলেন, "এমতীজির প্রসাদ।" ইহাতে গোস্বামীদিগের কোপ হইয়া মনাতন গোস্বামীকে কহিলেন, "হরিবংশের এই উত্তর।" গোস্বামী ক্রনিবামাত্র হরিবংশ গোস্বামীকে ভাগে করিলেন। আর কহিলেন যে "তোমার অপমৃত্য হইবে।" হরিবংশ এই কথা শ্রুত-মাত্র বমনা পার হইয়া মাঠ গ্রামের নিকটে বমনাভীরে ভলনে রহিলেন। কতক দিনাত্তে দল্লাগণ ঐ গোলামীর মন্তক-ছেদন করে। মক্তক-ছেদন মাত ঐ মন্ত'ক গোস্বামীর গুরুর হল্তে পড়িয়া শ্রীমতীঞ্জির পাদপদ্মে পড়িল, তথন সকলে অতিশয় চঃথিত হইছা বিলাপ করিলেন এবং হরিবংশ গোস্থামীর সমাজ রাসমগুলে कविर्त्तन। अक्र ठार्श अन ताथावल छी-थाक आनाहिमा इहेन। অন্তাবধি রাধাবলভের গোসামীর্গণ পঞ্জিত ও ধনবান অভিশব।

ইনি কথানল ও রাধারন-ফ্থানিধি নাত্রে সংকৃত গ্রন্থয় এবং হিন্দী ভাষার চৌরালিপদ রচনা করিরাচিলেন। ইনি রাধাবরভালীর মন্দির প্রাভিটা করিরা-ছিলেন। হরিবংশের দুই প্র-ব্রজনীয় ও কুক্টাদ। রণ্টাপের বংশ ধ্রণণ অ্যুলি রাধাবরভালীর অধিকারী।

# র্ন্দাবন হইতে জয়পুর-যাত্রা

সন ১২৬১ দাল ৭ আঘাঢ়

শ্রীর্ন্ধাবনধামের অপ্রবিহারী ঠাকুরের কুঞ্জ, বাহা জয়পুরের রাজরাণী হাপিত করিয়া(ছেন), শ্রীশগোপীনাথ জিউর গোস্বামীর জামাতা শ্রীত্বত রাম প্রশান চট্টোপাধ্যার পাইরাছেন। ঐ কুঞ্জ হইতে শ্রীত্বত বাবু কানী প্রদান ঘোষ এবং তাঁহার স্বন্ধর প্রামবালারনিবাসী শ্রীর্ত মাধবচক্র বহুজ সপরিবারে প্রপ্রবধ্ সমেত এবং শ্রীর্ত ভোলানাথ দুখোপাধ্যার মহালয় প্রভৃতি জার জার বহু জন সমত্যারে একত্রে সন ২৫৬১ সালের গু জাবাচ দিবা তৃতীয় প্রহর গতে জয়পুর-পুক্র-তীর্থ গমনের ধালা করিয়া, ঐ দিবস রাল চারি দণ্ডের সমরে মপুরানগরে রাজা পাটনীমলের বাটীতে থাকা হয়। মপুরার য়ালা পাটনী বহুং বাটী সরাইয়ের মত। তাহার উপরের মলের বাটী ঘরে থাকা হইল। রাজে পুরি কচুরি জানাইয়া স্পাহার করিয়া ছাতের ভাতাবে শকলে শরন হইল। শ্রীলোক সকলে ঘরের ভিতরে রহিলেন।

#### ৮ আয়াচ

মণুরাতে আহারাদি করিয়া দিবা আড়াই প্রহরের পর গমন
করিয়া মণুরা হইতে চারি ক্রোশ শশাগ্রাম। ঐ প্রামে প্রবেশ
করিতে প্রথমে নিমকী আবগারী অর্থাৎ
নাদক-স্রব্যের এবং মিট স্রব্যের পরমিটের
ভলাসী আছে। লাইন-ডেরি নামক কণ্টক ছারায় প্রকৃষ্ক রাধিয়া
১০৫

স্থানে স্থানে বে সকল গমনাগমনের পথ আছে, ঐ পথে তল্লাসীর চাপরানি থাকে। ঐ স্থানে তল্লাসী দিয়া রাজ চারি দণ্ডের সময় প্রামে প্রবিষ্ট হইরা চারি পাঁচ দোকান আছে। তাহার নিকট একটি বড় কুয়া এবং অ্বখবটের ছায়া পরে দোকানের সম্প্রে প্রামের মধ্যক্লে ময়দান কায়গা আছে, ঐ ময়দানে রাজে থাকা হইল।

#### ৯ আধাঢ়

ঐ শশা হইতে প্রাতে গমন করিয়া ছর জোশ শোঁক, জরতপুরের রাজার অধিকার। বাজার আছে এবং বসত সকল লাভির ও থানা আছে। ঐ স্থানে এক পুক্রিণী, তাহার নিকট নিংবুক্লের ছায়া। এক সমাজবাটী, তাহার নিকট এক অন্ধিণের নৃতন বাটী, তাহাতে বেলা ছই প্রহরে আহারাদি করিয়া তথা হইতে চারি ক্রোশ এক গ্রামের নিকটে এক মাঠের, ধারে একটি বৃহৎ বট কৃক আছে, এক পাতকৃয়া আছে, ঐ স্থানে এক বৈফবের আথকা আছে, তাহার নিকট মাঠে রাজে পাল থাটাইরা তাহার মধ্যে রাজবাদ। ঐ রাজে ঝক বৃষ্টি হয়।

## ১০ আধাঢ

প্রাতে গমন করিয়া তথা হইতে চারি ক্রোশ কুন্তীরা সহর। চৌদিকে সহর্পানা, ভিতরে ভরতপুরের রাম্বার কেলা আছে। ঐ

কুজীর। সহর—কুজের নামে আনুনা ব্যাত। তরতপুর সহর হইতে
১১ নাইল উত্তর-পশ্চিমলিকে, দীপু বাইবার রাজার উপর আবহিত। ১৭৫৪
বটাকে সরচাগা এই হান আবরোধ করেন। বহীর ১৮ল লচাকাতে জরপুর-

কেলার নধ্যে রাজার এক বাটা আছে এবং -সহরপানার ধারে ধারে ধারপাল সকল (ও) থানা আছে। সহর মধ্যে অনেক ধনাচ্যগণের বাদ। নানামত জ্বয়াদি পাওয়া যায়। কেলা মধ্যে বৃহৎ বৃহৎ কামান সকল আছে এবং চতুপার্ষে বে সকল প্রাচীর এবং বৃক্জের ঘর আছে, তাহার ভিতর হইতে গুলি চালাইবার

কুকর আছে। কেলার বাহিরে বে মুরচা পশ্চিমদিকে ছিল, তাহার কিয়দংশ ভাঙ্গিরা এক
কামান নীচে পড়িরছে। ঐ কামান মাপ করিয়া দেখিলাম, বাইশ
হাত লম্বা, তিন হাত বেড়। এই মত কামান বাহির মুরচাতে ছিল।
পশ্চিমন্বারে বে থানা আছে, তাহাতে তাবৎ জব্যের তলাসী
করাইয়া রওয়ানা করুইতে বেলা ছই প্রহর গত হইল। পরে তথা
হইতে আসিয়া এক ক্রোশ পরে এক বাবাজির বাগান আছে, ঐ
বাগে আহারাদি করিয়া অবস্থিতি। এ স্থান হইতে ভরতপুর সাত
ক্রোশ।

# ১১ আধাঢ়

কুষ্টীরা ইইতে রওয়ানা ইইয়া পাঁচ ক্রোণ আসিয়া এক ময়দানের মধ্যে ছাই অখখ গাছ আছে, তাহার নীচে এক কুয়া আছে।
ঐ স্থানে আংারাদি করিয়া চাঁরি ক্রোণ আসিয়া হেলেনাগ্রাম।
তথার রাণীর তবাব অর্থাৎ পুষরিণী। ঐ পুষরিণীর জল স্থল অতি

রাজ এই নগর রাপন করেন। বংনসিংহ এখানে একটা স্বৃহৎ আসার নির্মাণ করাইয়াভিলেন। এই হন্দর তবন কথন বাবস্ত না হওয়ার এখন বাছড়-চাম-চিকার বিহার-ছান হইয়াছে। এখানকার ছুর্বিক্সপ ভরতপুর্য়ালের রাজভবন মেধিবার জিনিস। উঠাম। চতুর্দিকের ঘাট সানবাদ্ধা। মধ্যে মধ্যে এক এক ব্রক্তম আছে, তাহার উপর ঘর আছে, উত্তরদিকে ঘাটের মধ্যে ঘর, পূর্ক্তিকে বাজার, দক্ষিণদিকে ধর্মণালা, পশ্চিমদিকে মহাবীরের হান এবং নিব হাপন, এক বৈক্তবের আগড়া, উত্তম হান, চতুস্পার্কে অবধ, বট বৃক্তের শোভাতে শোভিত আছে। গ্রাম মধ্যে মধ্যবর্তী বসতি আছে। ঐ পুছরিণীর দক্ষিণদিকে বে ধর্মণালা আছে, ঐ ধর্মণালার সম্প্রে ময়ণান আছে। ঐ হানে বৃক্তমূলে অবহিতি। ঐ বাজারে মগধ্বে নাড় ও আর আর মিঠার তাল তাল পাওয়া যায়। তথার কিছু কিছু লইয়া ঐ রাত্র বাদ।

## ১২ আষাঢ়

হেলেনা হইতে প্রাতে রওয়ানা হইরা আট ক্রোণ আদিরা
মৌরা, কুল সহর, জয়পুরের রাজার অধিকার। সহর মধ্যে
নানামত দোকান আছে, সকল জ্লব্য পাওয়া
যায়, সহল মধ্যে বাজার ধানা আছে।
সহরণানার পশ্চিমদিকের য়ার পার হইরা কিছু দূর আদিরা
এক ধর্মলালা আছে, তাহার দক্ষিণ দিকে বৃক্ষের ছায়া, সায়া
য়ায়পা আছে; ঐ বৃক্ষ্ণে পাল ধাটাইয়া তাহার মধ্যে য়য়ৄই
হইতে হইতে বৃষ্টি আরম্ভ হইলে তৎপর করিয়া সকল আহায়াদি
করা হইল। আহায়াকে বেলা সাড়াই প্রহরের পর ঝড়বৃষ্টি আরম্ভ হইরা অত্যক্ত গোলবোগ হয়। কেছ ধর্মলাতে,
কতক গাড়িতে, কেছ কেছ বৃক্ষ্ণেল, ছল্ম আছে এইয়পে ঐ
দিবল অতিবাহিত হইল। স্বালিবোগে এমত ঝড়বৃষ্টি হইতে

আরম্ভ হইন, গো-মুখ্য স্থানাভাবে মহাক্লিট, সহরমধ্যে বাটাবর থাকিবার অস্থা কিছু পাওয়া গেল না। ঐ ধর্মশালা মধ্যে সমভ্যারী সকলে, কেবল জল-বাতাসের ক্লেশ সকলে বসিরা থাকিয়া নিবারণ করা হইল। পর দিন ১৩ আবাঢ় প্রান্তঃকালাবধি এমত বাদলা করিয়া বৃষ্টি হইতে আরম্ভ করিল যে, কোথাও এক পা বাইবার ক্ষমতা রহিল না। এমত বৃষ্টি হইল যে, রাস্তার উপরে জললোতে এমত রূপ হইল, যেমত নদী লোতবতী হইলে হয় তদ্ধে। কেহ কোথাও বাইয়া আহারাদির চেটা করিতে পারে না, বহু কটে মুখোপাধার ও রামচরণ চক্রবর্তী সহরে বাইয়া আনেক যত্নে এক হালয়াএর ছারায় পুরি ভরকারি করাইয়া আহারাদি হয়, অকুলান মতে ছাতুতে দিন-নির্কাই হইল। ঐ স্থানে ঐ কিবস থাকা হইল। ঐ ধর্মীলাতে এক বৈরাগী থাকে।

### ১৪ আধাত

প্রাতে কিঞ্চিং রৃষ্টির নিবারণ হওরার বেলা চারি দণ্ড
গতে শ্বওরানা ইইরা মৌ ইইল্ড চারি ক্রোল বিশড়া নামে
এক গ্রাম । তাহাতে আহারাদি করিরা
ক্রিপ্তামের মধ্যে জমিদারদিগের বাটীর
সম্বাধে ফরদা জারগা আছে, রাত্রিবাস ইইল । গ্রামের নাম
মানপুর । মানপুর ইইতে রওরানা ইইরা তথা ইইতে ছব ক্রোল
সেকেন্সরা প্রাম । তাল বসতি অনেক আছে, বাজারের নিকট
সরাই আছে । ঐ স্থানে থানা এবং রাজার
প্রমিট, সক্ল ক্রব্যের মাস্থল আছে । ঐ
বাজারের বাহিরে এক মরদান ভাহার নিকট নিম্বুক্লের

বাগিচা আহাটে, ঐ বাগানের মধ্যে আহারাদি করিয়া রাজে ময়দানে বালির উপরে থাকাহয়। ঐ কানে মুগি বিক্রয় হয়।

## ১৬ আষাঢ়

সেকেন্দরায় তলাদী দিয়া তথা হইতে আট ক্রোশ আদিয়া

নেলা দেশানানে এক গ্রাম। ঐ স্থানে বেলা ছই
প্রাহরের সময় পঁত্ছিয়া তথায় আহারাদি করিয়া ঐ স্থানে বাদ।

## ১৭ আষাঢ়

দেশা হইতে গমন করিয়া অধ্ট ক্রোশ পরে মোহনপুরা
নামে এক প্রাম । তাহাতে বাজার আছে ; ঐ প্রামে আহারাদি
করিয়া ঝ্রামের ভিতর হাঁইয়া রাত্রে থাকা
হয় । যে স্থানে আহার করা হয়, মাঠের
ধারে বাউড়ি আছে, অবথ বটের ছারা আছে, অতি স্থর্যা
স্থান মাঠের ধার, এজন্ত তথার রক্ষকগণ থাকিতে দিলেক
না । উচ্চ স্থানে প্রাম, ঐ প্রামের নিকট ময়দানে থাকা-হইল ।
১৮ আবাত

মোহনপুরা হইতে দশ ক্রোশ জনপুরের ঘটিদরজা।
ইতিমধ্যে পথে নানা স্থানে পর্মত জঙ্গণ আছে। পথ
অতিশন্ধ মন্দ, পথের লাজনার কথা কিছু
বদা যায় না। ঐ অধিকারে তিন ক্রোশ
অস্ত্রের ঘটদরজা
বদা যায় না। ঐ অধিকারে তিন ক্রোশ
আমত্রে এক এক আম। ঐ আমে আমে থানা। ঐ সকল
আম হইতে গাড়ি চলিলে তাহার ধ্লাটী দিতে হয়, ওলাদী
বিতে হয় এবং কি গাড়ি চারি পয়সা স্থানে স্থানে মাসুল।

পর্বত চতুর্দিকে, মধ্যে মধ্যে পথ। এক পাহাড়ের ধারে এক বটবৃক্ষ এবং ধর্ম্মশালা আছে। ঐ স্থানে আসিয়া সকলে তপ্ত হওয়া যায়। তথা হইতে চারি ক্রোশ ঘাট-দরকা. পাহাড়ের মুখে ঘাট। ঐ স্থানে বাজার এবং দেবালয়, ধর্মশালা স্থানে স্থানে আছে এবং জয়দেব মুনির ঐ৾৺রাধামাধব মূর্ত্তি স্থাপিত আছে। বড বড ধনাচ্যব্যক্তির বাগ-বাগিচা আছে। ঐ ঘাট-দরজাতে বেলা ছয় দও থাকিতে পঁছছা হয়। ঐ স্থান হইতে জয়পুর<sup>\*</sup> সহর তিন ক্রোশ। প্রথমত: স<del>র্বাচ্</del>ক সহর মধ্যে না বাইরা সকলে ঘাট-দরজাতে থাকিরা আহারাদির তছিরে রহিলেন। আমি ও নীবোপাধাার মহাশয় এবং বৈকুঠনাথ সরকার এই তিন ক্ষনে সহরে একটা বাটা হির করিতে যাওয়া হয়। তথার প্তছিয়া এবৃত বিহারী বলোপাধাবের ছারায় শ্রীশ্রীগোবিদ্যালর বাটীর নিকট এক বাটী স্থির করিয়া ঐ স্থানে গোবিক্ষা মিষ্টার প্রদাদ পাইয়া সন্ধাগতে তথা হইতে প্রবায় ঘাট-দরজাতে আসিয়া আহারাদি করিয়া রাত্রে ঐ স্থানে থাকা হয়।

# জয়পুরের বিবরণ

১৯ আধাঢ়

প্রাতে ঘাট-দরজাতে পাহাডের উপর জন্মলে প্রাত্তকতা সারিয়া, বরণাতে লান তর্পণ ইত্যাদি সমাধা করিয়া জয়পুরের महत्त्र शमन। छिन त्यांन वारेवा महत्त्र अत्यन। महत्त्रत्र চৌপাড়বন্দী ব্রান্তা অর্থাৎ পাশার ঢাল বেমত.. সেই মত সহরের त्रह्मा। य मिरक माँडाइबा पाधित. होमिरक ममान १४ अ ্লঃপুরের রাভাও রাস্তা পরিসর। ছই ধারে উত্তম উত্তম গৃহাদির পরিচর খেত-পাথরের বাটী, ভারাতে নানা প্রকার খোদিত দেবমূর্তি এবং মহুগাঁক্টতি ও পশু-পক্ষ্যাদি আছে। এ বাটীতে শেঠ ইত্যাদি ধনিগণের বাদস্থান। ঐ বাটীর নীচের ভলে দোকান। দোকানের নিয়ম এই আছে, বে জবোর দোকান ৰে পটীতে আছে, তাহাতে অন্ত ক্ৰব্যের দোকান নাই। চুড়ি-পটী তাহাতে প্রায় ২৫০ শত চুড়িওগালী, দ্বিপিওয়ালার ছুই০ ধারে 8: • भठ (शकान । मृति, नश कपन, मुहे, লয়পুরের ছোকান আসন ইত্যাদি উল-বল্লের তিন শত দোকান. জুতা হর রকমের, বধার তৈয়ার হইতেছে প্রায় ৫০০ শত লোকান. ব্ধায় বিক্রম হইতেচে ৩০০ শত দোকান। যে স্থানে ব্যাদির দোকান আছে, ছই পার্শে অন্ত দোকান নাই। বধার হালয়া-ইয়ের দোকান, সেই চকে ব্দ্রু কিছু নাই। এইমত মেওয়াবাত हेजानि नकन जररात भुषक् भुषक् भी। देकारन य दर्ग हक বৈসে, তাহাতে সকল দ্রবাদি পাওয়া বার ৷ লোকবাতা অতিশয় !

ভাহাতে নগরের শোভা অভিশয়। পশ্যিনা, হীরা, পারা, মোভির কুঠিওয়ালার গদি দোতালার উপর। সহর পাঁচ ক্রোল, সহর্-পানাতে বৈষ্টিত, পাণরের প্রাচীর। এই সকল শোভা সহরের স্থানে স্থানে দেখিয়া প্রথম দ্রার হইতে দিঙীয় জয়পত্রের ছার ছাব প্রবেশ কবিতে হয়। এক এক ছারে দশ পদাতিক, এক এক জ্মাদার, এই মতে হাররক্ষা করিভেছে। কেহ কিছু নৃতন দ্ৰব্য লইয়া আগম কি নিগম হইলে তৎক্ষণাৎ রুদ্ধ রাথে। পঞ্চুরা মতে মাতুল দাখিল করিলে থালাস পায়, নচেৎ রাজভাগুারে দাখিল হয়। এইমত চারি ধার প্রবিষ্ঠ হইলে রাজবাটীর নিকট পঁছছা হয়। প্রথম ঘারে যাইয়া এ৮গোবিন্দজির গোস্বামীকে সংবাদ করিতে গোবিস্বজ্ঞির ছড়িবরদার এক পাঁচরক্ষা ছড়ি হাতে করিয়া আদিয়া অগ্রে অগ্রে চলিল। कव्यात (शाविमावी কোন খারে গাড়ি ক্লুক করিল না, গোবিলজি দুৰ্শনে বাইতেছে এই কথা জানাইল। ক্ৰমে ক্ৰমে রাজবাটীর নিকটে শ্রীশগোবিক্ষির বাটীর নিকটে এক বাটীতে বাসা হুট্ল ৮ এক ভানে মুক্লের • স্মাবেশ হুট্ল না। বাগানের বৈঠকে এবং ধর্ম্মালায় কেহ কেহ রহিল। পরে বেলা এক প্রহর গতে প্রথমত: ধুলাপারে দুর্লন হইল। প্রীপ্রীভিকিউ মহারাজা সভ্যায় জয়সিংহের বাটার মধ্যে, রাজবাটার প্রথম ৰারে। চতুর্থ বারে প্রবিষ্ট হইলে শ্রী৺গোবিক্সজির শ্রীমক্সির দর্শন হয়; কিন্তু বাবে বাবে বাবপালগণ আছে, গোসামীর অভুষতি বিনা কেহ প্রবিষ্ট হইতে পারে না। দর্শন সাতবার, বে আর্তি হয় তাহার এক আর্তি ভোগের সময়, অন্ত কেহ

দেখিতে পার না। মঙ্গল-আরতি ও শরন-আরতি রাজ-অন্তঃপুর-

ষিত স্ত্রীগণ দর্শন করেন। প্রাতে ধৃপ দিলার-ভোগের পূর্ব্বে আরতি হয় এবং বৈকালিক ধৃপ দল্লার আরতি দকলে দর্শন করিতে পায়। প্রাতে বে ধৃপ আরতি হয় তাহাতে কাহাকেও নিবারণ নাই—কালি পর্যান্ত সকলে দর্শন পায়। প্রী⊌িজর প্রমানার রাজবাটীর মধাত্বলে, পশ্চিম অংশে পূর্বহারী দানানাকৃতি দরদানান আছে। খেত-প্রতরে নির্ম্বিত প্রীপ্রাবিক্ষরি রত্ত্ব-দিংহাসনে বিরাজিত আছেদ, রাজপরিছেদ্—তাহার বর্ণনা কিকরিব।

এ জীগোবিল জি দুর্শন করিয়া বিবেচনা হয় যে, ছই চকে দুর্শন করিয়া মনের আশা পূর্ণ হয় না। বিশেষতঃ চক্ষে চক্ষে পলক আছে। ভগবানের যেত্রপ খ্রীমুদভাগবতাদি পুরাণে দকল বর্ণিত আছে. তাহার স্বরূপ রূপ, তাঁহাতে কিছুই প্রভেদ নাই। প্রীপাদ-পদ্মাবধি মুখারবিন্দের বর্ণন তাহাতে আছে। কৈশোরাবস্থার ভাবাক্ততি বজ্র ধথার্থ মূর্ত্তি নির্মাণ করিরাছেন। একে বন্ধকৃত ত্রিভঙ্গভঙ্গী সুঠাম তাহাতে মণিমুক্তা-প্রবলাদি আভরণ, কত শত হীরা ক্হরৎ পাল্লা পোকরাজ লাল'নীলকান্ত প্রভৃতি থচিত আভরণে শোভিত হইয়া, নানামত রাজ-পরিচ্চদের বস্তাদি পরিধান করিয়া বামভাগে শ্রীমতীজিকে, দক্ষিণাংশে রাজকন্তা পানের বাটা লইয়া বিবাজিতা আছেন। এই বাজকলা সওৱার জয়সিংহের কলা। ইঁচার লরপর-রাজকভারণা বৃত্তান্ত এইরূপ ওনা হইবাছে বে, লক্ষ্মী-আংশে গোৰিশভীর শক্তি রাজার কল্পা জন্মগ্রহণ করিয়া কিছুদিন আছেন। এক্স সহিত সন্দৰ্শন হয় না। তাহাতে এট মাহা প্ৰভাগ क्रियान रा, मिल्लीय चाकरव माराय श्रीवसायनव शाविस, शामी-नार्थ (६) मननारमाहानद मन्द्रित छान्नियांद खाएम हह । 🕭 मध्यान

মহারাজ সওয়ায় জয়সিংহ শ্রুতমাত্র শ্রীবুলাবনে গোস্বামীদিগের দেবা ষত দেবমুর্ত্তি ছিলেন, স্কল মুর্ত্তি জ্বয়পুরের রাজধানীতে लहेबा यान । जकन रमरवत खालाहिमा वाहिरत मन्मित्र छात्रिछ इहेल, बीबीरगाविनारमविषय मन्तिय चन्त्र न्यारा इहेल। खीक्किय দর্শনাথে রাজক্সা স্ক্রিন আইদেন। বোডশব্র গত হইল, রাজা বাজকুলার বিবাদের উল্পোগ কবিলে কুলা বিবাদ কবিতে স্বীকতা হন না। গোবিকজি রাত্রিযোগে অন্ত:পরে রাজকন্তার নিকট থাকেন, কর্থন নপুর, কথন অন্ত আভরণ, রাজকল্পার শ্যায় পড়িয়া থাকিত, অবেষণে পাওয়া যাইত। এই সকল কথা ক্রমে প্রকাশ হওয়াতে রাজা ও রাণী একদিন আমাপন কক্তাকে জিজ্ঞাসা করিলেন যে, "তুমি বিবাহ করিতে চাহ না, কিন্তু তুমি সর্বাদা গোবিনজি দর্শনে, মগ্ন থাক; লোকে তোমার কংদা করে, অতএব তুমি গোবিন্দলির মন্দিরে গুমন নিবৃত্তি কর।" এই কথা রাজকন্তা শুনিয়া কহিলেন, "আমি আজ একবার মন্দিরের ভিতর ধাইয়া দর্শন করিয়া আসি।" এই কথা ক*হি*য়া শ্রীমন্দিরে যাইয়া জীলীগোবিন্দদেবজিকে স্তব করিয়া কছিলেন, "আমাকে এই কলফ-দাগুর হইতে উদ্ধার কর।"—বলিয়া আপন দেহ শ্রীমঙ্গে লিপ্ত করিলেন। পরে রাজা ও রাণী প্রভৃতি পুরবাসি-গণ রাজকল্পাকে দেখিতে না পাইয়া চমংকত হইয়া শ্রীঞ্জকে স্তব-ল্পতি করিতে করিতে রাজাকে আদেশ হইল, "তোমার কলা পরিবাদ মাত্র ছিল, আমার শক্তি, আমাতে কালপূর্ণ হওয়াতে লিপ্ত হইয়াছে। তুমি এক্ষণে তোমার কন্তার স্বরূপমূর্ত্তি তামুলদান হত্তে লইয়া দক্ষিণ পার্ছে পাকেন, এরপ স্থাপনা কর।" ঐ আদেশমত রাজকক্ষার প্রতিমৃত্তি শ্রীশ্রীগোবিশকীর দক্ষিণপার্শে আছেন। এই

>8¢ (>0)

তিন মূর্ত্তি অত্যাবধি শ্রীমন্দিরে বিরাজিত আছেন। দর্শন অতি চমৎকার। কেই কহে, শ্রীপ্রীগোবিল্পজিকে নটবরবেশে রাজা প্রাতে রাজকভার পালক উপরে রাজকভার সৃহিত শরনে দেখিরা আপন অঙ্গের বল্লে উভর অঙ্গ আবরণ করিলেন। পরে রাজকভা চৈতভালাভ করিয়া রাজার বল্ল দেখিয়া লক্ষিত ইইয়া শ্রীপ্রগোবিল্পজিকে কহিলেন, "এ কথা প্রকাশ ইইল, আর মানবদেহ রাথা কর্ত্তব্য হয় না।" ইহা কহিয়া, ঐ দিবস শ্রীমন্দিরে প্রবিষ্ট ইইয়া শ্রীজির পাদপল্লে লিপ্ত ইইলেন, আপন সদৃশ শ্রীজির দক্ষিণে রহিবার আদেশ ইইল।

জ্বপুরে ত্রীবৃন্ধাবনধামের গোস্বামীদিগের যৃত সেবা
ছিল, সকল দেব তথায় আছেন, কেবল ত্রীত্রীমদনমোহনঞ্জি
কড়োরির রাজা জ্বপুরের রাঞার নিকট
ভ্রত লইয়া গিয়াছেন এবং তথায় আছেন।
আর আর সকল দেবতার সেবা জ্বপুরের মহারাঞ্জ করিতেছেন।
সেবার জ্বন্থ গ্রাম ইত্যাদি গোস্বামীদিগের বৃত্তি দিয়া জ্বমপুরে
রাধিয়াছেন। সকল সিজসেবার তৎকালের আসল মৃত্তি জ্বরপুরে,
প্রতিমৃত্তি ত্রীবৃন্ধাবনে। কিন্তু স্থান-মাহাত্মা জ্বন্থ ত্রীবৃন্ধাবনের
অতিশ্ব শোহা।

জন্মপুরের রাজ্য প্রীক্রীগোবিক্সজিকে দান। গোবিক্সজির দেওরান হইরা রাজা সওরার জন্মদিংহ রাজ্যের কর্ম্মকার্যা করিতেন, এইরূপ এ পর্যান্ত চলিতেছে। একংণে রাজা রামদিংহ দেওরান নামে কাগজাত দত্তপত হয়, কিন্তু রামদিংহ গদিতে বৈদেন না, সর্কাদা এক উটের উপর সওরার হইরা একেলা স্থানে স্থানে মাঠে জাললে পাহাড়ে ইচ্ছাধীন ভ্রমণ করিরা বেড়ান, আহারাদির স্থিত নাই, আপন হতে ক্লী কি বাটী কিয়া গেটী করিয়া পোড়াইয়া আহার হয়; অন্তঃপুরে থাকা হয় না, কাহার সঙ্গে আহার করিতে বিখাদ হয় না, প্রাণদণ্ডের শকা দর্কদা আছে। রাজ্যের মালিক রাওল। এ দেশে দেওয়ানকে রাওল কহে।

রাজবাটী উত্তম নির্মিত। খেতপাথরের বাটী, ইট চুণে
গাথনি; এক বাউড়ি ভাল আছে। ভাহার বৈঠকের ঘর সকল
ভাল ভাল আছে। জল-স্থলে স্থােভিত জয়পুর
লয়পুরের রাল্পানাল • সহর। পাহাড়ের উপর। এই সহরে ভেহারা
পাহাড়ের কেলা। এক একু ঘাট আছে, পাহাড় প্রাবেশের
পথ অঞ্চিক্ হইয়া পাহাড় লজন করিয়া প্রবেশের পথ নাই।
এই সকল ঘাটে অর্পাং প্রবেশের প্রথের উপর পাহাড়ে কেলা
আছে, ঐ কেলাতে রক্ষকগণ থাকে।

সহরের উত্তরদিকে বে পাহাড়, তাহাতে পুর্বে সেনাদিগের রাজ্য ছিল। তাহার উপর মজবুত কেলা আছে, সেনা সকল হর্দান্ত প্রতাপশালী, বলবান, যুদ্ধে অতুল শক্তিমান, মহাবলপরাক্রম। ঐ কেলার মধ্যে রাজকোষাগারে বহুমূল্য রক্তাদি ছিল, সেনাদিগের রাজ্যমধ্যে পর্বাত উপরে কেহ প্রবেশ করিতে পারিত না। যৎকালে সঙ্গার জন্মসংহ উপন্থিত হইলেন, ঐ রাজ্য রাজ্য সন্তম্মর জন্মসংহ অপন বাহুবলে অধিকার করিয়া, কেলার যে সকল রাজকোষাগার তাহা অধিকার করিয়া, ঐ রাজ্যে রাজ্যেশর হইলেন। ক্রিস্থ ঐ সকল সেনা রাজ্যর ছারপাল ইইয়া রহিল। রাজ্য রাজকোষাগারে কোথার কি ধন আছে, তাহা কিছু জ্ঞাত ইইডে পারেন না; যে সমস্ত রক্ষকগণ আছে, তাহারা সকল জ্ঞাত ছিল।

রাঞ্চাকে কহিত এবং এ প্র্যাস্ত কহে, যখন বৃদ্ধ উপস্থিত ২ইবে. তথন বসদ যোগাইব। একণে এখন পাইবে না। হীরা পালা মোতি বছমলোর আছে। এই রাজধানীতে পুরের রাজভবন ছিল, পরে রাজা জন্মসিংহ জন্মপুর স্থাপিত করেন। ঐ পাথাড়ের উত্তর-পশ্চিম ভয় ক্রোশ ঘাইয়া পাহাড়ের উপরে

नितासकी শিলাদেবী • আছেন, ঐ দেবী পূর্বে মধুরাতে কংগরাজার রঙ্গভলে শিলারূপে ছিলেন। ঐ শিলাতে দেবকীর সমানদিগকে আভাভিয়া বিনষ্ট করিত। বংকালে যোগমায়াকে শ্লার উপর আছড়াইতে গিয়ছিল, শিলাস্পর্নাত্র দেবী অষ্টভুজা হইয়া শুক্তপথে গমন করিলেন। ঐ যে শিলা তথায় ছিল, ষংকালে প্রতাপাদিতা যুশোরনগর হইতে এতদেশে আসিলাভিলেন, ঐ প্রস্তরে এক দেবীমৃত্তি নির্বিত করাইলা স্বদেশে লইয়াযান। যশোরনগরে দেবী প্রত্যক্ষ হট্যা প্রতাপাদিতোর রাজ্য রক্ষাক্রিয়া থাকিতেন। দেবীর রূপায় কেছ রাজ্যের

 क्ष्मभावत शाहीस बाल्यांनी कर्याद (पदी काइहन) । १३ विकारवर्षी स्वाध ভারত্যক্ত মান্সিছে ও প্রতাপাদিত্যের বৃদ্ধ-প্রদক্তে লিপিরাছেন —

"निकारक्यो नाष्ट्र fen éta etra

क्षत्रहा समारद्वा । ৰসিলাক বিহা প্যাপত্র ভিতিহা

उंद्रिश्टर बङ्गा कति । ব্ৰিয়া অহিত **খল পরে।**ছিড

মিলে মানসিংগ রাজে।

लक्ष्य लडेवा अवव व्हेश

शहांत का विहा मारक :"

প্রতি আক্রমণ করিতে পারিত না। বংকালে মানসিংছ বাঙ্গালা দেশ জয় করিতে আসেন, তংকালে বাঙ্গালাদেশ জয় করিরা দেবীকে সঙ্গে লইয়া সিয়া জয়পুরে ঐ পাহাড়ের উপরি স্থাপিত করিলেন। দেবীর নিকট প্রতিদিন মেষ মহিব হাগ নরবলি দিয়া পূজা করিতেন। এই মত বলি প্রদান করাতে শিলাদেবী সাক্ষাৎ হইয়া প্রতাক হইলেন। পরে রাজা সভয়ায় জয়সিংছ নরবলি নিবেধ করিয়া হাগাদি বলি দিতেন, তাহাতে দেবী কট হইয়া বামদিকে মুঝ কিরাইয়া আছেন। এ পর্যায় ঐ য়প দেবী মুঝ ফিরাইয়া আছেন দুট হয়। অতি উত্তম মুর্তি, অষ্ট-ভ্লাদেবী স্বাঠন। দর্শনে শরীর লোমাকিত হয়।

জ্বপুরে চুড়ি এবং জুতা, আবু কাপড়ের বল অতি উত্তম উত্তম করে।

জল বড় থারি অর্থাং লবশাক্ত। রাজ্ঞার বাগবাগিচা ভাল আছে; চিড়িয়া এবং প্রাদি নানা জাতি আছে।

# ২০ সাধাঢ়

●ক্ষপুরে শীশীগোবিক্দেবজি এবং অন্ত অভা দেবালয় দশন।

২১ আষাঢ়

Ò

#### ২২ আধাঢ়

নগর-ভ্রমণ, রাজপুরী দশন, স্থানে স্থনে দেবদেবী দশন।

# २० चौषाष

শ্ৰীশ্ৰীগোবিল্পজি দৰ্শন করিয়া অন্নগ্ৰসাদ পাইয়া বেলা ভূতীয় ১৪৯

প্রছরগতে এ এগোপীনাথজির দুর্শনে গমন। গোবিলজির মহল হইতে গোপীনাথের মহল প্রায় এককোশ। জন্মবের গোপীনাথ নগরের শোভা দেখিতে দেখিতে দিবা অবসানে তৎস্থানে পঁত্ছাইয়া প্রথমত: গোলামীর ভগিনীপতি শীষক রামপ্রদাদ চটোপাধাারের সহিত দাক্ষাৎ হটয়া, পরে শ্রীযুত নন্দলাল গোসামীর সহিত সাক্ষাং হইয়া, শ্রী৮গোপীনাথ ন্ধিউর আমারতি দুর্শন করিয়া মহাপ্রভুর বাটীতে অবস্থিতি হইল। শ্ৰীশীগোপীনাথজিউর বক্ষঃত্বত অতি স্থাঠিত; মূর্তি প্রমাণমমুধা, বামভাগে শ্রীমতীভিউ আছেন। দকলের মহাপ্রভুর বাটীতে সমাবেশ না হওয়ায় স্ত্রীলোক সকল ঐ বাটীর মধ্যে, কাহিরে এক ৰকুলবৃক্ষ, তাহার গোড়া চৌতারা পাকাপথেরে বান্ধা, তাহাতে क्ट क्ट जीलाक मिराय देकार्थ दहा हहेता। याकी शासिशन বামপ্রদান মুলোপাধাটের ঠাকুরবাটীতে, প্রীয়ত কালী বাব এবং তাঁহার খণ্ডর শ্রীযুত মাধবচক্র বহুত্ব গোপীনাথের বাটীর পূর্বের যে বাগান আছে, ভাষাতে গাড়ী ছিল, ঐ গাড়ীতে রক্ষকগণ কইয়া ৰভিলেন। প্ৰদিব্য হীগোপীনাপ্তির প্ৰসাদ ভক্ষণ। আপুন আপন কেট শীকিকে গোকামীৰ নিকট দেওৱা।

# জয়পুরত্যাগ ও পুষ্করযাত্রা

# ২৪ আধাঢ়

গোপীনাথের বাটা হইতে সহরের বাহির ছই ক্রোশ বাইয়া
বক্জুনামে এক গ্রাম। তাহাতে রাণীর এক বাগান আছে।
ভাহাতে এক শিব-স্থাপনা আছে, তথার এক
বক্জু • মিঠা কুয়া আছে, বুকাদির ছায়া আছে, ঐ
সন্মুপে বাজার, রাওলের সৈয়য়ণ এবং ছয় কামান আছে। উহার
নিকটে এক অনাদি শিব আছেন। তাহার নাম… ৮ শিবের ঘর
প্রস্তারে উত্তমরূপে রাজিল তৈরার করিয়া দিতেছেন। শেতপ্রস্তার
মন্দির স্থানির্যাত হইয়াছে। রাণীর বাগে শিব-মন্দিরে সকলের
অবস্থিতি এবং বৃক্ষ্ণল গাড়ী, ঐ স্থানে রন্ধন-ভোজন।

## ২৫ আমাঢ়

বক্ট জুই তৈ ছয় কোশ যাই যা পাড় নামে এক গ্রাম। তথায় তিন গোকান আছে, থাকিবার স্থান নাই।

গাড় এক পুক্রিণীর 'নিকট রক্ষ্নে আহারাদি
করিয়া ঐ গ্রামের কিছু দ্রে যাইয়া এক গ্রাম। থানা আছে,
এক গেবালয় আছে। ঐথানে ময়গানে থানার সমূথে বালুকামর
ভূষিতে হিতি।

# ২৬ জাঁষাট

বী স্থান হইতে দশক্ষোশ বাইরা বাঁদরিক্ষরি। পথমধ্যে

আন্দেক পর্বভাদি পুর্মন পথ আছে। তাবং দিন বাইরা বেলা
বাদরি-হ'বরি
তৃতীর প্রহরের সময় এক গ্রামের নিকট
বটর্ক আছে। তাহার ছায়াতে বসিয়া ঐ
প্রামের দোকান হৈতে চাবেনা লইয়া, ঐ র্কম্লে বসিয়া
আন্দেরা কিঞিং শ্রম দূর করিয়া, বাদরিস্থারি গ্রামে
আসিয়া উপস্থিত। ঐ প্রামে দশ বার দোকান এবং এক
বৃহৎ পুক্রিণী আছে। ঐ পুক্রিণীর নিক্ট এক পাহাড় আছে,
তাহাতে অল্লের খনি। ঐ স্থানে দোকানে খাঞ্জুদ্রবাদি পাওয়া
যায়। বাত্তে আহারাদি হইল। ঐ দিন তিতৃ প্থিমধ্যে অব
হইয়া একত্র ছুটতে পারে নাই।

## ২৭ আধাঢ়

বাঁদরিহুদরি হইতে দশক্রোশ কুফগড়, পাহাড়ের উপর
সহর। কুফগড়ের রাজা স্থানীন, যোধপুরের রাজার ভ্রাতুপুরে।
বুকগড়
রাজধানী অতি উত্তম। বৃদ্ধ রাজার ভ্রাতুপুরে।
বুকগড়
ধার্ম্মিক, পীড়ক নংনন—পালক। রাজ্যের
পৃথালা ভাল আছে। য়তপক ভিন্ন তৈলপক জ্বরাদি বিক্রের করিবার—
অই কয় দিবসে য়তের কড়াই জালাইবার অফুমতি নাই।
রাজ্যের মধ্যে পর্বাত কি মরদান ইত্যাদি বাহাতে ভরানক পথ
আছে, তাহাতে ভালমতে রক্ষকগণ নিযুক্ত আছে। অর্থন
কোল অন্তর অন্তর এক থানা, তাহাতে জ্মালার এক
জ্লা এবং দল সভ্রার প্রতি ঘাটিতে আছে। এই বড
রাজ্যরক্ষা এবং পথিকগণের ভিত্ত করিতেছেন। কোনক্রমে

্কাহার অপচয় না হয়। রাজধানীতে সকল জবাাদি পাওয়া যায়।
দিধি যেমন উত্তম ঐ স্থানে মিলে, এমন দিধি মধুরা বাতীত
কোপাও দেখি নাই। ঐ সহরের প্রাস্তে এক পর্কত। উপরে
সমাজ্বান, শিবস্থাপন, (৩) বাগিচা আছে। উত্তম স্থ্রমাথান,
তাহাতে ধর্মাণালা আছে। ঐ বাগানে অবহিত হইয়া আহারাদি করিয়া ধর্মাণালার উত্তম ঘরে রাজে শ্রন হয়। ঐ
বাগানের পূর্বহিকে সুদারতের বাটী আছে। তাহার পূর্বের
সরাই। সে স্থানে থাকা হইল। তথা হইতে সংর এক
কোশ। রাজভ্বন এবং কেলা ও নগরের স্বর্ম ভ্রমণ করিয়া
নগর বাজার দেখা ইইয়াছে।

### ২৮ আধাঢ়

প্রাতে কুফগড় হইতে পাচক্রোণ বাইয়া বাগ নদী। ঐ
নদীতে সম্বর লবণ জল্পে। নদীর অক্টেক ঘোধপুরের রাজার,
বাণননী ও কাউড়ি
লান তপ্ণাদ্ধি করিয়া তথা হইতে পাচক্রোশ
কাউড়ি নামে এক গ্রাম, ঐ গ্রামে অবস্থিতি।

# ২৯ আগাঢ়**°**

প্রাতে কাউড়ি হইতে সাত ক্রোশ বুড়া-পুরুর । বেলা 'ছই প্রাহরের সময় প্রহিয়া ঐ কুণ্ডে রান-তর্পণ। কুণ্ড বৃহৎ, তাহাতে পরবন আছে এবং অনেক হোগলার গাছ আছে, আর দাম পানা আছে। প্রী কুণ্ডের দক্ষিণদিকে পাকা ঘাট। ঐ ঘাটের দক্ষিণ-পশ্চিম কোণে এক বাউরি, ক্ষয়পুরের রাক্ষরাণীক্ষ্ত আছে। তাহার নিকটে এক লন্ধীনারারণের দেবা আছে। তথার নান তর্পণ করিলা তথা হইতে এক ক্রোণু আদিরা ব্রহ্ম-পুকর। ঐ স্থানে পঁছছিলা পুকরতীর্থের তীরে শিবছাপন আছে। ঐ নাটার মধ্যে অবস্থিতি করিলা কোটাতীর্থের ঘটে নান তর্পণ তীর্প-শ্রাকাদি করা হইল। যে শিবালয়ে বাসা হইল, ঐ শিব খেত প্রস্তুরের পঞ্চম্ব। সমূরে খেতপ্রস্তুরের বৃহ আছে। মন্দির সকল খেত-পাথরের। ঐ শিবালয়েরেইত ছই শত ঘোল শিবছাপন আছে, তাহাদের মন্দির নাই। ব্রহ্ম পুকরের উপরে বাটা। এই শিবালয় গোছালিয়ার রাছসরকারের একজন সরদার গোহিন্দিরার রাছসরকারের একজন সরদার গোহিন্দিরার রাজসরকারের একজন সরদার গাহিন্

পুকরতীর্থ সকল তীর্থের গুরু। এই ছানে তিন পুকর— বুড়াপুকর, মধ্যপুকর, কনিষ্ঠ পুকর। এই তিন পুকর শিব, বিযুত্ত ক্রফা তিদেবের যজ্ঞাহান। বুড় পুকর শিবের যজ্ঞভূমি, মধ্য পুকর বিফুর যজ্ঞভূমি, কনিষ্ঠ পুকর ক্রফার যজ্ঞভূমি।

ব্ৰহ্মপুক্র - বথার ব্ৰহ্মা ব্ৰহ্মা ব্ৰহ্মান করিয়াছিলেনী। ঐ কুণ্ডের নাম ব্ৰহ্মপুক্র। ঐ কুণ্ডের পরিক্রম করিছে পঞ্চালা পরিক্রম নিতে হয়। এত বড় বৃহৎক্তা নীর্ম প্রস্থা প্রায় সমভাবে বিজ্ঞত হইয়াছে। এই কুণ্ডের চতুস্পার্মে দেবালয় এবং বসভাদি হইয়া হুলোভিড আছে। কুণ্ডের আল হুলীতল, হুনির্মল, অগাধ জল। ক্ষলের বন বেত্রপ্রদেশ প্রস্কৃতিত হইয়া কুণ্ডের লোভাজনক্,। অলাজ্ঞ মকর কুলীর ইভাদি নানা জাতীর আছে। মংজ্ঞানা আছি, তাহারা নিশেহচিতে ক্রীড়া করিতেছে। হংসুবক্

প্রভৃতি আবে আবে জলচর পকিগণ সর্কাণ জলকেলি করিয়া কমল-কুমুদমূল ভকণে ফ্ৰী ইইয়া বিহারাদি করিয়া ভ্রমণ করিতেছে।\*

পুদরতীর্থ - ব্রহ্মার মর্ক্তাভূমিতে বজ্ঞ করিবার মান্স হইয়া-ছিল। তাহাতে সকল দেবতা, দেবর্ষি, ব্রহ্মর্ষি ও মুনিগণকে কহিলেন, "আমি মর্ক্তাভমিতে যজ্ঞ করিব। সকলে তথার অধিগান হইয়া যজের যাহা হইতে যাহা পৃষ্ণৰে ভ্ৰহ্মাৰ যজ সাঁহায্য হয়, তাহা করিতে হইবে।" ইহা-দিগকে এই কথা বলিয়া তৎপরে ইব্রু, চব্রু, হুর্যা, বায়ু, বরুণ ইত্যাদি তেজিশকোটী দেবতা, পর্বতগণ, নাগগণ, বৃক্ষগণ, মেঘগণ এবং পশুপক্ষী কীট প্তঙ্গ জ্বলচর বনচর ভূঁচর নিশাচর ইত্যাদি ব্রহ্মার স্প্রতিত যে কেহ<sup>®</sup> আছে, স্কল্ফে কহিলেন, "আমার যজ্ঞে সকলে সাহায্য করিবে, অপকার নাহয়।" এই কহিয়া তিদেব তিনস্থানে যজ্ঞোপ্রে রহিলেন। এই যজ্ঞস্থলের চতুম্পার্যে বেষ্টন করিয়া আবরণ করহ বলাতে পর্বতগণ চতুর্দ্ধিক কানাতের ভাষ রহিল, মধাত্বলে, স্থানে স্থানে ত্রিদেব ব্রহ্মা, বিষ্ণু (ও) মহেশ্বর যক্ত করিতে বসিলেন। বিষ্ণু মহেশ্বর যথাযোগ্য আপেন মনোভীষ্ট সিদ্ধ করিয়া, অন্ধার যজ্জন্তানে সকল দেবদেবী সমভ্যারে উপস্থিত হইয়া, যজের পূর্ণাক্তি দেওনের কাল উপস্থিত হওয়াতে সকলে কহিলেন, "বিলম্বের সময় নহে, সন্তীক হইয়া যজে প্রবৃত্ত হও।" তৎকালে यक्षकृत সাবিত্রীদেবী আইদেন নাই।

পদ্মপুরাণ কটিবতের ১৬শ হইতে ২৬শ অব্যাহে এবং নার্যপুরাণের উল্পরভাগে ৭১ অধ্যাহে পুছরক্ষেত্র ও পুছরতীর্থের নাহাল্পা এবং এই ভীর্থত বেবদেশীমাহাল্পা বিভ্তভাবে শণিত হইয়াছে।

আসিবার বিলম্ব হওয়াতে ব্রহ্মার পুত্র দেবর্ষি নারদকে শীঘ্র সাবিত্রীকে আনিবার জন্ম পাঠাইলেন। নারদ গমন করিয়া আপন মাতাকে কহিলেন, "বজ্জন্বলে সকলে আদিয়াছেন, তুমি চল।" নারদমধে এই কথা কনিবামাত ব্রহ্মাণী যজ্ঞজলে যাতা করিলেন। নারদ দেখিয়া কহিলেন, "মাতা তৎক্ষলে ইন্দ্রের ইক্সাণী, শিবের শিবানী, বিষ্ণুর শক্ষ্মী, চক্রের রোহিণী প্রভৃতি व्याठारेन त्रम्यी. रुर्यापन्नी मोमा ए हाना, तक्रापत पन्नी भीती). অগ্নিপত্নী স্বাহা ইত্যানি সকল দেবপত্নীরা স্থাসজ্জিতা হইবা যজ্ঞত্বলে ভভাগমনপুর্বক ফুশোভিত করিয়াছেন। মাতা ভুমি ব্রহ্মাণী ছইয়া এমত অপ্রিচ্ছদে তথায় গমন করা ভাল দেখায় না। ভমি স্থপজিভতা হইয়া চল।" এই কথা সাবিত্তীকে কহিয়া ব্রহার নিকট আসিয়া উপস্থিত হইবেন। ব্রহাজিকাসা করিবেন, "সাবিত্রী আসিতে বিলম্ব হইতেছে কেন গ"নারদ কহিলেন. "আসিতে বিলম্ব আছে।" এপানে যন্তের তাবং প্রস্তুত, সাবিত্তীর আসার জন্ত বজারস্ত হয় না। অধিক বিলয় হওয়াতে এক। त्कांश कतिश नारम्हक कहिल्लन, "श्क्षीक जिन्न एक इंडर्ड का. ইহার উপায় কি ১" নারদ কহিলেন, "পিডা ঐ যে গোপকর।

ইত্যাদি লোক হইতে প্রতীয়খন হয় বে, একার মঞ-বিবরণ পদ্মপুরাণ-স্ক্রীপঞ অবলম্বনে শিপিত হইতাছে

মাসিতেছে, উহার পাণিগ্রহণ করিয়া ঐ কল্লাকে নইয়া সন্ত্রীক হ্টয়া বজ্ঞ করুন।" তাহাতে ব্রহ্মা কহিলেন, "গোপকরা শুদ্রাণী, উহাকে কিরুপে গ্রহণ করিতে পারি ?" ভাহাতে সিত্ত হইল যে, ঐ কল্পাকে গোমুখে দিয়া থো ভক্ষণ করিবা নির্গত করিলে শোধন হইবে, পরে গ্রহণ করা হইবে। এই বৃক্তি ক্তবিষা ক্রমাকে শোধন কবিষা বেন্ধা পাণিগ্রাহণ কবিলেন। 💩 করার নাম গার্থী হুইল। ঐ গার্থীসহ একত হইরা ব্রার্থ করিলেন। এখানে সাবিত্রী আসিতেছেন দেখিয়া নারদ পথিমধ্যে ষাইয়া গায়ত্রীর বিবরণ সকল জ্ঞাত করিলেন। সাবিত্রী ভূনিবা-মাত্র ক্রোধাবিষ্টা হইয়া যজ্ঞভূমির নিকট এক পর্বত ছিল, তাহাতে বৃদিলেন ৷ সকলে •অনেক যত্ন কুরিলেন, অভিযানে মানিনী হইয়া পর্বতোপরি রহিলেন। ঐ পর্বতৈর নাম সাবিত্রী পাহাছ। ঐ পাহাড তিনকোৰ উচ্চ। পৰ্বত মধ্যে নানাকাতি বক্ষাদি প্রপক্ষী আছে। অতি রুমা স্থান। সাবিত্রীদেবীর মন্দির পর্বতের বিরোভাগে। ঐ মন্দির মধ্যে সাবিত্রী (৪) সরস্বতী ছই সূর্ত্তি আছেন। পুৰ্বকাৰ মৃত্তি খণ্ডিত হওয়াতে ঐ মৃত্তি নগর মধ্যে বধাৰ এক্ষণৈ দারগার কাছারি তথায়; নৃতন মূর্ত্তি পর্বতের উপর মন্দিরে আছেন। মন্দিরের পশ্চাতে এক কুণ্ড আছে। ঐ কুণ্ডের ৰুল অতি উত্তম। ঐ কুণ্ডের দক্ষিণপার্ষে এক ব্রাহ্মণের কল্পা ° তপস্তা করিতেছেন। প্রায় চরিশবংসর একাসনে তপ দ্বপ ক্রিতেছেন। দেবীর ভোগান্তে পুজারি প্রসাদ দ্রব্যাদি দিরা আনাইদেন, তাহাই ভক্ষণ করিয়া তপক্তা করেন। ব্রাহ্মাক্সা, অল বয়সে বিধবা হইরা সাবিত্রীর নিকটে সাধ্র ুক্রিতেছেন। ঐ পর্বতে রাত্রে কেছ থাকে না। পূজারিগুণ

(86)

প্ৰাতে বাইৱা পূজা ভোগ দিয়া তাবৎ দিবা ঐ স্থানে থাকিয়া সন্ধার আরতি (৩) শীতল-দ্রব্য দিয়া পর্বত হইতে নীচে আপুন আপুন ৰাটীতে আইলে: কেবলমাত্র ঐ তপত্মিনী তথার থাকেন। ঐ পৰ্বতের মধ্যে নানাজাতি হিংল্ল কৰু আছে, এজন কেছ বাতে थारक ना। यनि दक्ष शाब्दी-शृतकत्व बन्न शर्वार थाकियात মানদে থাকে, রাত্রে দেবীর মন্দির ভিতরে হারক্ত করিয়া থাকে। কিছু ঐ তপশ্বিনী নিঃশঙ্কে আছেন। ঐ পর্বতে উঠিতে প্রথম বালুকামর, পরে প্রস্তর, ক্রমে উচ্চে উঠিয়া মধাছলে ৰাইরা এক শুহা আছে। তাহাতে এক উদাদীন বছদিনাব্ধি আছেন। তাঁহার বয়:ক্রম একশত বংসরের অধিক ছইবে। ঐ সন্ন্যানী ঐ স্থান হইতে অন্ত কোথাও গমন করিয়া ৰাজ্ঞা করেন না। অবাচক হইরা ঐ পর্বতের গুলা-মধ্যে তপস্তা করিতেছেন। নগরবাদী ব্যক্তিগণ এবং দর্শনার্থী অক্সান্ত দেশীর বে ৰখন ৰাৰ, ভাহারা যাহা উপন্ধিত করিয়া দেয়, ভাহাই লন। গাঁজা, চরস, তামাক সর্বাণা চলিতেছে। অগ্নির ধুনি সর্বাণা প্ৰাৰণিত আছে। তথা হইতে কিছু উচ্চে উঠিলে বৃত্ৎ বৃহৎ বৃক্ষগৰ আছে, তাহার মধ্যে এক বৃক্ষে নাম থোদিত আছে। পর্বতের মধ্যে মধ্যে অতি সুরম্য নির্জন স্থান।

পৃক্রতীর্থের চতুম্পার্থে দেবালর এবং পাণ্ডানিগের ও অপরাপর ব্যক্তিগণের বাসহান (৪) বাজার। (বাজারে) সকল প্রকার
উক্তম উত্তম ক্রবাদি পাওরা বার। নিষ্টার পক্ষার সর্কবিধ- তৈরার
হর, কলভূলারি সর্করিকম আছে। ক্রাম দাড়িছ নেবু উদ্ভম
উদ্ভম আছে। আর আর ক্রলাদি সর্করিকম পাওরা বার।
ভ্রমানার পাণ্ডানিগের সত্যবুগের স্কার ব্যবহার। সকলে বেল-

পাঠী, দশক্ষনিপুণ। সর্হানা সকল কর্মে বেদ অধ্যয়ন হয়।

পুক্রের প্রারা

দিরা সর্ব্র হয় তাহাই গ্রহণ করেন, তাহাতে

ছিলজি নাই।

পুরুরের চতুস্পার্শ্বেরে সমস্ত দেবালর এবং ঘাট আবছে তাহার মাম ১৫ ঘাট —

বরাহ্বাট, নিববাট, কোটীতীর্থের বাট, রাজবাট, নৃসিংহ্বাট,
প্<sup>করের</sup> বাট

ক্রন্থাট, বদরীবাট, চিরবাট, গৌবাট,
ক্রন্থাট, স্বর্গবাট, স্বর্গবাট,
চন্দ্রাট ও ইন্দ্রাট।

পুছর তীর্থের পূর্কদিকে বে চুক্রঘাট আছে, ঐ ঘাটে এক হরগৌরী-মৃত্তি আছেন, অতি স্থাঠন। মহাদেব খেত প্রস্তারের, অতি স্থাসান গঠন, ধাানে বেমন বর্ণিত আছে সেই মত, চাকুব দেধা বার।

### শ্যামন্ত্রাল-কার্ত্তি---

চক্রবাটে বে চক্র আঞ্জতি করিরাছে, চক্রের ভার ক্যোতিঃ, তাহার অভ্যথা নাই। এই ছই দেবালর জরপুরের রাজার দেওরান ভামলাল এবং তাঁহার প্রাতা কুল্যলাল ছই প্রাতার।

वब्राह्यार्षे वब्राहरम्यव मन्त्रि चारह ।

কুণ্ডের পশ্চিমদিকে একার মন্দির, বে ছানে বসিরা বঞ করিরাছিলেন। ঐ কুণ্ড পূর্ব্বে হেলিরা জলমধ্যে আছে। ভাহার কিছু দূর উপরে একার মূর্ত্তি। বামদিকে গার্কী দেবী। একা সুনকার, চতুর্বুধ (৫) রক্তবর্ধ। ঐ খেত প্রক্তবের মন্দির তক্ষধ্যে বিরাশমান আছেন। মন্দিরের দরদালানে নারদ মুনির
ব্যভিমুন্তি আছে, গণেশাদি পঞ্চদেবের প্রতিমুন্তি
আছে। ঐ মন্দিরের বৈ নাটমন্দির আছে
প্রস্তারে নির্দ্মিত ; তাহাতে নানামত চিত্রপটের স্থার দেবতাদিগের
দীলাচিত্র আছে, মেদে খেড-প্রস্তার বাদ্ধা। বাটার চতুলার্থ প্রাচীরবদ্ধ; বাটার মধ্যে অনেক ঘর আছে। দরজার উপরে
নহবংখানা, প্রতি দিবস প্রহরে প্রহরে নহ্বং বাদ্ধে। ঐ স্থানে
এক জন মোহন্ত আছেন, (ভাহার) সদাব্রতাদি চলিতেছে।

প্করতীথেঁর পরিক্রম পঞ্জেনী। পর্কতের ভিতর পথ। ইহার মধ্যে মধ্যে অনেক তীর্ব আছে—মরীচি, অক্লিরা, অতি, পুল, পুনত্তা প্রভৃতি মুনিগণের ফুটীর এবং নাগপর্কতে নাগমেলা হয়, আবাঢ়ী

তিখিতে বহু মন্থবোর মেলা হয়। ঐ স্থানে নাগক্ত।
গৌমুখক ও – এই কুত্তে লান-তৰ্ণণাদি।

পছকুও [পরও] (বা) জমদ্বিকুও — এই স্থানে জমদ্বি মুনির তপ্তার স্থান, সন্থাকুও।

বামদেব-কৃত্ত—এ হানে বামদেব অধির তপভার হান।

ভৃত্তকুত্ত—এই হানে ভৃত্তবি তপভার হান, সমূথে কৃত।

অগতাকুত্ত—অগতা মূনির তপভার হান, সমূথে কৃত।

কপিলকুত্ত—কপিল মূনির তপভার হান, সমূথে কৃত।

এ হান পাহাড়ের পথে—আভ্নীর হাইবার পথের প্রথম

ঘাটে কপিলাশ্রম।

পঞ্মুনির আশ্রম পর্কতের গুহা-মধ্যে। কশিল-আশ্রম হইরা পর্কতের গুহাতে প্রবিষ্ট হইরা চারিশত হাত ভিতরে বাইরা কণিলেখর শিব আছেন। তাঁহার নিকট এক বোগী বোগে
কণিলেখন, শিব
বোগে মগ্র আছেন। বদি কেই হুগুইন্ডাদি
কল-মূল ক্রব্য আহারের জন্ত সমুখে প্রস্তুত করে, ভাহা প্রহণ
আছে, অবাচক। এই মত পাহাড় মধ্যে স্থানে স্থানে বোগিগণ
বোগে আছেন, চর্শ-চক্লে চিনা বার না।

বরাংখাটের নিকটু অটমটেখর শিব আছেন। সমভূমি হইতে আট হাত নীচে নিবের স্থান। পুকরতীর্থের আদিদেব আট-মটেখর। প্রথমে এই শিব পুজা করিরা পুকরের সকল দেব দর্শনপূজন।

## ৩০ আষাঢ়

প্দরতীর্থে সান-তর্পণ, রাহ্মণ ও কুমারী এবং সধ্বাদিগের ভোজন করান। প্দর্বীসী রাহ্মণদিগের নীতি এই আছে—হত রাহ্মণ নিমারিত হইবে, তাহার অধিক এক বালক হইবে না। বে প্রাহ্মণ বোজত করিরা দিবে, তাহাই সম্ভই হইরা ভোজন করিবে। অন হইলেও আর চাহিবে না। বদি আনিরা দেহ, তাহা ভোজন করিবে। প্রথম গঞ্ব সমরে সকলে জল হাতে গইরা উচ্চৈংখরে বেদক্ষনি করিরা গঞ্ব করিরা দাতার অস্থমতি লইরা ভোজনে বৈসেন। শের গঞ্ব করিরা দাতার অস্থমতি লইরা ভোজনে বৈসেন। শের গঞ্ব করিরা দাতার অস্থমতি লইরা ভোজনে বৈসেন। শের পঞ্ব মত, পরে আচমন করিলা পান দক্ষিণা হতে প্রহণ করিরা, আক্তওল কনপুলা হতে করিরা, লাড়াইরা বেদক্ষমি করিরা, পরে লাতাকে ভিলক এবং মতক উপরে বন্ধ-আচ্ছানন করিতে হর, ভাহাতে আলীর্কাদ। এই মতে ঐ দিবস গতে হইল।

## ৩১ আঘাট

পুৰুরতীর্থে বান-তর্পনাদি করিরা সাবিত্রী পাহাড়ে উঠিরা সাবিত্রী দেবী দর্শন, পূজা ইত্যাদি, বন্ধা ও গারতী দর্শন। তথার আপন আপন ইঠ-সাধন, তংপরে বাসার গমন।

#### > শ্রাবণ

প্রবাদী পরিক্রম, অগ্রা, গৌতম, বাান, পরাশর ইত্যাদি ধবিগণের আশ্রম দর্শন, (পরে) শর্কাতের গুহা-মধ্যে আর অর্জ-পোরা সূত্রে গমন করিরা নীলেবর নিব দর্শন। তথার এক জ্যোতির্প্রব সরাানী থাকেন।

#### ২ শ্রোবণ

ত্রন্ধপুরুরে নান-তর্পণ করিয়া সাবিত্রী পাহাড়ে উঠিয়া দর্শনাদি, নিয়ে আসিরা ত্রনা, গায়ত্রী ইত্যাদি দর্শন (

#### ৩ শ্রোবণ

প্রক্ষপুরুরের বাদশ বাটে কান এবং সাবিত্রী, প্রকা ও শার্কী-

#### ঞ ভোবণ

তীৰ্বে স্থানাদি কৰিয়া সাবিত্ৰী, গায়ত্ৰী ও বন্ধালি দৰ্শনাদি কৰিয়া আপন কৰ্ম সমাপনাকে বাসাৰ গমন।

#### ৫ টোবন

নকলের আজনীর গমন। আমার নিজ কর্ম সম্পূর্ণ জরু পুরুরজীর্থে অবহিতি করিয়া, আপন সংক্ষিত কর্ম স্থাপন ১৬৪ করিরা, বরাহ্লাটের নিকট গোবিন্দাস পাণ্ডার বাটীতে থাকিরা, ব্রহ্মাদি দেবদেবী দর্শনাদি করিরা, আপন কর্ম্ম সমাপনান্তর ঐ পুক্রবাসী পাণ্ডার বাটীতে আসিরা বাজার হইতে পুরি ইন্ডাদি আনিরা ভোজন করা হয়। তৎকালে অভিনুর বৃষ্টি হওরাতে বাজারে বাইরা দেখিলাম মকরাণা হইতে জীরামচরণ চক্রবর্জী ও জীবৈকুঠনাথ সরকার খেত-প্রস্তরের ক্রব্যাদি লইমা পাইছিয়াছেন। উাহাদের সহিত সাক্ষাৎ হইলে পর ঐ স্থানে জয়পুরের রাজার বে শিবহাপন আহে, ঐ শিব-মন্দিরে ক্রব্যাদি রাথিরা, সকলে এক্তে থাকা হইল। পরে মুটিরাগণ আনাইরা আজ্মীর গমনের শ্বির ক্রিরা ঐ শিবালরে রাত্রে সকলের অবৃত্তি হইল।

# পুষ্কর হইতে আজমীর

পুরুরতীর্থে স্থান-তর্পণাদি করিয়া আঞ্মীর গমন। পুরুর

#### ৬ শ্রাবণ

হইতে আৰমীর (৮) ক্লোৰ, পাহাড়ের উপর হইরা এই পথ। গাড়ী বে পথ হইবা গভারাত করে, ভাহাতে দশক্রোন পথ। পাহাডের ঘাটে ঘাটে পথ। ঐ পথে পুৰ্বাদিবদ গাড়ী ইত্যাদিতে প্ৰীৰুত কানীবাৰ প্ৰভৃতি আদিয়া পথিমধ্যে ৰৃষ্টি হওৱাতে বড ক্লেশ পাইরাছিলের। গাড়ী চলিবার পথ ছিল না, কোলালি দিরা ছই वशत्नद्र वानि काण्डित शर्भद्र मध्य मित्रा शाकी ব্যালয়ীয় পাহাডের পথ হইতে বাহির করিছা নাগাইত সন্ধাকালে অনাহারে আজমীর সহরে প্রছেন। তথার মধ্যন-ষিত্র নামক কারস্থ জাতীর এক ব্যক্তি ক্ষিণ্নর শ্রীষ্ঠ নারম সাহেবের আমলা। অতি সদাশর ব্যক্তি। তাঁহার জাই সহোদর, ভগিনের এবং মাতাঠাকুরাণী প্রভৃতি পরিজনবর্গনহ আছেন। উক্ত মধুবাবু আক্ষীর সহরে স্বামল শেঠের বাটীতে থাকিবার ছান করিয়া দেন। ঐ বাটীতে সকলের থাকা হয়। **খেতপ্রভারে** মির্শিত অতি উত্তর বারী। ভিতর মহলে অমেকগুলি বর আছে। বাহিত্রে বসিবার উত্তৰ দালান, কিন্তু পার্থানার এবং জলনিকালের পথের বন্দোবত্ত নাই। বৃষ্টি ছইলে বাটার সকল জল এমন কি পারধানার পর্যান্ত সম্প্রের বার দিরা নিকাশ হয়। এইমত वाक्योत नश्दतत वक वांगे वाह्न, नक्रावह के यक वन-মিকাশের পণ।

উক্ত বাটাতে সকলে রহিলেন। আমি, রামচরণ, বৈকুঠ সরকার (৩) খেত-পাধরের মুটে আমরা চারিজন এবং পুকরবাসী পাণ্ডা রাধাকৃষ্ণ, গোবিন্দিটাদ, চিন্তামণি ও মধুসিংহ সকলে পাহাড়ের উপর দিরা বে পথ আছে ঐ পথ হইরা আজমীরে «পঁছছান হইল। আজমীর সহরে অনেক ধনাঢ়া ব্যক্তি আছে। উত্তম উত্তম খেত-প্রস্তম-নির্শ্বিত ভবন। তাহাতে নানামত নক্সা আছে। থোদিত মুর্তিসকল প্রস্তরে খ্যেদিত আছে। সহরের নির্মমত সকল জাতির বসতি এবং মর্ক্ রকমের দোকান আছে। রাজার ক্লেরা পাহাড়ের উপর। মাড়রারের রাজধানী অতি স্থলোভিত সহর। খেত-প্রস্তরের নানামত বাসন এবং দেবদেবীর মুর্গ্তি আর সকল রক্ম থেগানা, সিংহাক্ষন, কোচ, কেলারা, মেজ ইত্যাদি জিনিস উত্তর্থ উত্তম পাওরা বার।

আলমীর সহরে থাজা সাহেব বলিরা এক পীর আছেন, বড় জাগ্রং। তাঁহার ক্ষরণণ পথ হইতে বাত্রিগণকে লইরা বার। তথার হিন্দু-মূলনমান সর্বজাতি দর্শনার্থে বার, তাহার কারণ, শীর ধালা সাহেব ও ঐ ছানে চন্দ্রনীথ নামে এক অনাদি শিব চন্দ্রনাথ শিব ভিলেন। তাঁহার নিকট এক বৃক্ষ ছিল। আলমীর সহরে মুসলমানের অধিক বসতি। একজন ভিত্তী জল সমেত আপন ভিত্তী ঐ গাছের উপর রাধিরা আহারাদি ক্রিতেছিল। ঐ গাছের উপর রাধিরা আহারাদি ক্রিতেছিল। ঐ গাছের উপর হইতে ভিত্তীর জল টোলা টোলা শিবের মন্তকে পতিত হওরাতে, মহাদেব সম্ভই হইরা প্রকট হইরা ঐ ভিত্তীকে কহিলেন, "আমি সম্ভই হইরা তোমাকে বর দিতে আসিরাছি। তোমার বাহা ইছে। হর তাহা চাহ, আমি

"আমি এই স্থানে আছি। আমি চন্দ্ৰনাথ শিব, এই বৃক্ষমূলে আছি। ভূমি আৰু আমার মন্তকে জ্লধারা দিরা ভৃগ্ত করিরাছ। এজন্ত তোমাকে সদম হইবা বর দিতে আসিরাছি।" ঐ ভিত্তী ज्थन कहिन, "बिन जामाटक वह मिटन, ज्टान और वह स्मर, अहे খানে তোমার বে নাম প্রকাশ আছে, তাহা ওপ্ত হইরা আমার নাম প্ৰকাশ থাকে।" তাহাতে শিবলৈ কহিলেন, "তথাৰ" অৰ্থাৎ ভাছাই ছইবে। "আমি গোপন হইলা্ম। আমার উপরে ভোষার মসজিদ কবর হইবে, ভাহাতে ডোষার নাম থাজা সাহেব ব্লিয়া প্রকাশ থাকিবে। কিন্তু ভোমার বে কেছ সেবাভি হইবে, তাহারা মুগ্ণমানের ভক্ষা জব্য আহার করিতে পারিবে না," তাহা দে স্বীকার ক্রিল। মহাদেব আওতোৰ স্বভাবে বর দিয়া অন্তর্হিত হইলেন। ঐ স্থানে ভিত্তী দেহত্যাগ করিছা রহিলেন। তাহার কবর ঐ শিবের উপরে হইল। ভাহার পরিবারগণ ফ্রির হইরা ওভাচারে আঁছেন। ঐ ফ্রির শিবের পুঞ্চা এবং খালা সাহেবের শিবনি ছুইই প্রতিদিবস দিভেছে। হিন্দু-মুদ্দমান সকলেই প্রত্যক্ষ দেখিতে পার। বাহার বে মনের মানস মানত করিলে সিভ হয়। তাহাতে দিলীবর ঐ মগজিদ নানাপ্রকার প্রস্তরে খচিত করিয়া ভাষাতে নানারকের প্রক্তর খোদিত করিয়া কল্পাদি নির্মাণ করিয়াছেন। সম্মুখে নাটমন্দির আছে। ভাষার বে সমত্ত ধাম আছে, ভাষাভে খোদিত করিয়া সাঁকতির কর্ম করা আছে। ঐ স্থানে সর্বাদা নর্ভ কী-গণ নৃত্য-গীতবাস্থাদি করে। বাটার চতুপার্ব প্রাচীরবন্ধ। ঐ ৰাটার মধ্যে সদাব্রতের ধর আছে। তাহাতে কৰির সাক্রা থাকে। ঐ বাটীতে খনেক কুকুৰ আছে।

আদ্মীর বোধপুরের রাজার অধিকৃত ছিল। বংকালে
ইংরেজ বাহাছ্য ভরতপুর জয় করিলেন, বোধপুরের রাজা
কোম্পানী বীহাছ্রের দহিত প্রীতি ছাপন করিয়া মার কেলা
আজমীর সহর দিরা আপন তাবং রাজ্য স্বাধীন রাধিরাছেন।
ঐ কেলা মধ্যে কোম্পানী বাহাছ্রের সৈঞ্চগণ আছে। পর্কাতউপরে কেলা।

# আজমীর হইতে পুনরায় মথুরা

৭ আবণ

আল্লমীর হইতে গমন করিয়া তথা হইতে দশ জ্বোদ ক্রঞ্গড়। ঐ ভানে বাগিচাতে ছিভি।

### ৮ व्यावन

কৃষ্ণগড় হইতে দশকোশ পড়াদনি নাখে এক প্রাম। ঐ প্রামের মধ্যে থাকিবার স্থান না শোইরা প্রামের প্রান্তে মরলানে পড়াদনি স্থাহে । ঐ স্থানে সন্ধার সমন্ত্র কিছা হর।

#### ৯ আবণ

পড়াসনি গ্রাম হইতে তিন ক্রোপ আসিয়া নদী। ঐ
নদীতে মুথ প্রাক্ষালন স্নানাদি করিয়া পার হইয়া এক গ্রাম
আছে। ঐ গ্রামের নিকট আসিতে এক ব্যক্তি উটেম্ব উপর
সঙ্বার হইয়া গাড়ী রোধিতে আইল। তাহাকে কিলাসা
করা হইল বে, কি জন্ত গাড়ী রোধিতেছ। তাহাতে সে ব্যক্তি
কহিল বে, "তোধাদের সমত্যারের একজন বালালী মরিয়াছিল; তাহাকে দাহাদি না করিয়া কেলিয়া আসিয়াছ।"
আমরা কহিলাম, "সমত্যারের কেহ মরে নাই।" পরে ভদারক
করিতে অন্ত অন্ত বে সব বাজী পুছরে গিয়াছিল, তাহাদের
একজন ব্রীলোক মরিয়া বায়। তাহার সমত্যায়ী ব্যক্তি
ভাহাকে বনে ফেলিয়া আইসে। ঐ বাক্সিকে প্রেপ্তার করিয়া

যণার লাস তথার চালান করিয়া দেয়। কিন্তু সে ব্যক্তি অতি গরীৰ জানিয়া, ভাহার নিকট টাকা পাইবার পথ না দেখিয়া আমাদের পশ্চাতে পশ্চাতে আইদে। আমরা তথা হইতে চারি ক্রোশ ছত্ বলিয়া এক গ্রামে আসি। ু তথায় বাঞার ইত্যাদি আছে। মিষ্টার প্রকার দ্রব্য 55 **अधि** জলখাবার লইয়া তথা হইতে তিন ক্রোশ ...... এক বটবুক আছে, ঐ স্থানে থাকিবার কথা ছিল। ঐ উষ্টার্ল বাব্রিকে সমভাার দেখিয়া তথা হইতে গমন করা হইল। ঐ স্থানে থানা আছে, কিন্তু আমাদিগকে কিছু কহিতে পারিল না, তাহার কারণ যোধপুরের রাজার রেশালা সকল ঐ স্থানে আছে। আমরা তথা হইতে বগড় গ্রামে এক বহুৎ বটবুকের ছায়াতে গাড়ী ইত্যাদি রাখিয়া আহারাদির উদ্ভোগ হইতে লাগিল। এমত ৰপড় প্ৰাম সময় 'ঐ উটের সওয়ার বটতলার পূর্বাদিকত্ব থানার ঘাইয়া জানাইল যে, ইহারা আমাদের সরহদের মধ্যে একটী মনুষ্য খুন করিয়া ফেলিয়া আসিয়াছে। ঐ থানাদার ত্রীয়ন্ত কালীবাবকে তলব করার নানা প্রকার বাদাসুবাদের পর, তথার ঘাইতে নানামত ভর দর্শাইরা পচিশ টাকা লইলেক, স্থুতরাং দিতে হইল (কারণ) পরিবার সঙ্গে আছে। টাকা দিয়া আহারাদি করিয়া তথা হইতে রওনা হইয়া তিন ক্রোশ আসিয়া বড়েনা নামে এক গ্রাম। তথার রাজে পছছা হয়। বডেনা প্ৰায দোকান আছে, ধর্মপাণা আছে। দোকানে রাত্রে থাকা হইল। ঐ দিবসের ক্লেশের কথা কিছু লিখিতে পারিলাম না। সর্বপ্রকারে ছংখ, দেবতার বৃষ্টি ঐ দিন দিবারাত। ( >c )

>12

#### ১০ আবণ

বড়েনা হইতে ছয়ক্রোশ বাউড়ি। ঐ গ্রামে থাকা হয়।

#### ১১ শ্রোবণ

বাউড়ি হইতে আট জোশ আসিয়া জয়পুর সহর। বাজারের
মধ্যে এক ঘর লইয়া তাহাতে আহারাদি। বাহিরে দোকানের

হর লইয়া তথায় আমরা সকলে থাকি।

ঐ দিবস বৃষ্টি হয়। আহারাত্তে নগর

অমণ, সকল দেবালয়ের দেব-দর্শনাদি করিয়া, রাজার বাগানে
ব্যাঘ্র ও হরিণ ইত্যাদি প্রগণের শোভা দেখিয়া, পুক্রিণীতে
জলচর পক্ষীগণের শোভা দেখিয়া, বাসায় হিত।

#### ১২ শ্রাবণ

জ্বপুরে দর্শনাদি করিয়া বে সমস্ত প্রস্তর ইত্যাদির জ্ব্যাদি ছিল, তাহার পাশ পরোয়ানা রাজসরকারে করাইয়া, আর বে বে প্রব্য জ্বপুরে লইবার তাহা লইয়া ঐ স্থানে আছারাদি করিয়া স্কারি সময় ঘাটদরজাতৈ আসিয়া থাকা হব।

#### ১৩ জ্রাবণ

হাটদরলা:হইতে দশ ক্রোশ মোহনপুরা। ঐ খানে অবছিতি। ১৪ প্রোবণ

মোহনপুরা ১ইতে দশ ক্রোশ দোশাগ্রাম। ঐ গ্রামে খর

গোওরা বার না; অনেক ক্লেশে ছোট

হোট পাঁচ ছর খর পাওরা হইল, তারাতে
সকলে অতি কটে কাল্যাপন করা হইল।

১৫ জাবগ

লোশা হইতে দশ ক্রোণ দেকে করা। ঐ হানে মুকিও নামদা হত্যাদি তৈয়ারি হয়। ঐ হানে রাজে দেকেশর।

দোকানে পুরি তৈয়ার করাইয়া আহারাদি কবিয়া স্বাই মধো থাকা হয়।

১৬ শ্রোবণ

সেকেলরা হইতে দুল ফোল বেশেড়া। ঐ প্রামে দোকান আছে, তথার দোকানে থাকিবার স্থান পাওয়া বার না। ঐ ব্যানের নিকট এক বৈরাগীর দেবালর আছে। তাহার নিকটে তাল মর্মান মত স্থান ছিল, তাহাতে গাড়ী রাধিয়া আহারাদির উল্লোগ করিয়া, তথার থেচরায় করিয়া, সকলে আহারাদি করিয়া ঐ স্থানে থাকিবার কথা হইল; কিন্তু ঐ বৈরাগী প্রথমে কাহাকেও থাকিতে দিতে সম্মত হইল না, পরে অনেক স্তবন্ত করিয়া ঐ দেবালয়ের বাটীতে শরন করা ইইল। সমূধ বারে আহালয়ের সকল, মন্দিরের দরদালানে আমন্ত্র সকলে বার শুল্লবান করিলাম।

১৭ শ্রোবণ

ছোকরাবার বেশোড়া হইতে দশ ক্রোশ ছোকরাবার; সন্ধার পুর্বে তথার পছছান হইল।

১৮ প্রাবণ

গাগর অবি ছোকরাবার হইতে এগার ক্রোণ গাগর-আনি।

#### ১৯ শ্রাবণ

গাগর-খানি হইতে দশক্রোশ শোক: কোম্পানি বাহাছরের রাজ্য। ঐ স্থানে বেলা চারিদও থাকিতে পঁতছিয়া পুছরিণীর নিকট তথার এক গ্রাহ্মণের বাটী আছে। উহার তীরে নিবালয়, রাস্তাপারে এক বৈরাগীর সমাজবাটী, আর **(**₹1**∓** আবে অভা অভা লোকের বাটী হর আছে। তথার ছতার মিশ্রীর কাঠগড়ন হইতেছে। ঐ স্থানে নিম্বক্ষ-মলে আহারাদির উল্ভোগ করা হইল। তথা হইতে বাজার নিকট। দশ বার দোকান আছে; সকল দ্রব্যাদি পাওয়া যায়। ঐ দিবদ অবহর দাল পাওয়া হটুল এবং গমের আনটা, ভাল চাউল (৩) তরকারি প্রের হইল ৷ ভয়পুরের পথে আহারা-দির অক দ্রবাকিছ পাওরা যায় না। ক্রার (৩) বাক্রার জাটা, আরু মণ্ডটের লাল অনায়ালে পাওয়া যায়। তদেশের স্কল ममुख्य के नकन स्वामि काहात करत । वाही-ताही हेहारा हे कान-হরণ। অনেক তল্লাসে বিলির দাল (ও গম ঘবের মিলাও আটা পাওয়া যায়, দাম অধিক। তরি তরকারি কিছু পাওয়া যায় মা। পথে বন-উচ্চার শাক আর ফল-ভাহারই ভরকারি করিয়া ভারতেই আরারাদি। এই মতে কাল্রবণ করিয়া তীর্থভ্রমণাদি করিবা লোঁকে আদিবা প্রচান হল। ঐ বানে ঐ দিবদ शंकिमा व्यवस्त्रत मान (७) उदकाति कत्रिमा व्याहान्नामि हरेन। রাত্রে ঐ বৃক্ষমূলে শরন। রাত্রে বৃষ্টি হওয়াতে সকলে বৃদিয়া थीका रहेन, शांकियात कक चत्र शांख्या (श्रम मा। (कर हिंख, (कर मुनी, (कर बन्न, (कर क्यन, (कर मृहे हेलापि आवदन क्रिया.

কেই কেই শিবমন্দিরে, কেই বা গাড়ীর উপর অর্থাৎ ভিতরে, কেই নীচে, কেই কাহারও বাটীর কানাচিতে, কেই বা বৃক্ষের আড়ে রহিল; কৈবল প্রীয়ুত ভোলানাথ মুখোণাধ্যার মহালয় কাপড়ের ছাতা মুড়ি দিয়া তাহার মধ্যে সকল শরীর আছোদন করিয়া নিদ্রা গেলেন। (আর) সকলে জাগ্রতে রাত্রি গত করিলাম। ২০ প্রাবিণ

শৌক হইতে ,ছর ক্রোশ সদা। তথার আনসিয়া স্নানাদি করিয়া ঐ স্থান \*হইতে মধুরা চারিক্রোশ। বেলা আনড়াই প্রহর গতে মধুরা পছছিরা চৌবের সহিত

স্থা

কথোপকথন হইতে এমত বৃষ্টি কাসিল বে,
কলের আফালনে গাড়ী চলিতে পারে না। পরে বৃষ্টি কিঞিৎ
নিবারণ হইলে মধুরা হইতে তিন কোশ নীনী শ্র্লাবনধান,
তথায় সন্ধাগতে প্তভান হইল। অম্বক্তের

বুলাবন অব্দুশন নাগালে তিছান ২২না এম হুডের অইমীর মেলা। বে অগ্রবিহারীর কুলে থাকা হইরাছিল, আমরা জরপুর-পুরুর গমন করিবার পর ঐ কুজের কামদার বুলাবন সরকার অল্প বাজী তুলিরাছে, এজন্ত ঐ বাজীতে থাকিবার ছান না হওরার জীরুত ওকদেব ব্রজবাসীর বজমান লেঠের কুলে আলা হইল। ঐ রাজে সকলেরই পুরি কছুরি আহার হইল। পথে আমার নাগার ব্যামহ হর। তাহার পর তের কোশ পদবকে আদিয়া সকলের সমস্ভাবের বুলাবনে পছছি।

#### २) उन्निवन

ঐ বেঠের কুঞ্জের উপরের ধরে রক্তই ইভ্যাদি হইবা ১৭৩ সকলে আহারাদি কবিল। আমি ফটী আহার করিলাম। পরে বাটী অবেষণ করিতে করিতে জনেক বাটী দেখা হইলেও স্বিধামত বাটী পাওয়া গেল না। পরে বংশীবটের নিকট স্থামবাজারনিবাসা ৮ কুফাবহর পুত্র ৮ গুরুপ্র পার ৮ গুরুপ্র দিকট স্থামবাজারনিবাসা ৮ কুফাবহর পুত্র ৮ গুরুপ্র দিকট প্রমান করিয়াছেন, ঐ বাটী চারিখণ্ড, উত্তম বাড়ী, জল নিকট, যমুনার তটে ধীর্মমীরের ঘাটে স্থান, বংশীবট নিকটে এবং বাটীর ভিতরে স্থই কুয়া আছে। ঐ বাটীতে গুরুপ্রসাদ বাবুর পরিবার—উহার জ্বী, হই ক্লা ও পৌরী আছেন। কুজার কামদার আটপুরনিবাসী শ্রীবৃত রামটাদ চক্রবর্তী অতি সদাশর বাক্তি। ঐ বাটী ভিতরের ঘর সকল একতলা, কিন্তু বর চওড়া, তাহাতে থাকিবার ক্লেশ নাই।

#### ২২ আবণ

শুরু-প্রসাদ বাবুর কুঞ্জ, বাহাকে লালাবাবুর কুঞ্জ কছে,
লালাবাবুন কুঞ্জ ভাহাতে স্থিতি হইল। বাটীর ভিতরের
উত্তরের খণ্ড স্ত্রীলোকদিগের থাকিবার স্থান।
শুনিদ্দিরের দক্ষিণদিকে দোভলার উপরে আমাদের থাকিবার
বর। ঐ ব্রের সন্মুপের ছাত হইতে বংশীবট এবং যমুনাদর্শন
উত্তমরূপ হয়।

#### ২৩ শ্রোবণ

একাণণী, বুন্দাবনপরিক্রম, তৃতীয়াবধি ঝুলন আরম্ভ, কিছ বুন্দাবদে কুলন দেবদির আছে, সকল স্থানেই ঝুলন হয়। বৈকালে ছয় দণ্ড দিন থাকিতে অবধি বার হইয়া দর্শন আরম্ভ হয়, ক্রমে সর্বাত্ত দর্শনবাতা।

#### ২৪ আবৰ

প্রাতে যমুনার মান তর্পণাদি করিয়া গোরপেশ্বর দর্শনান্তর গোপীনাথ দর্শন, বৈকালাবধি কুলন-দর্শন। ব্রজবাসিনী সকলে আপন আপন গৃহনধো কুলে এবং প্রীপ্রীরাধাক্ষণ কুলনের গীত গায়, তাহাতে কুাহাকেও কাহার লক্ষ্যানাই, কি শুনুর কি ভাত্মর, কি স্বামী, কি পিতা, কি লাতা, বে কেহ গুকুতর ব্যক্তি থাকুক তাহাতে শহা নাই, বুরং তাহারা সমূপে আইসেনা। সকল জ্বীলোক প্রাবণ মাসে উন্মাদিনী হইয়া রাধাকুষ্ণ-নীলাবর্শনে মর্ম থাকে।

#### ২৫ শ্রাবণ

ষমুনাতে নান-তর্পণাদি করিয়া দর্শন-যাত্রা।

#### ২৬ প্রাবণ

माना-काद्र भवन ।

### ২৭ শ্রাবণ

খানাদি করিয়া দশন, পরে বৈকালে সর্বার কুলন-দশনার্থ
গমন। দেবালয়সকল উত্তমকপে সুস্কীভূত করা। লালাবাবুর
কুষো বাড়-গঠন, দেরালগিরি অনেক প্রজাতিত হয়। শ্রীপ্রকাচন্ত্র
কুলনে বৈসেন নাই, ভেঁহ সিংহাসনে থাকেন, অক্সমূর্ত্তি আনিহা
লালাবাবুর কুলে সুস্ক
তাহাতে কুল্মটোকি বসার। শ্রীপ্রীগোবিক্তির কুলনটোকি অভি স্থান্ন। শ্রীকুলাবনে বেষত কুলনটোকির

অঠাম গঠন এতাদৃশ কোপাও দেখা যায় না। সকল দেবালয়ে সকল দেব ঝুলনচৌকিতে আদিয়া ঝুলন হয়, কেবল আমহন্দার রাধাদানোদর যে মন্দিরে আছেন, তাঁহারা এবং বুলাবনচক্ত আর কৃষ্ণচক্ত এই কয় মুর্তি অচল আছেন। ইংদিগকে দিংহাদন হইতে অঞ্চ জানে লইয়া যাইবার নিয়ম নাই । বৃহৎ বিগ্রহ পদ্মাদনসমেত দিংহাদনে আঁটা আছেন। এই তিন দেবালরে অঞ্চ জীমুর্তি লইয়া ঝুলন হয়। য়ানে স্থানে নানামত ক্রাণিতে চৌকির সমুথ শোভাযুক্ত হয়, পাশা সভর্ক ইত্যাদি খেলা থাকে। রাধাক্ষ লীলাতে ময় হয়। বছ্বিহারীর ঝুলন ভ্তীয়ার দিন্দ হয়, আর হয় না।

শেঠ বে বলচারীর বলনাথের মন্দির করিরাছে, তিন-হার।
প্রাচীর বলনাথের মন্দির, স্থানে স্থানে নানামত দেবমুর্তি আছে,

নরারণ মৃত্তি সকলাই চতুর্জ্ব। এ সকল

মৃত্তি অচল। বলনাথ তিনাম্মুর্তি আছেন।
উাহার সকল লীলা হয়। বলনাথের ফুলন হয়। ছেনোলা
স্থানির্মিত, অতি উৎকৃতি লক্ষ মুলাতে হিন্দোলা তৈয়ার হয়।
বাড় লঠন দেওয়ালগিরি রালি বালি; বোল ডাব কুড়ি ভাল
বাড়, হাপ্রান্টা পাচ ভালের দেওয়ালগিরি, তিল বৈঠকি
চারি বাড়, ফি ঝাড়ে আলি ফানস্; ইহা ভিল্ল লঠন আছে,
এই সব আলোহর। বৃহৎ বৃহৎ মুকুর সকল আছে, তাহাতে
বাটা অভি স্থানাতিত হয়। ঐ দিবস মধ্যথতে বে পুক্রিণী
আছে, ভাহাতে গল-কছেপের যুক্ত হয়।

प्रम २२७२ पार्यात मार देठाव अधितृत्वावनशास्त्र ⊌न्नक्-२९७ কুমার বহুর কুঞ্জ হইতে কুস্তের মেণাতে ঐী৮ুছরিছার সানার্থে গমন।

ফারুনী পৌর্ণমানীতে প্রাক্রাবনে ফুল্লোলের সময় কুস্তের स्मिला इয়। এই মেলা বাদশ বংদরায়য় য়য়। প্রথমে ফুলদোলে ু প্রীর্কাবন পরিক্রমের মেশা অস্তে হরিষার বুলাবনে কুম্ববলা গমন করে। মেলাতে নানা দেশ, পাহাড়, জন্মল হইতে থাকি. বৈষ্ণব, গিরি, পুরী, ভারতী, রামাত, সন্মাসী, গোসামী, আথড়াধারী, মোহান্ত, নাগা ইত্যাদি অবধৃতগ্ৰ আদিলা শ্ৰীবুলাবনে থাকে। থাকি ইত্যাদি বৈঞ্চবগণ যমুনার চড়ার মধ্যে বেনীর উপর আসন করিয়া <sup>6</sup>ঐ স্থানে থাকিল। থাকি বৈক্ষব দশ হাজার : তাহাদিগের সমভ্যারে নানা প্রকার শিল্য আছে এবং নুদিংহ মৃষ্টি ও গোপাল মৃষ্টি। এঁকত প্রকার দেবদেবা চড়ার উপরে স্থানে স্থানে হইতেছে। শহা ঘণ্টা ঘড়ি কাঁসর মুদক্ষ করতাল ধ্লবী ইত্যাদি বাল্লধ্বনি করিয়া সময় সময় ভত্তন করা ছয়। যমুনার চড়া কালিয়দ্ভ হইতে গছবর-বনের নিকট পর্যাস্ত। এই মত মহানদে আনন্ত্রক হুইয়া বালুকামর ভূমি স্বর্গতুলা হইয়াছিল। থাকিগণ যে যে আসন করিয়া বসিয়াছিল, তথা হইতে মেলাভিজ না হওয়া প্রান্ত কোপাও যান নাই। প্রর দিবস মেলা ছিল। ইতোমধো ছই তিন দিবস একাপ বৃষ্টি ও বাতাৰ হইৰ যে, মহুহাগণ আপন আপন আশ্ৰমে থাকিয়াও আদিতে ভীত হইয়া কম্পনান ; কিন্তু ভগবানের ইচ্ছায় দাধুগণ ঐ ষ্মুনার চর্মধো থাকিয়া, ধুনী তাপিয়া ভল্নানন্দ হইয়া, ভল্নে মগ্ন বহিঁ। ভাহাতে কিছু ক্লেল বোধ নাই। দিবাতে পুৰা পাঠ शान वाश्व हेल्डानि शान शान हहेबा भन्नमानत्त्व मध । ठिखकूछे-

নিবাসী এক থাকি বাবাজি মদকে বড ভাল ছিলেন। জাঁহার বাছ শুনিবার জন্ত প্রাতঃকালাবধি সন্ধ্যা পর্যান্ত লোকের মেলা হয়। এমত মুদঙ্গের বাস্ত প্রায় কেছ শুনে নাই। এই সকল সাধু শীরুলাবনে আদিয়া কাহারও নিকট যাজা করেন না। যে কেহ আপন ইচ্ছাতে উহাদিগকে ভোজন দ্ৰবা, ধুনীর কাঠ, গাজা চরদ ভাঙ্গ দিতেছে, তাহাই দকলে বণ্টন করিয়া লইয়া আনলে ভজন করিতেছে। শ্রীবৃন্ধাবনে শ্রী৮রাধারাণীর এরূপ কুপা আছে বে, কেহ এ ধামে উপবাদী থাকে না। এই সকল সাধুদিগের সেবার জব্যাদি সকলে যোগাইয়া দেয়। এক দিবদ এমত হইল যে, কেহ সাধুদিগের কিছু আহার্যা প্রছায় না; ভাবৎ দিবা গত হইল, তথাচ আহাৰ্যা, কি ধুনীর কাঠ কিছু না পাওয়াতে স্ক্রাঝারতি করিয়াসকলে ভুজনে মগ্লুইল। এইরূপ নিতা নিয়মিত কর্ম। রাত্র এক প্রহর প্রাস্ত সকলে স্মাপন করিয়া পরস্পর প্রণাম দশুবৎ করিয়া, আপন জ্বাপন যোগাসনে যোগ-সাধন করিতে উপবেশন সময়ে শ্রীধামের কোতোয়াল—জাতিতে মুসলমান, অখারত হইলা বমুনার চড়াতে বাইলা, আপুন গুণ সমভাবে পদক্রজে সাধুদিগের নিকটে গ্রন করিছা ভুনিলু ই অন্ত সাধ্যকল উপবাদী আছেন। তংকণাং বাঁলার চইতে বিশ মণ পুরি, কচুরি এবং তত্ত্পযুক্ত চিনি আর ধুনীর জল্প পঞ্চাল মণ কাঠ, পঁচিৰ মণ কাণ্ডা এবং তামাক চরবের থরচ পাঁচ টাকা দিয়া গমন করিল। এই মতে প্রতি দিবদ সাধুদিগের সেবা इडेड।

বে সমস্ত সলাদী আসিলছিলেন, তাঁথারা যমুনার তীরে ছিলেন। ইথাদের ভিকা করা ছিল, দিবাতে চুটকি পর্যাত্ত করিত। সন্নাদিগণের মধ্যে গিরণার পর্কত হইতে এক মৌনীগিরণারের থৌনী বাবা

মৌনভাবে আছেন। আনদি আদির করেন
না—কণাহারী, অবাচক। তাঁহার সহিত গিরণারবাদী এবং আবুপাহাড়বাদী দশজন ছিল, আর এক ঘোড়া(ও) ছই চেলা; তাহারা
বংশীবটের ঘাটের উপরে অখখ-ন্লে আদন করিয়াছিল। ঐ
মৌনীবাবার আশ্র্যা তপজা, বৃক্ষশাথাতে রক্জুদিরা ঐ রক্জুপরে
চুরালি আদন প্রভাকে করা, নীচে প্রজ্ঞাত অন্নির উভ্রাপ। এই
মত প্রতি দিবদ প্রাতে সন্ধ্যায় নির্ম আছে। আহারাদির
ফলাহারী স্লব্য বদি কেহ আনিয়া দের, তাহা গ্রহণ করেন। অন্ত আন্ত ব্যক্তিগণের ভোলন দ্রব্য যাহা দের, তাহা লইবা দকলকে
বন্টন করেন। আপনার ফলাহারী দ্রব্য যে দিবদ কোথাও
পাওয়া না বার, দে দিবদ বিবপ্র আহার করিয়া দিনাতিপাত হয়।
এই নির্মে উাহার থাকা ছয়।

শ্রীধানে বার আবড়া আছে। ঐ সকল আবড়াধারীরা আপন আপন গদি হইতে আইসে। ভাহাদের সমভ্যারে হত্তী, অস্ব, উট্র, নীলগাও, মৃগ, হরিণ, নীলবানর ইত্যাদি পশুগণ আছে।

বোটক (ও) উট্টের পুঠে ডকা, উট্র'পরে কড়া-র্লাবনের আবড়া
বিন আর তাসের ও কিংথাপের ও আলোরানের
নিশান সকল। সক্ষে আটটা, কাহার দল, কাহার বার, ইস্তক আট
নাগাইল চব্বিশটা নিশান। বাহার বেমত গদি ভাহাদের সহিত
সেই মত নিশান। এক এক নিশানের মূল্য ইস্তক আটশত
নাগাইল আড়াই হালার টাকা পর্যন্ত আছে। ঐ নিশানের রক্ষক
ভিন চারি শত নাগা অন্তধারী, আন্ত চালনা করিতে করিতে,

বাছধ্বনি বন্দুক কামান কড়াবিন আওয়াল করিতে করিতে, জীবুলাবনে প্রবিষ্ট হইল। আধড়ার মোহস্ক হজীতে, রূপার আমারি, তাহার উপর খেত চামরের ব্যক্তন, আপাশোটা বলম ছড় সোণা রূপার, এই মত আদবাবে আসা হয়। যথন বৃন্দাবনে প্রবিষ্ট হয়, তাহার পূর্ব মধুরায় আসিয়া সংবাদ হয়। বৃন্দাবন হইতে আপন আপন আধড়ার বৈরাগীগণ অগ্রগামী হইয়া এখানকার আসবাব সকল বাইয়া তাঁহাদিগকে লইয়া আইসেন। আপন আপন গদিতে পঁছছিয়া মেলা পর্যায় থাকিয়া, সকলে এক এক দিন কড়াই করে অর্থাৎ ঝড়ুর, সকলকে উত্তমক্রপে আহার করায়।

যে বার আথড়া আছে তাহার নাম:--

विश्वती, প्रमार्थी, वर्गेड्डी, मानाधाती, निक्की, निर्काणी, विश्वामी, इन्मानश्राता, धृतिकान, मृनुकक्ति ···

ত্রীবামে ফুলদোলের মেলা দেখিয়া 'এবং পরিক্রমাদি করিয়া হোরি ধেলার মেলা হইলে পর বেলবনে হোরির মেলা দেখা হয়।

# রন্দাবন হইতে হরিদ্বার

### ৫ চৈত্র—

শ্রীধান হইতে প্রাতে সর্বাত্ত দর্শন বাত্তা সাক্ষ করিরা আহারা-দির পরে বমুনা পার হইরা মাঠগ্রাম হইরা কোররি নামে এক গ্রাম, তথার রাত্তে স্থিতি।

#### • टाउ •

কোররি হইতে দশ কোশ পথ খণ্ডর নামে এক প্রাম। তথার
বাগানে আহারাদি করিরা রাত্রে সরাই মধ্যে বে বাগানে আহার
করা হয়, তাহা হইতে তিন ক্রোশ। ঐ
ধরর প্রাম
বাগানে তিত-সন্ধনা-স্লের রক্ষ্ট হয়। ঐ
বাগানের কুরার মধ্যে ডোল পড়ে; নুবক্ক্ ঐ কুয়াতে রশি ধরিরা
নামিয়া অসমসাহসিক কার্যা করিয়া ডোল তুলে। ত্রিশ হাত
নীচে কল।

## ৭ চৈত্র—

ধএর হইতে দশ কোশ পুরস্ধা। তথার এক বাগানের মধ্যে আহাবাদি করিরা সহর মধ্যে সরাইতে পুরস্থা থাকা হইল। এই স্থানে বথেট ক্ষুক

व्यक्त स्त्र।

## ৮ চৈত্র—

পুরজা হইতে ৮ জোশ গোলাচি। মাঠে এক সখপর্কের গোলাচি নীচে আহারাদি করিয়া গ্রামের মধ্যে ময়দানে থাকা হয়।

## ৯ চৈত্র—

গোলাচি হইতে ছয় কোশ হাপর, সহরের ফার বসতি।
সকল প্রকার জ্বাদি পাওয়া যায়। বাজারের শৃথালামত
দোকানাদি আছে। ঐ স্থানের পাঁপর অতি
উত্তম, কিন্তু দিবাতে ভাল পাপর পাওয়া যায়
না, সন্ধার সময় উত্তম মিলে: ঐ স্থানে এক বাগানে আহারাদি
করিয়া তথা হইতে তিন কোশ বাইয়া এক গ্রাম। তাহার
মধ্যে রাত্তে শ্বিত।

#### ১• চৈত্র—

উক্ত প্রাম হইতে ৮ জোন মিরাট। অতি উত্তম স্থান।
কোম্পানি বাহাহ্রের ছাউনি আছে। কমবেন দেড়নত বালানী
আছেন। এক কালীবাড়ী আছে; তথার
মিরাট
একজন ব্রহ্মচারী আছেন। টেননে টেননে
সর্বাত্ত এক ক্রি৮কালীবাটী আছে। তাহার ধরচ সকল বাবুলোকে মাসিক নিরমমত দেন। এই কালীবাটী হুই কারণে হয়—
এক কারণ, বালানী বৈ সমন্ত মনুন্ত টেননে ভিক্লা কিলা কর্মার্থে,
কি দেশ ত্রমণে আগমন করেন, বাহার সহিত কাহারও আলাপ
নাই, ঐ সকল ব্যক্তির থাকিবার স্থান ক্রানীবাটী, কেহ বাসাতে

স্থান দেয় নাই। বিতীয় কারণ—এতদেশে যে জীবহিংশা করে, তাহাকে জাতি হেয় জ্ঞান করে। কাহারও মনে র্থা-মাংস ভক্ষণ করিব না এই ভাবের উদয় হইলে, মহাদেবীর নিকট বলি প্রাদান করিয়া মাংসাদি ভক্ষণ হয়।

মিরাটে লালুক্রির বাজারের নিক্ট বেহালা-নিবাদী দিগমর মুখোপাধ্যারের এক বালালা আছে। তাহাতে বার্দিগের সর্বাদা বৈঠক হয়। মুখোপাধ্যারের দ্বাবের কারবার আছে।

মিরাট সহর অতি উত্তম, তিন ক্রোণ পর্যন্ত সহরের বসতি। হানে হানে বালার আছে। সকল বালার উত্তম শৃত্যলামত। আহারাদির ভাল ভাল জিনিস পাওরা বার। চৈত্র মাসে কপি, মটর-ভাট, বিট-পালত্ব ইত্যাদি ভাল মত পাওরা গেল, আর আর সকল তরকারি আছে, কেবল পটল মিলে না।

মিরাটে জল, কংলক্টর, ম্যাজিট্রেট, কমিলনর ইত্যাদির কাছারি আছে। জিহালখানার পার্শ্বে ডাক্টারখানা। সহরের বাহিরে কেম্প; তথার গোরাবারিক এবং কালাপন্টন। ঐ স্থানে ধন্টনের সাহেবদিগের বালালা এবং ইলেক্ট্রিক্-টেলিগ্রাফ আফিস।

আমরা সহরের ভিতর পকণ ঝালার শ্রমণ করিয়া, নানা-লাতীর জব্য দেখিলাম। বালালী দেশোরালী পঞ্জাবি ভিরিদ্ধি মুসলমান ইত্যাদি লোকানদার সকল উত্তম উত্তম দোকান সকল স্থাস্ক্রিত করিয়াছে, তাহাতে সকল দেশের জব্য পাওরা বার। উত্তম উত্তম কম্বল আছে, আর আর নানাবর্ণের স্থৃতা উল পশনের ব্রাদি আছে। মিরাট সহরের তামাক সকল রক্ষের আছে। সহরের লালকুর্তির বালারে দাল ছোলা ৩০ ক্পি আপু মটরন্তী পান শ্রপারি তামাক ইত্যাদি দ্রবাদি সইবা, সহরের বাহির তিনক্রোপ বাইরা, তথার বাগানের ভিতর গাড়ী ইত্যাদি ঐ হানে ধরিরা আহারাদির উদ্যোগ হইতেছিল। তথার আমরা বেলা এগার বন্টার সমর প্রছিরা, ঐ হানে লানাদি করিরা, আহারের উদ্যোগ। বে পুক্রিণীতে লান হইল, তাহার অল অতি উত্তম। আহারাদি করিরা রাত্রে স্রাই মধ্যে হিতি।

## हर्वे ८८

মিরাট হইতে দশক্রোশ মঞ্জরনগর। ঐ স্থানে এক মঞ্জননগর বাগানে থাকিরা দিবাতে আহারাদি করিরা ঐ বাগানে স্থিতি।

## ३२ हिख

মঞ্জরনগর হইতে এগার জোশ কাঞ্জিকাপুর। এই ছানে
কাঞ্জিকাপুর
অক আম্রবাগানে দিবাতে আহারাদি করিয়া
সন্ধ্যাগতে সহর মধ্যে সরাই আছে তক্ষধ্যে
ভিতি।

## छर्च ८८

ফাজিকাপুর হইতে বারজোশ কড়কি। নৃতন সহর হইতেছে। এই স্থানের নাম "নিউ কলিকাতা" কোম্পানি-বাহাহুর রাধিরাছেন। ইলিনিয়ারিং কলেল স্থাপিত হইরাছে। যত বিবরের কল আছে, স্থাপিত ইইরাছে। যত বিবরের কল আছে তাহার শিক্ষার লভ এই কলেক। বিলাতে কলেল আছে, স্বার এই কড়কিতে এক करनम । आत्र त्कान प्राप्त नारे । वात्रांनी हिम्मुकानी वाहात्र ইঞ্জিনিয়ারিং শিক্ষা করিবার ইচ্ছা হয়, তাহারা বে কলেজে পড়িতেছে • তাহার সাটিফিকেট্ লইরা এই কলেজে পড়িতে আসিলে যে ব্যক্তি যে কলেজে যত টাকা স্বলারসিপ পাইতেছে, ঐ টাকা আর এধানকার নিরপিত আট টাকা পাঁইবে। বালালা হইতে হিল্পকলেকের ফার্ডকেলাস হইতে প্রীয়ত মধুসদন চট্টো-পাধ্যার আদিয়া, এখানে ফার্ন্ত কেলাদে ভর্তি হইয়া, প্রশংসনীয় হুটুরা উত্তমরূপে, বিক্সান্ত্যাস করিতেছেন। এরপ বালক কেছ এ প্রদেশে পড়িতে আইদে নাই। ইতিপুর্বে জনৈক বালানী वानक मित्री करनम उठेरक वांचेबा काहे रकनारत छाउँ वहेबाकिन। দে ব্যক্তিও উত্তম ছিল, কিন্তু মধু'র ভার নহে। স্মার বালালি বালক কেই নাই। এই স্থানে আর ছই জন বালালি কেনেল ডিপার্টমেণ্টে আছেন। ঐ লগতে কলিকাতানিবাসী উমাচরপ্রোব (ও) শুবিপাড়ার নিকট (বাসন্থান) গিরিশ বন্যো-পাধাার এই ছুই জন বাঙ্গালি বাবু সহত্তের স্থপারিন্টেওেন্ট সাহেবের নিকট কর্মকারক আছেন। আর অনেক ফিরিলি ও গোরামিত্রী এবং কেরাণী আছে, তাহাদের এক এক বালালা आहा। कश्रतन वाष्ट्रिकन आहा।

এই স্থানে এক পণ্টন আছে, তাহার কর্মাধ্যক্ষণণ আছে।
লোহার থানা আছে, তাহাতে নানামত গোহার জবাদি তৈরার
হইতেছে। লোহাতে এমত কুট দিতেছে বে, জলের ক্সার গলিরা
বার। • এই লোহার থানার লোহা গলাইবার বে মর ভাহার ইট
বিলাত হইতে আসিরাছে। সে ইট বালালা কি এডকেশে জল্পে
নাই। ইটের রল শুলু, অনেক অধির উত্তাপ পাইতেছে তথাচ

গলৈ নাই। অভিশন্ন মঞ্জবুত ইট। ঐ লোহার থানাতে লোহার বোট হইতেছে। ঐ সকল বোট লহরেতে বহন করে। ক্ষবেশ তিনশত বোট প্রস্তুত আছে এবং হইতেছে।

কুড়কিতে বে পুল হইয়াছে, এমত পুল কোবাও নাই। বছ মজবুত এবং স্থর্ডোল। পুলের ছই মহড়াতে বে ছই ব্যাঘ্র তৈয়ার করিরা রাখিরাছে বৃহৎ আক্রতি—ভরানক বৃর্তি। ল্ভবের ছই ধারে পোকা গাঁধনি উত্তম, সুর্কির বল্পবাটী করা। লহরের অভিশব শোভা। 'প্রের পারে বাজার সকল ত্রবাদির দোকান আছে, শৃথলামতে দোকান স্থাপিত। উত্তম উত্তম থাছত্রব্যের দোকান আছে। লহরে জল ৩ কৃট চলিবার হতুম। অধিক জল থাকিবার আদেশ নাই। বধন জল ভাষাইয়া লহর মেরামত ক্রিতে হয়, হরিছারে বধা হইতে এই গলার লহর আসিয়াছে, তথার বন্ধ করিলে জল ওথাইরা যার। ভাহার পর মেরামতাদি হয়। এই বৃহরের শাখা-লহর স্থানে স্থানে অনেক হইরাছে। অনেক কারণ জল্প গলার এই লছর ক্রিরাছে। হরিষার হইতে প্ররাগ (এলাহাবাদ) পর্যান্ত ক্লপথে বাণিজ্ঞাদি হইবার কিখা সরকারি বুদাদির দ্রব্যাদি গভারাত कत्रियांत्र भथ हिन ना । এই नहरत जनावारन नोका अखावाछ ক্রিতেছে। আর এতদেশে বচ্ছানে জলভাই জন্ত শভাবি জ্মিত না, মঞ্জুমির স্তার ভূমি সকল পতিত থাকিত: একৰে এই প্রধান লহর হইতে গ্রামে গ্রামে লহর চালাইরা ভ্রমারি আবার क्वाहेरल्ड। कि विचाद कन-चढ़ा ।• हादि खाना शादी करिवार । ইহাতে রাজা প্রজা ছইরেরই লাভ অধ্য প্রজা পর্য স্থবী। क्रफिएंड करे नरावत मार्थ कर नहीं आहा के महीब कर গ্রহরের নীচে দিরা যাইতেছে; সহরের জল নদীর উপর হইরা আইলে। কাহার জলের সহিত কাহার জল মিশ্রিত হর না। নদীর জল গছর হইতে, নীচে আছে, এ জন্ত ঐ নদীর উপর পূর্ল করিরা তাহাতে সহরের জল আসিতেছে। সহর সর্বত্তে সমান ভাবে আসিতেছে, উচ্চ নীচ নহে। তাহা হইলে সর্বত্তি সমান জল থাকে না, কোথাও লহর নীচে দিরা চলিতেছে, উপরে নদী বহিতেছে।

এই কড়কির লহরের নিকটে এক বাগান আছে। ঐ বাগানে ঐ দিন হিত হইরা আহারাদি করিরা কড়কির পূল ইত্যাদি বে সমত্ত কল-কারখানা আছে, তাহা উত্তমরূপে দেখিরা, সর্বত্ত কল-কারখানা আছে, তাহা উত্তমরূপে দেখিরা, সর্বত্ত ক্রমণ করিরা, বাজারে বে বে ক্রব্যের প্রয়োজন তাহা দইরা, রাজে ঐ বাগানে খাকা হইল।

১৪ চৈত্র দোমবার

প্রাতে কড়কি হইতে ছরজোশ বাইরা এক আন্র বৃদ্দের নীচে
আহারাণি করা হর। তথার নুহরের জনে রানাদি। ঐ স্থান
ক্ষাপুর
কাপুর

মন্থব্যের লইরা তবে তাহার ভিতর প্রবেশ হইতে দের। এই মত চতুর্দিকে গার্ড আছে। আমরা তলাদী দিয়া নগরে প্রবেশ করিরা, বাকারের কিছু দ্বে এক মরদান জার্গাতে গাড়ী রাখিরা রেতিতে আদন করিরা রাত্রে ঐ স্থানে থাকা হইল। সমস্তারের দক্ষ আদবাব ঐ রাত্রে পাঙার বাটীতে রাখিরা আদা ইইল।

## ২৫ চৈত্র মঙ্গলবার

ৰুণাপুর হইতে তিনক্রোশ হরিছার। । অতি প্রত্যুবে তথার পছছিলা, কড়িতে গাড়ী রাখিলা, হরপিড়ির বাটে প্রাতঃমান, তর্পণাদি, ভেট পূজা করিয়া, থাকিবার **চ**িছ∤ৱ বাটীভাডার জন্ত সহরের সর্বত্ত প্রমণ করা হইল। এক এক বর এক শৃত টাকা মেলা পর্যান্ত ভাড়া। চৈত্র সংক্রোন্তিতে মেলা হয়। এই কয় দিবলে ফি: ঘর একশত টাকা। বাটীর মধ্যে দশ বার হর আছে, কিন্তু পার্থানা এক। ঐ স্থানে সকল বাটা ভ্ৰের নিকাশ প্রকাশ, এই মত দেখিয়া বাটা পছন্দ না হইয়া, গদার নিকট কড়ির উপর বাদের ছাপ্লর তৈয়ার করাইরা, তাহাতে তিন ঘর হইল। এক যর জ্রীপোকদিগের, এক ঘর দাসীদিগের, আর সমত্যারী বাত্রীদিগের। এই চুই বর পুর্বারী। বে ঘর দক্ষিণবারী হইল, তাহাতে অথমরা সকলে রহিলাম। চ্জুর্দিকে ঘাসের টাটীর প্রাচীর হইল। দক্ষিণদিকের পূর্ব্ব-কোণে পারধানা হইল। তাহার বাহিরে দরোয়ানদিগের দেউড়ি হইল। পূর্বারী বাড়ী হইল, সন্থ্ৰে পরিসর রাস্তা বহিল। তাহার পূর্বে গলার

পলপুরাণে উত্তরণতে ২১ ও ২২ অধ্যারে এবং শিবপুরাণে ক্লানসংছিত।
 বং অধ্যারে হরিবার-মাহাল্য বাণত হইরাছে।

লছর। ঐ গদাতীরে রম্বরের খান। এই মত বন্দোবত করিরা তীর্ষোপবাস করিরা থাকা হইল।

## छर्व ४८

হরণিড়ির বাটে স্থানাদি করিয়া কুশাবর্জের ঘাটে তীর্থ প্রাক্ষাদি করা হয়। ঐ ঘাটে সান তর্পণ প্রাক্ষ দানাদি। কুশা-বর্জের ঘাটে রহৎ বৃহৎ মৎক্ত আছে, পিও জলদারী সমঙ্গে দেখিতে চমৎকার! হাজার হাজার মৎক্ত একের পর আর, একের পর আর, এইরূপ কেলি করে। প্রাক্ষাদি সমাপন করিয়া, ঐ বাসার ঘাইয়া, রাক্ষণ-ভোজন করাইয়া, নিরম-ভঙ্গ হইয়া জল খাওয়া, পরে আহারাদি হয়।

### ३१ हिज-

নীল-পর্কতে চণ্ডী-মুর্লনার্থে গমন। গলার লহর নৌকার
পূলে পার হইরা, পরে নীলগলার ধারা নৌকাতে পার হইরা,
পাহাড় মধ্যে প্রবেশ। ক্রমে পুরাড়ের উপর প্রার তিন ক্রোশ
নীল-পর্কতে চণ্ডী ও উচ্চে উঠিতে হয়। এই পর্কত মধ্যে উত্তরনীল-চেঠ্বল-ম্লিল দিকে এক নিবিড় বন আছে, তাহার
মধ্যে অনেক সাধু বোগ-সাধন করিতেছেন। কিন্তু তাহার
নিকট বাইরা দর্শন করা স্ক্ঠিন; তাহার কারণ ঐ বন
মধ্যে জনেক হতী হতিনী আছে এবং ব্যাগ্র, ভল্ক, মুগ,

''গগাহাতে কুশাবর্জে বিবকে নীলগর্কতে । তথা কনবলে স্বাধা ধৃতপালা দিবং ব্রৱেং ।" (মহাভারত, ১০াং ৪)১৬) **मृक्त, हिः अब्बर्ध गर्भ व्यक्ति । के बर्ग अविहे मा हहेशा शाहार प्रत** উপর উঠিতে হইলে স্থানে স্থানে নানা পুশোর উদ্ধান এবং বৃক্পণে স্থােভিড. এই মত স্থানে স্থানে দেখিয়া পর্বতের শিরোভাগে উঠিছা চঞ্ডীদেবীর মন্দির। ঐ মন্দির মধ্যে প্রস্তরে দেবীর মূর্ত্তি। ঐ চণ্ডীদেবীর দর্শন পূজাদি করিয়া, তথা ছইতে পূর্বাদিকে ঐ পর্বতের অর্দ্ধ ক্রোণ উচ্চ এক শৃদ, তাহাতে অঞ্নাদেবী আছেন, তাঁহার দর্শন। পূরে পাহাড়ের দকিণ ণিক হইরা নামিতে হয়। আনেক দেব দেবীর দর্শন আছে। অর্দ্ধেক পথ নামিলে নীলকঠেখর শিব আছেন, তাঁহার দর্শন পুজা। ভাহার পর এক সাধু আছেন। তেঁহ হাঁটুতে - পাড়াইরা বার বৎসর তপক্তা করিতেছেন্। তাঁহার 🚁 ন করিয়া গৌরী-কুণ্ডের নিকট আসা হইল । গৌরীকুণ্ডের জলম্পর্শ করিয়া, ঐ স্থানে ক্ষণকাল বিশ্রাম করিতে করিতে কুণ্ডের মংশ্র দেখা হইল। বৃহৎ বৃহৎ মংস, কিছু খাম্ব-দ্রব্য দিতে নানাপ্রকার জীড়া করিতে লাগিল। ইহা দেখিয়া পরে ঐ নীলধারায়, যথায় নৌকায় পার হইতে হয়, তথায় আদিয়া পুনরার পূর্কপারে লান তর্পণাদি করিয়া. নৌকার পার হইয়া আসিরা বেলা ভৃতীয় প্রহর গভে বাদার আদিরাপ্রছাহর। পরে আহারাদি।

## >> (20 -

হরিছারে হরপিড়ির খাটে খান-তপ্ণাদি করিছা, বিধ্কেখর শিব দর্শনার্থে গমন করিছা, ঐ খান হইতে পাহাড়ের ধারে ধারে এক ক্রোপ বাইছা, পর্কতের নীচে শিব আছেন। তথার অনেক বিবর্ক আছে। ঐ খানে বহু স্ল্যাসী অব্ধৃত থাকেন, সর্ক্রা হর হর শব্দ হইতেছে। তথা বিবদ্ধ-গদাজল দইরা শিবপুলা দর্শনাদি করিয়া, বাদায় গমন। পরে আহারাদি করিয়া বৈকালে মেলার দোকানাদি দেখিয়া, নগর-অমণ, নানাবিধ জ্ব্যাদি ও মন্ত্র্য দেখা এবং শ্রবণনাথ মোহত্ত্বে শিবস্থাপন্নর শোভাদি ও সল্লাদিগণের দর্শনাদি করিয়া, সন্ধ্যাতে হরপিড়িঘাটে দর্শনাদি করিয়া বাদায় গমন।

## ১৯ চৈত্র—

বাদা যে স্থানে হইয়াছিল, তথা ইইতে কথাল-তীৰ্থ তিন জ্বোল। প্লাতে গমন করিয়া কথাল-ঘাটে স্থান-তৰ্পণুদি করিয়া একেশ্বর শিব দুর্শন ও পূজন করিয়া বটর্কের

ক্ষণণ মৃণ হইরা একটা ক্ষুত্র বারের ভার বটের আলে অর্থাৎ নামাতে স্থাপিত আছে তাহার ভিতর হইরা মান্দরে প্রবিষ্ট হইরা, সম্মুখের বার হইরা বাহির হইতে হয়। এই স্থানে অনেক সন্থাসী, অবধুত, ব্রহ্মগারী (ও) বোগিগণ আছেন। অতি উত্তম স্থান, দক্ষ প্রকাপতির পাসন্থান। এই স্থানে দক্ষণভ্রের সার বসতি। দক্ষের নিবের বাটা হইতে দক্ষিণ-পশ্চিম কোণে অর্দ্ধকোণ পথ বাইলেং সতীক্ত। বথার সতীর দেহত্যাগ হয়। ঐ কুণ্ড এক্ষণে এক প্ররিণীর মত হইরা আছে, তথার কাহারও বসতি নাই, নাঠ হইরাছে। ঐ পুছরিণীর পশ্চিম দিকে এক শিব আছেন। হই ভৈরব সমূপে আছে। বৃক্ষের ভলাতে শিব (ও) ভৈরব আছেন, মন্দির আদি কিছুই নাই। কেবল একজন সন্থাসী আছেন। কুণ্ড অতিশর অপরিহার, চতুর্দ্ধিকে বর্ষণা। ব্যরণ মহৎ তীর্থ, তক্ষণ উদ্ধার নহে। কেবল ঐ

তীর্থ এরপ। নটেৎ অন্তান্ত হান সকলে উত্তমরূপে তীর্থের উদ্ধার আছে। শেঠদিগের ধর্মণালা, বাগান, (ও) দেবালর হানে হানে হাপিত আছে। কমলে অনেক থনাচা ব্যক্তি আছে। এইখানে ডাক্ষর এবং কাছারি ইত্যাদি আছে। দোকানদার সকলের রাজার ছই পার্ম্বে দোকান, সকল দ্রব্যাদিই পাওরা বার। এই কমল নগরে বার আবড়া আছে। দিগম্বরী, নির্মারী ও বলভ্রমী প্রভৃতি আবড়াধারীদিগের এক এক আবড়ানটী আছে, তাহাতে অবধৃত, নাগা, (ও) স্র্যামীদিগের হান। মোহস্তগণ কুন্তের মেলাতে আপন চেলাগণ ওছ আদিরা ঐ স্ব স্থানে বণ্ তুলিয়া আদন করেন। এই সকল আবড়াধারীদিগের অনেক ব্যর হয়। তাহার কারণ পদ্দের সমুয়ে বত লোক তবার অনুক্ত থাকে, সকলকে ভোজনম্রব্যাদি দিতে হয়। আহারের পুর্ব্বে দামামা কি ঘড়ি কিয়া বন্টা বান্ত করিয়া সকল লোককে সংবাদ করিতে হয়। বে কেছ ক্ষিত ব্যক্তি আছে আইস। এই মত সমন্ত মোহবের নীতি।

এই মত না করিরা বদি মোকত আরু প্রথাতিলাবে মগ্ন হবেন, তৎক্ষণাৎ তাঁহাকে গদী হইতে বহিন্ধত করিরা পূর্বা মোহত্তের অন্ত চেলাকে মোহত্ত করে।. এই সকল মোহত্তদিগের শিব্য বহু রাজা-রাজড়া আছেন, বখন বাহা খরচাদি হর, তাহা ঐ রাজারা দিরা থাকেন। কথলে জনেক বাগ্বাগিচা, মরদান, জারগা আর উত্তম তাটী বর বাজারাদি আছে। এলন্ত বত দেশের রাজা-রাজড়া আসিরাছিলেন, সকল রাজাদিগের ছাউনী ঐ স্থানে হইরাছিল। এক এক রাজার তাবু কানাৎ কেলিরা বাটী বর তৈরার করিরা আছেন। বোধপুর, আলঙরার,

বিকানীর ও নাবা,—পঞ্চাবহ রণজিৎসিংহের অধীনের রাজগণের মধ্যে বে বে রাজা স্থানার্থে আসিঃছিলেন, সকলে ঐ স্থানে হিত । আর বে সমস্ত সওদাগর অখ, হস্তী, উব্ধ, গওার, ওচের, রোজ, নীলগাও প্রভৃতি ভ্রগণ বিক্রবার্থে লইয়া আসিয়াছে, তাহারাও ঐ স্থানে আছে। এই সকল কথাল নগরের লোভা দেখিরা পুনরার বাসার আসিয়া আহারাদি করিয়া, বৈকালে হরিছারের মেলার বাজার দেখিরা, সন্ধাতে হরণিড়ির ঘাটে গঙ্গা দর্শন-স্পর্শন করিয়া বাসাতে রাত্রে হিতি।

## ২০ চৈত্র—

হরপিড়ির ঘাটে সান-তর্পণাদি করিরা, ঘাটের কিঞ্ছির্ দক্ষিণাংশে বে পর্কাত আছে তাহার চড়াই চারি ক্রোনা; ঐ পর্কতের উপরে স্থাকুও, তাহার দর্শন। তাহার উচ্চ শৃক্ষে এক সাধু তপক্তা করিতেছেন, অঘাচক। কেহ তথার আহার অব্য পর্ছছাইরা দের তবে আহার, নচেৎ পাহাড় হইতে নীচে আইদের না। কিছু ভগবানের এমনি দরাবে, ঐ পর্কতোপরি বন মধ্যে প্রতি দিবস আহার বোগাইতেছেন। ঐ পর্কতের উপর সর্কাত্র শ্রমণ।

# ২১ নাগাইদ ৩০ চৈত্র—

হরিবারে হরপিড়ির বাটে বান-তর্পণাদি স্থাপন করিরা নীলধারা, ত্রিধারা, পঞ্ধারা, সপ্তধারা পর্যান্ত ভ্রমণ (ও) জলন্পর্য । কোবাও কথন পুনা মান, সাধু-সন্দর্শন, প্রদক্ষিণ, দেবদেবী-দর্শন-

220 (21)

পূজন, নগর-জমণ, সাধুদিগের ভজন-শ্রবণ এই মত প্রতি দিবস প্রোতঃ অবধি সন্ধ্যা পর্যান্তঃ কেবল ভোজন ও শয়নকাল বাসাতে।

হরিছারে কুন্তের মেলাতে বহু দেশস্থ নানারূপ মস্থার একজ মিলন হইরাছে। প্রায় দেড় জ্রোর মস্থা, ভরির জীব জন্ধ আছে। চতুদ্দিকে তিন জ্রোল পর্যান্ত হরিয়ারে কুছমেনা মন্থার বসতি হইয়াছিল। আমরা যে স্থানে প্রথম আদিয়া ঘর বাদ্ধিয়া ছিলাম, তাহার চতুদ্দিক ময়দান ক্ষতির উপরে ছিল। কিন্তু হই তিন দিন মধ্যে এমত বসতি হইল যে, তিল পুইবার স্থান রহিত হইল। এই সকল মক্রভ্যি লাইয়া পরস্পার বিবাদ হইতে লাগিল। স্থানাভাব এ পর্যান্ত হইল মস্থ্য সকল কেবল বসিয়া এবং ভ্রমণ ক্রিয়া কাল্যাপন করিল।

গলার নৃতন লহরের পূর্বপার নীলধারার পশ্চিম প্রায় তিন কোশ বাকসের জলল ছিল। ঐ জললের মধাছলে এই মেলার রক্ষার্থে এক কালা পণ্টন ছিল। তৎপরে জললে সকল লোক শৌচক্রিয়া করিত। কিন্তু প্রত মন্থ্যের স্মাগম হইল, ঐ অপরিকার ভূমি বত ছিল সকল হান পরিক্ষত হইয়া নগরের ভার বস্তি ও বাজার হইল।

হরিষারের উত্তর-দক্ষিণে নয় ক্রোশ—ইতাক হ্যীকেশ নাগাইদ
কথা ; পূর্ব-পশ্চিম চারি ক্রোশ—ইতাক নীলপর্বত নাগাইদ
কথার ; পূর্ব-পশ্চিম চারি ক্রোশ—ইতাক নীলপর্বত নাগাইদ
ক্যোরানপুর, এই চতু:দীমার মধ্যে দর্বতে নাগার,
বিনায় লোক-সনাগন
সহরের ভার মহুযোর বসতি এবং বাজার
স্থাপিত হইল। সকল পথে এমত লোক গতারাত করিতে লাগিল
বে, পথ চলিতে গেলে মহুযোর ঠেলাঠেলিতে প্রাণ গুটাগত হর,

গলদ্বর্শ হইতে হয়। তথাচ প্রীয়ুত কোম্পানি বাহাছ্রের তর্মধ্ হইতে এমত বলোবত হইয়ছিল যে, যে পথে লোক গমন করিবে সে পথে পুনরাগমনের লোক আসিতে পারিবে না। এই বলোবত জয় স্থানে স্থানে রক্ষকগণ যটিহতে ক্রমণ করিতেছে; গলাতে ছই স্থানে নৌকার পুল করিয়াছেন—এক পুল হরপিছির ঘাটের নিকট, আর এক পুল নীলপর্কতের সমুবে ক্রছিতে যথার পন্টন। ঐ স্থানে দোহারা নৌকার পুল। তাহার দক্ষিণ দিকে যে নৌকার পুল, তাহাতে পল্টিমপার হইতে পূর্কপার যাওয়া (এবং) উত্তর অংশের পুলে পূর্কপার হইতে পল্টিম পারে আসা, হরপিছির ঘাটের নিকটে ঐরপ বলোবতা। এই মতু করাতে গমনাগমনের (পথে) লোকের সহিত গোল্যোগ ইত্তে পারে না। মন্থ্য সকল পর্কতের উপর প্রান্ত বস্তি বিস্তার করিয়াছে।

বাজার সাজাইবার কথা কি পর্যান্ত লিখিব, অগণিত দোকান ।
মনোহারী দোকান নানাবিধ জ্ববাদিতে প্রশোচিত, দিলীওয়ালাদিগের প্রার পাঁচলত দোকান । ইহা জির
দেলার গোঁকাব-পাট
দেলী লোকের মনোহারী জ্ববাদির দোকান
আছে । শাল, দোলালা, কমাল, জামিরার, রেজাই, চোগা, মোজা,
দন্তানা, আলোরান ইত্যাদি, পশমিনার টুপী, নানাবিধ বস্তা, কামীর,
অমৃতসহর, স্বপুর, সুধিরানা, রামপুর ইত্যাদি প্রদেশের পশমীনার
উত্তম উত্তম বস্ত্র সকলের প্রার হই শত দোকান । উলবল্ধ, লুই,
পক্ষী, একতারি, চশমা, ওদা ইত্যাদি । হ্লাবনের এবং কামীর,
অমৃতসহর, শিরালকোট, পেশোরার, মূলতান, ভোট, রামপুর
ইত্যাদি সহরের মহাজন সকল পাহাড় হইতে উলব্লাদি আনাইয়া
চারিলত দোকান লুই-পটীতে হইরাছিল । নানা জাতীর উত্তম

উত্তম কৰল আসিরাছিল। পট্রবস্তাদির দোকান এবং সভার বস্তাদি নোনাদেশীর দোকান পাঁচশতের কম নহে। আর পিতল, কাঁসা, তামা, দন্তা, লোহার বাদন এবং অক্সাম্ভ তৈজ্ঞ নানাপ্রকার স্মামদানি হইরা কুমবেশ একশত দোকান ছিল। কুল্রাক, ভল্লাক, ক্ষটিক, পশ্ববীজ, ভুলদী, বিষ, পুলার দোকান অগণিত। খেত शांधरत्रत्र थाना, वाही, दिकाव, हाँका, कदनी, स्मळ, दहीकी, टकीह, কেলারা ইজালি উদ্ধম উদ্ধম দ্রবা সকল এবং নানাপ্রকার খেলানা দোকানে উত্তযন্ত্রণ সাজাইয়া শোভাযক্ত করিয়াছে। এই সকল খেত পাধরের জ্রবাদি মারোয়ারের মধ্যে যোধপরের সামিদ মকরাণা নামে এক স্থান আছে, তথার খেত পর্বতের উপরে ছন্তমান বে পাণর আছে তাহাতে গঠনাদি হব না. খানের ভিতর বে সমস্ত প্রস্তর জন্মাইতেছে, তাহাকে বাহির করিয়া গঠন করে। ষধন ঐ প্রস্তর খাল হইতে উঠাইতে হয়, বারুদ বারা ভয় করিয়া পরে ছেম্ন করিয়া, বে পাধর যে কর্ম্মোপযুক্ত ভাহাতে সেই গঠন করে। উত্তম উত্তম সংভ্রাস অর্থাৎ ভাষর প্রস্তারের কারিগর আছে। নানাবিধ শুরুবাদি খোদিত করিতে পারে। ষকরাণাতে আদল খান। জরপুর, আল্লমীর এবং মকরণাতে কারিগরদিগের বাস। মকরাণাতে দ্রবাদি অধিক তৈয়ার হয়। জরপর ও আক্রমীরে তথা হইতে প্রস্তর আনিরা তৈয়ার করে। ঐ পাধরের থানেতে রাজার রক্ষকগণ আছে, দ্রুথাস্থলারে ছাদিল মাকুল আছে।

নানা ভাতীর মেওরা কাবুল, কান্সালার, কান্সীর হইডে মোগল উটের উপর বোঝাই করিরা আনে। তাহাতে আনার, আসুর, সেউ, বিহি, গোহারা, কিস্মিস্, মনক্কা, বালাম, পেডা ইত্যাদি নানাবিধ মেওয়া, আলুবধারা, ধাটা আনার, আঞ্চীর, জেলেবা ইত্যাদি অমরদের জব্য সকলের দোকান পাহাড়ের নিকট স্থাপিত ছিল।

মদলা নানালাতীয়। গুলরাট, বোষাই, ইত্যাদি দক্ষিণ পাটনের জ্বব্য দকল লবক, এলাইচ, জারফল, কারফল, করিনী, দাফচিনি, কালামরিচ, কালাজিরা, সকেণজিরা, জিরা, তেজপত্তা, ছোট-এলাইচ ইত্যাদি নানালাতীর মদলা এবং নারিকেলের গোলা, চিকিম্পারি, বোষাই স্পারি, আর দক্ষি বাদাম ইত্যাদি জিনিদ দকল উঠে বোঝাই করিরা দওদাগর সকল আনিরা দোকান করিয়াছিল। এ সকল দোকানে ত্পাকার জ্ব্যাদি পাহাড়ের নিকটে পাল তুলিয়া রাধিয়াছিল, এই দকল জ্বা অক্স দেশীর দঙ্গাগরে লইয়া যার।

পান তামাকের দোকান স্থানে স্থানে আছে। নানা দেশীর ক্লিকা বিজের হইতে আঁসিয়াছিল। মৃত্তিকার, কাঠের, পিতলের, কাঁসার, দ্যার, ক্লপ্রার এবং নারিকেল ও পাধ্রের নানা রক্ষ হকার দোকান ছিল; নল সকল •রক্ষ সকল হকার মত বিজের হইতেছে।

তরি তঁরকারি পটল ভিল সকল জিনিস পাওয়া ৰাইত। ফলাদি অনেক রকমের মিলিত। তেঁডুল ন্তন পাকা খোলা সমেত বিক্লয় হইত—তিন আনা সের।

আচারের দোকান শত শত ছিল। কিন্তু পঞ্চাব, লাছোর, অমৃতসহর ও দিল্লীর বে সমস্ত আচারের দোকানদার ছিল, তাহারা উত্তম উত্তম সকল জ্বোর আচার করিবাছিল। আন্ত্র, লেবু, কিস্মিন, নোহারা, আদা, করঞা, বার্ত্তাকু, করলা, আলু, পেণে (বাহাকে এরও ধরমুজা কছে), সজনাকুল, কাঞ্চনকুল, সজনাডাটা, বকফুল, বকজুলের ডাটা, বাসকফুল, ঝিলেফুল, বিলাতী কুমড়ার ফুল এবং কুমড়া, দেলী কুমড়া, লাট, কচু, বাশকোঁড়, থোড়, মোচা, তুঁতপাতা, আকল্পণাতা, লেবুর মধ্যে যত রকম লেবু আছে, সীম, মুলা, পল্লমূল, পল্লমূলাল, কুমুদমূল, মুণাল ইত্যাদি যত রকম জিনিস আছে, সকল আচারের নাম লিখিতে বাক্ল্য লেখা হয়। সকল আচার উত্তম উত্তম করিলা লোকান সাজাইরাছিল।

এইরপ মোরবাওরালাদিগের, দোকানে নানা জবোর নানাবিধ মোরবা স্থান্ত করিয়া বে বেমত জবা ভাহাকে দেই মত রঙ্গে পাক করিয়া নানা রঙ্গের করিয়াছেণ আম, আমলকী, হরিতকী, কিস্মিস্, সোহারা, লেবু, নারেলা, সম্ভারা, পাতি, কাগন্ধি, বাতাবি, পেঠাবিয়া, বার্তাকু ইত্যাদি নানালাভির জবোর মোরবার দোকান।

মেঠাইওরালা হালরাইদিগের দোকান। নানা দেশের দোকানহার আসিরা হানে হানে দোকান করিয়া জ্বাদি নানামত করিয়া বিক্রর করিতেছে। দোকান হানে হানে তিন হাজারের কম নহে। হালয়াইদের দোকান—বেথানে লোকের বসতি হইয়াছে তাহারই নিকটে হালয়াইদের দোকান। তাহা ভিয় বাজারে আছে। দোকানদার সকল লাহোর, অমৃতসহর, অমালা, সুধিয়ানা, জলজর, দিলী, সাহরণপুর, মিয়াট, কোএল, আগরা, মধুরা, র্লাবন ইত্যাদি সহর সকল হইতে এবং প্রামনগর হইতে আসিয়া দোকান করিয়াছে। ইহাতে প্রি, কচুরি, তরকারি আর আচার ইহাই মবলগ বিক্রয়। এতদেশী লোক

ুরস্থই করিতে চাহে না। পুরি কচুরি লইলেক, গলার ভীরে বদিয়া আহার করিলেক, মেলাতে বেড়াইতে লাগিল,-এই মত অনেক মহুষোর অবহা। এজন্ত পুরি কচুরি অধিক বিক্রের। অমৃতস্ভুৱের দোকান্দার্দিগের পুরি কি উত্তম হয়, তাহা বলিতে পারিনা। এমত পাতলাপুরি কোথাও হয়না, তথাচ তাহারা ছাতে গঠিয়া ভাঞ্জিতেছে – চাকি বেলুন ম্পর্শ করে না। সাহরণ-পুরের দোকানদার এবং দিল্লীর দোকানদার সকলে উত্তম উত্তম মানারকম মিঠাই ভৈয়ার করিয়া, মিঠাইতে ঘর বাজী দালান রখ ইত্যাদি নানামত কার্থানা, করিয়া, দোকান সাজাইয়াছিল। ভাহাতে মুগেক, উক্লাব, মেধির, বেশমের, মগধের, (এ) মতিচুরের লাড়, অমৃতি, জিলাপি, সকরপানা, রসবড়া, চাদদাই, স্কুরমা, महेराज़, (लज़ा, रहिक, शानारकाम, अकिहा, श्लीह स्पर्धाहे. नव्हा, मूशनन, ठानमारे थावा, कनमा, रेनारेठमाना, वाजामा, ভিলকুট সন্দেশ, ভিলেখালা, ধুলউড়ি, ইত্যাদি মিষ্টার প্রায় আর গোহালার বিক্রম্ব দ্রব্য দধি হয় ক্ষীর রাবড়ি মালাই মাধন ইত্যাদি গোরস সকল স্থানে স্থানে উত্তমন্ত্রপে দোকান সাজাইয়া বিক্রব্ করিতেছে।

ভার ওরালা অর্থাৎ তুনাওরালা চনা, মরা, বব, গম, মুগ, মটর, তিল, চাউল, জোরার, (ও) বজরা ভাজা, বছরি সিছির বীজ ভাজা, লেহরা ভাজা, কুসুমবীজ ভাজা, মুড়ি, থৈ, দেধানের থৈ, চৌলাই বীজের থৈ, ধলের থৈ, ইত্যাদি চাবেনা সকল লইরা দোকান সাজাইরা গলি গলি দোকান আছে। বিক্রন্ন অধিক হইভেছে, ভাহার কারণ বত দীনহু:বী আসিরাছে, এক এক পরসার চাবেনা অঞ্চলে লর, লইরা গলার তীরে বসিরা চর্কণ করিরা, অঞ্জলি পুরিরা গঙ্গার জলপান করিয়া, দিবারাত্র পথে ভ্রমণ করিয়া মেলা দেখিয়া বেডায়।

হরপিজের ঘাটের পশ্চিমদিকে এবং দক্ষিণে পশারিদিগের দোকান, তাহাতে নানামত বেণেতি জব্য সকল তিক্ত, কটু, মধুর, অম্ল, ক্ষার, (ও) কার, সকল রকম রস আছে। নানাজাতি ঔষধির জজিবুটী, ফলফুল, ছালপাতা, লতাচিটাা, মিঠাা পান, মূল, আরক, বীজ ইত্যাদি চিকিৎসার জব্য; তত্তির চামর, চুরা, খেইচন্দন, রক্তচন্দন, ধৃপধুনা, সিন্দুর, মৌনি, আর আর নানাজাতীর মসলাতে দোকান সকল সাজাইয়া স্থোভিত করিয়াছে।

ভোমদিগের বাশের লাঠা, ছড় আর গলাজল বহিবার কাউর, ছোট সালির আফুতি টুকরির দোকান কড স্থানে কড হইরাছে, তাহা গণনা করিয়া শেব করা বার না। বত মস্থা দেশান্তর হইতে আসিয়াছে, কি জন এক এক গাছি লাঠা লাইয়াছে; তাইয় আপন আপন বাটার জন্ত কেহ পাঁচ, কেহ সাত, কেহ বা দশ গাছা লাঠা লাইয়াছে। গলাজল লাইয়া বাইবার জন্ত কত শত কাউর বিক্রের হইতেছে। আর'ছোট টুকরি সাজির আফুতি শত সহত্র স্থানে বিক্রের হইতেছে, তাহাতে বসাইয়া গলাজলের শিশা লাইয়া ঘার। আর সহত্র সহত্র বাক্তি আপন আপন বটাতে ৮গলালল তাহার স্থে টিনের এক এক চাক্তি বসাইয়া তাহাতে গালার ভরাট করাইয়া আটাইয়া প্রায় গৃহছের বত মন্থ্য ত্রীপুক্র বালক বালিকা বাহারা প্রজ্ঞে চলিতে পারে, সকলের হল্পে এক একটী করিয়া লাইয়া দেশ বাইতেছে।

টিন ও গালা নইরা বাজারে পথে ঘাটে মাঠে স্কল গলি গলিতে দোকান করিরা আছে। ফুকা নিশি ৮গলাজন লইবার ৰাষ্ঠ কত শত পোকান হইবা বিক্ৰম হইতেছে তাহার সংখ্যা হয় না।
আর ফুকা বেল, লঠন, গোলক লঠন, আইন বরণ, গেলাস, ভাড়,
বোতল ইত্যাদি বহু মত স্ত্রব্যাদির দোকান সাঞ্জাইয়া বিক্ৰম
ক্রিতেছে।

কাঠের বাক্স, সিন্দুক, চৌকি, কেণারা, টুল, ডেক্স, থক্সা ইত্যাদি আর আর নানামত খেলনা দ্রব্যাদির চিত্র বিচিত্র করিছা। দোকান সাজাইয়া স্থানাভিত করিয়াছে।

নানা দোলা স্থানে স্থানে বদাইয়াছে, এক এক প্রদা দিয়া তিন তিন পাক দোল ধাইতেছে। ইহাতে দিবারাত্র নিবারণ নাই।

হরণিড়িবাটের পশ্চিম অংশে পাহাঁড়ের নিকট পঞ্চাশ আনা ভেটিরারি লোকান কুরিরা তাহাতে ভাত রুটী থিচুড়ী তৈয়ার করিতেছে। যত মুদলমান লোক ধরিদ করিয়া ধাইতেছে। তাহাদের লোক ক্রাণ আছে—ইস্তক অর্দ্ধ আনা, নাগাইদ চারি আনা পর্যান্ত এক এক মন্থ্যের ধোরাক; বে বেমত ধাইবে ভাহার দেই মত দাতবা, ইস্তক শাক নাগাইদ মাংদের কালিয়া কোপ্তা কাবাব পর্যান্ত পার। বাহার যেমত কড়ি, তাহার তেমত আহার্যান্তবা।

মেলাতে নানা দেশের চোর ও উঠারগির নানারপ বেশ ধারণ
করিলা মন্থ্যগণের সমভ্যারে বাজারে পথে ঘাটে মাঠে এমণ
করিতেছে, যথন কাহাকেও গাফেল দেখে তৎক্ষণাৎ ভাহার
অব্যাদি লইরা প্রস্থান করে। বৈরাগী নাগা সন্ন্যাশীদিগের ভিতরে,
বেলার চোর ও তাহাদের বেশ ধরিলা, ভাহার ভিতর প্রবেশ
কৃষীচোর করিলা তাহাদের বাহা পার লইলা ঘার।
ক্ষেত্র বাহ্যথার, স্বার লহরের ধারে বাসন মাজিতেছে, বে পারে

বাসন থাকে, ভাহার বিপরীত পারে ডুব দিয়া ঐ সকল জিনিল লইরা পলার। এই মত কতরূপে চুরি করিবার পথ করে, ভাহা বুদ্ধির বাহির। বাহারা হরপিড়ির ঘাটে জলের ভিতরে চুরি করে, ভাহারা পুর্বে দেখে যে, কোন ধনাঢা ব্যক্তির ঘরের ত্রীগণ জলে নামিয়া লানোজোগ করিভেছে, ভাহার নিকটে চোর লানোজোগে থাকে। ঘেনন ভাহারা ডুব দের, চোর ও ভংকণাং ডুব দিরা ভাহার অলভারের মধ্যে যাহা পারে লর। হানে হানে পুলিশের আমলাগণ ভ্রমণ করিভেছে। জলমধ্যে এই মত চুরি করে, ইহাও স্থত করে। এই সকল চোরের শাসন জল্প গলিতে গলিতে থানা ঘাটা আছে, ভাহাতে হাড়-ভুড়ল আছে। বাহাকে ধরিতেছে, ভৎকণাং চৌকিতে লইয়া বাইয়া পারে হাড় দিয়া ফোলিরা রাথিতেছে; মেলার শেষ হইলে দশ দশ বেত মারিয়া ম্যাজিষ্টেট সাহেব থোল্যা দেন। মেলার সময় শত শত ব্যক্তি আশিবারণ।

পাহাড়ের মধ্যত্বলে সাহেবদিশের বস্ত্রাবৃত গৃহ নির্দ্ধিত ইইরা তাহারা তাহাতে থাকিত এবং ম্যাজিট্রেট ইত্যাদির কাছারি হইত। চারিজন ম্যাজিট্রেট কলেক্টর, কমিশনর, স্থারিপ্টেশুন্ট অব প্রিল্য এবং কেনেল ও কাপ্তেন সাহেব আপন আপন দলবল লইরা সর্ব্বের ঘটের ব্যব্দ্থা স্বর্ব্বির স্বর্ধনা হত্তী-উপরি আরোহণ করিরা ভ্রমণ করিত এবং হরপিছির ঘটে জলের উপরি হত্তী দাঁড় করাইরা, তাহার উপর থাকিরা স্ব্বিত বাটে জলের তদারক করা, বিশেষতঃ বেলা চারিলণ্ড থাকিতে নাগাইদ চারিলণ্ড রাতি প্রত্তিদিবদ

অভিশব ভিড় হয়, ঐ সময় পঞ্জাবী, মাড়োরারী, জয়পুরী, কাশ্মীরী, পুরবী দেশ সকলের মহুষাগণ স্থান করে এবং আপন আপন মাতৃ পিতৃ লাতৃ জ্ঞাতি কুটুছের মৃত অস্থি যে যাহা লইয়া আইনে, তাহা অর্পণ করে এবং গঙ্গাতে প্রাদীপ দেয়—এই সকল কারণ জন্ম অতিশয় গোলবোগ হইয়া হডাহডি হয়। এজন্ত ঐ বাটের প্রতি সিঁডিতে এক এক সিপাই, জলে সাহেব লোক হন্তিপৃষ্ঠে আরোহণ করিয়া থাকেন। হরপিড়ির ঘাটে জল অধিক থাকিবার চকুম নাই, সর্বতি ছই ফুট তিন দুট অল থাকিতে পারিবে; ইহার অধিক জল থাকিলে মহুষা দকল হড়াহড়িতে জলে পড়িয়া একের উপর আরু এক জন পড়িলে আন্মে চাপাত হইয়া মহুযোর ক্লেশ হইয়া বহু মহুযোর প্রাণনাশ হইবার সম্ভাবনা। একে গভীর গভীর হল তাহাতে অতিশয় প্রোত, এক্স লহরের কর্মাধ্যক সাহেব আপন সর্ঞাম ও্য ঐ স্থানে হাজির থাকিয়া জলের ভিতর বে সমস্ত থানা খনদ ডোবা ছিল, তাহা পাথর বারা ভরাট করিয়া একদা করাইয়া, তাহার উপর তিন ফুটের অধিক না হয় এমত রূপে জল চালান, অধিক জল হইলে অভ পথ খোলদা করিয়া জল নিকাশ করিবা দেন। এজন্ত স্থানে স্থানে লোক নিযুক্ত मारह ।

পূর্বপার পশ্চিমপার ছই মেজেইরের অধিকার। পূর্বপার জেলা বিজনৌর। পশ্চিম পার জেলা সাহরণপুর। এই ছই মেজেইরের কাছারি ছই আপন আপন অধিকারের মধ্যে। সাহরণপুর তেলার মধ্যে হরপিড়ির ঘাট। এ স্থানে অনেক্ বসতি, বাজার, কআল সহর এবং জলাপুর—বধার পাঙাদিগের বাস্থান। এই

হরপিডির ঘাট হইতে কঞ্চল পর্যান্ত তিন ক্রোশ পর্ব। ইতিমধ্যে অনেক ইমারত আছে। মধ্যে মধ্যে মরদান এবং কড়ি সহর। মধ্যে যে সকল বাটী আছে, তাহার এক এক ঘর একশত টাকা ভাড়া: বাহিরের রোয়াক দোকানের জন্ত ত্রিশ টাকা চলিৰ টাকা পঞাৰ টাকা। এই মত দৰ বাব হাত জাৱগাৰ ভাডা যেলার করেক দিবদ জ্ঞা। এ কারণে দক্ল ঘর ভাডা দিয়া দোকান করিতে কক্ষম হইয়া ঝড়ির উপর কেই ছাপর, কেহ পানি, কেহ টাটা বাদ্ধিয়া দোকানদার সকল দোকান করিল। তাহাতে ম্যাজিটেট সাহেব চকুম প্রকাশ করিলেন, 'ক্লডিতে যত দোকানদার যে কিছু জিনিসের দোকান করিয়াছে, ভাহার জায়গার ভাড়া ফি গল ছই টাকা দিসাবে দিতে হইবে। এই সংবাদে সকল দোকানদার অভিশব ছ:খিত হইরা বিজ-নোরের ম্যাভিটেটকে জানাইতে তেঁচ কমিশনর সাহেবের নিকট প্রছার পকে স্থারিপোট করিয়া খাজনা মত্রুপের আভ শ্বঃ শ্ৰম শ্ৰীয়া কৃতি ভূমির থাজনা মহকুপ করাইয়া স্কল বাক্তিকে পরম স্থা করিলেন। কডিতে যত মমুহা দোকানাদি করিরাচিল, কাহাকেও কোন রকমে এক প্রদা দিতে চুট্ৰ না।

গো, মহিব, হক্তী, ঘোটক, উট্ট ইত্যাদি অৱগণের আহারাদি জন্ত ভূবা, করব, ছোলা, চোকল, নেহরা ইত্যাদির রাশি রাশি তুণাকার করিয়া কুচির উপর কমবেশ একশত গোলা ছাশিভ হইয়াছিল। সর্ক্ষা প্রাম প্রাম হইতে দ্রব্যাদি আদিতেছে, তথাচ জুলান করিতে পারে না। প্রায় ছুই লক্ষ জন্তর প্রোত দিবস আহার দ্রব্য চাহি। কথন অবধি হরপিড়ির ঘাট পর্যন্ত পথে পথে গদ লইরা ভিক্লা করিতেছে, কোন গদ্ধর ঝুটার নিকট হইতে এক পদ, কাহারও ছই, কাহারও ভিন পদ ঝুটা হইতে বাহির হইরাছে; কোন কোন গদ্ধর পাছা হইতে এক ছই তিন পদ হইরাছে, এ সকল পদ অধিকত্ত। আর এক গাভী অভি আশ্চর্য্যদর্শন! তাহার ঝুটাতে ছই ধারে ছই জটা, পাছা হইতে আর ভিন পদ, জীচিহ্ন ছই, মলহার এক, ছই জী-চিহ্ন দিয়া প্রস্রাব্দ হয়। এই মত আশ্চর্য্য গদ্ধ আর কোথাও দেখা বার নাই। আর কত লাল নীল খেত পীত কাল শ্রামলা নানারর্ণের বিপরীত আক্তি-প্রকৃতির, শৃদ্ধ-লাক্লের বিপরীত ভাবের এরং অতি থকা থকা গাভী বহুতর সঙ্গেল

কথল নগরে দিগধরী, প্রমার্থী, বল্ডজী, মানাধারী,
নির্মানী, নির্মাণী, বিকুষামী, হন্মানওয়ারা প্রাভৃতি আধড়াধারীদিগের আধড়া আছে। তাহাতে ঐ সকল আধড়াতে
মোহস্তপণ আপন আপন গদিতে নিয় চেলাগণ লইয়া প্রতি
দিবদ কড়াই করিয়া, বহুলোক একত্র হইয়া, সকলে আহারাদি
করিয়া আনন্দে হংশী অভ্তক ব্যক্তিদিগের আহারাদি কয়াইয়া,
সর্মাণ আপন আপন ভজন-সাধনে ময় আছে। মানাধারী
কাথড়াতে চুইলত পরমহংস একত্র, আর
য়ার হানে হানে পরমহংসগণ আছেন।
সয়্যানিগণ পাহাড়ের উপরে বনমধ্যে দক্ষেম্বরে, বিশ্বক্রেরে,
ত্রিধারাতে, সপ্রধারার নিকটে নীলপ্র্তে, শুপ্তপ্রতে, আর
আর বৃক্ষমূলে সহস্র সহস্র ধুনি জালাইয়া আপন আপন
২০৫ (১৮)

সাধনে আছেন। কেহ এক পদে, কেহ ছই পদে দীড়াইয়া, কেহ উর্জবাহ, কেহ বা লোহকটক উপরে, কেহ পঞার্মি জালিত করিয়া, কেহ মৌনরতে, কেহ ফলম্লাহারে, কেহ গলিত পত্র ভূকণে, কেহ গোগ্রাদে, কেহ অ্যাচক হইয়া, কেহ বা ভাক-দুস্থরা-চরসে ময় ইইয়া, বিভৃতিতে ভূষিত হইয়া, দীর্ম দীর্ম জীটভার শিরোভূষণ করিয়া ভ্রনালে ময় ইইয়া আছেন।

নীলধারার চুইকুলে কভাল পর্যাস্ত স্পুধারাবধি ক্লডির উপরে থাকী, বৈষ্ণব, রামাৎ, নিমাৎ, গিরী, পুরী, ভারতী ইত্যাদি বৈষ্ণৰ সম্প্ৰদায়দিগের আসন হইয়াছিল। দশ হালারের ঝণ্ড ছইবে। ইহারা অযোধ্যা, জনকপুর, মিথিলা, নৈমিধারণা, তপোবন, কান্তকুৰ, বিঠোর, কদলীবন, পঞ্জাব, কাশ্মীর, বাঙ্গালা, উড়িষ্যা, ভলরাট, বোদাই, নাথহার, ঘারাবতী, কাঞ্চী, অবস্তী, জয়পুর, ভরতপুর, পোয়ালিয়র, মাড়োয়ার, বিকানীর, ফ্কলেপুর, ঝাসী প্রদেশের নর্মদা, আবু, গিরণার, লোহাগল, রামপুরা, কুশেনি, মণ্ডিদেপাটু, কুল দিম্লা এবং আর আর কত শত পর্বত ও বন হইতে সকলে আসিয়াছেন। আপন আপন ভক্ষ-সাধনে সর্বাদা মল্ল আছেন। ইহাদিগের সমভ্যারে আদ্বাব এক এক কুন द्रक्तु करिविष्टिछ। काश्रंद्र कार्ष्ट्रंद्र कोशीन, काश्रंद्र कूर्यंद्र, কাহার কাহার চিমটা, কাহার বা ছোট এক এক কুড়ালি সমভ্যারে আছে। বাঁহাদের সঙ্গে শ্রীমুর্তি শিলা আছে. তাঁহাদের পূজার বসনাধি কুদ্র কুদ্র আছে। অক্তরণ ভত্মরাশি, মন্তকে জটা সুশোভিত; ভূমিতে আসন, এক এক ধুনি অব-ব্যব্দ করিয়া আপ্ন ভজন-সাধনে স্কলে ম্র আছেন্। ইহার मर्था चानरक नाना भारतहे शिक्षकः देशिक्षित निकार द কৈছ যে কিছু আহারাদির জ্ববাদি উপস্থিত করে, তাহা সকলে বন্টন করিয়ু লর এবং আপনাদিগের ঝণ্ণ ভিন্ন অন্ত অক্ত অভ্যাগত কি হংগী ব্যক্তি, যে কৈছ নিকটে থাকে, তাহাদিগকেও দেওয়া হয়। এতি ইছোতে প্রতি দিবস এত জ্ববাদি উপস্থিত হয় যে, সকলে আহারাদি করিয়াও দাতব্য হয়, কেহ সঞ্চয় রাঝে না; সঞ্চয়ের মধ্যে ধুনির কাঠ, যাহা পর্বত হইতে শ্রম ঘারা আনা হয়। এই মত মনানলে থাকিয়ু কেবল হরেয়ছঃ গোবিন্দ নাম উচ্চারণ করিতেতে।

বে সমস্ত আগড়াধারী মোহত্তগণ আসিরাছেন, ইহাদিগের দিবা বড় বড় রাজা আমীর লোক সকল আছে। ইহাদিগের মানস মতে ধরচ ধরচা সকল দিয়া থাকে এবং আসবাব সকল রাজাদিগের দেওরা হস্তী, ঘোটক, উট্র, আশাশোটা, চামর, মোরছোল, আড়ানি অর্ণের (৩) রূপার মন্তিত, কাহার কাহার হত্তীর আমারি রূপার ভ্রুপ্ত মন্তিত, অর্ণথচিত বস্তু গলাদেশে পুছেন, কাহার অর্ণের কাহার রূপার আত্রবদ্ধিত, হত্তিগণ, ঘোটকগণের (৩) এক এক মোহস্তের আট, দশ, বার নিশান সম্ভ্যারে। এক এক নিশানের মূল্য হাজার টাকা অবধি পোনর শত টাকা পর্যান্ত। এই মত আসবাবে এবং এক এক মোহস্তের সমভ্যারে হাজার, বার শত, পোনের শত, ছই হাজার, কাহার বা ইহার অধিক চেলাগণ সমভ্যারে আছে।

যত্ত্ব মহুষ্য কুন্তের মেলাতে হরিছারে হরপিড়ির ঘাটে মান জাত একজ হইরাছে, গোলামী, সন্ন্যাসী, অবধৃত, বৈষ্ণব, রামাৎ, ক্রন্ধচারী, দণ্ডী, পরমহংস, পরিপ্রাজক, আধড়াধারী ইহাদিগের পরম্পর প্রথম মান জাত্ত্ব, এবং নিশান—বাহাকে কণ্ডু বলে, ভাহা

অগ্ৰ পশ্চাৎ লট্ডা বাটবার বিবাদ করিয়া, নিশান অগ্ৰে লট্ডা বাটবার জন্ত প্রাণ পর্যান্ত সংখ্যা করিয়া উভয় দলে বিবাদ হইরা বছ প্রাণী নষ্ট হইত। এইরপ আচার প্রার সকল কুপ্তের মেলাতে হইরাছে। এক্স এই কুল্ডের মেলার পূর্বে গবর্ণমেণ্ট হইতে আদেশ হইরা-ছিল বে, কেই শল্পধারী ইইয়া, কি অগ্নিময় বাণক্ষেপণের বন্ধ লইয়া, কি বাহাতে মুমুষ্য আহত হইতে পারে এমত বস্তু লইয়া, মেলাম্বল বার ক্রোশের মধ্যে প্রবিষ্ট হইতে পারিবে না। তৎকারণ চক্রব্যুছের ভার মেলার স্থল করিয়া চর্গে চর্গে রক্ষকগণ নিযুক্ত ভিল। এজভ সকলে নিরম্ভ হইয়া আসিয়াছে। নাগাগণ অন্তত্যাগ করিয়া আসিতে हरेर विनुषा ভाराता श्रीवृत्तावरन कृतलात्तत स्मना कतिता. আছি জগলাথ দেবের নৃতন কলেবর দর্শনার্থে গমন করিবার উল্লোগে ছিল। কোম্পানি বাহাচরের কর্মকারক সকলে বিবেচনা क्रिका, तक तक (गांगाकि, मजानी, मखी, भत्रमहश्म ७ देवकव, कांब्र হরিয়ারের পাঞ্চা এবং নানা দেশের পত্তিভদিগের সভা করিয়া বিচার করাইয়া দ্বির করিবেন যে, এ তীর্থে কাছার অঞা মান এবং বত রক্ষ উলাগীন আছেন, তাথার মধ্যে কাহার মাল আহিক। . ইহাতে সকলের বিচারে এই সিদ্ধান্ত হইল বে, গোসাঞি মোহস্ত-দিগের অগ্রে স্থান, এ তীর্থে গোদাঞিদিগের স্থানে স্থানে অনেক কীর্ত্তি আছে, ভাহাদের সন্মান অগ্রে, পরে ক্রমে ক্রমে সান : ভাহার विस्मय कात्रन धारे मनीरिन वर, रेज्यभूवर्स बामन वरमत करूत कर

বার কৃষ্ণ হইয়াছে এবং থাণশ কুছের পর
বে কৃষ্ণ হর তাহাকে মহাকৃষ্ণ বলে, কৃষ্ণ
বলিবার কারণ এই বে, বৃহস্পতি কৃষ্ণ রাশিত্ব বংগীর হন,
ঐ কুম্বরাশিত্ব বৃহস্পতিতে মহাবিষ্কুবসংক্লাতির সঞ্চার বে সময়

হয়. সেই সময় হরিছারে হরপিডির ঘাটে সান হয়। এই সময়ের 'লান জ্ঞানানা দেশের মুফুয়ুগণ একত হইয়া মেলা হয়, তাহাতে পূর্ব পূর্ব কালে ধবন এমত মেলা উপস্থিত হইয়াছিল, তাহাতে গোদাঞিগণ আপন আপন নিশান লইয়া লান করিয়াচেন: তাহাতে কৈছ আপত্তি করিয়া নিবত্ত করিতে পারিত না। এই গোমাজিদিগের সমভাারে অস্তধারী নাগাগণ অনেক থাকিত। তাহারা অগ্রে স্নান জন্ম প্রাণ প্রয়ন্ত পণ ছিল। তাহারা রাজার দৈল, মহাবল পরাক্রম<sup>শ</sup>শালী, এজন্ত কেহ তাহাদিগকে জয় করিতে পারিত না। এই সকল পুর্বে বৃত্তান্ত শ্রুত হইয়া গোসাঞিদিগের অতাে লানের বিধি করিয়া আর আর মত উদাদীন আদিয়াছেন, সকল স্থানে কোম্পানি বাহাছরের তরফ হইতে চৌকিতে লোক নিযুক্ত হইল—কেহ বিনামুমতিতে সান করিতে ঘাইতে পারিবে না। এই তুকুম কেবল উদাসীন প্রতি। স্বার স্বার বত যাত্রিগণ লানাকাজ্জিত ভাহারা বে°যখন লান করিবে ভাহাতে গ্রথমেণ্টের কি উনাদীনদিগের আপত্তি নাই। কোম্পানি বাহাছরের দিপাহীগণ গোসাঞি প্রভৃতি উদাসীনদিগের চতুঃপার্ম বেষ্টিত করিয়া রহিল। এখানে হরপিড়ির ঘাটের এমত বন্দোবস্ত করিল যে. বাজার হইয়া সদর যে পথ তাহার তিন স্থানে বাঁশ বাদিয়া তিন ঘাট করিল, ভারার এক এক ঘাটতে আট জন করিয়া জন্মী সিপাহী পথ ক্র করিয়া আছে। বাজারের পশ্চিম পাহাড়ের ধার হইরা বে পথ আছে, ঐ পথ হইরা আসিরা ঘাটের উত্তর-পশ্চিম দিয়া যে পথ আছে. ঐ পথ দিয়া ঘাটে আসিতে হয়। স্থান করিয়া ঘাটের দক্ষিণ দিকে বে নৌকার হৈত্ত আছে, তাহাতে পার হইরা, ক্রডির ধারে ধারে বে পথ আছে ঐ পথে আদিয়া সর্ব্ব দক্ষিণে যে নৌকার ছই পুল আছে, তাহাতে পার হইরা আপন আপন স্থানে গমন। মধ্যন্থিত ব্যক্তিগণের মধ্যে মধ্যে পথ আছে; বেখানে বে পথ আছে, তাহাতে চুই ছুই রক্ষক আছে। হরপিড়ি-বাটে প্রতি দি'ড়ির ছুই পার্বে ছুই জন সিপাহী, উপর চাতালে একশত সিপাহী, রান্তার মুথে এক এক হাওলদার (ও) পাঁচশ পাঁচশ সিপাহী, জলের ধারে ধারে একশত সিপাহী এবং জলের মধ্যে কাপ্তেন (ও) বিজনৌরের মাজিটের এক হন্তীতে এবং ক্লক্ষেত্র, থানেবর ও কড়কির মাজিটের তিন জন তিন হন্তীতে এবং আর আর সাহেব লোক ও লহরের স্থারিটেটিত খেণ্ট সাহেব ও আর আর আমলাগণ এক এক হন্তীতে আরোহণ করিয়া জল মধ্যে স্থানে স্থানে বৃহ স্থাপিত করিয়া মস্ব্যাদিগের হিতার্থে বাঁথিলেন।

জ্জী সিপাহীদিগের মৃদ্ধের বেশ নহে, এক এক ধৃতি পরা, কোর্তা গারে, সালা টুপী মাধার, বাশের লাঠি হাতে, এই মত বেশে সকল লোকের রক্ষার্থ ভ্রমণ করিতেছে; কাহারও ক্ষণমাত্র বিশ্রামের সময় ছিল না।

মানের সমর আপত্তি ইইরা, বিবাদ না ইইবার জন্তু এমত
মুর্ক্তি করিল বে, পরম্পার কাহার সহিত কাহার পথমধ্যে, কি
রোগাদিগনের ঘাটে সৃন্ধান ইইবার সংবোগ রহিল না।
মানবারা প্রথম গোলাক্রিদিগের মান। গোলাক্রিদিগের মধ্যে প্রধান শ্রবণানন্দের গদি। প্রথমে শ্রবণানন্দকে
মান করিতে আনিলেন। সাহরণপুরের খোদ মাজিটের ও ফার্থেন
সাহেব অগ্রগামী হত্তী আরোহণে একশত সিপাহী লাটি হাতে,
সুলিশের পদাতিকগণ পদব্রজে, অগ্রপশ্চাতে লোক ভফাং, করিতে
করিতে লাটি কিরাইতে কিরাইতে চলিল, ভন্মধ্যে গোলাক্রিরের

সমভ্যাবে চল্লিশটী উট, একশত সভয়ার ঘোটকের উপর, বার ·হন্তী, হন্তীর উপরে তাদের নিশান, গোদাঞি যে হন্তীতে আরোহণ করিয়াছেন, তাহার ক্লার আমারি, অর্থচিত ঝল, ভণ্ডে অর্ণ-মণ্ডিত, গলদেশে পুচ্ছে রূপার তবক ইত্যাদি আভরণ, আমারি উপরে প্রবণানন্দ মোহস্ত, ছই পার্শ্বে ছই খেত চামর, রূপার দান্তি, এক কারচোবের ছত্তি, রূপার দান্তি শিরোপরে, আশাশোটা, পঞ্জা, বল্লম, পঞ্চাশ আডানি, মোরছোল এই সকল আসবাব। অপ্রে উটের উপর (ও) ঘোড়ার উপর ভঙ্কা এবং তাদা কাড়া বাস্থ আছে। এই সকল অত্যে অত্যে বাল্পখনি, পরে হাজার এগারশত চেলা সমভাারে এবং ছই শত প্রমহংস, একশত দণ্ডী ও অপ্রাপর অভ্যাগত বাঁতীতে কমবেশ এক হাজার সমভ্যারে স্থানশব্দ বাতা করিয়া, নগরের পশ্চিম দিক হইয়া, পর্বতের পর্বধার দিয়া বে পথ আছে, ঐ পথ হইয়া বরাবর আদিয়া পর্বন্ধে যে পথ আছে, ঐ পথ দিয়া হরপিড়ির ঘাটে প্রছিয়া, জলে নামিয়া প্রথমতঃ নিশানকে ঐ ঘাটের জলমধ্যে বাল্যধ্বনি করিয়া আরতি করা ছইল ৷ 'পরে ঐ নিশানকে সপ্রবার পরিক্রম করিয়া সকলে স্থানাদি করিল। স্থান করিবা মাত্র উক্ত সাহেবগণ আপন আপন পদাতিকগ্ৰন্থমভাারে ঐ সকল ব্যক্তিকে নৌকার পুলে পার করিয়া नीनधातात निकार कुछ हहेबा (र अर्थ नहातत थात थात आह. ঐ পরে আদিয়া ভিতীর পূলে পার করিয়া পুন: পশ্চিমপারে আদিয়া. পশ্চিম মুখে বে পথ আছে, তাহাতে আসিয়া চৌরান্তাতে উঠিয়া ষাহার°বে স্থানে আথড়া, তাহাকে সেই স্থানে প্ছছাইয়া দিল।

এই মত গমনাগমনের প্রথা করিয়া রাজপুক্ষেরা সকলে সদলে সমস্তারে থাকিয়া ক্রমে ক্রমে বার গোসাঞি, মোহত্ত (ও) আথড়া-

ধারীদিগকে পূর্ব্বোক্ত পথ দিয়া আনিয়া উক্ত রীতিক্রমে সকলকে ম্মানাদি ক্রিয়া সমাধা করিল। বার আথডার মোহস্তের কাহার আসবাব নিশান, হস্তী, ঘোড়া, উট, আশাশোটা, চামর, মোরছোল रेजानि आज़िन, श्रवा काशांत्र कम नत्र, वतः श्रवतारवेत वनज्जी আপড়ার গোদাঞিয়ের সমভাারে এগার হস্তী ও হস্তিনী আছে। ইহাদিগের গমনকালে দেখিতে কি শোভা, ভাহা এক মুখে বর্ণনা করা যায় না। গোসাঞিগণ হন্তী আরোহণে ছই পার্মে খেত চামর মোরছোলের ব্যজন, শিরোপরে ছত্র এবং অপরাপর আসবাব স্কল অগ্রগামী শোভাযুক্ত চেলাগণ ঘোর তপস্থী নানারঙ্গে শোভা করিয়া ষাইতেছে। রাজপুরুষেরা অগ্রপশ্চাতে, পদাতিকগণ অগ্রে অগ্রে মনুষ্যগণকে অন্তর করিয়া পথের ভিড় ঘুচাইয়া অত্যে অত্যে ধাইতেছে। এই মত সকলকে ক্রমে ক্রমে স্নান করাইতে প্রায় দিবা ছুই প্রহর হুইল। এখানে সন্ন্যাসিগণ ও বৈফবগণ মহা-কোপায়িত হইয়া সকলে আপন আপন 45মটা ও কড়ালি এবং धूनित कार्ष्टित ज्ला कुंना लहेगा मुख्यत (वर्ष्ण थाको देवक्षवन्न উঠিল। ভাহাদিগকে কাপ্তেন সাহেব এবং বিজ্ঞােরের মান্সিটের অনেক স্তৃতি করিয়া কহিলেন বে, "দেখ ভোমরা সকল স্থুখ এবং शृहधर्ष ७ काम ब्लाध लाज मार मन मार्गर्श পরিত্যাগ করিয়া, শিরেতে জটাভার শিরোভূষণ করিয়া, ভক্ষরাশি অঙ্গভূষণ করিয়া, মৃত্তিকাতে ভূমিশয়া, হস্ত বালিশ, অঞ্জলিতে জলপান করিয়া, গ্রীয় বর্বা শরং হিম শিশির বসত্তে নিরাশ্রমে অবাচক হট্যা ভগবং-পদার্বিন্দ পাইবার আশার কেবল অগ্নি অবলম্বন কবিরা উপক্রা ক্রিতেছ এবং তৎহেত্তে তীর্থল্লন ও তীর্থলানাদি; টেহাতে তোষাদিগের এত ক্রোধ করা সম্ভব হর না। অতএব আমাদের

প্রতি দরা প্রকাশ করিরা কোধ সম্বরণ করিরা আবান আবানে উপবিষ্ট হউন। আমরা উত্তমক্ষপে তোমাদিগকে সান করাইয়া আনিব।" এই তাবস্ততিযুক্ত রাজপুক্ষদিগের বাক্য শ্রুত হইবা মাত্র সক্শে হত্তের যুদ্ধের দ্রুবা হস্ত হইতে কেলাইয়া আবান আবান বিদ্নেন। বৈজ্বগণের রাগ শান্তিমাত্রে তৎক্রাথ রবাল বিউপলে ক্ক দিবামাত্র যুদ্ধের সৈভাগণ সজ্জীভূত হইয়া ঐ স্থানে উপস্থিত হইল। তাহাদিগের প্রতি আদেশ হইল ধাকীদিগের চতুস্পার্শ্বে ছিক্রুহ স্থাপিত করিয়া নধাস্থলে ইহাদিগকে রাধা। বৃহত্ব বাহির বিনাস্মৃতিতে না যাইতে পারে। সৈভগণ তহক্ষণাথ তাহাই করিয়া রাধিল।

ধাকী বৈহ্ণব সম্প্রদায়দিগের এই মত আবদ্ধ করিরা কাপ্তেন ও মাজিটের আপন দলবল লইরা যথার যথার সন্ন্যাসিগণ আছে, গ্রাানিগণের লানবারা তাহাদিগকে একত্র করিয়া সকলকে সান কল্প পূর্ব বেমত পথে গোসাঞিদিগকে লইরা সান করাইয়াছে, সেই পথে সন্ন্যাসীদিগকে লইরা স্নানার্থে গমন করিল । সন্ন্যাসীদিগের শিষ্য অনেক রাজা এবং ধনাঢ্যগণ আছেন । ইহাদের স্নানে বাইবার আসবাব কল্প হত্তী, ঘোটক, উট্র, আশাশোটা, পল্লা, চামর, মোরহছাল, আড়ানি ইত্যাদি যত রাজপরিচ্ছদের ক্রবাদি এবং সৈল্পগণ অগ্রপশ্চাৎ শৃত্ধলামত, গদিয়ান সন্ন্যাদিগণ হত্তিপৃঠে আরোহণ করিয়া স্নানে বাত্রা করিলে পর সমৃত্যারে কমবেশ পাঁচ হাজার সন্ন্যাসী, মস্তকে ক্রটান্ডার বিভৃতিভূবণ, স্ক্রোক্ষ-ফটিক পন্ম গীঞ্রের মালা ধারণপূর্ব্বক, কাহার ক্রিটিডটে কৌপীন লাল রক্ষের—উপরে বহির্মাস, কাহার দোহ কি পিতলের শৃত্ধল কটিবেটিত কাঠের কে) বিল, কেছ কেছ

উলক্স- গাঁজা চরস ভাক ধুজরাতে চকু চুলু চুলু-সকলে শিবাক্তি ছইয়া "হর হর গলাধর, বম্ বম্" গালবাজ্ঞ করিয়া রকে ভলে লানে গমন করিতেছে—দেখিতে কিবা শোভা ভাহা কহিতে পারি না! কত শত্ত উর্লাহ অবধৃত মৌনরতী অনেক সম্প্রদার ঘোগিবেশে শিলা ভত্ব লইয়া হরগুণাহ্বাদ কীর্ত্তন করিতে করিতে গমন (করিতেছেন)। পূর্ব্বোক্ত পথে রাজপুরুষগণের সমভ্যারে হর-পিড়ির ঘাটে আসিয়া লান করিয়া পুল হইয়া পার করাইয়া পুন: পূলে পার করিয়া পশ্চিম পারে আনিয়া, যাহার যে আসন ভগার ভাহাকে পছছিয়া বিয়া, পরে থাকী বৈক্তবৃদিগের লানার্থে লইয়া যাইল। সকলে হরপিড়ির ঘাটের পূর্ব্বগরে নীল্ধারার নিকটে ছিল, একারণ ঐ সকল সাধুগণকে ক্তির রাভা হইয়া হরপিড়ির ঘাটে লান করাইয়া পুনর্বার পার করাইয়া তাহাদের আসনে ঐ সকল বাজিন্দিগকে প্রভাইয়া রাজপুরুরগর আপন আসন প্রাতিক্রণ সমভ্যারে ক্ষান থাইয়া রাজপুরুরগর আপন আসন প্রাতিক্রণ সমভ্যারে ক্ষান থাইয়া বালগণের লান জল্ল ভরিরে রহিলেন।

প্রথমতঃ বিকানীরের রাজা লানে বাজা করিবেন। রাজার সমভাারে জিশহাজার বোক। প্রথমে ঘোড়ার উপর ভঙা, বিকানীর-রালের তাহার পর উটের উপর ভঙা, তাহার পর লানবার। বাব নিশান গুই শত, তাহার পরে বাসংগ্রাস, তাব ভাল স্থলতানী বনাতে কার্চোবের কর্ম্ম, তাহার গুই শত মর্ব ক্ষম, পরিল পঞ্চা, বল জ্ঞা, বল জাবার জাবার জাবার বাবার ক্ষম করিবের কর্মের করিবের করেবের করিবের করিবের করের করিবের করিবের করিবের করেবের করেবের করেবের করেবের করেবের

ত্রিশ হতী স্থদজ্জিত পঁচিশ ঘোড়স্ওয়ার অল্লেধারী মায় বন্দুক রাজার অগ্রপশ্চাৎ আর হুই পার্যে রক্ষার্থে আছে। কাথেন ও মাজিটর সাঁহেব আপন পদাতিকগণ সমভ্যারে লইয়া অঞা অঞা লোকের ভিড় ঘুচাইয়া দিভেছে। এইরূপে গমন, করিয়া সহরের পশ্চিম দিকু হইয়া যে পথ দিয়া আর আর সকলে স্নানার্থে আসিয়া ছিল, সেই পথ হইয়া রাজাকে স্নান জন্ত আনিয়া হরপিডির ঘাটে মান করাইয়া, কুশাবর্ত্তের ঘাটে পিওদান করাইবার জন্ম আনয়ন করিল। রাজা ঘাটে প্ছছিয়া আংকাদি করিলেন। নয়দের দোণার নয় পিওদান, এক হস্তী মায় আসবাব, আর ভাল এক ঘোড়া, স্বর্ণের কড়া, মোতির মালা, হীরার অঙ্গুরি, শালের জোড়া, মূলতানী জোড়, পাগ দোপাটা (৩) হাজার মোহর দক্ষিণা দিয়া আপন পাণ্ডাকে তাবং দ্রবা দান করিয়া ভক্তারামার উপর উঠিয়া যাত্রা করিলেন। রাণীগণ চতুর্দোলে উঠিলেন। তক্তারামার যোল খার রূপার নির্মিত, "ঘর্ণখচিত বস্ত্রাদিতে স্থশোভিত, আর চতুর্দোলে স্থলতানী বনাতের উপর কারচোবের কাল করা উত্তম ছেরাটোপে ছেরা; বাঁশে দোণার মুখ, উপরে দোণার কলস। এই মত চারি চতুর্দোলে চারি রাণী আর সমভাারী সকলে হস্তি-প্রষ্ঠে—এই মতে সকলে কুশাবর্ত্তের ঘাট হইতে উত্তরদিকের পুল পার হইয়া গলার পূর্বে পার নীলধারার পশ্চিম দিয়া যে পথ, তাহা দিয়া আসিয়া দকিলের পুল দিয়া পশ্চিম পার হইয়া, কঝল ঘাইবার চৌরাহে পছছিয়া, তথা হইতে কাঙ্গালীদিগের দান জ্ঞা সিকি আধুলি টাকা ফেলিতে ফেলিতে কৰাল প্ৰ্যান্ত প্ৰছিল। এই মত জ্ঞান ক্রমে রাজাদিগের মান দান কর্ম স্মাপন করাইতে প্রায় রাত্তি এক প্রহর পর্যান্ত সম্পূর্ণ মেলা ছিল। ঐ দিবস ছরিছারের

মধ্য রাজ্যার বাজ্ঞার বন্ধ ছিল। ঐ বাজ্ঞারে কাহার জ্ঞার বিজ্ঞার ঐ

দিবস হর নাই। রাজপুক্ষগণের কি পর্যাক্ত প্রমান অবং জনাহারে
ক্রেশ তাহা বলিতে পারি না। ইহারা এক পরিপ্রমান করিরা ঐ
সময় মানের এমত বন্দোবক্ত না করিলে কত শত মহুবার প্রাণদ্ধ হইত তাহা বলা বার না। এমত রূপ বন্দোবক্ত করাতেও

মহুবার ভিড়ে কত শত মহুবার সর্কিগ্রিমি ইইয়া মৃতের ভার

হইয়াছে। যে স্থলে যাহার সর্কিগ্রিমি হইয়া মৃতের ভার

হইয়াছে। যে স্থলে যাহার সর্কিগ্রিমি হইয়াছে, তৎক্ষণাৎ তাহাকে
তথা হইতে উঠাইয়া অভা হানে লইয়া তাহার স্থত্বিরের বারার

মহুকরা, তজ্জভালোক এবং চিকিৎসক নিবুক্ত ছিল। এই মতে
সংক্রাভি দিবদের মান সমাপন হইল।

সংক্রোস্তিতে ঘটোৎসর্গ হরিষার, কিন্তু তথাকার পাণ্ডাগ্র মন্ত্রাদি জানে না—মানসে জলদান হইল।

এই মেলাতে ত্রীল কালীধামবাসী ত্রীযুত শিবরতন বাবু, বিনি
ত্রীলবিষেশরের গোমন্তা, তাঁহার সহিত মিলন হইয়া একত্রে পাকা
এবং উত্তরাধণ্ডত্রমণ হয়। শিবরতন বাবু কালীবাবুর কালীধামের
দর্শনে পাণ্ডা, বাহাদিগকে বাত্রাওয়ালা বলে, ইহারা লক্তরপুণার
সেবাধিকারী, অতি সং বাক্তি, সর্ব্ধ প্রকারে সকল বিবরে সহতা
আচে, দাতা, ভোক্তা, দয়ালীল, স্থণী। এ ব্যক্তি লাভুসক্তে কলহ
করিয়া বিবরে বিয়ায়ী হইয়া তীর্থল্রমণে বাহির হইয়াছেন।
ইহার লাভার নাম বিহারী। তেঁহ লবিষেশরের পাণ্ডার দেওয়ান,
সকল কর্পের ভারাপণি ভালক কন্ত লাভুবিরোধ।

সন ১২৬২ সাল ১ বৈশাখ

হরপিড়ির ঘাটে লান তর্পণ (৩) নগর শ্রমণ। এই ছতিভয়ালা ২১৬ রাজা দশহারার লোক সমভাবে ৮ সানে এবং কুশাবর্তের **ঘাটে**আদ্ধাক করিতে আইদে। রাজ-পরিচ্ছন উত্তমরূপ, সমভাবে রাজপুরুষগণ, পদাতিকগণ পুর্বমিত শৃথানাতে সান ও আদাদি করাইরা
কলাপুরে রাজার ডেরা ছিল, তথার প্রছিয়া দিল। রাজা ব্যরভূষণ বিধিমত করিল।

# - রা বৈশাথ— ৭ বৈশাথ পর্যান্ত

খ্রীত স্নান তর্পণাদি করিয়া হরপিড়ির ঘাট হইতে ক্ষান নগর প্রায় ভ্রমণ। ক্রমে মেলাভাঙ্গিল। আমরা আক্রম-ভতীয়া এবং শোমমতী অমাবভাতে সান জী ছিলাম এবং সাধ্যণ সকলে ছিল, पाकानमात (केर पाकारनत छक्ष करत ना, क्वन गृहेंश-याजिशन অনেকে ছিল না। শোমমতী প্রাপ্ত অর্দ্ধিক ছেলার অধিক ছিল, রক্ষকগণ সকলেই ছিল। শোমমতীর স্থানান্তে অনেক অনেক সাধু শ্রী ৮ জগরাথ দেবের নৃতন-কলেবর দর্শনে, গোস্বামী মোহস্ত অনেকেই ষ্ঠাগ্ৰহণ হৈচাটে হইবে তজ্জ্ঞ কুৰুক্ষেত্ৰ তীৰ্থে, কেহ বা গ্ৰহণে দান জ্ঞা ৮কাণীতে, কেহ কেহ তণোবন দর্শনার্থে, কেহ বা কেদার-নাথ (ও) বদরীনারায়ণ দর্শনার্থে উত্তরাথণ্ডে যাত্রা করিল। দোকান-দারগণ আনপন আবাপন অংদেশে যাতা করিল। এই মত মেলার ভঙ্গ হওয়াতে কোম্পানি বাহাছরের যে সকল কর্মকারক সাহেবগণ এবং পল্টন ছিল, সকলে আপন আপন স্থানে গমনোজোগ করিয়া গোহরত দিল যে, "যে কেহ মেলাতে যাত্রী কি দোকানদার আছে. সকলে এ স্থান হইতে প্রস্থান কর। তবে যদি কেহ থাকিতে ইচ্ছা কর, তবে আপন দ্রব্যাদি সাবধানে রাধিবে। সরকার হইতে চৌকি-পাহারা থাকিবে না ; ইহাতে কাহার কিছু ক্ষতি হইলে, সরকার

(4¢)

দারী হইবে না।" এই দোহরত দিয়া ৬ বৈশাধ রাত্রি ছই প্রহর চারি ঘণ্টার সময়ে কুচ হইল। বে সমস্ত ঘাদের নৃতন ঘর বাড়ী হইরাছিল, যে যথন যে ঘর হইতে উঠিল, তাহার পর সে ঘর জালাইরা দিল। এই প্রকারে সকল ঘরে অগ্রি দেওরাতে অগ্রিমর ক্ষেত্র হইল। ঐ রাত্রি শশবাক্ত হইরা থাকিতে হইল। সকল মেলা ভঙ্গ হইরা গেল।

• বৈশাধ আমাদিগকে হরিছারে থাকিতে হইল। বেলা তৃতীয় প্রহরের পর বৃষ্টি আরম্ভ হইরা অভিশয় ফল ও বাতাদ হইতে লাগিল। মাঠের মধ্যে গঙ্গার তীরে ঘাদের ঘরে থাকিয়া যত সুখভোগ করা হইল, বন্ধাদি ওছ রাধা কঠিন হইল, সকলে এক এক কম্বল ক্রেয় করিয়াছিল, তাহা আছোদনে রাত্রি অভিবাহিত হইল।

# হরিদার হইতে বদরীনারায়ণ

## ৮ বৈশাৰ

প্রাত:কালাবধি অভিশয় ঝড় বৃষ্টি, তথাচ প্রাতে উঠিয়া ঐি⊌ কেলারনাথ ৩০ তী⊌বদ্বীনাবায়ণ দর্শনার্থে যাতা করিলাম। সমভাবে ছই ঝাগান, তিন কাণ্ডি: কাণ্ডিতে আদবাব, ঝাপানে সওয়ার। ঝাণান চৌকি আকৃতি, তাহার উপরে ছত্রি বাঁধা; চারি থুরাতে ছই লম্বা বাশ কিম্বা কাঠের রলা বাধা। তাহার ঐ ছই বাঁলে দড়ি দিয়া একটি থাদি বাঁল ছই হাত আলাজ ছই মুখে, ঐ বাশ দড়ির সঙ্গে মোড়া দিয়া তাহাতে এক এক মেক আঁছে। ঐ মেকেতে দড়ির জোর থাকে। ঐ ছোট বাশের ছই মুথে ছই অবন করিয়া, এক এক ঝাপানে চারি জন করিয়া বাহক। ঝাপানের উপর একল্পন মামুধ ব্যিয়া থাকিতে পারে, হাত কি পা মেলিবার স্থান নাই। কাণ্ডি-- বাহাতে দ্ৰুৱা সামগ্ৰী এবং একজন মনুষাকে লইয়া যাইতে পারে। কাণ্ডি বালের চেরাটীর ঘেরা বুনার ছায়. নীচের তলা বুনা, উপরের মুখ খোলা। ঐ কাণ্ডির ভিতরে জব্যাদি আর তাহার উপরে লেহাপ তোষক কমল দিয়া কসিয়া লয়। ঐ যন্ত্র পৃষ্ঠে করিয়াবহন করে, তাহাতে হই রজজু আনছে। ছই হাত গৰাইয়া, ছই কলে ছই মোটা রক্জ থাকে, আনর এক রক্জ কপালে বেড় কাহার থাকে, কাহার থাকে না। বে কাণ্ডিতে মহুষ্য লইয়া ধাঁয়, তাহার বাড়কাটা বেমত বড় মোড়ার ভায়, উহার ভিতরে अवामि निषा উপরে বদাইয়া পৃষ্ঠে করিয়া লয়। ছই জনার মুখ ছুই দিকে, পিঠ একত্রে; সওয়ারের কোমর বেড়িয়া এক

কাপড় দিয়া বাহক আপন বুকের সহিত বন্ধন করে। কাণ্ডিওয়ালা-দিগের এক এক ছোট লাঠির মাথাতে তক্তা দেংভয়া আছে, তাহাতে অবলম্বন করিয়া শ্রম দূর করে।

এই মত বড'লাঠি ঝাপান ভয়ালাদিগের আছে। ঐ লাঠিতে আশ্রম করিয়া কাঁধ বদলাইয়া ঝাপান, কাণ্ডি (ও) দাণ্ডি সকল জাতিতে বহন করে। ইহার বেতন চক্তি করিয়া লয়, জ্যীকেশে টেরির রাজার তরফ লোক বৈদে, ভাহার নিকট ফুরাণ হয়। স্বীকেশ হইতে কেদার-বদরীনারায়ণ দর্শন করাইয়া মেল্টোরিতে প্রভিবার ভাষা এক এক ঝাপান ৭৫ টাকা। কাগ্রিতে যত দ্রবা লইবে তাহার প্রতিমণ ২০ টাকা এমত নিরুপিত করিয়া গ্মন হইল। শীয়ত বাবু কালী প্রদাদ খোষ সন্ত্রীক ছই জনে ছই ঝাপানে, ৰাকী সকলে পদৰক্ষে। শ্ৰীয়ত শিবরতন বাবাও ভোলানাপ মুখোপাধ্যায় ও রামচরণ চক্রবতী ও নবক্ষ চটোপাধ্যায় ও মুখোপাধ্যারের মাতা ও জ্যেষ্ঠ বধু, বাবুর পুরোহিতের বধু, তৎক্সাকামিনী—ছয় বংসর বয়:ক্রম, আনর কালীবাবুর জ্ঞাতি-ক্সা পিদী-স্বাদী, দেওয়ান নলকুমার বস্তুর ভগিনী বিশ্বপারা ও কালালী নাপিতের ভগিনী, চাকরাণী চীমনা, চাকর রাম্চরণ, উপাধ্যায় ও ফতে ছই দারোয়ান, শিবরতন বাবুর চাকর রামধন भात तुलावनवातिनी ठाद्रिक्स वात्रानी छोलाक - এই सकलाब সমভ্যাবে আমাদের উত্তরাধতে গমন। তদ্বাদে যে স্কল স্মভ্যার ছিল তাহাগা রন্দাবন যাতা করিল। আনরা বাসা হইতে বাহির ছইয়া অবধি যেরূপ বৃষ্টি হইতে লাগিল তাহা কি কহিব। সকলে কম্বলের মুগী করিয়া তাহা মুদ্ভি দিয়া পদক্রেক গমন করিতে ক্রিতে জোশ বাইয়া এক কুদ্রগ্রাম পাওয়া গেল, কিন্তু তথায়

থাকিবার স্থান নাই। অনেক যত্তে তথাকার চৌকিদারকে আনাইরা ঐ গ্রামের মধ্যে এক ছোট বর পাওরা গেল, তাহাতে কেবল দাঁড়াইরা থাকিরা জল নিবারণ করা হইল। ক্ষণেককাল বাদে কিঞ্ছিৎ রৌদ্র হইল, তাহাতে কাপড়াদি, সকলে তথাইরা লওরা গেল। কিন্তু ঐ গ্রাম প্রবেশ সময়ে শিবরতন বাবু আপান ভ্তা সমভাবে তথা হইতে অগ্র-পশ্চাৎ হইরা অগ্রে গমন করিরাছিলেন।

আমরা জল বাতাঁদ জন্ম গ্রাম মধ্যে ছিলাম। পরে দেবতার

থোলসাহইলে পর আমরা সকলে ঐ গ্রাম হইতে ছয় ক্রোশ হুবীকেশ, তথায় গমন করিলাম। ঐ স্থানে শ্রীরাম লক্ষণ ভরত শক্তম-এই চারি দেবালয় চারি স্থানে আছে। তাহার মধ্যে লক্ষণ ঠাকুরের যে মন্দির ঐ স্থানে, লাহোরাধিপতি সহীকেণ রাজা রার রণজিৎসিংহ মহারাজা বাহাতুরের ধর্মশালা, ঐ বাটীতে থাকিবার অনেক স্থান। কিন্তু ঐ স্থানে অনৈক যাত্রীতে পুরিয়াছে, স্থান মাত্র নাই। পরে ঐ স্থানের মোহজের নিকট যাইয়া স্থানাভাব বিশিষ্ট মতে জানাইতে কহিলেন. "সর্ব্বত্র লোক পরিপূর্ণ আছে, আর দেবতার এই চুর্য্যোগ—কোধাও কাহার যাইবার ক্ষমতা নাই, সন্ধ্যা উপস্থিত। তবে তোমরা এক কর্ম কর-ঠাকুরের যে রম্থইমহল আছে, তাহাতে থাক। কিছ অপরিকার না হয়।" এই কহিয়া আমাদিগকে ঐ স্থান দেখাইয়া দিল। ঐ খর মধ্যে থাকিয়া রাত্রে থিচুড়ি আহার করা হইল। রাত্রে বৃঁষ্টি হইতে লাগিল। আমাদের পথশ্রমে উত্তমক্রপ নিক্রা হইল এবং অনির সংযোগ ভাল ছিল, ইচ্ছাৰত ভাষাকু পান করা গেল।

## ৯ বৈশাথ—

প্রাতে উঠিয়া যথার ঝাপান ও কাণ্ডিওয়ালার নিরিধ হইতেছে, প্রথমে দেই স্থানে যাইয়া, ঝাপান ও কাণ্ডিওয়ালার জামিন লইয়া, কাণ্ডিতে যে জিনিস যাইবে তাহার ওজন করাইয়া টিকিট লইয়া, তথা হইতে এক ক্রোশ লছমন-ঝোলা. তথায়

লছমন-বোলা গমন। ঐ ঝোলার নিকট পাহাডের ধারে শৌচক্রিয়াদি করিয়া, গঙ্গাতে মান তর্পণাদি করিয়া, ঝোলার নিকটে লক্ষণজির মন্তি আছে, তাহা দর্শন করিয়া কোলাতে উঠিতে **ट्हेंट्व। स्थाना प्रिया प्रकलात क्यांन हठ हहेन, छाहात कार्रन** ঐ ঝোলার আফুতি পাহাড়ের উপর হইতে পাঁচশত হাত রশি বিপরীত পারে পাহাডের উপর গাছ আছে, তাহার সহিত বন্ধন। এই মত তিন বুলি দেওয়া আছে। তিন বুলিতে দেড হাত প্রস্থ : ঐ বুলিতে অর্ভ্রহত অম্বর এক এক থাদি কার্ছের থাক বান্ধা, বেমন দিঁড়ি মই এইমত থাক থাক বান্ধা, ছই পাৰ্মে দড়ির রেল বন্ধ, কোমর পর্যাস্ত উচ্চ। তাহার উপরে হই পার্খে মোটা হই রশি আছে, তাহা ধরিয়া ঐ ঝোলার উপর উঠিয়া, ঐ খাদি কাঠের উপর পদক্ষেপ করিয়া, ভীত ব্যক্তি উপরের রক্ত ধরিয়া ৺গঙ্গা পার হইতে হয়। একজন মনুষ্য হাইতে কি আসিতে পারে, যদি কেহ ষাইতেছে আৰু ৰিপৱীত পার হইতে কেহু আসিতেছে, তাহা হইলেই বড কঠিন হয়। ঝোলার ছই মুখ উচ্চ পর্বতের উপর, মধ্যত্বল নিম হইরা ঝুলিয়া আছে, ঐ স্থলে আইলে প্রাণ সাম্বিত। ্তাহার কারণ বে, ভাগীরধী ৮গঙ্গা আছেন—ভাঁহার ধ্বল এমত লোতবতী বে, দশ বার শত মণ বে প্রস্তার ভাহাকে ভাটার ভার গড়াইয়া, আৰু বৃহৎ বৃহৎ বৃক্ষ সকল দস্তকাষ্ঠের ভার ছিল ভিল করিরা স্রোতের ছারা দেশদেশান্তরে ভাসাইরা লইরা যার। জলের শক্ত এমত বিপরীত হইতেছে যে. ঝোলা হইতে হাজার হাত নীচে গলার জল তথাচ ভাহার কলকল লক্ষে কর্ণে ভালা লাগে এবং নিকটের ব্যক্তির সহিত কথোপকথন করিতে হইলে উচৈঃ স্বরে কহিতে হয়, তবে বাক্য কর্ণকুহরে প্রবেশ করে। ঝোলা হইতে এক হাজার হাত এই বিকটরূপ গ্লার জ্ল, তাহাতে ঝোলাতে অর্ভহন্ত অন্তর অন্তর পদক্ষেপ করিতে হয়। কিছু দুর গমন করিয়া বাইলে ঝোলা হেলিতে ছলিতে থাকে, মধান্তলে আইলে অভিশুয় আন্দোলিত হয় এবং এক পার্শ্ব উচ্চ এক পার্শ্ব নিম হয়। তৎকালে "ভাহি মধুস্দন" "ভাহি মধুস্দন" এই অন্তর্যাগ হয়। আর এক আকর্ষ্য এই বে, পূর্ব্ব পূর্ব্ব সাধুদিগের বাচনিক এমত শ্রুত ছিলাম বে, লছমন-ঝোলা পার হইবার সমর দৈববাণী ভুনা বায় যে পক্ষীর স্থায় শব্দ করিয়া কছে "পছি। সাবধান পুর্ধ্যান, মূখে বল রামনাম, হিঁয়া কহি নাহি হায় আপুনা।" এই শক্ষ শুক্ত-পথ হইতে শুনা যার, তাহা ঝোলাতে উঠিবার সমরে আপন অকর্বে গুনিয়াছি। তাহার বিশেষ তদাকার করিয়া দেখা হইয়াছে, কোন ক্রমে মুমুষ্য কি পক্ষী কিছুই নহে—দৈববাণী তাহার সন্দেহ মাই। পরে ঝোলাতে উঠিয়া আপন ইষ্টমন্ত করিতে করিতে পার হওরা হইল। পার হইবার সময়ে এমতী মধ্যম-বর্ অর্থাৎ কালীবাবুর ত্রী অভিশন্ন আসমুক্ত হইয়া ক্রন্সন করিতে কাগিলেন। তাঁহাকে বাবু নানামত বুঝাইলা ছির করিলেন। এছানে শিবর্তম ৰাৰুর ুসহিত সাক্ষাৎ হইল। তেঁহ পূৰ্কদিবস আসিৱা পার হইরাছিলেন। তাঁহার বাসায় পছছিয়া কাটপুরি ও ওড় আহার করিয়া জলপান করিয়া ঝোলা-পারের প্রমণান্তি হইল। তথার
পান তামাক সেবন করিয়া সকলে একজ হইয়া প্রম শান্তি। পরে
তথা হইতে ছয় ক্রোশ ফুলাড়ি। তথার গলার তীরে বৃক্ষ-মূলে
কুলাড়ি অবস্থিতি ইইল। এই ফুলাড়ি অবস্থি লক্ষণের
তথাবন করে। তপোবন মধ্যে অনেক
সাধু-তপস্থিগণ (ও) মহামহা পণ্ডিতগণ আছেন। অতি স্রম্য বন,
তপস্থার উত্তম স্থান। এই মত তপোবন মর্শন করিয়া ফুলাড়ি
মোকামে থাকা হয়, বন হইতে কাঠাদি আহ্রণ করাইয়া অশ্লির
ধুনি বৃহৎ রূপ করাইয়া তাহার চতুপ্পার্থে বেষ্টিত হইয়া রাজে
থাকা/ইইল।

#### ১০ বৈশাখ—

ফুলাড়ি হইতে প্রাতে গলায় স্থান-তর্পণাদি করিয়া তথা হইতে
বিজলী ছয় জ্বোল, পাহাড়ের চড়াই, তথায় গমন। ছয় জ্বোল
ক্রমিক চড়াই, ইহাতে প্রাণ ওঠাগত।
বিশেষতঃ প্রথম পর্যতের উপর এতদুর উঠিতে
হইতেছে কিন্তু জগদীখরের এরপ দয়া প্রকাশিত আছে য়ে, স্থানে
স্থানে জলের ঝরণা এবং রক্ষের ছায়া আছে। পাহাড়ে চড়িতে
যত রেশ তাহার শ্রম-শান্তির উত্তম উপায় আছে। পর্যত অভিশর্ষ
স্থরমা। বন-জ্বল-জ্বল-জ্বল-প্রত স্থোভিত। ঐ পর্যতের
উপরে ছয় দও বেলা থাকিতে তথায় এক দোকান আছে, ঐ
দোকানে থাকা হইল। দাল ক্রনী আহার করিয়া ঐ স্থানে
থাকা হইল।

## . ১১ বৈশাখ—

বিজ্লী•হইতে নহাদেবকী চটি আটে ক্রোশ, ক্রমে পর্কতের চড়াই। বেলাতৃতীয় প্রহরের সময় প্রছিয়া তথায় আমাহারাদি করিয়া অবভিতি।

#### ১২ বৈশাথ---

বিজলী হইতে দশ্কলোশ বাদকী চটি, এই স্থানে বাদ-ঝোলা আছে। পূর্ব্ধ যেনত বোলা পার হইলাছিলাম, ভাহা হইতে ছোট কিছু আছে। ঐ স্থানে ঝোলাতে পার হইতে আইলে বাদ-গঙ্গা ইাটিয়া পার হইয়া, আদিতে হয়। পার হইয়া ঐ চটিতে আদিয়া গঙ্গার ভীরে বাদ-আশ্রমের নিকটে থাকা হইল। বাদেশেব দর্শন করিয়া আহারাদি করিয়া রাত্রে ছিত হইল।

## ১০ বৈশাখ—

ব্যাদ-আশ্রম ইইতে দেবপ্ররাগ ছয় জ্রোশ। তথার আদিয়া
কোলা পার ইইলা প্ররাগে স্নান-তর্শণ-শ্রাদ্ধাদি করিতে হয়।
দেবপ্রয়াগের ঝোলা লছমন-ঝোলার স্তায়।
কিন্তু এ ঝোলার রশি ভাল টান আছে, অধিক
হলে ছুলে না। ঐ ঝোলা পার ইইলে বদরীনারায়ণের পাণ্ড!দিগের বাদস্থান। প্রায় ছই শত পাণ্ডা আছে। ঐ স্থানে
আমাদের পাণ্ডা অভয়ারাম ও বদরী ছই লাভার বাটী। ঐ বাটাতে
অবস্থিতি করিয়া স্লমে য়ান-তর্পণ শ্রাছাদি করিয়া ব্রাহ্মণ, সধ্বা

ও কুমারী আদি ভোজন করাইরা তীর্থের কর্মাদি করিয়া, মংক্রের তামাদা দেখিতে—আটার গুলি পাকাইয়া জলে ফেলিয়া দিলে পর এমত বড় বড় রোহিত ও মিরগেল মংস্ত দকল আইল, তাহা কি বলিব—এক পোফা হইতে ছই মণ পর্যান্ত, ঐ আটার গুলি থাইতে আদিয়া জল মধ্যে ক্রীড়া করিতে লাগিল। তাহাতে দেখিবার অতিশন্ন শোতাযুক্ত হইল। প্রয়াগের জলের স্রোত অতিশন্ন, তাহাতে কেহ হির হইতে পারে না। তন্মধ্যে ঐ মংস্তগণ হির হইয়া আহাবাদি আনন্দে করিতেছে।

দেবপ্রয়াগে ভাগীরণীর আর মুন্দাকিনীর স্থম – ছই গ্রার জলের স্মান স্রোত। স্থমত্ব অত্যন্ত ভ্যানক, জলের শংক কর্বে তালা লাগে।

এছলে অনেক বদতি আছে, এছন্ত বাজার ও হালওগাইরের দোকান আছে, জবাাদি উত্তম পাওয়া যার না, মোটা পুরি, দধি, চিনি (৩) জিলাপি পাওয়া যায়, তরকারির মধ্যে বিলাতি কুমড়া। এই পাহাড়ে ঝাপানওয়ালাদিগের বর। তাহারা ছই দিবদের জন্ম বরে গেল।

এই স্থান হইতে গলোভরী-যম্নোভরী যাইবার আলাহিলা
পথ। অতি কঠিন পথ—পাহাড়ের উপর পাকদণ্ডিতে বাইতে হয়।
আহারের দ্রবাদি সমভারে রাখিতে হয়, পথ মধ্যে মিলে না।
আম ভলাস করিয়া ভগার আহারাদির চেটা করিতে হয়। ছর
দিবস কট করিয়া টেরিতে প্লছিলে রাজার বাটা এবং সদাত্রত
ধর্মশালা আছে, বে যত দিন ভথায় বাহিনে
রাজসরকার হইতে আহারের দ্রবাদি, মিলিবে।
রাজা অতিশয় ধর্মশাল। এই টেরির রাজার বাজা দেব-

প্রবাগ অবধি কেদার-বদরীনারারণ পর্যন্ত ছিল। তাহাতে যথন ইংরেজ বাহাছর এতদেশের সকল রাজ্য অধিকার করেন, তথন ঐ রাজা আপন-মনে বিচার করিল যে, 'আমার এ রাজ্য পশ্চাৎ থাকিবে না এবং যুজাদি করিতে ধন ক্ষয় ও বহু প্রাণী নই হইবে, অতএব ইহাদের সহিত সলা করিয়া আপন ধর্ম্ম ও বিষয়ের অধিকার রাধিতে পারিলে শ্রেম: আছে।' এই স্থবিবেচনা করিয়া জ্জা রেনলিক সাহেবের নিকট ধাইয়া কহিলেন বে, "আমার রাজধানী টেরি, গ্রেমান্তরী ও বমুনোন্তরী আমাকে নিহুর রাজ্য দেহ, আর তাবৎ রাজ্য তোমরা লহ। এ রাজ্য রাধিবার আমার ক্ষমতা নাই।" এই কথা কহিয়া সকল রাজ্য হইতে ক্ষান্ত হইয়া, এই তিন স্থান লইয়া স্থপে রাজ্য করিতেছেন। ঐ রাজা গঙ্গোন্তরীর যে কিছু কর ইত্যাদি পাওয়া যায় তাহা পাইতেছেন। তথাকার এক কলদ জল লইয়া অন্ত মহুষ্য ঘাইবে, তাহার পাদ বাজ্যবকারে করিতে হয় এবং স্থান করিতে যত মহুষ্য ঘাইবে, তাহার পাদ বাজ্যবকারে করিতে হয়।

ঐ রাজার নিকট পাস করিয় তিন দিবস পর্বতের উপর গঙ্গোরার ও ব্যুনান্তরী বর্ফান পথে শীতে কম্পিত হইয়া গমন করিতে হয়। সে পথে কেবল অগ্রির উত্তাপ আর কম্বল ও পারে কুশের জুতা লইয়া প্রাণরক্ষা করিতে হয়। তথার প্রছয়িরা গঙ্গোরারী তীর্থে লান-তর্পণাদি। কিয় এমন জলের শীত-বীর্য বে ক্ষণমাত্র জলে তিটিবার ক্ষমতা নাই, তাবং শরীরের স্পন্দন রহিত হয়। শ্রী৮গলাকে ভগীরথ যৎকালে মর্গ্রে আনিয়াছিলেন, হিমালয় হইতে ঐ স্থানে মর্প্রে আদিরাছিলেন, হিমালয় হইতে ঐ স্থানে মর্প্রে আদিরাছিল। পর্বত উপর হইতে এক ভৃক্তপ্রের র্ক্রের সুল

হইতে উত্তর দিক হইতে যে ধারা আদিতেছে, দেই গলোভরী, পশ্চিম দিক হইতে যে ধারা পতিত হইতেছে, তাহা যমুনোত্তী। এই ছই ধারা গলাও যমুনা এক বৃক্ষের মূল দিয়া পতিত হইতেছে। ক্রিত্র পর্বতের গতিকে নয় দিনের পথের ফের আছে। জন অমতিশ্র উচ্চ হইতে পড়িতেছে, শীতের প্রভাবে নিকটয়ঃ হওয়া ষার না। এই স্থান গ্মন সময়ে পথে অনেক স্থানে ছিকাতে পার ছটতে হয়। ভিকার অর্থ – নদী কি গঙ্গার ছই পারে ছই পাহাড. ভালতে ৰকাদি আছে, ঐ বুকে মোটা বশি ছই পারে বাঁধা আছে, ভাহাতে এক জন বদিতে পারে এমত ছোট একটী মেচের আকার, তাহার চারি কোণাতে দড়ি দেওয়া, ঐ দড়ি সিকার মত ঝলান ভারাতে আংটা আছে, ঐ আংটা উপরের মোটা রশিতে গলান আছে, ভাহার মূথে জুই রশি বাঁধা আছে। যে পারে যথন আদিৰে, সেই পারের লোক ঐ রশি ধরিয়া টানিয়া লয়—যে পার ছটতে পার হটবে, সেই পারের লোক ছলাইয়া ঠেলিয়া দেয়। ষংকালে মধান্তলে যাইতে হয় প্রাণের আংশা থাকে না। নীচে জল অভিশয় বেগবান, ভরকা শকা আখ্র রক্ত মাত্র, যদি বিপরীত টানিয়া লইবার মহুষ্য না থাকে, তবে অনেক কটে আপন কোমরের ও হাতের ঠেলাতে প্রাণ ওঠাগত হইয়া পার হইতে হয়।

১৪ বৈশাথ

দেব প্রস্নাগের পাণ্ডার বাটী হইতে আসিয়া ঝোলা পার
হইয়া দক্ষিণ পারে আসিয়া অবস্থিতি। ঐ
স্থানে শিবরতন বাবু রান্ধণ ভোজন করান
এবং গরুড়জির ভোগ হয়।

১৫ বৈশাখ

দেব প্রমাণ হইতে ছর ক্রোশ রাণীবাগ। তথায় আহারাদি
রাণীবাগ
করিয়া গৌতম-আব্রেমের নিকট ময়দানে থাকা
হয়। গৌতম মুনির মার্ভি আছে, তাহা দর্শন।

#### ১৬ বৈশাখ

শ্রীনগর। এখানে টেরির রাজার কেলা, এক্ষণে কোম্পানির জেলধানা আছে। সম্প্রতি<sup>\*</sup>সহর হইতে কাছারি সকল পাহাড়ের উপর গিয়াছে। এ স্থলে বালার আছে। দ্রব্যাদি সকল পাওয়া<sup>\*</sup> যায়। পাক্তীয় সহর, **এ**নগর অনেক মহুবোর বসতি আছে। ইচার প্রথম ঘাটীতে সরকারের কর্মকারগণ আছে। যত মনুষ্য কেলার-নার্থ দর্শনার্থে বাইতেছে, তাহার স্থার করে, কারণ বত মহুবা কেদারনাথ দর্শনার্থে গমন করে, এই স্থানের গভীর ফর্ছ কেদারনাথের পাণ্ডার নিকট যায়। তাহার তাৎপর্য্য এই যে, কেছ মহাপদ্ধতে গমন করিতে না পারে ৷ এই শ্রীনগর পর্বত মধ্যে সহর। যে কেহ হরিষার হইতে চনার, দাল, নারিকেলের গোলা, বালাম, কিসমিস, লবল, এলাইচ, জারফল, কালামরিচ, বস্ত্র চাউन, हन्दन এবং আর আর গন্ধ দ্রব্যাদি শী৺কেদারনাথ ও শ্রী৵বদরীনারায়ণের ভেট পুঞা জম্ম না লইয়া আইসে, তাহাদিগের বাহার লইবার ইচ্ছা হয়, এই সহরে লইতে হয়। এই স্থান ভিন্ন আর উপরের কোন পাহাডে পাওয়া বার না। ফ্রব্যাদি অভি ( **२**•.) 443

ত্র্পূল্য, তথাচ এই নগরে পাওরা যায়। নিমপাতার দের চারি টাকা। নিম্বৃক্ষ এতদেশে নাই, নিম্পতা শুক্ষ করিয়া অতি যত্ন পুর্বাক রাখিয়াছে।

এখানে বাসাণী কেছ নাই, কেবল আণ্ডতোৰ খণ্ড ডাক্টার। তাঁহার সমভ্যারে জ্ঞাতি-ল্রাতা এক জন আছেন। এই ছই জন ডাক্টার থানাতে আছেন। আমরা তথার বাওরাতে অভিশর প্রীত হইরা, আমাদের বাসাতে সন্ধ্যার পর আসিয়া রাজি ছই প্রহর পর্যান্ত কথোপকথন আমাদে প্রমান করিয়া, কৌশলে আমাদিগকে ছই তিন দিবস তথার রাখিবার জন্ত চেটা ছিল। আমাদের বাসাজেলখানার উপরের ঘরে হইয়া ছিল। একলে এই স্থানে করেদী থাকে না। তথার এই দিবস থাকা হইল। সহর এক ক্রোশ পর্যান্ত হইবে।

### ১৭ বৈশাখ

শ্ৰীনগর হইতে দশ ক্রোশ শিরোবগড়ার চটি, তথাৰ থাকা কর।

#### ১৮ বৈশাধ

শিরোবগড়া হইতে 'ক্সপ্রপ্রাপের পূর্ব্ব পারে পানচাকি এবং চটি আছে। তাহার উপরে এক বৈরাগীর বাড়ী আছে। ঐ বাডীতে থাকিয়া আহারাদি করিয়া রাজে শয়ন।

#### ১৯ বৈশাপ

ক্ষেপ্ৰবাগের ঝোলা পার হইরা প্ৰবাগে মান্তৰ্গণাদি। এই প্ৰবাগে নামিবার (পথ) মতি স্থক্টিন। একণত ধাপ ২৩০ নামিরা পরে এক লোহার শিকল আছে, ঐ শিকল ধরিরা দশ হাত

ক্ষ-গ্রাপ
নীচে গেলে জল পাওয়া যার। এই স্থানে

মন্দাকিনীতে অলকনন্দাতে সঙ্গম, জলের
বোত অভিশর। সঙ্গম-স্থান দেখিতে ভরত্বর। জল এমত শীতল
বে, বে স্থানে স্পর্শ হর ভাহার চৈত্ত্ব পাকে না, পানে দস্ত পদিরা
যার, মানান্তে অচৈত্ত্ব দেহ থাকে। কঠে স্থাঠে শৃত্বল ধরিরা
নীচে নামিয়া সঙ্গম-স্থানে মান-তর্পণাদি করিয়া ঐ শৃত্বল ধরিরা
উঠিতে প্রাণ বিয়োগের ভার কই। পরে উপরে উঠিয়া আয়ি
প্রজ্ঞানত করিয়া, উত্তাপ হারা দেহের চৈত্ত্ব সম্পাদন করিয়া, ক্ষ্মনারায়ণ দর্শন, করিয়া, ছয় ক্রোশ ঘাইয়া পাহাড়ের উপরে কর্মলা
আছাদনে রাত্রে থাকা হইল।

## ২০ বৈশাথ

ধারে আহারাদি করিয়া চারি ক্রোশ বাইরা গুপ্তকাশী। এথানে
৮গলা (৩) ৮বমুনা গুপ্তপথে আসিয়া ঐ স্থানে প্রকাশ হইয়াছেন।
গলার ধারা উত্তর দিকে, যমুনার ধারা
পশ্চিম দিকে। ঐী৮বিবেশবর (৩) অরপুণীর
মূর্ত্তি আছে। মন্দির পূর্ব্তবারী, স্থামিওত কলস, এক মন্দির
মধ্যে দেব-দেবী শোভা করিয়া আছেন। মন্দিরের সম্মুধে
এক বৃহৎ কুপ্ত আছে, তাহার চতুম্পার্থ জলা স্থল প্রস্তব্যের
সোপান। এই কুপ্তে গলার জল গোমুধ দিয়া, আর বমুনার
জল সিংহমুধ দিয়া উপর হইতে কুপ্তে পড়িতেছে। কুপ্ত

ৰলে পরিপূর্ণ আছে, ঐ কুণ্ডে দানাদি হয়। অন্তপূর্ণা ও

ঐ পাহাড় মধ্য হইতে ছয় ক্রোশ ঘাইয়া পর্বতের ঝোড়ের

বিশেষরের বর্ণের ও রূপার পঞ্চমুধ ইত্যাদিতে হুশোভিত করিয়া বেশভ্বা করা। এই গুপ্তকাশীতে অনেক সন্ন্যাসী, এক্ষচারী ও দণ্ডী আছেন। ইংারা যোগসাধন করিতেছেন। দোকান বালার বসতি আছে। নগরের স্থার হান, থান্ত অব্যাদি পাওরা বার। এ স্থানে অনেক বান্ধণের বসতি। কেদারনাথের পাণ্ডা-দিগের এই এক হান। এই গুপ্তকাশীতে সকলে মিলন হয়। এবানে ঐ দিবস এত যাত্রী একত্র হইন্নছে বে, থাকিবার হাম পাওরা গেল না। পরে অন্পূর্ণা-বিশেষর দর্শনান্তর প্রার আর্ক্তরাশ পাহাড়ের নিমে আসিরা ক্ষেত্র বাড়ীতে ডেরা ফেলিরা থাকা হইল। রাত্রে অগ্নির উত্তাপে এবং কম্বল আক্ষাদনে শীত নিবারণ করা গেল।

# ২১ বৈশাথ

কুণ্ডে লান-তর্পণাদি করিয়া, বিশেষরের দর্শন করিতে প্রায় চারি দণ্ড বেলা হইল। পরে তুমনাথের দর্শন। তুমনাথের পাহাড় আট ক্রোল উচ্চ চড়াই, বড় বিকট পথ; পাকলণ্ডিতে উঠিতে হয়। এক এক পদচিক্ততে পদক্ষেপ করিয়া যতি আশ্রেরে আট ক্রোল চড়িতে হইবে, মধ্যে মধ্যে পর্বাত উপরে বৃক্ষাদি আছে, বৃক্ষমূলে বিশ্রাম। এই মতে তাবং দিবাতে। পর্বাতের লিরোভাগে যে তুমনাথের মন্দির আছে, তাহাতে মহাদেব লিক্ষরণে বিরাজিত, তাঁহার দর্শন। এই পর্বাত বরকে আছ্লাদিত। মন্দির বরকে ঢাকিয়া থাকে। অক্সম-তৃতীয়ার পরে বরক কাটিয়া মন্দির ও প্রথ সকল মুক্ত করে।

প্রাতে উঠিয়া প্রাতঃক্ত্যাদি সমাপন করিয়া গুপ্তগঙ্গা (ও) যমুনা

্এধানে থাকিবার হান ঐ ত্বনাথের বাটাতে। এই সমরে থাজজবাাদির ছট্ট তিন দোকান পার্বভীর জমিদার লোক করে, আর
সদারত ধর্মশালা আঁছে। তথার রাত্রিবাস করিয়া পাহাড়ের
উত্তর দিক্ হইয়া নামিয়া পথে আসিতে হয়। চারি দণ্ডের মধ্যে
নীচে আসা বায়, কিন্ত নামিতে বড় ক্লেশ—প্রাণের আশা থাকে না ।
আট ক্লোশ পাহাড় থাড়াই অর্থাৎ সোজা (ও) উত্তরাই, ইহাতে বজ
ক্লেশ তাহা বিবেচনা ক্রিয়া দেখ। ইহাতে অনেক মাস্থ্য চড়াইউত্তরাই করিতে ক্ষমবান্ হয় না। এজস্ত পাঞাগণ ঐ ত্বশনারায়ণের অর্থাৎ ত্বলাথের প্রতিমৃত্তি অর্ণের ক্লপার মুখ সকল
পর্বতের নীচে অন্ত পর্বতে আনিয়া দর্শনার্থে রাখিয়াছে। তথার
উপরের মন্দ্রের ক্লার সকল আসবাব ও মৃত্তি সকল এবং
প্রিচারকগণ আছে। সেই মত কপা সোণার ছাতা, আশাবরদার,
বাজকর এবং প্রারিগণ আছে, বাহা ভেটাদি জমা হয় সকল
ভূদনাথের ভাঙারে জমা হয়।

দর্শনাদি করিরা পাটন নদীর চাইতে থাকা হর। ছই চাই নিকট নিকট। সকলে মগ্রে আসিরা চাইতে থাকিবার হান ভাল না পাইরা ভাহার নিকট পর্বতের উপরে ভেলপত্রের গাছ সকলে মাছে, সেই বনে বৃক্ষ মুলে থাকিবার হান হইয়াছিল। আমি ভূষনাথের দর্শনান্তর পুলিয়া পুলিয়া ঐ হানে সকলের সমভ্যারে মিলিড হইয়া একত্তে

থাকা হট্ট । ২২ বৈশাৰ

পাটন-চটি হইতে ছব জোপ চড়াই তিবুগ-নারারণের পাহাড়:

এ পাহাড়ে চড়িবার স্থবিধা আছে, কতক চড়াই তাহার পর কতক পরিসর স্থান। ঝরণা, মরদান (ও) বুক্ষের ছারা স্থানে স্থানে আছে। তথার বিশ্রামের অতি উত্তম স্থান। ক্রমে চডাই ও বিশ্রাম করিয়া তিষগ-নারাছণের মন্দির পর্কতের শিরোভাগ, তথার পচ্ছা হইল। এখানে চতুত্ব নারারণের সূর্ত্তি আছে, আর মহাদেবের তিন बुरशत धूनि व्यनिएउएह । नातात्रर्गत मन्तिरतत्र मन्त्रार्थ रह नात्रेमन्तित्र. তাহাতে মহাদেবের ধনি। বাহিরে পাঁচ কুও আছে এবং দেব-स्वी मूर्खि नकन मर्नन। थे कूर्ख ज्ञान-छर्नन कतिहा छिन, स्व, শ্বত, মধু, চিনি, ফুল, বন্ধ (e) কলা দিয়া ঐ ধুনিতে আহতি দিয়া, মারাহণ দর্শন করিয়া আপন আপন ইষ্ট কর্ম্পে প্রবৃত্ত ছইল। সাধনার স্থান নগরতুল্য-অনেক শ্রাাদী, বন্ধচারী (ও) মোহস্তগণ তপভা করিতেছেন। তপকার উত্তম স্থান। এই হিমালর-গরিরাক ও মেনকার বাসস্থান, গৌরীর জন্মস্থান-এই গিরিপরে পুরবাসী বালিকাগণ সমভাবে বাল্যক্রীড়া, শিবপুরা ও তপক্তা করিয়া ছিলেন। তাহার কল সকল আছে। এই কানে হর-গোরীর বিবাহ হর। এ পর্কতে ফলফুলে বুক্ষগণ কুলোভিত-সঞ্জীবিত। পর্বতের সানে কানে কলের ভাল ভাল বরণা আছে। অন্ত অন্ত পৰ্বত হইতে এ পৰ্বতের মহুব্যগণ মিষ্টভাবী, জীগণ-বালিকা, ৰ্বতী কি বৃদ্ধা-সকলে স্থুসভা, কিন্তু বস্ত্ৰাভাব-কৰণ পরিধান এবং আচ্ছাদন। সকলের মন্তকে কম্বলের টুপী কিছা পাগড়ি। উল-বন্ধ ভিন্ন প্রবন্ধ পার না, তাহাতেও দেখিতে শ্রীমান আছে। ইহারা চুচ ও বিদি পাইলে অভিশব সম্ভষ্ট হয়। একটি টাকা পাইবা বত বা সৰ্প্ত হয়, ভাহার অধিক একটি ছচ কি বছ পাইলে

্আহলাদযুক্তা হয়। বন্ধ পরিতে পাবে না, মন্তকে বাঁধিরা পিঠে কেলিরা দের। এই স্থানে পোকান আছে, চিড়া হইতেছে। শুড়, চিড়া (৩) চাবেনা পাওঁরা যায়। ত্রিযুগ-নারারণ দর্শনাদি করিরা পর্বতের উত্তর দিক্ হইরা নিরে উতরাই করিরা গলাতীরে আগিরা কাঠের পুলে গলা পার হইরা বিল্মিল্ চটি। ঐ চটিতে থাকা হইল। এ চটিতে স্থানাভাব (৩) ক্রব্যাভাব। অনেক হালামে থাকিবার স্থান করিরা, দাল আটার জল্প বিত্রত। সকল পোকানদার কহে বে, রসদ মন্ত্র ছিল ফুরাইরাছে। তাহার পুর পোকানারদিগকে নানাপ্রকার ভর (৩) ইব্রভা পেবাইতে আটা দাল মৃত পাওরা গ্রেল। ফি

## ২০ বৈশাখ

দিবস এই স্থানে স্থিতি।

বিল্মিল্ চটি ইইতে মুড়কাটা অর্থাৎ মন্তকহীন গণেশ। এই
ছালে শনির দৃষ্টিতে গণেশের মন্তকহীন হয়। ঐ গণেশ দর্শন
করিয়া ছয় ক্রোশ যাইয়া গোরী-কুণ্ড। এই
মুঙ্কাটা গণেশ
করিয়া ছয় ক্রোশ যাইয়া গোরী-কুণ্ড। এই
কুণ্ডের জল অতিশর উক্ষ। এ কুণ্ডে লান
করিয়া হরগোরী দর্শন, নারায়ণকুণ্ডে লান করিয়া লল্পীনারায়ন্দমুর্জি দর্শন। এথানে বাজার আছে এবং হালওয়াইদিগের দোকান,
ভাহাতে অক্ত জব্য কিছু পাওয়া যার না, চাবেনা, শুড় (ও) চিড়া

পাওরাবার। আটা দান চাউন মৃতাদির দোকান পৌরীকৃত আছে, থাকিবার ঘর তাল ভাল আছে। এই গৌরীকৃত্তের মাহাত্ম্য কেদার-মাহাত্ম্যে আছে। পুরাকালে মহাদেব পার্স্কতীকে জন উষ্ণ করিতে কহিরা পরে ভাল-ধুন্তরাতে বিভোর হইরা বোগাসনে রহিনেন। পার্স্কতী জ্বোধু করিরা ঐ জন নিক্ষেপ করেন, তাহাতে বে কুগু হর তাহার নাম গৌরীকুগু। এই গৌরীকুণ্ডে জনবোগ করিরা ভীমগড়া চারি জ্বোশ। তথার পাণ্ডাদিগের তৈরার করান বর আছে, বাতীদিগের থাকিবার

জন্ম বর এবং দোকান করে। ভাষার কারণ ভীষগড়া এখান হইতে শ্রী ৮ কেদারনাথের মন্দির চারি কোশ. এ জন্ত এই ভীমগড়াতে যাত্রী সকল থাকে। এই স্থানে ভীমদেন স্বৰ্গালোল-কানে পতিত হন, হিমের প্রতাপে। এ জ্ঞ ভীমগড়া নাম। এখানে এমত বরফ যে, এই বৈশাধ মাহাতে শীতে কম্পিত হইয়া শুই বনাত কম্বল গাতে, ভিতরে ভূলাভরা কামা, হাতে পায়ে উলের মোজা দন্তানা, তথাচ দন্তে দন্তে ঠেকিয়া ছৎকলা। বরফে স্থান সকল এত আর্দ্রি বে. কোন ক্রমে রম্বই হয় না। একে কাৰ্চ অতি হুর্মান্য, তাহাতে জলের স্থার ভূষি, প্রবলরপে অগ্নি জালিত করিলে এক ক্ষণের মধ্যে শীতল হয়। একজন মনুষ্টোর কটী দাল করিতে ছই আনা কাঠের কমে হয় না। ব্দনেক কটে বেলা তৃতীয় প্রহর সময়ে প্রচান হইল। এখানে चाहारतत काहे। कात कतहरहत नाग, घुठ (३) अङ् পाञ्चा बाह्र, 6িড়া মোটা মিলে। মধু উত্তম, সফেন মিছরির ভার ভুরা। ভীম-গভাতে থাকা হইল।

## ২৪ বৈশাথ

অতি প্রাতে উঠিয়া প্রাতঃকৃত্যাদি সমাপন করিয়া কৃষ্ণতাগ করিয়া কেলারনাথ হর্শনার্থে গমন। গাত্তে জুলাভরা জাখা, তাহার উপর লুই, বনাত (ও) কম্বল মুড়ি দেওয়া, হাতে আপন আপন ষষ্টি, স্থান্ধে পূজা ভেটের দ্রবাদি। কেমা এনাথ ইহার পুর্বে চারি দিবদের পথ পাহাড় হইতে বিবদল সংগ্রহ করিয়া লওয়া হইয়াছিল। তাহার পর আর বিবরক নাই। ঐ বিবদল এবং ঘৃত, মধু, চিনি ও মেওরা-জাত বে যাহা লইয়া আদিগাছিল, তাহা লইয়া "বদ কেদার" বলিয়া কেদারনাথ দর্শনে যাত্রা করিল। ভীমগড়া হইতে চারি ক্রোশ পাহাড়ে উঠিতে হয়। তাহার এক ক্রোশ পথ কোথাও পর্মতের পাধর, কোথাও বা বরফ, কোথাও বা বরফ-গলা হল, কোথা ও ঘাদপাতা, এই মতে এক ক্রোৰ। তাহার পর তিন ক্রোশ ক্রমিক রেরফের উপর হইয়া পথ। পর্বতের উচ্চের কথা কি লিখিব। গঙ্গাগাগর হইতে কেদারনাথ পাহাড় চারি শত ক্রোশ উচ্চ। ঐ পর্বতের শিরোভাগে উঠিয়া গমন করিতে হয়, বরফের পর্বত-কৈত যুগের বরফ জমিয়া আছে, তাহার নিরাকরণ করিতে পার**। যায় না। এই তিন ক্রো**শ পর্যাস্থ ভূণাদি জন্মে না, কেবল ধঞাকার। চলিতে পায়ের সাড় থাকে না, বেমন ঝিন্ঝিনা হইয়া পা অসাড় হয়, সেই মত বরফে भगत्करभ भागत कार्रेहिङ्झ इस । अरथेत जीवनक कि कहित ! বরফে আচ্ছাদিত পর্বত, তাহার বরফ সকল কাটিয়া পথ হইয়াছে. এক এক পদক্ষেপ হইতে পারে—এই পরিসর পথ, যে যে স্থানে পদের কোন চিহ্ন আছে, তাহার উপর পদক্ষেপ করিতে হয়। যদি সন্মুখে কেই আসিতেছে তাহা দেখিয়া কিঞ্চিৎ আনেপাশে **প্রক্রেণ** করে, তবে মহাবিপদ হয়। পশ্চিম দিকে পদক্ষেপ হইলে বরুকে কৈম্মর পর্যান্ত কোথার অহারী হইরা ডুবে, পূর্বা-

দিকে পদকেপ হইলে কোথার বার তাহার নিরাকরণ হর না. ভারার কারণ পারাভের গড়েন: কম-বেশ দশ হার্কার হাত নিমে মন্দাকিনী বহিতেছেন, তাহার উপরে বরফ আচ্ছাদিত আছে। মধ্যে মধ্যে কোণাও কোণাও বরুফ গুলিরা কাঁক হইরাছে. তথার জানা বার বে. মন্দাকিনীর স্রোত বহিতেছে। এ পূর্ব-'দিকে পদক্ষেপ হইলে একেবারে বরফে মগ্র হইয়া গলার পতিতঃ হয়। এক ব্যক্তির পাবেহিসাব পডিয়াছিল, সে বা<del>ক্তি</del> প্রাণ পরিত্যাগ করিয়া অনেক নিমে বরফের উপরে পতিত **আছে ৷** প্রায় এক মাহা হটল প্রাণ পরিত্যার করিয়াছে, বরফের শুণে পচে গলে নাই, ভাজা আছে। এই সুকঠিন পূধ হইয়া এক পুল পার হইয়া কেদারনাথের মন্দির দেখা যায়, পুল হইতে এক কোল। এ বংদর একশত এগার হাত বরফ পড়ে, তাহা কাটিরা মন্দির বাহির করে। মন্দিরের চিক্ত ইহাতে পায় বে. যত উচ্চ হইরা বরফ পড়ক, মনিবের উপর বে তিশ্ল আছে, তাহা আবৃত হইবে না। যে সমস্ত বাড়ী, ঘর, কুণ্ড, তীর্থ (ও) দেবালয় আছে, সকল বরফে ঢাকিয়া আছে—কেবল ধবলাকার, তাহাতে অন্ত চিক্ত কিছুমাত নাই, দেখিতে সুশোভিত। পুরাতন যে বর্ষ অবাছে, তাহার বর্কিঞিং মলিন, নৃতন ধে বরফ তাহা আনতি শুল্ল, সাফা লবণের ভার দানাদার।

কেদারনাথ দর্শনের প্রথমে পঞ্চালাতে স্থান-তর্পণ, পরে হংকতীর্থে প্রাথাদি গৃহী মহুহো করিয়া দেবদেব মহাদেবের দর্শন।
এ স্থান পঞ্চালা—মনকনন্দা, মন্দাকিনী, তুখগলা, ক্ষীরগলা (ও)
মৌগলা। এই পঞ্চালার দল্পন ন্যান-তর্পণ, প্রাথে পিওদান
করিয়া, প্রীপ্রেদারেশ্বর দর্শন করা হইন। তেহারা মন্দির ব্রেধ্য

মহিবাক্কতি মৃতি। প্রীপদেবদেব মহাদেবের মহিবমৃতি দর্শনিক বিরা বহুকালের মন-মানস এবং দেহ ও চকুর সফলতা করিরা পর্জতে উঠিবার এবং বন-জঙ্গলের ক্লেশের শান্তি হইল। গৃহ মধ্যে প্রবিষ্ট হইরা পঞ্চাকার সঙ্গম-জলে সান ক্লরাইয়া বিব্দল চন্দন দিয়া পূজা করিয়া প্রদিন্দিণান্তর কোল দিতে হয়।
ক্রমন্দির অতিশয় অন্ধকার, অষ্টদিকে অষ্ট স্তম্ভ আছে। ঐ
স্তম্ভ বেটিয়া প্রদানিক করিয়া কেদারকে কোল দিয়া বারংবার

क्लारतत मन्मित वहरक् प्रविश्वाहित। अधाविध मन्मिरतत्र ভিতরের স্কল বরফ যায় নাই, সর্বদা জল পড়িতেছে। এই रत्रक कम्र बीर्श्यक्षात्रनाथ ७ बीबीर्श्यनत्रीनातावर्णत्र लाज-দিতীয়ার পর অক্য-তৃতীয়া প্র্যুম্ভ ছয় মাহা হার ক্র থাকে। মন্দিরের ভিতরে এক এক ঘতের প্রদীপ আলিত করিয়া তাক মধ্যে রাধিয়া বার ক্ল করিয়া, অসিমঠ ও জোবীমঠ • ছই স্থানে ঘৃই গদি আনছে। ঐ গদিতে ছয় নাহা পূজা হয়। কেদারনাথের গদি অসিমঠে। মুলিরের নিকট কোন মহুবা কি ৰীবৰত্ব পণ্ড পক্ষ্যাদি কিছু থাকিবার ক্ষমতা হয় না। ঐ ছয় মাদ দেবগণে পূজা করে, এ কথা পূর্বারধি সকলে এত আছেন। একণে দেবতাগণের পূজা করার এই চিহ্ন পাওয়া বায় যে, খরের ভিতরে ঐ মৃত প্রদীপ জালিত থাকে, আর অর্থ্যের চাউল ও नीनकम्न निवा रव পूका इब, छाहा के मन्तित्र मरश शरक । अक्ब-ভূতীয়ার দিবস মন্দির ও পথ খোলসা হইলে টেরির রাজা অঞো पर्मनार्श्व मन्त्रि मर्था अविष्टे इन । ब्राब्श पर्मन कविवा माञ्ज 🕸 ম্বত-জালিত প্রদীপ নির্কাণ হয়। প্রদীপের বাতি ও খল যাহা- থাকে তাহা, আর ঐ দেবপুজিত অর্থ্যের চাউল ও কমল-পূজা রাজা লয়েন, পরে অর্থ্যের চাউল ও প্রদীপের গুল ও বাতি রাজা কাহাকেও দেন না, কমল-পূজা যাত্রীদিগকে নির্মান্য দিবার জ্ঞা রাওলের নিকট কেদারনাথের ভাগুরে আমানত থাকে। অর্থ্যের চাউলের অতি অন্ন ভাগ ভাগুরে আইসে, অনেক তব ভতিতে যাহার প্রতি অন্থ্যহ হয়, তাহাকে দেন।

মন্দির মধ্যে ছতের প্রদীপ দিবারাত্ত জনিতেছে, আবালা না হইলে কিছু দৃষ্ট হয় না। নাটমন্দিরে পঞ্চ পাঞ্চবের মূর্ত্তি আছে, আর মন্দিরের ভিতর বাহিরে কত দেবদেবী, মুনিশ্ববিগণের মূর্তি, আর নাটমন্দিরের মধ্যস্থলে নন্দিকেশ্বর আছেন।

মন্দির প্রদিক্ষণ করিয়া সমুধে আসিতে বরফে স্পন্ধন রহিত
ছয় । কেলারের মন্দিরের উত্তর দিক্ হইয়া মহাপছা। এখান হইতে
মহাপছাও তিন ক্রোল উত্তর মুধে গমন করিয়া বাইতে
হিমলিবেবর পারিলে হিমলিবেশ্বর লিব, বাঁহাকে স্পর্শ করিরা মাত্র দেহ বছ তুলা হইয়া সকায়াতে স্বর্গে গমন করিতে পারে। কিন্তু এই তিন ক্রোল,পথ বাওয়া অতি হুছর, তাহার কায়ণ দিবারাত্র বরফ জলের ফ্রায় বরিষণ হইতেছে, এই শীতবীর্যো কেহ মহাপছাতে গমন করিতে পারে না। বদি কৈহ সাহস্ করিয়া ঐ পথে গমন করে, তাহা কদাচ পহছিতে পারে না। ভাহার কায়ণ ঐ পছাতে পদক্ষেণ করিতে বদি কিছু শক্ষ হয়, ভবে এমত বয়ফ ধনিয়া পড়েব, তাহাতে প্রাণ য়ক্ষায় সভাবনা নাই—ভাহার নাম খুনি বয়ফ। বে অক্লে ঐ বয়ফ স্পাশ হয়, ভব্দেশাংনী বাহাছ্রের এবং টেরির রাজস্বকার হইতে ছবিল ক্লে ুপাৰ্ব্বতীয় মন্থ্য বৃক্ষক আছে—কোনক্ৰমে কেহ বিনান্থ্যতিতে ঐ পথে না ৰাষ্ট্ৰতে পাৱে।

যে সকল রক্ষকগর্ণ আছে, তাহারা লোমস্মেত ছ্ব-ভেড়ার চামড়ার,জামা, ইজার, টুপী (এবং) তাহার উপর ক্ষল আচ্ছাদনে থাকে। অগ্নির কুপ্ত সমভ্যারে ঐ রক্ষকগণ এক ক্রোশ পর্যান্ত কটে বাইতে পারে, তাহার পর গমনের ক্ষমতা নাই। একজন বালালি ব্রাহ্মণ, তাহারা ছইজনে, কেদারনাথ দর্শনে গিয়া, মন্দির প্রদক্ষিণের সময় মহাপন্থা গমনের পথ ছির করিয়া, আপন দ্রবাদি সকল সমভ্যারে ব্যক্তিদিগের নিকট ছিয়া, উলল্ল হইয়া, এক ক্মল গাত্রে আচ্ছাদন ছিয়া, উর্জ্বাদে অর্দ্ধ ক্রোশ পর্যান্ত দৌড়াইয়া লিয়াছিল। পরে রক্ষকগণ জানিতে পারিয়া তাহাকে ব্রহত কপ্ট তার করিয়া গমন স্থগিত করাইয়া, নিকটে বাইয়া তাহাকে ব্রহন ও প্রহার করিতে করিতে বিচার স্থলে লইয়া গেল, তাহাকে অনেক ভয়ন্দিত্র দেখাইয়া অন্ত পর্বতে পাঠাইয়া দিল।

যাহার মহাপছা হইয়া হিমলিকেখব স্পর্শ করিবার ইচ্ছা হয়,
তাহাকে অথ্যে গৃহত্যাগ করিয়া সয়ায়, কি বানপ্রস্ক, কি অক্ত অক্ত
আশ্রম লইয়া, ছাদশ বৎসর বনবাসী হইয়া গোগ্রাসে ভোজন,
তদনত্তরে আপান পদে ঝিক করিয়া চক্র রয়ন করিয়া ভোজন,
তদনত্তরে রাজার নিকট মহাপছা গমনের আবেদন করিতে
হয়। রাজা শ্রুত হইয়া ঐ ব্যক্তিকে রাজভবনে রাখিয়া,
উত্তম উত্তম মেওয়াদি তেজকর জবা, হয় (৪) মৃত প্রচুরয়পে
আহার করাইয়া, উত্তম শ্বাতে শরন করাইয়া, উত্তময়প
য়পনী বুবতীগণকে সেবার নির্ক্ত করিয়া, ছই তিন মাস
একত্রে বাস করাতে যদি কিছু বিকার ক্রেমে তবে তাহাকে

२**६**५ (२५)

পুনর্কার পাষের ঝিকে পাকছণী বসাইরা চরু পাক করিছা আহার করিতে পারিলে, সেই ব্যক্তিকে মহাপছা গমনের অফু-মতি হর। ঐ ব্যক্তি এই স্থলে আসিয়া উলক হইয়া সকল ত্যাগ করিয়া মহাপছাতে গমন করে, এক ক্রোম পর্যান্ত তাহাকে দেখিতে পার, তৎপরে কোখা বায়, কি হয়, কেহ দেখিতে পার না।

কেদারনাথের মন্দিরের উত্তরাংশ হইতে ঈশান-কোণে ধবল
পর্কাত দৃষ্ট হয়, ঐ কৈলাস পর্কাত। ঐ স্থানে
কৈলাস

② শহরণার্কালীর মন্দির আছে। এখান হইতে
মন্দির স্পষ্ট দর্শন হয় না, ধবল পর্কাত স্পষ্টক্রপে দেখা যায়;
তাহার উপর শূলস্করপ দেখিতে পাওয়া যায়। যদি ঐ বস্তা
মন্দির হয়, তবে দেখা হইয়াছে।

মহাপছার শেষভাগে তিন পছা আছে—বিফুপছা, রুদ্রপছা (ও)
ব্রহ্মপছা, বে বে পস্থা গমনের ইচ্ছা করে সে সেই পছাতে
বার, সাধনক্রমে প্রাপ্ত হয়। কেদার-দর্শনান্তর রেতকুপ্তের জলপান করিতে বাইতে হয়। অর্জকোশ পথ বরজের উপর দিয়া
কুপ্তে আসিতে হয়। কৃত্ত দীর্ঘ-প্রস্থে চারি হক। চতুশার্শে
প্রস্তরের সোপানবদ্ধ বেটিত হর আছে; ঐ

বের মধ্যে কুও বরফে পরিপূর্ণ ছিল। সম্প্রতি পথ ও কুণ্ডের বরফ কাটিরা মুক্ত করিয়াছে। এই স্থানে ব্রহ্ম, বিফু (ও) মহেশর অিদেব প্রস্থাত হন। এই লক্ষ্ম এই কুণ্ডের জলপান করিবার বিধি। জলপানের নিয়্ম এই বে, প্রথমে স্করে করিতে হয়। তাহার বচনের পৃত্তক চারি পাঁচ পাত হইবে। তাহার মূলার্থ—এই জল স্পর্শে পাপ দেহ পরিত্যাপ

হইরা জীবন মুক্ত হইল। দেহকে ভগরাশি এবং কালপুক্ষকে শিলাতে দটু করিবার মন্ত্র। তৎপরে বার তিথি মাদ কর উচ্চারণ করিয়া তিন গগুষ বাম হত্তে তিন অঞ্জলি পুরিয়া তিন বার গোগ্রাদে বারংবার কুণ্ডের জলপান করিয়া লক্ষে দিয়া কক্ষবান্ধ করিতে করিতে বাহ আক্ষালন করিয়া দক্ষে ক্ষিতে হয়—

অহং ব্রদ্ধ: অহং বিষ্ণু: অহং কৃদ্র: প্রশাপতি:। মন্ত্রণ্য সর্ব্ধতীর্থানি নাজীব দেবদানবে ॥ এই কথা বারংবার কহিয়া স্থগিত। এই প্রকরণে উদক-কুণ্ডের অলপান করিতে হয়। হই কুও একাক্তি, এক নিয়স। এ সময়ে এখানে তিথ্রাত বাদ করিতে কেহ ক্ষমবান হয় না. তাহার কারণ যত বাড়ী ঘর আছে সকলই ডুবিয়া আছে, থাকিবার স্থানাভাব, উদাদীনদিগের মধ্যে কেছ কেছ এক রাত্র ছিল, কিন্তু এক জন এক টাকার কার্চ্নে ধুনি করিয়া ু অন্তি উত্তাপে প্রাণরকা করিয়ছিল। বর্ষাকালে বাহারা দর্শনার্থে যায়, তাহাদের পথ-ক্লেক অতিশয়। তাহার কারণ এ সকল পথেও ঝোলা থাকে না, পর্বতের উপর উপর পাকদণ্ডি পথে আসিতে হয়। কিন্ধু সে সময়ে কেদারে তিন রাত্র কি স্থা রাত্র—যাহার যত দিবস ইচ্ছা হয়, যম-বিভীয়া পর্যাম্ভ থাকিয়া দর্শন-স্পর্শন করিয়া থাকে। তৎকালে বরক সকল গলিয়া পড়ে, পাওাদিগৈর এবং রাজার ধর্মশালার বে সব বাড়ী আছে তীহা মুক্ত হয়, তাহাতে থাকিতে পারে।

কেদারনাথের পাহাড়ে এবং বদরীনারারণের পাহাড়ে তিন ক্রোন অন্তর। কেদারনাথ হইতে বদরীনারারণের পাহাড় উত্তমক্রপ দেখা যায়। এক জন পুজারি ছই স্থানে পুজা করিও। ঐ পুজার-আগ্রাপ আপুন জীসছ বরাদ করিবা, ত্রীকে প্রতি দিবদ প্রহার করিও; কহিত "আমি ছই পাহাড়ে পূজা করিবা এলাম, তথাচ তোমার গৃহকর্ম হর নাই!" এই কহিরা অভিশব প্রহার করিও। এক দিবদ অত্যক্ত দেহ-যন্ত্রণা পাইরা ছই দেবের নিকট প্রার্থনা করিল বে, 'তোমাদের পুজার পূজারি হইরা আমার প্রাণন্ট করিতেছে। আমি. মরিলে ত্রীহত্যার জাগী তোমাদিগকে হইতে হইবে।' আন্ধার একল থেদোক্তিতে ছই দেবু হর-হরির ক্রপা হইল, কহিলেন "এক দিবদে ছই পাহাড়ে যাইবার ক্ষমতা থাকিবে না।" মধ্যে এক উচ্চ পর্বাভ করিলেন, তাহা লাজ্যনের পথ রহিল না। এলম্ভ এক্ষণে কেদারনাথে (৩) বদরীনারারণে নর দিবদের পথ অস্তর চইরাচে।

স্থান ইতৈ মন্দাকিনীর বে ধারা আদিতেছে, নির্মাণ কাল।

হুধ-গলার কাল হুগ্নের বর্ণ, ক্ষীর-গলার কাল

প্রক-গলা

কীরের তুল্য আছে, মৌ-গলার কাল মধুর
সমান মিষ্ট, অলকনন্দা স্থানিতা। পঞ্চ-গলা বর্ণার একত্র মিনিত

ইইরা সক্ষম ইইছাছে, তথার কল্পোত ও প্রবাহ অত্যন্ত

ইইতেছে। সানকালীন দেহের স্পন্দন রহিত হয়, তপ্ণাদি করিয়া

আছি করিতে হংসভীবে কিছা সক্ষ-স্থানে বসিলে সক্ল কেশ

শাবিহর।

কেদারমাহাত্মো লিখিত আছে বে, যে ব্যক্তি রেডকুণ্ড (ও) উদককুণ্ডের অলপান করিবে, পানের নিরম পূর্বেক কহিয়াছি, সে বক্তির হাদিমধ্যে তৎক্ষণাৎ এক শিবলিঙ্গাকৃতি অন্মিরে, তোহাতে তাহার যে স্থলে মৃত্যু হউক কাশীতে মৃত্যুর ফল প্রাপ্ত হইবেন। যে কেছ কেদার-দর্শনের বাত্রা করিয়া পথে প্রাণ্ড্যাগ করিবে, তাহার অধোর্দ্ধ ত্রিসপ্ত পুরুষ উদ্ধার হইবে। কেদার-মাহাত্মা মান্ত করিলে, তাহা শ্রুত ইইলে ফলশ্রুতি হইবে।

পুনর্বার কেদারনাথের মন্দিরে প্রবিষ্ট হইয়া দর্শন, স্পর্শন ও প্রদক্ষিণ এবং কোল দিয়া আসিয়া রাওল অর্থাৎ কেদারনাথের গদির মোহন্তর নিকট আসিয়া নির্মাল্যাদি লইয়া, যাহার যথাশক্ষিপ্রণামী দিয়া, বেলা আড়াই প্রহর গতে তথা হইতে ভীমগড়া আসিতে উপ্রোগ হইল। বৈশাধ মাহার আড়াই প্রহয় বেলা, কিন্তু শীতে কম্পবান, কাহারও পদক্ষেপ করিবার ক্ষমতা হয় না। পর্বাতে এমত বেষ্টিত য়ে, হুর্যের উদয়ান্ত কিছুই জানা য়য় না। একথানি থালার য়য়য়, আকাশ য়াহাকে কহে, শৃষ্কভাগ দেখা য়য়। হয়্য-তেজ্ব বরফে আছে।দিত আছে।

এখান হাইতে গমন করিয়া বরফের নানারকম দেখিয়া শত বৎসরের বরফ বেলওয়ার, সহস্র বংসরের ফটক হওয়ার আকর স্থান দেখিয়া, পথমধ্যে স্থানে স্থানে বিপ্রাম করিয়া বেলা চারি দণ্ড থাকিতে ভীমগড়াতে পছছান হইল। ঐ স্থানে ব্রাহ্মণ-ভোজন। স্থানি কিছু পাওয়া গেল না; আটা, দাল,

ভাষণড়া
ভাষণড়া
ভাছারা আপনারা, তৈয়ার করিল। আমাদিগের
তীর্বোপবাল। রাত্রে কেবার, রামদন্ত ও · · · পাভাদিগকে
বিদার করিরা কমল-পুশাদি ফুফল লইয়া থাকা হইল।

#### ২৫ বৈশাধ

ভীমগড়া হইতে চারি ক্লোশ গৌরীকুও। তথার স্থানতপ্ণাদি করিয়া তথা হইতে ছর ক্লোশ
মৌরীকুও
বিল্মিল্ চটি। তথার ৩৬, ছোলা লইয়া পুল পার হইয়া অর্ক ক্লোশ অন্তরে পাহাড়ের মধ্যে থাকা হইল।

### ২৬ বৈশাথ

ঝিল্মিল্ চটির নিকট পাহাড় হইতে অসিমঠ দশ কোণ।
কেলারের গদি এ স্থানে, ছর মাস উদ্দেশে পুঞা হর। এখানে
বাজার আছে, আহারের ক্রব্যাদি পাওয়া যায়,
ভালওয়ারের দোকান আছে। এই কেদারের
বাটীতে থাকা হইল। এ৮লন্দ্রীনারায়ণ (ও) এ৮কেদারনাথের
প্রাদ্ধিন। ঝোলা পার হইয়া অসিমঠ।

অসিমঠ হইতে দশ ক্রোশ-পুথিবাসা, তথার থাকা হয়।

#### ২৮ বৈশাৰ

পুৰিবাসা হইতে বার ক্রোপ বামনী চটি। তথার অবস্থিতি। বামনী চটি এখানে দশ বার দোকান আছে।

## ২৯৫৭ বৈশাখ, দশমী

বামনী চটি হইতে বার কোশ ক্ষেত্রপাল। এছানে আসিতে
অলকনন্দা পার হইরা পুলের ধারে বাজার
ক্ষেত্রপাল
আছে, তথার না থাকিরা ছই জোশ অবরে
ক্ষেত্রপালের চটি। তথার দশ বার দোকান আছে। থাকিবার
২৪৬

বঙ্গুৰ সকল। তথার আহারাদি করিরা অবস্থিতি। এই দিবদ শিবরতন বাবুর চাকর অন্তপথে পথ ভূলিয়া ধার।

#### ৩০ বৈশাখ, একাদশী

ক্ষেত্রপাল হইতে আট ক্রোল পিপড়কুঠী। এথানে থাকিবার ধর্ম্মালা এধং দোকানদারদিগের দোকানের উপরে থাকিবার উত্তম স্থান আছে। আমাদের আদিবার পুর্বে পিপডকুঠী যাত্রী সকল আসিয়া ঘর লইয়াছে, আর বে মর ছিল তাহা ভাল নহে। এজন্ত ঐ বাজারের উত্তর পাহাড়ের ক্ষেত বাড়ীতে ডেরা রুরা হইল। একাদশীর দিবস কাহার কটী. কাহারও পুরি, কাহারও ফলাহারী ত্রব্য আনাইরা জাহারাদির জব্য প্রায় প্রস্তুত হট্যাছে, এমত সময়ে মেঘারস্ত হট্যা জ্বল বাতাস শিলা বরিষণ হইতে লাগিল। আর দেবতার অভিশব গৰ্জন। ভৱে সকলে আহি আহি, থাকিবার স্থানাভাব হইরা বিব্রত; আহারাদির দ্রব্য সকল পড়িয়া রহিল। তথায় নবক্লফ আর উপাধ্যার ছিল। আর সকলে এক ক্রোশ চড়াই করিয়া পর্বতমধ্যে এক গ্রাম আছে, তাহাতে নীচজাতির বদতি, উহা-দিগের ঘরে থাকিবার স্থান করিয়া তাহাতে অতি ক্রেশে থাকা इहेन। अनुष्ठि कि कि: निवादन इहेटन श्रद आहाद क्रिएड थे স্থানে আমরা চারিজন গিয়াছিলাম, শীত জ্বন্ত কাহার করিতে পারিলাম না। পুনর্বার পর্বত উপরে ঘাইয়া এক ব্যক্তির খরের দাওরাতে পাঁচ জনে অখি জালিয়া বসিয়া রহিলাম।

#### ৩১ বৈশাথ, দাদশী

পিপড়কুঠী হইতে ছয় ক্রোশ গরুড়গঙ্গ। পর্বতের উপর হইতে ২৪৭ বেগে জল পতিত হইরা নদী বহিতেছে। এহানে গরুড় ওপন্থা
করিরাছিলেন। সে কালে পর্বত কহিল,
গরুড়গরা
"পক্ষিরাজ! ভূমি আমার পূঠে বসিরা ইপ্টমিছি
করিলে, আমার গুণ কি হইল ।" তাহাতে গরুড় কহিলেন যে,
"আমার নামে এই গরা হইল। এই জলে তোমার যে পাথর
পড়িবে, সেই পাথরে সর্প-ভর থাকিবে না।" ঐ গরুড়গর্লাতে স্নানতর্পণাদি করিরা জলবোগ হয়। তাহার পর ছয় কোশ যাইরা কুমার
চটি। এথানে ছই চটি আছে, এক চটি নীচ
কুমার চটি
জাভিতে স্থাপিত করিরাছে, এজন্ত ভন্মলোকে
থাকে না। তাহার অর্দ্ধ কোশ অর্থর যে চটি তাহাতে অবস্থিতি
হইল। এ চটিতে প্টিশ দোকান আছে, থাকিবার বহুৎ ঘর।

### ১ दिकार्छ, जरमाननी

কুমার চটি হইতে আট কোশ বিজ্ঞানাগ। তথার প্রে
পার হইন। ছই কোশ চড়াই করিনা যোধীমঠ, বে হানে বলরীনারান্ত্রের গদি। এই স্থানে ছর মাহা
ঘোনীমঠ উদ্দেশ পূঞা হয়, ভোগ হয়। এই বাটাতে
বাঞারাদি আছে এখানে লক্ষীনারান্ত্র হরগৌরী-দর্শন। এই
সদি হইতে অর্জ কোশ উচ্চে পর্বত উপরে বদরীনারান্ত্রের ধর্মশালা বাটী হইতেছে, তাহার নিকট অবস্থিতি হইনা আহারাদি।
এই বোনীমঠে একজন ডাক্রার আছেন, হিন্দুল্নী লালা।
তাহার সহিত সাক্ষাৎ হইনা অনেক কথোপক্রন হইন।

## ২ জ্যৈষ্ঠ, চতুর্দ্দী

ংগ্ৰীমঠ হইতে আট ক্ৰোশ পাঞ্কেশর। তথার পাঞ্বের ১৪৮ স্থাপিত শিব আছেন। অলকনন্দার তীরে তাঁহার, আর

চতুর্জ নারায়ণের দর্শন। এই স্থানে

পাত্কেমর দোকানের উপরের ঘরে আহার করিয়া
মৌওজ চটির নিকট ময়দানে অবস্থিতি।

### ৩ জ্যৈষ্ঠ, অমাবদ্যা

মৌওজের চটির নিকট হইতে আট ক্রোশ চড়াই বদরী-নারায়ণের পাহাড়। ইতিমধ্যে ছই চটি আছে। চারিক্রোশ বদরীনারারণের পাহাড় যাইয়া বংফ ভূমি, বরক্ষের উপর দিয়া চলিতে হয়। স্থানে স্থানে প্রস্তরভূমি আছে। কেদার-নাথে বেমত বরফ তাহা হইতে এ পাহাড়ে বরফ কম আছে; কিছ শীত অভিশয়। শ্রীরের ম্পুন্ন রহিত হয়। জলম্পুর্শ করা অতিশয় কঠিন। আট ক্রোশ ঘাইয়া এক কাষ্টের পুল व्यवकनमार्क व्याद्ध, ठाश भात्र इहेबा किक्षिप भरत वनती-. নারায়ণের মন্দির। ঐ মন্দিরের নিকট এক বৈরাগীর বাড়ী আছে। তাহার উপরের খরে কানা হইল। বরফের তাংদে বরে জানালা, কি আওয়াজি কিয়া আলোর জন্ত কুদ ছিজা নাই, অতি অন্ধকার ঘর, বিনা প্রদীপ কি অন্ত আলো না প্রজ্জালিত করিয়া কেহ কাহাকে দেখিতে পায় না। এমত বন্ধ-ঘর মধ্যে তুই তিন কখলে অঙ্গ আছোদন করিলে শীত নিবারণ হয়। ঐ বাদাতে আপন আপন দ্রব্যাদি রাথিয়া তপ্তকুণ্ডে স্লান-ভর্পণাদি করিয়া, বঁদরীনারায়ণ দর্শন করা হইল।

তপ্তকুণ্ডের পরিসর কুড়ি হাত দীর্ঘ, যোল হাত প্রস্থি, কুণ্ড আছোদিয়া প্রস্তানির্মিত বর। কুণ্ডের ভিতর পর্যান্ত পাধরে

গাঁথা. তাহাতে ঝরণা দিয়া গরম জল আসিয়া পরিপূর্ণ হইতেছে। তিন ঝরণা, উত্তরদিকে এক ঝরণা, পশ্চিম-তপ্ত≉ঞ দিকে ঐ ঝরণার মুখে প্রস্তরে খোদিত গো, সিংহ, হস্তী (ও) ব্যাঘ্ৰ-মুখ সংযোগ আছে। সেই মুখ দিয়া জল কুণ্ড মধ্যে পতিত হইয়া পরিপূর্ণ হয়। ঐ জনে স্নান-তর্পণাদি, যাহার মস্তকের উপর লইতে ইচ্ছা হয়, সে ব্যক্তি ঐ বরণার রক্ষক ব্রাহ্মণদিগকে এক একটি পয়দা দিলে, তাহারাঐ মুধ যে রুদ্ধ করে তাহা খুলিয়া দেয়। ঐ অবশ আমিশিখাৰ ভাল পতিত হয়। কুণ্ডে বে জাল আছে ভা**হা** এতাদুশ ট্রঞ্জ নহে। এই কুণ্ডে স্নানের মান্ত্রা অধিক, তাহা বদরীনারায়ণ-মাহাত্মো প্রকাশ আছে। সোমদত নামে এক ব্যক্তি, গুজরাট দেশস্থ বণিক, সন্ত্রীক কেদার-বদরীনারায়ণ দর্শনার্থে আদিয়াছিল। তাহারা স্ত্রী-পুরুষ ছইজনে তথাকুঙে ম্বান করিতেছিল। তাহার স্ত্রীর হস্তে হস্তিদন্তের চড়ি ছিল. জনস্পর্নমাত্র ঐ এক এক গাছি চুড়ি চতুত্ব সুর্ত্তি ধারণ করিয়া মুক্ত হইল। ইহা দেখিয়া দুসোমদক এ স্থানে বাস করিয়া বুছিল।

শ্রী শ্রী ভবদরীনারারণ নরনারারণর প, পরণপাণর-নির্বিত, বিভুজ, অতি চমংকার দর্শন। মন্দিরে প্রবিষ্ট হইরা এক্ষণে ব্যরীনারারণ কেহ স্পর্শ করিছে পারে না। ভাষার কারণ এক ব্যক্তি স্বর্ণকার দর্শন করিতে যাইরা পরশ জানিয়া নারারণের বামহত্তের কনিষ্ঠ অস্কৃতি কাতরি দিয়া কাটিয়া লইরা আইদে; পরে অস্কৃতিইন দেখিয়া ভদারক দারা স্বর্ণকারের নওরা প্রকাশ পাইতা। ঐ স্বর্ণকার

ুতংকণাৎ অহ হইয়াছিল। ঐ অকৃলি ক্লোডা দিতে শ্ৰীহক্তে ভূড়িয়া গেল, কিন্তু ভদবধি অবর্ণকার জাতিতে দর্শন করিতে ষাইবার আজ্ঞা নাই এবং আর কোন ব্যক্তি শ্রীঅঙ্গ স্পর্শ. কি মন্দিরে প্রবেশ করিতে পায় না। কেবল গদির যে যথন রা**ওল** হয়েন, সেই ব্যক্তি পূজা ও স্পর্শ করিতে পায়। আর সকল মহুষা, মন্দির চারিখণ্ড অর্থাৎ চারি হারা তাহার ছই খণ্ড হইতে দর্শন করে। যে বাক্তি অধিক বার করিতে ক্ষমবান হয়, সে বাক্তি তৃতীয় ঘর পর্যান্ত 'ষাইয়া দর্শন করিতে পায়। আমি কোন স্থােগে এক পঞ্চাবী সন্দারেক সমভাারে উত্তমরূপ দর্শন করিয়া-ছিলাম। মন্ত্রির মধ্যে অনেক দেবদেবীর মর্ত্তি ও অধিগণের মর্ত্তি আছে। এ স্থান পরাশর ঋষিত্র তপস্থার স্থান। পরাশরের পাষাণের দেহ, যোগাসনে তপস্থাকারে আছেন। ব্যাসাদি মুনিগণ যোগাভ্যাদ করিতেছেন। ত্রীমন্দির পর্ববারী। যংকালে মন্দ্ৰিরের পটবন্ধ হয় গ্রাক্ষ-ছার আছে, তাহাতে উত্তম দর্শন • হয়। মঞ্চ-আর্তির সময়ে দর্শনে ভিড় হয় না. মনোসাধে দর্শনাদি করিতে পারে। দর্শনাঞ্টে মন্দির প্রদক্ষিণ। চতু-শার্মে সাধুগণু সাধন করিতেছেন। তাঁহাদের সমভ্যারে বিঞ্চক্ত সীতারাম ও নুসিংহ-মুর্ক্ত্যাদি আছে। বৈঞ্ব, রামাৎ, নিমাৎ, সন্নাদী, অবধৃত, পরমহংস (ও) দণ্ডী প্রভৃতি যোগিগণ নারায়ণ-দর্শনে প্রকিত হট্যামগ্র আচেন।

বৈস্কৃত এই হান — তাহার সংশব নাই। এথানে মহাপ্রসাদ বাজারে বিক্রে হর, অরপ্রসাদ সকলে সকলকে দিতেছে— মনো-বিকার কিছুমাত্র নাই।

শ্রীমন্দির প্রদক্ষিণ করিয়া রন্ধনশালার নিকট বাইয়া দেখা ২৫১ ছইল, এ ⊌পল্লীদেবী খবং বাঁধুনী, পাক্ষাণীতে এককাণীন সকল দ্রব্য—ঝাল, হরিদ্রা, ঘৃত, লবণ বাহা রন্ধনের আবশুক, তাহা দিরা উপর উপর করিরা পাকস্থানী বসাইয়া অন্নিতে দিন্ধ করে। তাহাতে উত্তম পাকাদি হয়। লন্ধী হত্তে পাক, ব্রাহ্মণ-গণ টহলমাত্র করিতেছেন। কিন্তু যে যে ব্যক্তিগণ পাকশালাতে থাকিবেন, তাঁহাদের বাক্যাদি কহিবার ক্ষমতা নাই, মুখ বন্ধ থাকে। যে মত জগরাণপুরীতে, এখানেও সেইমত। এখানে অধিক প্রসাদ পাওয়া যায় না।

নারায়ণ দর্শনান্তর ব্রহ্মকপালে প্রাদাদি। ব্রহ্মকপালে এক-বার পিওদানে কোটাবার গয়ার ফল। যে ব্যক্তি ব্রহ্মকপালে পিও প্রদান করে, পে ব্যক্তি যদিও যাব-ব্রহ্মকণাল
ক্ষীবন আর পিওদান না করে, তাহাতেও হানি নাই। ব্রহ্মকপাল বৃহৎ প্রস্তুর, তপ্তকুত্তের পূর্ক্দিকে, অলকনন্দার পশ্চিম তটে, নারদকুণ্ডের দক্ষিণ, বিষ্ণুচক্রের উল্কর। এই উচ্চ প্রস্তুর ব্রহ্মকপাল।

তাহার উপর উঠিয়া, অলকনন্দার তটের দিকে বসিয়া প্রাথাদি করিতে অতিশ্ব শীত হইয়া কল্কম্প হয়। বিশেষত: ঐ দিন মেঘ বাতাস বরফ বরিষণ হইতে ছিল। বনাত (ও) লুই গাআচ্ছাদান দিয়া প্রাথাদি করিতে হইল। পিওদান সময়ে, পিতৃ-মাতৃ-বোড়শী করিবার সময়ে প্রেমানন্দে মগ্ন হইয়া সকল ক্লেশ শান্তি হইল। বিশেষত: ঐ দিবস স্থাগ্রহণ। কিন্তু গুনুলে স্থাগ্রহণ বেলা (এক) প্রহর সময়ে লিপা ছিল; তৎকালে এখানে স্থাদেবকে দৃষ্ট হয় না, বেলা ছই প্রহরের সময়ে স্থাদেবকে দৃষ্ট হয়। আরু আর সমরে পর্বতের শৃক্ষে রৌগ্র দেবিতে পাওয়া বার,

ভাহাতে স্বল্ল বেলাতে যে গ্রহণ হইয়াছে, ভাহা দর্শন কি **প্রকারে** হৈইতে পারে ?

ভধক্ত, স্থাক্ত, নারদক্ত, উর্জবেতক্ত, বিকৃত্ত, নাগরালক্ত (৩) সদমস্থল—এই সাত স্থানে সান করিতে হয়। গৃহীদিগের তর্পণাদি সকল কুণ্ডের সান অক্রেশে হয়। নারদক্ত রমকপালের উত্তর, তাহার উপর রমকপাল, নীচে তজপ নারদাসন আছে। ছই প্রভারের ভিতর দিয়া একটি স্থাপ্তের ভার পথ আছে। তাহাতে গেট পেছনা থাইরা পার হইয়া ঐ কুণ্ডমলে মান করিতে হয়। মল অতিশয় শীতল, হস্ত-পুদের ম্পন্ন রহিত হয়। স্থাক্ত পথ হইয়া নামিতে য়দি কিছু পা টলে, তারে অকলনন্দার প্রোত-ফলে পড়িয়া দেহত্যাগ করিতে হয়। এত কঠিন অস্ত গকল মন্ত্র সাহদ করিয়া যাইতে পারে না; কিছু গেলে কিছু চিন্তা নাই, তবে ক্লেশ আছে।

এতদেশে যদি দিবা এক প্রহর মধ্যে রহুই করিয়া লইতে পারে, তবে আহার করিতে পার, নচেৎ মেঘ রৃষ্টি বাতাস বরফ প্রতি দিবস বরিষণ হয়; তদত্তে অতিশয় আহারের ফেশ।

এখানে বাজার এবং হালওয়াইয়ের দোকান ও মহ্যাগণের থাকিবার স্থান আছে। দ্রব্যাদি অতি চুর্মূল্য, কিন্তু পাওয়া ধায়। উত্তরাধণ্ডের মধ্যে এছানে তৈল পাওয়া থান, ছয় ক্রোশ অন্তরে এক পর্কতের গ্রাম আছে, তাহা হইতে আনিত্তে হয়।

বদরীনারারণের মন্দির হইতে তিন ক্রোশ সহস্রধারা। এই স্থানে ঝারাতে সান করিতে হয়। পর্কাত সহস্রধার। উপর হইতে জল পতিত হয়। সহস্রধারার নিমে যাইয়া 'হর হর' শব্দ করিলে সহস্রধার দিয়া জল মন্তক্তে পড়ে, অতি স্থশীতল জল।

কেদারনাথ ও বদরীনারারণের গদির রাঙল তৈলক-আহ্নণ, গৃহধর্ম-পরিত্যাগী।

দর্শনাদি করিয়া সন্ধ্যার পরে থিচ্ড়ি মহাপ্রসাদ পাণ্ডা আনিরা দের। ঐ প্রসাদ পাইয়া থাকা হয়। এ তীর্থে তীর্থেপিবাস রহিত। এখান হইতে ভোটের রাজ্য নয় দিনের পথ, উত্তর-পশ্চিম দেশ। ভোট সমনাগমন হইতেছে; অতিশর বরফ, বরফের উপর হয়া চলিতে হয়। ভোটের ফুতা ভিয় অক্স ফুতা পারে চলে না, ফুশের ফুতাতে গমন হয়। উলের-পশমের বয় ভিয় অক্স বজে থাকিতে পারা বায় না। ভোটে ময়্ব-মাংস সকল জাতিতে আহার করে; বিনা ময়্ম ব্যক্তি নাই, য়ী-পুরুষ, বালক, রয়, র্বা সকলে আহার করে। ভোটে কুকুর, কম্বল (ও) বোড়া ভাল ভাল আছে। খেত-চামর এই দেশে জয়ে। গরুর লেমুড়, চামরী পরু অনেক আছে, দেখিতে অতি মুন্দর। এক এক লেকে এক একটি উত্তম চামর হয়। ত্রীলোকেরা অভিশন্ধ বলাধান, পৃষ্ঠে করিয়া দেড় মণ লাইয়া বায়, ব্যবসারে কালহরণ করে।

### ৪ জ্যৈষ্ঠ, প্রতিপদ

প্রাতঃকৃত্যান্তর তপ্তকৃতাদি সপ্ত হানে হান-তর্ণণ (e) তীর্থ-শ্রাদাদি করিয়া প্রীপ্রদরীনারারণ দর্শন, ভেট, ভোগাদির স্রব্য সকল দিয়া, প্রীমন্দির পরিক্রম করিয়া, হানে হানে দর্শন, স্পর্শন সর্বাত্র করিয়া, প্রারশ-ভোজন করাইয়া, আহারাদি হয়। প্রাক্ষণের ভোজন মোটা প্রি, কচ্রি, লাড়ু (৪) পেড়া পাওয়া গিরাছিল; ভাহাতেই ব্রাক্তণগ সম্ভোষরপে ভোজন করিল।

সন্ধার সময় দর্শনাদি হওয়া হন্ধর, বরকের জক্ত থার পুলা হয় না। রাত্তে প্রসাদ আনিয়া পাওয়া হইল। পরে বদরী-নারায়ণ-মাহারা শ্রবণ করিয়া, পাওাদিগকে যাহার যাহা শক্তি তাহা দিয়া, প্রসাদাদি লইয়া বিদায় হওয়া হইল। পাঙার নাম বদরী ও অভয়— হই লাতা। ইহাদের বাটী দেবপ্রয়াগ। ইহারা অতি ভাল মানুষ।

বদরীনারারণ-মাহায়ো ওনা হইল, যে ব্যক্তি বদরীনারারণ
দর্শনে আসিবে, অগ্রে কেদারনাথ দর্শন করিয়া, রেডকুঞ্জ (ও)
উদককুণ্ডের জলপান করিবে। বদরীনারারণ দর্শন করিবে,
ঝাড়িপথে হরিষার পছছিলে যাত্রা পূর্ণ হইবে। সওয়া লক্ষ ঝাড়ি
এক লক্ষ পর্বতের পরিক্রম হয়।

# বদরীনারায়ণ হইতে পুনরায় রন্দাবন

### ৫ জ্যৈষ্ঠ, দ্বিতীয়া

ভোৱে মঙ্গনারতি দর্শন করিয়া, প্রাতে তপ্তকুণ্ডে স্নান-তর্পণাদি। তাহার পর গবাক্ষ-হার দিয়া উত্তমরূপে দর্শন করিয়া, নারারণজির অরপ্রনাদ প্রাপ্ত হইরা, ভক্ষণাস্তর পাঙ্কেষর যাত্রা করিয়া, দশ ত্রোশ--পাণ্ড্কেম্বর। তথার আনিয়া অবস্থিতি (৪) দাল-কটী আহার হয়।

## ৬ জৈ্ছ, তৃতীয়া

পাণ্ড্কেশর হইতে দশ কোশ কুমারচটি, নীচের পথে জোষীমঠ। পাহাড়ের উপর আদিবার সময়ে পর্কতের মধ্যে মধ্যে বে পথ, তাহা কুমারচটিতে আসিয়া থাকা হইল, দাল-ভাত আহার।

## ৭ জ্যৈষ্ঠ, চতুৰ্থী

160

কুমারচটি হইতে গরুড়-গঙ্গাতে স্নান-তর্পণাদি করিয়া পিপড়কুঠাতে বাজার মধ্যে এক উত্তম বাটার উপরের মহলে অবস্থিতি।
বেলা আড়াই প্রাহর সমরে প্রহান হইল। বাইবার সময়ে স্থানাভাবে এ স্থানে অতিশর কট হইয়াছিল। উপস্থিত আহার পরিত্যাগ করিয়া পর্কতের উপরে নীচ-গৃহে জল
শিপড়-মুঠা
বাতাস বরফ জন্ত থাকিতে হইয়াছিল।
এক্স পূর্বাহে রামচরণ চক্রবর্ত্তীকে উত্তম স্থান এবং আহারাদির

ভবিষ অন্ত পাঠান হয়, সকল প্রস্তীত রাথিয়াছিল। পশ্চাৎ সকলে প্রভিষা রসুই করিয়া, উত্তমন্ত্রপে আহারাদি করিয়া অবস্থিতি করা হয়।

### ৮ জ্যৈষ্ঠ, পঞ্চমী

বে সমত জব্য দোকানদারের নিকট রাখিরা যাওরা হইয়াছিল, তাহা লইয়া তথা হইতে এক জোল পূল। তথার বে চটি আছে, তাহার এক দোকানদারের নিকট শিবরতন বাবু কাঠের কাটারি রাখিয়া গিয়াছিলেন, তাহা লইয়া তথা হইতে তিন জোল নক্ষ-প্রয়াগ। পথমধ্যে তেজবনের ছড়ি জব্ম করিয়া, নক্ষ-প্রয়াগ পছছিয়া, য়ান-তর্শণাদি করিয়া, হিত হইয়া আহারাদি করিয়া, নির্কিণী লওয়া হইল। এই

পিপড়কুঠী হইতে আট ক্রোশ ক্ষেত্রণাল। তথায় গমনকালীন

## . ৯ देनार्छ, वछी

পर्धमाधा चालि-वलवी लर्मन ।

নল-প্ররাগ হইতে দশ কোশ গৌবিলকুঠী। তথার সাত আট দোকান (ও) ক্লুলের তাল ঝরণা আছে। অখখ-বটর্কের ছারাতে রহুই হর। আহারাদি করিরা হুই ক্লোল আসিরা আলমোড়া পাহাড়ে বাইবার পথ। এখান হইতে দশ কোশ পাহাড়। ঐ পাহাড়ে ছাউনী এবং ডাক-ঘুর ও ক্লালেক্টর মাজিটর আছে। সাহেবদিগের বালালা, সহর-ছুল্য হান, সকল অবাদি পর্কত মধ্যে পাওরা বার, মনোরম ছাল ছইরাছে। ঐ পথের পূর্ক্সিনকে ক্লিকে জাসিরা এক নদীর ডটে ধাকা হইল।

## ১০ জ্যৈষ্ঠ, সপ্তমী

উক্ত নদীর তট হইতে পাঁচ ক্রোশ আসিয়া কর্ণ-প্রদাগ। এই সক্ষমন্থণে স্থান-তর্পণাদি করিয়া কর্ণমূনির আশ্রম ও মৃতি দর্শনান্তর, এখানে বালার ও হালওয়াইয়ের যে দোকান কর্ণপ্রমাণ আছে, তাহাতে আহারের সকল ক্রবাদি পাওয়া বায়। প্রয়াগ জন্ত প্রাম্থান-ভোলন, তদন্তে সকলে জলখোগ করিয়া পায় হওয়া হইল। খোলা ঘুচুইয়া কাঠের উভম পুল করিয়াছিল, কিন্তু ঐপুল একেবারে হই মুখ ভয় হইয়া জলে পতিত হইয়াছে, তজ্জ্জু পুনর্বার ঝোলাক্ষতি পারাপার জন্ত এবং স্থাছিতে পার হইয়া, পুর্বা-পারে ভাল বাজার আছে এবং ক্রমিদারদিগের ও আর আর মনেক মহুবোর বসতি। ক্রবাগামগ্রী

পাওয়া যায়, পরে আটে ক্রোশ যাইয়া শিম-শিম-কুঠী কুঠী, তথায় দশ দোকান আছে। এই স্থানে আবস্থিতি হইয়া আহারাদি হয়।

## ১১ জ্যৈষ্ঠ, অফমী

শিনকুঠী হইতে আট ক্রোশ মেলচোরী। তথার পছছিরা ঝাপানওরালা ও কাণ্ডি-ভালারা বিদায় হইল। এই ঝাপান ও কাণ্ডিওরালাদিগের চিনথাকী চিকলি পর্যন্ত লইরা
বাইবার জন্ত অনেক মত কহা হইল এবং
এথানের ঝাপান যত টাকার যাইবে, ভাহা হইতে পাঁচ টাকা
অধিক পাইবে। তাহারা কোন মতে চারি দিবসের পথ নীচে
আদিতে বীকার হইল না। ভাহার কারণ কহে বে, "নামরা
ইহার নীচে গেলে বাঁচিব না; নীচে অভিশ্ব রৌজ, আমাদের

বরদাত হইবে না, সকলের ব্যামো হইবে। আমরা বরফদেশের
পাহাড়ের মুখ্বা, মেলচৌরীর নীচের জারগা, আমাদিগের কোন
কমে স্থ হইবে না।" এজন্ত রাপান ও কাণ্ডিওরালা বিদার হইল।
প্ররায় এখানে ঝাপান ও পিঠুলওয়া হইল। এই অবকাশে
আহারাদি করিয়া মেলচৌরী হইতে পাঁচ
কোশ লোহাগড়। যে পাহাড়ে লোহার
আক্র আছে, ঐ সকল লোহা গলাইবার স্থান হইয়া আম্বাগের
নিকট বাত্রে অবস্থিতি ভইল।

## > ६ रेकार्छ, नवगी

প্রাতে উঠিয়া তথ্য হইতে ছই ক্রোশ আমবাগ, যথায় একজন ডাব্রুনির আছেন। এথানে কয়েক থানা দোকান আছে, চাল, দাল, আটা, গুড়, য়ৢত, লবণ (৩) তামাক পাওয়া যায়। তথা হইতে চৌড়াকুঠী পিণড়চট্ট ছয় ক্রোশ, তথায় আসিয়া আহায়াদি কয়া হয়, কেবল নিবয়তন বাবয় রয়ই হইল না। তাঁহায় ড়ত্য পশ্চাৎ ছিল, পাকছালী ইত্যাদি সকল প্রবা তাহায় হায়ে, আয় কালীবাবয় পিসী পশ্চাতে ছিলেন। আময়া সকলে অয়াহায় কয়িয়া তাহায় পয় তিন ক্রোশ আসিয়া বড়া-কেদায়। এথানে কেদায়নাথ আছেল ক্রোশকার আমাদের ঝাপানাদি না দেখিয়া কিঞ্চিৎকাল বিশ্রাম কয়িতে হইল। তথায় পশ্চাতে মুখোপাধ্যায় প্রভৃতি বাহায়া ছিলেন, সকলে একঅ হইয়া সয়্ক্যা আগত হইলে, সকলে একঅ হইয়া কয়া আগত হইলে, সকলে একঅ হইয়া ঐ বালায় হইতে মিষ্টায় লাইয়া, জল খাইয়া বাপান অবেধনে

গমন করা হইল। বিদেশে পর্কতের পণ, মধ্যে মধ্যে নদী আছে— ভাছাতে জলের ভিতরে কেবল পাণর। রাত্রিকাল, মন্থ্রোর গমনা-গমন নাই, আমরা করেক জন মন্থ্য পথে চলিতেছি মাত্র; কোণা পথ কোথা বাইতেছি, ভাছার কিছু ঠিকানা নাই, আন্দাজে আন্দাজে পথের অন্থ্যান করিয়া হুই ক্রোশ আসিয়া এক নদীর ভীরে চটি আছে, ভাছার নিকৃটে ঝাপান ছিল, বছকটে সকলে একত্র হওয়া হইল। শিবরতন বাবু,রস্থই করিয়া আছার করিলেন। রাত্রে অবস্থিতি হইল।

## ১৩ জ্যৈষ্ঠ, দশমী

উক্ত নদী-তীর হইতে কানাগির চটিতে আহার করিয়া ঐ স্থানে অবস্থিত।

### ১৪ জ্যৈষ্ঠ, একাদশী

কানাগির চটি ইইতে আট ক্রোশ কৌশল্যা নদীর ধারে চটি,
নদীর তীরে চারি দোকান আছে, তথার এক ঘরে থাকিরা তাহার
নিকট আমবাগ ছিল, তাহাতে আহারাদি হয়। রোজের কিছু কয়
ইইলে পরে নদী পার ইইরা এক দোলা আছে ভাইাতে ছলিতে
হয়, তাহার পর এক কৌশল্যা নদী সাতবার পার ইইতে ইইল।
চারি ক্রোশ আসিরা এক চটি নদীর তীরে আছে, তথার ঝাপান
না দেখিতে পাইরা প্রায় সন্ধ্যা হয়, অত্যন্ত ভীত ইইরা নদী পার
ইইলাম। নদীতে অভিশর প্রোত, অলমধ্যে পাধর, ভাহাতে
ছেতলা, পা দিবা মাত্র পড়িতে হয়, পড়িলে জলপ্রোতে ভাসিরা
য়াইতে হয়, অনেক সাবধানে মদী বারবোর পার ইইয়া প্রতির
মারের ধারে, কথন উপরে, কথন নীচে হইরা খুলিতে পর্যাত উপরে

এক বাবাজির আথড়া ছিল, তাহার নিকট ঝাপান ছিল, তথা আদিরা পত্তিলাম। পরে রামচরণ আদিল, তাহার পর বহু বিলম্বে নবক্ষণ প্রভৃতি চারি জন পত্তিল। তাহাদের বাচনিক ভনা হইল, মুখোপাধায় (৩) তক্ত মাতা প্রভৃতি পাঁচজন পিছের চটিতে রহিয়াছেন, একাদশীর ক্লেশ জন্ত নদী পার (৩) পর্বত চড়াই করিতে পারেন নাই। ঐ দিবদ সকলে একত্ত হওয়া হইল না, পর্বত উপরে বনের ধারে অগ্নি আলিয়া থাকা হইল।

পাহাড়ের মধ্য হুইতে আট ক্রোণ আদিয়া টিকলি, এ থানৈ বাহার ও ছোকান আছে, সকল দ্রবাদি পাওয়া যায়। থাকিবার

চিকলি 

ক্ষিন ভাৰ ভাৰ থার দোকাননার্দিগের আছে।

দলি, ছয়া, নিটান, পকার এবং আর থাক্সল্বর

তরিতরকারি সকল পাওয়া যায়। এই অবধি পাহাড় ত্যাগ ইইলা
বুন্দাবন যাইবার গাড়ীর রাস্তা পাওয়া ইইল। এথানে ঝাপান ও পিঠু বিদাস করিয়া গাড়ী করা ইইল। গাড়ীইত্যাদি করিবার

অবকাশে সকলে একতা হওয়া ইইল। একতা ইইলা আহারাদি
করা হয়। এথান ইইতে রামনগকেল বালার ছই জোন, পাহাড়ের

রামনগরের বাজার বিগায়। ঐ পাহাড়ে পন্টন ছিল, একংণে অনেক সাহেবের বাজালা আছে। অতি উত্তম স্থান, সহর-তুলা, বাজারে সকল জব্য পাওয়া বায়। এই সকল দেখিয়া সন্ধাগতে গাড়ীতে জ্বাদি তুলিয়া গুমন করা হইল।

### ১৬ জ্যৈষ্ঠ, ত্রয়োদশী

টিকলি হইতে জাট কোশ চিন্ধা, এই স্থানে পূর্বে গঞ ২৬১ এবং বাজার ছিল, এই থান হইতে গাড়ীতে বাইতে হইড, এক্ষণে

চিনধা

চেকলি চটি হইরাছে। এ স্থানে, বাজার ও

দোকানাদি আছে—ভদ্মভাবে। অতি প্রাতে

এথানে পছছিরা শিব-মন্দিরের নিকট অর্থ-মূলে অবস্থিতি হইরা
আহারাদি করিরা নিদ্রা। টীমন চাকর প্রভ্রমে পূর্ব্ব দিবদ

গিয়াছিল, এথানে একত্র হইল। সন্ধার প্র গমন।

## ১৭ জ্যৈষ্ঠ, চতুর্দশী

চিনথা হইতে পূর্বা দিবস সন্ধাগতে গমন করিয়া বার ক্রোশ কাশীপুর প্রাতে প্রছিয়া এক আম্রবাগানের মধ্যে অবস্থিতি। এই স্থানে আহারাদির উস্থোগ করা হইল। কাশীপুর কাশীপরের সহর আম্বাগান হইতে অর্দ্ধ ক্রোশ অন্তর্বশত: অনেক ধনাচ্য মুসলমান এবং বেণিয়াদিগের উত্তম উত্তম বাডীগর আছে। সহর মধ্যে বাজারে সকল জিনিদ পাওয়া যায়, তরকারি, আন্র, তরমুজ, খরমুজ, কাঁকড়ি ও ফুটি পাওয়া গেল। হালভয়াইয়ের দোকানে দধি ছগ্ধ পেড়া বরফি লাড় জিলাপি পুরি কচুরি ইত্যাদি জিনিস এবং আর আর খাস্ত-ক্রব্য লভয়। হইল। আরে কাপড লুই কম্বল, পিতল কাঁদার বাদন, লোহার ও কার্চের জিনিদের দোকান আছে: এ স্থানে তহশীলদার ও কোতায়াল আছে। পূর্বে জজ, মাজিটর, কালেক্টর ও ক্ষিশনরের কাছারি এবং পণ্টন ছিল। একণে সকল কাছারি ও দৈল এবং দৈলাধাকগণের অফিদ সকল এখান হইতে আট ক্রোশ নৈনিতালের পাহাতে হইরাছে। এ পাহাতে নৈনিতাল মামে দেবী আছেন-প্ৰতাক। এখানে এক কণ্ড আছে, কুণ্ডে

ন্ধান (ও) দেবীদর্শন। মহাপীঠস্থান, তালেখর তৈরব পর্বত উপরে

আছেন। ছাউনী হইতে তুই ক্রেশ

উচ্চে দেবদেবীকুও, অতি মনোরম স্থান।
এখানে বাঙ্গালি বাবুলোক আছেন, ডাক্যর আছে, বাজার
বসাইরা নগর তুলা স্থান হইরাছে। নৈনিতাল তীর্থস্থান। পুর্বে মন্থ্য পশুভরে এবং বিকট পথ জন্ত কেহ গমন করিতে পারিত না। এক্ষণে কাছারি সকল এবং সৈন্তুগণ থাকাতে উত্তম পথ
হওরায় সকল মন্থ্য জনারাদে গমনাগমন করিতেছে।

## ১৮ कार्छ, পूर्वभागी

কাশীপুর হইতে সম্বলম্রাদাবাদ চৌদ্দ ক্রোশ। বেলা ছন্ত্র দণ্ড
পতে পছছিন্না নুদীর তীরে এক আত্র-বাগান
সবল-মুরাদাবাদ
মধ্যে অবস্থিত ইইনা আহারাদির উল্পোপ
হইল। নদীতে স্থান-তর্পণাদি করা হইল। সম্বলমুরাদাবাদ নগরে
গ্রাম, হাট, বাজার (৩) ধনাচ্যগণ আছে।

## ১৯ জ্যৈষ্ঠ, প্রতিপদ

সম্বন্ধবাদাবাদ হইতে পূর্ব্ধ দিবস সন্ধার পূর্ব্বে গমন করিয়া
শিরসা বার কোঁশ, প্রাতে পহছিয়া বাগান মধ্যে অবস্থিতি হইল।
শারসা আহারাদি করিয়া নিজা হয়। এই মত দিবাতে
রৌজ জন্ত না চলিয়া সন্ধার পূর্ব্বে গমন,
রাজে জই প্রহরের পূর্ব্বে বেখানে ভাল কৃয়া এবং স্থান পাওয়া
বাইত, সমভ্যারে জলবোগের জ্ববাদি আছে, সকলে জল
খাইয়া জই ঘণ্টা বিশ্রাম। ইতোমধ্যে বাহার বেমত নিজা হউক,
ভাহার পর উঠিয়া গমন। রাত্রে আসিতে কিছু ভয় নাই, কেহ
২৬০

কাৰার হিংদা করে না, চলিতে চলিতে যাহার নিদ্রাকর্ষণ হইত, এক বৃক্ষ-মূলে কাপড় পাতিয়া শয়ন করিত, পরে সঙ্গী মিলিত, এই মতে উত্তম চলা হইত, কাহারও ক্লেশবোধ হইত না।

## ২০ জ্যৈষ্ঠ, দ্বিতীয়া

শিরদা হইতে গোমা চৌদ কোশ, বেলা এক প্রহর সময়
প্রছিয়া, এক বাবাজির আশ্রম আছে তাঁথার
গোনা
নিকট থাকিয়া, আহারাদি করিয়া, বেলা চারি
দুপ্ত থাকিতে গুমন।

## ২১ জ্যৈষ্ঠ, তৃতীয়া

গোমা হইতে পূর্ব দিবদ বেলা চান্নি দণ্ড থাকিতে রওনা
হইয়া বার ক্রোশ দানপুর, বেলা চারি দণ্ডের
দানপুর
সময় পছছিয়া, আম্বাগান মধ্যে অবস্থিতি।
আহারাদি করিয়া নিজা হয়।

## ২২ জ্যৈষ্ঠ, চতুৰ্থী

দানপুর ইইতে কোয়েল দশ ক্রোশ, পূর্ব্ধ দিবস বেলা চারি
দশু থাকিতে রওনা ইইয়া প্রাতে কোয়েল সহরে পহছান ইইল।
এথানে জল, মাজিপ্টর, কালেক্টর, সদরকোয়েল
আমিন, সদর-আলা (ও) মুনদেকের কাছারি
আছে, সৈল্পগণ এবং সৈল্পাধ্যক্ষ সাহেবগণ আছে। সৈল্পদিগকে
প্রতি দিবস যুদ্ধকর্মে স্থাশিক্ষত করাইতেছে। নৃতন সৈল্প যুদ্ধকর্মা শিক্ষা করিতেছে। প্রেডের মাঠে প্রতি দিবস কাওয়াজ
ইইয়া বাড় ঝাড়িতেছে, বাল্পকরগণ রণবাল্প করিতেছে। রশবাল্প

সৈঞ্চগণ উৎসাহিত হইয়া উত্তমন্ত্ৰপে যুদ্ধকাৰ্য্য সাধন কৰিতেছে। গাঁহেবদিগের অনেক বাঙ্গালা এবং বাগ-বাগিচা আছে, তাহাতে নানাবিধ শাঁক-সব্জি জন্মাইতেছে।

সহর-মধ্যে হানে স্থানে বাজার এবং পরাই আছে। লাল-কুরতির বাঁজারে কপি, আলু, মটরগুটী, পিয়াজ, রম্মন (ও) মাংস অনেক বিক্রের হয়। আর আর বাজারে স্কল দ্রাদি আছে। তরমূল, ধরমূলা, কাকড়ি, ফুটি ইত্যাদি ফল-ফুলারি দ্রবাসকল এবং শাক-সব্জি তরকারি সকল আর হালওয়াইদিগের দোকানে নানামত মিষ্টার. প্রকার ক্রব্যে দোকান সাজান আছে। অস্তান্য ক্রব্যের দোকান আছে, অনেক সাহেবলোক এবং বাঙ্গালি আছে, স্থতরাং সহর স্থাভিত। শ্রীশ্রীত কাুলীবাড়ী আছে, যেমতরূপ ষ্টেশনে এখানেও কালীবাড়ী সেইমত। বাঙ্গালি বাবুদিগের চাঁদাতে কালীবাড়ীর থরচ। যে কেহ বাঙ্গালি এতদ্বেশে, অনাশ্রয় কি ভিক্নার্থে অথবা বিবেক হইয়া দেশ-ভ্ৰমণাৰ্থে আইসে, তাহাদিগকে কেহ বাদাতে ্তান কি কল না দিয়া ঐ ধর্মশালাত্তরপ কালীবাড়ী, তাহাতে এক জন একচারী আছেন, বাঙ্গালিব্রাহ্মণ— তথায় ঐ চাঁদার থরচে থবচ-পত্ৰ পায়। কিন্তু যে কেহ বাঙ্গালি কালীবাটীতে উপস্থিত হইবে, অব্র পাইতে ও থাকিতে স্থান পাইবে, তাহার অন্যথা নাই।

এথানে বাধাকপি বড় বড় পাওয়া বার, বৈশাধ জৈঠ পর্যান্ত কপি থাকে, তাহার কারণ শীত থাকে।

সহরু ইইতে জুই ক্রোপ বাহিরে বাইয়া এক বাগান আছে, ঐ বাগানে বাইয়া লান-পূঞা এবং আহায়াদি করা হইল। কোয়েল উত্তম স্থান।

246

## ২০ জোষ্ঠ, পঞ্চনী

কোয়েল হইলে পূর্ব্ব দিবদ বেলা চারি দণ্ড থাকিতে রওনা হুইয়া বোল ক্রোশ বেশরা। তথায় বেলা ছয় দণ্ডের সময় প্রচান হইল, এক বড় পুষ্ঠিণী আছে, ভাহার /বশবা তিন দিকে সানবান্ধা ঘাট। 💩 প্রক্ষরিণীর দক্ষিণদিকে আথডাধারী রামাৎ বৈফাবের এক দেবালয় আছে: অতি সুশীতল ছায়া, ঐ স্থানে অবস্থিতি করিয়া আহারাদির উল্পোগ করিয়া বাছার-ভুমণে গুমুন হটল। বার্ছার প্রামের মধাস্থলে। ৰাজারে অনেক দোকান আছে, সকল দ্রবাদি পাওয়া যায়। হালওয়াইদিগের দোকান সকল আছে, ভাহাতে লাড় . পেড়া, বর্ফি, জিলাপি, অমৃতি, রুসবড়া, মুগদল, মগধ, শেও, সকরপালা, পুরি, কচরি, পাকড়ি, তরকারী, দাঁধ, ছগ্ধ, রাবড়ি, পুরা ইত্যাদি দ্রবা-সকল (ও) আচার মোরবা সকল রকম পাওয়া যায়। তরি-তরকারি সকল আছে। এতুল বুলাবনের মধুরা-মগুলের সামিল। বলদেবের क्रीड़ाश्रात । এशान अनक प्रतावत्र आह् । माधुनन, मझामी. অবধৃত (ও) বৈফবগণের আখড়া আছে। অনেক মেলাদি হয়. ব্যাসদেব তপস্থা করিয়াছিলেন।

পুছরিণীর চতুম্পার্ষে ব্রাহ্মণদিগের বসতি। পুছরিণীতে অনেক
মংস্ত আছে। এই স্থানে নিষমূলে আহারাদি করিয়া জলছত্ত্রের ঘরের
পশ্চিমে মহাবীর হনুমানজির মন্দির, অতি স্থানিত স্থান, তাহাতে
দিবানিত্রা হইল। পরে নিজাভলে পুছরিণীর
হন্মানজীর মন্দির
ঘাটে বসিয়া পশুপক্ষাদিন এবং মংস্তের
কৌতুক দেখা হয়। ইতোমধ্যে শিবরতন বাবু সিদ্ধি তৈয়ার
করাইয়া সকলকে কিঞ্জিৎ কিঞ্জিৎ পান করাইলেন। মুখোপাধাার,

রামচরণ (ও) নবক্লফ অধিকস্ত পান করিয়া বিভোর হইরা উন্তের দায় হইলেন। রাত্রি ছই প্রহর পর্যান্ত এথানে অবস্থিতি হয় । তাহার বিশেষ কারণ গাড়োয়ানের ভেদবমি হইয়া পেটের বেদনাতে অতিশয় কাতর হইয়াছিল। নানা প্রকার মৃষ্টিযোগের ভারা আরাম করিয়া রাত্রি ছই প্রহর গতে গমনোভোগ ইইল ।

## २८ देकार्छ, यछी

বেশরা হইতে পূর্বরীত ছই প্রহর গতে গমন করিয়া ছয় জোশ

আসিয়া মানসরোবর, তথায় প্রভাত হইল। এখনে অনেক মন্থ্রের

মানসরোবর ও বসতি আছে। এজভূমের মধ্যে মানসরোবন

মার্চপ্রাম বরের নিকট মার্চপ্রাম; মার্চপ্রামে তহনীল
দারের কাছারি, তথা হইতে হমুনার কেনীঘাট চারিজোশ।

য়মুনা নৌকাতে পার হইয়া কেনীঘাটে স্নান-তর্পণাদি করিয়া,

শীর্লাবনধামে শীশগোবিন্দ জিউ ও শীশগোপীনাথ জিউর

শীমন্দির দর্শন করিয়া, শননক্মার বন্ধর কুঞ্জে যথা বাসা তথায়
প্রছিয়া পূর্ব্ধমত আহারাদি করিয়া, কিফিং শ্রমণান্তি করিয়া,
বৈকালে র্লাবনের বন্ধ্বর্গের সহিত সাক্ষাং করিয়া, প্রীশিক্ষত

দিগের দর্শনাদি করিয়া রাত্রি এক প্রহর গতে বাসায় আসিয়া

জল্বোগ করিয়া স্থাধ নিত্রা।

ষদবধি ত্রীবৃন্ধাবনধাম হইতে তীর্থবাত্রা জন্ম উত্তরাধণ্ডে গমন হইয়াছিল, তদবধি ছই সন্ধ্যা আহার, কি শ্যা পাতিয়া বালিশ মন্তকে দিয়া শয় হয় নাই; কেবল বালুকাময় ভূমিতে এবং পাহাড়-পর্কতের বনে জললে হিংঅজন্তিরে সমুধে ত্রমণ-গমন (ও) ছোট বড় পর্কত সকল লজ্বন করিতে হইয়াছে। এমত এমত

পর্বত আছে, ক্রমিক চারি পাঁচ দিবদ-প্রতি দিবদ দশ বার ক্রোশ ক্রিরাচড়াই ক্রিরাসীমাপাওরা যায় না। ঠিক খাড়া চড়াই কত স্থানে আছে, উচ্চে উঠিবার সময় এক, এক পদকৈণে মৃত্যু কালের খাদের ভার নি:খাদ ত্যাগ করিতে হয়। বিনাষ্টিতে যুবক. কি বৃদ্ধ, কি বালক কাহারও পদক্ষেপ করিবার সাধা নাই। উত্তরাই অর্থাৎ নামিবার সময়ে ততোধিক কেব। বিশেষতঃ পর্বাতে শীতের অত্যন্ত প্রভাব, আহার-দ্রব্য বিরির দাল, যব, গম (৩) মন্ধ্য মিলিত: আটা—ইহাই সর্বত্ত পাওয়া যায়। এই আহার করিয়া একলক পর্বত (ও) সওয়ালক ঝাড়ির পরিক্রম করিয়া শ্রীরুকাবন ধামে কিম্বা হরিদারে আসিতে হঁয়। বালুকাময় ভূমিতে এবং পর্বতের প্রস্তর ঘর্ষণে (ও) বনের কণ্টকে পদ ক্ষত্বিক্ষত হইয়া फेंटर्ड, स्मरह अधियांक थारक, त्रत्र-त्रक किछ्टे स्मरह थारक मा. বর্ণ বিবর্ণ হয়, আফুজি বিকৃত হয়, এত কট করিলে উত্তরাখণ্ডে বে সব শ্রেষ্ঠ তীর্থ আছে, তাহা দর্শন-ম্পর্শন করিতে পারে। ভীর্থাদি ভ্রমণ করিলে নানাদেশ এবং নানামত মহুষ্য (ও) ভারাদিলের ক্লত বাবহার দেখা যায়। পার্বভীয় ব্যক্তিগণ পভাবালী, মিথ্যাবাকা কলাচ কহে না। চৌৰ্যাবৃত্তি কিছা অপ-হরণ ও বিখাস্থাতকতা কিখা মিত্রলোহী কর্ম জানে না। সকলে পার্ক্তর অনুসংখারণের শ্রম করিয়া দিনপাত করে। খ্রীলোক সকল অধিক প্রম করে। ক্ষেতিকর্ম জীলোকে করে। পুরুষে কেবল হাল করিয়া জমি জুতিয়া দের। পর্বতে অকালমূত্য নাই। পিতাসত্বে পুত্রের মৃত্যু হয় না। এজ্ঞ বিধবা জী অৱবয়ন্তা নাই। মংক্র-মাংস আহার সকল ভাতির ব্যবহার আছে। পরিধের-কর্মন, আভরণ আপন শ্রম বারা বাহা

করিতে পারে তাহাই করে। স্ত্রীলোকেরা ভ্রষ্টা নহে, আর তাহাদের দ্বিধা মন নাই। ব্বতী স্ত্রীগণ পর্কতে বনমধ্যে একাকিনী ভ্রমণ করিতেছে, বনমধ্যে যে সমস্ত উত্তম উত্তম পূপা পাইতেছে, আপনি বেশভ্রা করিতেছে। আহারের কালাকাল নাই, ক্ষ্মা হইলেই আহার করে, কটা মাংস প্রায় সমভ্যারে থাকে, তত্তির বনফল আছে। কাঠ আহরণ করিতে সকলেই বনভ্রমণ করে। যাহাদের অঙ্গে শত টাকার আভরণ আছে, তাহারাও কাঠের বোঝা পৃঠে বাহ্নিয়া বিক্রম করিতেছে। তাহাদিগকে জিজ্ঞানা করিলাম, "তোমাদের এত বৈভব, তবে কি জ্ঞ্ঞা কাঠিব বোঝা পৃঠে বাহ্নিয়া বিক্রম করিয়া মারিতেছ ?" তাহারা ওনিয়া হাসিয়া কহিল, "আমাদের আভরণ বাহা দেখিতেছ, ইহা আমার শ্রম দ্বারা হর্মছে। আমরা আপন শ্রমে এবং হাগ-মের পালনের দ্বারা অলহ্বানি করি। ক্ষেতিকর্ম্মে বেশ্রম করি, তাহাতে বে অর ক্রেম্ম, সকলের আহার এবং রাজ্য দেওয়া হয়।"

'বে বে পর্কতের দিরোপরি শ্লে বসতি আছে, তাহাদিগকে 
অনেক নিরে আসিরা জল লইরা রাইতে হয়। ত্রীগণ জলের 
কলস কান্ডিতে বসাইয়া পৃঠে করিয়া ছই জোশ পর্যান্ত উঠে, 
অধিক হইলেও মাইতে হয়। জল যদি ররণা কি গলা ইত্যাদিতে 
না থাকে, তবে ক্য়ার জল ভূলিতে এক শত হাত রক্ষ্যু খাটাইতে 
হয়। উত্তরাধতে প্রায় সর্ক্য জল আছে, দৈবাৎ কোথাও 
জলের কই, আর বে জব্যের আটার কটা হইবে, প্রতি দিবদ 
পিসিয়া লইতে হইকে। গো মহিব ছাগ মেবাদি বাহা পালিভ 
আছে, তাহার সেবাকরা, গৃহে বে পার্কতীর ধায় জায়তেছে, 
ভাহাদিগকে উদুধল-মুবলে তওুল করিতে হয়। এত শ্রমে গুহ-

কার্য্য করিতৈছে। ইতোমধ্যে আপন আপন সন্তানের প্রতিপালন করে, অতি দৈয়দেশ, অর্থহীন।

কেদারনাথ গমনে চারি দিবসের পথ কেবল গোলাপের গাছ, পুলা প্রাকৃটিত হইরা বন-পর্বাত স্থানান্তিত, গান্ধে আমোদিত, আর পথে পথে কত শত স্থানে কুলা শেকালিকা করবী ইত্যাদি আছে। বদরীনারারণ বাইবার পথে তিন দিবসের পথ সেওতি, ছই দিবসের পথ গোলাপ পুলোর বন, বরাক ফুলের গাছ সকল, জবাপুলোর স্থার অন্তর হইতে দৃষ্ট হইতেছে,—এইরপে পর্বাত সকল স্থানাভিত। পর্বতে ভ্রমণ করিলে ছঃধ ক্লেশ মারা মোহ কিছু থাকে না।

## २৫ कार्छ, मलगी

ত্রীবৃন্দাবন ধামে কেশীঘাটে স্নান-তর্পণাদি করিরা ত্রী৮গোবিন্দ, গোপীনাথ, মদনমোহন, স্থামস্থলর, রাধানামোদর, গোপেশব-কৃষ্ণচন্দ্র, রাধারমণ ইত্যাদি এবং ছয় গোস্বামীর ও চৌষটি মোহস্তের স্মাক্ত এবং বেণুকুপ (ও) ব্রহ্মকুণ্ডের প্রদক্ষিণ করিয়া বানার আসিয়া কলবোগ, পরে আহারাদি সম্পন্ন হইলে পুনর্কার বৈকালে দর্শনবাত্রা।

## ২৬ জ্যৈষ্ঠ, অফীমী

ক্ষোর-কর্মাদি তিন মাহা তীর্থভ্রমণে করা হয় নাই। ক্ষোর-কর্ম করিয়া তীর্থাস্তর স্নান-তর্পণ, ব্ধাশক্তি কিঞ্চিৎ দান (৬) ব্রাহ্মণ-ভোজনাদি করাইয়া নিতা নিয়মিত দর্শন-স্পর্শন।

সন ১২৬২ সালের ২৫ জৈটোবধি ১৫ মুাল পর্যান্ত শ্রীঞী৺ বুলাবন-মপুরা-বনধাতা ইত্যাদি দর্শন, স্পর্শন ও ভ্রমণ।

## দ্বাদশ-বন-পরিক্রম

শ্রী শিব্দাবনের এজ ভূমি ৮৪ চৌরাশি ক্রোশ পরিক্রমের, সন ১২৬২ সালের শ্রী শুল লাটিমীর পর দশমীতে শ্রীধাম হইতে যাত্রা করিয়। যাত্রিগণ বন পরিক্রম করে। গোকুলত্ব গোত্রামিগণ কার্ত্তিক মানে বন পরিক্রম করেন।

## ২২ ভাদ্র, রুহম্পতিবার, দশগী

শ্রী⊌বুন্ধাবন ধাম হইতে বেলা আড়াই প্রহরের পর যাত্রা করিয়া ১ এক ক্রোপ ভোজনটিলা, এথানে এক্টিঞ্চ রাখালগণ সমভ্যারে মুনিদিগের স্থানে অন্নভিক্ষা করিয়া ভোজন করেন, এইজ্ঞ ইহার নাম ভোজনটিলা। এখানে এক মন্দির উচ্চ ভোৱনটিলা টিলার মধ্যে আছে, তাহাতে শ্রীক্লফ গোর্চের বেশেতে বিরাজিত। তাহার পরে অর্দ্ধ ক্রোশ অক্রুর্ঘাট। এই श्रात्म यएकाल अकृत श्रीकृष-वनामवाक कश्म त्राकात ध्रश्रास्त्र ছলে রথারোহণে মধুপুরে লইয়া যান, এই ৰক বৰাট স্থানে যমুনা-তটে রথ রাখিয়া অক্রে ষমুনাতে श्रान-उर्भगामि करतन। এथान मिनत मर्रा औक्रक्ष-वनाम्ब-অক্রের প্রতিমূর্ত্তি আছে, এখানে যমুনার জলম্পর্শ করিতে হয়। পরে ২॥ • ক্রোশ মথুরামণ্ডলে ভৃতেখর শিব আছেন তাঁহার এবং পাতাল-দেবী অর্থাৎ মাহেশ্বরী দেবী দর্শন করিয়া ঐ রাত্রি বুক্ষমূলে স্থিতি হইল। এক প্রহরের পর রুষ্টি আবরম্ভ হুইল, ভাহাতে महाक्रिम ।

#### ২৩ ভাট্র, শুক্রবার, একাদশী

প্রাতে ভ্তেখর হইতে গমন করিয়া ও তিন ক্রোশ মধুবন।

এ বনে ক্লফকুণ্ড নামে এক পুছরিনী আছে। তাহাতে স্নানতর্পণাদি ও মধুবিহারী ঠাকুরের দর্শন করিয়া

ছই ক্রোশ তালবন, একণে ছইটী প্রাচীন
তালবৃক্ষ আছে। পরে ছই ক্রোশ কুমুদবন, কুমুদবিহারী ঠাকুর,
কুমুদকুণ্ড (ও) কপিলমুনির মুর্তি দর্শন—এই সাত ক্রোশ পরিক্রম
করিয়া মধ্বনে আসিয়া থাকা হয়।

#### ২৪ ভাদ্র, শনিবার

প্রাতে মধুবন হইতে ছই ক্রোল শাস্তম্কুণ্ড, এই কুণ্ডে স্থানতর্পণাদি করিয়া ঐ পর্কতের উপর মন্দির মধ্যে শাস্তম্বাঞ্ছার এবং
শাস্তম্বিহারী ঠাকুর দর্শন করিয়া ভিন ক্রোল
বাসিয়া বেহলাবন (ও) বেহলাকুণ্ড। এই
কুণ্ডের নিকট বেহলা গাতী আছে, তাহা দর্শন এবং প্রীরাধাক্রকা
দর্শন করিয়া ঐ বনে স্থিতি।

#### ২৫ ভাদ্র, রবিবার

প্রাতে বেছ্লাবন হইতে e ক্রোল রাধাক্ত, স্থামক্ত (৩)
লিতা প্রভৃতি প্রধান অষ্ট্রনধীর কৃত। ইহার পরিক্রম করিতে
অষ্ট্রনধীর কৃত
পঞ্চক্রোল পরিক্রম। পূর্ক্লিকে স্থামকৃত,
পশ্চিমদিকে রাধাক্ত, তাহার ঈলানে নলিতাক্ত। এই কৃত্তের ভিতরে মধ্যস্থলে মপ্তলাক্তি আই স্থীর আটি
কৃত। স্থামকৃত (ও) রাধাক্তের মধ্য দিয়া প্রতরের সেতু আছে,

তশ্বধ্যে এক তমাল বুক আছে, মধ্যস্থলে রাধাক্ষণ্ডের চরণ-চিক্ত বেদীর উপরে স্থাপিত আছে। এই শ্রামকুণ্ডে (ও) রাধাকুণ্ডে সেতুর ভিতর দিয়া <del>জ</del>ল গতায়াত করিতেছে, ডুব দিয়া ভিতরে ছুই কুণ্ডে গমনাগমন করা যায়। রাধাকুণ্ডের চতুম্পার্শ প্রস্তরে বন্ধন এবং সোপান লালাবাব করিয়া দিয়াছেন। কুণ্ডের উত্তরে শ্রীরাধার প্রতিমূর্ত্তি আছে, তাহার নিকটে দাস গোৰামীর সমাজ। পুর্ব্বোত্তরে গোবিন্দজিউর মন্দির। ত্রীরন্দাবনে যেমত ছয় গোস্বামীর স্বোর দেবালয় আছে, এথানেও সেইমত (शांविन्म, (शांशीनांव, ममनरमार्न, त्रांधात्रमन, त्रांधानारमामत्र (१) খ্যামত্ম্পর প্রভুতি শ্রীমৃর্ত্তির দেবা এবং অন্ত অন্ত ভুক্তগণের দেবালয়, অতিথিশালা (ও) সদাব্রত ইত্যাদি আছে। এই কুণ্ডের চতুপার্শে বেষ্টিত বৈষ্ণবগণের ভর্মনের কুটার আছে, রাধা-কুণ্ডবাসী ব্রহ্মবাসিগণের বসতি আছে। তাঁহারা শ্রীকুণ্ডের बक्रवात्री। এ शानित मान-शृकात स्वामि ठाँशामत श्रापा। বাজার দোকানাদি আছে। থাক্সদ্রত্য সকল পাওয়া যার। কুণ্ডে অনেক মংস্ত কচ্ছপাদি আছে, কাহারও বধিবার ক্ষমতা নাই; বৈষ্ণবগণ হিংদা করিতে দেয় না। বনমধ্যে ময়ূর এবং বানর অনেক আছে। মুক্টগণ দৌরাখ্যা করিয়া দ্রবাদি লইয়া আহার করে, সাবধানে দ্রবাদি লইয়া যাইতে ও আসিতে এবং থাইতে হয়। এই দিবদ রাধাকুত্তে গোবিন্দল্লিউর বাটীতে অবস্থিতি হইণ।

২৬ ভাদ্র, সোমবার, চতুর্দশী

প্রাতে রাধাকুও হইতে গোবর্জন পরিক্রমে গমন। রাধাকুওে ২৭৩

পোবর্জনে এক কোশ পরিক্রমে সাত কোশ। গোবর্জনে ভরতপ্রের রাজার অনেক দেবক্বত্যাদি এবং
উত্তম্ম উত্তম বাটী আছে। রাজবাটীর চিরনিয়ম এই আছে, রাজকুলে যে কেহ দেহ পরিত্যাগ করিবেন,
উাহার দাহাদি গোবর্জনে হইয়া সমাজ হইবেক। গোবর্জন
পর্বত বৃহৎ, উচ্চ তাদৃশ নহে। বৃক্ষ-তৃণাদি বহু পরিমাণে
জন্মে, সর্বাদা তৃণে এবং বৃক্ষণতাতে সুশোভিত, গোবর্জন
পর্বতের উপরে গোণালের মন্দির, তাহাতে যে মূর্তিতে
গোবর্জন পর্বতকে মূর্তিমান করিয়া পূজার দ্রব্যাদি সকল ভক্ষণ
করিমাছিলেন, সেই মূর্তি আছে।

প্রথমে কুন্থা-সরোবর, পরে উদ্ধব টিলা (ও) উদ্ধব-কুণ্ড। উদ্ধবের প্রতিমূর্ত্তি আছে নীচের ঘরে, উপর ঘরে বলদেব ও জগলাথের মূর্ত্তি। তাহার পর নারদকুণ্ড, ঐ কুণ্ডের নিকট নারদ্মূনির প্রতিমূর্ত্তি, পরে ভায়ুকুণ্ড। এই কুণ্ডের নিকটে ভরতপ্রের রাজা বলদেব সিংহের সমাজ, অতি উত্তম বাটা, স্থরমা স্থান, জুলের বাগান ইত্যাদি আছে। পরে মানসীগঙ্গা, চাকলেশ্বর শিব (ও) চক্রতীর্থের ঘাট। এ স্থলে রূপ-সনাতন গোত্থামীর ভজন-কুটীর আছে, শ্রীগৌরাঙ্গ মহাপ্রভুর দর্শন। ক্ষাদাস বাবাজি প্রভৃতি মহামহা পণ্ডিত বৈক্ষবগণ আছেন। পর্কাতমধ্যে অতি নির্জ্ঞন স্থান। মানসীগঙ্গার মধ্যস্থলে গোবর্দ্ধনের মূর্থ গোপালের মুকুট, তথার ভগ্ন গ্রহ্মত আছে। মানসীগঙ্গার জঙ্গ অনেক, উত্তম জল। শ্রীকৃষ্ণ মানসে এই গ্রা করিয়াছিলেন, নন্ধবোধের গঞ্গালান জন্ত্র।

গোবর্ন-পরিক্রমের তীর্থ সকলের নাম নিয়ে লিখিত হইল---২৭৪

হরদেবঠাকুর, মনসাদেবী, ব্রহ্মকুগু, ঋণুমোচন, পাপুমোচন, নির্ত্তকুণ্ড, দানঘাটী, চক্রসরোবর, চক্রবিহারী-ঠাকুর, বল্লভাচার্য্যের বৈঠক, ক্মলকুণ্ড, কুল্ডকুণ্ড, সন্বৰ্ধণকুণ্ড, আলোরগ্রাম বেথানে গোবর্দ্ধনের পূজা হয়, কিশোরীক্ও, মলারকুও, গোবিনকুও — এই স্থানে মাধবেক্তপুরীর নাথজীর সেবা (ও) গোবিন্দল্পি-দর্শন। পরে গন্ধর্ককুণ্ড, অপ্যরাকুণ্ড, পুছরিগ্রাম, পুছরিলোটা, আশু-মুরভিক্ত, তৎপরে ঐরাবতক্ত, কদমথতী, গোবিনদ্যামীর বৈঠক, হরজিকুও অর্থাৎ হরিদ্রাকুও, যতিপুরাগ্রাম (ও) বামদিকে বিছুয়াকুও। ঐাগোবৰ্দনে এই দুকল পরিক্রম দক্ষিণাবর্ত্তে করিয়া পরে মানদীগঙ্গাতে স্নান করিয়া এই দিবদ এই স্থানে, স্থিতি। গোবৰ্দ্ধনে অনেক মহুযোৱ বাস আছে, উত্তম উত্তম থাক্ষদ্ৰব্যাদি বাজারে পাওয়া যায়। গোবর্দ্ধনের ব্রজবাদিগণ অধিক আহার করিতে পারে, বল অধিক। গিরিগোবর্দ্ধনের এতাদশ মাহান্ত্রা প্রীক্লফ বৃদ্ধি করিয়াছেন, তাহার বিশেষ কারণ এই যে, ষৎকালে , ভগবান্চক্র ব্রজভূমে মানবলীলা-জক্ত শ্বাপরযুগে অবতীর্ণ হইয়া-ছিলেন, তংকালে শ্রীনন্দগোপ প্রভুতি গোপসকল পূর্বকুলাচার-মতে পৃথিবীর শশুহানি হইবার ভয়ে ইক্সপুলাদি করিতেন, সেই-মত পূজার উভোগ করিয়া বৃদ্ধ-বৃদ্ধ গোপ-গোপী সকল বন-মধ্যে যাইয়া পুজারস্ত করিয়াছেন, এমতকালে প্রীকৃষ্ণ-বলদেব আবাপন আপন দাকোপাক গোপালগণ লইয়া পূজার স্থানে উপস্থিত হইয়া ব্ৰহ্মবাহ্মকে জিজ্ঞাসা করিলেন, "কি হইতেছে ?" তাহাতে গোপগণ কহিলেন, "ইক্স-পূজা হইতেছে", ইহাতে স্থবৃষ্টি হইয়া উত্তম উত্তম নব-তৃণাদি জ্ঞানিবে, তাহা গান্তী ও তদীয় বংস্প্ৰ মুখে ভক্ষণ করিয়া ছগ্ধবতী হইবে এবং বৃক্ষসকল নৰ-পল্লবে

স্থাভিত হইলে স্থাতৰ ছায়া হইবে, পুশাসকল প্রাকৃটিত হটয়া বনের শোভা বৃদ্ধি করিবে।" এই কথা এক্লঞ্চ প্রবণ করিয়া গোপগণকে এবং নন্দ-উপানন্দ প্রভৃতি সকলকে উপহাস করিয়া কহিলেন বে. "কি ভান্ত মন, এই জল ইত্যাদি বাহা হয়, তাহাতে ইক্তের কি ক্ষমতা আছে, এ সকল কাল্ডেমে সময় হইলেই বরিষণ ইত্যাদি (হয়), ঋতুতে ঋতুর কর্ম হইতেছে, তাহাতেই বর্ষাঋতুতে বর্ষণ হর, এজন্ত ইন্দ্রের পূজা করিবার প্রয়োজন নাই। এই সকল দ্রব্য আমাদের রাধালগণকে দেহ, আমরা স্থাথে ভক্ষণ করিয়া উত্তমরূপে গোচারণ করাইব, বরং গোবংসের পূজা কর, ইহারা সম্ভষ্ট হইরা প্রচর পরিমাণে ছগ্ম দিবে।" ইহা শুনিয়া নন্দ প্রভৃতি গোপগণ কহিলেন, "এমত কথা কহিতে নাই। তমি বালক কিছ জ্ঞান না, ইল্রের অনুমতিক্রমে মেঘগণ ব্যাপক হইয়া হতিয়ারা হল উঠিলে মেবে বর্ষণ করে।" তাহাতে ভগবান কহিলেন, "পিতঃ। আপনি ভ্রাস্ত, ইহা কি কখন হইয়া থাকে। পুর্ব্বাপর এই নিরম আছে বে. বাশ্বারা মেবের সঞ্চার হইরা বারতে সর্কত চালিত হয়, আকর্ষণে জল ,উঠিলে বায়-গতিতে বর্ষণ হইয়া পুৰিবীতে তৃণ-শস্তাদি জন্মে, ইহাতে ইল্লের ক্ষমতা কিছুমাত্র নাই, জ্বগদীখর স্প্রনের নিয়ম এই মত করিয়াছেনী" এই মত ব্রহ্ম-নিরপণের বাদামুবাদ করিয়া কহিলেন, বে "ইন্তের পুঞা করিলে যদি দাক্ষাৎ হইয়া এই দক্ল দ্রব্য আহার করেন তবে সভা, নচেৎ মিথ্যা পূজা: বরং গোবর্দ্ধন পর্বত তৃণাদি জন্মাইয়া গোবৎস প্রতিপালন করেন, তাঁহার পুজাদি কর, পর্মত ব্রং মৃতিমান হইয়া ভক্ষণ করিয়া সকল স্থুশীতল করিবেন।" ইহাতেও নশ-উপানৰ প্ৰভৃতি গোপগণ নিবাৰণ না তনিয়া পুৰাদি করাইতে প্ৰবৃত্ত

হইলে পর গোপালগণকে ইঞ্চিত করিয়া প্রীক্রম্বা বলদেব ঋষ এ ঐব্যাদি ভক্ষ্য করিতে এবং পূঞ্চার ব্যাঘাত করিতে লাগিলেন। গোপকুল হাঁহাকার ক্রিতে লাগিল। তাহাতে এক্ল কহিলেন, "বদি তোমাদের এত মনে উৎকণ্ঠা হইরা থাকে, তবে গোর্দ্ধনের शृका कर्त, नकन मनन हहेरव।" हेहा कहिया शावर्क्तानत शृका করাইয়া ভাহার মধ্যে স্বয়ং গোপালরূপ ধারণ করিয়া পূজার দ্ৰব্যাদি সকল ভক্ষণ করিলেন। গোপগণ পর্বতকে মুর্ভিমান হইয়া ভক্ষণ করিতে দেখিলা আশ্চর্যাবোধ করিয়া শ্রীক্লকে রতিমতি হট্যা সকলে আনন্দোৎদৰে মগ্ন বহিল। ইতোমধ্যে দেবরাক পুলা না হওয়া সংবাদ এবং ত্রীনন্দ-নন্দন ব্রহ্মদনাতন কি না, ইহার বিশেষ্ত জ্ঞাত হইবার জ্ঞা বজ্ভুমে বাড়-বৃষ্টি ছারা বছ উপদ্ৰৰ আরম্ভ করিয়া ব্ৰহতুমির সকল জীবজন্ধ-বিনাশের উল্ভোগ করিলেন। শ্রীনন্দ-নন্দন ব্রজবাদিগণকে কহিলেন, "ভোমরা কিছু চিস্তা করিও না, সকলে পর্বতের নিম্নে থাক, রক্ষা ুপাইবে।" ইহা সকলকে কহিয়া আপন অভিন্তা শক্তি ছারা গিরিগোবর্দ্ধন বাম হস্তের কনিষ্ঠ অঙ্গুলিতে ধারণ করিয়া এজপুরী রকা করিলেন। তাহাতে ইক্স ব্রহ্মসনাতনরূপে বহু আভি कतिरामन । इंदात मितिरामय श्रीभग जांगवज, अक्षरेववर्ष ७ शक्-পুরাণাদিতে স্পষ্ট প্রকাশ আছে।

## ২৭ ভাদ্র, মঙ্গলবার, অমাবস্থা

গোবর্দ্ধন হইতে ৭ জ্বোশ দীগগ্রাম, বাহাকে লাঠাবন কছে, ঞ্জি বনে গমন। তথার ভরতপূরের বাকার, রাজভবন এবং রাজার বাটা পশ্চিম, উত্তর ও দক্ষিণ তিন দিকে আছে। পূর্বাদিকে

ર૧૧ (રક)

রপ-সুরোবর। এই সুরোবরের জ্বল অতিশয় স্থলীতল, চতুর্দ্ধিকে প্রস্তরের সোপানে ঘাটবান্ধা, বকুল ইত্যাদি নীগ্ৰাম ও লাঠাবন নানা বৃক্ষ, লভা এবং পুলোম্বানে স্থলোভিত हहेबा মনোহর স্থান। ঐ পুছরিণীর পশ্চিমদিকে এী⊮রাম-দীতার বাটী তাহার সম্মধে আমরা অবস্থিতি করিলাম। ধাতিগণকে ব্রুরালী সকল রূপ-সরোবরে লান করাইয়া রূপা দান দিতে হয় বলিয়া, টাকা সিকি যাহার যেরপ দানের ক্ষমতা তাহা লন। এই লাঠাবন ছাদশ-বন মধ্যে নছে; ভরতপুরের রাজা উত্তম ভবন কবিয়া যাত্রিগণ এক দিবদ ঐ স্থানে থাকিয়া মেলা হর, এই মানদে ব্ৰহ্মবাসীদিগকে অনেক বস্ত্ৰালকারাদি দিয়া সম্মত করিয়াছিলেন। ষাত্রীদিগকে এক দিবদ ঐ ভবন দেখিতে ও থাকিতে হয়। পুষ্বিণীর দক্ষিণ-পূর্ব্বদিকে রাজার ইক্রভবন নামে বাটী ও বাগান আছে, অতি মনোহর স্থান, চারি খণ্ড বাটী। প্রথম থণ্ডে রাজপুরুষ-मिर्गद ताक-कार्यात छोन এवः घात्रभागिमिरगत विकासचान: দ্বিতীয় থণ্ডে বাজিসিংহাসন, পশ্চিমদিকে দোতলা প্রস্তর্নির্শ্বিত বৃহৎ গৃহ, তাহাতে থণ্ড খণ্ড অনেক গৃহাদি চতুম্পার্যে আছে. মধ্য স্থলে বৃহৎ-পরিসর নৃত্যশালা, তাহা নানা রঙ্গের বছমূল্য প্রস্তুত্তের বক্ষ-লতা-ফলফুলে স্থােভিত আছে। প্রস্তর থাৈদিত করিয়া তন্মধ্যে বৃক্ষ-লতার স্থাষ্টি, মধ্যে মধ্যে পশু-পক্ষ্যাদির আকৃতি আছে। সমুধে নাটমন্দিরের ভার চৌষ্টি ছার, এক এক ছারে এক এক প্রধান সৈনাধ্যক স্থমজ্জিত হইয়া থাকেন। এই স্থানে বৈঠক, ইহার চতুপার্ষে নানাজাতি পুপের এবং লেবু ও' দাড়িম্বের উন্থান আছে। তাহার মধ্যে মধ্যে উত্তম উত্তম বৈঠকের ঘর এবং মানের বর আছে। ইহার মধ্যে ছোট বড় এক হাজার ‡ **૨**૧૪

কোরারা আছে, এই সকল ফোরারা জলের আকর-হান। অব্দর্মন বাটার তেতলার উপরে এক পৃষ্ঠিনী আছে, তাহাতে নলের সংযোগ আছে, যখন যে কোরারা ছোটাইতে হর, সেই যোগের মোহরি খুলিরা দের। ভিতরমহল ভিন থণ্ড, ভিনতলা। সর্বাদেরে শিশমহল অর্থাৎ স্ত্রীগণ থাকিবার হান, তাহাতে রাজ-পরিচ্ছদে উত্তম প্রস্তর-নির্দ্দিত ভবন সকল। পশ্চিমদিকে পুলোলান মধ্যে এক ছপ্পর ঘরে দিল্লীর রাজ-সিংহাসন আছে, যে তক্ক ভরতপুরের রাজা দিল্লীর্পরকে ভ্রম করিয়া লইয়া আইসেন—সেই সিংহাসন আছে। যে কেলা আছে প্রারুত্ত হাত উচ্চ, তাহার উপরে তোপথানা, যোলটী কামান আছে। গড়ের এক হারে অক্ষার্মাহী, ছিত্তীর হারে পদাতিকগঙ্ক শত্রধারী হইয়া রক্ষা করে, যাত্রিগণের রক্ষার্থ সম্ভাবের থাকে।

### ২৮ ভাদ্র, বুধবার

শীগ হইতে ৯ ক্রোশ কাম্যবন, পথিমধ্যে ছোট চরণপাহাড়, ভাহার পরে কাম্যবন, অতি উত্তমুস্থান। এই বনে অনেক দেবদেবী এবং তীর্থসকল আছে। বিমল কাম্যবন কুণ্ড নামে এক কুণ্ড, তাহার চতুর্দিক পাধরে বাদ্ধা, বিমলদেবী আছেন। ঐ দেবীর পশ্চিমদিকে থাকা হইল।

## ২৯ ভাদ্র, বৃহস্পতিবার

বৃষ্টি-জলে ভিজিতে ভিজিতে ৭ ক্রোশ কাম্যবন, তাহার পরিক্রম করা হয়। প্রথমে যশোদাকুও, পরে হুর্যাকুও, পরে লুকলুককুও, তাহার পর চরণপাহাড়। এই পর্কতে ক্রঞ্-বলদেবের এবং গোপাল গণের গোবৎসের পদচিক্ত সকল পর্বতমর আছে। এছানে নূপ্ররক্তের ফল নূপ্রাকৃতি, নীচে ক্ষীরসাগর, ইহার নিকট্ট এক গ্রাম
আছে। পরে পাদ-পেছলা খেলিবার পাঁহাড়, পাহাড়ের উপর
ভীমেশ্বরীর গোফা, তাহার পর ভোজনথালি—গোচারণে বনমধ্যে
শ্রিক্ত যে স্থানে ভোজন করিতেন থালাকৃতি আছে, নীচে ক্ষণকুণ্ড। কাম্যবনের মধ্যস্থলে শ্রী৮গোবিক্তির, গোপীনাথজির (ও)
শ্রী৮মদনমোহনজির শ্রীমন্দির। তিন দেবের পৃথক্ পৃথক্ কিছিৎ
দূর দ্র মন্দির। শ্রী৮গোবিক্তির, উত্তরে জগরাথদেব। রাজা
মুধিন্তিরের বনবাসের যজস্থান চৌরানি স্তস্তের, গৃহ আছে,
পঞ্চপাণ্ডব (ও) দ্রোপদীর প্রতিমূর্ত্তি আর স্থার অনেক দেবদেবীর
স্থান আছে। আওরক্তের বাদশাহের দৌরান্ম্য সম্বের ক্লাবন
হইতে সকল দেবদেবীর মূর্ত্তি কাম্যবনে রাথা হয়।

#### ৩০ ভাদ্র

কাম্যবন হইতে বরসান'ছয় জোশ। বরসানের নিকট এক
পাহাড়ের কিঞ্চিৎ উচ্চ স্থানে শ্রীরাধা আলতা প্রিতে পরিতে
চিত্রবিচিত্র করিয়াছিলেন, তাহার চিক্ত আছে।
বরসান
তাহার এক পোয়া অস্তরে দেহকুও নামে
এক উত্তম সরোবর, তাহাতে স্থান (ও) স্বর্ণাদি দান করিয়া পরে
ব্যভাস্থ কুতের তীরে থাকা হইল। পাহাড়ের উপরে নারায়ণীলি
আর্বাৎ শ্রীরাধার মন্দির, পরে ব্যভাস্থর পিতামহী ভাষ্পশ্পীসহ
এক বাটাতে আছেন। তাহার নীচে ব্যভাস্থ রাজা দারাদহ এক
নাটাতে আছেন। পাহাড়ের নীচে এক বাটা, তাহাকে অইস্থীর

কুঞ্জ কহে, অটদথীর মূর্ত্তি আছে। এই পাহাড়ের পশ্চিম দানঘাটী, এজন্ত অন্তাবধি স্ত্রীগণ হানে হানে গীত গাইয়া দান ভিক্ষা করে। বরদানের স্ত্রীগণ মহা বলিঠ। হোরিতে মহানন্দ আছে।

#### ৩১ ভাদ্র, শনিবার

বরসান হইতে নন্দগ্রাম যাওয়া যায়। ছই ক্রোশ পরে সঙ্কেত-বট, সঙ্কেতবিহারী-ঠাকুর-পার্মে বটমূলে যোগমায়াদেবী আছেন। ্অতি নির্জ্জন স্থান এবং মনোরম অনেক দেব-মন্দ্র গ্রাম দেবী আছেন। নন্দগ্রাম নন্দধোষের বাসন্থান, পর্বত উপরে রুল-যশোলা ছই পার্শ্বে, মধ্যে শ্রীকৃষ্ণ-বলরাম গোঠের বেশে, পাহাড়ে উঠিতে ১২৪ ধাপ। পর্বত খুদিরা শ্রামবাকারের শুরুপ্রদাদ বস্থ সিঁডি করিয়াচেন। নীচেতে এক স্থানে ঝাউ বনের ছাউনী, যশোদার দ্ধি-মন্থনের এক পাথরের ভাবা ও জালা পোঁতা আছে। ঐ পাহাড় পরিক্রম করিতে ১ ক্রোশ আসিয়া ঐরাবত-কুণ্ড, চতুর্দ্দিকে পাথরের ঘাটবান্ধা। ঐ কুণ্ডের ধারে এক কেলি-কদম্বের গাছ আছে, তাহার পাতা দোনার মত অর্থাৎ বাটীর ফ্রায়, সকল জলীয় দ্রব্য থাকে। তথা হইতে ১ ক্রোশ আসিয়া প্রন-সরোবর। অতি উত্তম সরোবর, চারিদিকে পাথরের ঘাটবান্ধা। ঐ সরোবর-তীরে থাকা হইল। বৈকালে তথা হইতে ছই ক্রোশ যাইয়া খাসকুঞ। নন্দগ্রাম হইতে এক নি:খাদে এক্ষ ও হানে দাঁড়াইতেন, এজন্ত খাদকুও নাম। তাহার পর কদম্বতি, পরে হৃষ্যকুত, তাহার পর বটেন গ্রাম। এখানে আয়ান খোষের বাটা উচ্চন্থান, তাহার পশ্চিমে কিশোরী-কুও। ঐ কুণ্ডের ঈশানে জাবট, এই ছলে রাসম্থলী, খ্রীমতীয় মানের স্থান এবং বৃক্ষ, পরে জলকুঞ্জ আর এক কেলিকদৰ বৃক্ষ আছে, বে বৃক্ষে হেলন দিয়া বংশীতে কাবট ও থদিবংল প্রীমতীকে সঙ্কেত করিতেন। ঐ বৃক্ষে বিভঙ্গলীমের এবং চূড়ার চিহ্ম আছে। এথান হইতে তিন ক্রেণাণ থদিববন, অতি মনোরম স্থান।

### ১ আখিন, রবিবার

নন্দ্রশাম হইতে ১১ ক্রোশ শেষণারী। ৭ ক্রোণ যাইরা হর্যাকুণ্ড। প্রথমতঃ ৩ ক্রোণ কোকিলবন—অতি নিবিড় বন, কোকিলবিহারী ঠাকুর আছেন। কৃষ্ণকুণ্ড—তাহায় চারিদিক পাথরে ঘাটবান্ধা, কোকিলবন, হ্র্যাকুণ্ড এক বৈষ্ণব আছেন। এই বনৈর অভাবধি এই নিম্ন আছে, কেই বনের কাঠ লইয়া অভা হানে বাইতে পারে না অর্থাৎ বন হইতে বাহির হইলে আন্ধের ভার হয় দেখিতে পার না—কাঠতাাগ করিলে দেখিতে পার। তাহার পর ৪ ক্রোণ হ্র্যাকুণ্ড, বৃহৎ সরোবর। পরে বড়চরণ পাহাড়ে পূর্বোক্ত সকল পদচ্ছি—পশুপুক্লাদির পর্যাপ্ত আছে, নৃপুরের ইটা গাছ আছে। তাহার পর হ্র্যাকুণ্ড হইয়া ৪ ক্রোণ শেষণারী, এই স্থানে ভগবানের অনস্কল্যান প্রতিমূর্ত্তি (ও) ক্রীরোর্যাগর নামে প্রক্রিনী। স্থান অতি উত্তম—অনেক দেবালর আছে।

### ২ আখিন, দোমৰার

শেষণারী হইতে ৭ ক্রোশ দেরগড়, এ স্থানে নগর তুলা বসতি, শ্রীদগোবিক্ষন্ধি, শ্রীদগোপীনাথন্ধি (ও) শ্রীদ দেরগড়
মদনমোহনন্ধি প্রভৃতি দেবালয় প্রধান-দর্শন।
শ্রীদ্বলদেবের এই স্থানে স্থিতি হয়।

#### ৩ আখিন

সেরগড়-হতৈ গমন করিয়া নন্দঘাট, সেরগড় হইতে ৯ কোশ। ইতোমধ্যে অক্ষরবট, পরে বমুনার তীরে আছি কাত্যায়নী দেবী— গোপগোপার কুলদেবতা, তদ্ধিকটে চীরঘাট অর্থাৎ যে ঘাটে ভগবান গোপীদিগের বস্ত্রহরণ করেন, চীর শব্দে বস্ত্র। চীরঘাট হইতে ৩ কোশ নন্দঘাট, এই যমুনার ঘাটে আইনন্দু মহাশর প্রতি

দ্বিস সান করিতেন এবং এই ঘাট পার
নশ্ঘাট
হইরা গোপীগণ বুন্দাবন হইরা মথুরার দধিছগ্গাদি বিক্রয় করিতে যাইতেন , নন্দগ্রান, মথুরা (ও) বুন্দাবন এক
পার, কিন্তু পাহাড়ের পথ অতিশয় ভয়ানক এবং নিবিড়-বন জল্প
কেহ গমনাগমন করিতে পারিত না ; এজল্প নন্দ্বাটে পার হইয়া
ভদ্রবন হইয়া ভাণ্ডীরবন, তৎপরে বেলবন হইয়া ঐ বেলবনের
নিকট কেনীঘাট, তথার পার হইয়া ঐবুন্দাবন প্রবেশ করিয়া মথুরা
গমনের পথ—এজল্প ব্যুনা-পার' আধ্যান আছে।

নন্দবাটে শ্রীজীব গোস্বামীর ভজনকূটার আছে। এস্থানে গোপাল-মূর্ত্তি দর্শন এবং বনবাত্রায় থৈ কিছু ব্রজবাদী চৌবেদিগের আহার্য্য ক্রব্যুদ্বির ক্ষমবান হয়, এই বাটে দেয়।

#### ৪ আখিন

নন্দবাটে নৌকার পার হইরা প্রথমে ভদ্রবন, তৎপরে ভাণ্ডীর বট। এই স্থানে এক কৃপ আছে, ঐ কৃপের মাহাত্মা অভিশর, সকল দেবদেবীর আবির্ভাব। এই ভাণ্ডীর বটের ভাণ্ডীর-বন বন শ্রীদাম-গোপালের গো-চারণের স্থান, রুন্দাবনের বংশীবট হইতে ভাণ্ডীর বট পর্যান্ত ধেণিবার স্থান। একণে এই বনমধ্যে এক দেবালয় আছে, তাহাতে প্রীণাম-গোপালের মূর্ত্তি আছে। এই শ্রীণাম কৃষ্ণনগরে অভিরাম গোপাল নামে অভিহিত। অম্বাবধি অভিরামের পাঠ আছে। প্রীঞ গোপীনাথের বন্ত্বহরণ-লীলার প্রতিমূর্ত্তি সমেত আছে। ভাণ্ডীর

বট ইংতে বেলবন ৩ কোশ, এই বনে এ৮
ক্ষ্মী-ঠাকুরাণীর প্রতিমূর্দ্ধি আছে। চন্দ্রাবলীর
বিহার-স্থান, অতি স্থরম্য বন। তাহার পূর্ব্ধে ২ কোশ গমন
করিয়া মানসরোবর, বৃহৎ সরোবর। দক্ষিণে এ৮ মানবিহারী
ঠাকুর আছেন, সমুথে রাসমণ্ডল। তথা হইতে পানিঘাট ৩ কোশ।
নন্দ্রাট হইতে ১২ কোশ আসিয়া পানিঘাটে থাকা হুইল।

৫ আশ্বিন

গানিঘাট হইতে লোহাবন ৩ কোশ, তথার এক কুও আছে, কুও ছলে লোহার দ্রব্য দান করিতে হয়। লোহাররকে মশোদা লোহার কড়ার আঘাতে বধ করেন। তাহার ২ ক্রোশ পরে আন্দিনান্দি বন, আনন্দীকুও নামে এক পুকরিণী। ঐ কুণ্ডে মান এবং আন্দিনান্দি-দেবীদর্শন। পরে ৪ ক্রোশ বলদেব, এই স্থানে বজ্র-নির্দ্মিত বলদেবের বৃহৎ মূর্ত্তি আছে। অতি উত্তম পুরী, অনেক গৃহাদি আছে, নগরতুল্য স্থান, বাদার ইত্যাদি তাল আছে। বল্দেব-কুও পুরীর পূর্বাদিকে। পাঙাগণ অতিশয় চতুর, বলিষ্ঠ, মিখ্যাবাদী এবং প্রতারক, যাত্রিগণের নিকট নানা ছলে অর্থ লয়, পরিশেবে রাত্রে চুরি করে, বলে ছলে কৌশলে—বে প্রকারে হউক কষ্ট দিয়া লয়। শ্রীপ্রদাদেব দর্শন এবং মাধন-মিছরী ভোগ দিয়া পরে ৩ ক্রোশ বাইয়া মহাবন, বাহাকে গোকুল কহিড, নন্দ ঘোবের বাটা। এই মহাবনে থাকা হইল।

়ঙ আশ্বিন,

নন্দ ঘোষের বাটীতে গমন হইল: অতি উচ্চ টিলাতে বাটী। একণে ঐ বাটীতে তর্লীলদারের কাছারি। নন্দের শ্বনাগারের পর্বে যশোদার প্রস্বাগার। ঐ স্তিকাগৃহ মহাবন চিত্রবিচিত্র প্রস্তরনির্দ্মিত, সম্মুথে এক উত্তম দালান. ভাহাতে দ্ধিমন্থনাদি ক্রিতেন, থামের গায়ে মাথন মোছার চিহ্ন দেখার: শ্রীক্ষেত্র স্তিকাগ্রে দোলার শয়নের माना वर ठळ प्रश्निश्चित्राण्टिन। के वांत्रेत्र श्वर्कान्त्र विश्वराप्ति । ঘর, যে স্থানে ষ্ঠীপুলা হয়। তাহার নিকট এক কৃপ আছে, ঐ কুপের জলে সান করাইয়া শ্রীনন্দ-নন্দনের ষ্টাপুলা হয়ৢ। তাহার পর যমলার্জ্ব জুই বুক্ল ভঞ্জন, উদুখলে বন্ধনের স্থান, গৌশালার স্থান, পুতনা রাক্ষণীর স্তনপান-ছলে যে বধ করেন, তাহাকে যেথানে দাহ জয় টানিয়া লইয়া যাইতে হয়, তাহার নাম পুতনাজুলি--স্পষ্ট থাল আছে। পরে ষমুনার ধারে রমণবেদী--া বালুকাময়বেদী, এই দেবীতে ধুলা-খেলা ও গড়াগড়ি দিতেন এবং শ্রীকৃষ্ণ গোপাল ও গোপীলহ খেলিতেন। তথা হইতে ১ কোশ ব্ৰহ্মাণ্ড্ৰাট, যে স্থানে মৃত্তিকা ভোজন করিয়া যশোলাকে উলব্যাধা ক্রমাঞ দেখাইরা ছিলেন। তথা হইতে গোকুল-বেথানে গোস্বামীদিগের বাস এবং নাথজি, বলদেবজি ও মদনমোহনজি ঠাকুর আছেন, গোরামী মহাশরেরা এই স্থানের গোকুলু নাম রাথিয়াছেন। গ্রামে অনেক বদতি এবং বাছার. স্থানে স্থানে দেবালয় সকল আছে। ইহার উত্তরে তিন ক্রোশ রাওল গ্রাম। এই গ্রামে বুষভাত্ম রাজার বাদ, জীরাধা ঠাকুরাণীর আবির্ভাব স্থান। এই সকল প্রদক্ষিণ করিয়া কো-গ্রামের নিকট যমুনা পার হইরা, নওরক্ষবাদে উঠিয়া মধুরা প্রবিষ্ট হইরা, ভৃতেশব দর্শন করিয়া, বমুনাবাগে স্থানাদি করিয়া জনবাগ হইলে কিঞিৎ বিশ্রাম করিয়া, সদর বাজার ভ্রমণ করিয়া, মধুরার বিশ্রামঘাটে জলস্পর্শ-মুক্ট-দর্শন করিয়া বমুনার তীরে তীরে অক্রেঘাট হইয়া, ভোজন-টিলার নিকট দিয়া শ্রীপবাদেব দর্শন করিয়া, শ্রীকৃদাবনে নক্কুমার বস্থর কুঞ্জে যথায় বাদা তথায় পছছান হইল।

#### ৭ আশ্বিনাব্ধি ১৮ মাঘ প্রয়ন্ত

শ্রীরুলাবন পঞ্জোশী পরিক্রম, ষ্মুনায় স্থান-তর্পণ, শ্রী৺গোপেখবের জল-বিষদলে পূঞা, শ্রী৺গোবিন্দদেবজিউ (ও) শ্রী৺গোপীনাথজি প্রভৃতি দেবদেবীদিগের দর্শন-বাতা।

ইতোমধ্যে মধ্যে মধুরা, রাধাকুও (ও) গৌবর্জন যাতাস্থদারে গমন আছে। চৌরালি ক্রোশে ঘাদশবন-পরিক্রম, বাজারাদি যাত্তি-গণের সমভ্যারে ত্রমণ করে।

# রন্দাবন হইতে জলন্ধর

## সন ১২৬২ দাল, ১৯ মাঘ, রহস্পতিবার, নবগী

শীর্লাবনধামে শীর্শাবেলজি, শীর্শগোপীনাথজি, শীর্থমদনমোহনজি, শীর্শরাধারমণ, শীর্শক্ষচন্ত্র (ও) শীর্শগোপেশ্বর প্রভৃতি
দেবসকল দর্শনাদি করিয়া কুরুক্তের, শীর্পজালামুখী, কাঁগড়া দেবী,
চিন্তাপুরণী এবং বে হয়াড়েখর, মণিকরণ (ও) নয়নাদেবী ইত্যাদি
তীর্থনর্শন এবং পঞ্জাব-দিল্লী ইত্যাদি সহর, নগর, দেশ, রাজ্য, পাহাড়
(ও) বনত্রমণার্মের্থ যাত্রা করিয়া শীর্বিক্রঠনাথ ও শীর্প্রস্কর্মার
সর্বাধিকারীর নামে আমুমমোক্তার নামা ২৫ মাঘ মথুরার কাছারিতে
দেওয়া হয়। তাহার তছিদিক্ র্লাবনে কোতোয়ালের দ্বারা
হইবার হকুম হওয়াতে মোক্তারনামা থানায় না আদা জয়্ম
শীর্শধামে থাকা হয়।

## ২০ মান, শুক্রবার, দাদশী

শ্রীশব্দাবনধানে কোতোগালের নিকট আমি, গোপীনাথজির বাটীর রামলোচন, ফৌজদার ও শ্রীযুত উমাচরণ বন্দ্যোপাধাার—গোপীনাথের বাটীর সরকার, তাঁহার থাতিরে উক্ত ফৌজদার অনেক শ্রম করিয়া এবং দারগা অতি সজ্জন (বিধায়) হজুর হইতে মোক্তারনামা পছছিবা মাত্র তংক্ষণাৎ ফৌজদারের নিকট লোক পাঠাইয়া দেওয়ার, এমতকশ্লে আমরা উপস্থিত হইবামাত্র সহস্র কর্ম রাথিয়া অত্রে তছদিক্ করিয়া, লইয়া আমাকে বিদায় করেন । ইতিপুর্কে শ্রীশ্লোপীনাথ (ও) পরে শ্রীশ্গোবিক্ষিক্ষ দর্শন করিয়া বাসায় আসিয়া

দেখিলাম, সকলে গমনোভোগী হইয়া গাড়ীতে দ্রবাদি বোঝাই করিয়া প্রস্তুত হইয়াছেন। আমার কর্মাজ্ঞ সকলে এক দিবদ যাত্রা করিয়া থাকেন, কর্ম শেষ হইয়া আসিবামাত্র স্কলে তীর্থ-যাত্রার যাত্রা করিলেন। আমি ডাকবাব প্রীয়ত র্ঘমণি বন্দোপাধায়ের সহিত কথা কহিয়া গোপেশ্বর হইয়া ঐ পথে মদন-মোহনজির দর্শনে যাওয়াতে, পথিমধ্যে কাহার সহিত সাক্ষাৎ না হওয়াতে, আমি ও নবক্লফ ছুই জনে চিস্তিত হইলাম যে, ছুই পথ-কোষেল হইয়া এক পথ, চৌমুয়া হইয়া এক পথ, ইহার কোন পথে যাওয়া হইল, আমরা কোন পথে ঘাইব ? পথের যত মমুধ্যকে জিজ্ঞাসা করি, কেহ কহিতে পারে না। তথন হির হইল বে. গাড়ী অত্যে যার না। তাহার পর আহিরী-মহলার রাস্তাতে আদিয়া জিজ্ঞাদা করিতে করিতে এক ব্যক্তি কহিল. ফটকের নিকট বাবুলোক এবং গাড়ী দাঁড়াইয়া আছে। তথায় আসিয়া শ্রীয়ত কালীপ্রসাদ ঘোষ-ভায়া ও শ্রীয়ত ভোলানাথ মধোপাধাায় মহাশয়ের সহিত মিলিত হইয়া, প্রীয়ত শুকদেব ব্রঞ্জ-বাদীর নিকট হইতে টাকা লইবার কথা ছিল তাহা না পাইয়া. যাহা পূর্বে দংগ্রহ ছিল, তাহাই দমভ্যারে করিয়া এবং শুকদেব কৰুকেত্ৰে টাকা পাঠাইবেন—এই লুব্ধ আখাদে তথা হইতে দকলে প্রায় এক প্রহর বেলাগতে গমন করি। মাঠে মাঠে যে পথ আছে ঐ পথে ১ ক্লোশ চৌমুয়া গ্রাম, তথায় পাকা সড়ক (এবং) নিমক. খ্যত (ও) আবকারী দ্রব্যাদির পরমিটের চৌকির লাইন ভোরি আছে।

লাইন ডোরি অর্থাৎ আগর' হইতে পরওল

গোম্বা

পর্যান্ত রান্তার পুর্কাদিকে কোম্পানির রাজ্য,
পশ্চিমদিকে রাজ্যপণের রাজ্য—ভরতপুর, জরপুর ইত্যাদি। রাজা

যাহাদিপের স্বাধীনতা রাধিরাছেন, ঐ সকল রাজ্যের নিমক, আফিং, ভাঙ্গ, চরস (ও) গুড় ইত্যাদি পরমিটের দ্রব্য সকল বিনা মাগুলে আনিরা বিক্রন্থ করিতে না পারে, এজ্ঞ কোম্পানি বাহাছ্র আপন রাজ্যের পথে কণ্টক দিরা ক্ষত্র করিয়া এক পোরা অস্তর চৌক্ষির করিয়া পাহারা দিতেছেন। কোনক্রমে বিনা মাগুলে কেহ দ্রব্য না লইরা বাইতে পারে। চৌমুয়াতে ঐ লাইন ডোরির চৌকির নিকট বৃক্ষমূলে দিবাতে হিতি। বাজার হইতে দ্রব্যাদি আনিয়া ক্রার নিকট রক্ষই (ও) আহারাদি হয়। সন্ধার বাজার মধ্যে সরাইতে ছিতি। চৌমুয়া প্রামে উত্তম বস্তি, দোকানদার অনেক আছে।

## ২১ মাঘ, শনিবার

চৌমুয়া হইতে ৫ কোশ সাওয়া প্রাম। সরাই, বাজার (৩) বসতি
আছে। পরে চারি কোশ কুণী—কুজ সহর, অনেক তুলার ও ভূবী
কুণী
ক্রব্যাদির আমদানি-রপ্তানি হয়। সকল
ক্রব্যাদির দোকান (৩) পরমিটের সাহেবের
বালালা আছে। নিমকের চৌকির,রামচক্র মিত্র নামে একব্যক্তি
কর্মকারক, সাহেবদিগের বাঙ্গালার নিকট বাদা, তথা হইতে
সহর প্রাম অর্দ্ধকোশ। ঐ স্থানে পুরি, মিপ্তাম, দধি এবং ফলাদি
লইয়া তথা হইতে ৬ কোশ কোটবন (৩) স্থ্যকুঞ, ব্রক্ত্ম
মধ্যে বনবাঝাতে আসিতে হয়। ঐ কুণ্ডে স্থান করিয়া তথায়
জলবোগ, ঐ দিবস একাদশী। তথা হইতে ৪ ক্রোশ হোড়েল
ত প্রাম। দোকান, বাজার, সরাই (৩) বস্তি
ভাল। ছয় দণ্ড বেলা থাকিতে সরাই মধ্য

অবন্ধিতি।

### ২২ মাঘ, রবিবার, ছাদশী

হোড়েল হইতে ৪ ক্রোশ বনচারি প্রাম, তথার সোমড়ানিবাসী কালীকুমার রার পরমিটের দার্রগা, পথিমধ্যে সাক্ষাৎ
হয়। তথা হইতে ৫ ক্রোশ পরওল প্রাম, ঐ প্রামের বটতলা
হইতে লাইন ডোরির নির্ভি। পরে কুজ
পরওল
সহর, দোকান বাজার ভাল আছে। প্রামের
ভজ্র ভজু বাজিপণের বসতি আছে। রাস্তার ধারে সরাই।
প্রামের প্রান্তভাগে পাথরওয়ারি দেবীর মন্দির, ধর্মশালা ও
একটি ভাল বাগান আছে। বাড়ী মধ্যে অনেক নিম্বৃক্ষ,
উত্তরদিকে প্রবিণী, তিনদিক সানবারা ঘাট, স্থান অতি স্থাীতল।
তথার দিবার আহার করিয়া সন্ধায় পশ্চাৎ ঘাইয়া সরাইরে

#### ২৩ মাঘ, সোমবার, ত্রয়োদশী

পরওল হইতে ৬ ক্রোশ: বল্লভগড়, ভরতপুরের রাজার রাজা।

এই রাজ্য আপন দৌহিলকে দিরা তাহাকে রাজা করেন।

কেলা আছে, কেলামধ্যে রাজার বাটী

এবং আপন রাজ্যরক্ষার দৈয়াগণ আছে।

মাটীর কেলা, মুরচা, গখুজ সকলই আছে। মুরচাতে কামান
রীতিমত আছে। যুক্সজ্জা বাস্ত ইত্যাদি সকল আছে। কেলার
কিছু দূরে রাজধানী, ক্রুজ সহর, সব জব্যাদি পাওরা বার।

হিন্দু-মুসলমান অনেক জাতির বসতি আছে। এই সহর

হইতে দিলী বাইবার নৃতন রাজা রাজা তৈরার করিতেছেন।
তথা ইইতে ৬ ক্রোশ বালুকামর পথ ফরিদাবাদ গ্রাম, তথার

ন্থিতি।

খনেক বসতি, বাজারাদি ভাল আছে। বাদসাহী সরাই, পুরাণ
সহর । ঐ গ্রাম হইরা রেলরোডের ঝাণ্ডি
গিলাছে। ঐ গ্রামে রক্ষমূলে দিবাতে স্থিতি
(ও) আহার। সন্ধার পর সরাই মধ্যে ভিতি।

২৪ মাঘ, মঙ্গলবার, চতুর্দ্দশী

ফরিদাবাদ হইতে ৫ ক্রোশ দিল্লী সহরের পুরাতন কেলা। তথা হইতে ৩ ক্রোশ কাবেলি-দরজা, ঐ দরজা হইতে ২ ক্রোশ সবজিমন্তি। সবজিমন্তির নিকট এক শেঠের নৃতন শিবালর তৈরার হইরাছে, তাহাতে শিবস্থাপনা হর নাই; মন্দ্রির এবং বাটী তাল তৈরার করিবাছে। অন্দর-বাহির, কাছারি, বৈঠক, বাগান, ক্রা (ও) তাণ্ডারস্থান পৃথক্ পৃথক্ আছে। ঐ শিবালরের নিকট সরাই আছে। তথার স্থানাদি করিয়া সকলে আহারের উল্পোক্ত রহিল। আমি দিল্লীসহর দেখিবার জন্ত কেলার মধ্যে আসিলাম। কাবেলি-দরজা হইয়া প্রবেশ করিয়া, সহরের ধারে ধারে যাইয়া, ইতন্ততে: অনেক ভ্রমণ করিয়া, বাদসাহের বাসীর নিকটে লালাণীছি দেখিয়া, বাদসার নিজকেলা দেখিতে ইছে। হইল, যে কেলার মধ্যে বাদসাহের বাদসাহীর সকল সরঞ্জাম আছে, কিন্তু সাহস করিয়া

দিলী ভিতরে প্রবেশ করিতে পারি না; কারণ
কথন দিল্লী সহরে আদি নাই এবং পথ-বাট, রীভি-ব্যবহার,
হকুম-কিমত কিছুই জানি না। বিশেষতঃ লাহোর-দরজা (ও)
দিল্লী-দরজা, হই দরজাতে হই পণ্টন কোম্পানি দিপাহী আছে।
ইহাতে তীত হইরা গমন স্থগিত করিয়া ভাবিতে লাগিলাম

যে, কি মতে দেখিব। পরে আপন মনে স্থির করিলাম যে, এখানে কেহ দেখিতে শুনিতে নাই, যদি কেহ কিছু কুভাষা বদে, কে ভানিবে ? দেশত কি পরিচিত কেছ দল্পথে নাই, নিবারণ করিলে ফিরিয়া আসিব। এই স্থির করিয়া দিল্লী-দরকা দিয়া প্রথমদার দারপালদিগের সমুখ দিয়া প্রবেশ করিলাম: পরে দিতীয়দারে দিপাহীগণের গারদ, তথায় হাওলদার, স্থবেদার (ও) জমানার সকলে আছে। ঐ ছার প্রবেশ হইবার সময় একজন সিপাহী কহিল, "কি নিমিত্ত কোথা যাও ?" আপন ভাষাতে জিজ্ঞাসা করাতে কহিলাম, "কেল্লার ভিতরে দেখিতে যাইতেছি।" তাহাতে, কহিল, "বিনামুম্ভিতে যাইতে পারিবে না।" স্থগিত হইয়া পরে হাওয়ালদারের নিকট আসিয়া কহিলাম. "আমি বালালা দেশ হইতে দেশভ্ৰমণ জন্য আসিয়াছি: তাহাতে দিল্লীসহর, দিল্লীখরের রাজধানী, ইহা দেখিবার জন্ম অত্যস্ত মনন ছইয়াছে। যদি দেখিতে দাও, তবে দেখা হয়।" এইমত কহিতে ছার প্রবেশ করিতে দিলে ঐ ছার দিয়া প্রবিষ্ট চইয়া নচবৎখানা দিয়া বাজারসকল দেখিয়া যে ছার দিয়া দেওয়ান-আম যাইতে হয়, তথায় যাইতে ইচ্ছা হইল। সেই ছারে থোজাগণ ছারপাল আছে। তাহাদিগকে অনেক কহিয়া, তাহাদের একজনকে সঙ্গে লইয়া তক্ত ইত্যাদি কিছু কিছু দেখা হইল। দিবা-অবসান रुरेटन नाट्यात-मत्रका मित्रा क्लात वार्टित रुरेबा महत्रभानात ভিতর আসিয়া পঞ্জোশী সহরে স্থােভিত এবং জুলা মসজিদ ইত্যাদি মদজিদসকল এবং বাজারাদি অনেক আছে, তাহার মধ্যে প্রধান বত্তিশবান্ধার দেখিয়া লাহোর-দরজার রাস্তাতে সহর-নিবাদী ধনিগণ, বাইগণ (ও) হিন্দু-মুদলমান দকল গাড়ী পাকী ঘোড়া

হাতী উট ডুলি দোলা রথ বাহনেতে আরত হইয়া নগর ভ্রমণ করিতেছে এবং কোথাও নৃত্য, কোথাও গান, কোথাও বাফ, ইহা দেখিয়া শুনিয়া সন্ধ্যাগতে সহর হইতে বাহির হইয়া শিবালয়ে যাইয়া আহারাদি করিয়া রাত্রে সরাইয়ে শয়ন হইল। ২৫ মাঘ, বুধবার, অমাবস্থা

দিলীর নিকট তেলি আড়া হইতে ৬ ক্রোশ পড়াউ, তথা হইতে ০ ক্রোশ পুজানিগ্রাম, পরে ০ ক্রোশ রাইগ্রাম, পড়াউ, গুলাম, থানা (ও) দোকান আছে; ঐ পড়াউ মধ্যে অখখ-বৃক্ষমূলে আহারাদি করিয়া সরুহি মধ্যে শয়ন।

২৬ মাঘ, ৰুহস্পতিবার, প্রতিপদ

রাই হইতে ৬ জোশ রণোনিগ্রাম, পরে ৫ জোশ শাম-হানকি পড়াউ, থানা (ও) গুলাম আছে; পড়াউ মধ্যে আহারাদি করিরা ঐ স্থানে হিতি।

## ২৭ মাঘ, শুক্রবার, দ্বিতীয়া

শানহাঁল হইতে ৭ কোশ পালিপথ সহর, সহরে মুসলমান
ধনীর অনেক বসতি। রাজা হইতে আর্ক্
পাণিপথ, ক্রোশ অস্তর সহর, সহরপানা মধ্যে
বসতি দোকান নানামত আছে। কাঁতি উত্তম উত্তম হর,
নানামত কারুওয়ালা কাঁতি, পাথর (ও) আর্শি বরান
আহে। আমীরলোকের করমাইশ হইলে বহুমূল্য প্রান্তর,
মুকা (ও) আরন স্বসাইয়া দের এবং অর মূল্যের সালা আহে।
সহর মধ্যে সরাই, রাজার উপর ডাক্ষর, পড়াউ মধ্যে ওলাম,
থানা (ও) তহুলিলের কাছারি, ঐ স্থানে স্থিতি।

## ২৮ মাঘ শনিবার, ভৃতীয়া

পাণিপথ হইতে ৬ ক্রোশ মরহদার পড়াউ, গুদাম.(ও) সরাই, থানা আছে, তথা হইতে ৬ ক্রোশ কর্ণাল সহর। সহরপানার মধ্যে, কুঠিওরালা এবং আর আর বহু মূল্যের দ্রব্যাদি ও ধাতৃক্রব্য, বল্লাদি, বিলাতী জিনিস, পঞ্চার, মিষ্টার, গদ্ধন্রব্যাদি (ও)
ফলাদির দোকান সকল আছে। সহরপানার বাহিরে এক মস্জিদ আছে, তাহাতে
সন্ধ্যার পর নানান্রব্যাদির এবং মাংস-কারাবাদির ভাল
মত বাজার বৈসে। তথা নহবতের (ও) নাগারার বাস্ত মূহ্ম্প্
হর। 'অনেক ধনাত্য মুসলমান আছে, উত্তম বাটী
আছে। সহরের বাহিরে, প্রায় ১ ক্রোশ ছাউনী, গোরাবারিক, মালদেওরানী (ও) পুলিশের কাছারি ইত্যাদি আছে।
পড়াউ মধ্যে গাছের ছারা আছে, তথার আহারাদি করিরা
ভাক্ষর ও সাহেবদিগের বালালা (ও) বাগান দেখিরা বাদ্যাহী সরাই
মধ্যে রাক্রে প্রতি।

## ২৯ মাঘ রবিবার, চতুর্থী পরে পঞ্চমী

কর্ণান হইতে ৬ জোন বটানার পড়াউ, গুর্দাম, থানা (ও)
সরাই আছে। তথা হইতে ০ জোন যাইরা এক ক্ষুদ্র গ্রামের
নিকট পুক্রিণীর ধার দিয়া দক্ষিণ-পশ্চিম মুখে মাঠ দিয়া পলালগাছের বন হইয়া ০ জোন যাইয়া থানেশ্বর সহর, যথার
কুক্লেক্ত তীর্থ। বেলা ভূতীর আহর গতে
থানেশ্বর
স্কৃত্লেক্ত তীর্থ। বেলা ভূতীর আহর গতে
থানেশ্বর
স্কৃত্লেক্ত নিকট।

কুর্কক্ষেত্র চারিবৃংগের ধর্মক্ষেত্র, একস্থ কুরু-পাশুবের
বৃদ্ধ এইস্থানে স্থির হইরা মহাভারত হয়,
কুর্কক্ষেত্র
সকল ভূমি পরিক্রম করিলে ৮০ ক্রোশ পরিক্রম, ৩৬০
তীর্থ দর্শন, স্পর্শন (ও) স্থান। পঞ্চক্রোপী পরিক্রমে ৪৮ তীর্থে
স্থান-তর্পণ দর্শন, স্পর্শন (ও) শ্রাকাদি।

লক্ষীকুণ্ডে স্নান, তন্তীরে দানাদি, তীর্থপ্রাদ্ধ পরে অপগরাতে শ্রাদ্ধ, থানেশ্বর, শিব-হুর্গা, কুপ, গুক্ষা (ও) পীঠদর্শন।

পঞ্চক্রোল পরিক্রমের তীর্থদকল—উবল (উলনস), পঞ্চবটী, বঙ্গণ, অন্তিপুর (স্বন্তিপুর), অন্মিপ্রাচী, বন্ধবোনি, স্থানবট, কক্সকর, স্থানবটনিঙ্গ, অন্থানবট, চতুর্মুধনিঙ্গ, চতুর্মুধকুণ্ড, প্রাচীকুণ, ছর্গাক্ষণ, স্বন্ধরার, শুক্রতীর্থ, উত্তরবাহিনী কুবেরতীর্থ, বিহারতীর্থ, স্বন্ধারচক্রতীর্থ, বাদরপ্রাচীতীর্থ (বদরিপাচন), ইক্সতীর্থ, প্রস্তরামতীর্থ, মুনাতীর্থ, একরাত্রতীর্থ, ক্ষীরকাবাসতীর্থ, মার্কগুতীর্থ, প্রাচীদবীচিতীর্থ, সরস্বতীর্তীর্থ, স্বততীর্থ (স্বতীর্থ), স্থনক্ষাতীর্থ, প্রাচীদবীচিতীর্থ, সরস্বতীর্তীর্থ, স্বন্ধরতীর্থ, স্বান্ধরতীর্থ, বাণগঙ্গাতীর্থ, আপগরাতীর্থ, স্বনরক্তীর্থ, ব্রাণগঙ্গাতীর্থ, আপগরাতীর্থ, সনরক্তীর্থ, সর্ক্র্বন্ধর, প্রানাতক্প, লক্ষীকৃগুতীর্থ, সর্ক্রিক্রিথ, কুক্সক্রজীর্থ, কুক্সক্রজ, সোমতীর্থ, সনহদতীর্থ।

এই ৮৮ তীর্থ পঞ্চক্রোশ পরিক্রম মধ্যে, সকল তীর্থ উদ্ধার নাই। অক্ত অক্ত তীর্থ মুদলমানদিগের সময়ে এবং বুগ-পরিবর্ত্তনে 'লুপ্ত ছিল, পরে উদ্ধার হইয় দীপ্তিমান জ্মাছে। এছলে প্রধান কয়েকটী তীর্থ প্রকাশ জ্মাছেন, বাকী স্থানমাত্র চিক্ত প্রাছে। খানেখর শিবের পশ্চিম ২ ক্রোশ জ্যোতীখর শিব আছেন, ঐ স্থানে শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনের রক্ষোপরি যুদ্ধবিষয়ে বাদামুবাদ হয়, যাহাতে অষ্টাদশ অধ্যায় ভগৰদগীতা জ্মিয়াছে। ভাহা অতি স্বর্মা স্থান, এক্ষণে বন হইয়া আছে।

থানেখরের পূর্ব-দক্ষিণ ৪ ক্রোশ চক্রবৃাহ, যথায় অভিমন্থাকে সপ্তর্থীতে বধ করে, ঐ ব্যহের ইট ওজনে ২ মণ পর্যান্ত আহিছে; ইটে অঙ্গুলি চিক্ত আছে। ঐ স্থানে মুসলমান-চক্রবৃহে
দিগের কেলা আছে। ইহার দক্ষিণে আধ-

ক্রোশ স্থ্যকুণ্ড। স্থ্যকুণ্ড পৃষ্ধিরণী, তাহাতে অধিক জল আছে, পশ্চিমদিকে পাকা ঘাটবান্ধা, গ্রদিকে এক শিবালয় আছে, দক্ষিণদিকৈ এক বৈষ্ণব আছে, তথায় লক্ষ্মীনীরায়ণের সেবা আছে।

থানেখর হইতে ১০ ক্রোশ পৃথ্দক তীর্থ, সরস্বতী উত্তরবাহ্নিনী
পৃথদক
বেগবতী। শ্রামকার্ত্তিক অর্থাৎ গণেশ ও
কার্ত্তিকের দেবদেনা ও অত্যদেব হইবার টাকা
হয়। ব্রহ্মবোনি—ব্রহ্মা স্টি-পত্তন করিয়া ঘোনিনিরূপণ স্থান।
বশিষ্ঠ-প্রাচী ইত্যাদি তীর্থ সর্কল যম্নার তীরে আছে, অষ্টক্রোশ
পরিক্রম।

থানেখর শিব কৃষ্ণপিওবের যুদ্ধসময়ে পাওবের শিবিরে ক্রোপদীর পঞ্চপুত্রের রক্ষার্থ ধারী ছিলেন। পঞ্চ পুত্র নিধনান্তর মহাদেব স্থাপিত রহিলেন। ঐ থানেখরের সম্ব্রে এক কুগু আছে, ভোহার চতুর্দ্ধিকে সানবাদ্ধা ঘাট; পুর্বাহিকে শুদ্ধ নানকের গদি আছে, ঐ কুণ্টের চতুর্দ্ধিকে সাধুদিগের স্থান এবং ঐ কুণ্ডের জল লইরা অগ্নিসংস্থার করিতে নিষেধ আছে। যদি কেহ ঐ জন নইরা অগ্নি বারা উঞ্চ করে তবে তাহার পাত্র সকল ফাটিরা খণ্ড খণ্ড হয়। আর ঐ কুণ্ডের জল নইরা যদ্ধি কেহ কর্ম-উপলকে ঘটপূর্ণ করিরা ভাণ্ডার মধ্যে রাথে, তাহার ভাণ্ডার পূর্ণ থাকে। বহুকালের শিবমন্দির, ক্ষুম্য স্থান।

ু থানেশ্বর হইতে ভীমকুণ্ড ২ ক্রোশ পশ্চিম। এই স্থানে ভীম্ম-দেবের শরশ্যা হয়, ঐ স্থান জঙ্গল হইয়াছে, ভীমকণ্ড এক কুণ্ড আছে, তার তিন দিকে সানবান্ধা ঘাট আছে, দক্ষিণদিকে উচ্চস্থান, ঐ স্থানে ভীল্মদেব শরেতে শয়ন করিমাছিলেন। কুণ্ড মৃত্তিকাতে পরিপূর্ণ হইয়াছে, জ্বল অল থাকে। বাণগঙ্গা উক্ত কণ্ড হইতে ২ ক্রোশ দক্ষিণ, ভীম্মদেব শ্রশ্যা-সময়ে গলাজলপানের ইচ্ছা করাতে ত্র্যোধন গলাজল আনিয়ন জ্ঞ ভূতাগণকে নিয়োজিত করেন। ইহা বাণগঙ্গা দেখিয়া ভীয়দেব অর্জুনকে গঙ্গাজল জয় ্কহিলে, অৰ্জুন তৎক্ষণাৎ গাঞ্জীবে বাণ জুড়িয়া পৃথিবীতে নিক্ষেপ করিয়া, পূর্থিবী হইতে পাতাল ভেদ করিয়া ভোগবতী গঙ্গার ৰুণ উপিত হয়, ঐ স্থান বাণগন্ধা। এক অন্ধচন্দ্রকৈতি কুপ আছে, চতুর্দিকে সনিবান্ধা, উত্তর্নিকে এক বাবাজি আছে, লক্ষ্মী-নারায়ণের সেবা আছে।

কর্ণথেড়া—আপগদার নিকট এক উচ্চ হান আছে। তথার
কর্ণথেড়া মহাবীর কর্ণ প্রতিদিবদ স্থান ও শত মণ স্থান দান ক্রিয়া যুক্ষেগমন করিতেন। কুরুধরন্ধতীর্থ—যে হলে কুরুনাম্ভিতীর্থ রাজ যক্ত করিয়া ধ্বলা তুলিয়াছিলেন, ইহাকে
নাভিতীর্থ কহে, কুরুক্কেত্রের নাভিত্ব জন্ম (এই নাম)। সনহদ — বর্ণার দ্বীচি মুনি তপস্থা করিতেন। ঐ স্থানে ইক্র তাঁহার অব্দের অস্থি যাজ্ঞা করেন। মুনিরান্ধ পরোপকার জন্তু সনহদ বা সৈক্তরণ নির্মাণ জন্ত অস্থি প্রদান করেন। পরে ঐ স্থানে কুরুপাশুবের উভয় দলের সেনা ও সেনাপতিগণ সনহদ তীর্থে মান-দান করিয়া যুদ্ধ-যাত্রা করিতেন, এজন্ত সৈন্তর্ভ্জদবলে। উত্তম কুশু, সানবাদ্ধা ঘাট, অনেক বৃক্ষজ্ঞারা আছে, লন্ধী-নারামণ (ও) শিবমন্দির আছে, প্রতিদিবস অনেক রাহ্মণ স্থান-পৃশ্ধা-পাঠাদি করেন, সুশীতল স্থরমা-স্থান, শেঠদিগের এবং রাজা রণজিৎ সিংহের ঘাট আছে।

গন্ধীকুণ্ড — ইহার নাম কুরুক্তে তীর্থ, এই ছানে কুরুপাগুবের যুদ্ধসময়ে প্রীকৃষ্ণ অর্জুনের রথের অর্থগণকে জলপানকরণ রুদ্ধ দ্বোবর স্তজন করেন। বৃহৎ সরোবর, চতুর্দ্ধিক্ পরিক্রমে ছই ক্রোশ, রুল অধিক, পদ্মবন আছে, উহার চতুর্দ্ধিকে সানবারা ঘাট; একজনের ক্বত ঘাট নহে— অনেক দেশীর রাজগণ এবং ধনাচ্যগণে এক এক ঘাট বাছাইয়া দেওয়াতে চতুর্দ্ধিকে ঘাট হইয়াছে। এই কুরুক্তে তীর্থের মাহাম্মার্কি জন্ত প্রীকৃষ্ণ হারকা-লীলা সময়ে স্ব্যাগ্রহণে ঘারকাপুরীর সকল বৈভবসহ পরিজনবর্গ সমত্যারে কুরুক্তে স্লোন আদিরা কুরুক্তের উত্তরদিকে বাস করেন। ঐ হানে কুন্নাবন-লীলার সালোপাঙ্গসকল প্রীরাধা নিজ সঙ্গিনীসহ আদিরা কুরুক্তেরে মানন হয়। গ্রহণসময়ে মানসিক লীলাতে রাজসিক ব্যবহারে মান-দানাদি লক্ষীসহ নারারণ মুর্তিতে সম্পন্ন করেন, ঐ উত্তরদিকে গদি আছে। অতি মহাতীর্থ, প্রান-দানে সহত্ব গুণ ফল, মান

তর্পণে অনস্কল, উত্তরদিকে তীর্থ প্রাক্ষ দানাদি করিতে হয়।

কুত্তের মধ্যস্থলে প্রবণনাথ গোসাঞি লক্ষ্মীনারায়ণ মূর্ত্তি প্রকাশ
করিয়া মন্দির ও বাটী ≷তয়ার করিয়া দিয়াছেন। এক শিব এবং
কালীপ্রতিমা আছে। কুত্তের মধ্যস্থলে ঘীপ হইয়ছে, ঐ ঘীপ
মধ্যে এই সকল দেবালয়, দেবালয়ে গমনাগমন জক্ত সেতু বাদ্ধিয়া
দিয়াছেন, তাহার উপর দিয়া গমন করিতে হয়।

এই কুণ্ড হিন্দুদিগের মহাতীর্থ, ইহা আওরঙ্গজেব বাদসাহ জ্ঞাত হইয়া পরীকা দারা,প্রমাণ পাইয়া তীর্থলোপ করিবার জ্ঞ নানামত চেষ্টা করিয়া শেষে ঐ কুণ্ডের উপর সেতু বান্ধিয়া দীপ মধ্যে এক কেলা এবং মসজিদ তৈয়ার করে। কেলাতে দৈক্তগণ নিষ্কু ছিল যে, এই তীর্থমধ্যে হিন্দু কেহ স্নান কি জলস্পর্শ করিতে না পারে, এরপ চৌকি পাহারা ছিল। বালসাত্তৰ বাজ্ঞা সময়ে কেছ তীৰ্থে স্নানাদি কৰিছে পাৰিজ না। কতক দিবস গত হইলে দাক্ষিণাতা পুনা-সেতারার রাজা অমৃতরায় ছল্মবেশী হইয়া আসিয়া সানার্থে থাকিয়া নানা কৌশল দারা অধিক অর্থবায় করিয়া এক কলস জল আনাইয়া স্থান করিছা আপন ইষ্ট-সাধনান্তর বিবেচনা করিলেন যে, এমন তীর্থ যদি বাদসাহ লোপ করিল, তবে হিন্দু হইয়া ইহার উপায় করিতে না পারিলে মিথ্যা প্রাণধারণ। ইহা ভাবিয়া কিছ দিনাত্তে সলৈতে আদিয়া ঐ বাদদাহের সহিত যদ্ধ করিয়া উক্ত তীর্থ জয় করিয়া আপনগণকে কেলাতে নিয়োজিত করিয়া তীর্থ মুক্ত করিশা দেন; পরে ঐ রাজ্য শিথদিগকে অর্পণ করিয়া অদেশে প্রস্থান করেন। তদবধি রাজা রণজিতের সময় প্রয়ন্ত হিন্দুরাজ্য ছিল, পরে ইংরাজ-বাহাছরের রাজ্য হয়। একণে তীর্থলোপের সম্ভাবনা না হইয়া বরং ক্রমে উদ্ধারের বিশেষ ব্যবস্থা হইতেছে।

কুরুক্তেরের তাবং মৃত্তিকা রক্তবর্ণ, কিপ্ত এক্ষণে সকল স্থানে রক্তবর্ণ দেখা যায় না, উপরে সামান্ত মৃত্তিকার ভাগ দৃষ্ট হইতেছে;
কেবল ভীগ্নদেব রচিত মংস্তবৃহ এবং
সংক্রেরের মৃত্তিকা
সংস্থাকের মৃত্তিকা রক্তবর্ণ দৃষ্ট হয় এবং
রক্তের গদ্ধ উঠে। আর আর স্থানে বৃষ্টি-ক্লল হইয়া পরিপূর্ণ হইলে
ঐ জল রক্তের ভাগ হয়। বর্ষা সময়ে কুরুক্তেত্তের সকল ভূমি
রক্তবর্ণ হয়। আমরা এই তীর্থে যৎকালীন ছিলাম, তাহার মধ্যে
এক দিবস বৃষ্টি হয়, তাহার পর আমরা চক্তবৃহে দেখিতে যাই।
পথিমধ্যে যে যোনে বৃষ্টিকল বদ্ধ আছে, তাহা বিশেষ ভদারক
করিয়া দেখা হইল, রক্তের ভাগ জল, মৃত্তিকার নীচে রক্তবর্ণ,
ইহাতে বোধ হয় অধিক বৃষ্টিকল পরিপূর্ণ হইলে সকল লাল
জল হয়।

অন্তিপুরা নানে যে তীর্থ আছে, তাহাতে কুরুপাণ্ডবের যুদ্ধে
যত ব্যক্তি হত হইরাছেন, আহাদিগকে একতা করিয়া যে ছানে
সংকারাদ্দিকরেন এবং কুরুকুল-বধুগণ যথায়
সহমূতা হন, সেই স্থান দীপ হইরা
আহাছে।

হদাকার চক্রতীর্থ—কুরু-পাগুবের যুদ্ধ আরম্ভ হইলে বলদেবের বাক্যামূদারে পূর্ববীক্তমত প্রীকৃষ্ণ উভর দল সমুথে প্রতিজ্ঞা করিলেন বে, এ যুদ্ধে আমি অল্ল ধরিয়া যুদ্ধ চক্রতীর্থ করিব না। এই প্রতিজ্ঞা করিয়া আপন অল্ল স্থদর্শন এই স্থানে রাধিলেন। এই স্থানে সরস্বতী প্রক্রিমবাহিনী। ছর্ব্যোধন-টিলার দক্ষিণ যথার রাজা ছর্ব্যোধনের শিবির ছিল, তাহার সন্মুথে—দক্ষিণদিকে একণে ঐ চক্রতীর্থ। একটি ছোট মঞ্চ আছে, সকলে শবদাহ করে। সরস্বতী জলহীনা।

ইক্সভীর্থ—এই স্থানে সরস্বতী উত্তরবাহিনী, পূর্বাদিকে
সানবাদ্ধা ঘাট আছে। ইক্সরাক গুরুপত্নী
ইক্সভীর্থ হরণ করিয়া গৌতম-শাপে ভগাঙ্গ হইয়া এই
স্থানে তপতা করিয়া সুহ্বীগোচন হন।

বশিষ্ঠপ্রাচী—বশিষ্ঠ মৃনি তপ্সা করেন এই স্থানে, স্থরতি জয়া বিখামিত্র সহিত্র বশিষ্ঠের বিবাদ হওয়াতে বলপুর্বক গাড়ী, লইয়া বাধুয়াতে বশিষ্ঠ-পুত্রগণ সহিত যুদ্ধ করিয়া মুনি-

ৰশিষ্ঠ প্ৰাচন প্ৰাচন হত হন। এই তীৰ্থে এক কুপ আছে, ভাহার চতুৰ্দ্দিক্ পাকাবাদ্ধা।

কৃষ্ণকৃপ— মহাদেবের তপ:-ছান। কৃষ্ণকৃপ মহাদেবের তপ-জন্য কুণ্ড পৃষ্ণরিণীর আকৃতি, পূর্বাদিকে বাঁধাঘাট, কৃষ্ণকৃপ ঐ ঘাটের উপত্তে গোকর্ণের শিব আছেন, এক বন্ধচারী থাকেন।

হুৰ্গাকৃপ—এছলে ভগৰতীর গুল্ফদেশ পতিত হর, ইহার নাম গুল্ফপীঠ, ভদ্রকাণী দেবী, থানেখর ভৈরব। পুর্বেবে ভদ্রকাণী দেবী ছিলেন, তিনি মগ্ন আছেন। একণে ঐ স্থানে এক সিছ-সাধু ছিলেন, তাঁহার ক্বত ভদ্রকাণী প্রতিমা

নাবু হিশেন, তাহার ক্ষত ভত্তকালা প্রতিনা হর্পাক্প

তাহার সমাধির উপরে স্থাপিত আহ্নি, কুরুক্তেতের অধিঠাতী দেবী। ভত্তকালীর বধন পূজা করিতে হয়,
তথন ঐ কুপের পূজা দর্শন পরিক্রম মনন ফলবাধা করিতে হয়।

এই কৃপের উত্তরদিকে বে কুণ্ড আছে, তাহার নাম ছ্পাকুণ্ড। চতুদ্ধিকে ঘটবাধা। এই কুণ্ডে লান, জলে দেবীপূজা।

কুবের-তীর্থ—ধধার কুবের তপস্থা করেন, এক কুণ্ড আছে,
চতুদিকে বাধাবাট, অধথবুকাদি আছে।
কুবেরতীর্থ এস্থানে গোকুলস্থ গোস্থামী-আচার্য্য প্রভূর
বেষত সর্বাতীর্থে গদি আছে, সেইমত গদি আছে।

বিহারতীর্থ—এইস্থানে হর-পার্বাতী বিহার করেন, অতি স্থরম্য-স্থান, যমুনার তীরে ঘাট পাকা বাঁধা স্থাছে। ঐ বিহারবন মধ্যে

কুককেতেরে রাজার সমাধি আছে। ঐ বন বিহারতীর্থ একণে বহু দূর পর্যান্ত (বিস্তৃত)। আন্তর্গাছের রাগান আছে।

বৈপায়ন হদ—বর্থায় বাল্লিনের তপস্থা করিতেন, কুককেজতীর্থ হইতে বোল ক্রোল । এই স্থানে ছর্ব্যোল বৈপায়ন হদ ধন গলাইয়া লুকাইয়া থাকেন। একণে বনমধ্যে এক প্রক্রিণীর আকৃতি আছে।

এই মত তীর্থ সকল স্থানে স্থানে আছে, ইহার মাহাত্ম মহা-ভারতে এবং কুরুকেত্র-মাহাত্ম্যে আছে।

থানেশ্বর সহর—এ সহর প্রায় ছই ক্রোশ, ইহার মধ্যে নানা দেশীর মহাজনগণের বাণিজা ছিল, সহরের উত্তম রাস্তা, মাটা নাই,

শনেধর সহর দোকান অনেক, রাতার ছই পার্থে দোকান কনেক, রাতার ছই পার্থে দোকানের শোভা ছিল। এই সহরের ভিতর দিরা পঞ্জার ইত্যাদি সকল দেশে গ্রমনাগমনের পথ ছিল। মাল-দেওরানী পুলিল ইত্যাদির কাছারি, ডাক্দর, সরাই, ডাক্কারধানা ছিল। এক্সনে পিপলি

ৰ্টরা ন্তন রাজা হওরাতে থানেবর হইতে ও জেনা অন্তর হর। লোকের গভারাত স্কর। যাহারা কুক্সেজে তীর্থক্ত গমন করে, তাহারা ঐ হানে থাকে, এক্ত সহর ভলিয়ান হই-রাছে। কেবল থানা, ডাজারথানা, বাঞ্চ-ডাক্যর আর ঐ স্কল দোকান ছিল্ল-ভিল্ল হইবা রহিলাছে।

সেকচিলির কেলাবাড়ী সহর মধ্যে আছে, পাণ্ডাদিগের বাটা চতুর্দ্দিকে আছে, উত্তরদিকে অধিক বসতি। সহর মধ্যে ভাল ভাল বাড়ী সকল আছে, পারথানা আলাহিদা নাই, ছাতে পারথানা।

## ৩০ মাঘ, দোমবার, ষষ্ঠী •

কুকক্ষেত্রতীর্থ লক্ষীকুণ্ডে রান-তর্পণাদি, তীর্থপ্রান্ধ, লক্ষীনারা-মণ, থানেখর, শিব-হর্গাক্প, ভদ্রকালী দর্শন, ত্রাহ্মণ ও কুমারী-ভোজন।

## ১ ফাল্গন, মঙ্গলবার, সপ্তমী সনহদ তীর্বে লান-তর্পণাদি, তীর্বে ভ্রমণ।

২ ফাজ্কন, বুধবার, অউমী থানেখর-কুঙে নান-তর্পণাদি ও শিবদর্শন। ভীমাইমী —ভীমকুঙে নান (ও) ভীম-তর্পণ। কুঙে জল অধিক নাই, ঐ কুণ্ডের উপরে এক মুর্তি আছে।

## ৩ ফাস্তুন, বুহস্পতিবার, নবগী

ণলীকুণ্ডে লান-তৰ্পণ, চক্ৰব্যহ দৰ্শনাৰ্থ গমন, স্থ্যকুণ্ডে লান-তৰ্পণ।

## ৪ ফাব্রুন, শুক্রবার, দশমী

পঞ্জোশী পরিজ্ঞমার্থ গমন, কুক্থবজ্ব হইতে আরম্ভ করিয়া থানেখর-শিব দর্শন। থানবটকুতে স্নান-তর্পণাদি, দশতীর্থ দর্শন স্পর্শন স্নান মার্জন তর্পণাদি করিয়া বাদায় গমন। বৈকালে অক্সান্ত দেবতা-দর্শন ও নগর-ভ্রমণ।

#### ৫ ফাল্লন, শনিবার, একাদশী

পঞ্জোশী পরিক্রম। চতুর্মুখ তীর্গ হইতে আরম্ভ করিয়া স্বর্গছার পর্যান্ত পরিক্রম, স্বর্গছারে স্থান-তর্পন করিয়া বাদাতে গমন (৩)
অপরাহে নগর-ভ্রমণ।

- ৬ ফাল্গন, রবিবার, দ্বাদশী পরিক্রম।
- ৭ ফাল্গন, সোমবার, ত্রয়োদশী

তীর্থে থাকিয়া তীর্থ-পরিক্রম, থানেখর দর্শন (ও) পূজন। ৮ ফাল্পুন, মঙ্গলবার, চুতুর্দশী

কুক্লকেন্ত-তীর্থে সান-তর্পণাদি করিয়া ব্রহ্মকৃপ, মহেশ্বরকৃপ, পার্মবিট্রকৃপ, পদ্মনাভকৃপ ইত্যাদি দর্শন করিয়া অপরাহে নগর ব্রহণ এবং সেকচিল্লির কেলা এবং বাটা দেখিতে গমন। ঐ কেলা-মধ্যে অনেক মুস্কমানের বসতি। একণে ঐ স্থানে তহশীলদারের কাছারি আছে। সহর হইতে অনেক উচ্চে কেলা, কেলামধ্যে ছই স্তম্ভ আছে, অধিক উচ্চ, স্তম্ভেতে মিনার্ক্ত কর্ম আর আর আল পাথরের কর্ম ছিল, একণে ভর হইরাছে। ঐ ক্তম্ভের উপর উঠিলে কুক্লেক্তের সকল অংশ দৃষ্ট হয়।

## ৯ ফাল্কন, বুধবার, পূর্ণিমা

বাণগন্ধা, কৰ্ণখেড়া, আপগ্না, ফল্প ইত্যাদি তীৰ্থ দকল দৰ্শন ম্পর্শন। বাণগঙ্গা মৃত্তিকাতে পরিপূর্ণ হইয়া আছে, তাহার চতুর্দিকে পাকা সানবান্ধা ঘাট, ঐ ঘাটের পৈঠা পর্যান্ত ভরাট হইয়াছে, অতি অর জল আছে, কুণ্ডের পশ্চিমদিক অর্দ্ধচন্দ্রাকৃতি, তথায় মার্জন সানাদি করিয়া যথায় কর্ণথেড়া অর্থাৎ কর্ণ দানাদি করিয়া যুদ্ধে গমন করিতেন, তাহা দর্শন করিয়া, ঐ টিলামধ্যে বৃহৎ বৃহৎ সূৰ্প আছে এবং ঐ ট্ৰাতে •বৃষ্টি জল হইলে কেহ কেহ টাকা ইত্যাদি পাইয়া থাকে, প্রায় সূর্বদা পায়। আপগায় এক কৃপ আছে, তথায় প্রিওদান করিতে হয়, ঐ কুণ্ডে পিওদান, তথা হইতে ছুই ক্রোশ ফল্পতীর্থ দর্শনাদি করিয়া কুরুক্ষেত্রতীর্থ, লক্ষাকুগু পরি-ক্রম করিয়া ঐ কুণ্ডে স্থান-তর্পণাদি পরে প্রবণনাথ-স্থাপিত শঙ্গী-নারায়ণ, নশ্বদেশর শিব (ও) মহিষমর্দিনী দর্শন করিয়া লক্ষী-মারায়ণের গদি দর্শন, অন্দর মধ্যে দশভুজামৃত্তি দর্শন করিয়া বাদাতে আদিয়া আহারাদি করিয়া অপরাত্নে থানেশ্বর দর্শন, নগর পরিক্রম, লক্ষীকুভের দক্ষিণে ১এক সাধুকৃত নারায়ণমূর্ত্তি দর্শন, (তাঁহার) অতি উত্তম মন্দির।

#### ১০ ফাল্গন

কুরুক্তের দল্লীকুণ্ডে নান-তর্পণাদি করিয়া আহারান্তে তথা হইতে ও ক্রোণ পিপলি। ঐ স্থানে মাজিপ্টর, অ্বজ্ব, কলেক্টর (ও) কমিশনরের কাছারি এবং রাস্তার উপর ডাক্ঘর আছে। ঐ স্থানে পড়াউ, সরাই, শ্বানা, তহশীনদারের কাছারি (ও) রসদের অস্ত কোম্পানীর শুলাম আছে। সরাই ছোট, ইহাতে মন্থ্যগণের পাকিবার কট, এলভ কোতোরালু ন্তন আর ুএক সরাই তৈরার করাইতেছে। পড়াউতে ছারা মাত্র নাই। রাত্রে ঐ পড়াউ মধ্যে হিতি।

#### ১১ ফাল্গন

পিপলি হইতে ৭ কোশ তেওড়া, ছই বালালা এবং থানা আছে। পরে ৩ কোশ সাহাবাদের পড়াউ, গুদাম, থানা, তহলীলের কাছারি (ও) পরাই আছে। ক্ষুদ্র সহর; সাহাবাদ বিবাজে পড়াউ মধ্যে বৃক্ষমূলে আহারাদি

#### ১২ ফাল্লন

সাহাবাদ হইতে ২ ক্রোশ মার্কণ্ডের রেতি, তাহার পর

ক্রোশ টগরিনদী, পরে ০ ক্রোশ বাণগলা, পরে অহালার ছাউনী,
লালকুরতির বালার, সদর বালার, এই
অহালার ছাউনী
সকল, বালারে ইংরাজদিগের অ্ব্যাদি পাওরা
বার, বিলাতী জ্ব্যাদি পাওরা বার, পরে প্যারেডের মাঠ,
দৈক্তদিগের বৃদ্ধশিকা হইতেছে। এক্রণে এই ছাউনীতে কালা
সিপাহী তিন পন্টন আছে।

স্থানিকিত এক পণ্টন শিখনৈক্ত আছে, তিন পণ্টন শিকা করিতেছে। এই সকল দপ্তর্থানা ছাউনীর মধ্যে। ইহার পশ্চিম ৩ ক্রোণ আখান সহর। সহরের অখানাসহর পৃক্ষিকে এক পৃক্ষিণী আছে, তাহার চতুর্দ্ধিকে পাকা ঘাট বাধা। স্থানে স্থানে/ অখথ বট নিম্বৃক্ষ আছে এবং শিবালয় আছে, ছই ভাল ক্রা আছে, ঐ পুন্ধবিশীর
নিকট দেবালয় আছে, তাহার মধ্যে এক ক্রির একটি ছোট
বাটা আছে, ঐ নাটতে দিবার আহারাদি করিয়া রাত্রে সহরে
সরাই মধ্যে থাকা হয়, কিন্তু জলকটা সহর উত্তম, অনেক দোকান
এবং নানামত থাক্সব্য, বস্তু ও বেসাতি, পিতল, কাঁসা, রূপা,
সোণা, পশ্মিনা ইত্যাদি ভাল ভাল দ্রব্যাদি পাওয়া যায়।

#### ১০ ফাল্গন

অম্বালা হইতে ২ ক্রেণ কাগাননী, পরে ২ ক্রোণ মগনের সরাই এবং পড়াউ গুদাম পানা দোকান আছে। সরাই ভয় হইয়াছে। পরে ৬ ক্রোণ রাজপুরা গ্রাম এবং সরাই, ঐ সরাই

মধ্যে পেটেকা বাজার, করেদীগণ থাকে, রামপুরা
তাহার দারগা, মুন্সী ও জমাদারদিগের
কাছারি এবং গারদ পশ্চিমদিকের ফটকে আছে। সরাইরের
উত্তরদিকে এক বাগান কলমের চারাতে তৈয়ার করিতেছে।
ঐ সকল বন্দিগণের ঘারা বাড়ী, বাগান (ও) এক বাড়ী
তৈয়ার হইতেছে। দক্ষিণদিকে এক আম্রবাগান আছে, ঐ
বাগানে দিবাতে আহারাদি করিয়া সন্ধ্যার পর সরাই মধ্যে বাস।

## >৪ ফাল্কন

রাজপুরা হইতে বেলোরা ৪ ক্রোল, পরে পাতড়ালির সরাই
২ ক্রোল, তথা হইতে ৬ ক্রোল সরেলা—ক্ষুদ্রসহর, সকল দ্রব্যাদি

পাওরা যার, অনেক মহাজন লোকের এবং
সর্ফিল বা সরেলা

রাজণ ক্রির বেণিরা ইত্যাদি হিলুমুস্লমান
সকল জাতির বুসতি ও দোকান আছে। সহর মধ্যে এক

প্রাচীন শিব আছেন, তাহাতে গোসাঞি আছেন, নর্মদেশর শিবমন্দির, বাটী ও বাগান উত্তম, তিন প্রস্থ বাটী, নির্বাণী-সম্প্রদায়ের গদি। গোসাঞি সিদ্ধর্বাক্তি ছিলেন। লক্ষ্মীনারায়ণ মূর্ত্তি-সেবা। নর্মদেশর শিব, দশবান্থ শিব। মহিষমর্দিনীমূর্ত্তি, গণেশ ইত্যাদি দেবসেবা (ও) সদাত্রত আছে। এক্ষণে যে গোদাঞি গদিতে আছেন, সাক্ষাৎ শিবসূর্ত্তি, সকল শাস্ত্রে স্থপণ্ডিত, ইঁহার গুরুর গদিতে এক পাত্রকা আছে, ঐ বাগানে দিবাতে আহারাদি ক্রিয়া সন্ধ্যায় পুরাণ সরাই মধ্যে ( অব্স্থান )।

#### ১৫ ফাল্পন

সর্বেন্দা হইতে ৮ ক্রোশ থরের সরাই, মৃত্যু তারওয়ালা-রাতা। পড়াউ, গুদাম, থানা, তহশীলদারের কাছারি (ও) সরাই আছে। পরে ৭ ক্রোশ আসিয়া লম্বরের লম্বরের সরাই সরাই, রাস্তার উপর থানা এবং তিন দোকান ুজাছে। রাস্তার দক্ষিণ ॥• ক্রোশ যাইয়া লয়রের সরাই, ঐ मुत्राहेरमुत्र निकृषे तुक्कमृत्न कारातानि। मस्तात , शत मुत्राहे মধ্যে (অবস্থান)।

#### ১৬ ফাল্পন

লক্ষরের সরাই হইতে ৪ ক্রোশ দুর হাই পড়াউ। আংদাম খানা তহশীলদারের কাছারি সরাই আছে। তথা হইতে ৯ জ্লোল আসিরা লুধিয়ানার পড়াউ। লুধিয়ানা সহর উত্তম (স্থান), শ্রেণী-মত দোকান সকল আছে। প্ৰায় ছই **ৰু**ধিয়াৰা ক্রোশ সহর। পশমিনা বস্তাদি এবং উর্ণা-্ৰক্লাদি নানামত জন্মিতেছে। সহবের রান্তা/প্রশন্ত, ছই পার্ছে দোকান, বে জবা বে পটাতে আছে, তাহার সকল দোকান এক শ্রেণীতে আছে, চকবুলী সহর স্থাপিত। পশম বাহাতে শাল জন্মে, উলা যাহাতে লুই জন্মে, তাহার বিক্রের হইতেছে। পকার মিপ্টারাদি অনেক মত পাওরা বার। এক পুরাণ কেলা আছে, ছোট কেলা, কিন্তু মজবুদ, নদীতীরে কেলা। এখানে পুল আছে। যে পড়াউ আছে তাহার সম্প্রে নৃতন সরাই, তহলীলের কাছারি (ও) থানা আছে। এ পড়াউ নিকটে ষ্থার মাজিপ্টরের নৃতন কাছারি, তৈহার হইতেছে, তাহার সম্প্রে অস্বশৃদে আহারাদি করিয়া সহর ভ্রমণ, জজ-মাজিপ্টর-কালেক্টরীকাছারী, ডাক্সর, ডাক্টারখানা ইত্যাদিতে ভ্রমণ করিয়া সরাই মধ্যে রাজে হিতি।

## ১৭ ফাল্পন, বৃহস্পতিবার

একটা টেলিপ্রাফের বর আছে, তাহার ভিতর হইতে তার
নদীর ভিতরে জল দিরা চালাইরাছে। ঐ বর হইতে পারবাটা

॥• কোশ, তথার নৌকারে পুল আছে,
ভাহার পর কিঞ্চিৎ চড়া আছে, তাহার পর ১• থানা নৌকার
পূল, তৎপরে প্রায় অন্ধিকোশ চড়াতে যাইয়া ১৮ থানা নৌকার
পূল, তাহার পর কতক চড়া ভূমি যাইয়া ১২ থানা নৌকার
পূল, এই মত য়ারি থাক নৌকার পূল পার হইতে ১ কোশ
নদীর প্রশন্ত হয়, তৎপরে প্রায় ১ কোশ বালুকাময় ভূমি
যাইয়া কোলবেরী—রাজা রণজিৎসিংহের পঞ্চাব-রাজ্যের প্রথম

লুধিয়ানা হইতে ৪ কোশ সত্লেজ নদী, নদীর তীরে হল,

ছর্গ। ঐ স্থানে যে কেলা আছে, অধিক বৃহৎ নহে, কিন্তু অভিশন্ত মজবুদ, আটকোণ কেলা, ধাই অনেক গভীর এবং প্রশন্ত, চতুর্দিকে মাঠ আছে, মধ্যে মধ্যে হৈন্ত এবং সেনাপতি-দিগের স্থান আছে। একণে ঐ কেলা মধ্যে অধিক সৈন্ত নাই, কেবল রক্ষার জন্ত কিছু পদাতি ভোপ মেগাজিন আছে। কেলার পর ॥• ক্রোশ সহর, দোকান ও হিন্দু-মুসলমানের বসতি আছে। ক্ষুদ্র সহর, পরে ২ ক্রোশ বাইলা ছাউনি, প্যারেডের মাঠ, সাহেবদিগের বাঙ্গলা, পড়াউ গুলাম থানা সরাই আছে, তথা হইতে ১০ ক্রোশ ফাগুওয়াড়া। ফাগুওয়াড়া সহর রাস্তা ইইতে

॥ ৷ ক্রোশ, তথায় হিন্দু মুসলমান নানা জাতির ক্ষা হওৱাতা অনেক বসতি এবং তাবৎ দ্রব্যাদির দোকাম আছে। রান্তার নিকট এক পুছরিণী, চতর্দিকে ইটের পাকা গাঁথনী, পশ্চিমদিকে ডাক্ঘর এবং দোকান আছে এবং অখখ-রক্ষের ছান্না চতুস্পার্শে আছে। ঐ পুন্ধরিণীর উত্তরদিকে-এক সাধু আছেন। ১২ বৎসর দাঁড়াইরা আছেন। উত্তরপূর্ব্ব-কোণে শিবালয় এবং সাধুদিগের থাকিবার আধড়া, পূর্বাদিকে (ও) দকিণে ব্রাহ্মণ এবং ক্ষেত্রির বসতি। যে সাধু ১২ বৎসর দাঁড়াইয়া আছেন, তাঁহার মাতা, পিতা, স্ত্রী এবং এক পুত্র আছে. ঐ গ্রামে বাস, জাতিতে গৌড়-ব্রাহ্মণ, বয়স ৩০ বংসর মধ্যে, দেখিতে স্থন্দর, নথ-চুল আছে. পুছরিণী-তীরে এক গুফার স্তায় মন্দির আছে, ঐ মন্দির-মধ্যে দিবারাত্র দাণ্ডাইয়া আপন ইষ্ট-সাধন করিতেছেন। দিবাতে একবার বাহির হইয়া প্রাতঃক্বত্য স্নানাদি করিয়া প্যহমধ্যে প্রবেশ करत्रन। ঐ श्रकारक मर्सनाहे बात क्रम शारक, এक गराक आहर, তাহাতে দর্শনাদি হর, কিন্তু যদি মন হয়, তবে গঞ্জি মুক্ত থাকে, নচেৎ বন্ধ বারা ক্লব্ধ রাথেন। কাহারও সহিত বাকালাপ নাই, মৌনরতের স্থার, আহার জ্রান্ধ স্বল করিয়া, এক্লণে কেবল এক পোয়া ছ্বা কিঞ্ছিৎ বাতাসা (মাত্র), দেহ কুল হর নাই। শুফার সন্মুবে বিসিবার স্থান আছে, ঐ স্থানে বিসিরা পণ্ডিতগণ প্রাণপাঠ (ও) ভগবৎ-প্রদল সর্বাদা করিয়া থাকেন, সাধুর স্ত্রী প্ত প্রাতে একবার আইসে, তাহাদিগকে একবার দৃষ্টি মাত্র। মাত্রা ভ্ইবার আইসেন, দেখিয়া প্রণাম। ঐ সাধুদর্শনার্থে ৪ চারি সময় গিয়াছিলাম। শুফার গবাক্ষ-বার মুক্ত করিলেন না, অনেক দূর হইতে সাধুগণ গৃহিগণ দর্শনার্থে আসিয়াছিলেন, কেহ দর্শন পাইলেন না, আময়া দিবাতে ঐ পুক্রিণীর পুর্বাদিকে অখ্য-মূলে আহার করিয়া সন্ধ্যার পর সাধুদর্শনাস্ত্রর সরাইতে গ্রমন করিয়া রাত্রে সরাইয়ে

#### ১৮ ফাল্পন

ফাৰও গুড়া হইতে কিছু দ্র প্রামের প্রান্তে যাইয়া এক বাগান আছে, ঐ বাগানের পার্য হইয়া হই রাজা, পশ্চিমমুথে বে রাজা গিয়াছে, ঐ তার ওয়ালা রাজা জলন্ধর সহর যাইবার, উত্তরমুথে বে রাজা হশিয়ারপুর যাইবার কাঁচাপথ। উক্ত বাগান হইতে পোচকোশ ওঝা নদী, পরে ৪ কোশ রেহালা প্রাম, ঐ প্রামে অনেক বৃক্ষাদি, থানা এবং জোলা-তাঁতিদিগের বাস, ডাক-বদলের কাহারদিগের চৌকী আছে, তথা হইতে ৩ কোশ হরেলা প্রাম, ঐ প্রামের মধ্যে এক বটর্ক আছে, তাহার নিকট হরেলা এক থানি ঘর প্রামবাসী লোকেরা তৈয়ার করিয়াছে, ঐ বৃক্ত কা প্রামের সকল মন্থ্রের বিশ্রাম হয়। এক ভাল কুলা আছে। উক্ত গ্রামে রাজপুত ও বেণিরার অনেক বসতি ছিল। রাজপুতগণ বাদসাহার সহিত যুদ্ধ করাতে তাহাদিগকে পরাভব করিলা মুসলমান করিলা দিলছে। গ্রামশুদ্ধ মুসলমান, কেবল বেণিরাগণ হিন্দু আছে। ঐ গ্রামের মধ্যে বটর্ক্ষতলে আহারাদি করিলা বাবলাতলাতে রাত্রে শ্রন। গ্রাম-মধ্যে দোকান আছে, চাউল দাল আটা হত পাওয়া যায়, শুড় উৎকৃত্ত।

## ১৯ काञ्चन, भनिवात, नवगी ्

হরেলা হইতে ৪ ক্রোশ হুশিয়ারপুরের ছাউনী, তথায় ছাউনীর ৰাজার আছে। এ ছাউনীতে কালাপ্ট্ন থাকে, তিন প্ট্ন থাকে। সাহেবদিগের বাঙ্গালা আছে। ঐ চলিহারপর ছাউনী মধ্যে খ্রামপুকুরনিবাসী এরাধানাথ চটোপাধাায় আছেন। অতি সংবাক্তি, তাঁহার বাসা হইতে কিঞ্চিৎ দরে ডাকঘর, তাহার পর ৩ ক্রোশ ছশিয়ারপুরের সহর, তথার মাজিপ্রের কাছারি আছে। সহর ভালন নদীর ধার। সহর মধ্যে হিন্দু-মুদলমানের ক্রনেক বসতি। মুদলমানের (মধ্যে) অনেক ধনী আছে। সহর প্রাচীন, থাছ ও অন্তান্ত দ্রব্যাদি সকলই পাওয়া যায়। কাঠের কোটা ইত্যাদি রঙ্গিন জিনিস (ও) পিতলের প্রদনা ভাল পাওয়া যায়। দিবাতে সহর মধ্যে না থাকিয়া সহরের ॥ কোশ মন্তবে বাহাত্বপুর নামে এক গ্রাম আছে, ঐ গ্রামে রাজা রণজিৎ সিংহের গুরু নানকের এক গদি আছে। ঐ গ্রাম শুরু নানকের স্বাত্রতের থরচার্থে আছে। গ্রামে ফটকবন্দ স্হর-পানা আছে, দোকান বাজার আছে। দিবাতে ঐ গ্রামের বটরক্ষ-মূলে আহারাদির উদ্যোগ হইতেছে, এমত সম্ব্র ঢাকুরিয়ানিবাসী

জীযুত দিননাথ চটোপাধ্যায়ের সহিত সাক্ষাৎ হর। পূর্ব্বে আলাপ ছিল, অতি ,সজ্জন, সহর মধ্যে তাঁহার বাদা। আপন বাদার নিকট এক বাটা ভাড়া করিয়া দিয়া ঐ বাটাতে বাহাছ্রপুর হইতে আহারাদি করিয়া সন্ধার পূর্ব্বে বাটীতে আদা।

## ২০ ফাজ্জন, রবিবার, দশমী

ত্শিরারপুরে থাকিয়া সহর ত্রমণ (ও) জোয়ালাজি (আলামুখী) গমনের উজোগ।

## ২১ ফাজ্তন, সোমবার, একাদশী

ছিলিয়ারপুর ইইতে ভাঙ্গা নদী পার ইইরা ১ ক্রোশ স্থাসিয়া
মুখ, ঐ থানে এক চটি আছে, তথা ইইতে পাহাড়ের হঅ।
ভাহার পর ২ ক্রোশ আসিয়া ঘাট, তথার এক ক্রা আছে। পরে
৪ ক্রোশ নারে—০ হটি আছে, তথার সানাদি করিয়া ২ ক্রোশ পর্বত
চড়াই করিয়া এক বটরুক্ষ আছে, ঐ বৃক্ষম্লে বসিলে মন অভিশর
, প্রেছুল্ল হইয়া শরীর হুশীতল হয়। পরে ১ ক্রোশ এক ক্রা

আছে, তাহার পুর > জোশ বোটাগ্রাম,
বোটা
২০ হটি আছে, এক কুঁছা আছে, ৭০ হাতের
নীচে জল। এঁক পুরুরিণী আছে, জল ভাল নহে। ঐ দিবস
বোটাতে দোকানে স্থিতি।

#### ২২ ফাব্ধন, মঙ্গলবার, দ্বাদশী

বোটা হইতে ৪ ক্রোশ আমবাগ নামে গ্রাম, রাজা উমেদ সংহের রাজ্য ছিল। ঐ থানে থানা এবং তহশীলদারের কাছারি আছে। ক্ষুম্ব সহর, এক অতি সুর্মা বাঁগান আছে, তাহাতে নানামত পূসা এবং ৩১৩ (২৭) উত্তম উত্তম ফলের গাছ আছে। পশ্চিম-উত্তর দেশের মধ্যে কণ্টকীফলের বৃক্ষ প্রায় নাই, বদিও কোথাও গাছ আছে ফল হর না। (কিন্তু) উক্ত বাগানৈ ফল হইরা বৃক্ষা-শোভিত আছে। ঐ স্থানে উমেদ দিংহের সহিত ইংরাজ বাহাছরের যুদ্ধ হয়। তথা হইতে ৮ জোশ রাজপুরা প্রাম, পাহাড়
মধ্যে বসতি আছে, রাজা উমেদ দিংহের রাজপুরা
কেলা ও বাটী এবং রাক্ষান, ক্ষত্রির ও
অক্সান্ত জাতিগণের বসতি। পর্কান্তের শিরোভাগে সন্মুখে এক
পর্কাত আছে। তাহার উপর ২৪ বাহবিশিন্তা মহিষমর্দিনী দেবী
আছেন। ঐ রাজপুরাতে ৫ হটি আছে, তথার ঐ দিবদ স্থিতি।
ঝারণার জল, কডির পথ—পাহাড়ের খুড়ে খড়ে পথ। উমেদ
দিহে সপরিবারে আলমোড়ার পাহাড়ে বন্দী আছেন, মাদিক
৪০০ শত টাকা মাসহারা।

## ২০ ফাল্লন, বুধবার, চতুর্দশী—শিবরাত্রি

রাজপুরা হইতে ৪ ক্রেন্স কুলুকী হটি, পরে ২ ক্রোশ আসিয়া গরণিগ্রাম, অনেক বসতি (ও) হটি আছে। পরে ২ ক্রোশ আসিয়া চম্পার ৫ হটি, পরে ১॥• ক্রোশ ব্যাসানদী (ও)

চম্পাগ্রাম। ঐ চম্পার ঘাট নৌকাতে পার হইরা বাাসগলাতে সান তর্পণ। চম্পার ঘাট হইতে পূর্বরূথে ২ ক্রোল কালেখর লিব দর্শন, পরে নদী পার হইতে হয়। পরে পার হইরা ৪ হটি আছে, তথা হইতে ৪ ক্রোল আসিয়া এক বটবৃক্ষ আছে, তাহার মূল এতরে বাধা, ঐ হানে সয়্লাসীদিগের এক মঠ আছে। ঐ অবধি আলামুখী কর্ছে। পরে ২ ক্রোল গেলে জোরালাজির ভবন। ইতোমধ্যে রাস্তার ছুই পার্ষে দোকান
সকল, ক্রমে ক্রমে ধাপে ধাপে রাস্তার চড়াই, তন্মধ্যে দোকান
সকল সহরের ন্তার বসতি, সকল ক্রব্যাদির দোকান আছে,
দেবীর মন্দির পর্যাস্ত ১ ক্রোল উচ্চ উঠিতে হয়, কিন্তু এমন
কৌশলে রাস্তার ধাপবন্দী আছে, কিছু জানা যায় না। মহাদেবীর মন্দিরের চতুম্পার্ষে পর্বতের উপর পাণ্ডাদিগের বসতি।

এই স্থানে জালন্ধরণীঠ—ভগবতীর জিহবাপতিত হয়, জোয়ালা-দেবী নাম, উন্মত্ত-ভৈরব রক্ষক ।

মহাদেবীর মন্দির পর্বতের মধ্যস্থলে, মন্দির দক্ষিণহারী,
ভালাদেবীর মন্দির
চতুন্দিকে কলস আছে, তাহার উপরে
ভার্বের ছত্র আছে, সমূর্বে হুই স্বর্ণমণ্ডিত ব্যাত্র আছে।

মন্দির মধ্যে মহাদেবীর জ্যোতি জ্ঞাতি আছে। মন্দিরের মধ্যন্থলে এক কুণ্ড আছে, ঐ কুণ্ডের উত্তরদিকে চারি জ্যোতি আছে, মধ্যন্থলে ছই জ্যোতি, তাহার মধ্যে এক জ্যোতি প্রবল, আর ছই জ্যোতি কথনও প্রকটু কথন অপ্রকট থাকে। ঐ কুণ্ড মধ্যে সকলে পূজা-হোম করে, প্রী জ্যোতি হইতে আয়ি জ্ঞালিত করিয়াঁ লইতে হয়, অস্তু অগ্নি স্থাপিত হয় না।

মন্দিরের উত্তরদিকের দেওয়ালের মধ্যস্থলে যে জ্যোতি আছে ঐ জ্যোতি আদি, এ জন্ত ঐ স্থানে দেওয়ালে গহর করিয়া সিংহাসন আছে। উক্ত সিংহাসন রূপায় মণ্ডিত—দেবীর প্রধান গদি। ক্রোয়ালাদেনীর পূজা-পূজাঞ্জলি ঐ সিংহাসনে জ্যোতির সম্মুথে হয়, উহার পশ্চিমে দেবীর ভাণ্ডারের সাজাই কলসী থাকে। মহাদেবীর গদিতে অর্থাৎ সিংহাসনের উপর প্রণামী ভেট যে কেহ দের, তাহা ঐ সাজাই কলস মধ্যে থাকে। মহাদেবীর সরকারের এক চাপরাশি ঐ ভাণ্ডার-কলসের এবং মন্দিরের রক্ষক আছে। ঐ গদির পশ্চিমোন্ডর-কোণে যে প্রবল জ্যোতি আছে, তাহার নাম হিক্লাজ, ঐ জ্যোতি মধ্যে পেড়া ছগ্ধ যাহা ধরিবে, তাহা ভক্ষিত হয়।

ঐ জ্যোতির পূর্বাদিকে (অর্থাৎ) গদির পূর্বাদিকে এক জ্যোতি লাছে, তাহার নাম অন্নপূর্ণা।

মন্দিরের ভিতর একণে এই সকল স্থোতি প্রজ্ঞাত। সকল স্থোতিতে পেড়া স্থত বিবদন দিলে ভন্ম হয়, পেড়া ভিতরে প্রবেশ করিয়া দিলে স্থোতিশিখা কিছু মৃত্ হয়, কিঞ্ছিপরে পূর্বমত জ্ঞাতিত হয়।

হ্য ভক্ষণ বে ছই প্রবল জ্যোতি আছে, তাহাতে হয়। একটি পাত্রে করিয়া হয় ঐ জ্যোতির সমূথে সংলগ্ন করিয়া ধরিলে ক্ষণকাল পরে ঐ পাত্রমধ্যে জ্যোতি প্রবিষ্ট হইয়া জ্ঞানিত হয়, হয় কম হয়। পেড়া বাতাসা ইত্যাদি মিষ্টার কিছা মেওরা বে কিছু নৈবেছ দ্রব্য লইয়া জাগ্রৎ জ্যোতি মহাদেবীর সমূথে ধারণ করিলে, ঐ সকল দ্রহর্গর উপর জ্যোতি আসিয়া জ্মি দধ্যের ভাষ প্রসাদী দ্রব্য থাকে।

মন্দিরের বাহির উত্তরণিকে ছই জ্যোতি প্রকাশিত আছে, ছারের পূর্বণিকে যথার হন্মানের মূর্ত্তি দেওরাল মধ্যে আছে, বা স্থানে এক গুপ্ত জ্যোতি আছে, রাত্রিযোগে উত্তাপের নিকটস্থ হওরা কঠিন, দিবাতে তজ্ঞপ উত্তাপ হর না। এ জ্যোতি প্রকাশিত হইবা প্রজ্ঞলিত হইবে তাহা বলা যার না।

ঐ মন্দিরের উত্তর গোরক্ষনাথের গদি। গোরক্ষনাথ নামে এক বোগী ছিলেন, তেঁহ আপন সাধন বারা মহাদেবীকে সাক্ষাৎ করিয়াছিলেন। ঐ পানির নিকটে ছই জ্যোতি প্রকটিত ইর্ম এবং তাহার নিকট এক কৃপ আছে, ঐ কৃপ মধ্যে জল আছে। উপরে মন্দির, নিমে এক বার আছে, তাহাতে কৃপের জল দেখা যার। ঐ জলে অগ্নির খেলা হয়। পূর্বাদিকের দেওয়ালে এক জ্যোতি আছে, ঐ কৃপের জল হন্ত ক্লারা মছন করিয়া ঐ মহাদেবীর জ্যোতি হইতে দীপ প্রজলিত করিয়া মছনী জলকে দৃশাইলো এক প্রবল অগ্নির শিখা উঠে এবং বিপরীত ভারত্বর শক্ষ হয়। ঐ গোরক্ষনাথের গদিতে বে বাল্লণ সেবাইত আছেন, তিনি ঐ জ্বানের প্রাপ্যের অধিকারী।

ইহার উত্তর পাহাড়ের মধ্যন্থলে বিবক্ষের শিব আছেন, তাঁহার নিকট ছই জ্যোতি প্রজ্ঞানিত আছে। রম্মুইঘরের ভিতরে ছই জ্যোতি, ভাঙারঘরে এক জ্যোতি, এই মত জ্যোতি সকল স্থানে স্থানে জনিতেছে। জ্বিনান সর্বদা জনিত আছে। মহাদেবী সাকাৎ বন্ধর্মিণী, জ্বিং জ্যোতি।

মহাপীঠের রক্ষার্থ উন্মন্ত নামে তৈরব এই মন্দিরের অর্দ্ধ ক্রোশ অন্তরে পর্বতে আছেন। এক্ষণে উন্মন্তেইর অপ্রকট ইইয়া পর্বতের গহুরর মধ্যে আছেন, তাঁহার দর্শন করিতে গহুরর মধ্যে কেহ প্রবেশ করিতে পাঁরে লনা। সপ্রগণ বেটন করিয়া আছে। গহুর ভরানক অন্ধ্রকার-ভূমি, বিশেষতঃ বৃহৎ বৃহৎ সপ্ বেটন করিয়া আছে, এ জ্ঞানীয়ানেবীর এবং মহাদেবের আন্দেশিয়তে প্র পর্বত উপরে নর্মদেশর নামে এই নিদ ছাপিত ছাছেন, তাহাতে মহাদেবের আবির্ভাব ছাছে, উহা দর্শন করিলে ভৈরত্ব-দর্শন সিদ্ধ হয়।

দেবীর মন্দির হইতে অর্দ্ধন্দোশ উচ্চ পর্কতে চড়িলে ঈশান-কোণে উন্নতের্থরের মন্দির আছে। পর্কাড উপর হইতে আম্রক্তির মৃশ দিয়া বে ঝরণা আদিয়াছে, ঐ জলে স্থানপূজা (৩) দর্শন। তৎপরে পাহাড় হইতে নামিয়া বিবকেখর শিবের দর্শন। ঐ স্থানে গোসাঞিদিগেদ আথড়া ও গৃদি আছে। মহাদেবীর ভবন মধ্যে স্থাকুগু আছে, ঐ কুণ্ডের নীচে তামের ডেগ আছে, কিন্তু দুল্লমান নহে। ঐ কুণ্ডের নীচে তামের ডেগ আছে, কিন্তু দুল্লমান নহে। ঐ কুণ্ডে পাহাড়ের উপর হইতে ঝরণা আদিতেছে। ঐ কুণ্ডে সান-তর্পণ ইত্যাদি। মহাদেবীর মন্দির স্থানিভিত, বার রূপার প্রতিত, রূপা-সোণার আশানোটা ক্রব্যাদি আছে।

প্রাতে মঙ্গল আরতি হইরা মহাদেবীর ছগ্ধ-পেড়া ভোগ, পরে থিচড়ি ভোগ, মধ্যাহে অন্ধ-মংক্র-মাংনাদি ভোগ, সন্ধ্যার সধ্যর অভিষেক ইত্যাদি। মন্ধ-নান করাইরা পূজা আরতি ভোগ—প্রথম পদিতে, পরে কুণ্ড-মন্ধ্রণ, তৎপরে উত্তরপশ্চিম-কোণে হিল্লাজ দেবী, পরে অন্ধর্পা, তৎপরে মন্দির মধ্যে রহুই। 'মন্দিরে সকল জ্যোতির পূজা (ও) আরতি করিয়া পূজারি ভাণ্ডারে প্রবিষ্ঠ হইরা আরতি করে। যে পূজারি বখন পূজার নির্ক্ত থাকেন, তাঁহাকে বন্ধচর্যাতে থাকিতে হয়।

প্রতি দিবস ভোগের ধরচ পাঁচ টাকা। বে,সকল গোসাঞি-দিগের গদি আছে, তাহাদের কাহারও ১ টাকা, কাহারও অর্দ্ধ টাকা, প্রতি দিবস মহাদেবীর ভাঙার হইতে পাঙারা হয়। আর আর অনেক ধরচ আছে, ভোগ সর্বদা হয়। ছাগ-বলি অনির্মিত হইতেছে—বাহার ব্যন ইছো। মহাদেবীর জ্যোতি প্রার্ পর্বতের সুকল ছানে-আছে, কোথাও গুপু, কোথাও প্রকাশিত।

জালদ্ধর-পীঠের পরিক্রম ৪৮ কোল। প্রথম কালেখর শিবের দর্শন করিয়া ২ রাত্র বাস, পরে চেনওরের ঠাকুর হারা (প্রতিষ্ঠিত) চতুর্ভ নারায়ণের দর্শন। ৪ রাত্র বাস। পরে কাশ্রপনাথ শিব গোফার ভিতর দর্শন করিয়া ২ রাত্র, পুরে পর্বতের নিমে ত্রৈণোক্যনাথ শিবের দর্শন, ও রাত্র বাস করিয়া কাঁগড়া আসিয়া বাণগজা-পাতালগলার সলমে লান করিয়া কেলামধ্যে অত্তিলার বাহিরে সহরের ভিতরে ইক্রেখর শিবের দর্শন করিয়া চক্রতীর্থে লালহরের বিভিন্ন তীর্ধ পরে বক্রেখরী মহাদেবী দর্শন, পরে ত্রোশ উত্তরে পর্বত উপরে ক্রম্বন্তীদেবী,

ত ক্রোশ পশ্চিমে গঙ্গেশ্বর তৈরব, তথা হইতে ২ ক্রোশ পশ্চিম গর্পতের উপর অঞ্চনী দেবী দর্শন। কাঁগড়া জনপাঁঠ, ৩৬০ তীর্থ আছে। গ রাজ বাস করিয়া পূর্ব্বমুখ্রে ৪ ক্রোশ বাইয়া বাণগঙ্গার নিকটে বাণেশ্বর শিব দর্শন করিয়া পূর্বমুখ্রে মন্দির। ক্রীরগঙ্গার দর্শন। বেপুঁয়া নদীর তীরে বৈজ্ঞনাথের মন্দির। ক্রীরগঙ্গার জলে স্নান করিয়া সিদ্ধনাথের দর্শন করিয়া ত রাজ বাস, পরে ও ক্রোশ আসিয়া মহাকাল দর্শন করিয়া দর্শিদকে ব্যাসানদীর তীরে কুঞ্জবার, কুঞ্জনাথ শিব দর্শন করিয়া ২ রাজ বাস। তথা হইতে ক্রেলানপ্ত্রের ঠাকুর ছায়া (প্রতিষ্ঠিত) মূরলীমনোহর চতুর্ভ্ ক-মূর্ভি দর্শন করিয়া, টিয়াতে রাজার কেয়া দেখিয়া, স্ক্রানপূর হইতে বিবকেশ্বর্গ শিবের দর্শন করিয়া নাগওনে আসিয়া নর্শ্বনেশ্বর

শিব দর্শন। পরে কালেখর আসিরা জোরালাজি আসিতে হয়।
প্রথম উন্নতেখর ভৈরব দর্শন করিয়া হাত্র, বিলকেখনে সাজ,
গোরক্ষনাথে ১ রাত্র, কৈথলা পাহাড়ের উপর হন্মানের স্থান
দর্শন ১ রাত্র, পরে জোরালাজির দর্শন (ও) ত রাত্র বাস। এই
মত করিয়া পরিক্রম করিতে তিন মাসের কম সর্বাজ উত্তমরূপ
পরিক্রম এবং দর্শনাদি হয় না।

জোরালান্তির পাুগুদিগের বাদ পর্বতের উপর। জলের বারণা আছে, ঐ বারণার মূথে হানে হোনে কুগু আছে, জলের হলের উত্তম সুধ, পর্বত স্থাতিল।

পাঞাদিগের বারীর কন্যাগণ দেখিতে অতি স্থন্দরী। ১ বংসর অবধি ২০ বংসর বরঃক্রম পর্যান্ত সকলে মহাদেবীর মন্দিরে আদিরা বাজীদিগের নিকট অর্থ যাক্রা করে। দেখিতে দেবীরূপা, কাহারও মনে বিকার নাই, অন্ন পাইলেই সম্বন্ধ, বস্ত্রালাকারে ভূষিতা ইইরা অনারাসে সর্ব্বত্র ত্রমণ করিতেছে, থান্ত-দ্রব্যাদি সন্মুখে ধরিলে অনারাসে ভক্ষণ হয়।

রাত্র দশ দণ্ডের পর মহাদেবীর মন্ত্র ধারায় শরন হয়। শর্ম থাটের উপর, উভাদ বিছানা করিয়া তাহাতে প্লেপর শ্যা করিয়া আতরণাদি ভাহার উপর দিয়া মন্ত্রে শরন হয়। তাহার পর মন্দিরের হার ক্ষা হয়। মহাপীঠে শিবরাত্রির উপবাস (ও) উন্মন্তেশ্বর ভৈরবের নিকট পূজা হয়।

# জলন্ধর হইতে দিল্লী

২৪ ফাল্লন, ত্হস্পতিবার, অমাবস্থা জোলালাদেবীর দর্শন-স্পর্শন, পূজা-হোম (ও) ব্রাহ্মণ-কুমারী ডোজনান্তর পারণ।

২৫ ফাব্লুন, শুক্রনার, প্রতিপদ লোগাদানী দর্শন ও ভোগ দেওরা।

২৬ ফাল্গুনু, শনিবার, দ্বিতীয়া

জোয়ালাদেবী দর্শনান্দি করিয়া মণিকরণ রেওড়েখর দর্শনার্থে গমন, উক্ত স্থান হইতে ৫ ক্রোশ ব্যাসানদীর নাদওনের ঘাট, তথায় নৌকায় পার হইয়া নাদওন সহর রাজা

কাগণৰ উমেদচক্রের রাজধানী। (তিনি) কাঁগড়ার রাজা সংসারচক্রের ল্রাভূপুত্র। নাদওন ক্রুল সহর—প্রাহ্মণ, ক্ষত্রির, কারস্থ, বেণিরা ইত্যাদি জাতির বসতি আছে। হিন্দু-মুসলমানের এবং দোকানলারদিগের বসতি আছে। তথা হইতে ও ক্রোশ কতেপুর। কুর্মিনদীর তীরে ২ চটি আছে। অধ্বধ মূলে হিতি।

২৭ ফাল্কন, রবিবার, তৃতীয়া

ফতেঁপুর হই ১০ ১ কোশ রাওল ২ হটি, পরে ১ কোশ ধাইরা পর্বতের চড়াই ২ কোশ, ২ হটি আছে। হটির নাম শীম্ল্যা।, পরে ৩ কোশ হামিরপুর, এই স্থানে এক বালালা আছে। এই বালালার নিকট হইতে তিন পথ, এক পথ কাঁগড়ার, এক পথ।
শীমূল্যা-সেপাটুর পাহাড়, পদিচম মূখে রেওয়াড়েখরের পথ।
কতেপুরের চটি হইতে ৩ কোশ লম্বুর ৫ হিট, তথার হিছি।
এফলে অতিশন্ত জলকন্ত, ॥ কোশ নীচে এক
শমুড়
কুরা আছে, জল ৪০ হাতের নীর্চে, কিন্তু
কুরাতে জল অধিক নাই। ১॥ কোশ বাইলে এক শিবালয় আছে,
তাহার নিকট ঝরণাতে অনেক জল আছে। চত্তিদিকে ৪ কোশী

লোকের ঐ জল মাত্র ভরসা। লম্বুড় গ্রামে প্রায় ৫০ মরের

# ২৮ ফাল্লন, সোমবার, চতুর্থী

বসতি।

লম্ব্র হটি হইতে ক্রমে ও ক্রোশ পাহাড় চড়াই করিয়া পরে উতরাই করিতে এক শুক্ত নদী আছে, তাহার পর অল চড়াই করিলে এক বাউড়ি বৃক্ষমূল আছে, ঐ স্থানে প্রাতঃক্বতা-সানাদি করিয়া ৪ ক্রোশ পরে কাকড়ির ১ হটি আছে, দ্রব্যাদি কিছু পাওয়া যায় না। তথা হইতে ২ ক্রোশ গোপালপুর গ্রাম, ছয় হটি (ও) মণ্ডির রাহ্মার তরফ লোহার চৌকী আছে। ওথানে লোহার থনি পাহাড়ে আছে। বেপারিতে চুরি করিয়া লইয়া আদিতে পারে না। ঐ হটিতে হিতি। জ্লের ব্রবণা (ও) বাউড়ি আছে।

#### ২৯ ফাল্লন, মঙ্গলবার, পঞ্চমী

. গোপাণপুর হইতে ৪ জোশ চড়াই করিয়া রাজার তলাও। এই স্থানে এক পুছরিণী এবং শিবালয় আছে। ঐ পর্বত নানা ৩২২ বৃক্ষ-পূলে ফুশোভিত, অতি ফুশীতল ভলনের স্থান। তাহার পর ১ ক্রেশি চড়াই করিয়া মুণ্ডিওয়ালা রাজার ক্বত এক উত্তম বাউড়ি। বাউড়ি মধ্যৈ ঘর এবং পথিকগণ থাকিবার জ্বন্ত ধর্মণালা আছে, সুরুষ্য স্থান। তথা হইতে ১ ক্রোশ পর্বত চডাই করিয়া ৩ ক্রোশ উতরাই—তাহার ১ ক্রোশ অতি স্লক্ষিন, সোজা নামিতে হয়, পায়ের টিপ থাক। হন্ধর, ধরিবার আশ্রহ নাই। এই কঠিন উতরাই করিয়া রেওয়াড়েখরের কুও। পাঁওা হিগের ঘর ২ ক্রোশ অন্তর। পর্বতে রেওয়াড়েশ্বর কুগু যাত্রিগণ যুৎকালে পাহাড় হইতে নীচে উতরাই করে, যে পাণ্ডা লোক দেখিয়া অগ্রে আসিয়া • যাত্রীর সহিত সাক্ষাৎ করে, সেই ব্যক্তি যাত্রী পায়। এইরূপ এই তীর্থের নিয়ম আছে। পর্বত হইতে নীচে আদিয়া ঐ কুণ্ডের তীরে মণ্ডির রাজরাণীর এক শিবালয়, উত্তম নির্মিত, তাহাতে নর্মদেশ্বর শিব বিরাজিত, সম্মুথে এক কালাপাথরের নন্দীকেশ্বর আছে, প্রমাণ আরুতি। ১৫ খান হটি আছে। চির কার্চের ষ্মতি উত্তম দোতালা ঘর। দোকানেুর ঐ ঘরে থাকিতে হয়। এক ঘরে এক বাড়ীর ভার গুজরান<sup>ী</sup> ইঁর, উপর নীচে সদর মফ:স্থল আচে।

রেওয়াড়েশর তীর্থ কুণ্ড মধ্যে প্রস্তর, উপরে মৃত্তিকা,
তত্তপরি বৃক্ষাদি হইয়াছে, ঐ পর্বত জলে
রেওয়াড়েশর তীর্থ ভাসিয়া বেড়ায় তাহার নাম বেড়া কছে,
পূর্থক পূঁথক নামশ্লাছে।

কুণ্ডের জল অভলস্পর্ল, দীর্ঘে-প্রস্থে ছই জোশের পরিজন। জিলা মধ্যে সাত বেড়া আছে। বন্ধা, বিষ্ণু, শিব, হন্মান, ৩২৩

ছ্পা, গণপতি (ও) ধরমধারী অর্থাৎ লোমশ মুনির—এই সাত বেড়া আছে। ইহার মধ্যে ছল বেড়া বার মাস ভাসিলা বেড়ার। ব বেওরাডেশর তার্ধের মহাদেবী ছ্পার যে বেড়া প্রাবশ-ভাক্ত ছুই

মানে ভাবে. (বাহা) দশমহাকুণ্ডের ঈশাণ-কোণে থাকে. উক্ত বেড়া সকল বেড়া হইতে বুহং। ব্রহ্মার বেড়ার উপরি নলের এবং ঘাদের বন, এক অখথ (ও) এক বট এই চুই বুক্ক আন্ছে। বুক্কের বেড় ১॥ হাত ২ হাত হইবে, খাড়া ও হাত, তাহার পর শাধাপল্লবে শোভিত, বেড়া দীর্ঘ-প্রস্থে ৬ হাত হইবে। বিষ্ণুর বেড়াতে নলের গাছ ও ঘাস আছে, দীর্ঘ-প্রস্তে ৩ হাত। শিবের, গণেশের ও হনুমানের তিন বেড়া খাসময়, ছোট বেড়া। লোমশম্নির বেড়া দৈর্ঘ্যে ও প্রস্তে e হাত, অনেক নশের গাছ এবং ঘাসে বন হইয়া আছে। **এ** বেডাতে লাল সাদা ইত্যাদি যে, যে রঙ্গের নিশান অর্থাৎ ধ্রকা চডার, ঐ বেড়ার উপর ধ্বজার বাঁশ গাড়িয়া দেয়। বিষ্ণুর বেড়াতে এক ধ্বজা-চিহ্ন আছে। ব্রহ্মার বেড়ায় গাছের উপরি ধ্বজা। শিবের বেড়াতে ছোট একটি সাদা ধ্বজা আছে। গণেশের বেড়া এক দিক প্রশন্ত, এক দিক্ সর — ভণ্ডাক্বতি। হনুমানের বেড়া ছোট, গোলাক্বতি।

কুণ্ডের তীরে যে বন আছে, ঐ বনের সহিত একতা হইরা থাকে। যাহার যে মুর্ভি দর্শনের মানস হর, ভাবনা করিলে সেই বেড়া ভাসিয়া আসিয়া দর্শন দেন, আপন মনোনীত পুজা ইত্যাদি করিলে ইচ্ছামতে ভাসিয়া স্থানাস্তরে গমন করেন।

আমরা বংকালে কুণ্ডের নিকট আসিলাম, তংকালে পূর্বাদিক্ ছইতে বিফুর বেড়া তাসিরা আসিল। দর্শন-পূর্কা করিয়া মনন

হইল যে. আর সকল বেড়ার দর্শন পাইলে এত শ্রম করিয়া আসা \_ मफैन रुष्ठ এवः य त्वफारा ध्वका-शृक्षा निर्छ रुष्ठ । छारा नर्नेन रुष्ठ । ইতোমধ্যে লোমশমুনির বেড়া উত্তরদিক হইতে ভাসিয়া মধাস্থল হইতে পশ্চিম দিকের তীরে উপস্থিত হইলেন। আমরা দক্ষিণদিকের ঘাটে স্নাম-তর্পণ করিয়া ঐ মুনির বেড়াতে পুজাধ্বজা দিবার নিয়ম মত দিয়া, ঐ বেডা ধরিয়া ভেট ইত্যাদি দেওয়া হইল। পরে কণ্ড-পরিক্রমার্থে গ্রনোলোগে মনন হটল। এ বেডা সকল কি মত স্থাপিত, তাহা বিশেষ পরীকা করিয়া দেখা হইল যে, নিমে বুহৎ বুহৎ প্রস্তর আনছে, তাহার উপরে মৃত্তিকা, তাহার উপরে বৃক্ষাদি হইয়াছে। ঐ বৃক্ষ ধরিয়া বৃঁহমত দেখিয়াছি—কোনুজনমে হেলাইতে পারা যায় নাই। ঐ বেড়াতে ধ্বজা দিবার জন্ত খনন করিয়া বাশ পুতিতে হয়, ঐ বেড়ার উপর পাণ্ডারা আরেচ হইয়া বিশেষ বলপুর্বাক বসাইল, তাহাতেও হেলিল না, পরে বেড়া হইতে মৃত্তিকা লওয়া হইল। কিন্তু তীরে যে স্থলে বেড়া ছিল. তথায় জ্বল অধিক নহে, তাহাতেও অধিক জাগিয়া থাকে না. কেবল গাছ যাদ ভাদে। আর অতলম্পর্শ জল যেথানে, সেথানেও ঐ মত অল মৃত্তিকা আর গাছ ঘাদ ভাদিতৈছে দেখা যায়: কিছ কাহারও এমন সাধ্য হয় না যে, বেড়ার বিপরীত দিকে ডব দিয়া - অন্ত দিকে উঠিতে পারে। যত নিম্নে ডুবে, সর্বত্তই পাধর মাধার ম্পূর্ণ হয়। বলপূর্বক গমন করিলে মস্তকে আঘাত লাগিয়া রক্ত-পাত হয়।

লাছোরের জ্বনৈক দর্দার নেহালদিং এই বিষয়ের পরীক্ষা করিয়া দেখিবার জন্ত অনেক মহুষ্যকে জলমগ্প করাইয়া পরীক্ষা করিয়া দেখিয়াছেন, কিন্তু কিছুই নিরাকরণ করিতে পারেন নাই। (₹৮) 916

এই আশ্চর্য্য দেবমায়া কুণ্ডমধ্যে দেখিয়া, কুণ্ড-পরিক্রমার্থে গমন করিয়া, পরিক্রমের অর্দ্ধেক পথ বাইতে দেখা গেল বে, ব্রহ্মার বেড়া ভাসিয়া উত্তরদিক হইতে বাইতেছে। - উহা যৎকালে মধ্য-স্থলে উপস্থিত হইল, আমরা মনে করিলাম যে, পুর্বিদিকের বাতাস এজন্ত পশ্চিমদিকে দাম ভাসার তার যাইতেছে, কিন্তু এই মধ্যস্থলে যাইয়া বে স্থির হইল, তাহার পর ঝড়ের তায় বাতাস বহিতে লাগিল, তথাচ এক অঙ্গুলিও সরিল না। ইহা দেখিয়া ২ কোশ পরিক্রম করিয়া ঘাটে আসিয়া বেড়াদির দর্শনার্থে থাকাতে হনুমানের বেড়া ভাসিল, পরে শিবজির বেড়া ভাসিয়া আসিল। এমন পাঁচ বেড়ার দর্শন বেলা তৃতীয় প্রহর মধ্যে পাওয়া হইল, কিন্তু প্রক্রের বেড়ার দর্শন হয়। পরে অপরাত্নে বেড়া সকল প্রক্রের বাতাসে পূর্ব্ব ভাসিয়া আসিতে লাগিল, গমনকালে জলের কিছু দ্বের্ঘ্য ক্লার বিছু হয় না, জল সমভাব থাকে।

এই হলে লোমশমূনি তপন্তা করিয়া জলের উপরি দাঁড়াইয়া আপনার ইট সাধন করেন। এইরূপ ভাবে বহুকাল তপন্তা করাতে সকল দেবদেবী তুট হুইয়া বর দিতে আসিয়া সম্থাথে উপহিত, লোমশম্নির তপন্তা কিন্ধ লোমশম্নি চক্ষু মুদ্রিত করিয়া এমত বোগে আছেন বে, তাঁহার গাতো নলং সাছ ও ঘাস হইয়া গিয়াছে। ইহা দেখিয়া দেবগণ মূনি প্রতি মনোভিন্তিসিদ্ধ বর দিয়া গেলেন। মুনির মানস হইয়াছিল, 'আমার প্রতি যেমন পাষাণ হইয়াছ, সেইমত পাষাণ হইয়া থাক।' ঐ মুনির মানসে দেবগণ এবং মুনি পাষাণ হইয়া ভাসিতেছেন।

আছে, তথায় ব্ৰহ্মা, বিষ্ণু, মহেশ, গণেশ (ও) পাৰ্কাতীর মূর্ত্তি -আছে, তথার পূজা-ভোগ আরতি হয় এবং কুণ্ডের ঘাটে আরতি হয়। কুও হইতে ৩ কোশ পর্বতের উপরি এক দেবী আছেন, তাঁহার নাম নয়না-দেবী। এ ওলকে সকলে নয়নপীঠ কছে। দেবীর মন্দির আছে পর্বতে, স্থরমা বন নয়ন-পীঠ এবং এক বাউডি আছে, জল উত্তম। এই তীর্থে ভোটদেশীয় এবং মহাচীনদেশের অনেক মনুষ্য আহিসে। তাহারা ধনাতা ব্যক্তি। •চীনদেশীর ব্যক্তিগণ ব্রহ্মার বৈড়ার অতিশয় মান্ত করে, অনেক দানাদি করিয়া থাকে এবং প্রস্তারে নাম-ধাম থোদিত করিয়া দেয়। ভোটের যে সমস্ত স্ত্রী-পু**রু**ধ আইনে, তাহারা সকলে মন্তমাংসভোজী, অভিশন্ন উন্নন্ত, তাবৎ রাত্র কুও-পরিক্রম এবং ভজন করে। কেই কেই আটোলে পরিক্রম করে। তাহারা লোকনাথের চেলা, হাতে এক অষ্ট্রধাতুর ষ্ম আছাছে, তাহা বাম হস্তে ঘুরায়, দক্ষিণ হস্তে মালাজপ করে। মন্ত্রপান করে -- আপনারা স্বয়ং তৈয়ারি অল্লের ছারা করে।

এ তার্থে ব্রাহ্মণ-ভোজন করাইবার দ্রাবাদি পাওয়া যায় না,
এ জন্ত নিদ্ধ-চাউল, আটা, দাল, ছত, গুড় (৬) লবণ দিতে হইল।
সন্ধ্যার কিছুপুর্ন্ধে কুণ্ডের ঘাটে বিসন্ধা বেড়া দর্শন করিতে
মংস্তের থেলা এমন দেখা গেল যে, তাহার গণনা হয় না। আটার
গুলি করিয়া দিবামাত্র লক্ষ লক্ষ মংস্ত একত্র চারণ করিতে
লাগিল। মংস্ত অধিক রুহৎ নহে, একজাতীর পাহাড়ী মংস্ত।

৩० काञ्चन, वृधवात, यठी

রেওয়াড়েখরের কুণ্ডে স্নান-তর্পণাদি করিয়া পূর্ব্ব দিবস ৩১৭ তীর্থোপবাস জন্ম জনবোগ করিয়া তথা হইতে ১॥০ ক্রোল পর্বত-চড়াই, পরে ৬ ক্রোশ উতরাই করিয়া মঞ্জী for E নগর। ব্যাসানদীর তীরে পাঁহাড় মধ্যে সহর, রাজা বনবীর সেনের রাজধানী। বনবীর সেনের মৃত্য হইয়াছে, তাঁহার পুত্র রাজা বিজয়দেন রাজ্য করিতেছেন, বয়ঃক্রম দশ বংসর। পুরাতন মন্ত্রী আছে এবং মৃত রাজার জাতা আছেন, রাজগুরু এবং পুরোহিত স্থপণ্ডিত। এই সকল ব্যক্তি ছারা পূর্ব-নিয়মমত রাজকার্যাদি ,নির্বাহ হইতেছে। রাজা বালক, কিন্তু অতিশয় স্থচতুর, মৃত রাজার সৈরিন্ধী-গর্ভে রাজ-ঔর্দে জাত চুই পুত্র নূতন রাজা হইতে কিঞিং বয়োধিক. তাহারা রাজ-পরিচ্ছদে রাজদেবাতে নিযুক্ত থাকে. দিংহাদনযোগ্য হর না। রাজধানীতে আন্নেক বস্তি আছে, মধ্যস্থলে রাজ-ভবন, চতুর্দিকে দোকান এবং প্রজার বসতি। একটি নৃতন রাজভবন প্রস্তুত হইতেছে, তাহাতে চিত্রবিচিত্র নানাবিধ কার্য্য আছে। রাজভবনের পূর্বনিকে এক পুষ্করিণী, যাহার মধ্যস্থলৈ ভালাড়ি-রাজার মস্তক আছে। ঐ পুন্ধরিণীর পুর্বে দৈছদিগের বাদ, পাহাড়ের কেল্লা°(ও) অনেক ভদ্রলোকের বাদ আছে।

সহর-মধ্যে ভূতেশ্বর শিব আছেন, অতি প্রাচীন। গৌরী-মুর্দ্তি মন্দিরে আছে। এই ভূতেখর প্রত্যক্ষ-দেবতা, রাজাকে দিবারাত্র মধ্যে একবার দর্শনার্থে আসিতে ভতেখর শিব হটবে। রাজার সদাত্রত ধর্ম্মালা আছে। ঐ শিবালয়ের নিকট বুহৎ বাটী, তাহাতে হয়াাগী, অকাচারী, অবধৃত (ও) বৈরাগী অনেক আছেন।

পাহাড়ের উপরে রাজার পূর্বকালের এক খামা কালী-মূর্ত্তি 450

আছেন, তাঁহার মন্দির-ভবন উত্তমরূপে তৈয়ার করিয়া দিয়াছেন।

-সেবার ভালরূপ বরাদ্ব আছে।

মণ্ডীনগরে এক পেব-মেলা হয়, রাজার অধিকারে যত পর্বত ও গ্রাম আছে, তাহাতে যত দেবদেবী আছেন, সকলে শিব-চতুর্দশী রাত্রিতে মণ্ডীনগরে আদিয়া অষ্টাহ পর্যান্ত দেব-মেলা হইবে, তাহাতে ১৫০ দেবদেবী পাহাড় হইতে আসিয়াছেন। সকল দেবীদেবীর সহিত পাহাড়ের বাছ (ও) পাহাড়ীয়া সকল লোক আসিয়াছে, ইহাতে নগরে বছ লোকের স্মাগ্ম ছইয়াছে, তিলার্দ্ধ স্থান নগর মধ্যে নাই। ঐ দেবদেবী সকলের কাহার চারি, কাহার পাঁচ, কাহার ছয়, এইরূপ দশ পর্যান্ত স্বর্ণ-ক্ষপার মুখ সকল দিয়া তাহাতে নানামত বস্ত্র দিয়া সিঙ্গার। পাহাড়ি-মত থোপ দিয়া সাজাইয়া ইস্তক রাজভবন নাগাইৎ ভূতেখর-মন্দির ছই পার্ষে স্কল্পে চতুর্দোলে করিয়া নৃত্য করাইতে থাকে এবং পাহাডের বান্ত সকল বান্ধায়। রান্ধার রাজ-বাহন দকল স্থদক্ষিত করিয়া এবং স্বর্ণ-রোপ্যমণ্ডিত আশাশোটা চামর মোরছল আড়ানি তুরী ভেরী নিশান বলম ছতা ইতাাদি চতুৰ্দিকে বেষ্টিত হইয়া রাজমন্ত্রিগণ এবং সেনাপতিগণ কেছ আৰে. কেহ গজে, কেহ উদ্ভে রাজার অগ্র-পশ্চাতে গজ-পৃষ্ঠস্থ রাজিসিংহাসনের নিকটবন্তী হইয়া ভূতেখর পর্যান্ত গমন করেন। ঐ কালে পাহাড়ীয়া ব্যক্তিগণ দেবদেবী নৃত্য করায়, দেখিতে চমংকার হয়। আমরা যে দিবস মণ্ডীনগরে উপস্থিত, সে मियम र्मना, अहे मकन स्वयम्बीत तालात स्वत्रा तुछि আছে, তাহাতে দেবা চলে, পাহাড়ের দেবদেবী বর্ড প্রত্যক।

মণ্ডীর রাজার রাজধানীতে লোহার এবং লবণের আকর

আছে, তাহাতে অনেক টাকা লাভ হয়। রাজার শাসন এইরপ আছে যে, ছোট জাতিতে থাক্স-দ্রব্যাদি বিক্রন্ন করিতে, পারে না এবং দোকান কিয়া জর্গের বাউড়ি স্পর্শ করিতে, পারে না। ঐ দিবস মেলা জক্ত সহর মধ্যে থাকিবার স্থান পাওন্না যার না, এজক্ত নগরের প্রাস্তভাগে ব্যাসানদীর তীরে রাজার শিবালয় আছে, ঐ দেবালয়ে স্থিতি।

## ১ চৈত্র, র্হম্পতিবার, সপ্তমী

মণ্ডীনগর হইতে ঝাদানদী নৌকাতে পার হইয়া পার-মণ্ডীপুরাণ সহর, পরে ১ ক্রোশ পর্কতের চড়াই, তাহার পরে ৩ ক্রোশ ক্রমে উতরাই, ১ ক্রোশ থাড়া উতরাই, অতি ভয়ানক

হড়গড়ানে পথ, পারের ঠিক রাথা হকর।
পারমতী অর্জ কোশ বাইরা এক বাউড়ি শিমুলতলাতে আছে, তথার শ্রান্তি দূর করিয়া অর্জ কোশ উতরাই
করিলে গৌরী নদী, তাহাতে স্থান করিয়া কাঠের পুল পার
হইতে হয়। ঐ স্থান হইতে জলক কুফ্ক ২ কোশ, চড়াই পূর্জ
দিকের পাহাড়ে রহিল, ৴বুল পার হইয়া অর্জ কোশ ধাড়া
উতরাই, পরে অর্জ কোশ চড়াই, তাহার পর ১ কোশ
কুমাদের ১ হট্ট আছে, ঐ হট্ট মধ্যে ডাকহরকরার বাসা, ঐ
স্থানে ডাক বদলি হয়। ঐ হট্টিতে বাস, রাক্তিতে বৃষ্টি হয়।

## ২ চৈত্র, শুক্রবার, অফমী

কুমাদের ইটি হইতে ৪ ক্রোশ ডোলচির ইটি, ভাল বাউড়ি আছে, ১ ইটি (ও) ডাকঘর। বাউড়ির উপর ঘর আছে এবং তাহার নিকট এক ধর আছে, ঐ হানে রান করিয়া গ্রামন-সময় বৃষ্টি হওরাতে ঐ হানে হিতি। ঐ বাউড়ির জল অতি উত্তম, কিন্ত এমন মক্ষিকা আছে বে, দংশনমাত্রে রক্তল্রাব পরে ক্ষীত হইরা ক্ষত হয়, শীঘ্র শুক্ত হয় না। মক্ষিকা ক্ষুদ্রাকৃতি— যাতনা বৃহৎ। ঐ দিবস ঐ হানে বহু কটে কালহরণ করিতে হইল।

ভোলচি হইতে ১ ক্রোশ চড়াই. ৩ ক্রোশ উতরাই ; উতরাই

# ৩ চৈত্র, শনিবার, নব্মী

মুখে নানা বৃক্ষাদি ও জলের ঝরণা আছে, তাহার পর বোপড় ও হট্টি, এক তাক্ষর আছে। সম্মুখে জলের ঝরণা, পর্কতের উপর নীচে পল্লবন, তবাঁর সানাদি করিয়া ২ ক্রোশ ময়দানী রাস্তা। মঙীওয়ালা রাজার রাজ্য পার হইয়া বেজওর প্রাম, ৭ হট্টি আছে। এই পর্কতি উপরে ক্রুর রাজার কেলা আছে, তাহা ভগ্ন হইয়াছে, কেলার ভিতরে অন্ত ঘর নাই। যে মুরচা আছে, তাহার মধ্যে ঘর। এই স্থানে ক্রুর রাজার রাজধানী। প্রথম ছর্গরার, যে কেই উক্ত রাজার রাজ্যে সমনোংমুক হইতেন, প্রথমে এই ঘারে থাকিয়া রাজদরবারে সংবাদ করিতে হইত। রাজদরবার হইতে অমুমতি প্রদন্ত হইলে ভবে রাজ্যে প্রবিষ্ঠ হইতে পারিত, নচেৎ কোনক্রমে যাইবার ক্ষমতা ছিল না। প্রধান থানা ছিল। এ স্থান হইতে রাজধানী ৭ ক্রোশ, রাজার নাম জ্ঞানসিংহ, বয়ঃক্রম ১০ বংসর। এই বেজওর হইতে অর্কক্রেশ পূর্কদিকে প্রাম, তাহাতে এক শিবালয় আছে—পাশুবদিগের স্থাপিত। ঐ মন্দরের চারি

ধার, এক ধারে মহিবমর্দিনী, বিতীয় বারে চতুর্জ নারায়ণ মূর্জ্জি, তৃতীয় বারে গণেশ (ও) চতুর্গু বারে শিবজি দুর্শন করিয়ান হটিতে স্থিতি।

#### ৪ চৈত্র, রবিবার, দশমী

বেজওর হইতে ২ জোশ ব্যাসা নদী। নদীর নিকটে এক

জাখণ বৃক্ষ আছে, তাহার নিকট হইতে পশ্চিম মুথে কুরুর রাস্তা,
উত্তর-পশ্চিমমুথে মণিকর্ণের রাস্তা। নদী মশকে চড়িরা পার

হইতে হয়। পার হইরা ঐ য়ানে পর্কতীয় গলার ও ব্যাসানদীর
সলমে মান করিরা ৩ জোশ চড়াই, অভিশর অভবড় পথ।
১ জোশ উতরাই করিরা পর্কতীয় গলার ধারে ধারে পথ। ৮ জোশ
পাহাড়ে পাহাড়ে আদিয়া বিওড় গ্রাম। তথায় কালীমগুণ
আছে। ঐ গ্রামে অভিশয় জলকট। অন্ধিক্রোশ অস্তরে এক
ঝরণা আছে, কোটা ফোটা জল ঝরিতেছে, ঐ জলে গ্রামস্থ
সকলের কার্যনির্কাহ হয়। তথা হইতে ১ জোশ বামুনকোঠী
গ্রাম। অনেক ব্রামণের বাস এবং অভাভ জাতির বাস।
পাহাড়ের কিঞ্চিৎ নিমে সকল জাতি এক আকার, এক বেশ;
প্রীপুক্ষ সকলেই কম্বল-বর্ম্ব পরিছিত।

বাসুনৰ সকলে কৰণ-বল্প সারাহত।
মংস্থ-মাংস সকল জাতি আহার করে। ঐ
গ্রামে হট্ট অর্থাৎ দোকান নাই, থাকিবার স্থান পাওয়া বায় না।
দিবা অবসান হইলে মেঘ বৃষ্টি বরফ পতিত হইতেছে। একে
পথআন্ত-কুধানল প্রবল, তাহাতে বৃষ্টি। স্থানাভাব হইয়া অতিশর
বিত্রত করিল। অন্ত উপায় না দেখিয়া, রাজার রম্বরে এক আক্ষাণ
হিল, রাজা তাহার বাটী করিয়া দিয়াছেন, আক্ষানের মৃত্যু

হইরাছে—তাহার পরিবারগণ এবং এক অবোধ্যাবাসী বৈঞ্ব •আছে, ঐ বর মধ্যে সকলে বলপূর্বক প্রবিষ্ট হই। বেজওর হইতে আটা, দাল, বৃত আনা হইরাছিল, তাহাতে আহারাদি হইল। বে বৈঞ্চব ঐ বাটীতে আছে, তাহার সহিত অনেক বাদাহবাদে থাকা হয়। একজন জনকপুরী ব্রাহ্মণ অনেক চেষ্টা করে।

## ৫ চৈত্র, সোমবার; একাদশী

বাম্নকোঠী হইতে ১ ক্রোশ আসিয়া এক নদী পার হইতে হয়, কাঠের পুল আছে। তথা হইতে ক্রমশঃ হুদ্রর চড়াই ৩ ক্রোশ (অতিক্রম) করিয়া জরি গ্রাম, তথায় এক হট্ট আছে, দোকানদার নাই, দোকানে চাবি। তথা হইতে ৪॥ ক্রোশ বিফুক্ও—মণিকরণ সীমানা, চড়াই উতরাই অনেক আছে। পার্কতী-গঙ্গার ধারে ধারে বাইতে হয়। পাহাড়ের পাথর সকল অতিশয় চিকণ, পাঁঠাওরে না, চড়াই উতরাই করিতে করিতে অবশাস, তাহার পর তিন কাঠের প্ল পার হইয়া কতক দূর মাইয়া মণিকরণ তীর্থ। বেলা চারিদও থাকিতে তীর্থে পছছিয়া ক্ও দর্শন করিয়া লক্ষীনারায়ণের বাটীতে বাসা হইল। রাজা জগৎ সিংহের দেবালয় মণিকরণ নামে ধ্যাত। যে কৃপ্ত সসম উপরে, তাহার নিকট দেবালয়। মণিকরণ তীর্থ অতি আশ্বর্য্য, সাক্ষাৎ ব্রহ্মা।

তীর্থের সীমা-নিরূপণ—পশ্চিম বিষ্ণুক্ও, উত্তর হরেন্দ্র পর্বত,

পূর্ব্ব বন্ধনাল, দক্ষিণ পার্বতী-গঙ্গা—এই সীমা

মধ্যে দীর্ঘে ২ ক্রোশ (ও) প্রস্থে ২ ক্রোশ মণিকরণ নাম। ইহার মধ্যে পার্বতী-গঙ্গা ও হরেন্দ্র-গঙ্গার জলে যে হলে

সঙ্গম হইতেছে, তাহার উপরে ছই কুণ্ড মাছে। নীচে যে কুণ্ড আছে, তাহাতে ছই হাতের অধিক জল আছে, জলের অতিশন্ধ আফালন। কিঞ্চিং উপরে যে কুণ্ড ফাছে, তাহাতে এক হাত জল। ছই কুণ্ডের জল অতিশন্ধ উষ্ণ অর্থাং গ্রম, অঙ্গম্পা মাত্র দর্ম হয়। অতিশন্ন ধুম, সর্বদা ধুম উঠিতেছে—অফকার হইয়া থাকে। ঐ কুণ্ড মধ্যে অন্ন থেচরান্ন কটী মালপো পান্নদ দাল তরকারি ভাজি ইত্যাদি যাহা কুণ্ডে দিবে তাহা স্থপক হইয়া স্থাভ হয়, অন্নি-সংস্থার-পাকে বছবিধ্ন রহ্মনের স্থাক্ষাদি দ্ববা দিয়া স্থাভ হয়, আনি-সংস্থার-পাকে বছবিধ্ন রহ্মনের স্থাক্ষাদি দ্ববা দিয়া স্থাভ হয় না।

পাকের নিয়ম—অল পাকস্থালীতেও হয়, কিম্বা বল্লে বল্লে ত তুল বন্ধন করিয়া ঐ কতে ফেলিয়া দিলে উত্তম অলপাক হয়। দাল পাকস্থালীতে পাক করিতে হয়, যে মণিকর্ণে পাকের নিয়ম দাল পাক করিতে হইবে, ভাহাকে প্রথম ঐ উষ্ণ জলে ধৌত করিয়া, ঐ জল পরিত্যাগ করিয়া, তাহাতে মদলাদি দিয়া ঐ কুণ্ডের জল পরিমিত দিয়া জল মধ্যে ঐ পাত্র রাখিতে হয়। ভাহার গলা পর্যান্ত জাগাইয়া রাখিতে হয়। তাহার মুখে একথানা আবরণ দ্রব্য দিতে হয়। পরে স্থাসিদ হইলে লবণ ইত্যাদি দেওয়া হয়। থেচরালে এককালে সকল মসলা ঘত লবণ দিয়া পরিমিত হুল দিয়া ঐ মত ব্যাইতে হয়। স্থাক হইলে সদ্গন্ধ উঠে। পায়সাম হ্রা চাউল কি চিঁড়া, চিনি কিছা গুড় দিয়া পাকস্থালীতে জলমধ্যে ঐ মত রাখিলে পায়সাল হয়। ফুটীর জভ ময়দাকি আটা যাহা হউক, জল দিয়া মাখিয়া যেমত কৃটী হৈচয়ার কর্মে, তাহা করিয়া ঐ কুণ্ড মধ্যে ফেলিয়া দিলে প্রথম ডুবিয়া যায়, পরে স্থপক ছইলে ভাসিয়া উঠে, তাহার পর উঠাইয়া লইয়া জল ওছ করিলে ধাওয়া যায়। অল দাল বিচড়ি পায়দ বেমন সংখাত দদ্গন্ধ যুক্ত এইন, তজপে অতা অব্যাদি হয় না, কিন্তু থাইতে অতাতা এবা মনদ হন্না।

এই স্থানের নাম পর্বের কুলান্তপীঠ ছিল, সকল দেবদেবীর তপ্রভা এবং বিহার-স্থান। হরপার্বতী নির্জ্জন বিহার মান্দে হরেক্ত পর্বত কুলান্তপীঠে আসিয়া স্থর্ম্য মনোহর কুলিন্দুপীঠ খান দেখিয়া **ৼ∙৫**৽ বৎসর পর্যান্ত ঐ স্থানে বিহার করেন। মহাদেবী মহাদেবের বিহারে বিহবল হটয়া উন্মতা হওয়াতে কর্ণের কুণ্ডলসহ মণি কোথায় কথন পড়িয়াছে তাহা জানিতে পারেন নাই। বিহারাত্তৈ চৈতক্তদায়িনী চৈতক্ত পাইয়া ভোলানাথকে কহিলেন, "আমার কর্ণের মণি হারাইয়াছে।" ইহা শ্রুতমাত্র নিজ সঙ্গী ভূতপ্রেতগণ এবং দেবীর সঙ্গিনী যোগিনী-ডাকিনীগণকে কহিলেন, "পার্বতীর কর্ণের মণি কোথায় কে লইয়া গিয়াছে, শীভ্ৰ স্বৰ্গ-মৰ্ত্য-পাতাল অৱেষণ করিয়া আইস।" তাহাতে সকলে সর্বত্ত অন্তেষণ করিয়া আসিল, কোথাও অত্তেষণ করিয়া পাইল না। একথা মহাদেব শ্রুত হইয়া অতান্ত কোপায়িত ছইলেন। তাহাতে এক যোগিনী দৰ্বত অংবধণ করিয়া কোথাও মণি না পাইয়াঁ পাতালপুরে নাগরাজের সমীপে উপস্থিত হইয়া দেখিল যে, মহাদেবীর কর্ণের মণি নাগরাজের মন্তক উপরে আছে। নাগরাফ যোগধানে ছিল, এজন্ত যোগিনী কিছু না কহিয়া সম্মুখে দাঁডাইরা রহিল। পরে নাগরাজ ধান ভঙ্গ হইয়া দেখিল সমুধে এক স্ত্ৰীজাতি। তাহা দেখিয়া কোপান্বিত হইয়া যোগিনী প্ৰতি কহিতে লাগিল. "মামি তপস্থা করিতেছি, এই স্থানে স্ত্রীক্সাতির আগমন নিষিদ্ধ, এজন্ত একণে তোমায় নষ্ট করিব।" এই কথায় বোগিনী আসিতা হইরা মহাদেবীর বোগিনী বলিরা আপন পরিচর দিরা মনি বৃত্তান্ত নাগরাজকে কহিষা কহিল, "এ মনি না পাইলে, নিব মহালর সকল পুরী কোপানলে দক্ষ করিবেন—প্রতিজ্ঞাকরিরাছেন।" নাগরাজ এই সকল বাক্য প্রশুত হইরা কুট্টি ১ ইইরা বোগিনীকে কহিলেন, "তুমি যাও, আমি মহাদেবীর কর্ণের যাণি শীল্প পছছিরা দিতেছি।" ইহা কহিয়া উক্ত মনি নাসার অগ্রভাগে রাখিরা এক ফুৎকার ছাড়িল, তাহাতে উর্দ্ধে ছই ধারা উঠিয়া ঐ মনি হরপার্বতী নিকটে পহছিল, তদবধি ঐ স্থানের নাম মনিকরণ হইল। নাগরাজের ল্পতিতে মহাদেব তুট হইয়া 'মনিকরণ মহাতীর্থ ছইবে' বর প্রদান করিলেন। ইহার মাহাল্য ক্রমাণ্ডপুরাণ প্রছে বিশেষক্রপ আছে।

হরেজ্ব-পর্কাত মহাদেবের তপভার স্থান, (মহাদেব এথানে) ৬০৫০ বংসর তপভা করেন। এই পর্কাত হইতে যত জল বরণার ভার আদিতেছে, সকল জল গরম, সকল স্থানেই দ্রব্যাদি পরু হর, তাহার সন্দেহ নাই। কিন্তু সলম উপরে যে ছই কুণ্ড আছে, তাহাতে অর্ক-নারীখর ম্র্তির পূজা হর এবং সলম-জলে স্থান-তর্পা করিয়া ঐ কুণ্ডে অয়াদি পাক করিয়া তীর্থপ্রাদ্ধ করিতে হয়। এই কুণ্ডের জলে ব্যাহ্বণ, ক্ষ্মির, সাধু-সয়্যাসী ইত্যাদি সংজাতি সকলে অর কটী ইত্যাদি পাক করিয়া ভোগ দিরা দেবসেবার প্রসাদ পার, তাহাতে স্পর্দাধ কেহ করে না, ব্রহ্মবর্গ জ্ঞান করে। দেশস্থ ইতর জাতি বাহারা আছে, তাহারা অভাক্ত স্থানে ঐ জলে পাক্ করে।

পূর্বসীমার রক্ষনাল। ঐ স্থানে রক্ষা তপতা করেন। রক্ষার তপে কমগুলুর জলে নদী বহিতেছে। হরেকা পর্বতের উক্ষক্ষণ ১০৬ পার্মতী-গলাতে এক আ হইরা আিধারা ইরাছে। ঐ হানের নাব

রন্ধনার

রন্ধনার

উপরে উঠিরা ঈশান দিকে বিলক্ষণরূপে দৃষ্টি
করিলে কৈলার পর্মত ধবলগিরি দেখা যার। ঐ পর্মতের শিরোভাগে এক উত্তম স্থনির্মিত মন্দির আছে। বরকে সকল ঢাকিরা
আছে, কিঞ্চিং দৃষ্ট হর। ব্রন্ধনাল হইতে উর্চ্ছে বারক্রোশ বাইরা

মানদরোবর

মানতলাব। ক্ষীরগলা পার হইরা ঐ স্থানে

বাইতে ক্রের, বরফ অতিশর পতিত হইতেছে,
সর্মান ইন্টির ভার চাপ চাপ বরফ জনিতেছে, গমন অতি স্থকঠিন।
বে মন্দির দৃষ্ট হইল, এমন স্থগঠিত মন্দির কোধাও দৃষ্ট হুর না।

দক্ষিণদিকে বে পার্ক্তী-গন্ধার প্রবাহ ইইতেছে, অন অভি
স্থশীতল, বরফের ক্লার। পার্ক্তী-গন্ধা মানতলাব-পর্কত হইতে মর্জ্তো
আাদিতেছে। ঐ পর্কত হিমালর-পর্কতের সহিত সংযুক্ত। ঐ মানতলাব ক্ষীরোদের নিকট। ঐ পর্কতে পার্ক্তী শিব-উদ্দেশে ঘোর
তপক্তা করাতে দ্রুব হইরা অলুরুপা ইইরাছেন।

ইহাতে বোধ<sup>°</sup>হয়, এ মন্দির কদাচ মন্থ্যক্কত নহে।

এই মানতলাব-পর্বতের পশ্চিম-দ্দিণে কীরোদ, বাহাকে কীর-গলা কহে। এ কীরোদের জল দুগ্ধের স্তার, ভাহাতে ফেণা উঠিতেছে, দুগ্ধের সর বেমত হয়, সেই মত। এ জলের ফেণা হাতে করিয়া লইয়া ভক্কণ করিলে দুগ্ধের সরের ক্তার আহু এবং হতে দুভের ক্তার চিকণ হয়। বধার কীরোদ, ত্থার বর্ম জন্ত গমন অসাধা। তাহার জল এবং ফেণা বহিরা মানতলাবের নিকট কীরগলা নামে নদী আসিতেছে। ভাহা দর্শন, স্পর্শন ও ভক্ষণ হয়। এ সকল পথ দুয়র। থাড়া চড়াই—পাকদণ্ডী পথ নাই, বরষ্ণময়। মণিকরণ ইইতে সমুখ বার ক্রোপ, কিন্তু পর্বতের ক্ষেরে অটাহ বাইতে হয়। এ পথে দোকরিনাদি বর-বার নাই, কোথাও কোথাও পার্বতীয় মহয়গঁণ ছাগ (ও) ভেড়ার পাল লইয়া আছে। তাহাদিগের নিকট গুরু মাংস, ছাতু, চেনা (ও) মন্ত পাকে, তাহাই ভক্ষণ করে। আপন স্থানে বাহা থাকিবে, তাহাই থাইতে হয়, নচেৎ ঐ মত দ্রব্যাদি থাইলে পাইতে পারে।

বিষ্ণুকুণ্ড— ষণায় বিষ্ণু তপজা করেন। ঐ কুণ্ড পূর্ব্ধ দিকে।
কুণ্ডের (জন) গাভী হ্বা দোহন কালে যেমত
ভাবে থাকে, সেই ভাবের। জন না-শীতল
না-অধিক গরম এই মত, জল সর্ব্বাল থাকে।

মণিকরণ তীর্থে সান-বিধি— সঙ্গমে, ব্রন্ধনালে, ব্রিধারাতে, (ও) লক্ষীকুণ্ডে। যথা লক্ষীনারারণের মন্দির ঐ বাটীর ভিতর এক কুপ্ত আছে, তাহার জল কদোঞ্চ। ঐ কুণ্ডে সান করিলে সকল শ্রান্তি দুর হয়।

রামকুও — ঐ কুও রামচন্দ্রকির বাটীতে। বিষ্ঠুকুণ্ডে মানতপ্প ও উর্দ্ধ ধারার জাল স্পর্শ। ঐ ধারা রামচন্দ্রকির মন্দিরের
পশ্চাতে। জল অতিশন্ধ গর্ম, ফোন্নারার
ভাব জল উঠে। ঐ ধারাতে এক প্রস্তর
দেওয়া থাকে, দর্শন-স্পর্শনার্থে গমন করিলে পাথর সরাইয়া দের।
ঐ ধারা উর্দ্ধে পাঁচ ছম হাত উঠে, পূর্ব্বে ঐ ধারা ৮০ হাত উর্দ্ধে
উঠিত। উর্দ্ধ ধারা পাঁচ ছিল, এক্ষণে হুই আছে। তাহার এক
ধারা প্রবেল (ও) এক অল আছে, তিন নির্দ্ধি পাইরাছে।

এই स्टाउल-शर्वाठ मर्था এक स्मनी चाहिन, छैशित मर्मन

পুর্বত উপরে পাওয়া বার না, নাম নয়না-দেবী। পর্বতের নিমে
শ্মণিকরণ তীর্থে এক মন্দিরু আছে। ঐ মন্দির-বার সর্বাদা রুদ্ধ,
কেবল বৈশাধ-প্রাবণ এবং দশহরাতে (দেবী) মন্দিরে আইসেন,
তাহাতে কেবল নয়ন অর্থাৎ ছই চক্ষ্ দর্শন হয়। দেবীর পূঞা
মন্দিরে হয়।

এই তীর্থে কুলুর রাজার দেবালয় আছে। প্রীশন্ধনিবার ন্ধ্র প্রীশর্মনাথলি, নৃসিংহ, প্রীশরামনজন্তি (ও) প্রীশম্বলীধর – এই পাঁচ দেবালয়। রাজা জ্বাপ্রিংহের প্রীশচতুর্ভুল নারায়ণ (ও) কুল্র রালার বেবালয় বিজ্ঞানিবিহের প্রশিত। দেবালয়, সকল কেমে বে যথন রাজা ছইয়াছেন সকলের এই মত দেবসেবা আছে। প্রাজাণ সকল নিষ্ক্র আছে। প্রাক্ষণ সকল নিষ্ক্র আছে। প্রাক্ষণ সকল দিগের মধ্যে যে যথন উপস্থিত হইয়া যাত্রীয় সহিত দেখা হয়, সেই ব্যক্তির মণিকরণের পাণ্ডা হয়।

এই স্থানে অতিশয় বয়ফ পড়িতেছে। কার্ত্তিক মাসাবধি মাধ
পর্যান্ত পথ-ঘাট বয়ফে পরিপূর্ণ থাকে, মহাব্য গো পশু পক্ষ্যাদি কেহ
বাহির হইতে পারে না। অনেক কটে কুশের জুতা পারে দিয়া,
কম্বল পরিয়াঁও গাতে দিয়া এবং মাথায় কম্বলের টুপি দিয়া অতি
কটে গমন করে; কিন্তু ঐ কুণ্ডের নিকট গেলে জলের উত্তাপে মর্ম্ম ইয়; মেদ (ও) বৃষ্টি হইলে জলের উত্তাপ অধিক হয়।

এথানে পূর্ব্ধে অস্তান্ত দেশের মহ্বয় কদাচ কেছ কবিরী বেশে আসিত, এক্স্ত দোকানাদি ছিল না। চারি বৎসর হইল কাংগড়া হইতে এক ব্যক্তি আসিরা লক্ষীনারারদের বাটীর নিকট এক দোকান করিয়াছে, চাউল, দাল, আটা, স্বত (ও) গুড় পাওরা বার, জব্যাদি দূর হইতে আইনে, মহুঘ্যের পূঠে ভিন্ন অন্ত জীবের দারা আসিতে পারে না। গরু, টাটু (ও) খচ্চরাদি বোঝাই লইরাল এ পাহাড় চড়িতে পারে না।

## ৬ চৈত্র, মঙ্গলবার, দ্বাদশী

সলম ইত্যাদি তীর্থে লান-তর্পণ, দেবদর্শন (ও) আক্রণ-ভোলন। দ্রব্যাদি কিছুই পাওয়া বায় না—আটা, ঘৃত (ও) গুড় লইরা পুরি-হালুয়া (ও) প্দিনার চাটনীতে আক্রণ ভোলন— ভাহাতেই তৃপ্তি। পুর্বি দিবসাবধি বৃষ্টি।

## ৭ চৈত্র, বুধবার, ত্রয়োদশী

তীর্থে স্থিতি, দর্শন-স্পর্ণন ( ও ) ব্রহ্মাও-পুরাণান্তর্গত মণিকরণ-মাহাত্মা প্রবণ।

৮ চৈত্র, রুহস্পতিবার, চতুর্দ্দী

মণিকরণ হইতে স্থান তর্পণ করিরা ১৪০ ক্রোশ আদিরা বিষ্ণুকুণ্ড, তথার স্থান করিয়া ॥০ ক্রোশ আদিরা পূল পার হইরা এক গ্রাম আছে, তাহার পর ৪ ক্রোশ জরিগ্রাম। ঐ গ্রাম হইতে এক কুকুরী সঙ্গে আইসে। তথা হইতে ৫ ক্রোশ বামনকোঠা। ঐ স্থানে আহারাদি করিরা ছিতি।

বামনকোঠী হইতে নদী পার হইরা ৪ ক্রোপ থাড়া চড়াই
পর্কতে উঠিরা বিজ্ঞলীখর মহাদেব দর্শন করিতে হয়। পর্কত
উপরে মন্দির এবং গোলাঞি-সন্মালীর গদি
আছে। তথার সন্ন্যালীদিগকে সদাবত দের,
আন্ত বৈরাগী ইত্যাদি কেহ পার না। বে মহাদেব আছেন, তিনি

১২ বৎসর অন্তর বজ্পাত হইয়া ধান ধান হইয়া ভগ হন, পরে ই সকল থণ্ড একজ করিয়া মাধন দিয়া বাঁধিয়া দিলে পূর্ব্ধ-মত শিবমূর্ত্তি হয়। একণে বৎসর বৎসর মহাদেবের নিকট ধে ধ্বজা আছে, ভাহার উপর বজ্পাত হয়। ঐ বিজ্ঞানীয়র মহাদেব দর্শন করিয়া ৪ কোশ উতরাই করিয়া, ব্যাসানদীর কার্চের পুলে পার হইয়া কুলুসহর—রাজা জ্ঞানসিংহের রাজধানী। সহর

উত্তম, পাহাড় মধ্যে সহর, সকল জ্ববাদি
পাওরা পার। হিন্দু-মুসলমান সকল জাতির
বসতি আছে। কোম্পানি বাহাত্বের তহণীলদারের এবং পুলিশের
কাছারি আছে। কেলার মধ্যে রাজবাটী। সহর মধ্যে দেবলেবীর
মন্দির আছে। অবোধ্যাবাসী রামসীতার দর্শন এবং মৃসিংহজ্জির
দর্শন করা হইল। পরগুরামের মন্দির আছে; ঐ মন্দিরের ১২
বংসর অক্তর বার খোলা হয়। শ্রাবণ মাসে দর্শন হয়। এই
রাজ্যে প্রাচ্র আফিং জ্বেন।

# ৯ চৈত্র, শুক্রবার, পূর্ণিমা

কুলু হইতে বেজওর ১২ ক্রোশ। বামনকোঠী হইতে আসিরা বেজওর ব্যাসানদী। পার্কাতী-গলার সলমে মান করিয়া ভূতেখর দর্শন করিয়া ৮ ক্রোশ বেজওর, তথার স্থিতি।

## ১০ হৈত্র, শনিবার, প্রতিপদ

বেলওর হইতে ২ ক্রোল রোপড়, পরে ৪ ক্রোল ভোলচি, পরে ৪ ক্রোল কুমান। এক চটিতে স্থিতি।

#### ১১ চৈত্র, রবিবার, দ্বিতীয়া

কুমাদ হইতে ২ ক্রোশ আসিয়া কুঠের পুলে নদী পার হইয়া, দক্ষিণ মুখে নদীর তীরে তীরে ॥ ক্রোশ আর্সিয়া, ২ ক্রোশ পর্বতে চড়াই করিলে জরু কুফর। এই পর্বত উপরে এক বার্লাণা ও এক দোকান আছে। অতিশর জলকট, পাহাড়ের নীচে ॥ ক্রোশ আসিয়া এক বাউড়ি আছে। পর্বতের নিমে ছাউনী তথায় জল আছে, কিন্ত :॥ ক্রোশ উতরাই করিতে হয়়। এজয় বাউড়ি হইতে তিন গোটা জল আনাইয়া জলগোগ। পরে ৬ ক্রোশ ক্রমে চড়াই করিয়া পর্বতের চড়া পর্যান্ত উঠিতে হয়। ইতোমধ্যে জল, কি ছায়া, কি দোকান, কি লোকের বসতি কিছু নাই। পথে ছোট ছোট পাথর-কাঁকর। জল বিহনে মতিশয় কট। এই ছয় ক্রোশ পথ তাবৎ দিবা চলিয়া সয়য়ার সময় ফুটাথল নামক এক স্থান পর্বতের উপর, তথায় পছছা হয়। ঐ য়ানে এক বান্দাণা এবং রম্বয়ের য়য় আছে, দোকান নাই, জব্যাদি কিছু পাইবার সন্তাবনা নাই। বে বান্দাণা আছে, তাহার

সভাবনা নাহ। যে বালালা আছে, তাহার ফুটাবল। এ প্রাম 
মধ্যে এক ভাগার, মণ্ডীর রাজসরকারের আছে। ববন রাজা বাহাছরের সৈক্তগণ গমনাগমন করে, তৎকালে ঐ ভাণ্ডার হইতে প্রবাদি পায়, আর সাহেব লোক কিখা সরকারী আমলা কেছ উপস্থিত হইলে রদদ দিতে হয়। ভাণ্ডারের ক্রব্যাদি দিবার জক্ত্য একজন সিপাহী আছে। ভাকের হরকরা ঐ হানে থাকে। আল প্রথিক রদদ পায় না। তবে ঐ রাজসরকারের খ্যক্তিকে আনেক 
রূপ ভর্মেত্র দেখাইতে, নানা কৌশলে মুখোপাধারে মহাশর ভাকহরকরা ছারা একঅ ওজন করিয়া রদদাদি লইলেন, নচেৎ ঐ

দিবদ আহারাদি ইইবার কিছু সম্ভাবনা ছিল না। আটা-দাল যদি
বছকটে পাওয়া গেল, কিছু কাঠ পাওয়া যায় না। এথানে
সরকারী ব্যক্তিগণ আদিলে প্রামের যে লম্বরদার আছে, সেই ব্যক্তি
কাঠাদির আঞ্জাম দেয়, এজন্ত ভাঙারে কাঠ থাকে না। পাহাড়ের
জলল ইইতে কাঠ আনিতে হয়, তাহাও কৌশলে আনা ইইল। জল
নিকটে নাই, প্রায় এক পোয়া পথ অড়বড় পাথর ভালিয়া গেলে
এক বাউড়ি আছে, তাহার বদ্ধ জলে ছেতলা এবং গদ্ধ। কিছু ঐ
দিবদ ঐ জল স্থাতুলা ইইল, তাহাও অনেক কটে আনিতে হয়।
এত অসাধ্য সাধন করিয়া দ্রব্যাদির সংযোগ ইইয়া রহুই আরহত
হইলে মেঘারয়্ল, বাতাস (ও) অদ্ধকার ইইল। তাহাতে কটে স্টেই
পাক করিয়া আহার করিতে বিস্বা মাত্র শিলার্টি (ও) বড়। যে
যরে আহার করিতে বসা ইইল, পাথর ভেল করিয়া তাহার ভিতর
শিলা পড়িতে লাগিল। তাহাতে শীতে কম্পান্থিত ইইয়া আহার
ইইল না। রাত্রে বড়ের শব্দে ঘরে তিঠান ছদ্র।

# ১২ চৈত্র, দোমবার, ভৃতীয়া

ফুটাখল হইতে ৩ ক্রোশ গোমা গ্রাম, ২ হটি। পরে উতরাই করিয়া নদী, তাহাতে হুই ধারা—এক লবণাত্ব অপর মিঠাজল আছে। পরে ২ ক্রোশ চড়াই করিয়া হীরাবাগ, এক বাউড়ি, শিবালয় (ও) ৪ হটি, পরে ২ ক্রোশ সমকট গ্রাম, ৩ হটি। পরে ॥ ০ ক্রোশ আসিয়া ভাষাহাল ১ হটি। বটমূলে বারণার ধারে হীরাবাগ হইতে উত্তম শাস্তা, হুলে স্থানে দোকান, ব্যরণা (ও) বাউড়ি আছে।

১० हिख,

ভালাহালের হটি হইতে ৮ ক্রোল বৈশ্বনাথ। উক্ত হটি হইতে

৪ ক্রোশ ভাঙ্গাড়ি-রাজার প্রাচীন কেলা আছে। উক্ত রাজা মণ্ডীওরালা রাজার বৈবাহিক ছিলেন। রাজাধিরাজের সহিত্বাক্রের অকৌশল হওরাতে ভাঙ্গাড়ি-রাজার মন্তক ছেদেন করিয়া, মণ্ডীনগর মধ্যে এক পুক্রিণীর খাদ করিয়া, ঐ পুক্রিণীর মধ্যস্থলে ঐ মুণ্ডোপরি প্রদীপ জালাইতেন। অভাবধি ঐ স্থান আছে। উপর্যাক্ত কেলা পর্কাতের শিরোভাগে, নিম্নে মণ্ডীবাদী রাজার সৈত্ত আছে। একণে অধিক সৈত্ত নাই। হীরাবাগ

বৈত্তনাথ নামক এক স্থান আছে। তথায় সৈন্যগণ আছে। এই স্থান হইতে ৪ ক্রোণ বৈছনাথ শিবলি আছেন, এ স্থান বৈজনাথ বলিয়া ব্যক্ত আছে। পর্বত উপরে শিবালয়, নীচে ক্ষীরগঙ্গা, এ হানে অনেক দেবদেবীর স্থান আছে। ত্রেভারুগে দশস্কর রাবণ দেবদেব মহাদেবের নিকট কঠোর পঞ্তপাঃ ইত্যাদি তপস্থা, যাহা শাস্ত্রামুদারে প্রচলিত আছে, বিশেষতঃ এক পদে দণ্ডায়মান হইয়া ঐ স্থানে তপ্তা করিয়া-ছিলেন। ঐ স্থানে অন্তাবধি প্রকাশিত আছে। দশক্ষ আপন কঠোর তপঃ দ্বারা দেবদেব মহাদেবকে সাক্ষাৎ প্রত্যক্ষ করিয়া আপন কক্ষ মধ্যে ধার্বণ করিয়া লঙ্কাপুরে লইয়া ঘাইবার মনন করিলেন। দেবের মারা-গমনে উৎস্কুক না হইয়া পথিমধ্যে বরুণ দারা এই মারা প্রকাশ করিলেন যে, রাবণের প্রস্রাবের পীড়া উপস্থিত হইলে শিবজিকে পথিমধ্যে রাথিয়া প্রস্রাবে বসিলেন। তদৰ্বধি বৈশ্বনাথজি ঝাড়থওতে রহিলেন, উক্ত স্থান বীরভূম (क्लांग्र।

এথানে বৈভনাথজিকে কীরগলার জলে লান করাইরা দর্শনাদি ক্রিয়া আপন ইউসাধন ক্রিলে শাল্লাফ্লারে এক জপে সহব্র জুপের ফল হয়। মন্দির হইতে কীরগলা ১৫০ সিড়ি নিয়ে। অস্থলে ১৮০ জোশ পরিক্রম, ইুতোমধ্যে অনেক দেবদেবী আছেন, অনাদি শিব আছেন (ও) প্রধান দেবী আছেন।

বৈশ্বনাথ, • সিদ্ধিনাথ, কেদারনাথ, ইন্দ্রেশ্বর, গণপতেশ্বর, কাশীর বিখেখর, রাবণেখর, ভৃতেখর (ও) মহাকাল-এই নয় অমনাদি শিব আছেন। বৈল্পনাথজির সেবা ইত্যাদির উত্তমরূপ নিয়ম আছে। মঞ্জির ভাল, চকবন্দী, ভবন গোলাক্তি। শিবজি পূষ্ণানাল্যে ভূষিত থাকেন। <sup>©</sup> দিবাতে স্বরূপ দর্শন হয় না, মঙ্গল-আমারতির পর লান হইরা পুজপ ছারায় সিয়পার হয়। বেলা দশ বৈজনাধের ক্রিভিল দতের পর ভোগ হইয়া পটবন্ধ হয়। এক প্রহরু দিবা থাকিতে পট থোলে, সন্ধ্যার (मवरमवी পর স্নান-অভিবেক ইত্যাদি করিবার সময় অরূপ দর্শন হয়। পরে পুষ্প-চন্দনের সিঙ্গার হইয়া আরতি হয়, পরে পুরি ইত্যাদির বৈকালী ভোগ হয়, পরে মন্ত্র-শয়ন। অঞ্জনী, মনসা, ... ত্তাদি পাঁচ দেবী। এক চাকি পাথর আছে, ঐ চাকি পাথরের উপর পুলে দেওয়া আছে। ঐ চাকিতে সকলে দৃঢ় করিয়া থাকে, কাহার সহিত কিছু বিবাদ উপস্থিত হইলে উভয়ের সন্দেহ ভঞ্জনার্থে ঐ চাকির নিকটে শপথ করিলে, যাহার মিথ্যা শপথ হয়. ভাহার প্রতিফল প্রাপ্ত হয়, ইহা প্রত্যক্ষ দৃশুমান। স্থান নগর তুলা ২৫ হট অর্থাৎ দোকান আছে-হালওয়াই. বেণে, বাজার, পশারি ইত্যাদি। ব্রাহ্মণ, লালা (ও) বেণিয়ার বদতি অধিক। ভাঙ্গাহাল হইতে বৈশ্বনাথ প্রয়ন্ত ৮ ক্রোশ। ॥। ক্রোশ কোথাও ১ ক্রোশ স্থানে গ্রাম এবং দোকান আছে. পথ উক্তম।

১৪ চৈত্ৰ

বৈক্ষনাথ হইতে ৪ ক্রোশ করলা গ্রাম হ হটি আছে। তথা হইতে ৪ ক্রোশ ব্যেবারণা নামে এক নগর গ্রাম। এ স্থানে ৫০ দোকান আছে সকল দ্রবাদি পাওয়া যায়। catalact stru রাস্তার ছই পার্ষে দোকান, মধ্যম্বলে জলের ঝরণা স্রোতস্বতী আছে। অনেক ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয় বেণিয়া ইত্যাদি নানা জাতির বাস্থান। ০ এখান হইতে জালামুখী যাইবার ছই পথ,—পশ্চিম মুখে সম্প্রতি এক নতন পথ একেন্ট সাহেব, প্রকাশ করিয়াছেন। উত্তর মুখে কাংগভা হইয়া এক পথ আছে—৮ ক্রোশ কম, কিন্তু নৃতন পথে পাহাড়ের চড়াই-উতরাই আছে এবং স্থপথ নহে, ঝাপান টাট থচ্চর হারা কটে গতায়াত হয়। কাংগড়ার পথ স্থপথ, দিবারাত্র লোকের গতিবিধি আছে। ব্যেবারণায় স্নানাদি করিয়া ৪ ক্রোশ পরওল, তথায় থিতি। ৮ হটি আছে, জলের ঝরণা আছে। জমিদার লোক জমি আবাদ জন্ম ঝরণার মুখ বন্ধ করিয়া আপন আপন ক্ষেতে জল লইয়া গেলে হটিতে জলকট হয়। এক বাউড়ি পাহাড়ের নীচে আছে। অৰ্দ্ধ ক্ৰোশ নীচে বাউড়ি আছে, জল অতি উত্তম। বৈশ্বনাথ হইতে পরওল ১২ ক্রোশ. পথ অতি উত্তম। স্থানে স্থানে জল এবং দোকান আছে।

#### ১৫ চৈত্র, বুহস্পতিবার

পরওল হইতে ৪ ক্রোশ ধরমদা, ২ বটি আনছে। এই স্থান হইতে ছই রাক্তা উত্তর মুধে গিরাছে। ভাগত পাহাড় বাইবার পথ ৭ ক্রোশ, পরে ভাগশু শিব পর্বত উপরে আছেন, অতিশয় বর্ফ-স্কল পর্বত শুদ্রবর্ণ। ভাগশু ভাগল পাহাডের নীচে ধরতিতে কোম্পানি বাহা-ছরের ছাউনী আছে। পুর্বে যে সকল আদালত ইত্যাদি কাংগভাতে ছিল, ঐ সকল আদালত এবং ফৌজগণ, বিচার-পতি. সেনাপতি (ও) সাহেবগণ সকলে ঐ পর্বতের উচ্চে নিম্নে মধ্যে স্থানে স্থানে পথক্ত্ব করিয়া আছেন। জন্ম ও কাশীর হইতে মুরপুর হইয়া কাংগ্রড়ার কেলার আসিবার গোপন-পথ। এজন্ম ঐ গোপন-পথ রুদ্ধ করিয়া ছই স্থানে সৈতা ও সৈতাধ্যক্ষণণ আছেন। ভাগশুতে একণে সহর হইরাছে। রাজপুরুষগণের শুভা-গমনে বরফ আচ্ছাদিত পর্বত উত্তম নগর হইয়াছে, গাড়ী, ঘোড়া, পাকী (ও) ঝাপান গতায়াত হইতেছে। নানাবিধ জ্ব্যাদি ক্রয়-বিক্রন্ন হইতেছে। পর্বাত উচ্চ, চড়াই ১২ ক্রোশ, দীর্ঘ-প্রস্থ নিত্রপণ কবিতে পারি নাই। চারি দিবসের পথ পর্যান্ত ভাগল কহে। ভাগশুর ছাউনী হইতে কাংগডার কেলা ৯ কোশ।

ধরমদা ইইতে পশ্চিম মুখে কাংগড়ার আদিবার যে পথ আছে, তাহাতে ধরমদা হইতে ২ ক্রোশ নাথনা নামে গ্রাম, ৪ হটি আছে। তথা ইইতে ॥• ক্রোশ ঘাইরা মাঠ মধ্যে এক অথপ বৃক্ষ আছে। তাহার মূলে এক দাধু আদিরা বিদিরাছেন। তাহাকে অনেক মহ্যা বেষ্টন করিরা আছে। উহা মেলার ভার দেখিরা আমরা তথার গিরা দেখিলাম, এক থাটের উপরে বিছানা আছে, ভূমিতে দাধু আছেন, সমুখে ধুনী আছে। ঐ থাটের ধুরাতে এক কুকুর বাঁধা আছে। মাধু পাঁউক্ষটী আহার করিতেছেন, কথনও কুকুরকে দিতেছেন, কথনও নিজে আহার করিতেছেন, কথনও কিছু মাত্র নাই।

শয়ন এবং ভোজন একত্রে—বিকার মাত্র নাই, কিন্তু বাক্সিছ। ৰাবা সাধুর যাহার প্রতি অনুগ্রহ হয়, দয়া করিলে সকল ভান হয়। উক্ত সাধুর নাম মন্তরাম বাবা, অংঘারী সাধু, ভৈরব উপাসক, গিণারবাদী ভূরি বাবার চেলা। ভূরি বাবা এক হাজার বংসর এক দেহে জীবংমান, অন্তাববি গির্ণার পাহাডে দর্শন পাওয়া যার। এক ক্ষুদ্র গহরর আছে, তাহার ভিতর হইতে এক মৃষ্টি ক্রিয়া বাজ্রাবণ্টন সময়ে যত মহুয়া উপস্থিত হইবে, সকলেই এক মৃষ্টি করিয়া পাইবে। মন্তরামএবাবার বয়ংক্রম একশত বংসরের অধিক হইয়াছে। ইহার বয়সের মক্ষৰাম বাৰা নিরপণ ইহাতে এক শত বংসরের অধিক জ্ঞান হইতেছে, কহিলেন "বংকালে ইংরাজ বাহাছর কলিকাতা সহর ১৪০০ শত গোরা লইয়া আসিয়া যদ্ধ করিয়াছিলেন, তৎকালে কলিকাতা প্ৰথম গিয়াছিলেন।" ইহাতে বোধ হর একশত বংসরের অধিক বয়স। কিন্তু চাক্সুষে **৫**০ পঞ্চাশ বৎসরের অধিক বোধ হয় না। এমন স্বল আছেন যে, পদত্তকৈ তীর্থভ্রমণ, পাহাড-পরিক্রম অবলীলাক্রমে করিতেছেন। এক ব্যক্তি জোলা তাঁতি কাংগড়া-নিবাদী গলিত কুঠরোগী ছিল। মন্তরাম বাবার পদানত হইয়া সাধন করাতে, অনেক বিভীবিকা দেখাইতে তাহাতেও নাছোড হওয়াতে, পরে অফুগ্রহ প্রকাশ ক্রিয়া কোল দেওয়াতে রোগ হইতে মুক্ত হইয়াছে। আবার এক জন বালকের মুগীরোগ ছিল। আমরা তথার বসিয়া আছি. এমত কালে ঐ বালককে তাহার পিতা লইয়া আসিয়া দেওয়াতে কেবল গালি ও পদাঘাত ঘারায় রোগ মুক্ত করিয়া দিলেন-্চমৎকার, চাকুষ ব্যাপার দেখিলাম।

এই অখ্থমূল হইতে অন্ধক্রোশ নগরোট গ্রাম। উত্তম ু অস্তি, দেবদেবীর মন্দির আছে। ব্রাহ্মণ, ক্ষত্তির, কারস্থ, বেণিরা প্রভৃতি অনৈক জাতির বসতি আছে। হালওয়াই বেণিয়া ৰাজাৰ ইত্যাদ্ধি ২০ হটি অৰ্থাৎ দোকান আছে। ঝরণার জল ব্যাপিত আছে। পরে ৪ ক্রোশ কাংগডার দেবীর ভবন। দেবীর নাম শ্রী v বজেরারী, কপালী নামে ভৈরব—স্তনপীঠ। এ**ন্থবে** ভগবতীর স্তন পতিত হয়। ইহার বিশেষ বিবরণ পীঠমালাতে বর্ণিত আচে।

জালদ্ধর পীঠ-জালদ্ধর পীঠে ৫ মহাদেবী আছেন, (ও) ৩৬٠ ভীর্থ আছেন। ৪৮ ক্রোশের পরিক্রম।

বজেশরী, আলামুখী, অম্বিকা, অপ্সনী (ও) জয়স্তী (এই পাঁচ দেবী এবং ) কপালী, উন্মত্ত, কালতৈর্ব, ভালেশ্বর (ও) নন্দিকেশ্বর এই পাঁচ ভৈরব।

পর্বতের মধান্থলে বজেশ্বরী দেবীর ভবন, উত্তম মন্দির। পুর্বকালে যে প্রাচীন মন্দির ছিল, ঐ মন্দির ভিতরে আছে। তাহার উপর লাহোর-নিবাসী মহারাজা राज्यती রণজিৎসিংহ বাহাত্র প্রস্তর-নির্দ্মিত মন্দির করিয়া স্বর্ণে মণ্ডিত করিয়া দিয়াছেন। সিংহাসন রূপায় মণ্ডিত (ও) দেবীর প্রতিমূর্ত্তি রূপার পত্তে থোদিত করিয়াছে। **আগল মূর্ত্তি** গোলাকুতি প্রস্তরের, তাহাকে পুষ্প চন্দন বস্ত্র ছারায় শোভাষিত করিয়া নানা আভরণ তত্পরি দেওয়া থাকে। সিংহাসনের ভিতরে রূপার ও স্বর্ণের অনেক ছত্র আছে। পুস্পমাল্যে উত্তম দিকার করে, দর্শনে মন প্রফুল হয়। স্বরূপ দর্শন দর্শন কালে হয় না. প্রতিদিবদ সন্ধ্যার পর ও মঞ্চল আরতির পর (00)

482

যে সময় স্থান অভিবেক হয়, তৎকালে গোলাক্কতি প্রস্তুর দর্শন্তর। দিবাতে মহাদেবীর অয়ভোগ (৩) মংক্ত-মাংস বাহা উপস্থিত হয় তাহা ভোগ হয়, সন্ধ্যার পর স্থান-অভিবেক হইয়া পূজা। পরে পুরি ও আর্ক্র চলক, স্থতসিক্ত হয় (৩) সন্দেশভোগ হইয়া আরতি হয়। পরে ঐ প্রসাদী দ্রব্য পাণ্ডা ও বাত্রিগণ যে কেছ ভবনে উপস্থিত থাকে, কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ সকলে পায়। মহাদেবীর সোণা রূপার চামর আড়ানি আশাশোটা ঘটা বাটা থালা ভূজার ইত্যাদি অনেক আস্বাব আছে। মন্দিরের পশ্চিমঘার— ঐ ঘারে স্ইজন আশা লইয়া হায় রক্ষা করে। প্রসাদ বন্টন হইলে ক্ষণেক বিলম্বে দেবীর শয়নের পালক সিংহাসনের নিকটে রাথিয়া, তাহাতে উত্তমরূপে শ্ব্যাদি করিয়া, উত্তম বল্ল আলফার ছল্ল ব্যক্ষনী ইত্যাদি দিয়া বেদোক্ত মন্ত্রে শ্বনমন্ত্র পাঠ করিয়া শয়ন হয়। ভবনের পূর্ব্বোত্তর দিকে কপালী ভৈরব আছেন। কপালী ভৈরব বিলিত আছে।

ভবনের চতুম্পার্ফে স্থাপিত দেবদেবী মূর্ত্তি আছে, পৃথক্ পৃথক্ মন্দির। রুজমণি নামে এক ব্যক্তি সিদ্ধ তেজ্বীছিলেন, তাঁহার ভজনের শুহা আছে।

মহাদেবীর মন্দিরে পাণ্ডাদিগের কন্তাগণ দেবীরপা হইরা যাত্রীদিগের নিকট অর্থ যাক্রা করিরা লয়। বালিকা অবধি ব্বতী পর্যাক্ত সকলে সমভাবে যাক্রা করিতেছে। কন্তাগণ অতি সৌন্দর্য্যশালিনী। যাত্রিস্থান হইতে ধলপূর্ব্বক টাকা পরসা লয়, কিছুমাত্র মনোবিকার নাই। শ্রীমতী বঙ্গালন্ধারে ভূবিতা ছইরা সাক্ষাৎ ভগবতীর স্লায় দর্শনীরা। মহাদেবীর ভবন হইতে ছই ক্রোশ চড়াই কাংগড়ার রাজার কেলা। ঐ কেলা মধ্যে অধিকাদেবী (ও) কালভৈরব রক্ষক।

কেলার প্লান্ডিমে পাতাল গঙ্গা। তৎপদ্ভিমে জয়স্তীপর্বত। ঐ পর্বত তিন ক্রোশ উচ্চ। পর্বতের শিরোভাগে জয়স্তীদেবী (ও) ভালেখর শিব। এই স্থানকে কপালপীঠ কহে।

অঞ্জনীদেবী—দেবী ৫ ক্রোশ উচ্চ পর্ব্বতের উপর, নন্দিকেশ্বর ভৈরব রক্ষক। কটিপীঠঃকছে।

জ্ঞালামুখীতে জোলালাজি আছেন। মহাদেবীর ভবন হইতে ১ ক্রোশ কাংগড়া সহঁর। এক ক্রোশ পর্যস্ত সহরের বসতি, কমবেশী হাজার দোকান ছিল, একণে সহর ভারিয়া ভাগত পাহাডে সহর হইতেছে। সহরের

ভাগত পাহাড়ে সহর হইতেছে। সহরের কাংগড়া পরে বান্ধার, সাবেক কেলা, সন্মূথে উকিম্বর।

ঐ কেলার তিনদিকে প্রাচীর আছে, দক্ষিণদিকে প্রাচীর নাই, পদাতিকগণ থাকে অর্থাৎ ছাউনী আছে। কেলার ভিতর পর্বতের উপর রাজার অন্তঃপুর, বিচারস্থান (ও) সেনাপতিগণের ছর্ম ছিল, এক্ষণে রাজসম্পর্কার কেন্থ কেলা মধ্যে নাই। ইংরাজ বার্ধাছরের কিয়দংশ সৈত্য এবং অল্পাগার-রক্ষক আছে।

রাজা সংসার চক্ত সপরিবারে নেখোর পাহাড়ে বন্দী আবাছেন, এই রাজার সহিত ইংরাজ বাহাছরের যুক্ত হয়।

উক্ত কেলার ভিতর হইয়া সলমে লান করিতে বাইবার পথ। কেলা চুইতে ১ কোশ সলম, বাণসলা (ও) পাতালগলা ছই সলম কেলার পূর্বে। বাণসলার পশ্চিমে পাতালগলা। এই সলম-ছানে ৩৬০ তীর্থ অধিষ্ঠান হর। পাতালগলায় ৩০০ তীর্ধ, বাণগদার ৬০ তীর্থ। ইহার প্রত্যেক নাম ও মাহাত্ম জালব্বর-মাহাত্ম্যে বর্ণিত আছে।

দেবীর ভবনের উত্তর দিকে চক্রতীর্থ। দক্ষিণ-পশ্চিমদিকে অপেরাকুণ্ড, হৃণ্যকুণ্ড, রামক্ণ্ড, লক্ষণকুণ্ড, দক্ষকুণ্ড, গ্রা, ফল্ক, চক্রভাগা (ও) কুরুকেত্র ইত্যাদি তীর্থ সকল আছে।

এই পর্বত ফলছলে শোভিত। অতি সুরম্য রম্যবন আছে।
পর্বত উপরে বনমধ্যে ভঙ্গন সাধন উত্তম হয়: পর্বতের চূড়া
হইতে নিমন্থান পর্যান্ত ক্ষমকগণ এমত উত্তম ক্ষমিকর্ম করিয়া,
পর্বত ক্রমে বনন হার। থণ্ড বণ্ড ভূমি করিয়াছে, তাহার
শোভা অতি উত্তম, বিশেষত: শশুকালে। দেবীর ভবন
হইতে পাণ্ডাদিগের বাটী পূর্বতোপরি । ক্রোশ। ঐ স্থানে
অতিশয় জলকট। ভবনের নিকট বাজার আছে, সকল ক্রবাদি
পাওয়া যায়। বেলা ভূতীয় প্রহর সময় পছছিয়া দর্শন হইল।

#### ১৬ চৈত্র, শুক্রবার

সল্প রান-তর্পণ, অভিকাদেবী, লক্ষীনারায়ণ, রামণীতা,
মহিমর্দিনী, কাণীমূর্তি কেলার মধ্যে বাহিরে দর্শন, ব্রজেখরী
দর্শন-পূজা, ব্রাহ্মণ ও কুমারী ভোজন, নগর ভ্রমণ ও সুল (এবং)
তহনীলের কাছারি দেখা হয়।

## ১৭ চৈত্র, শনিবার

চক্রতীর্থে সান তর্পণ, জালদ্ধর অস্থবের চকু দর্শন। চক্রতীর্থের উপরে অনেক দেবদেবীর মূর্ত্তি প্রকাশ আছে। ঐ স্থানে কাংগড়া-বাসী সকলের স্থান-পূজা হয়। জয়ন্তী দর্শন (ও) অপ্যরাকৃত্তে গ্যান। ঐ রাত্র অপ্যরাকৃত্ত নিকটে কেহ কেহ স্থিতি। ১৮ চৈত্র, রবিবার

অপ্যাকুণ্ডে ভাক্ত দিবার স্থান (ও) বক্তেশ্বরী দর্শন করিয়া জালামুখী বাতা। •কাংগড়া হইতে ৪ কোশ গণেশঘাটার পাহাড়। ঐ পাহাড়ের উপর হইয়া পুর্বের রাস্তা ছিল, তাহাতে পর্বতের চড়াই অনেক-পথিক লোকের অতিশয় কষ্ট ছিল, এজ্ঞ ঐ পর্বত মধ্যে বাকদের দারা উড়াইয়া ভিতর দিয়া হুড়ঙ্গের ভার পথ খোদিত করিয়া উত্তৰ পথ করিয়াছে। একবারে চড়াই না করিয়া ক্রমে ক্রমে বাঁকে বাঁকে চড়াই করিতে হয়, ভাহাতে কিছু ক্লেশ নাই। বে স্থানে ছই পর্বতের মুখে ঝরণা আছে, সেই স্থানে পুল হ্ইরাছে। পুর্বের পুরাণ পথ আছে, অধিক লোক গতারাত করে মা। এই পর্বতে তিন পথ করিয়াঁছে, সর্ব্বোপরি এক পথ, মধ্যে এক, নিয়ে এক। এই মত তিন পথ সকল পাহাডে আছে। গণেশ্যাটীর পাহাত ২ ক্রোপ। ঐ স্থানে এক উত্তম বাউডি আছে। পুরাণ পাতা (ও) বাউড়ির নিকট হইয়া নুতন রাতা বাজারের মধ্য দিয়া একত হট্নাছে। বাজারে ২০ হটি আছে, সকল দ্রব্যাদি পাওরা ষায়। তথা হইতে ৪ ক্রোশ রাণীতলাব মামে এক স্থান। পূর্বে এক পুষ্রিণী ভাল ছিল। একণে পর্বতের বাণীতলাব উপরে এক থানা আছে, অতি উত্তম পোক্তা ঘর। ঐ ঘরে বসিয়া রক্ষকগণ বছদুর পর্যান্ত দৃষ্টি করিতে পারে, विशक कि मञ्जाशागद शब-क्रक श्राम । धेथाम श्रेटिक मिन मूर्य

চিন্তাপুরণী যাইবার পথ গিরাছে। পরে ২ ক্রোপে এক বাউড়ি,

জোরাণাজির মন্দির, কাংগড়া হইতে বিশ জোশ পথ। জালামুখার পথ অতি উত্তম, স্থানে স্থানে দোকান ও জল আছে, তাহাতে পথশ্রান্ত বোধ হয় না, অর্দ্ধ জোশ চড়াই আছে। রামপুরার পুর্বেষ্ধ সন্ধ্যার দেবী-দর্শন।

मन ১२७२ माल, ১৯ हिन्ज, रिमामवात, ममगी

জোরালাজির জ্যোতিঃ পুনর্বার দর্শন-স্পর্শন (ও) পুজা হোম ইত্যাদি। মহাদেবীর বে জ্যোতিঃ আছে গর্কাকাল এক স্থানে সমান থাকে না।

২০ চৈত্র, মঙ্গলবার, একদিণী

প্রাতে মান-তর্পণ, জোরালাজির দর্শন-স্পর্শন করিয়া চিন্তাপূরণী দর্শনার্থে গমন। পাণ্ডার বাটাতে বাদা ছিল, তথা হইতে
১৯০ ক্রোশ আদিয়া নগরের প্রান্তভাগে ৩ হট্ট আছে। তথা ইইতে
চিন্তাপূরণীর রাজা পূর্ব্ব দক্ষিণ মুখে আদিতে হয়। ২৯০ ক্রোশ
আদিয়া পাহাড়ের উপর বনের মধ্যে গোগা পীরের আজানা,
একটা বাড়ী আছে। চতুদ্দিকে নানা পূলাও ফল ইত্যাদির গাছ
সকল শোভাম্বিত আছে। জাগ্রং পীর। অনেক দেশে ঐ
পীরের স্বরূপ আস্তানা আছে। মানত করিলে মনোভীষ্ট দিদ্ধ
হয়। ঐ পাহাড়ের নীচে পথিমধ্যে ২ হট্ট আছে। তথা হইতে
১৯০ ক্রোশ ভেরা নামে গ্রাম, অনেক বসতি আছে, ২০ হট্ট আছে,

পোগুলুবাদি সকল পাওরা যার। বাাসা নদীর তীরে ঐ গ্রাম। ব্যাসানদী নৌকাতে পার হইরা ২ ক্রোশ পরে থাদা নামে গ্রাম, তথার ১২ হটি আছে। ুক্লভি অর্থাৎ নদীর ছোট ছোট পাথর এই তুই ক্রোশ পথ বাইরা বৃক্ষমূলে জলসন্তের ঘর এবং কুলা আছে। ঐ স্থলে বিশ্রাম করিরা

১ জোল পর্বত উপরে চড়াই করিরা চিন্তাপুরণী দেবীর মন্দির

চিন্তাপুরণী দেবী

দর্শন ইর। দেবীর মন্দির নাগর মল কুত,

বালালা ঘর। ঐ ঘরের চড়াদিকের ঘার
থোলা, তাহাতে পরদা দেওলং। ঐ ঘরে মধ্যে দেবীর আসন পূর্ব্বকৃত ছোট গুফার লাল আছে। ঐ গুফা রুপার মণ্ডিত। দেবী
গোলাকৃতি প্রতর, ইহারা মহাপীঠ কহে। ছিন্নমন্তা দেবী দর্শন
ইত্যাদি। ঐ স্থানের চড়ুর্দিকে প্রায় ৩০ হট্ট আছে। নবরাত্রের
মেলার সমন্ত দোকান সকল সাজান থাকে। অর্দ্ধকোশ নীচে

কলের বাউড়ি, তথা হইতে জল আনিতে হয়।

#### ২১ চৈত্র, বুধবার, দ্বাদশী

চিন্তাপুননী হইতে ৪ কোশ আসিরা ৪ হটি, পরে ও কোশ আসিরা সোরাদ নদী। ঐ নদীর তীর হইতে ছই পথ—এক পথ ক্ষতির উপর হইরা পাকদত্তী, বিতীর পথ বাঁধা রাস্তা এক কোশের কের আছে। পরে চোটা গ্রাম, ১২ হটি আছে। অতিশর জলক ই, ক্রাতে ৮০ হাত রশি। ঐ স্থানে জলবোগ করিরা ও কোশে উত্তরাই, ১ কোশ চড়াই করিরা নারে, ২ হটি। পরে ৪ কোশ পাহাড়ের থড়ে খড়ে আসিরা মুথ ১ হটি, পাহাড় চড়াই ও উত্রাইরের প্রথম মুথ; এল্ল ঐ স্থানকে মুথ কহে। পরে ৪ কোশ ভ্লিরারপুর, সন্ধার সমর প্রভান হর।

২২ চৈত্র, বুঁহস্পতিবার, ত্রয়োদশী

ছশিয়ারপুরে স্থিতি ও নগরভ্রমণ।

২৩ চৈত্র, শুক্রবার, চতুর্দলী হশিয়ারপুরে ম্বিতি।

২৪ চৈত্র, শনিবার, অমাবস্থা

হশিয়ারপুর হইতে নয়না-দেবী দর্শনে গমন ৷ সহর হইতে ২ ক্রোশ বেজোডার কেলা এবং গ্রামের বসতি আছে। তথা চইতে ও জেলাশ রাজেশারী দেবীর মন্দির, নদীর তীরে। 🕹 মন্দিরে গোলাকৃতি পাথর। এক গোস্বামী আছেন। बाटकश्रवी स्मवी তথা হইতে বড়শীঃ গ্রাম নদীর তীরে, উহাকে নগর কহে। অনেক দোকান আছে, অনেক জাতির বসবাস। সকল ুরকম **খাঞ্জবাদি পাও**য়া যায়৷ তথা হইতে ৪ জেশ রামপুরাগ্রাম, পাকদণ্ডীর পথ, বালুকাময় ভূমি, জলকষ্ট আছে। উক্ত গ্রামে ৫ হটি আছে। এক বাবার্জির বর-বাড়ী আছে, এক বৃহৎ অখণ বৃক্ষ আছে, তাহার ছায়াতে বহু মনুষ্য জীবজন্ত শীতল হয়। এক কয়া আছে—জলকট, ৮০ হাত নীচে জল। তথা হইতে ৫ ক্রোণ জেলো পর্বত মধ্যে বাজার আছে, দকল দ্রবাদির দোকান আছে. থাকিবার স্থান নাই। তথা হইতে এক শুক্ত নদী পার হইয়া ৫ হটি আনছে, তাহাকেও জেজো বলে। ঐ স্থানে রাজপুরার রাজার এক কেলা পর্বত উপরে আছে ট ছশিবারপুর হইতে জেলো পর্যান্ত বালুকাময়,--পথ নাই, জলকট্ট, অতিশন্ত কণ্টক , বিশেষতঃ রামপুরা হইতে জেলো পর্যান্ত পাঁচ ক্রোশের মধ্যে জল বিশু নাই। ভেজোর নিকট পাহাড়ের নীচে ছই কুলা আছে। নদী পার জেকোতে হিতি।

২৫ চৈত্র, রবিবার, প্রতিপদ জেলো হইতে উত্তরাই করিয়া ৪ ক্রোপ বাইরা এক কুরা ও বুক্লাদি আছে। তথা হইতে পাহাড় চড়াই করিয়া ও ক্রোশ পরে

শব্দ পুক্রিণী। পরে ও ক্রোশ সম্ভোক গড়, সোয়াদ নদীর তীরে ।

শব্দ কর্মা করি বিলাকান ইত্যাদি ও লোকের বসতি

আছে। সম্ভোকগড়ে রাজবাটী আছে।
তথা হইতে দক্ষিণমুখে সিম্লা সেপাটু পাহাড়ের রাস্তা, পূর্বমুখে

নরনা দেবী যাইবার পথ। তথা হইতে ও ক্রোশ বাইয়া সতলজ্জ

নদী। ঐ নদী নৌকার পার হইয়া ২ ক্রোশ পরে ররপুর প্রামে

ইটি আছে। ঐ সকল ইটিতে ভাল থাকিবার হান নাই।

সরকারি তহশীল ও চৌকি জন্ত এক ঘর তৈয়ার হইয়াছে,

ঐ ঘরে হিতি।

২৬ চৈত্র, সোমবার, দ্বিতীয়া

বরমপুর হইতে নলপুর যাইরা নয়নাদেবী গেলে ৭ কোশ, পথের ফের আনছে। কিন্তু পথ অতি উত্তম। ১০ কোশ পর্যান্ত সহরের স্থার বসতি, সকলই পোক্তা হর। এতদেশে নলপুর সহর। যাহার যে দ্রব্য প্রয়োজন হয় ঐ সহর হইতে আনিতে হয়। সহর সতলজ নদার তীরে, স্থান জল স্থল উত্তম।

বরমপুর হইতে ৩ কোশ থুব গ্রাম। তথার শিবদোরাণা আছে। তাহার পর পর্কতের বিকট পথ, ঝাপান সওয়ার সমেত কোন ক্রমে চড়িতে পারে না, পদবজে অতি কঠে পর্কতে উঠিতে হয়।॥• কোশ এইরপ অড়বড় পথ কাটাইলে পরে পর্কতীর পথ। পথ কোথাও চড়াই কোথাও উতরাই—এই মত ৪ কোশ পথ গেলেকোট নামে এক গ্রাম। এ স্থানে পর্কত উপরে কলার রাজার এক কেলা আছে। রাজার বাটী বিলাসপুর।

কেলাতে রক্ষকগণ আছে। রাজার ভোষা-

থানা আছে, নিম্নে অখারোহী পদাতিকগণ আছে, বাজার দোকান আছে, আটা দাল পাওয়া যায়। বাজার মধ্যে থাকিবার ভার নাই। কুয়ার জল ভাল নহে। বাজারের উপর এক দেবালয় আছে। ঐ দেবালয়ে লাল স্থান আছে। পর্বাত, উপরে কেলার নিকট ক ঝরণাতে বাউডি আছে জল অতি উত্তম। চড়াই ॥• মাইল নীচে যে বাউডি আছে, উতরাই ॥। ক্রোণ। ঐ দেবালয় ৮ শক্ষীনারায়ণের বাটীতে। স্নান আহারাদি করিয়া ৩ ক্রোশ থাড়া চডাই নয়না দেবী। এই তিন ক্রেখে মধ্যে জলবিন্দু নাই। া ক্রোশ চডাই করিলে মধ্যে এক পিয়ায় অর্থাৎ জ্বলসত আছে। ১ ক্রোশ অন্তরে এক ঝরণা আঁছে। তথা হইতে জল আনিয়া জল্মত দিতেছে। নবরাত্তের মেলাতে অনেক মহুষ্য একতা হয়, এজন্ত এক পাকা কৃপ করিয়া তাহাতে জঁলপূর্ণ করিয়া রাখিয়াছে। ঐ স্থান হইতে ১॥ কোশ চড়াই পাণ্ডাদিগের বাটী। ২০ বর পাণ্ডা (৩) ১ • হটি আছে। তথায় জল নাই, ॥ • ক্রোশ নীচে নামিলে তুই গাঁথ। পুন্ধরিণী আছে, ঐ পুন্ধরিণী বর্ধার জলে পরিপূর্ণ থাকে। ঐ জ্বলে শৌচ প্রস্রাব স্থান পান ভোজন ইত্যাদি সকল কর্ম সারিতে হয়। জল পুলিবার বেতন প্রতি কলস ছই পয়সা। যাত্রীর নিকট অধিক গ্রহণ করা হয়।

মুর্দ্তি প্রকাশ আছে। নরনা দেবীর অইভুজা এক মুর্দ্তি আদোরার প্রকাশিত আছে। দেবীর মন্দির পশ্চিমরারী, সন্মুথে ব্যাঘ মুর্দ্তি নির্দ্ধিত আছে। মহাদেবীর নরনপীঠ গোলাক্কতি প্রস্তর। ঐ ভবনের অর্দ্ধ জ্রোশ নীচে এক গুফার স্থার পর্বত বিদীর্শ হইয়া স্মৃত্ত্ব আছে। তাহাতে বটুক-ভৈরব গুপ্ত আছেন। স্মৃত্ত্ব পথে দেবীর পূর্ব্বের আদেশ মতে পাপ্তাদিগের বাক্য দৃচ্ করিয়া স্মৃত্ত্ব পথে পুলা ইড্যাদি ভৈরব-উদ্দেশে করিতে হয়।

এই স্থানে ভগবতীর নম্নন পতিত হয়, এজন্ত নয়নপীঠ কছে। দেবীর নাম নম্না।

পূজার নিষ্
ম — পাণ্ডাদিগের এক এক দিন পালা আছে।
মাহার বে দিবস বারি হুইবে, দেবীর অবনে পূজা ভেট মাহা
হইবে বারিদার সকল পাইবে। দেবীর আলাহিদা ভাণ্ডার
নাই। দেবীর পূজা ভোগ বারিদার জিআ। প্রতিদিন দেবাতে
১০ থরচ, ইহার মধ্যে পেটেরাওয়ালা রাজার প্রতিদিবস

॥ আটি আনা ভোগের বরাদ আছে—নন্দরাম পাণ্ডার প্রতি
ভারাপণ আছে। পর্কাত উপরে দেবীর ভবন, অভিশয় জলকষ্ঠ।
তিন গাঁথা পূজ্রিণী আছে, জল শুখাইয়া গিয়াছে। বর্ধাতে জলপূর্ণ
থাকে। একণে দেবীর মান পূজার জল ১॥ জোশ নীচে এক
বাউড়ি আছে তথা হইতে প্রাতে এবং সন্ধার হুই বার হুই কলস
জল আইদে। সন্ধার সময় মহাদেবীর ভবনে প্রছিয়া দর্শনাদি
করিয়া, দেবীর সম্মুধে বটবুক্স্লল লক্ষ্মীনারায়ণের মন্দিরের নিকট
বসিয়া সকলে আপন আপন ইট সাধনে, কেহ কেহ কথোপকথনে
মগ্র ছিল। এয়ত কালে ভূমিকম্প হইয়া অভিশর দোল হয়,
বুক্ল ভবন মন্দির কম্পবান। ভাহার আর্দ্ধ দণ্ড পরে পূন্র্পার

কম্প হয়। শুনিলাম ঐ দিবদ বেলা এক প্রহর সময়ে একবার কম্প হইরাছিল, তাহা আমরা জানিতে পারি নাই। পথিমধ্যে পাহাড় চড়াই উতরাই করিতে ছিলাম। ভূমিকম্পান্তর মহাদেবীর স্নান অভিষেক আরতি দর্শন করিয়া মন্দির প্রাক্ষণ করা হয়। শুবন মধ্যে পাণ্ডাদিগের কন্তাগণ বেষ্টিত থাকে। সকল গীঠ স্থানে যেরূপ ক্যাগণ অর্থ যাক্রা করিয়া থাকে, এথানেও সেই মত দেবীরূপা হইয়া অর্থ উপার্জ্জন করে। অধিকন্ত বালকগণ আছে। তথা হইতে রাত্রি ছয় দণ্ড গতে পাণ্ডাং বাটীতে আদা হয়।

#### ২৮ চৈত্র, মঙ্গলবার, তৃতীয়া, ত্রাহস্পার্শ

প্রাতে অর্ক্তেরণ নীচে বাইয়া, ঐ গাঁথা পুক্রিণীর জ্বলে প্রাতঃকৃত্য স্থান তর্পণ ইত্যাদি করিয়া, পরে মহাদেবী ও স্থড়ক দর্শন, পূজা, রাহ্মণ সধবা কুমারী ভোজন করাইয়া পরে ৩ ক্রোক্ত তরাই করিয়া, কোট গ্রামে কেলার নিকট ভলস্মীনারায়ণের বাটীতে আসিয়া রাত্রিযোগে আহারাদি। উপর হইতে ঝরণার জল নীচে আসিয়াহে।

२৮ हिज, तूधवात, शक्ष्मो

কোটের কেলার নিকট হইতে ৭ কোশ বরমপুরে লান ভোজন করিয়া > কোশ পরে বরমপুরের ব্যাসা নদীর ঘাট। এই নদী নৌকাতে পার হইয়া ৩ কোশ আসিয়া সোয়াদ নদীর তীরে সস্তোকগড়, রাজা রামসিংহ জায়গিরদাবের কেলা। কেলা মধ্যে বাটী আছে। রাজা গত (হইয়াছেন), তাঁহার ছই পুত্র আছে। বাজার ও গ্রাম রাজার অধিকার। অনেক প্রাজা এবং নাই। রাজা যে ন্তন দোকান নির্মাণ করিতেছেন, তাহাতে রাজে বীস। ঐ স্থানে ৫০ হটি এবং থানা আছে।

২৯ চৈত্রে, বৃহস্পতিবার, ষষ্ঠী, লীলাবতী (নীল) পূজা
সংস্থাকগড় হইতে ১০ কোশ জেজা, তথার এক বৈরাপীর
আথড়াতে রান-ভোজন করিরা ৩ কোশ জেদিআড়া গ্রাম। পরে
২ জোশ মানপুর নগর। অনেক বদতি এবং দোকান জাছে,
থাকিবার হান নাই। শুরু নানকের ধর্মশালা, সদাব্রত ও গদি আছে। ঐ বাটীর
পার্ষে এক বাড়ী আছে, তাহাতে রাত্রে হিতি। রামপুরার পথ
হইতে মানপুরের পথ সর্কাংশে অতি উত্তম, স্থানে স্থানে গ্রাম ও
জল আছে।

৩০ চৈত্র, শুক্রবার, সপ্তমী, বাসন্তীপূজা

নানপুর হইতে হশিলারপুর : কোশ, পাকা রাস্তা। এই রাস্তাতে রোপড় গতারাত হয়। হশিরারপুর পর্যন্ত পাঁচ নদী পার হইতে হয়। একণে শুক আছে। ভাউনীর উত্তর দিয়া সহর প্রবেশের পথ। ছাউনীর দক্ষিণ ও পশ্চিম ছই দিকে নদী আছে। এথান হইতে ও জোশ সহর। নদী পার হইরা মাজিপ্তর সাহেবের কাছারি, ছাউনী, ডাকঘর, গির্জা (ও) সাহেবদিগের বালালা। ঐ দিবদ বাহাত্বপুরে ওক নানকের মেলা।

সন ১২৬০ সাল, ১লা বৈশাথ, শনিবার, অফ্রমী হশিরারপুরে থাকিয়া নগর-অমণ।

০০১

(০১)

#### ২ বৈশাখ, রবিবার, জ্রীরামনবমী

হশিয়ারপুরে আহায়াদি করিয়া ৭ ক্রোশ হরেশাঝাম। এ আমে ভাল ৩৬ড় পাওয়া বার। ঐ আমের নিকট রাতে অবস্থিতি হয়।

৩ বৈশাখ, সোমবার, দশমী

্ হরেণা হইতে ৪ কোশ রেহালা, তথার চৌকী আছে।

বৈ থানা হইতে ৭ কোশ ফাগুড়া প্রামি। সরাই, থানা (ও)

ভাক্ষর আছে। এক প্রুরিণী-তীরে ঐ গ্রামবাসী এক ব্রাহ্মণ

কাগুড়া আম সাধু হইরা বার বংসর দাঁড়াইরা আছেন,

পরমেখরের সাধনা করিতেছেন। পুর্বের্ড হই

পদে ছিলেন, সম্প্রতি এক পদে দাঁড়াইরা আছেন। আহার—

এক পোরা হ্রা, কিছু বাতাসা এই মাত্র, আর কিছু আহার নাই।

বীমে অগ্নিসেবা, শীতে ঐ পুরুরিণীতে ক্লক্তন্ত করেন। বয়ঃক্রম

হন্ষ ৩০ বংসর, শরীর উত্তম আছে। দেখিতে প্রীমান, নথ চুল

আছে। সর্বাদা হার ক্রম্ব থাকে। প্রত্যাগ্রমনে দর্শন পাইরাছি—

দেবস্তি, ক্লপে মধা।

ঐ পুছরিণীর উত্তর দিকে সাধু দর্শন করিয়া কিঞ্চিৎ দূরে এক বাগান এবং কুয়া আছে। তল্পধ্যে দিবাতে আহারাদি করা হয়। সন্ধার পর গাড়ীর পড়াউতে থাকা।

#### ৪ বৈশাখ, মঙ্গলবার, একাদশী

ফাৰুড়া হইতে পূর্বরাত ১০ ঘটার পর গমন করিয়া ১০ কোশ কোনর, বধার কেলা আছে। তথা হইতে ২ কোশ সভলেজ নদী, ১ কোশ নদী অংশন্ত। এই নদীতে নৌকার পুল পার হই। চারিধারে পূল আছে, শেষধারে প্রধান পূল ৪৮ থাকা মোকা আছে, পার হইরা ঘাটীরালের দান লইবার স্থান। তথা হইতে ৩ ক্রোশ লুধিয়ানার কেলা, পরে সহর। লুধিয়ানাতে

জন্ধ, মাজিষ্টর (ও) কালেক্টরী কাছারি বুদ্ধিনান আছে। পড়াউ নিকটে মাজিষ্টরের বে নৃত্ন কাছারি বর হইতেছে, ইহার স্বস্থা অনেক অপ্রথগাছ এবং কুরা আছে। তথায়ু দিবার বিশ্রাম করিয়া সন্ধ্যার পড়াউতে স্থিতি।

## ৫ दिशांथ, तूधवात, चाँनगी

স্ধিয়ানার পড়াউ হইতে পুর্বরাত্তে দশঘণ্টার সময় গমন করিয়া ১০ জোশে এক পড়াউ, পরে ৫ জোশে লয়রের দর্মাই । এ সরাই হইতে ॥০ জোশ আসিয়া বিছাপুর নামে এক প্রাম । এই প্রাম মধ্যে প্রামন্থ সকলে এক অর্থথ বৃক্ষের মূল উত্তমরূপে বাধাইয়া তাহাতে ছুই পার্মেই ছুই ঘর করিয়া রাধিয়াছে। এক প্রুর্নি এবং কুয়া আছে। পুরুরিণীর ছুইদিকে পাকা গাথা। পুর্বে ভাল জল ছিল, একণে ভরাট হুইয়াছে। নীচে এক বটকুক্ষ আছে এবং অস্ত অস্ত দিকে নিম্ব, বট, অর্থথ বৃক্ষাদি আছে, পথিকদিগের শীতল হুইবার উত্তম স্থান। প্রাম মধ্যে দোকান আছে, চাউল দাল আটা মৃত ইত্যাদি পাওয়া যায়। ঐ স্থানে আহারাদি করিয়াণি বিশ্রাম।

#### ৬ বৈশাথ, বুহুম্পতিবার, ত্রয়োদশী

বিদড়া অর্থাৎ বিভাপুর হইতে পূর্বরাত্তে ১০ ঘণ্টার সময়। গমন করিয়া ৬ ক্রোশ আসিয়া রাত্ত প্রভাত হয়। থুলোর সরাই—পড়াউ (ও) থানা আছে। পরে ৮ ক্রোণ বালার, সরাই, পড়াউ, থানা ইত্যাদি আছে। তাহার পর নিক্টে বাড়া গ্রাম। ঐ গ্রামে আহারাদি করিয়া বৃক্ষুনে বিশ্রাম।

#### ৭ বৈশাথ, শুক্রবার, চতুর্দশী

পূর্বহাতে সন্ধার সময় বাড়াগ্রাম হইতে গমন করিয়া ৮ ক্রোশ ওগানার পড়াউ, সরাই ও থানা আছে। পরে ৫ ক্রোশ আসিয়া রাজপুরার সরাই। ঐ সরাইডের নিকট এক আম্রবাগান আছে। ঐ বাগে দিবাতে আহারাদি করিয়া বিশ্রাম।

## ৮ र्विगाथ, गनिवात, शृर्गिश

রাজপুরার আমবাগ হইতে পুর্ধরাতে স্কার পর গমন করিয়া

> জোশ আসিরা মোগলের সরাই। পড়াউ, শুদাম (ও) থানা
আছে। সরাই ভয় হইরাছে। পরে ৩ জোশ আসিরা এক
নদী। ঐ নদী হইতে ২ জোশ অ্যালাসহর, অনেক বস্তি
দোকান, সরাই এবং ডাক্ডারথানা আছে। সহর হইতে ৩ জোশ

ছাউনী। ছই কোশ পৰ্য্যন্ত ছাউনীর সীমানা।

ক্ষালা ইতোমধ্যে লালকুর্ত্তির ও সদরবাজারে নানাক্ষত জ্ববাদির দোকান আছে। সদর বাজার উত্তরদিকে,
বালালিদিগের বাসা। অনেক বালালি আছেন। কালীবাড়ীতে
নিরাল্লর ব্যক্তিদিগের আল্রম-ছান। সকল বালালি বাবুতে ঐ
কালীবাড়ী স্থাপিত করিয়াছেন। অনেক সংব্যক্তি আছেন,
দেশহ ব্যক্তিগণকে কিছু কিছু দিয়া থাকেন। তথা হইতে
কশৌলির সাহাড় ত্রিশ ক্রেশ। অহালা সহর (ও) বাজার হইতে

া৽ কোশ আদিয়া মাঠে এক আদ্রবাগান আছে, ঐ বাগান মধ্যে
দিবাতে লান-ভোজন করিয়া বিশ্রাম।

# ৯ বৈশার্থ, রবিবার, প্রতিপদ

অধানার আঁএবাগ হইতে পূর্বাদিন সন্ধাগতে গমন করিরা
। কোশ আসিরা সাহাবাদের পড়াউ। সরাই, গুলাম (৩) থানা
আছে। পরে তেওড়ার চৌকিঁ(ও) বালালা। পরে । কোশ

শিল্লি

মধ্যে বুকাদি নাই। রাস্তার দক্ষিণদিকে
মূতন লোকান হইতেছে। ঐ লোকান মধ্যে দিবাতে আহারাদি

# ১০ বৈশাখ, সোমবার, দ্বিতীয়া

পিপনি হইতে পূর্ব্ববাতে ছই প্রহর গতে গমন করিরা ৫ ক্রোশ আসিরা বটানার পড়াউ। গুলাম, থানা (ও) ডহলীলদারের কাছারি আছে। তথা হইতে ৬ ক্রোশ কর্ণালের পড়াউ। সহরের উদ্ভর-পশ্চিমন্তিকে ছাউনী। পূর্ব্বেলিক কর্ণালের ছাউনীতে অনেক গোরা থাকিত। গোরাবারিক আছে। ছাউনীতে লাইন ডোরী গোরার চৌকিছিল। মানদেওরানি (ও) পুলিশ-কাছারি আছে। সহর মধ্যে অনেক আমারলোকের বাস আছে। মুসলমান অধিক। উক্ত পড়াউ মধ্যে বাগান আছে। ঐ বাগে দিবাতে আছার (ও) বিশ্রাম করিরা সন্ধ্যাগতে সহরের নিকট গাড়ীর পড়াউ,

#### ১১ বৈশাখ, মঙ্গলবার, ভৃতীয়া

কর্ণাল হইতে পূর্ব্বরাত্তে ছই প্রহর গতে রওনা হইরা ৬ ক্রোপ্ আদিরা বরহুদার সরাই। পরে ৬ ক্রোপ আদিরা পাণিপথসহর। বে পড়াউ আছে, (তাহাতে) ছারা নাই। সহরের নিকট মনসা-দেবীর এক মন্দির, বাটা, পুক্রিণী (ও) বাগান আছে। ঐ মূন্দিরে দিবাতে আহারাদি করিরা সন্ধ্যার পর পড়াউতে স্থিতি।

#### ১২ বৈশাখ, বুধবার, চতু

গাণিপথের পড়াউ হইতে পূর্বরাত্তে ছইপ্রহর গতে রওনা হইরা ন ক্রোপ আসিরা সামহানের পড়াউ, গুদাম, থানা, (ও) সরাই আছে। পরে নাত গ্রাম। ৫ ক্রোন পরে রশৌলির পড়াউ, গুদাম, থানা (ও) সরাই আছে। ছায়া নাই, নিকটে গ্রাম। ঐ গ্রামে অর্থবৃক্ষ-তবে ছিতি।

#### ১৩ বৈশাখ, রহস্পতিবার, পঞ্চমী

রশৌলি গ্রাম হইতে পূর্বরাতে ১০ খনীর পর রওনা হইরা ৬ ক্রোপ আসিরা রাই পড়াউ, গুলাম (ও) সরাই। তথা হইতে ৩ ক্রোপ পূজানি গ্রাম। ঐ গ্রামে নিখরক্ষের ছারাতে আহারাদি করিরা বিশ্রাম হর। গ্রামে লোকান আছে।

### ১৪ বৈশাখ, শুক্রবার, ষষ্ঠী

পূঁজানি প্রাম হইতে পূর্বরাত্তে দশটার সমর রঙনা ইইরা ও ক্রোন পড়াউ, পরে ৬ ক্রোন সব্বিমন্তী, ১ ক্রোন তেলিআড়া, ২ ক্রোন দিল্লীর কাবেলীদরকা—লহরের ধারে। বৃক্ততে আহারাদি করিরা রাঅে গাড়ীর পড়াউতে থাকা হর। ঐ স্থানকে হাতা ক্লৈছে। চতুর্দ্ধিকে প্রাচীরবদ্ধ এক ফটক আছে। ঐ হাতাতে ৪ জন চৌকিদার (ও) একজন জনাদার রক্ষক থাকে। ঐ হাতার ভিতর এবং বাৃহিরে দোকান আছে।

## ১৫ বৈশাথ, শনিবার, সপ্তমী

গাড়ীর পড়াউ হাতা হইতে প্রাতে ঐ লহরের নিকট বটবৃক্ষ-মূলে আসিরা প্রার ক্ষরিকোশ পড়াউ, পরে শৌচক্রিয়াদি
করিরা লহরের জলে মান। ঐ বৃক্ষ-মূলে আহারাদি করিরা নগরঅমণ হয়। পরে বেলা চারিদও থাকিতে ঐ হান হইতে কাবেলীদরজা হইরা সহরে প্রবেশ করিয়া কাগজি-মহলা, যমুনার লহরের
ধারে ধারে আসিয়া, মতিচাঁদ গুজরাচীর অফিসের নিকট হইয়া,
প্রাণ ডাক্ষবের নিকট ধালাসী লাইন মেগাজিনের দক্ষিণ
জগৎ বাব্র দক্ষণ একটি মাটার একতালা বাটা, তাহাতে সন্ধ্যার
মমর প্রবেশ।

ঐ বাটী হইতে যমুনা অতি নিকট, নিগমবোধের ঘাট। ঐ
ঘাট ইইকবদ্ধ আছে। কিন্তু একণে ঐ- বাধা ঘাটের নিকট
বমুনা প্রোত নাই। একণে ঐ ঘাট হইতে
প্রায় এক পোরা পথ উত্তর্গিকে যমুনা প্রোতঘতী হইরাছেন। বর্ধাকালে জলপূর্ণা হন। মধ্যে চড়ার উপর
শ্রশানভূমি আছে। বর্ধাতে জলপূর্ণা হইলে শবদাহাদির অভিশন্ধ
ক্লেশ হর, এজন্তু ঐ হানে উচ্চন্থান করিরা তাহার চতুর্দিকে
প্রোচীর দিয়া শবদাহাদির হান করিরাছে। ঐ ঘাটে শবদাহের এক চম্প্নার ব্যবস্থা আছে। কিঞ্জিৎ কঠি ও ঘুঁটা

দিরা শব চিতাতে সাজাইরা অধি দিরা বার, তাহাতে অস্থিপর্যান্ত সমস্ত ভঙ্গরাশি হয়, চিহ্নমাত্র থাকে না। কিন্ত ঐ বযুনারূ উত্তর পারে ঐ কাঠের দশগুণ দিরা শবদাহ করিকেও এরপ তাবৎ ভঙ্গ হয় না। ইহার এই মাহাত্মা আছে। নিগমবোধের ঘাট দক্ষিণ পার। বাটোয়াল ব্রাহ্মণরণ এক্ষণে চড়ামধ্যে ঘর বাহ্মিয়া তথায় বসিয়া তিলক-চন্দন দেন।

# मिल्लीत विवतन

সন ১২৬৩, সাল, ২৪ বৈশাথ, সোমবার, শুক্লপ্রতিপদ

ইক্সপ্রস্থ (বা) দিল্লীতে নিগমবোধের ঘাটে স্নান-তর্পণ (ও)
অবোধ্যাবাসী এক সাধুদূর্শন। •

দিলীসহর অপ্তাক্ততি, সহর-পানায় দেরা। (ইহার) প্রকাশিত ১২ বার (ও) গোপন ( বিরি।

বাবের নাম দরজা, গোপন-বাবের নাম বিড্কি। উত্তরপশ্চিম কোণে কাশ্ট্রর দরজা, বামাবর্তে মহরি দরজা, কাবেলী, দরজা, লাহোর দরজা, ফরাশখানার বিড্কি, আজমীর দরজা, তোরকমান দরজা, দিলী দরজা, বাহাছরজ্ঞালি থার বিড্কি, দবিরাগঞ্জঘাট দরজা, রাজঘাট দরজা, কোরঝকা বিড্কি, কলিকাতা দরজা, নিগমবোধ বিড্কি, নিগমবোধ দরজা, কেলার ঘাট দরজা, লাল দরজা (ও) থাজানা বিড্কি। এই সকল বার হইয়া সকল লোক গতায়াত করে। সকল বাবের মধ্যে দিল্লী, আজমীরী, লাহোরী, কাবেলী, কাশ্মীরী, (ও) কলিকাতা দরজা প্রধান। ইহাতে অস্তর্ধারী বারপালগণ ও পদাতিক সৈক্ত আছে। বাবের নিলম ছই পথ, আগম নিগম ভিল্ল। কাশ্মীরী বাবে পদাতিকগণের স্থান, লাহোর দরজাতে থানা ও ৩০ বাজার।

ধুমুনা হইঙত খোদিত এবং পর্কাত ভেদ করিয়া লাহোরী (ও) কাবেনী লার হুইয়া প্রবেশ করাইয়া বাহির (ও) ভিতর গড়ে সর্কাত জলা চলাচল করে। মধ্যে মধ্যে স্থানে স্থানে গোধুম ইত্যাদি

চর্ণের ইপ্টক-প্রস্তর যন্ত্রাগার নির্মিত আছে। নগরের শোভা অতি উত্তম। একণে পঞ্জোদী সহর। ইহার স্থানে স্থানে নানা ক্রব্যাদির ক্রম বিক্রমের সওদ্ধির, সর্বদেশের ব্যক্তিগণ এবং নর্ভকীগণের আবাস। বেখাগণ এবং নানাবর্ণের রাজ-পুরুষদিগের বাসস্থান আছে। হীরা, জহরত, মোতি, চুণি, পারা, জরি, তিল্লা, কালাবর্জ অর্থাৎ সোণারূপার তারের থচিত বল্লাদি বহুতর আছে। লাহোর ছার হইতে দিল্লীখরের বাসস্থান ভিতর কেলা প্রাস্ত সুমার্গ, বিলক্ষণ শ্রেণ্ড। মধ্যস্থল হইয়া যমুনালহর থেলিতেছে। মধ্যে মধ্যে দেতৃবন্ধ আছে, ভদ্বারা গমনাগমন হয়। স্থানে স্থানে মধ্যস্থলে এমন স্থান আছে, তাহাতে কুদ্র কুদ্র ব্যবসায়িগণ, যাহাদের স্বল্ল আয় ঘারা দিন-পাত করিয়া অমাত্যগণসহ উদর পরিপোষণ করে, তাহাদের দোকান পথিমধ্যে। পথিকদিগের গতির অবধি নাই-এক শ্রেণী আছে। প্রধান মার্গের ছই পার্শ্বে নগর শোভনের নানা-প্রকার দ্রবা দ্বারা প্রত্যেক দোকান শোভিত করিয়াছে। স্থানে ন্তানে কাঠন্তন্তে কাচ-নির্শ্বিত দীপাধার আছে। নিশাযোগে দীপ্রারা নগরের মার্গ উজ্জ্ব হয়। মধ্যত্তে জুলা মস্জিদ নামে এক ভলন স্থান। তাহাতে অপরাছে বহু মোলা মৌলবী মুনুদী দাঞি ফকির ইত্যাদি ব্যক্তিগণ একত হইয়া ভজন-দাধন করে। ঐ স্থানে চকের ক্লার উত্তম উত্তম প্রবা সকল বিক্রের হয়।

দিলীখনের নৃতন কেলা অর্থাৎ বাহার মধ্যে অক্টুংপুর এবং বার স্থান ইত্যাদি এক্ষণে নিজ অধিকার স্থান, ঐ কেলার তিন বার। ুদিলী বাবের নিকট উত্তর-পশ্চিম দিকে লালদীযি নামে প্রকরিণী

প্রস্তর-মণ্ডিত, যমুনার জলে পরিপূর্ণ থাকে, সময় সময় পরিবর্ত্তন করিয়া রাখে। মংস্থাদি আছে, জল দশ ু হাত থাকে। রাজধানীর ব্যক্তিগণ স্থসভ্য, স্থবেশ, সু-অধ্বাস, সুভাষ, সচ্চরিত্র (ও) অধর্মে সুপবিত্র। হিন্দ্রির যমুনায় আবলি-বৃদ্ধবার প্রাত:মান পূজা ধান. ষ্পাশক্তি দীনে দান, তৎপরে স্বত্ত কর্মে প্রবৃত্ত হইয়া রাজ্ঞ্ধানীর নিয়মানুসারে অর্থক্ররী বাক্যে (ও) শ্রমে উপার্জন করিয়া, অপরাক্তে সায়ংকালের পূর্বে ব্যক্তি বিশেষে হিন্দু-মুদলমান সর্বজাতি কেছ আখে, কেহ গজে, কেহ উদ্ভেঁ, কেহ বিমানে, কেহ রথে, কেহ মমুখ্যবানে, কেহ গোষানে, কেহ স্কুষানে, দিলীর নাগরিক কেহু বা মৃগধানে-এইরূপ নানাবিধ ধানে, এত দ্বিল্ল চেরেট, বগী, পেলন্ধিন, সেজ-গাড়ী, রথ, মেছনি বয়নি, পালকী, তানজাম, বোচা, মহাপা, ডোলি ইত্যাদিতে ভদ্ৰগণ বস্ত্রালম্বারে ভূষিত হইয়া নর্ত্তকী ও বেখ্যাগণ আপন আপন নায়ক-দিগের সমভ্যারে স্থবেশা হইয়া ভ্রমণ করিয়া মনাহলাদে থাকে। অতি ছঃখী ৰ্যক্তিগণ পদত্রকে উত্তম বস্ত্র পরিধান করিয়া স্থান্ধি পু**শমাল্য, কি অন্ত গন্ধ**রব্য আতর প্রভৃতি মন প্রভূলিত করে।

দিলীখনের অন্তঃপুর যে বৃহহ মধ্যে আছে, ঐ বৃহহের তিন বার। লাহোর বার পশ্চিমদিকে। এক কোম্পানী সিপাহী থাকে। দিলী-বার দক্ষিণ দিকে। ঐ বারে এক কোম্পানী সিপাহী থাকে। এই বারপালগণ দিলীখনের নিকট বেতন পার। রাজ্যেখনের নিয়োজিত আক্ষাবহ। রাজ্যেখনের এই বৃহহ মধ্যে উত্তম নগর, বহু জ্ব্যাদির দোকান ও সদাগরগণ আছে। পথ প্রশন্ত, পথের মধ্যত্বলে ব্যুনার লহর বহিতেছে। ছুই পার্যে দোকান (ও) বাজার।

পঞ্জোশীতে বেমত সহর, দিতীয় বৃাহ মধ্যে ঐরপ সকল সহরের শোভা আছে। আমীরদিগের এবং রাজপুরুষদিগের বাসস্থান আছে। তৃতীয় বৃাহ মধ্যে অন্তঃপুর ি এই বৃাহ মধ্যে থাহা কিছু হউক, তাহার বিচার ও দও ইত্যাদি দিলীখরের ক্ষমতা, ইহাতে রাজ্যের হতকেপ করেন না।

নিগমবোধ-ঘাটের পূর্কদিকে, পাঙ্ব-ছত্ত্বি আছে, প্রস্তর-নির্ম্মিত। ঐ ছত্তির দক্ষিণে পুরাতন কেলা, পরে যমুনাতে নৌকার সতু।

দিল্লী সহরের সহর-পানার বাহিরে অধিকারস্থ রাজাদিগের কেলা ছিল, একণে ভগ্ন হইগাছে। রাজগণ বৎকালে দিল্লীখরের নিকট আসিতেন, তথন আপন আপন কেলাতে অবস্থিতি করিতেন।

ক্লিকাতা দরজা পূর্ব্বে ছিল না, সংপ্রতি ··· বংসর ছইল

··· গবর্ণর জেনারল সাহেবের আজ্ঞানুসারে দার
প্রকাশ হইরাছে। এই দারের ছই পার্যে রান্তার আলোর জন্তু
লগ্ধন আছে। নৌকার বে পুল আছে, তাহার উপর পর্যান্ত লগ্ধন
আছে।

কাশীর দরজার সমূথে ২ মাইল পরে ছাউনী। তথার কোম্পানী বাহাছরের সৈঞ্চাধ্যক এবং সৈঞ্জগণের ও সৈঞ্চ-সম্পর্কীর ব্যক্তিগণের আবস। সদর বাজার, লালকুর্তির বাজার ইত্যাদি সকল বাজার আছে। লহরের ধারে কোম্পানীর বাগান, প্যারে-ডের তাল ফরদা মাঠ আছে, কুরার জল উক্তম।

দিলী রাজধানীর মালদেওয়ানি, পুলিল, পরমিট, পঞ্জরা, আবগারি, নিম্কি, ইঞ্জিনিয়ার, পোষ্ট, ব্যাক্ত ইড্যাদি রাজকার্য্যের

দধ্যর, কালেজ, মেগাজিন, বক্সী দধ্যর (৩) গিজ্জাঘর সকলই সহর
মধ্যে সবস্থিত। যে কলেজ আছে, ইহাতে ইংরাজি, পারদী,
আরবী, উর্দু(৩) দেবনাগঞ্জ—এই সকল বিভাভ্যাস হইতেছে।

৫৫০ জন বালক বিভাগী আছে।

কেলার উত্তরদিকে ও পূর্বদিকে যমুনা বিরাজমান।

দিলীখবের অভাবধি এই নিয়ম আছে বে, জাতিতে দ্লেচ্ছ কিছ সেরপে অভক্ষা-ভক্ষণ, কি স্থলাতিগণ সহ ভোজন কিছু হয় না। (তিনি) ভ্রাচারে থাকেন, পবিত্র ক্রব্যাদি ভোজন (করেন), গলাললে পাকাদি হয়।

দিলীগহরে স্থানে স্থানে অনেক বাজার আছে। সকল বাজারের নাম স্বরণ হয় না। যে নাম দিলীবাসী ব্যক্তিগণ কহে, সেই নাম যাহা সংগ্রহ হইল, সেই ৩৩ বাজার এই—

মনস্থরকা চক, বদনপুরা, কাঞ্চনীগলি, সামলমলকী দেউড়ি, পঞ্জাবী কটরা, হাপশথাকা ফটক, থাড়ি বাউড়ি, লালকুরা, চাউড়ি, জুআ মস্জিদ, সীতারামকী বাজার, মলুকাকী গলি, আমনিকা মহলা, দরিয়া বাজার, গুলিয়াখুনি দরজা, উর্দ্বাজার, চাদনী চক, ফতেপুরি, জহুরি বাজার, খান বাজার, খানবকা বাজার, পালাবাজার, কৌড়িয়া পুল, তিনজ্বপলি (?), আনাবকী গলি থকুবকী মস্ক্রেদ কালে

আনারকী গলি, থছুরকী মসজেদ, কালে
মস্জিদ, চিতলি কবর, দরিয়া গঞ্জ, কাজিকা হৌজ, নয়াবাজার ও
ছোট দরিয়া এই ৩০ বাজার । ইহা তিয় গলিতে গলিতে বাজার
আছে গ নিগমবোধের থিড়কি হইতে দক্ষিণ মুথে অনেক দেবদেবীর স্থান । মাধবদাদের বাগিচাতে স্থানে হানে উত্তম দেবালয়
আছে, প্রাণপাঠ, গান-বাস্ত (ও) ভজন সর্বদা হইতেছে।

(02)

দিলীখরের অস্তঃপ্রে সপ্তব্য দার ভেদ করিলে প্রবেশ হওরা
বার। প্রথম ব্যহ মধ্যে প্রবল সহর ১৮ দার, দিতীয় ব্যহ মধ্যে
তক্রপ সহরের দোকান জ্বাদি, তৃতীয় দার চতুর্থ ব্যহ মধ্যে এক
রাজসিংহাসন অর্থাং পূর্ক্কালের বাদসাহী তক্ত, প্রস্তুর-নির্মিত (ও)
সিংহাসনাক্ষতি। ইহাতে প্রস্তুরের সানাবর্ণের বৃক্ষলতা কলপুশ পক্ষ্যাদি থোদিত (এবং) স্করঙ্গের, চিত্র-বিচিত্র ছিল। সমূথে ধে খেত-প্রস্তুরের চৌকী আছে, তাহাতে বহু মূল্যের প্রস্তুরের লতা পাতা পুশাদি ছিল, সকল খুলিয়া পুঠ করিয়া লইয়াছে।

দেওয়ান-আমে ২২ থামে ২২ স্থা দাঁড়াইতেন। ঐ স্থানে
বাদসাহ পুর্বে বসিতেন। সমুথে প্লোভান আছে। চতুর্থ
বেওয়ান-ই-লাম
বাহতে মহাতাব বাগ, নানামত বৃক্ষ আছে,
আরামের আবাস আছে। তৎপরে আঁথিরারি বাগ, অতি স্বর্মা বন। নানাজাতি মেওয়া এবং ওয়ধিপুলাদির বৃক্ষলতার স্পোভিত। বাগমধ্যে যুম্নার লহর বেটিত
আছে, মধ্যে মধ্যে জলস্কস্ত অব্ধি ফোরারা, লহরের তুই পার্যে স্থানে
ক্রানে লহরী চৌবাচনা, তাহাতে প্রক্ষের শোভা।

শ্রাবণ-ভাদ্র নামে এক স্থান সরাধানা অর্থাং ঐ ঘর মধ্যে হৌল আছে, তাহাতে শতধারা সহস্রধারা ফোয়ারা বসাইত, তাহাতে লল ছাড়িলে শ্রাবণ-ভাদ্রের স্থার বৃষ্টি হইত। এক স্থানে পুদ্ধরিণীর উপর ঘর আছে, বেমত জলটুলি ঘর সেই মত। মধ্যস্থলে ঘর, পুর্বিদিকে প্রস্তরের সেতৃবদ্ধ আছে, নিয়ে জল গতায়াতের পথ (৩) নৌকা-কেলি জল্প লোহময় এক তরি ছিল। এ উল্পান অতি নিবিড় বন, ইহাতে চন্দ্র-স্থা দেখা যাইত না। অতি স্থাতিল প্রমা মনোহর স্থান, রালহংস ইত্যালি জলচর পক্ষিণণের কেলি

জন্ত কমলবন ছিল। পঞ্চম (বৃাহতে) মোভি মন্জিদ নামে মন্জিদ,
শ্বিত প্রস্তারে নির্মিত। ঐ স্থানে বাদসাহ
ভলনাদি করেন। ভলনাগার বহমূল্য প্রস্তরখচিত ছিল, এখন কেবল খেতপ্রস্তর আছে।

ষষ্ঠ বৃহহতে যমুনার পশ্চিমদিকে এক উত্তম ভবন, তথাধ্যে বাদদার তক্ত আছে। ঐ তক্তের নীচে হইয়া যমুনা-লহর চলিতেছে। যথন দিল্লীখর রাজকার্ঘ্যে বদেন, তথন ঐ দিংহাদনে উপবেশন করিয়া কার্য্য শ্নির্কাহ করেন। ঘরের বে কি শোভা ভাহা কি বলিব! দীর্ঘে প্রস্থে বৃহৎ ঘর, কিন্তু ভাহাতে কড়ি বরগা নাই—প্রত্তরের চাদর খিলান, তাহাতে নানা রঙ্গের প্রত্তরে থচিত হইয়া ভাহার মধ্যস্থলের · · · তে রঙ্গের ছারায় চিত্র বিচিত্র করিয়া শোভাবিত করিয়াছে। ঐ ঘরের প্র্কাদিকে বে ছার আছে, ভাহার দক্ষিণ দিকের ছারে খেত প্রত্তরের এক চৌকী আছে। ভাহার উত্তরের ঘরে এক ফটিকাদন চৌকী আছে। আয়ায় ছারে অল্ক প্রকারের আদন আছে। ঐ চৌকীতে বিদরা বমুনা দর্শনাদি(হয়) এবং বাভাবে মনের প্রস্কাতা প্রভাব-ই-ধাস

বেও।ন-হ-ধাস

করে। উক বরের মধ্যস্থলে খেত প্রস্তরের
রাজিসিংহাসন। উর্জে এক হাত বেদী, তাহার উপর এক সিংহাসন
আছে, নানা রত্নে থচিত। ঐ তক্ত বরের মধ্যে বন্ধ থাকে।
যৎকালে বাদসাহ বারে বসেন, তাহার পূর্বে ঐ সিংহাসন স্থাজিত
করিয়া বাহির করিত। ঐ বরের চতুপার্শ্বে এবং তক্তের চতুপার্শে
মছণন্দর বিছান হুইয়া রাজপুরুষগণ আপন আপন কার্য্যে নিযুক্ত
থাকিতেন এবং রাজগণ নজর ধরিতেন। ঐ ভবনের চতুপার্শে
সর্দারদিগের দথার, বারে রক্তক-থোজা সকল আছে। ঐ স্থানের

নাম দেওয়ান-থাস। বাইশ হ্ববা বংকালে তলবে আসিতেন, সকলে এক এক ছারে ইড়াইতেন। বারছারী নাম। চতুদিকে বার ছার আছে, প্রতি দিকে বার-বার হার।

সপ্তম বৃহহ ঐ বাটীর দক্ষিণ। অন্ত:পুর সাতে থণ্ড, ভাহার
মধ্যে এক এক থণ্ডে অনেক অনেক থণ্ড আছে। দরবার দরের
নিজ দক্ষিণে উজিরের দরবার।, তৎপরে থোজাদিগের চৌকী,
ভাহার পর বাদসাহের বৈঠক। তিনি ঐ স্থানে সর্বাদা থাকেন,
বাদসাহী অন্ত:পুর
তাহার পার্ষবিধী স্থানে বাদসাজাদাদিগের

তাহার পাশ্ববটা স্থানে বাদসাজাদাদিগের
মহলা। এমত অনেক মহলা আছে। বাদসাহের বেগম ছই
শত। সকলে বিবাহিতা নহে, কুজি জন বিবাহিতা। বাদসার
বস্কঃক্রম ৮০ বংসরের অধিক হইয়াছে। সর্বাদা বাহিরে আইসেন
না। অস্কঃপুর মধ্যে এক মস্জিদ আছে, তাহাতে স্ত্রীলোক সকল
ভজনা করে।

দিল্লীখবের মধ্যমপুত্র মির্জা কালে গান-বাছে অতি স্থপিওত, তাঁহার মত শুণী একণে দিল্লী সহরে প্রায় কেছ নাই। সর্বাদা ক্ষিরিভাবে থাকা হয়, গান-বাছ লইয়া সর্বাদা আমোদ প্রমোদ ক্রেন, সকল তাঁর্থ এবং সর্বাত্ত গামনাগমন হয়, দেখিতে অতি স্থপুক্ষ, বোটক-কুক্রের প্রতি অতিশয় আস্তিক।

দিলীখনের ঘুড়ি এবং শিকার-থেলাতে অতিশয় প্রীতি, সর্বাদা ধেলা হয়।

লাল পরদা নামে বে অন্তঃপুর আছে, তাহার মধ্যে পুরুব কি ধৌজা কাহারও গমনের অন্সমতি নাই। পঞ্চম বংসরের বাল-কের লাল পরদার ভিতর গমনের ক্মতা নাই। অন্তঃপুর মধ্যে বাদদার বৈঠক পর্যান্ত খোলার পাহারা। লাল পরদা অবধি দ্বাররক্ষক, কাহারী, চোবদারী, বালাদারী ইত্যাদি সকলই জ্বীগণ।
ঐ অন্তঃপুর মধ্যে সহর বালার আছে। তক্ষণ সকল বালারে হীরা।
মোতি ইত্যাদি, করিয়া তাবৎ ক্রব্যাদি জ্বীলোকে দোকান করে,
বেগমেরা খরিদ করেন। এইরপ লাল পরদার মধ্যে বাদসার
অন্তাবধি নিয়ম আছে।

অাধিয়ারি বাগে কাঁঠাল (ও) আনারসের গাছ আছে, ফল বাজারে বিক্রন্ন হর্ন। একু গাছ আছে, তাহার ফল খাইলে প্লীহা আরাম হয়।

কৌড়িয়া-পুলের নিকট বেগমবাগ নামে এক বাগান আছে। আতি স্থ্রমা স্থাতিল স্থান, ফলস্লের বৃক্ষাদি আছে। ব্যুনা-লহর বাগের ভিতর হইয়া আসিতেছে এবং ছই তিন বড় বড় ক্য়া আছে, তাহার জল স্থাতি।

পঞ্জাবী কটরাতে সওদাগরদিগের বাস। ইহারা পঞ্জাব-লেশীয় ব্যক্তি, বছকাল দিল্লী সহরে আছে, সকলে বাণিজ্যকার্য্য করিয়া ধনাতা হইয়াছে।

এ সহরে কালাবর্ত্ ভিলার কাজ উদ্ধন হয়। দরিয়া এখং চাদনী চকে"আনেক দোকান আছে। প্রায় সকল বাজারেই গোটা জরি, পালা, কালাবর্ত্ত ও টুপির দোকান আছে। এক ভরি কালা-বর্ত্তর ক্লাইভাদি বেলওয়ার করিতে এক টাকা মজুরি। কোর্ত্তা, আদিরা, দেশাটা উদ্ধন উদ্ভম ও বহু মূল্যের হয়।

আবার সকুল ক্রবাদির হর। আকল পাতার গোটা থাকে, তাহার আবার ক্থাত হর। কুমড়ার লছা মেঠাই উত্তম তৈরার হর, টাকার /১॥• সের বিক্রয় হর। কুঠিওরালদিগের কুঠী রাভার ধারে নাই, কটরা মধ্যে ধাকে। আস্রফি কটরাতে অনেক কুঠীওরালা আছে, আর ছই তিন কটরাতেও আছে।

১৬ বৈশাখ, রবিবার, অফমী

ইক্সপ্রস্থ অর্থাৎ দিল্লীর ষমুনাতে নিগমবোধের ঘাটে লান তর্পণ পূজা ইত্যাদি ইপ্ট-সাধন, দেবদেবী দর্শন করিলা আহারাত্তে বৈকালে সহর-ভ্রমণ।

১৭ বৈশাথ, দোমবার, নবমী দিলীতে এ, অধিকন্ত কোর-কার্য্য।

১৮ देवनाथ, मञ्जलवात, मनमो

ু যমুনার স্নান-তর্পণ, কালী বাটাতে দর্শন, বৈকালে সহর এমণ।
সোমড়া নিবাসী বাবু শিবনারারণ রার, জাতিতে বৈশ্ব, তাঁহার
সূহিত আলাপ হইল। অতি উত্তম ব্যক্তি, পরমিটের সেরেস্তাদার।
তিনি বড় মাসুষ, (তাঁহার) দরজাতে মুহুরি, স্বরংবাটী তৈরার করিরা
আছেন। উত্তম বাড়ী, যেমন ব্যক্তি তেমন বাটী।

১৯ বৈশাখ, বুধবার, দশমী

নিগমবোধের ঘাটে স্নান-তর্পণ, আহারাস্তে অপরাফ্লে নগর-ভ্রমণ।

- ২০ বৈশাথ, বৃহস্পাতিবার, একাদশী, ত্র্যুহস্পার্শ বমুনাতে স্থান-তর্পণ (ও) একাদশীত্রত (পালন)।
- ২১ বৈশাখ, শুক্রবার, ত্রয়োদশী

ইক্সপ্রন্থে নিগমবোধের ঘাটে স্নান-তর্পণ, নীলছত্তি দর্শন এবং অপরাত্তে নগর-ভ্রমণ। ২২ বৈশাখ, শনিবার, চতুর্দশী

্ নিগমবোধের ঘাটে স্নান-তর্পণ করিয়া কালকাদেবী, যোগমায়া (৩) কুতব-দহর দেখিতে গমন হয়।

থালাদী লাইন হইতে দিল্লীদরজা গেট ২ ক্রোশ, পরে পুরাণ দিল্লী, পুরাণ কেলা এবং রাজাদিগের আপন আপন ক্বত পুরাণ কেলা দকল. প্রায় ২ ক্রোশ পথ। পরে ১ ক্রোশ আরবের সরাই। পুরের আরবদেশীয় স্তদাগর সকল ধথন আসিত, ঐ সরাইরে থাকিয়া বাণিজা করিত। একণে এ সরাই মধ্য দিয়া পথ হইয়াছে। ছই পার্শ্বে থাক্তব্যাদির দোকান হইয়াছে। 🔄 দ্রাইয়ের গেটের পাশে এক গেট আছে, তাহা হইয়া ভূলভূলড়ি মস্জিদ। ঐ মস্জিদ বছকালের, অতি উত্তৰ্ম নিৰ্দ্মিত। ও উহাতে বছমূল্য প্ৰস্তুর ছিল, তাহা ইংরাজ বাহাত্র উঠাইয়া লইয়া গিয়াছেন। এমন উত্তম নিৰ্মাণ যে, এ পৰ্যান্ত মেরামত হয় নাই, তথাচ নতন নিৰ্মাণের ভার। যে সকল হার আছে সকল হার এক আরুতি। ... হার আমাছে। আনগম-নিগম এক হার দিয়াহয় না। যত চিহ্ন দিয়া ভিতরে প্রবিষ্ট হও, বাহির হইবার সময় অঞ বার হইয়া বাহির হইতে হয়। স্থান অতি উত্তম, সুশীতল ছায়া এবং ভাল ভাল পুলোম্বান আছে। শ্রান্তিযুক্ত ব্যক্তির শ্রান্তি দুর হইয়া মনের প্রফুলতা হয়। তথা হইতে ২॥• ক্রোশ পরে বাহাপুর নামে গ্রাম. পর্বতের উপর। कांगकारमधी তথা হইতে কালকাদেবীর মন্দির। দিল্লী-খবের উকিল পাটনমল ঐ পূর্ব্বারী মন্দির তৈরার করিয়া দিয়াছেন। বৈদীর উপর গোলাক্বতি প্রস্তর আছে। দেবীর

বরণ বস্ত্র ও গদ্ধপুষ্পে এবং অলভার দিয়া আর্ড করিয়া রাথে। সমুধ হারে অনেক কুলু হটিকা বেষ্টিত আছে। মন্দিরের চতুম্পার্ষে বারাণ্ডা আছে। দেবীয় নিকটে প্রায় ১ ক্রোশ পর্যান্ত কাহারও বাদস্থান নাই। অনেক ধনিগণ ঐ স্থানে আপন ধর্মার্থে লোকের হিতজন্ম ( ও ) আরাম জন্ম ধর্মশালা-বাটী- নির্মাণ করিয়া দিয়াছেন। বে কেহ থাকিতে ইচ্ছা করে, তাহার নিবারণ নাই। অতিশয় জলকষ্ট। মন্দিরের নিকট এক কুয়া আছে, ৭৫ হাত রশিতে জল পাওয়া যায়, জল নিষ্ট, কিন্তু এ সময় জলহীন, কিঞিং জল আছে ভাহাতে পোকা এবং কাদা। দেবীর বাটীর বাহিরে এক পোয়া গেলে এক কৃয়া আছে, ভাহাতে ৭০ হাত রশিতে জল পাওয়া ধায়, জল ভাল। ঐ কুয়া হইতে জল আনিয়া শ্রান্তি দুর করিয়া পরে দেবীর দর্শন পূজা ইত্যাদি করিয়া, আরবের সরাই হইতে জল্যোগ জ্ঞাবে দ্রবাদি লইয়া আসা হয়, তাহা সকলে জলবোগ করিয়া রোজের সময় ঐ ধর্মশালায় এবং নিম্ববুক্ষ মলে বিশ্রাম করিয়া, বেলা ততীয় প্রহর গতে বোগমায়া দর্শনার্থে গ্ৰন।

কালকাদেবীর পূজারিদিগের বাদ চেরাগ দিল্লীতে। যাহার বে দিনাবধি পালা হয়, সেই ব্যক্তি আপনগণ এবং যাহার ইচ্ছা হয় তাহাদের সমেত থাকে। অভ্যাগত ব্যক্তিদিগের থাকিবার আনেক স্থান আছে। চৈত্র ও আখিন মাসে নবরাত্র কালে বড় মেলা হয়। তৎকালে দোকান সকল বৈসে। সকল ক্রব্য পাওয়া যায়, একশে আটা (ও) দালের দোকান আছে।

বাহাপুরের কালকাদেবীর মন্দির হইতে কুতব সহর ৪ জোশ পথ, মন্দির হইতে ১ জোশ চেরাগ দিলী ও গ্রাম—মহত্যকত নছে,

দেবক্ত। গোবরের স্কল সহর নির্মাণ করিয়া স্থাপিত করেন। **১চরাগ দিল্লী কেলার মধ্যে অনেক হিন্দু-মুগলমানের বাস এবং** ক্বতা আছে। তথা হইতে 🕈 ক্রোশ দেখনরা গ্রাম, পরে ১ ক্রোশ বেগমপুরা গ্রায়। তথা হইতে ১ ক্রোশ যোগমায়া দেবীর মন্দির। এই মহাদেবী পৃথুরাজার °কেলার মধ্যত্তবে আছেন। মহারাজ পৃথীরাজার যজজ্মি

মহাদেবীকে, সাধন হারায় পর্কাত উপরে বন

মধ্যে দর্শন পাইয়া পৃজা করিতেন। সর্কা দেবী-সমীপে এক ঘৃত প্রাদীপ জ্বিত থাকিত, এবং এক শ্বনের শ্যা, তাহাতে অন্তাবধি নিয়ম আছে, পূর্ব্ব মত ঘত প্রদীপ দিবা-রাত্ত জাগ্রং জ্যোতি: থাকে। পুথুরাজার যজ্জভূমি এবং রাজধানী গড় মধ্যে, পর্বতের গড় চতুর্দিকে বেষ্টিত আছে। যে স্থলে যজ্ঞভূমি, তাহার চিহ্ন এই আনছে যে, মুনিগণ রাজ দিক যজ্ঞ করিয়া আছেধাতৃ-নির্মিত এক অভে যজাকুও মধ্যে স্থাপিত করিয়া কহিয়া ছিলেন যে, "এই স্তম্ভ-মধ্যম্বল নাগরাজের মন্তকোপরি স্থাপিত ক্রিলাম, যত দিবস শুস্ত থাকিবে ততদিন তোমার রাজ্য এই হইবে না।" এই বাক্য রাজা শ্রবণ করিয়ামনে সন্দেহ হওয়াতে ঐ স্থস্ত হেলন করিতে অর্গাৎ উঠাইবার জন্ত নড়াইতে. ঐ স্থান্ডের গোড়া দিয়া বুকুস্রাব হইল। মুনিগণ রাজার মনে সন্দেহ জানিয়া রান্ধার প্রতি কুপিত বাক্যে কহিলেন, "যদর্থে স্তম্ভ স্থাপিত, তাহা পূর্ণ হইবে না এবং ঐ শুস্ত ঈষৎ দক্ষিণ-পশ্চিমে হেলা রহিল।" স্তান্তের উপর দেবনাগর অক্ষরে সকল বুতান্ত থোদিত আছে। মুদ্লমানগণ ও ইংরাজ্দিগের রাজ্য হইলে পর যথন যাহার অধিকার হইয়াছিল, ঐ স্তম্ভ উঠাইবার জন্ম নীচে অনেক খনন করিরা দেখিরাছে, সীমা পার নাই এবং স্তম্ভে কামান ছারা গোলা

নিক্ষেপ করিরাছিল, তথাচ তত্ত পতিত কি ভগ্ন হর নাই। গোলার চিহ্ম আছে, পারদী অক্ষরে তত্ত-গাত্তে লিখিত আছে। ঐ তত্তের কিঞ্জিৎ দূরে এক প্রস্তর-নির্দ্মিত তত্ত্বীকৃতি বৃহৎ ও উচ্চ এক বর আছে, ক্রমে ছয় তলা উচ্চ।

ঐ ভভাকৃতি ববে পল আছে। এমত ঐত হওরা বায় বে, এই ভভ, ইহাকে লাট কহে, উহার উপর বসিয়া রাজকতা বমুনা দর্শন ও পূজা করিবেন, এজত রাজা, নির্মাণ করিয়াছেন। রাজতবন হইতে বমুনা ৯ ক্রোশ।

রাজার বাটী প্রস্তর-নির্দ্ধিত, অতি উত্তম প্রস্তর-পচিত ছিল।
ঐ সব স্তম্ভ বাটার ভিতরে ছিল। মুসলমানদিগের রাজ্য হওরাতে
পৃথীরাজার প্রাণাল

কৈ রাজ্যতন মধ্যে এবং বজ্ঞাভূমিতে যে সকল
দেবদেবীর মন্দির এবং বজ্ঞাকুপ্ত ইত্যাদি
বাহা হিন্দুদিগের ধর্মবিষয়ক স্থান ছিল, সকল ভগ্গ করিয়া এবং
উত্তম উত্তম যে সকল পাথবের দরজা ছিল, তাহা উঠাইয়া দিল্লীতে
লইয়া বায়। দেবালয় স্থানে মস্জিদ তৈয়ার করে এবং স্থানে স্থানে
কবর দেয়। এই মত করিয়া হিন্দুরাজক্বত স্থান সকল ভাই
করে। বিস্তমান আছে। প্রস্তর-স্তম্ভ স্থাস্তিত, ঘরের ভিতর দিয়া
উঠিবার পথ। এই স্তম্ভ দৃষ্টে কলিকাতার মন্থমেণ্ট নির্দ্ধিত
হয়। ইহা মন্থমেণ্ট হইতে অনেক উচ্চ হইবে।

উক্ত রাজতবন হইতে কুত্ব-সহর ॥• কোশ। সহর মধ্যে নানা জাতির বসতি এবং সকল জ্ব্যাদির দোকান আবাছ, থাছ জ্ব্যাদি পাওরা যার। সহরের ভিতর হইরা গুড় গ্রামে যাইবার পথ গিরাছে। গুড় গ্রাম ৯ ক্রোশ। বোগমায়া মহাদেবীর বাটীর মধ্যে অনেক ধর্মশালার বাটী আছে, উত্তরম উত্তম বাটী সকল । যাত্রিগণ থাকিবার জন্ম প্রস্তুত হইয়াছে, বোগমায়ার মন্দির কাহাকেও থাকিতে নিবারণ নাই। আমারা ঐ সকল বাটীর মধ্যে দেবীর মন্দিরের নিকট এক বাটীতে থাকিয়া সন্ধ্যায় দেবীর মান-অভিবেক হইবার সময় গোলাক্ষতি পাথর যোগমায়ার স্থান্ধণ আরতি দর্শন করিয়া, শিব দর্শন হয়। অতি স্তুম্য স্থান। সেবাইতগণ পূজা আরতি অস্তর স্থাতি পাঠ করিয়া যংকালৈ পূলাঞ্জলি প্রদান করে, তংকালে দেবীকে প্রায় আবির্ভাব করে। ঐ স্থানে এক কৃষা আছে, বং হাতের নীচে জল। তথাকার এমত মহয়ে যে, প্রমা পাইলে ঐ কৃপ মধ্যে লক্ষ্ক দিয়া পড়ে। এরূপ কঠিন কর্ম্ম আবাদে করিয়া থাকে, কিন্তু কথনও কাহারও প্রাণ বিনাশ হয় না। দেবীর সম্মুধে ছই ব্যান্ত-আকৃতি প্রস্তর আছে, ঐ স্থানে ঘটা থাকে। মন্দিরের পার্য্যে এক নাট বাঙ্গালা আছে, তাহাতে দ্রুখ্যাদি সাজান, সকলই মহাদেবীর।

#### ২০ বৈশাখ, রবিবার, অমাবস্থা

যোগমারার মঙ্গল-আরতি দর্শন এবং কুতবলাট ধাতৃ-তত্ত দর্শনাদি করিয়া তথা হইতে ৪ ক্রোশ মদবশা। পরে ৪ ক্রোশ দিলীর আক্ষমীর বার। তথা হইতে ২ ক্রোশ আসিয়া নিগমবোধের বাটে লান-তর্পণ করিয়া বাসাতে আহারাদি করিয়া অপরাত্তে নগর-ল্রমণ।

২৪ বৈশাথ, স্নোমবার, শুক্ল প্রতিপদ

ষমুনার নিগমুবোধের ঘাটে দান-তপ্ণাদি এবং অবোধাবানী এক সাধুর দর্শন। ২৫ বৈশাধ, মঙ্গলবার, দ্বিতীয়া

ইক্সপ্রস্থ-দিলীতে দ্বিতি (ও) উক্তক্র্যা

২৬ বৈশাথ, বুধবার, তৃতীয়া

যমুনাতে স্থান-দানাদি। বৈকালে নগর-ভ্রমণ।
২৭ বৈশাথ, বৃহস্পতিবার, চতুর্থী

#### ২৮ বৈশাখ, শুক্রবার, পঞ্চমী

র্নিগমবোধের ঘাটে স্নান-তর্পণাদি, দেবদেবী-দর্শন (ও) ছরিছরঘোষের পুত্রের কর্ণবেধের নিমন্ত্রণ-রক্ষার্থে গমন। দিল্লী সহরে প্রায় পঞ্চাশ জন বাঙ্গালি বাবু আছেন। হরিছর ঘোষের বাসা কাগজি-মহলাতে; অতি উত্তম ব্যক্তি।

দিল্লীতে স্থিত ইলপ্রস্থ হইতে গড়মকেশব ৩০ কোশ, গলা

## ২৯ বৈশাঝ, শনিবার, ষষ্ঠী

দেবী তীর্থ। মৃক্রেখর শিব পাওবদিগের স্থাপিত ও তথা হইতে
হতিনা ৩০ ক্রোশ, যথা কুরুকুলের আদিরাজা। একণে
হতিনাপুরী বন হইয়া আছে, বন মধ্যে কুহীখর শিব আছেন, ধে
শ্বপুজার জন্ত কুতী গান্ধারীতে বিবাদ হয়।
মহাদেবের আদেশ হয়, ধে অগ্রে স্বর্গচম্পক
দিল্লা আমার পূজা করিবে, তাহার পূজ ব্লাজ্যেখন হইবে।
অর্জুন বাণ হারা কুবের ভাণ্ডার হইতে স্বর্গচম্পক শিব-মত্তকাপরি
বৃষ্টি করিয়া মাতাকে পূজা জন্ত পাঠান। ফ্রিশিব বন মধ্যে

আছেন, তথার অবধৃত-সন্ন্যাসিগণ আছেন। কুরুকুলের বর্বাটী বর্তমান নাই, স্থানে স্থানে চিক্ত আছে। নিবিড় বন হইরাছে।

#### ৩০ বৈশাধ, রবিবার, সপ্তমী

গার্কদিগের মজলিস নিগমবোধের ঘাটের উপর প্রতি রবিবার হয়। সহরের যত গায়ক আছেন, সকলে একজ হন। আপন আপন গান-বাজের প্রবীক্ষা হয়। দিলীখনের এক আসুর বাগ ছিল। ঐ বাগান সম্প্রতি কোঁপোনী বাহাছর ধরিদ করিয়া লইয়া উহার নিকট দিয়া কলিকাতা দুরজা প্রকাশ করিয়াছেন, তিন বংসর ঐ দরজা প্রকাশ হইয়াছে। ঐ বাগ ডিপুট কালেক্টরের জিয়ার আছে। ঐ বাগে এক্ষণে গোলাপ গাছ তৈয়ার করিয়া এক উত্তম ঘর আছে। তাহার সমূথে চৌবাচ্চাতে কোয়ারা আছে। ঐ স্থানে সকলে আসিয়া বিশ্রাম করে।

### ৩১ বৈশাথ, দোমবার, অফমী

ষমুনাতে স্থান-তর্পণাদি করিয়া অপরাস্ত্রে নগর ভ্রমণ করিতে করিতে কাশীর দরজার সামিল গিব্জার সন্মুথে জ্ঞান সাহেবের বাটীতে এক জন্ধ আছে, তাহার আকার উটের ভার, গলা লখা খোড়ার মুথের মত, সন্মুথে তুই পদ উচ্চ, পশ্চাতের পদ কিছু ছোট, গাত্রে বাাদ্রের ভ্রার ফটকা ফটকা চিহ্ন আছে, তুই বৎসরের বাচ্চা, কিছু এক প্রমাণ উটের ভ্রার উচ্চ।

> रेकार्क, सम्मृग्रात, नवसी वृत्राटक वाम-कर्णन क महत्र-व्यवन । कर्ष

- ২ জ্যৈষ্ঠ, বুধবার, দশমী দিলীতে ঐ।
- ৩ জ্যৈষ্ঠ, বৃহস্পতিবার, এর্ক:দশী দিলীতে ঐ।
- ৪ জ্যৈষ্ঠ, শুক্রবার, দ্বাদৃশী

দিলীতে সান-তর্পণ ও সহর-ভ্রমণান্তর ব্বাসায় আসিবার সময় অত্যন্ত আঁদি হট্রা, পথ না দেখিতে গৃহিয়া ভ্রমে অন্ত স্থানে গমন হটতেছিল, পরে ভ্রম দূর হট্যা বাসাতে আসিলাম।

- ৫ জ্যৈষ্ঠ, শনিবার, ত্রয়োদশী যমুনাতে মান-তর্পণ ( ও ) অপরাত্নে ভ্রমণ।
- ৬ জ্যৈষ্ঠ, রবিবার, চতুর্দ্দশী

দিলীখনের নিজ কেলাতে সর্ব্ অনণ এবং বম্নার তটে
নিগমবোধের ঘাটে নৃসিংহ-চতুর্দশীর মেলা দেখা। প্রাহলাদচরিজ্ঞ
পাঠ হর, হিরণ্যকশিপুর এক বৃহৎ কাগজের অরপ প্রস্তুত করে,
ক্তন্ত হইতে ভগবান মৃসিংহের রূপ ধারণ করিয়া সন্ধ্যার সময় দৈত্যনৃসিংহ-চতুর্দশীর মেলা
বিনাশ এবং প্রহলাদ ভগবান্-সমূথে স্তুতি
করেন। সকল দেবদেবী ও লল্লী ভৎছলে
উপস্থিত। এই মেলা নিগমবোধের ঘাটে দেখিরা ও গান অবণ
করিয়া, নীলছ্জি দেখিয়া পুল পর্যান্ত গমন, পরে বাসাতে
প্রতাবর্ত্তন।

 अगन्नाथ দর্শন। পরে অপরাছে মাধবদাসের বাগিচাতে ৺রাধাক্রঞ্চ চকুত্ জ নারারণ, বদরীনারারণ, গঙ্গাদেবী, বলদেব (৩) শ্রীরামসীতা-প্রতিমী দর্শন করিয়া, সক্ষল মন্দিরে আরতি দর্শন। পরে
হন্মান মহাবীরের দর্শনাস্তর রামলীলা শ্রবণ। তৎপরে অক্ত দেবালয় দর্শন করিয়া বাসায় গমন। এই দিবস চাদনীর চকে এক ছোট গাভীতে দ্যাঘাতে এক বৃদ্ধ হালওয়াই (৩) এক বালিকা
কাহার-কভার প্রাণদ্ভ করে।

৮ জ্যৈষ্ঠ, মঙ্গলবার, প্রতিপদ

যমুনাতে স্থান-তর্পণাদি ( ও ) অপরাহে নগর-ভ্রমণ।

৯ জ্যৈষ্ঠ, বুধবার, দ্বিতীয়া

ষমুনাতে লান-তর্পণাদি ( এবং ) ঐ মত অপরাছে ভ্রমণ করিতে করিতে কলিকাতা দরজা হইবা যমুনার তীরে বাইবা নৌকাতে বে পুলবদ্ধ আছে, তাহার উপর হইবা পারে বাইতে সকলের ইচ্ছা হইল। পার হইবার দানঘাট প্রথমে পুলের সমূপে আছে। পুলের উপর পথ কদ্ধ করিবার হই কাঠ আছে। এ পুল কাহারও ঠিকা নাই, ক্রোম্পানীর থাসে আছে। পার হইবার জন্ত ইংরাজ্বিক পাই দিতে হয়। চারিজ্বনের গমনাগমনের আট পাই জ্বমা করিয়া দিলাম। যমুনার পুল বৃহৎ, ১২৫থানি কাঠের নৌকাতে পুল হইরাছে। আমরা ১০২ থানি নৌকা পর্যন্ত গমন করিয়াছিলাম। ওই লঠন আছে। এই দেখিরা পুনরাগমন।

১ • জ্যৈষ্ঠ, বৃহস্পতিবার, দ্বিতীয়া, ত্র্যাহস্পর্শ প্রাতে বমুনাতে স্থান-তর্পণ এবং অপরাত্তে সহর-প্রমণ। ১১ জ্যৈষ্ঠ, শুক্রবার, তৃতীয়া

बन्नाव निश्रमतारभव चारि चान-छर्पन।

১২ জ্যৈষ্ঠ, শনিবার, পঞ্চমী

रम्नात्र सान-छर्ननानि ।

রালা হিল্পুরারের ইটেট নিলাম। হিল্পুরার রালাবাইরের লাতা। শিকার খেলিবার উত্তম উত্তম জ্বব্যাদি ছিল, বন্দুক ৭০০ শত টাকার কম নাই, ঢাল এক খানা ১০০০ টাকা বিক্রের হইল। গ্রাহক না থাকার জন্ত হীরা পালা চুনি মোতির কাল করা জ্ব্যাদি বিক্রীত হইল না।

# দিল্লী হইতে প্রয়াগ

## ১৩ জ্যৈষ্ঠ, রবিবার, ষষ্ঠী

বসুনার নিগমবোধের ঘাটে লান-তর্পণাদি করিয়া আহারাক্তে
অপরাফ্রে সন্ধার পূর্ব্বে দিল্লী দরজা হইবা বৃন্দাবন-বাঝা। দর্বা
হইতে চৌমুরিয়া প্রাম, বর্ণায় পুর্রাতন কেলা। ঐ হানে আঁদির
সময় থাকিয়া পরে
এ কোশ বদরপুর প্রাম, বর্ণায় বৃল্কট্রেনের বরেল
বদল হয়। তথা হইতে ই ক্রোশ বদরপুর প্রাম, এক কেলা ছিল,
তিন ফটক। ঐ হানে রাঝি প্রতাত হয়।

### ১৪ জ্যৈষ্ঠ, সোমবার, সপ্তমী

ঐ কেরা ইইতে মাঁও ক্রোপ ইনরানকী সরাই। ৪০ ক্রোপ আসিরা পুক্রিণী, তথার প্রাতঃকৃত্য সানাদি করিরা ৪০ ক্রোপ বুড়ার পূল। পূর্বে ঐ স্থান ভরানক ছিল। পরে ১ ক্রোপ আসিরা ফরিদাবাদ প্রাম, ক্ষুদ্র সহর। চৌদিকে সহর-পানা, মধ্যে দোকান এবং বাসস্থান। ঐ প্রাম মধ্যে না থাকিরা বলামগড়ের রাজার বাগানে দিবাতে আছারানি করিরা সন্থা পর্যন্ত বিশ্রাম।

## ১৫ জ্যৈষ্ঠ, মঙ্গলবার, অফমী

ক্রিণাবাদের বাগ হইতে পূর্ব দিবস স্ক্রাগতে গ্রাম ক্রিয়া তথা হুইতে ৪ ক্রোশ বলামগড়, রাজা গহর-সিংহের রাজ্য। কুল্ল সহর, রাজার কেলা আছে। তথা হুইতে ৪ ক্রোশ বগলা প্রায়। পরে ৪ ক্রোশ-পরওল গ্রাম, কুল্ল সহর, সহর-পানা মধ্যে সহর। প্রাবের প্রাক্তভাগে পাধরওরারি কেবীর বাগান। তথার দিবাতে
আহারাদি ও বিশ্রাম।

১৬ জ্যৈষ্ঠ, বুধবার, নবমী '

পরওল হইতে পূর্ক দিবার সন্ধ্যা সময় গমন করিয়া ব্লচারী s ক্রোল, ৬ ক্রোল হোড়েন ও ২ ক্রোল কোটবন।

্১৭ জ্যৈষ্ঠ, বৃহস্পতিবার

পূৰ্ব্ব বিবস সন্ধার পূৰ্ব্ব কোটবন হইতে ২ ক্রোল কুৰী।
তথার পরমিটের সাহেবের বালাবা আছে। তথা হইতে ৪ ক্রোল
সাজুই, পরে ৬ ক্রোল চৌমুরা, পরে ৫ ক্রোল বুলাবন-ধাম; বেলা
১০ টার সমর প্রহান হয়।

সন ১২৬২ সাল, ৯ অগ্রহায়ণ, রবিশার, একাদণী

্ৰী শ্ৰীপ্ৰশাবন-ধাম হইতে দৰ্শনাদি করিয়া শ্ৰীবৃত শুকদেব ব্ৰহ্মবাদী ও দেবাদার সকল হইতে বিদারী বর্ণাশক্তি ভেট বিদারার্থে দিরা, সমত্যারে রজ, ৮জুনদীপ্রদাদ (ও) ব্যাদি মন্তবে ধারণ করিয়া বেলা তিন দণ্ডের পর শ্রীশ্রীপ গোণীধরের দর্শন,

ক্ষানি (৩) পূজাতে বিবদন নইরা বাঝা করিরা, বেলা আড়াই প্রহরের পর আর আর বন্ধবর্গের নিকট বিদার হইরা অবেশ-সমনের বাঝা হইল। মধুরার বিপ্রান্ত ঘাটে দর্শন-স্থানিন এবং মধুরানাধ, বারিকাধীশ ও কুজানাথ বর্শনাদি করিরা ক্রব-ঘটের নিকট জ্বরাম দানের কটরা মধ্যে গাড়ী সমেত সকলে থাকা হর।

#### ১০ অগ্রহায়ণ, সোমবার, দাণশী

প্রাতে উঠিরা তথা হইতে ছই ক্রোশ নৃতন ধর্মণালা, বাহা কালেক্টর সাক্ষে সকল ধন্তীদিগের নিকট চাঁদা করিরা প্রস্তরের উন্তমরণ নির্দিত করাইতেছেন। তথা হইতে নওরলাবাদ এক ক্রোপ। এখানে সরাই ও দোকান আছে। আহারাদির চাউল, দাল, আটা, ম্বত (ও) চাবেনা পাওরা বার। তথা হইতে ছব ক্রোশ করে সরাই এবং দোকানাদি সকল এব্যের আছে। নগরের

করে-সরাই ক্রান্ত বসতি, হালওরাই, বেণে, কাঁসারি, বাজাল, তাত্মলি, কামার, কুমার, চামার ইত্যাদি সকল দোকান আছে। তরি-জরকারি প্রায় তাবৎ দিন পাওয়াঁবার। করে গ্রামের প্রান্তে নিষর্কের বাগান আছে। ঐ স্থানে গাড়ী রাখিরা নিষমূলে খিচুড়ি আহার হয়। রাজের ঐ স্থানে থাকা হয়। প্রীযুত কালীবাবু সন্ত্রীক, মুখোপাধ্যার ও একজন চাকর ডাকের গাড়ীতে অগ্রে বজরাতে আইলেন।

#### •১১ অগ্রহায়ণ, মঙ্গলবার, ত্রয়োদশী

করে হইতে সাত ক্রোপ গৌবাট। তথা হইতে ছই ক্রোপ সেকন্দরাবাগ। এই বাগে অনেক সাহেব লোকের বাসা আছে এবং সেকন্দর-বাদসাহের এক মস্ভিদ আছে। ঐ মস্ভিদ নানারকের সেকন্দরাবাগ

স্বন্ধ হান। মদ্জিদের অধিক প্রাচীন অবছা হইরাছে, তথাচ দেখিতে কি স্থানিতিত আছে, তাহা বলা বার না! বাগ্যেত নানামত বৃহ্ণাদি আছে। ফলফুল (ও) যেওয়া-জাত সব্জি উত্তম উত্তম হইতেছে। কোম্পানী বাহাছরের নিরোজিত কর্ম-কারকণ্ণ আছে। সেকেলারা ইইতে আগরা সহর ছই কোল। বেলা এগার বাটার সমরে দিলী দরকার নিকট বে গির্জ্জা আছে, তথার প্রছান হয়। তথা ইইতে বযুনার প্রেলর ঘাট এক কোল। প্রেলর বাহিরে কেলার ঘাটের আড়পার বর্জার ছিল। ঐ ঘাটে আসিরা বযুনাতে লান-তর্পণাদি করিরা শ্রীখণোপীনাথের মিঠার প্রানাটারা মাহারাদি হইল। পরে বজরা পার হইতে পকার ও মিটার জানাইরা আহারাদি হইল। পরে বজরা পার হইতে ঘাটে পছছিলে, গাড়ী হইতে আসবাব সকল বজরাতে তুলিতে দিবা অবসান হইল। সন্ধ্যাগতে চড়ার উপরে থিচুড়ি আহার হয়। রাত্রে বজরাতে শ্রন। এ দিবদ সহরের সমুদ্র দেখা হয় না, কেবল কেলার নিকট মতী ইত্যাদি শ্রীখকানীবাড়ী দেখা ও দর্শনাদি হয়। ১২ অগ্রহায়ণ, বুধবার, চড় কিশী।

আগারায় অব্স্থিতি হইরা সহর দেখা এবং বাজারে ক্রব্যাদি ক্রেয় করা হয়।

আগরা সহর উত্তর-নক্ষিণে নীর্বে হই ক্রোণ (ও) পূর্ব-পশ্চিমে প্রেম্থে এক ক্রোণ, উত্তমরূপ দশ বার বাজার (ও) বসতি আছে। সকল বাজারে সকল জ্বর্য পাওরা যার। আহারাদির উত্তম উত্তম জিনিস আছে। সহরের যে শৃত্যলা, তাহা সকূল বাজারে আছে। হালওরাই পটাতে মেঠাই, পুরি, কচুরি, মগদ, জিলাপি,

আথা অমৃতি, লাড়ু, কুমড়ার মেঠাই, পেড়া, বরষি, কালাকল, থ্রারলাড়ু, নিম্কি, সেও, মিঠা, সন্দেশ ইত্যাদি অব্যাদিতে সাজান দোকান। চাবেনার দ্বোকানে মৃড়ি, থৈ, বাজরার থৈ, জনারের থৈ ইত্যাদি নানামত চর্মণ-জ্ব্যা জুনাওরালাদিসের দোকানে পাওরা বার। প্রচুনিরার দ্বোকানে

এবং মণ্ডীতে চাল, লাল, আটা, মরদা, ছোলা, মুগ, বিরি ইত্যাদি ভূষি দ্রব্য সকল পাওয়া যায়। পশারির দোকানে সর্ব্ধ রকম মসলা ও ঔবধাদি আন্তু দৈদ্ধব লবণ (ও) পোন্তাদি মিলে। গান্ধির দোকানে ক্লেল, আতর ও গোলাপ জল এবং পুদিনা ইত্যাদি ও নানা জাতীয় দ্রব্যের আরক ও আচার পাওয়া যায়।

গোটাকেনারি বাজারে কেবল জরির কাজের বাজার। তিলার উত্তম উত্তম কাজ হইতেছে। টুপী চাদর আজিরা কোরতাতে এমত উত্তম কাজ হইক্টেছে। গুড়গুড়ি, আলবোলা, ফরশী, সটকার নল (গু) নয়চা ভাল ভাল তৈয়ার হয়।

আগরা সহরের সতরঞ্জি অতি উত্তম। জেলধানাতে বে সতর্ক্ষি, গালিচা (ও) আসন তৈরার হয়, তাহা সর্ব্বোৎকৃষ্ট । ধাড়াই সতর্ক্ষির গল বার আনার কম দের লা, আর গালিচা ও স্তার গালিচার দোকান এক শত আছে। কাসারি, লোহার, মনোহারী ও জুতা-কাপড়ের চক ভিন্ন ভিন্ন আছে। সব্জি মণ্ডী আলাহিলা। তথার কেবল তরিতরকারি বিক্রের হয়, সময় সময় কাঁটাল পটোল আনারস পর্যন্ত পাওয়া যায়। কাঁচা নারিকেল মিলে, নারিকেলের গাছ কোণাও কোণাও হইয়াছে। মেওয়ার দোকান আলাহিলা. কাবেনী মেওয়া সকল আছে।

আগরা সহরে বাঙ্গালি প্রায় পাঁচ শত আছে, সকলেই বিষয় কর্ম্মোপলকে আছে, বেকার কেহ নাই।

আগরা কালেজে নিধন-পঠন হইতেছে, কিন্তু হিন্দু-কলেজ কি ছল্পনি-কলেজের তুল্য কোন কলেজ নহে। এথানে সাহেব লোক অনেক আছে।

আগরাতে সকল অফিস আছে। বেমত বাদাল হাতার গবর্ণ-

মেণ্ট কলিকাতা, সেই মত হিন্দুছান পুশ্চিম-হাতার গ্রথমেণ্ট আগরা; কেবল স্থশীমকোট ও পেটিকোটের কাছারি এখানে নাই। তত্তির ট্রেকারি, সদর-দেওয়ানী ও ব্যাক ইত্যাদি স্থাপিত আছে।

আগরা অতি প্রাচীন সহর। বৎকালে হিন্দুদিগের রাজ্য ছিল, ডৎকালে (ইহার) অগ্রবন নাম ছিল। মুদলমানের রাজ্য হওয়াতে আকবর সাহা কেলা ইত্যাদি করিয়া আকবরাবাদ নাম রাধেন, পরে মহারাষ্ট্রগণ দখল করাতে আগরা নাম হয়। এমত প্রাচীন সহর বে, অভাবিধি কাহাকেও নৃতন ইট দিয়া বাটী করিতে হয় না। প্রাতন বসতিতে মাটীর ভিতরে এবং টিলাতে বে সমৃত্ত প্রাতন বাটীর ইট আছে, তাহাতেই একলে বাটী ঘর হইতেছে। ঐ ইটের মুল্য কাহাকেও কিছু দিতে হয় না, কেবল উঠাইবার ধরচা হইলেই হয়। অনেক মুনলমানের এবং অভ্যাকল জাতির বসতি আছে। অনেক ধনীদিগের বাস। সহর মধ্যে পঞ্চাশ হাজার মন্থ্রের বাদ আছে।

সহরের উত্তরাংশে জ্বজ, মাজিটর, কালেক্টর, কমিশনর, ট্রেলরি, সদর-দেওয়ানী, সদর-নিজামত, সেসন-জ্বজ, একাউন্টেও অফিস, কমিদরিরেট অফিস, গবর্ণমেন্ট অফিস, মূন্সেক, সদর-আমিন, সদর-আলা, পণ্ডিত, মৌলবী, ডিপুটী কালেক্টর, ডিপুটী মাজিটর, ইজিনিয়ার আফিস (ও) রেলবোর্ড আফিস ইত্যাদি এবং জ্বেলধানা আছে।

দক্ষিণাংশে কেরা। তাহার দক্ষিণপশ্চিমাংশে রালুগঞ্জ, সৈশু-দিগের থাকিবার স্থান। সকল সরকারি ও সঞ্জাগরি ডাকে গমনাগমন ও জ্বাদি গভারাতের বুলকটে নওরালা ও সেজ

ইত্যাদি গরু ঘোড়া মহুব্যাদি বানের গাড়ী পালকী, বাদির অফিস এবং জেনারল পোষ্টাফিদ, আগরা ব্যাক্ত এই আথার কেলা । স্থানে। আগরার কেলা ধমুনার উপরে, উত্তর-দক্ষিণে লম্বা, পশ্চিমদিকে হার আর দক্ষিণ দিকে হার। থাই ৰাহির দিকে এক, তাহার পর প্রাচীর হইয়া পুনরায় খাই দোহারা গড়থাই। তাহার পরে উচ্চ প্রাচীর, তাহাতে বুরুজ, চতুষ্পার্শ্বে কোণে কোণে বৃক্ত, ভোপ বদাইবার স্থান। -প্রাচীরের মধ্যে চতৃত্পার্শ্বে এমত ছিক্স বক্রভাবে আছে যে, বন্দুক ও কামানের ছারা ঞ্চলিগোলা চালাইলে বাহিবদিকে বিপক্ষকে আঘাত করিতে পারে। প্রস্তারে নির্শ্বিত কেলা, ভাল মজবুদ। এমত কেলা এলাহাবাদ (ও) চণ্ডালগড় ভিন্ন কোথাও নাই। কিন্তু এই কেল্লাতে দিল্লীখরের থাকিবার স্থান, অন্তাক্ত কেঁলা যুদ্ধের জ্বন্ত। এই কেলা মধ্যে যে মোতি-মদজিদ আছে, তাহা খেত প্রস্তরের বৃহৎ ঘর। এক এক ফুকরে তিন ফুকরের এক এক মোতি-মস্জিদ দালান হইতে পারে। যেমও প্রশস্ত ঘর : ৫০০ হাজার মহুষ্য একত্রে বসিয়া ভোজন করিতে পারে। চতু-শার্ষে চক আছে, মধ্যন্থলে উঠান। এই সকল বাটী খেত-পাথরে নির্শ্বিত। কি আন্তর্য্য পালিস্, তাহা বলিতে পারি না। কোন ক্রমে দর্প উঠিতে পারে না। এই মদজ্জিদের ফ্রির ও চেরাগদার আছে। মোতি-মসজিদের পূর্ব্ব-দক্ষিণ দেওয়ান-আম-থাস, যে স্থানে বাদসাহের কাছারি হইত। বসিবার ভক্ত কেওছান-ই-আমথাস আছে, নানা বর্ণের প্রস্তবে পচিত। সিংহাসন-সন্মুখে সোমনাথের চলনের গেট। এক্ষণে আম-খাস শেলেখানা হইয়াছে।

ইহার পূর্বাদিকে দেওয়ান-আম এবং সমল বুরুজ। দেওয়ানআমে হাওয়াথানা, বাদসাহার কটি পাথরের তক্ত, অভি স্থাচিকণ
দেওয়ান-ই-আম
দেব অংশী। ৩ক্তের ধারে ধারে আরবী
অক্তরে থোদিত লিপি আছে। ঐ তক্তের
উপর কোন গবর্ণর জ্তা সমেত উঠিয়া বসিবার ইছা করিয়াছিলেন, ডাহাতে (উহা) তৎক্ষণাৎ বিদীর্ণ হইল। অভাবধি ঐ
তক্তের দক্ষিণদিক্ তয় হইয়া আছে। ঐ তক্তের সমুধে উজিরের
খেত পাথরের তক্ত। তাহার দক্ষিণদিকৈ পশ্চিমের কোণ ভয়
হইয়াছে। বমুনার উপরে অভি উত্তম স্থান।

প্রস্তারে নির্মিত ও স্থবর্ণ থচিত নানা বর্ণের প্রস্তারে চিত্রবিচিত্র।

ই মহলে বেগমদিগের গোশলখানা অর্থাৎ লানাগার আছে। ঐ

শ্বান অতি মনোহর। লানের স্থান অতি

শিল-মহল

স্থানির্মিত, খেতপ্রস্তারের চারি কেদারা আছে,
পরস্পার সকলে সকলকে সমুথে দেখিতে পার। ঐ কেদারার
দাখিতে ছুই ফোরারার মধ্যস্থলে পুক্রিণী আক্কৃতি, তম্মধ্যে এক
বভ্ত মোটা ফোরারা, কোলে কোলে এবং পালে পালে তেরছা

ইহার দক্ষিণে শিশমহল, যে স্থানে বেগমেরা থাকিত, খেত-

ইহার দক্ষিণে দেওয়ান-থাস, খেত প্রস্তরের নির্মিত গৃহ।
সম্ব্রে নানা জাতীর প্রশোভান আছে। ঐ মহলের উত্তর্গিক
হইরা পাতকুরা মহল। তথা হইরা নিশদেওয়ান ই-থাস
মহলে উঠিরা বাইতে হর।

ইহার উত্তর পার্যে সধল বুরুজ, স্থবর্ণের ছব্রি ৷ এই স্থানে বারসা বেগমদিগের সমভ্যারে বয়ুনার সমেল করিভেন, বেভ

ফোরারা। এই স্থান অতি উত্তম।

প্রস্তারের স্থানির্বিত স্থল। এইরপ সকল মনোহর স্থান এমণ কুরিয়া উপর পর্যান্ত সর্বাত্র দেখিলাম। কেলার ভিতরে কৈবল গোলা, গুলি, হাতিঘার, কামার, বোম (ও) বলুক আছে। ছই বারে ছই কালা দিপারী গার্ভ আছে। পাঁচ বার ভেদ করিয়া প্রবেশ হইতে হয়, তাহাতে দিপারী পাহারা আছে।

শিশ-মহলের হার ক্ল থাকে, হারপালদিগকে কিছু দান করিলে, তাহারা হার মুক্ত করিয়া যে স্থানে যাহা আছে, সকল দেথাইয়া দেয়।

আগরার কেলা হইতে দেড় ক্রোশ দক্ষিণে বযুনার উপরে তালবিবির রোজা, বাহাতে সাজাহান বাদসাহের ও তালবিবির কবর আছে।

এই রোজার আখ্যানীসকলে শ্রুত আছেন । অতি উত্তম নির্মিত। ইহার ভায় ভবন আর কোধাও দেখা বায় না, কেবল

তালমংল

ক্ষাত্তস্থরে মহারাজ রণজিৎসিংহের গুরুদরবার। উত্তম উত্তম প্রতরে ঝাড় ফুল ফল
পাতা শিকড়, বাহার বেমত রঙ্গ, তাহা সেই রঙ্গের খোদিত পাথর
বসাইরা নির্মান পালিস করিরাছে, স্বর্ণের কাজ অনেক আছে।
তাজবিবির\* রোজার তাবৎ বাটী মর্ম্মরে নির্মিত, কবর-ছান
চারিতলা। নীচে ছই কবর আছে, তাহার উপর তলাতে ঐ ছই
কবরের আক্ষতি আছে। ঐ কবরের ঘর মধ্যস্থলে (ও)
চতুলার্থে বেষ্টিত ঘর সকল বক্র ভাবে স্থশোভিত হইরা
আছে। কব্র-ছানের ঘরের চতুলার্থের দেওরালে খেড
পাথরের উপরে লাল নীল পীত সব্রুর গোলাপী আশ্রানী
কির্মিলী ইত্যাদি নানারবের প্রস্তরে বুক্ লতা পাতা কল ফুল

931

খোদিত করিয়া, বাহার বে হানে যে বৃদ্ধ প্রাঞ্জন, সেই রজের পাধর ভাহার ভিতর বসাইরা মিলিত করিয়াছে। এমত বোধ হর বে, এক পাথরের ভিতরে নান্চ রক্ত-বিরক্ষ দেখা 'বাইতেছে। বে সমস্ত বুক্ষ ঝাড় খেত প্রস্তারে খোদিত করিয়া পালিস করিয়াছে. তাহা বৰ্ণনা হয় না। যে সংত্যাশ অৰ্থাৎ ভান্তর এই প্রস্তার খোদিত করিরা এই সকল কারিগরি করিরাছে, সে ব্যক্তি সামার ৰমুখ্য নছে,---বিশ্বকশ্বার ক্লাৰ তাহার বিভাবৃদ্ধি। এই কবর-স্থানের উপরে চতুম্পার্শে বেষ্টিত ঘর ওতিন তলা পর্যান্ত উঠিয়া গিয়াছে। কব্ৰ-স্থান ফাঁক আছে, তাহাতে দেউলাক্সতি শুৰুজ উঠিয়াছে। কববের উপর উচ্চ ভাগে একসা মোরগের ডিছ আছে। চতুর্থ তশার উপর এক হাওয়াধানা বুকুক আছে। ভাহার উপর হইতে বছর্র দৃষ্ট হয় এবং স্থশীতল স্থান। তথা হইতে ঐ মধ্যস্থানের শুমুজ দেখিলাম, তাহার উপর উঠিবার দিঁছি আছে। ক্রমে শুমুজ উপরে চারিতলা উঠিতে হয়। চারিতলা ৰাটীর উপরে গুরুজ, চারিতলা একতা হিসাবে আট মহল উচ্চ। এই সকল মর্ম্মরে তৈরার। এরপ পালিস বে, সর্প উঠিতে পারে না. মশা মাছি বসিলে পড়িয়া বার। এমন চিত্রণ, বে সকল ঝারারি কাটিরাছে, তাহার ভিতরে অসুলি দিয়া দেখিরাছি, সর্ব্বাত্ত সমান পালিশ। চারি কোণাতে বে চারি ক্বন্ধ আছে (তাহা) খেত পাথরের নির্শ্বিত, বুহুৎ (ও) উচ্চ, বেষ্ড টেলিপ্রাফ উচ্চ সেই মত, ভিতরে বর আছে। উপরে উঠিবার সোপান ক্রমে বেটিভ ইইয়া আছে। বাড়ী বহৎ, ইহার মধ্যে ছুল-ফলের নানাজাতির বৃক্ষগণ আছে।

। সমুখে বে পুলোভান আছে, তাহার লোভা কি কহিব।

মধ্যক্ষণে খেত প্রশ্নের চব্তরা, দীর্থ-প্রত্থে বোল বোল হাত।
ভালার চতুশার্থে বাঁতি, ব্থী, মলিকা, বেল, গোলাপ (ও) চামেলির
ভালাহনের প্রশোল্পার
ভালা । ইহার চতুর্দিকে গাঁলা, গুলদা, উদি,
মোরগা, (ও) ছলাল আছে। স্থানে স্থানে
মেহারাগ বাদ্ধিয়া তরুলতা, বুম্কালতা, রাধালতা, মালতী,
শ্রামালতা, কলমীলতা, লবকলতা (ও) মাধবীলতার স্থানাভিত
আছে। ইহা ভিন্ন কতলত প্রশাদি আছে, তাহার নাম
আনি না—বিলাতী ও পাহাড়িয়া। স্থারমা স্থাকর্ক উভানের
চতুপার্থের পরিসর প্রশ্নেরের বাঁধা পথ। তাহার ছই ধারে
ভালের লহর আছে। তাহা ভলপূর্ণ হইরা স্থানীতল আছে।
বে খেত পাধ্রের চৌতরা আছে, তাহাতে বিস্বার উদ্ধম স্থান।

প্লোভানের ছই পাবেঁ নানাজাতি ফলাদি ও মেওরার বৃন্ধানি।
আম, কণ্টকীফল, তাল, থেজুর, তেঁতুল, আমড়া, চাল্দা, নিম্ব,
বকুল, অথথ, বট, আমলকী, হরীতকী, বয়ড়া, সাঞ্ডদানা, তিথুর,
ভূর্জপত্র, চন্দন, রক্তচন্দন, নোড়, পেঁপে, পিচ, বাদাম, কিস্মিস্,
তালমহলের বৃন্ধনাটিন।
আখুরোট, ফল্সা, তুত, আতা, পিরারা,
কামরালা, সেও, ভাসপাতি, লাড়িঘ, এবং নের
—কাগজি, সাতি, কমলা, বাতাবি, নারলি, সম্ভরা, সরবতী,
গোঁড়া, কল্মা ইত্যাদি নানাজাতির লেবু সকল (ও) আলুরের গাছ
বাগ মধ্যে আছে। বকুল, গন্ধরাজ (ও) ঝাট ধারে ধারে, বাগের
ছই পার্বে কদলীবন, তাহার নিকট আনারসের গাছ, মধ্যে মধ্যে
চৌকাবলী কপি ইত্যাদি সব্জি সকল আছে। তাহার ধারে ধারে
লালপাতা ও সাদাপাতার গাছ আছে, মধ্যে মধ্যে কত ছানে
কত জাতির মনসা গাছ এবং বিলাতী ও পর্কতীর কল সুলের গাছ

বটেশর। ঐ বটেশরের নিকট এক চড়ার ধারে রাত্রে থাকা হয়। এই স্থানে অভিশর দক্ষার ভর, এজন্ত তাবৎ রাত্রি জাগ্রত থাকিরা কালহরণ করা হইল।

### ১৬ অগ্রহায়ণ, রবিবার, তৃতীয়া

প্রাতে চড়াতে প্রাতঃকৃত্য করিয়া বটেখরের ঘাটে আসিয়া প্রাতঃমান তর্পণাদি করিয়া বটেম্বর শিব ও গৌরীশঙ্করাদি দর্শন স্পর্শন পূজা ইত্যাহি করিয়া নগর দেখা হয়। বটেশ্বৰ-পিব বটেশ্বর সহর তুলা স্থান, ভাদভিয়া রাজার রাজ্য। রাজবাটী আছে এবং বটেশ্বর ও গৌরীশঙ্কর আর চতুর জ-নারায়ণের সেবা (ও) দেবালয় আছে। যমুনার ধারে এবং নগর মধ্যে ছই শত' দেবালয়ে শিবস্থাপন আছে। পুর্ব পুর্ব্ব রাজগণ ও ধনিগণ বমুনার ঘাট বান্ধাইরা উপরে শিব-মন্দির করিয়া শিব স্থাপন করিয়াছেন। কিন্তু দর্শনে বোধ হইল বে, সেবা-পুজার বরাদ্ধ কিছুই নাই, যেহেতু ফুল কি জলের চিহ্ন কিছুই মাই। এই বটেশবের নয় ক্রোশ পর্যান্ত সীমা। ইহাতে চলিশ হাজার ঘর, সর্ব জাতির বসতি, অনেক ধনাঢ্য ব্যক্তি আছে। নগর মধ্যে গোসাঞি, সন্ন্যাসী ও সাধুমোহন্তের আওড়া আছে। এন্তলে কার্ত্তিকী পৌর্ণমাসীতে মেলা হয়। অনেক দেশের মহুখ্য আসিয়া একত হয়, হস্তী ঘোটক উষ্ট গৰ্দভ • গরু সহস্র সহস্র বিক্রের হয় এবং আরে আরে মানাদেশীর বছসুলা ও অল সল্যের ক্রব্যাদি মেলাতে আইলে। চারি পাঁচ লক্ষ মহুয়োর মেলা হর। ইহা ভির জীবজভ পণ্ডপকাদি चाहि । बक्क्रमत्र मस्य धेर वर्षेचरत्रत्र सना ध्येशंन सना । नकन

দেশের জব্যাদি পাওরা বার। ছই মাহা পর্যন্ত মেলার দোকান সকল থাকে, কিন্ত সম্পূর্ণ মেলাতে মমুন্ত সকল এক মাহা গভারাত করে। জবপুর, কড়োরি, বিকানীর, হাতরাস, ভরতপুর (ও) গোরালিরর প্রদেশের রাজগণ এবং সন্ধার সকল মেলাতে আইসেন।

বটেখরের 8 কোশ অন্তরে এক চড়াতে লাগান করিয়া আহারাদি হয় ৢ পরে তিন কোশ আগিয়া বটেখরের সামিল বিক্রমপুর
থ্রাম । তথার ধেয়াবাট এবং তুনার আড়ত আছে । ঐ গ্রামের
উত্তরদিকে বে চড়া, তাহাত্তে সন্ধ্যার সমস্ত লাগান করিয়া রাজে
থাকা হয় ।

## ১৭ অগ্রহায়ণ, দোমবার, চতুর্থী

প্রাতে বিক্রমপুরের • চড়াতে প্রাতঃকৃত্য ও দ্বান-তর্পণাদি করিয়া কলপথে আটক্রোল পথ আসিয়া পারা, ভাদড়িরা-রাজার বাটী, এখান হইতে ডাঙ্গাপথে বটেপারা বর সাত ক্রোল। এই পারার আড়পারে চড়াতে রস্থই হইয়া আহারাদি করিয়া পরে নওগাঁ, ঐ রাজার কেরা। এখানে বাজার ইত্যাদি আছে, এজালোকের অনেক বসতি, অর্কারাদির জব্য সকল পাওয়া বায়। নগর স্থানে হালওয়াই ইত্যাদি দোকান সকল আছে। রাজসৈঞ্জদিগের খাকিবার স্থান। এই কেরাতে রাজা মহেল্রসিংহ সর্বলা থাকেন। গড়ের ভিতর রাজভ্বন আছে, ঘড়ি নহবৎ সময় সময় বাজিতভারে। এখান হইতে ভালপথে বটেখর দল ক্রোণ। এই রাজভ্বনে প্রিতির দর্শন। এই কেরার দক্ষিণ চড়াতে ধোপাবাটে বজুরা লাগান করিয়া রাজে কটী তৈয়ার

হইরা আহার হয়। এই ঘাটের নিকটে অল মধ্যে রাত্রে বড় আশ্চর্য দৃষ্ট হইল। অল মধ্যে কথন মন্ত্র্যাক্তি, কথন বৃহৎ রক্ষের ভার, কথন বা তালগাছাকৃতি হইরা অলের উপর দণ্ডারমান। আবার কলে কলে অলমহন করিরা অল-কলোলের শক্ষ হইরা অল ছই তিন হাত উদ্ধে উঠে। তাহার পর ছোট ডিলির ভার ভাসিরা কতক দূর পর্বান্ত আইসে। এই মত প্রার্থ দেড়প্রহর রাত্র পর্যন্ত ছিল, তাহার পর ধোপাতে বেরুপ শক্ষ করিরা পাটে কাপড় কাচে, সেই মত ব্যবহার করিতে লাগিল। এই মত রাত্রি ভৃতীর প্রহর পর্যন্ত করিয়া পরে আর কিছু উপত্রব হয় না। কিছু ইতিমধ্যে অল ভরানক কিছুই হয় নাই। আমরা রাত্রে ঐ হানে ছিলাম, প্রাতে সেই সকল হাত ভদারক করিয়া দেখিলাম কিছু চিক্ষ নাই।

### ১৮ অগ্রহায়ণ, মঙ্গলবার, পঞ্চমী

প্রাতে নওগাঁর চড়াতে প্রাতঃকৃত্য দান তর্পণাদি করির।
রওনা হইরা চারি কোশ আসিরা ঐ ভাদড়িরারাজ মহেক্স
শিংহের কেরা, ভবন ও গ্রাম, সূহর তুলা।
নানামত ক্রব্যাদি পাওয়া বার, নগর বাজার
নানাদেশীর ক্রব্যাদি আছে। শ্রীপবিহারীজির দর্শন। এই গ্রামের
নাম ঘাটকো। এখান হইতে জ্লগথে তিন ক্রোশ আসিরা এক
চড়াতে লাগান করিরা আহারাদি করা হয়। তাহার প্র বেলা
ইট্রা
ভাগে ব্লুরা বাঁধিরা নগর-শ্রমণার্থে উঠা

হইল। যে স্থানে বজরা ছিল, তথা হইতে সহর এক কোশ পথ। সহর মধ্যে অনেক ধনাঢ্যগণের বসতি আছে, উত্তম উত্তম ইট্রকালয়, মুষ্যাগ্য ত্রাণিজ্যে উপার্জ্জন করে। এই পুরাণ সহর, ইহাতে ছুই বাজার আছে। মিষ্টাল প্রাল চাল দাল আটা • মত চিনি চাবেনা তরি তরকারি পান স্থপারি তামাক ইত্যাদি খাম্মদ্রব্য এতদ্দেশে যাূহা আছে—তাহা সকলই পাওয়া যার। বস্তাদি ও তৈজ্বাদি এবং মনোহারী দ্রব্যাদির দোকান সকল আছে। সর্ব এক উত্তম পাওয়া যায়, দর ও ওজন ভাল, এক শত ছয় দিকা ওজন। এই পুরাণ দহর হইতে নৃতন সহর এক ক্রোণ, এ পীর্যন্ত সমান বসতি এবং দোকান সকল। এই স্থানে বাঙ্গালিবাব্দিগের বাসা, এখানে ইহাদের বিষয়কর্ম। ইটয়াতে ছাঁউনী ডাক্ঘর মাজিটর কালেকটরি কাছারি এবং ইঞ্জিনিয়ার-দপ্তর ইত্যাদি আছে. তাহাতে বান্ধালিবাবু সকল কর্মকারক আছেন। দশ বার জন বাঁহারা আছেন, অতি ভদ্ৰ স্বভাব। এই স্থানে শান্তিপুর-নিবাদী বৈকুণ্ঠ নাথ বন্দ্যোপাধ্যায় আছেন, বুন্দাবনে বন্ধুত্ব হয়। ইহা অতি উত্তম স্থান, গোলাগঞ্জ ভাল আছে, স্থানে স্থানে দেবালয় আছে, রাঞ্চার স্থাপিত। অতি স্থনির্মিত খেত প্রস্তরের হর-গৌরী-মূর্ত্তি আছেন, চমৎকার দর্শন। ছাউনী ও ডাক্ঘর সহর হইতে অর্দ্ধ ক্রোশ।

ডাকে প্রসন্নকুমারকে কলিকাতার চিঠি পাঠাই।

১৯ অগ্রহায়ণী, বুধবার, ষষ্ঠী

ইটয়া হইতে জলপথে দশ ক্রোশ (ও) ডাঙ্গা-পথে পাঁচ ক্রোশ

আদিরা চঙোলী প্রামের নিকট চড়াতে লাগান করিরা
আবোনী
প্রাম। তথার দেবী আছেন। উাহার এই
বজীতে, ছটের বেলা কহে, দেবীর নিকট বলি প্রালান হর।
ভালি চামারে মাংস আহার করে, জমিদার লোক, কি আর
আর ভন্তজাতি, বাহাদের পৈতা আছে, ভাহারা আহার
করে না। ঐ চড়া ছইডে বক্তরা ধ্রিরা রাজে দাল কটী ভরকারী
আহার হর।

#### ২০ প্লগ্রহায়ণ, বুহস্পতিবার, সপ্রমী

চড়াতে স্থান-তর্পণাদি করিয়া বন্ধরা খুলিয়া জলপথে ছয় জোশ আসিয়া ভরে গ্রামের নীচে চড়াতে লাগান করিয়া আহারাদির উদ্বোগ। ভরের রাজার বাটী ও কেলা আছে।

তথার বাজার আছে, বসুনা হইতে এক পোরা অস্তরে রাজতবন। ঐ ক্ষুদ্র চড়াতে আহারাদি করিয়া বেলা ছই প্রহর গতে রওনা হইরা, জলপথে নর ক্রোণ আদিরা ঐ রাজতবনের নিকট বসুনাতে চম্বল ননীতে যে স্থলে সক্ষম, তথার সন্ধার স্মর প্রছিরা, চড়াতে দাস্কটী আহার করা হইল।

### ২১ অগ্রহায়ণ, শুক্রবার, অস্ট্রমী

বঙ্গুনা চৰণ নদীতে সক্ষত্তে সানতপ্ৰাদি করিয়া প্রাতে বজরা পুলিরা জলপথে পাঁচ ক্রোশ আদিরা এক চড়াতে রস্ত্ ভূইরা আহার হয়। পরে পাল দিরা, পালের জোরে জনপথে আট ক্রোপ পথ আসিয়া, এক চড়াতে লাগান করিয়া রাজে কটা আহার করিয়া থাকা হয়।

# ২২ অগ্রহায়ণ, শনিবার, নবমী

প্রাতে প্রাতঃকৃত্যাদি সমাপন করিয়া তথা হইতে তিন কোণ অক্রা। এখানে বমুনাতে নৌকার পূল আছে, ইহাকে কুল্পী কহে। এখান হইতে অক্রা সহর ছই

আকরা ক্রেনি উত্তর দিকে। নৌকাতে বে কুল্পী
আর্থাৎ পূল ছিল, তাহা থোলাইরা পার হইরা কতক পথ আদিরা
ফল মধ্যে অত্নির পাথর থাকার, তথার নৌকাদি অতি সামধানে
আদিতে হয়ঃ জলের ভিতর ছই দিকে পাথর, মধ্যহলে জলের
পথ, ঐ হানের প্রথম মুখে ডালার উপর এক স্তম্ভ গাঁথা,
তাহাতে নিশান, শেষ মুখে বৃহৎ অথথ বৃহ্ন। এক পোরা
পথ এই মত পাথর, তাহার পর চারি ক্রোশ আদিরা কুল্ল কুল্ল
প্রাম। চড়াতে রহুই করিরা আহার হয়। পরে ছয় ক্রোশ
আদিরা চড়াতে লাগান করিরা দাল কুটী আলুর তরকারী আহার
করিয়া রাত্রে বজরা মধ্যে শ্রন।

### ২০ অগ্রহায়ণ, রবিবার, দশমী

প্রাতে চড়াতে প্রাভঃক্ত্যাদি করিরা প্রাভঃলান-ভর্শণান্তর গমন করিরা ছর ক্রোশ আদিরা নাট-আলের চড়াডে আহারাদি হয়। ইহার পশ্চিম পার ধর-ভালশী তলা প্রাম। এখান হইতে ডাঙ্গাপথে ভালশী তিল ক্রোণ। এই চড়া হইতে ছই প্রহর ছই খুটার সময় বজরা খুলিয়া কালপীর কেলার ঘাটে সন্ধার পুর্বেল লাগান হয়।

এ ঘাট হইতে উঠিয়া সহর ভ্রমণে গমন হয় এবং জ্ববাদি বাহা
লইবার প্রয়েজন, তাহা লওয়া, হয়। এথানে সকল জ্ববা
পাওয়া বায়, অনেক বসতি আছে, হানে হানে দেবালয়, কেলার
ঘাটে >৽৮ সিঁড়ি। এই সিঁড়ি ক্রমে তেরচা, ছয় বার ১তেরচা
ভাবে উঠিলে কেলা, তৃতীয় বারে শিবমন্দিয়, নারায়ণের
মন্দিয়, উত্তম পোক্তা, ঘাট। কেলা পুরাতন ভাল মজবুদ, থাই
অধিক, গহরর। কেলার চারি বুরুজ পাতিম দিকে, আর দক্ষিণ
দিকে দরজা ছিল। পশ্চিমের ঘার ক্রম আছে, দক্ষিণের ঘার মুক্ত
আছে। এ কেলাতে সৈত্তাদি কি যুদ্ধ-সর্জাম কিছুই এক্ষণে নাই।
কেলার পশ্চিম-দক্ষিণ দিকে সাহেবদিগের গারস্থান।

এই ঘাটের পূর্বাদিকে নৌকার পুল, এই পুল দিয়া গমনা-গমনের পথ। ঝাঁনী হইয়া যে রাস্তা আগরা গমনাগমনের হইয়াছে, ভাহার পুল নৌকাদি গমনাগমন সময়ে খুলিয়া দেয়।

এক্ষণে এখানে সাহেব কি বালালি কেই নাই, পূর্বে কল মাজিষ্টর কালেক্টর এবং সৈঞাধ্যক্ষদিগের কাছারি ছিল। সম্প্রতি গোয়ালিয়রের সামিল। জবলপুর ও ঝাঁসীতে সকল কাছারি ও পন্টন গিয়াছে। এখানে কেবল ডাক্ষর আছে, তাহাতে এক জন বালালি কেরাণী ছিল। সে ব্যক্তি দোষী হওয়াতে তৎপরিবর্ত্তে এক জন লালা আছে, আর এক জন বালালি তহণীলদার হইয়াছে।

তিন চারি বাজার আছে। তাহার মধ্যে বড় বংজার ও গণেশগঞ্চ প্রধান বাজার । হালওয়াই, বেণিয়া, পশারি এবং কাপড় ক্ষল (ও) ধারুয়ার ধোকান অনেক আছে। গণেশগঞ্চে অনেক মহাজন লোক আছে। ৩ড, চিনি, বাঁড, মিছরি (ও) থেকমার ফোরবার। কুঠাওয়াল ধনী মহাজনদিগের গদি। এথানে মিছরি, থেকয়া (৬) কছল উত্তম হয়। কালপীর জিরা ভাল। শাক, বেগুন, মূলা, শিম (ও) কচু সকল বাজারে পাওয়া যায়। যমুনার তীরে জেলেগণ মংস্থ লইয়া বিজ্ঞয় করিয়া বেড়াইতেছে। দধি, ছয়, মাধন, ধয়য়া, পেড়া, বয়ফি, মেঠাই, জিলাপি, প্রি, কচুরি, পকৌড়ি, সকল জব্য পাওয়া যায়। তামাক বে য়কম ইচছা, তাহা পাওয়া যায়। কাঠেয় একটুটান আছে। ন্তন সরাইয়েয় নিকট ভাল সরাই হয়ছে, তথায় দোকান এবং বাজার। ঐ য়ানে ডাকয়য় আর কোতোয়ালি।

নগর অমণ করিয়া আসিয়া কেলার দক্ষিণে সাহেবদিগের থাকিবার বাকালা সকল আছে। কৈলার ভিতরে একটা বড় ও গুইটা ছোট বাকালা আর ধাকনাধানা আছে। সম্প্রতি ইনডেন্টের কাছারি হইতেছে; এতক্ষেণীয় একজন লোক কর্মকারক।

 এই কেলার ঘাট আর বালাজির রাণাসাহেবের পুলের ঘাট বালাজির। ঐ স্থানে এ৺কালীদেবীর মুর্তি আছে। বালালি বাবু-দিগের স্থাপিত কালীবাড়ী সকল দেখিয়া ইজয়ায় আসিয়া ঘাটের চাতালে দলি কটা আহার হইল। এই ঘাটের পশ্চিম রাজঘাট, জেলেদিগের বসতি।

## ২৪ অগ্রহায়ুণ, সোমবার, একাদুশী

প্রাতে প্রাতঃক্তান্তির দান-তর্ণণাদি সমাপন করিরা উক্ত দাটে অবস্থিতি করিরা বাজার হইতে দ্রব্যাদি ক্রম করা হয় এবং সেই সাবকাশে আহারাদি। বেলা এক প্রহম থাকিতে বজরা খুলিরা বাইঘাটে নৌকার পুল খোলাইরা পার হইরা আন্দান ছই কোশ আদিরা এক চড়াতে লাগান হয়।

২৫ অগ্রহায়ণ, মঙ্গলবার, ছাদলী ৪।১১, ত্রাহম্পর্শ

চড়াতে প্রাতঃকৃত্যান্তর স্থান-তর্পণাদি করিয়া আন্দান্ত তিন ক্রোপ আসিয়া কোলহেদ প্রাম। এথানে ব্যুনার ধারে অনেক বসতি, ইউক'লর সকল আছে। পারঘাটা ক্রুল, বাধা ঘাট আছে। তথা হইতে চারি ক্রোপ আসিয়া বাবকণি গ্রামের আড়পার চড়াতে আহারাদি করিয়া জলপথে চারিক্রোপ, ডালাপথে এক পোরা মিছরিপুর ও দদরিয়া প্রামের চড়াতে সন্ধার সময় আসিয়া লাগান করা হইল।

## ২৬ অগ্রহায়ণ, বুধবার, চতুর্দ্দশী

মিছরিপুরের চড়াতে প্রাভঃকুত্যাদি পরে ন্নান-তর্পণাদি করির।
তথা হইতে চারি ক্রোশ জলপথে আসিরা গড়াত নামে এক প্রাম।
ইইকালর আছে এবং যমুনার চড়াতে এগার ইঞ্চি ইটের পাঁজা
দাজান আছে, এমত পাঁজা দেখি নাই। পরে ছর ক্রোশ আসিরা
এক চড়াতে লাগান করিরা আহারাদি হয়। তাহার পর একক্রোশ
আসিরা হামিরপুর, এখানে সাহেবেরা আছে, কালশীর স্তার
ব্যতি এবং সহর (ও) বাজার, সকল জ্বাাদির
দোকান আছে। স্থানে স্থানে শিবালর (ও)
ধনাচাগণের বসতি আছে।কালেক্টর, মাজিট্রেট (উ) জইন্ট-মাজিইরের কাছারি এবং ডাক্ষর আছে। ছই বাজার তাহাতে ওখাস্ক্রন্থ সকল পাওরা বার। এই হামিরপুরে ক্ষ্ণনগর-নিবাদী ৮রামজ্বর শিবামণির পৌত্র বিবল্পর বন্দ্যাপাধ্যারের সহিত সাক্ষাৎ হইল।

জাঁহার ভগিনীপতি বালিনিবাদী শ্রামাচরণ মুথোপাধার কালেক্টরের কেরাণী, পঞ্চাশ টাকা বেতন পান, তাঁহার বাসাতে আছেন। আমাদিগকে তাঁহার বাসার, লইরা ঘাইবার জন্ত অনেক বন্ধ করিলেন। আমারা বজরা পার করিরা চড়াতে রাখিলাম। হামির-পুর বান্দার সামিল। বুন্দেলগণ্ডকে বান্দা কহে। এখান হইতে দশ ক্রোশ। বুন্দেলগণ্ড উদ্ভম সহর, তুথার ক্যাম্প আছে। হামিরপুরের আড়পার ক্যাম্প কানপুরের সামিল। এখান হইতে কানপুর পোনের ক্রোশ পূর্ক।

### ২৭ অগ্রহায়ণ, রুহম্পতিবার, পৌর্ণমাসী

হামিরপুরের আড়পারের চড়াতে প্রাভ:কুত্যান্তর স্থান-তর্পণাদি
সমাপন করিরা পরে চারিকোশ আসিরা বেটুরা নামে এক প্রাম।
তাহাতে পারবাটা আছে, প্রামে বসতি অনেক আছে। তথা
হইতে ছই ক্রোশ আসিরা মোওই নামে এক প্রাম। এথানে
বমুনার ধারে অনেক জেলেদিগের বসতি, মৎস্ত ধরে, জাল সকল
ভ্রথাইতেছে। তথা হইতে এক ক্রোশ ভ্রোলী প্রাম। তাহার
(আড়) পার পড়ুরা। ঐ চড়াতে লাগান ক্রিয়া রহুই হইয়া আহারাদি করিরী জলপথে পাঁচক্রোশ আসিয়া বরাপ্রামের পশ্চিম কোরনি
প্রামের পূর্বা মধ্যে চড়া, ছই পার্মে বমুনা বহতা আছেন। মধ্যস্থলের চড়া দীর্মে প্রায়্ম অর্জ ক্রোশ, উত্তম

কোরণ আবাদ। তরদুদ হইরা ফদল জারিতেছে।

ঐ চড়াতে লাগালু করিয়া দাল ফটা ভাজা আহার করিয়া দকলে
বজরার আসিয়া কাহার নিজ্রা (ও) কাহারও নিজ্ঞাকর্বণ হইল।
কেবল দিপাহী পাহারা ছই জন আর ডলু চাক্তর বাহিত্রে

কারাৎ ছিল। তাহারা দেখিতে পাইল বে. চড়া হইতে তিনজন মন্ত্রন্ধ বন্ধরার দিকে আসিতেছে। কিঞ্চিৎ দূর থাকিতে প্যারীলাক সিংহ জিজ্ঞাসা করিল, "কে রাত্রে বঙ্গরার নিকট আসিতেছ ? অস্তবে যাও, নচেৎ তৃতীয় বারের পর গুলি ক্রিব, বুঝিয়া আইস।" এই কথা ভূনিয়া তাহারা অভা পথে পলাইবার ভার ক্ষতগমনে বাইতেছিল। সিপাহী চারি জন আর ডলু এই কথার আন্দোলন করিতেছে, সেই গোলে নিদ্রাভঙ্গ হইয়া জিজ্ঞাসা করাতে সিপাহিগণ সকল বুভান্ত কহিয়া কহিল, "দেখন আসিয়া, ঐ তাহারা ষাইতেছে।" আমরা বাহির হইয়া দেখিলাম, ছই ব্যক্তি কম্বল গাত্তে, এক ব্যক্তির সাদা কাপড় চড়ার দূর্বে আছে। কিন্তু তথায় একটা কোণ ছিল, তাহার পূর্ব কি পশ্চিম ঠিক দেখা হইল না। পরে আমরা ভিতরে আসিয়া কথোপকথন করিতিছি, এক দণ্ড পরে ঐ তিন ব্যক্তি উত্তরমুধ হইয়া গেল। দহাদিগের আশকায় তাবৎ বালি জাগ্রৎ থাকিতে হুইল এবং সিপাহী চারি জন বন্দক ও কডা-বিনে বারুদ ভরিয়া শুলি দিয়া তলোয়ার বন্দুক লইয়া. চারিজনে দুর্ভায়মান হট্যা প্রহরী রহিল। এই স্থানে অতিশয় দুরাভয় ছিল। ্ এখান হইতে প্রয়াগ পর্যান্ত ষমুনার ছই কুলে অতিশয় দস্থাভয়। হামিরপুরের পর প্রয়াগ পর্যান্ত চরখা-মরথার দেশ অর্থীৎ চরখা मत्रथा नाम इहे सन अवन मञ्जा हहेगा अहे দেশ লুঠিয়া লইত। ইহারা গ্রামস্থ সকল মনুষ্যকে সহযোগী করিয়াছিল, যেমত গলাতে জালিম-জুলিমের ভয় ছিল ফতুরার পথে। গরা যাইতে ভোজপুর ডাঙ্গাপথে পাকা-রাস্তাতে বেমত ভেলুরার পাহাড়, তজ্ঞপ এই স্থান ছিল। কিন্তু প্রায় আট বৎসর গত হইল, এক জন দিল্লীর মহাজন বছমূল্য দ্রব্যাদি তরি-

পথে বইয়া আসিতেছিল। এই দফ্যর সরহদ্ধাতে প্রহানতে দুম্যুগণ নাবিকদিগকে কহিল, "লা ভেড়ায় দেও।" নাবিকগণ এবং রক্ষকগণ ন্মোকা লাগান না করাতে যেমত সকল লোকের নৌকা দিবাতে দুটিয়া লয়, সেইমত গ্রাম শুদ্ধ সকলে আসিয়া ঐ মহা-करनत मुक्न स्वा वनश्रक्षक नहेशा (शन। ७९कान छाहामिशरक নিবারণ করিবার ক্ষমতা ছিল না। পরে মহাজ্বন মাজিষ্টরকে জানাইয়া তদ্বারা গবর্ণর-কোম্পিলৈ পর্যাস্ত জ্ঞাত করাইয়া ঐ দস্মাগণের সমূলে উৎপাটন ক্রবিয়াছে। তজ্ঞপ দৌরাস্মা এক্ষণে নাই। তথাচ সেই সকল বংশোদ্ভব যাহারা আছে, আপন আপন পিতৃধৰ্ম পরিত্যাগ করিতে পারে নাই, সময় পাইলেই দক্ষাবৃত্তি করে। এজন্ত এই করেক দিবদের পথ অতি সাবধানে থাকিতে হয়। ইহাদিগের সাহসের বিষয় বিবেচনা করিয়া দেখ বে. অভ পৌর্ণ-মাসীর রাজি, অতি নির্মাণ চন্দ্র, চড়ার উপরে লাগান বৃক্ষাদি কি ঘর্ষার ঝোপঝাপ কিছুমাত্র নাই, এক ক্রোশ পর্যান্ত বন্ধরার ছাতের উপর হইতে দেখা বাইতেছে, চারি জ্বন সিপাহী বন্দক: তলোয়ার লইয়া প্রহরী আছে, বার জন দাঁড়ি মাজি বমদতের স্থায়, এক পর্বাতীয় কুরুরী আছে, সিংহের স্থায় প্রতাপ। তাহাতেও তিন জনাতে চৌৰ্যাকৰ্মে আসিয়াছিল। এই কোম্পানি বাহা-ছরের রাজ্যে এখনও এত সাহসী দক্ষ্য আছে।

২৮ অগ্রহায়ণ, শুক্রবার, প্রতিপদ

বাল্ল থানে চড়াতে প্রাভঃকৃত্য সমাপন করিরা স্থান-ভর্পণাত্তর বজরা খুলিরা স্থাসিতে চড়াতে এমভ বন্ধ হইল বে, বেলা ছয় লগু পর্যাস্ত চালাইতে পারে না, পরে চড়া

হইতে নামাইরা পাঁচ ক্রোশ আসিয়া মুড়ওরি নামে এক গ্রাম। ইতোমধ্যে মধ্যে গ্রাম আছে, তাহার পর ছই ক্রোশ আদিয়া প্রদন গ্রামের আড়পার চড়াতে ধরিয়া প্রচন-প্রাম রস্থইরের উদ্বোগ। ঐ চড়াতে বড় বড় চারিটা সারস চরিতেছে। এক স্থানে সারসের বাচ্চা সকল চরিতেছে, ধরিতে পারা বায় না, উড়িয়া বায়। বমুনাতে স্থানে श्रात्न मात्रम, मानिक स्वांज, मामूर्क स्थान, वानिश्म, थड्शम, ठक-ৰাক, চক্ৰবাকী, বক, চিল, গাংচিল, পানিকোড়ী, সরাল ইত্যাদি নানাজাতি জলচর পক্ষিগণ, সকল পক্ষী চিনি না, জোর नाम दृहर शकी दृहर मराध्यत हक्क्राल नथ निया छेठीहेबा উড়িরা যার, এমত শত সহত্র পক্ষী জলচারণ করিতেছে। মকর, হড়েল, কুন্তীর, কছেপ প্রভৃতি জলজন্ত অধিক চড়ার কোলে আছে। শুশুক কথনও কথনও দেখা বায়। গলাতে বত ৩৩ক হালর আহে, বমুনাতে এত জলজত্ত অধিক নাই। ক্ষুনার চুই কুলে ব্রজ্জুমির মধ্যে কচ্ছপ, মুগ (ও) ময়ুর, অধিক্স কচ্চপের তাদে স্থান করিতে পারে না। কত স্থানে জীবং-মান মহবাকে ধরিয়া আহার করিয়াছে। এই চডাতে অলাদি পাক হটলে পর সকলে আহার করিয়া ছুই ক্রোণ আসিয়া এক প্রামের চড়াতে দাগান করিয়া রাত্রে অবস্থিতি হইল।

### ২৯ অগ্রহায়ণ, শনিবার, দ্বিতীয়া

্চড়াতে প্রাতঃকৃত্য সমাপনান্তর বান-তর্পণ সমাপন্ককরির। বজরার রওনা হইরা এক ক্রোশ আদিরা চেরাতারা। নৌকাডে পুল বাদ্ধিতেছে, ছই মুখে মৌকা ব্যাইরাছে, মধ্যকৃল ধালি

আছে। ঐ খাল হইয়া বজরা বাহিরে আইল। এই পুল পার ছুইয়া কানপুর যাইবার পথ। পুলের পরে চেলাতারা সহর। বাস্তবিক চেল্লাভারা ছই গ্রামু। যমুনার নিকট মোগলপুর নামে এক গ্রাম আছে, তাহাতে হই শত ঘর বসতি, আহীর আর মুসলমান অধিক আছে। সকলে গৃহস্থ, মহিষ গরু ঘোড়া আছে। আর-শাকের ক্লিষ্ট কেহ নহে। ঐ গ্রামের এক পোয়া অন্তরে চেল্লার বাজার **ও** বসতি, গণ্ডগ্রাম । নগংকর ভার উত্তম বাজার, মহাজন লোক व्यत्नक व्याष्ट्र। इटे शार्द्य शिन ও निकान, मरश शर्थ। গদিয়ানদিগের ইষ্টকালয়, মহাজনদিগের গোলদারি-দোকান আর হালওয়াই, বেণিয়া ও আর আর দোকান সকল খোলার এবং ঘাসের। \*শাক্সব্জি ভরকারীর দোকান বাজারের উত্তরদিকে। সরাইয়ের নিকট তামাকওয়ালার দোকান। ষ্টকের ধারে স্থােভিত বাজার, ধনাঢাগণের বসতি আছে। 65লা হইতে তারাগ্রাম এক ক্রোশ অন্তর। চেলার বাজার ভ্রমণ করিয়া পরে ছয় ক্রোশ আসিয়া জোহারপুরের উপর চড়াতে আহারাদি করিয়া পরে এক ক্রোশ আসিয়া ধোরপুর গ্রাম, পার্ঘাট আছে। এই গ্রামে অনেক বসতি, ষমুনা হইতে আবি প্রক্তের ফায় উচ্চ, তাহার উপরে বসতি। যমুনার তীরে যাহাদের ঘর তাহাদের কত বড় সাহস তাহা অকথা। এই আড়ড়ি পর্বততুলা উচ্চ, তাহাতে ভালন হইয়া কাহার অংশ্বেক, কাহার সিকি, কাহার কিছু যমুনাগত হইয়াছে, তথাচ ঐ স্থানে বালক-বালিকা বৃদ্ধ-অন্ধ গোবৎস লইয়া ক্রীড়া করিতেছে। তথা হইতে তিন ক্রোশ আসিয়া ফরিগ্রাম, পার- ষাট (৩) চৌকি আছে। তথা হইতে গাভুটাগ্রাম ছই ক্লোপ, ঐ

গালের মৃত্তিকার পাত্র বড় শিকিম,
কুমারের বসতি, অনেক আছে, মান্ত অন্ত
সকল জাতি আছে। বছৎ গ্রাম, তিন শত ঘরের কম বসতি
নহে। গো, মহিব, ছাগ অনেক আছে। এতদ্দেশে কুবিকর্ম
সকলেই করিতেছে। যম্নার চড়া সকলে উত্তম আবাদ হইতেছে, কুবিকর্মে আবাল-বৃদ্ধ-র্বা ত্রীপুরুষ সকলেই শ্রম
করিতেছে। এই গ্রামের প্রাস্তে আঞ্পার চড়াতে লাগান
করিয়া রাত্রে দাল রুটী ভালা আহার। রাত্রে ভল্ল চাকরকে
মণিকুকুরী দস্তাঘাত করে।

## ১ পোষ, রবিবার, ভৃতীয়া

লভেটা গ্রামের চড়াতে প্রাভঃরত্য, স্বান-তর্পণাদি সমাপন করিয়া বছরা খুলিয়া তিন ক্রোশ আসিয়া হটমপুর নামে এক গ্রাম। এইয়ানে ধোপা সকল কাপড় কাচিতেছে। তথা হইতে জরলি গ্রাম, রাজা বিশ্বনাথ সিংহের গুরু লারা (য়াপিত)। এই গ্রামে অনেক ব্রাহ্মণের বসতি ও দেবালয় আছে, প্রীপ্রীধ রাধাক্রফ-মুর্ত্তি এবং শিবালয়াদি স্থানে স্থানে আছে। ব্রহ্মকুগুলামে এক ঘাট আছে, তথায় ব্রাহ্মণগণ পাণ্ডা বলিয়া তিকা করেন। পরে ঐ প্রামের আড়পার চড়াতে লাগান করিয়া ভবায় চোরাবালি জন্ম না থাকিয়া পরে এক ক্রোশ আসিয়া, মারথা গ্রামের চড়াতে আহারাদি করিয়া আসিতে মইরখার লাগাও গ্রাম চরধা। এই চরধা-মরধার দেশ। ইহায়া দিবসে পুরিয়া লয়, পুর্ব্বে অভিশর (দৌরায়্য) ছিল, তাহার শাসন হইয়া

প্রামকে প্রাম বিনাশ করিষাছে এবং কোম্পানি বাহাছর চৌকি

চরখা-মারখা-প্রাম

বংসর প্রাবণ মাহাতে এই প্রামে দিবাতে

এক জন বালালির নৌকাসমেত তাবৎ দ্রব্য লুঠিয়া লইয়া

যায়। ঐ ব্যক্তি থানাতে জানাইল এবং ঐ স্থানে এক
সাহেব বজরাতে পৌছিয়া সকল বুভাস্ত ভনিয়া আপন
তরক্ষের এক জনাকে পাঠাইয়া দিয়া থানা ইইতে লোক
আনাইয়া ঐ ব্যক্তির তাবং দ্রব্য গ্রাম ইইতে দেওয়াইয়া
পান্সী আপন সমভ্যারে আগরা পর্যন্ত লইয়া গেল। এ প্রামে
এত দক্ষাভয়। তথা ইইতে ছই ক্রোশ আসিয়া সর্থিও গ্রাম,
অনেক ছোটলোকের বসতি। তাহার পর জলপথে ছই ক্রোশ
আসিয়া প্রয়য় চরথা গ্রামের উত্তরদিকে চড়াতে লাগান করিয়া
দাল কটী পাপর আহার করিয়া তাবং রাত্র জাগ্রং থাকিয়া
রাত্রি শেষ করা ইইল।

# ২ পৌষ, দোমবার, চতুর্থী

চরধার চড়াতে প্রাতঃক্তা স্বানকর্মানি করিয়া প্রায় হুই দণ্ড
রাত্রি থাকিতেঁ রওনা ইইরা জলপথে ছয় ক্রোশ আসিরা ক্রঞপুরের
নিকট চড়াতে আহারানি করিয়া, তথা ইইতে এক পোয়া আনাজ
আসিয়া ক্রঞ্গড়ের ঘাট। ফাঠের আমনানী,
সংক্রাক্র ঘাট
সংক্রাক্র মুর্তি করিয়া রাধিয়াছে। প্রামে আনেক
বসতি, বাবসানার মহ্মা আছে। এখান ইইতে ভালাপথে রাজাপ্র
আট ক্রোশ। তথা ইইতে এক ক্রোশ আসিয়া প্রভ্যানামে প্রাম.

এক ক্রোশ লকনপুরের প্রাস্তে চড়াতে লাগান করিয়া রাজে ফটী ভরকারি আহার হয়।

## ৩ পৌষ, মঙ্গলবার, পঞ্চমী

লকনপ্রের চড়াতে প্রাতঃক্বতান্তর লান-তর্পণাদি সমাপন করিয়া তথা হইতে এক ক্রোশ আসিয়া পূর্ব্ব পার কল্যাণপুর, পারবাট। পরে হই ক্রোশ আসিয়া মই গ্রাম, অনেক বসতি আছে। পরে অর্ককোশ আসিয়া এক উড়াতে আহারাদি করিয়া তথা হইতে তিন ক্রোশ আসিয়া রাক্ষাপুর। এথানে গঞা, বাকার,

দোকান, রান্তার ছই পাশে আছে। বাজারে 'রাজাপর তরকারি বার্ত্তাকু কচ ওল বৈকালে পাওয়া বার। পশারির দোকান কঁমবেশ একশত, সকল মসলাদি আছে। আর আর মুদিধানার দোকান এক লাগাও পঁচিশ হইবে। চাউল যাহা আছে কুদের ক্সায়। এক দোকানে পোনের সের চাউল পাওয়া গেল। আটা যাহা বিক্রম হইতেছে (তাহা) মেলাও, গুড় কাল রক্ষের। দোকানে আটা দাল ছাতু মুড়ি ছোলাভাজা সকলের আছে। কাছার কাহার দোকানে সিদ্ধ চাউল আছে। ছাল্ওয়াইদিগের मिकान प्रकृत आहि, सुवामि উত্তम नहर, मिश्रिक कमाकात, থাইবার শ্রদ্ধা কি হইবে ? পানের শ তুই পয়সা, তামাকু টাকাতে আট সের, কাঠের দোকান নাই। পাহাড় হইতে কাঠরিয়াগণ বোঝা লইরা আইদে, সময় মত থাকিলে পাওয়া বার। তুলা थतिराम् व वर विकास न भिष्यांना महासन थात्र हात्रिम्छ न्याह । তুলার কারবারের গঞ্জ। প্রতি ঘরে তুলার কর্মা, এক এক ঘরে ছই তিন চারি পাঁচ কাকুই (?) ফিরিতেছে। ইহারা সকলে চারী নহে,

মহাজনেরা কাপাদ ধরিত্ব করিরা তুলা তৈরার করিরা লয়, ইহা-দিগের মজুরি কাপাদের বে বীজ বাহির হয় তাহাই দিতে হয়। ইহার নাম ধ্বনরা, গরুর ধোুরাক হয়, টাকাতে দেড় মণ বিক্রয় হয়। তুলার কারবারের মহাজন মকল থাকাতে গোলাগঞ্জ আছে।

এখন হইতে চিত্রক্টের ঘাট দশ ক্রোশু। চিত্রক্টের রাম-ঘাটের কামতানাথ নামে একজনু পাণ্ডা এই স্থানে দেখা করিয়া চিত্রক্টের রজ: প্রসাদ দিয়া যায়।

এখান হইতে রিমা তিশি কোশ দক্ষিণ, রিমার রাজার রাজা। উত্তম রাজা, অতি ধার্মিক। এই রাজো পান জলো। অঞ্চ রাজাপুরের আডুপারে হিতি হইল ।

# 8 (शीय, वृधवात, यकी

রাজাপুরের আড়পারে প্রাতঃকৃত্য সমাপনান্তর পরে পাঁচ
ক্রোশ আসিয়া কামতাপুরের চড়াতে আহারাদি করিয়া, পরে ছই
ক্রোশ আসিয়া বমুনার কিনারাতে এক পাহাড়। তাহাতে এক
উত্তম বাটী আছে, সাহেব লোক থাকিবার প্রাম আছে। তাহার
পর রাওড় নামে প্রাম। ঐ পাহাড় অবধি বমুনার জল-মধ্যে
অতিশর পাথর আছে, নৌকাদি অনেক সাবধানে চালাইতে হয়।
বিশেষতঃ বর্ধা-সময়ে তৎকালে জলের বেগ অতিশয় এবং পাথর
সকল জলে ড্বিয়া অদৃশ্র হয়। রাওড় হইতে ছই ক্রোশ জলপথে
আসিয়া নকট প্রামে চড়াতে লাগান করিয়া রাত্রে ক্রটী আহার
হয়। এই গ্রামেরু চৌকিদার মমুনার তীরে নৌকাতে চৌকিপাহারা তাবৎ রাজ দেয়। এখানে ভাল বন্দোবস্ত আছে, এখান
হইতে এলাহাবাদ ডাকাপথে বারক্রোশ।

### ৫ পৌষ, বুহস্পতিবার, সপ্তমী

নকটের চড়াতে প্রাভঃক্তান্তর মান-তর্শাদি ঋরিয়া পাথরের জন্ত উত্তর-পার দিয়া না আসিয়া দক্ষিণ-পার হইয়া তিন ক্রোশ আসিয়া পরদোগ্রা। এই অবধি জল মধ্যে পাথর। ইহার পর ছই ক্রোশ আসিয়া প্রতাগপুর। এই চড়াতে আহািয়াদি

ধতাপপ্র করিয়া এব ক্রোশ আসিয়া উত্তর-পার সিমরি,
দক্ষিণপার গরহাট্রা। তাহার পর এক ক্রোশ
আসিয়া সঙ্গা নামে গ্রাম, পারঘাট। তথা হইতে এক ক্রোশ
আসিয়া নশীপুর ও মরনা এবং সেরগড়—তিন গ্রাম পরে পরে
আইে। এই স্থানে সন্ধ্যার সময় লাগান হইয়া বুটের দাল ছোকা
কটী আহার হয়।

# ৬ পৌষ, শুক্রবার, অফমী

82.

সেরগড়ের চড়াতে প্রতিঃক্তাদি করিরা চারি ক্রোশ আসিয়া
বমুনার জনের মধ্যস্থলে এক পর্কত। তাহার উপরে একটা
হাওয়াধানার স্তার ছিল্লি আছে। আর এক বৃক্ষ পর্কত উপরে
ক্রশীতল ছারা করিয়া আছে। নিম হইতে উচ্চ পর্যন্ত সোণানাবদ্ধ
আছে, তল্পধ্যে এক সাধু তপস্তা করিতেছেন, ঐ পর্কতকে আলাজ্ঞালা-সাহেবের সাহেবের হাওয়াধানা কহে। তাহার অর্কহাওয়াধানা ক্রোশ পরে উত্তর পার পালপুর, দক্ষিশ-পার
তারাপুর। তাহার তিন ক্রোশ আসিয়া মহক্বতগঞ্জের চড়াতে
লাগান করিয়া আহারাদি করা হয়। পরে ছই ক্রোক আসিয়া
এলাহাবাদে নৌকাতে বে য়মুনার পুল আছে, ঐ পুলের ঘাটের
নাম বেডুয়া ঘাট, ঐ ঘাটের উপর বালার আছে। পুলের

কুলপী বেলা ছই প্রহার সময় খুলিবার হকুম আছে, তাজি সমুদ্রে কাহার বিশেব প্রােজন হইলে কুলপী থালা হইরা গতারাত করে। প্রতি বার থানি পানুদী এক টাকা, সওয়ারি কি বােঝাই হইলে ছই টাকা, হরজের মর্থাৎ ক্তিপুরণার্থে দাখিল করিলে মনিয়ম. সমরে পুলের কুলপী খুলিয়া দেয়। এজয়্ম পুল পার না হইয়া পুর্কার মওয়া প্রামের চড়াতে লাগান করিয়া রাতে দাল করী কপি আহার হয়। এই বেডুয়া ঘাটের পুল পার হইয়া রিমাও জববলপুর গমনাগ্রমনের পথ।

## ৭ পৌষ, শনিবার, নবমী ়

মওরার চঁড়াতে প্রাতঃক্ত্যান্তর বমুনার স্নান-তর্পণ করিছা কুল্পী না খুলা জন্ত ঐ স্থানে আহারাদি করিছা বেলা ছই প্রহর গতে পুলের কুল্পী খুলিলে পার হইয়া বেণীঘাটের পার্ষে কেলার দক্ষিণে বজরা রাথিয়া সহর ভ্রমণ।

. এলাহাবাদ উত্তম সহর, পাঁচকোশী সহর মধ্যে পাঁচটা প্রধান বান্ধার। দারাগঞ্জ সহর যথার এক্ষণে আি৺বেণীমাধ্বের মন্দির, কর্ণেলগঞ্জ যথার ভর্মান্ধ মূনির আনশ্রম, কিটগঞ্জ—কিট সাহেব এই

এলাহাবাদ গঞ্জ বদায়, মৃঠিগঞ্জ এই স্থানে গোলদার মহা-জনদিগের দোকান, কটরা বাজার, ছাউনীতে

বড়বালার চক। এই স্থানে কোডোয়ালি সহরের প্রধান বালার। এই বালারের পশ্চিম এক পোয়া কুডগল্পের বালার। এই স্থানে বাদসাহী সহরপানার বড় ফটক এবং সরাই। ইহা ভিন্ন বেলী-কিনারার বালার, আর উত্তর্জিকে বেডুয়া ঘাটের বালার আর স্থানে স্থানে বালার আহে।

(00)

প্রদাগতীরে যোল শত ঘর প্রদাগী পাণ্ডার বদতি। কিটগঞ্জ, আহিরাপুর, দারাগঞ্জ, মোসেমগঞ্জ, মীরাপুর, আতরসিয়া ও নৈবক্তী এই সাত স্থানে যে সকল প্রদাগী আছে, তাহাই যোল শত বর, তত্তির ঝুলী ও আর আর গ্রামে আছে।

প্রথাণী সকল অধিক ধনবান্। ইহাদের বড় বড় রাজা রাজড়া যজমান। এমত এক এক রাজা লানার্থে আইদেন, এক লক্ষ মুদ্রা দান করেন। ইহাতেই প্রয়াণীদিগের এত ধূন। ইহাদের মধ্যে ছঃখীও আছে।

প্রয়াগ তীর্থরাক্ষ। এ স্থানে বৃক্তবেণী, গঙ্গা-বমুনার সক্ষম, সরস্থতী অন্তঃসলিলা। প্রীপ্রেণীমাধব প্রধান দেবু। এ তীর্থে প্রবেশ মাত্র মুগুন এবং তীর্থেপিবাস। পর দিবস তীর্থ-প্রাপ্ত প্রাদ্ধ। এ স্থলে মুখ্যকর্ম মুগুন, সঙ্গম-সান, তীর্থ-প্রাদ্ধ, অক্ষরবট, বেণীমাধব, ভরহাক (ও) সোমেশ্বর শিব দর্শন।

এই প্রয়াগের নাম এলাহাবাদ—আকবর বাদসাহের সময়ে হইয়াছে। উক্ত বাদসাহ কাম্য-কৃপের উপরে যমুনার তীরে ক্রিবেণী-সঙ্গমে কেলা স্থাপিত করিয়াছেন। অক্ষরতা কেলার ভিতরে, তাহার বেষ্টিত ঘর। এলাহাবাদের কেলার যেমত গাঁথনী এবং বুকল্প সকল মছবুদ এমত কৈলা প্রায় দেখা যায় না। কেলা মধ্যে বাদসাহের শিশ-মহল, আয়না-মহল, লাল-মহল, দেওয়ান-আম খাস সকল (ও) কাছারির স্থান সকল ছিল। এক্ষণে ঐ স্থানে সৈভ্যাধ্যক্ষ সাহেবগণ আছে এবং অভ্যান্ত দেশের রাজাদিগের রাজ্য ভূর করিয়া বিপক্ষরাজ্যপকে এই স্থানে বন্দী রাধে। কেলা মধ্যে এক্ষণে সৈভ্য থাকে না, প্রহরিগণ আছে। মেগাজিন ভোপধানা শেলেখানা

কেলার ভিতর, তিহারা কাড়। গোলা গুলি স্তৃপাকার আনছে, চত্সার্থের থাই বড় গভীর, পশ্চিম দিকে প্রবেশের হার, সমুথে ও দক্ষিণদিকে প্যারেডের মাঠ।

দৈল্পণ ছাউনীতে থাকে। ছাউনী সহরের পশ্চিমদিকে, তথার সাহেবলিগের বাঙ্গালা আছে। কেল্লা হইতে হুই ক্রোশ পশ্চিম, তথার কটরা বাঙ্গার, এ বাঙ্গারে, সাহেবদিগের আহার ব্যবহারের জ্বাদি সকল আছে।

এখানে জ্বন্ধ, মাজিইই, কালেক্টর, কমিশনর, মুনসেফ, সদর-আমিন, সদর-আলা, নিমক, আবগারি, পরমিট(ও) পঞ্চরার কাছারি সকল ছই পারে আছে; এজন্ত অনেক বাহেব ও অনেক বাঙ্গালিগণ আছেন। ডাক্তার সাহেব হাসপাতালে আছে, বাঙ্গালি ডাক্তার মুঠিগঞ্জে আছে। এখানে একণে তারাচাদ বন্দ্যোপাধ্যায় আছেন, তিনি বর্দ্ধানের নিক্টবর্তা গ্রামবাসী।

বে সমস্ত বাজার স্থানে স্থানে আছে, তাহাতে উত্তম উত্তম ক্রম্থ সকল পাওরা বার। সহরের সকল স্থানেই উত্তম রাস্তা, রাস্তার হুই পার্মে দোকান সকল ক্রয়াদিতে স্থাভিত, শৃত্মণা মতে দোকান সকল স্থাপিত আছে। বড় বাজারের চকে উত্তম উত্তম ক্রম্থা সকল পাওরা বার, সকল বাজারের শ্রেষ্ঠ বাজার।

পাঁচকোশী সহর মধ্যে কমবেশী এক লক্ষ্মর হিন্দু-মুস্লমানের বাস, অধিক ধনী ব্যক্তির বাস। পিরুমল নামে একজন কুঠীওয়ালা আছে। ইহার কুঠী সকল সহরে আছে, এখানে বাসন্থান, দারাগঞ্জে বাটা। • উত্তম বাড়া, মজবুত পোক্তা এমত নির্ম্মিত করিয়াছে বে, বছকাল পর্যন্ত থাকিবে। আর সহরের প্রায় সকল বাড়ী ঘর পাকা। আধ্বেনীমাধ্বের কুপাতে সহরে সকলে স্থথী আছে।

এখানে ৮গলা-বম্নার হুই স্থানে নৌকার হুই পূল আছে, এক পূল বম্নাতে বেডুয়া ঘাটে, আর এক পূল গলাতে দারাগঞ্জের ঘাটে। এই পূল হইরা কাশী ইত্যাদি দেশে গমনের পথ। পূল দিরা গাড়ী, ঘোড়া, হাতী, উট, গো, মহিষ ইত্যাদি গমনাগমন করে। ডাকের গাড়ী এই পথে গতায়াত করে।

প্ররাগতীর্থ তীর্থরাজ। এখানে কামাকৃপে যে যে কামনা করিয়া প্রোণ পরিত্যাগ করিবে, তাহার কামনা সিত্ত হইবে এবং জাতিশ্বর হইয়া সেই ব্যক্তির পূর্ব জন্মের সকল কর্ম শ্বরণ

ক্ষাকৃণ হইবে। প্রথাপে ড্বিরা মরিলে কাহারও
অপবাত হইবে না। কেবল বিষপানে (ও)
গলরজ্জুতে প্রাণ পরিত্যাগ করিলে অপমৃত্যু হইবে। ইহার
বিস্তারিত বিবরণ প্রয়াগ-মাহায়্যে আছে। প্রয়াগ-মাহায্য বার
অধ্যার। তাহার এক স্থানে ষষ্ঠ অধ্যারে রত্মমালার ইতিহাসে লিখিত
আছে, যে ব্যক্তি একবার প্রয়াগ-তীর্থে কামনা করিয়া প্রাণ ত্যাগ
অথ্বা স্থান করিবে, সে জন্ম জন্ম প্রয়াগ তীর্থ প্রাপ্ত ইইবে।

মুকুন্দ এক্ষচারী এই তীর্থের পূর্ব্ব পারে সোনেখর দিবের নিকট তপস্থা করিতেন। তাঁহার বীরতক্র নামে এক চেলা ছিল। এক্ষচারী কঠোর তপস্থাতে পরমেখর প্রাপ্ত হইবার জন্ত যুক্ত করিয়া ছিলেন। ভগবদ্মারা—তাঁহার ঐখর্য্য ভোগের মনন হওয়াতে তাঁহার প্রতি পরমেখরের আদেশ হইল বে, 'তোমাকে জন্মগ্রহণ করিয়া ঐখর্য্যভোগ করিতে হইবে।' তাহাতে ব্রহ্মচারী হুংথিত হইয়া মুকুন্দ ব্রক্ষচারী ও কহিলেন, "এত কঠোর তপুলা করিয়া পুনর্ব্বার অক্ষমনট জন্মগ্রহণ করিতে হইবে ? যদি আমাকে ঐখর্য্য ভোগ জন্ত পুনর্ব্বার আদিতে হর, তবে আমার চেলার কি হইবে ?"

তাহাতে আদেশ হইল, 'উভয়ে জন্ম-স্থাভিলায় পূৰ্ণ করিয়া আসিবে।' এই আদেশ রহিল। এখানে ব্রহ্মচারীর চেলা ব্রহ্মচারীকে প্রতি দিবদ ংবমত ছগ্ন পান ক্লরান, সেই মত আহরণ করিয়া ছিলেন, কি**ল্ক** ছাঁকা হয় নাই। ঐ হগ্ন পান করা হইলে পরে ত্রহ্মচারী যোগবলে জানিতে পারিষী বিবেচনা করিলেন যে. এ দেহ রুথা হইল। যবন-जूना कर्म इहेब्राएक, यदन शृंदर अन्य नहें एक इहेरत। अहे नकन ভাবিয়া গুরুশিয়া কামাকুপে আসিয়া ব্রহ্মচারী দিল্লীশ্বর ও চেলা মন্ত্রী কামনা করিষ্ক কুপে প্রাণ পরিত্যাগ করিষা দিল্লীতে আকবর সাহা আর বীরবল (রূপে) ছই জনে জন্মগ্রহণ করিলেন। দিলীখর আর বীরবলের রাজ্য ভোগ করিতে করিতে পূর্ব্ধ রুত্তান্ত শ্বরণ হইল। দিল্লীখর মন্ত্রিপহিত প্রয়াগ-তীর্থে পূর্ব্ব তপস্তা-স্থানে আসিয়া বিবেচনা করিলেন, "এই কাম্যকুপে কামনা করিয়া আমি দিল্লীখর হইরাছি, ভবে যে কেছ কামনা করিয়া প্রাণ পরিত্যাগ করিবে, সেই ব্যক্তি এই পদ প্রাপ্ত হইবে। এজন্ত এ কৃপ রাধা কর্ত্তব্য নহে। বিশেষভঃ আমার বোগ ভঙ্গ হইয়াছে। ইহার পর আর কেহ তপস্তাদি করিবে না, সকলেই কাম্যকূপে ঝম্প দিবেক।" এই সকল বিবেচনা করিয়া দ্বির করিলেন যে, কাম্যকৃপ কলিবুগ জ্বন্ত রাথা কর্ত্তব্য নছে। পরে কাম্যুকুপে দীদা গলাইয়া ঢালিয়া দিয়া তাহার উপরে কেলা করিলেন। তাহার চিহ্ন অন্তাবধি এই পাওয়া বাইতেছে বে. কাম্যকুপের তীরে অক্ষরবট। ঐ বটরুক অস্থাবধি জীবৎমান আছে, তাহার উপরে গাঁথিয়া ঘর করিয়াছে। (গাছ) রৌদ্র বাতাস কি বৃষ্টি কিছু পায় না, তথাচ প্রতি বংসর চারি পাঁচ গাড়ী ভাল কাটিরা ফেলিতেটে। কেলার প্রায় কুড়ি হাত নিয়ে, অন্ধকার ভূমি মধ্যে বট বৃক্ষ আছে, বিনা আলোয় তথায় যাইবার ক্ষমতা হয় না। ঐ স্থানে ছই বৃক্ষ। এক বৃক্ষ্ সমূপে আছে, কিঞ্চিৎ অন্ধকার ঘর মধ্যে প্রবিষ্ট হইলেই দেখা যায়। কিন্তু ঐ বট আগলু অক্ষয়বট নহে। আগল অক্ষয়বট তাহার পর কুড়ি হাত নীচে যাইলে দর্শন হয়, বক্রভাবে আছে, নিমে সরস্বতী, ইহার উপরে কেলা। এই বট চারি যুগের। অনেক কটে প্রদক্ষিণ এবং কোল দেওয়া হয়।

সোমেররনাথ দর্শন। কেল্লার আড় পার আরইন গ্রামে গাঁতম-আত্রম এই শিব মন্দিরের নিকটে ব্রহ্মচারীর তপো-বন। এই গ্রামের দক্ষিণে ঝুলী গ্রাম। এ স্থানে গৌতম মুনির আত্রম। এই স্থানে গৌতম গঙ্গা-স্থান করিয়া তপ্তা করিতেন।

প্রমাণ-তীর্থে মাঘ মাহাতে মেলা হয়'। নানা দেশের রাজা ও
ধনাচ্য ও মার আর মহন্ত্রগণ এবং সাধু শান্ত থাকী বৈষ্ণব রামাৎ
সন্ত্র্যাসী নির্বাণী নিরঞ্জনী প্রভৃতি আথড়াধারী গোসাঞিগণ এবং
প্রমাণে মাঘ-মেলা

অস্ত্রেল ও ভিন্ন দেশস্থ ব্যক্তিগণ মকরে কল্লবাস করেন, তজ্জ্ভ মেলা হয়। নানাদেশ
হইতে দোকানদার ও মহাজনগণ প্রবাদি ক্রম-বিক্রম্নের দোকান
করে। এই সমন্ত দোকানদারদিগের দোকান থেণী-কিনারে
রেতীর উপরে হয়। মধ্যে রাস্তা, ছই পার্ম্বে দোকান। চকবাজারের স্তায় বাজার বৈসে। ইহার প্রহরী জন্তু সহর-কোভোয়াল
আপন প্রাতিকগণ লইয়া থাকেন। মাজিপ্টর সাহেব সর্কালা
ভুদারক করিতেছেন। এই রেতী মধ্যে যে সমৃত্র দোকান্দার ও
কল্লবাসিণণ বাস করিবে এবং প্রমাণীগণ বাত্রীদিগের থাকিবার জন্তু
যে বর বান্ধিরে, ঐ সকল ভূমির মেলার এক মাহার কর ধার্য হয়,

আশি চল্লিশ পঞ্চাশ টাকা বিঘা, উচ্চ মূল্য। দোকানের মধ্য মূল্য,
পুলাগীর শেষ মূল্য। কলবাদীর বংদর বংদর করের ডাক
হইলা ধার্ম্য হল্প। আমাদের কলবাদের মানদ জন্ত বিশেষ জ্ঞাত
হইতে হইলাছে। পৌষের ২০ দিনে বন্দোবস্ত শেষ হল্প। মাজিটর
কালেকুটর নিরিথ করেন। কোডোলাল বন্দোবস্তের মালিক।

এ সহরে বাগ বাগিচা অনেক। কাঁঠালগাছ বাগানে বাগানে আছে, সময়ে ফল পাওয়া যায়।

## ৮ পৌষ, রবিবার, দশমী ৬০।০।

বেণীবাটে মুগুন, স্নান-তর্পণানি। সঙ্গমন্থলে ছগ্ধধারা (ও) ফল-পুল্পে কনকাঞ্চলি।

## ৯ পোষ, দোমবার, দশমী

সঙ্গমন্থলে স্নান-তর্পণাদি করিয়া তীর্থশ্রাদ্ধ-ব্রাহ্মণভোজন। সন্ধ্যাগতে আহারাদি।

# ১০ পোষ, মঙ্গলবার, একাদণী

সঙ্গমে লান-তর্পণাদি, একাদশী-ব্রত; নগর-ভ্রমণ (ও) জব্যাদি ক্রম্ম।

আমাগতীর্থে সন ১২৬১ সালের বৈশাথ মাহাতে আদিয়া

অিরাত্র বাস, মুওনশ্রাদ্ধ (ও) পরিক্রমাদি করা হয়। কিন্তু তৎকালে

নাসাজর হইরাছিল, এ জন্তু লিথা হয় নাই। তৎকালে যে ব্যক্তি

পাণ্ডা ছিল নগদার ভাষা। এই বার প্রারাগভীর্থের পাণ্ডা ৺জগর্দ্ধর পুত্র বিহারী ও

জানকী পাণ্ডা, জগর্দ্ধর ত্রাতা রামদীন ও শালগ্রাম এবং ত্রাভুপুত্র

### তীর্থ-জ্রমণ

ধনিবাদ — ইহাদের বাটী দারাগঞ্চ এবং আচার্য্য যজ্ঞের (ও) তপ্ত ভাতা বেণীমাধব। ইহারা দশকশ্বাহিত, বাঙ্গালার মতে ক্রিয়াদি উত্তম জানে। আর আর প্রয়াগী যাত্রীদিগের প্রতি বেমত দৌরাত্মা করে, তাহা গতবারে চকুতে দেখিরা জ্ঞানহত হইয়াছিল। কিন্তু এই প্রয়াগীদিগের চরিত্র সত্যযুগের ব্রাক্ষণের স্থান। প্রয়াগী-দিগের ব্রহ্মাস্টান ভাল আছে। সন্ধ্যাহ্নিক পূজা গীতাদি গাঠ করিরা থাকে। বেণীমাধবের জর'।

## প্রয়াগ হইতে কাণী

## ১১ পোষ, বুধবার, দ্বাদশী

সঙ্গমগুলে প্রভাবে স্থান-তর্পণাদি সমাপম করিয়া প্রয়াগতীর্থ হইতে সাত কোশ লকটুরা প্রাম ু ঐ চড়াতে আহারাদি করিয়া পরে ত্ই কোশ আদিয়া শরণা প্রাম, গঙ্গার তীরে। অতি উত্তম বসতি, অনেক ইইকালয় আছে। বাজার গোলাগঞ্জ—ঘাটে অনেক নৌকাতে মাল আমদানি রপ্তানি হইতেছে। তথা হইতে ত্ই কোশ আসিলে পর এক ষ্টিমার, তৎপশ্চাৎ গোহময় তরি, তাহাতে গোরা দৈল্পগণ এলাহাবাদ যাইতেছে। তাহার পর তিন কোশ আদিয়া ৰারা প্রাবের চড়াতে লাগান করিয়া কটা কপির তরকারি আহার।

## ১২ পৌষ, বুহস্পতিবার, ত্রয়োদশী

বারার চড়াতে প্রাভঃক্তাাল্কর শ্রী৺গলালান-তর্পণাদি সমাপন
করিয়া তথা হইতে বছরা পুলিয়া গলাতীরে স্থানে স্থান
সকল আছে, জলপথে আট ক্রোশ আসিয়া বকুরাগ্রামের চড়া।
এই চড়াতে আহারাদি। ইহার পার্ষে ইটুহারা গ্রাম, তাহার
পরে চারি ক্রোশ আসিয়া চড়াতে স্থিত।

## ১০ পোষ, শুক্রবার, চতুর্দ্দশী

চড়াতে প্রাতঃকৃত্যান্তর স্নান-তর্পণাদি সমাপন করিয়া পরে তিন কেনাশ আদ্ভিয়া এক গ্রাম, তথার বাজারাদি এবং সঙ্গা-তীরে জেলেদিবুগর বসতি (ও) পারঘাট। তথা হইতে এক ক্রোশ আসিয়া রম্থলাবাদ গ্রাম (ও) পারঘাট। পরে তিন ক্রোশ জলপথে আসিরা কলিঞ্জর প্রাম, এ প্রামে অনেক বসতি শবদাহী ঘাট। তাহার পর বেরঙা প্রাম, আড়পার হেঁডনিপ্রাম। তাহার পর গেলারোরা প্রাম, আড়পার নগরদা,প্রাম। ঐ চড়াতে আহারাদি করিয়া তাহার পর অর্ক ক্রোশ আসিয়া সমরনাথ শিব আছেন,

কাড়ি মধো। মুজাপুরের এক মহাজন পূর্ব-সমরনাথ কালে মন্দির করিয়া দিয়াছে, বড় জাগ্রৎ দেবতা। তাহার পর হই ক্রোশ আসিয়া ভোরাগ্রাম, পরে হই ক্রোশ আসিয়া নওগাঁ, পরে এক ক্রোশ দালিপটা গ্রাম, গোপাল-প্রাগ্রাম, পরে বেরাশপুরা, তাহার পরে চড়াতে লাগান করিয়া রাত্রে কটা তরকারি আহার।

## ১৪ পোষ, শনিবার, অমাবস্থা

বেরাশপুরার পরের চড়াতে প্রাভঃকৃত্য লান-তর্পণাদি সমা-পন করিয়া পরে ছই ক্রোশ আসিয়া রামপুর গ্রাম। তাহার স্মাড়পার নগর গ্রামে এক দেবালয় স্মাছে,

আড়পার নগর প্রামে এক দেবালয় আছে, বসতি এবং বাজারাদি আছে। তাহার পর তথা হইতে চারি ক্রোশ আসিয়া শ্রীতবিন্দ্বাসিনী দেবীর নগর।
শ্রীতগঙ্গাতীরে ঘাটবান্ধা, ঐ ঘাটের উপর উঠিয়া অর্দ্ধ পোয়া গমন করিলে পরে শ্রীতবিন্ধাচল নিবাসিনী মহাদেবীর শ্রীমন্দির, চতুস্পার্যে দরদালান, তাহাতে ব্রাহ্মণগণ পুজা পাঠ করিতেছে। দেবীর মন্দির বেষ্টন করিয়া ব্রাহ্মণগণ আছেন।

পশ্চিমন্বারী মন্দিরে প্রবিষ্ট হইয়া দক্ষিণ্দিকে যে মন্দির তাহার ভিতরে পশ্চিমমুখে দেবী আছেন, দিংহবাহিনী চতুর্জান বোড়শববীয়া কভাকৃতি স্থঠাম গঠন ! এ মন্দিরের তুল্য ফ্রন্দির পশ্চিমদিকে, তাহাতে মহাকালীর মুর্বিত । তাহার পশ্চিমে এক মন্দির, তাহাতে মহালক্ষ্মী, মহাসরস্বতী, (ও) মহাকালীর মুর্বিত আছে, এ সকল কল্লিত করিয়া রাথিয়াছে। আদিস্থান বিদ্ধাচন, ত্রিকোণ-যন্ত্রাকৃতি। ইহার তিন কোণে তিন মহাদেবী আছেন।

যোগমারা বিদ্ধাপর্কতের উপুর ৮গঙ্গাতীর হইতে এক কোশ জিশানে। বিদ্ধাবাদিনী দেবীর মন্দির হইতে যাইবার পথ প্রস্তাধীবদ্ধ। ক্রমে উচ্চে উঠিতে হয়, ছই বোগমালা পার্থে প্রস্তরের দোকান। শিল, জাতা, চন্দন-পীড়ি, মোটা বাল, কুঁড়ি ইত্যাদির দোকান সকল। ঐ পথ হইরা যাইয়া পাহাড়ে উঠিয়া যোগমায়া মহাদেবী অঠভুজা। এই দেবী কংসের হাত হইতে আদিয়া বিদ্ধাগিরি উপরে আছেন। ইহার মূর্ত্তি একণে মন্দিরের দেওয়ালে গাঁথা আছে, দেবীর অতি উত্তম মূর্ত্তি।

• পর্বত উপরে যোগমারা দর্শন করিয়া মধান্থলে শুফা মধ্যে গবাক্ষারের স্থার ছার দিরা যাইরা এক সর্রাদীর তপোস্থান। তিনি বন্ধ দিবস তপাস্থা করিয়া সম্প্রতি শুপু ইইরাছেন। তাঁহার শুফা দর্শন করিয়া, পরে মহাকাণী নিম্নে বায়ুকোণে আছেন, তাঁহার দর্শনাদি। তিন কোণে তিন দেবীর দর্শন করিয়া উত্তরদিকে গঙ্গাতীর হইতে অর্দ্ধ পোয়া অন্তরে বটুকভৈরব শিব আছেন, আরু অনেক শিবালর এবং দেবদেবীর মূর্ত্তি স্থাপিত আছে।

বিদ্ধাবাসিনীর মন্দিরের অর্থাৎ বাটার চতুপার্যে পাঙাদিগের বসতি, পাঁচ শতু বত্তিশ ঘর পাণ্ডা। চতুপার্যে বেষ্টিত বাজার, হালওয়াইদিগের দোকানে মিটার পকার স্থশোভিত আছে। চিড়া তৈরার হইতেছে, চাউণভাকা ছোলাভাকা এবং আর আর সকল চর্কাণ-মব্য সকল এবং আরু চণক ও মটর ঘুতদিক্ত ফুলারি পকৌড়ি নানামতে দোকানে সালান্। আর আর সকল দ্রবাদি পাওয়া বার। প্রার ছই শত দোকান এক এক স্থানে আছে। তরি-তরকারি সকল পাওয়া বার, মটরভটি এ বংসর প্রথম এই স্থানে দেখা হইল।

মহাকালীর সমূধে প্রতি দিবস অনিয়মিত বলি প্রদান হয়। ক্ষ্মির-ধারে স্থান পরিপূর্ণ আছে। বিক্যাচলবাদী প্রায় সকলে মংস্ত-মাংসভোজী এবং দেবীস্থান জন্ম স্বরাপানাদি আছে।

বিদ্যাবাসিনীর মন্দিরের ভিতর দেবীর সমুথে এক কাঠরা আছে। এ কাঠরামধ্যে যাত্রীদিগকে পাণ্ডাগণ অগ্রবর্তী হইরা প্রবিষ্ট করার। ভাহার ভিতর প্রবিষ্ট হইলেই দারক্রম

বিদ্যাধানিন করিয়া ভোগ ইত্যাদি নানাবাবুদ করিয়া কিছু লয়, অতি হংগী হইলেও চারি আনার কম লয় না। বে পর্যন্ত দিবার স্বীকার না করে, সে পর্যন্ত দার রুদ্ধ রাথে। ভিক্ক অধিক, কুমারীগণ পর্যার জ্ঞান্ত কুমারীভাবে দেবীর মন্দিরের চতুপার্যে ভ্রমণ করে। মালীগণ পুশামাল্য লইয়া বিক্রেয় করিভেছে। বসতি প্রায় চারি হাজার বর হইবে। এথানে ক্লেক স্থাপিত হইয়াছে, বালকগণ পড়িভেছে।

মহাদেবী বিয়ানিতা। তাঁহার ক্লপাতে সকলেই উপাৰ্জন করিতেছে, কেহ নিয়ানন্দ নহে। দেবীস্থানে জ্লীগণের রুলবৃদ্ধি অধিক জ্লীপ্রধান।

অনেক সন্নাদী বন্ধচারী বোগিগণ পর্কতে নগর মধ্যে তপস্থা

করিতেছে। এই সকল নানাস্থান দর্শনাদি এবং নর্গর-ভ্রমণ করিয়া চড়াতে আসিয়া আংগরাদি করিয়া, তথা ২ইতে ত্ই ক্রোল আসিয়া মূলাপুর সহয়।

মূলাপুর সহরে ছই কোশ।
সহর মধ্যে মহাজনদিগের গদি এবং দোকানদারদিগের বসতি।
সকল জাতি আছে, সহর জাতি উত্তম।
মিজাপুর
এথানে সকল জ্বাাদির স্ওদাগরি ভাল হই-

ভেছে। সঙ্গাগরদিগের আজ্ত অধিক আছে। তুলা ও তিসি আর বল্পাদির মহাজন, নানাদেশীর ব্যক্তিগণ (ও) অনেক বাল্পাদির কারবারের কুঠি আছে। বড় বড় ধনাতা কুঠীওরাল আছে।

শ্রী পালার ঘাট সকল প্রস্তরে বান্ধিরা দিরা উপরে শিবশ্বাপন (ও, প্রেক্তরনির্দ্ধিত মন্দির অতি স্থাচন। ঘাটে ঘাটে
ঘাটারাল সকল আছে তাহারা তিলকাদি দিরা উপার্জন করিয়া
পরিবার পোষণ করিতেছে। এমত পঁচিল ঘাট আছে। গলা
হইতে এক শত ধাপের অর্থাৎ সিঁড়ির কম
নির্দ্ধাপুরে গলার ঘাট
নহে, সহরের উপর উঠিতে ইহার অধিক
আছে। এই সকল সিঁড়ি চড়িয়া নাগরীগণ অলপূর্ণ কুন্ত মন্তকে
ধরিষা অবলীলাকেমে উঠিতেছে। গলার প্রভাবে সহরের দিক্
ভালিতেছে, তাহাতে অনেক বড় বড় বাটী-বর বাগ-বাগিচা
পোক্তা-পোক্তা গাঁধনি সমেত গলাতে পড়িতেছে। কিন্তু হানের
মারালক্ত অর্কেক বর ভালিরাছে, তথাচ হান ত্যাগ করে না।

সহরী মধ্যে ছানে ছানে আনেক দেবদেবী ছাপিত আছে। প্রাক্তরনির্দ্ধিত অপ্রাঠিত মন্দির সকল স্থাণোভিত। সহরে দশ হালার বর বসতি, ইউক ও প্রক্তরনির্দ্ধিত বাটী সকল। ভড়িয়

(41)

কাঠের ঘরবাটী আছে, সকল মন্থ্য বাণিজ্য করিরা স্থা। এ সহরে হংখী প্রায় নাই।

এখানে ভ্লিচা গালিচা আদন উত্তম উত্তম তৈরার হইতেছে, আট আনা অবধি তিন টাকা পর্যন্ত গজ পাওয়া বায়। লাল-পাথরের শিল জাতা চৌকী কুঁজি হানে স্থানে অনেক হইতেছে। প্রশাননা ইত্যাদির মহাজন, লাহোর অমৃত-সহরের পাঠান সকল, চাউল, দাল, আটা, গম, কলাই, সরিবা, তিদি, ভূষি ইত্যাদি ভূষি ক্রবা সকলের মণ্ডী আলাহিদা। সহরের রাস্তা পাথর দিয়া পাকা বাধা, নর্দমা পাথর খুদিয়া বাদ্ধিতেছে, সহরের মধ্যস্থলে কোডোয়ালি।

এখানে সৈম্প্রগণ ছাউনীতে থাকে, গোরাপণ্টন ও কালাপণ্টন ছই আছে, অনেক সাহেব সরকারি কর্ম্মে আছে, ছিল্ল সওলার কর্মে আছে, ছিল্ল সওলার সাহেব সকল আছে, ছই শত বালালা আছে। ছাউনীতে জল মাজিটর কালেক্টবের কাছারি, ডাক্ষর, ডাক্টরেঝানা ইত্যাদি (ও) সাহেবদিগের আলার হানে বাবহারের দ্রব্যাদির বালার ছাউনীর নিকট। এই সহরের বালার হানে হানে দেখিয়া নগর প্রমণ করিয়া, এক কেতা নোট ভালাইয়া, মৃত্তাপ্রের পিডলের বাসন এবং বাটলো উত্তম (হয়), সেই জন্ত কাঁসারি-পটীতে ক্রের জন্ত বাওলাতে পাওয়া গেল না; তাহার কারণ আমাবক্তা ও একাদশীতে কাঁসারি ও কাপড়ের দোকানে থরিদ-বিক্রম হয় না, এজন্ত হইল না। অল্প আমাবক্তা।

এথানে বলুটোলানিবাসী গুণাকৃষ্ণরারের সহিত লাকাৎ হর, মাধবদত্তের কান্সারনে তিসির কুঠীর গমস্তা। রাণীতলাব, হর্বকারিণী ঝিল (ও, সুনাদি দেখিরা মূলাপুরের পারে বজরা না রাধিরা, এক ক্রোশ , আসিরা ছাউনীর আড়পারের চড়াতে অাগান করিয়া রাজে কটী তরকারি আহার হয়।

১৫ই পৌষ, রবিবার, প্রতিপদ

মুদ্ধাপুরের আড়পারের চড়াতে প্রাতঃকৃত্য লান-তর্পণাদি সমাপন করিয়া তথা হইতে ছই ক্রোণ আদিয়া জলের অতিশ্র বেগ হেতু যে সমস্ত নৌকা উজান উঠিতেছে অতি কঠে নৌকা তুলিতেছে। মাস্তলে গুণ নিরা আট জন (৩) গলুরে কাছি দিয়া তিন জন টানিতেছে। তাহারা প্রায় মৃত্তিকাতে মিশাইয়া পড়ে, এমত জ্রোরে টানিতেছে। তাহারা প্রায় মৃত্তিকাতে মিশাইয়া পড়ে, এমত জ্রোরে টানিতেছে। তাহারেও না উঠাইতে পারিয়া তাহার উপর তিন চারিটা ধ্বজি, সাত আট জনাতে ঠেলিয়া কিঞ্ছিৎ কিঞ্ছিৎ তুলিতেছে, এত জনপ্রোত । ভেটেল নৌকা চকিতের স্থায় আইসে। এই মত এক ক্রোশ পথ, তাহার পর শকুরা গ্রাম। এথানে জল সভল গতি। পরে এক ক্রোশ আসিয়া রামনগর গ্রাম, পারবাট। এই স্থানে বাহাস উঠিয়া স্ববাতাস হয়। বেলা নয় ঘণ্টার সময়ে ছই প্রহর এক ঘণ্টার সময়ে চঙালগড় পহছান হয়। জলপথে বোল ক্রোশ।

চপ্তালগড়ে পাহাড়ের উপরে এক কেলা আছে, বাহির হইতে দেখিতে যৎসামান্ত কেলা, কেবল উচ্চ, পরে প্রাচীর করা ছোট মুবচা দেখা বাদা। কিন্তু ভিতরে বারিক ইত্যা'দ বাড়ী সকল আছে। এই কেলাতে একণে পঞ্চাবের এক সন্দার করেদ আছেন, এফন্ত এক পন্টন গোৱা আছে, প্রহরী দুচ্রপে আছে। কিন্তু কেলা দেখিতে বাইবার নিবেধ নাই। ভিতরে প্রবিষ্ঠ হইরা স্ক্রি দেখা বার। কেলা অতিশর মজবুদ। বিপক্ষ বাহির হইজে
কোনমতে সুরচাতে আঘাত করিতে পারে না। চতুপার্শে
এমত পাহাড়ের পোন্তা বে, কেহ উঠিতে পারে না। চতুপার্শে
এমত পাহাড়ের পোন্তা বে, কেহ উঠিতে পারে না। পাছিনে
গলা, পূর্বাদিকে নদী আবলো পাহাড় হইতে আসিরাছে।
ভিতরে বাগান এবং কেলার রীতি মজে রাজাচঙালগড়ের-কেলা

দিগের অন্তর মহল পর্যান্ত বাটী সকল আছে।
তেহারা কেলা, পূর্বাদান চক্ররালার কেলা ছিল। রামনগরের
রাজা অধিকার করিয়ছিল। একল কোন্সানী বাহাছরের
এক বাজার আছে, তাহাতে সকল দ্রবাদি পাওয় বার। সহরের
স্কার অধিক ধনাত্য লোক নাই, নগর তুল্য স্থান। প্রার ৪০ জন
সাহেবের বালালা আছে। পীচটা ভাল বাটী কেলার উত্তরদিকে,
ভাহাতে সাহেব সকল আছে। ঐ স্থানে গোরস্থান। গলাভীরে
পুস্পাদির ভাল বাগান আছে।

চঙালগড়ের তামাক অতি উত্তম। মৃত্তিকার বাসন সকল অতিশব পাতলা এবং দেখিতে ততোধিক সৌন্দ্র্য্যসম্পার ও মজবুদ। দোকান সকলে মৃত্তিকার বাসন, হকা, কলিকা, ওড়গুড়ি, করসী, গৌড়িয়া, ওড়িড্ডানোরা, চাদান ইত্যাদি নানামত বাসন সকল সাজাইরা রাথিরাছে। যে যে রঙ্গের আছে, সেই সেই পাথরের ক্রব্যের ক্লার বোধ হর।

কেলা বাজার, লাল দরজার বাজার, কোতোরালি, ডাক্ষর, গোরাবারিক এবং নগর মধ্যে বদতি সকল, দেবদেবীর মন্দির ইত্যাদি ল্যমণ করিরা, সর্ব্ধে দেখিয়া, কেলার দক্ষিণে ভড়াতে সন্ধ্যাগতে আহারাদি করিরা, অবস্থিতি হইল। কেলার মধ্যে রাজা ভরতের শিবহাপন। তথার শেবেধানা।

১৬ পৌষ, সোমবার, দ্বিতীয়া

চণ্ডালগড়ের চড়ার ঘাটে প্রাতঃক্রতা রান-তর্পণাদি করিয়া তথা হইঙে তিন ক্রোশ আদিরা ছোট-কলিকাতা। এই স্থানে এক বালার করিয়া সহুর তুলা ছিল। প্রথমে কোল্পানীর ফৌজদার-দিগের ছাউনী, তুকক-সভরাবের লাইন আর তিন পন্টন গোরা থাকে, তাহাতে ছোট-কলিকাতা নাম হয়। এইখান হইতে সন্ধান করিয়া পার. হইয়া চণ্ডালগড়ের কেলা মারিয়া মূলাপুর পর্যান্ত ম্বালার কলোনীর সহিত মিল করিয়া অমুগত হয়। একস্ত মুলাপুর পূঠ হয় নাই।

এই ছোট-কলিকাতাতে তৃক্ক-সওয়ার তৈয়ারি হইত, এক্ষণে কিছু নাই। পরে তথা হইতে তিন ক্রোশ আসিয়া রাইপুরিয়া গ্রাম। তাহার উপরের আড়পারের চড়াতে আহারাদি করিয়া,

বেণা ছই প্রহর এক ঘণ্টার সময়ে বজার ধ্লিরা, তিন ক্রোশ আসিরা রামনগর, বে হলে রাজার বাটী। ইহার নাম ব্যাসকাশী। এখানে ব্যাসের স্থাপিত শিব এবং ব্যাসের মূর্ত্তি আছে। সহর তুল্য স্থান। রাজ্যবাটী উত্তম, গলার পূর্ব্ব তীরে। কেলামধ্যে বাটী। রাজার আস্বীবাদি অঞ্চিক আছে, তাহার সংখ্যা নাই। রাজার নর লক্ষ্টাকার রাজ্যু নিকর আছে। তত্তির জমিদারী প্রার চলিশ লক্ষ্টাকার।

রামনগর হইতে প্রীশ্বনাধামের অসির ঘাট আর্থ্র-জোলা।
এখান হইতে বরুণা তিন কোলা। পঞ্চকোলী কালীধাম, অর্ধ্ব
চক্রাক্বতি। উত্তরবাহিনী গলা। ক্ষনিতে লাহোরনিবাসী পঞ্জাবী
রাজা রণজিৎ সিংহের পুরোহিত রল্লা মেছরের এক বাটা এবং
বাগান আছে — প্রীশক্ষরণাথ দেবের বাটা।
অসি-সলম-স্থানে সলমেশ্বর শিব। এই ঘাটে
বেলা ছয় দও থাকিতে পছছিয়া পরে চারি দুও বেলা থাকিতে
কেদার-ঘাট ইত্যাদি পশ্চাৎ করিয়া নারন-ঘাটে বজরা লাগান
করিয়া আমি এবং মুখোপাধ্যায় মহাশয় বাটীয় অধেষণ জন্ত প্রীকৃত
শিবরতন বাবুর পাঙার নিকট গমন করি। প্রিমধ্যে বালক
পণ্ডিত বাজাওয়ালার সহিত সাক্ষাৎ হইয়া তিন জনাতে শিবরতনের
নিকট ভাষার বৈঠকে ধাইয়া ভাষাকে ওদ্ধ সন্ধ্যার সময়ে বজরাতে
আসা হয়। রাজ ছয় দও গতে প্রীশ্বিখেবর-অন্ধপুর্ণা দশ্লন

করিয়া বন্ধরাতে আসিয়া তীর্থোপবাস হইল।

## কাশীর বিবরণ

# ১৭ পোষ, মঙ্গলবার, তৃতীয়া

প্রতি গলার পূর্ব পারে বাইরা প্রাতঃক্বতা স্থান-তর্পণাদি
সমাপন করিরা, তদন্তে কাশী নগরীতে চৌবটি-বোগিনীর বাটে
আসিরা, এ৮কেদারেম্বর দর্শন করিরা, বালালি-টোলার তরকারি
বাজারের উপরে বাগবাজারনিবাসী জ্বরচৌবটি-যোগিনীর ঘাট
গোপাল বল্যোপাধ্যারের বাটীতে আসিরা
থাকিরা তীর্থকর্দাদি করা হয়। এ বাটী বারাস্তনিবাসী শ্রীর্ত
শুক্তপাদ বল্যোপাধ্যার পে-অফিসের কেরাণীর। তেঁহ কালী
বাবুর থাকিবার জ্বন্ত দশ টাকা মাসিক ভাড়াতে পূর্বে স্থির করিরা
রাধিরাছিলেন। ঐ বাটীতে স্থিতি হইল। সন্ধ্যাগতে জ্বন্ধপূর্ণ-

্ কাশীধান আনন্দ-কানন, ব্ৰহ্মনাল, গৌৱীপৃঠে মহাখাশানে। পঞ্চক্ৰোশী কাশীধাম। ইহার মধ্যে সকল তীর্থ এবং দেবদেবীর অধিষ্ঠান এবং স্বস্থ নামে শিব-স্থাপন আছে। সকল তীর্থের এবং দেবদেবীর নাম কাশীধণ্ডে আছে। কাশী-মাহাত্ম্য সকল তাহাতে স্পাঠ প্রকাশ আছে।

শী পবিষেধরের মন্দির মহারাজ রণজিৎ সিংহ স্থবর্ণ মণ্ডিত
করিয়া দিরাছেন। কানীপুরীর রাজা বিখেবিজ্ঞাবন-মন্দির
বারের অমূল্য রত্নাদি ভাগুরের আছে। পাণ্ডামহারাজ সাক্ষাধ্র কুবের। স্থবণ-রজতে নির্মিত রাজ-পরিজ্ঞাদের
নামানত স্ববাদি আছে। আশাশোটা, ছঅ, আড়ানি, চামর,

মোরছল, বন্ধম ইত্যাদি বছবিধ দ্রব্য মকল আছে। মন্দিরের চতুপার্থে দেবনেবীর মুঠি স্থাপিত আছে। প্রধান হার দক্ষিণ-দিকে। তাহার সমূথে রাস্তার ছুক্ষিণদিকে নহবক। বাটীর ভিতরে দক্ষিণদিকের পাশ্চম ধারে আশাপুরী দেবী সন্ধাননারারণের সেবা। পশ্চিমদিকে থাক ক্ষুদ্র হার আছে, তাহার বাহিরে ভৈরবনাথ দর্শন করিয়া, বিশেখরের কাছারিতে যাইতে হয়। উত্তরদিকের পশ্চিমধারে পার্কিতীমুর্তি, স্থাপিত। পূর্ব্ব-ধারে অন্নপূর্ণামুর্তি স্থাপিত। কাশীম্বরী অন্নপূর্ণার আলাহিদা বাড়ী ইত্যাদি আছে। পূর্ব্বদিকে কিছু নাই। দক্ষিণদিকের পূর্ব্বধারে অবিমৃক্তেশর শিব আছেন, আর বিশেশ্বরের নন্দীশ্বর আছেন।

বিখেখরের মন্দিরের চারি হার। পশ্চিম হারের সম্প্র নাটমন্দির। তাহার মধ্যস্থলে রাজা হরিশ্চন্দ্রের স্থাপিত শিব আছেন। নাটমন্দিরের পশ্চিমে দণ্ডপাণীখর শিব। উত্তরহারে পুজারি রাহ্মণ, পদাতিক (ও) এক পাণ্ডাজি নিরোজিত থাকে। নাটমন্দিরে এবং স্থানে স্থানে রাজাদিগের শিবস্থাপন আছে। বিখেখরের উপরে সর্জাদা হর হর শঙ্গে লোক সকল গলাজন বিবাদন দিতেছে। মন্দিরের পশ্চিমদিকে বিখেখরের সভামগুণ। তথার অনেক শিবনিক (ও) দেবদেবাদির মূর্জি স্থাপিত আছে। এ স্থানে নয় মণ্ডপের পূজা হয়। নয় বেণীর নাম— ... ...

ইহার উত্তরে জ্ঞানবাপী (নামে) এক কৃপ। বৎকালে মুকুন্দ ব্ৰন্দারী কাণীধামে জাইসেন, বিখেবর পূলার জলমানরে আগন মুন্তাাধাতে মৃত্তিকা ধনন করাতে তাঁহার বোগ্ধনে ভোগবতী উঠেন। এ কৃপ এছানে। জ্ঞাইবাতি জ্ঞাইবৃত্তির পূলা হয়। আৰুগ্ৰী এবং পঞ্জোদ্ধী কৰিবাৰ সময়ে জ্ঞানবাপীৰ যে মঙ্প আনৰাপী আছে তাহাতে তঙ্গ ত্যাগ কৰিমা পূজা এবং স্বল কৰিমা অভিবাচন কৰিছে হৰ। জ্ঞানবাপীৰ জ্বন্পৰ্শ জন্ত এই ক্পের পশ্চিমদিকে সোপান। ভাহাতে তালাবদ্ধ, উপৰে বোহাৰ বেল আছে, ইহাৰ পূৰ্কদিকে ভাৰকেশ্ব শিব আছেন।

উত্তরদিকে বিশেখরের পূরাণ মন্দির আছে। বিশেশর ঋথ হইরাছেন। তাহাঁর কারণ আওরক্জেব বাদ্সাহ ঐ মন্দ্রের প্রতি অত্যানার করিয়া আপন ভল্পনের মস্ক্রিদ করিয়াছেন এবং বিষেক্ষের পুরাতন বিষেক্ষরের "মন্দির ভগ্ন করিয়া ভাহার উপরে আপন কবরত্বান (নির্মাণ করিয়া) আপন কীর্ত্তি প্রকাশ করিয়াছেন। ঐ পুরাতন মন্দিরের ভিতর হঠ এবং কুল্ককবোগে কয়েকজন সাধু বোগ করিতেছেন। তাঁহালের ভপোভক করিবার কাহারও ক্ষমতা নাই। সেই স্থানের ঘার ক্লম রাধিয়াছে। তথার মুগ্রমান রক্ষকগণ আছে, কাহাকেও ভক্ষধ্যে প্রবেশ করিতে দের না। কেহ কেহ বহু যোগাযোগে নানামত শুব-শুতি এবং রক্ষকগণকে পুরস্কার দিয়া তল্মধ্যে যোগ-সাধনে ৰাইতৈন। এক ব্যক্তি কিছুদিন সাধনাভ্যাসে স্থানের ছারায় আসনসিদ্ধ হইরা এক হস্ত-প্রমাণ শৃষ্টে উঠিবার ক্ষমতা হইবে পরে উন্ধাদ বার্থান্ত হন। তাঁহার প্রমূখাৎ ওনা হইরাছে, ঐ স্থানে বোগিগণ বোগাসনে বাহ্জান ও স্পল্নরহিত হইয়া আছেনৰ তেঁহ অভাবধি জীবংমান আছেন। বাগবাঞ্জারনিবাশী অভ্যাচরণ মিত্রের শুরুপুত্র, নাম · · · · ভর্কাল্যার, বেদ্লাছে পণ্ডিত। ভার, তত্ত্ব, প্রাণাদি সর্বাশান্তর অধ্যাপক।

ইহার উত্তরে পঞ্চ পাশুবের পাঁচ শিব স্থাপন।

বিখেষর মহলার ক্রেটক। এই ফটক মধ্যে পাণ্ডাব্রির হকুন।
পশ্চিম ফটকের উত্তরদিকে চুন্টাগণেশ আছেন। ইণার দর্শন,
পূজা করিয়া পশ্চাৎ বিখেষর অন্নপূর্ণার দর্শনাদি। এই গণেশ
ব্যাসদেবকে ছলনা করিয়াছিলেন। এই ফটকের উপরে অন্নপূর্ণার

নহবৎথানা। উত্তর্গাকে পাণ্ডামহারাজের অন্নপুর্ণা অন্দরবাটা। দক্ষিণে অন্নপুর্ণার বাড়ী।

শ্রীমন্দির বিরাজিত। মন্দিরের পশ্চিম দক্ষিণ উত্তর তিন দিকে বার, পুর্কাদকের দেওগালে অন্নপুর্ণার মূর্ত্তি আছে। সমূর্থে রপার থাম দিরা বালালা করিরা দিরাছে। দেওরাল মধ্যে মুর্ত্তি আছে। দেবীর স্থবর্ণ-রজতের মুখাদি নির্ম্মিত। তাহাতে শিলার আদি হয়। মহামারার ধনের কথা কি বলিব। সাক্ষাৎ অন্নপুর্ণারূপে কাশীধামে বিরাজ করিরা আটলা। ছত্তমধ্যে অন্নদান করিরা জীবজন্ত কীটপতলাদি ব্রজাণ্ডের তাবৎ জীবকে পরিবেশন করিরা জীবন রক্ষা করিরতেছেন।

অরপূর্ণার বাড়ীতে ঈশানকোণে কুবেরেখর, অধিকোণে স্থাননারারণ, নৈর্ভ তকোণে গণেশজি (ও) পশ্চিমদিকে চতুর্ভ জনারারণ আছেন। নাটমন্দিরের বার্কোণে গোসাঞি চৌকির উপর বসিরা স্কলির তিলক দেন। দক্ষিণদিকে ব্রাক্ষণণ পৃঞ্চা পাঠ করে। অরপূর্ণার দেবা পারিমতে আছে। গোসাঞি মাসে দশ দিবসের পারিদার। আর আর অনেক পারিদার আছে। সেবার ব্রুদ্ধ অধিক কাছে।

রান্তার উত্তর অক্ষরবট, বড় হনুমান। দক্ষিণ শনৈক্ষর দেবতা, ইহার পশ্চিমে বিখেররের গদি। এই স্থানে কর্মাধ্যক্ষণ থাকেন। পূর্বকটকের •উত্তর ও দক্ষিণ ছই গাশে গাণ্ডাজির বেওয়ানথানা।

ন্ত্ৰী ন্ত্ৰী কালী ধানেৰ বাজাদু—দক্ষিণ-মানসে বাজা, কেদার্থাটে দান। এই দ্বানে গৌরীকৃত, চক্রতীর্থ, আদিমণিকর্ণিকা এবং মহাশ্যন্দান।

এই কেলারঘাটে সান করিয়া কেলারেখর দর্শন। কেলারের জাত বৃহৎ বাটা। তাহার মধাে মধান্তলে কেলারের পিণ্ডাক্কতি মূর্ন্তি, হিমালয়ন্থ কেলারের সহিত এক-কেলারেমর
বাগ। ভিতরে চিক্ত এবং মোড়ক আছে।
মন্দির-নির্ম্মাণ সময়ে থনন করাতে প্রায় ত্রিশ হত পর্যান্ত করিয়া দেখিয়াছেন কোথাও বৃহৎ মোটা, কোথাও সক্ত, কোথাও অতিশর সক এইরূপে আছেন। তাহার নিয়ে মুড়ক।

কেদারঘাটের উদক পানের নিয়ম এবং মাহাত্মা বায়ুপুরাণে
কেদারথঙে বিশেব প্রকাশ আছে। হিমালয়ন্ত কেদার-সমীপে রেডকুন্ত উদক কুন্তে যজ্ঞপ জলপান। দক্ষিণ হল্তে তিন গঙ্গুর, বাম
হল্তে তিন গঙ্গুর, অঞ্জলিতে তিনবার, গোগ্রাদে তিনবার, দশাক্ষরী
কৈপঞ্চক্ষরী মন্ত্রপাঠে পান করিলে তজ্ঞপ
কল প্রাপ্ত হইয়া হল্ মধ্যে শিবলিলায়ন্তি হয়।
কেদারনাথের অতিশর বিভব। ইহার পাঙা তৈলকদেশীর গোলাক্রি
কুমারশামী। কেদার কাশীধামের ক্ষমদারশ্বরূপ। কেদারের বাটীঘর বাগ বাগিলা ছানে ছানে আছে। কেদারের বাটীর ভিতরে
চতুশাক্রে দেব-দেবীর মুর্ত্তি সকল আছে। মন্দ্রিরের উত্তরপার্যে
অন্তর্পূর্ণা, কার্ত্তিক, গণেশ এবং পার্বতী-মুর্ত্তি। পৃণক্ পৃথক্ ছানে।
দক্ষিণ্যিকে তৈলকদেশীর ধাতুমর রাম-সীভা এবং নারারণমুর্তি।

পশ্চিমদিকে লক্ষ্য-নারারণ এবং কালীদেবী এ দক্ষিণগর্ম্বে নারারণী আর সর্বাত্ত নিবারম হান। পূর্ববিকে উত্তর বাহিনী গঙ্গা বিচাজিতা। বাটের উত্তরাংলে নীলকচ্ঠেমর নিব এবং তৎস্থানে আনেক দেবদেবী হাণিত আছেন।

ঘাটের দক্ষিণদিকে মহাঝানানগানী শিব মকোপরি আছেন।
আউশর উগ্রমূর্ত্তি। কেহ সে হালে বসিরা সাধন করিতে পারে
না। বড় বড় জাপক সিম্বাপন বাগিপণ বোগ
সাধনের শিব
সাধনে বসিরা হির থাকিতে পারেন না।
হানাক্সরে কেলিরা দিরাছে। ঐ শিবের মন্দিরাদি নাই। বদি
কেহ নির্মাণ করিরা দের, তাহা তৎক্ষণাৎ সমূল উৎপাটন করিরা
নির্মূল করেন।

কেদারেশ্বর, নীলকঠেশ্বর, চিন্তামণিগণেশ, ছোট হন্মান্,
বড় হন্মান্, লোলার্কতীর্থ, লোলার্কেশ্বর, লোলার্কাদিন্তা, অমরেশ্বর,
পরাশরেশ্বর, অর্কাবনায়ক, অসিসক্ষম, সক্ষমেশ্বর, অর্কারাথজিউ,
পূক্রতীর্থ, কুক্লেক্রতীর্থ, চুর্গাকুণ্ড, চুর্গাবিনারক, ছ্ম্মানেবী, ভক্রকালী কুকুটেশ্বর, মহামারা, রেণুকা, তিলভাণ্ডেশ্বর - দক্ষিণমানসে এই সকল প্রধান
প্রধান দেবদেবীর তীর্বগণের দর্শন স্পর্শন পূলা লানাদি করিছা
এক দিবসের যাত্রা সমাপন হয়। কগরাথজির বাটী চারিখণ্ড,
বৃহৎ বাটী। তাহার মধ্যে বাগান ও নারিকেলগাছ আছে।
পূর্ব্বে নারিকেলগাছ এই স্থান ভিন্ন আর কোথাও ছিল মা,
এক্ষে অক্সধামে এবং শিকরোলেও চুই তিন বাগানে হইরাছে।
ক্যান্নাংশ্বর বাটীর ভিতরে পূর্ব্বাদিকে শ্রীপ্রীপ্রধান্তক্ষ মূর্জি। ক্ষিণদিক্তে বৃসিহেদেব, পশ্চমদিকে শ্রীরাম লক্ষণ ভরত শক্ষর জানকী

পাঁচ মূর্ত্তি। মধান্তলে অদুসলম ঘাটের উপর জগনাথ বলরাম স্বভুত্তা বিবাজিত আছেন।

তিশভাওেখন জালার আকৃতি। শৌণ্ডিকালয়ের জালামধ্যে এক বান্ধণ-পূত্র বী আগন্তি প্রযুক্ত লুকাইয়া থাকাতে, প্রাণবিয়োগ ইইয়া কাশী জন্ম শিবলোক প্রাপ্ত হন।

হইয়া কাশী জন্ম শিবলোক প্রাপ্ত হন। ভিলভাতেশ্বর জালামধ্যে পিগুাকুতি হওয়ার জন্ম পিগুাকুতি শিব হইবেন। প্রতিদিবস তিল-প্রমাণ বৃদ্ধি বর পাইয়াছেন।

লোলার্কতীর্থ এক কুণ্ডণ এই কুণ্ডের জল সময় সময় বর্ণান্তর
নোলার্কতীর্থ হয় । অভাবিধি ছয় ঋতুতে ছয় বর্ণ হইতেছে।

ঐ কুণ্ডে স্থানারায়ণের ধান্পূর্বক যে ব্যক্তি
দৃচ্ন্ধপে যে মান্সে সান করিবে, তাহার স্কল হইবে। স্থানের
লোল হইরা এই স্থানে সান করিরাছিলেন।

হুর্গাকুগু—পুছরিণী, চতুর্দিকে প্রস্তরে সোপানবছ প্রশ্নরের জাঠ। ঐ কুণ্ডের চারি দিকে পথ আছে, পথে রেল দেওরা।

কুণ্ড মধ্যে বৃহৎ বৃহৎ মৎক্র ও কছ্পাদি
আছে। হুর্গাবিনারক পূর্ব্ব-দিক্রণ কোণে,
দক্ষিণদিকে হুর্গাদেবীর ভবন, তাহাতে দশভূজা মূর্ত্তি আছেন।
মন্দিরের পশ্চিমদিকে দক্ষিণ-কোণে কালী দেবী আছেন। কাশী-ক্ষেত্রের মধ্যে আর আর অনেক দেবীমূর্ত্তি আছেন। কোণাও
ছাগাদি বলি প্রদানের প্রথা নাই। কেবল হুর্গা দেবীর বাটীতে
ছননাদি হইত। এক্ষণে বাঞ্চালি মহাশ্রদিগের মধ্যে বাহারা
মন্ত-মাংস অত্যক্ত প্রয়ালী, তাহারা গোপনে নিজ্ঞালরে বীরভাব
হইরা পশুর স্তার আচরণ করিয়া শিববাক্য মিথ্যা করিয়া পশুবধ
করিতেছেন।

(OF)

পশ্চিম-মানস অর্থ পশ্চিম দিকে যে সমস্ত দেবদেবী তীর্থগণ আছেন, তাহার মধ্যে প্রধান-প্রধানের দর্শন, স্পর্শন, পুরুন (ও) স্নান-তর্পণাদি।

পাতালেখন, পৃশাদভেখন, গল্পেখন, অগজ্যেখন, লোপামুলা, কাঞ্চপেখন, হরিকেশন, বিমলাদিত্য, প্রবেখন, স্থ্যকুপ্ত, সামাদিত্য, লক্ষীকৃপ্ত, লক্ষ্ণদেবী, রামকুপ্ত, রামেখন, লবেখন, কুশেখন, বটুক-নাথ, কামাধ্যাদেবী, বৈজ্ঞনাথ, শল্পানা, শল্পান (ও) মহাদেব। পশ্চম দিকের যাত্রা সমাপ্ত। ইহা ভিন্ন স্থানে স্থানে অনেক দেবদেবী আছেন।

উত্তর-মানস অর্থাৎ উত্তর দিকে দেবদেবী তীর্থগণের দর্শন, ম্পর্শন (ও) পূজা ইত্যাদি।

মণিকর্ণিকাতে এবং চক্রতীর্থে স্লান-তর্পণাদি। মণিকর্ণিকেশ্বর, সিন্ধবিনায়ক, সঙ্কটা দেবী, বশিষ্ঠ, বামদেব, হরিশ্চক্রেশ্বর, আত্ম-বীরেশ্বর, মঙ্গলেশ্বর, বুংধেশ্বর, বৃহস্পতীশ্বর, নাগেশ্বর, অগ্নীশ্বর, সিদ্ধেশ্বরী দেবী, চক্রেশ্বর, চক্রকপতীর্থ,

মণিকাৰ্ক। নিজেবসা তাবা, চত্তেবসা, চত্ত্ৰ্বস্থিত, বিজেবস, গভন্তীবন, মললাগোরী, ময়্থাদিতা, লছমন বাবা, বিল্মাধব, পঞ্গালেখর, পাণভক্ষের, কালভৈরব, নবগৃহেখর, দশুপাণি ভৈরব, মহাকালেখর, রত্নেখর, ফুভিবাদেখর, বৃদ্ধকালভীর্থ, অমৃতকুশু ভীর্থ, ধ্বস্তরিকৃপ, ঝণ্মোচন, পাপ্মোচন, কপাল্মোচন, তর্ণী, বৈতরণীভীর্থ (ও) লাট ভৈরব।

এই লাটভৈরবে ভৈরবের দণ্ড এবং ভৈরবের জাতা। কাশী-ক্ষেত্রে পাপকর্ম করিলে দেবমানের ষটা হাজার বংসর ভৈরব-জাতাতে পেষণ হইয়া পরে জ্ঞানভূমি প্রাপ্ত হইলে মুক্তির সন্তাবনা। এই ভৈরব-জাতা লইয়া হিন্দু-মুসলমানে বিবাদ হয়। ঐ স্থানে মুদলমানেরা আমাদের স্থান বলিয়া এক মদজিদ করিবার স্ত্রপাত করাতে কাশীবাদী হিন্দুগণ তাহাতে আপত্তি \* করিয়া বিবাদ উপস্থিত করিয়া, মুসলমানদিগকে পরাভব করিয়া হরবস্থা করে । পরে রাত্রিযোগে মুদলমানগণ একজ হইয়া বাট-ভৈরবের জাতা বেষ্টিয়া চতুদ্দিকে অগ্নি দেয়; তাহাতে শাঁতার হানি না হওয়াতে, পরে গোহত্যা করিয়া ঐ জাঁতাতে গোরক্ত দিয়া আমি দেওয়াতে জীতা ভয় হইয়া যায়। তাহার পরে প্রাতে হিন্দৃগণ জ্ঞাত হুইয়া মুদলমানদিগের সহিত ঘূদ্ধে প্রবৃত্ত হইল। তৎকালে জজ বেনলিক এবং ... বারাণদীর কর্মাধ্যক। তাঁহারা "অমুমতি করিলেন, "তোমাদের ধর্মবিষয়ে হঠকেপ করিয়াছে, তোমরা এক প্রহর মুসলমানদিগের সহিত যুদ্ধ কর।" এই ভুকুমে সকল হিন্দুগণ অল্পধারী হইয়া মুদলমানের সহিত সন্ধ্যা পর্যাস্ত খোরতর যুদ্ধ করে। তাহাতে সহস্র সহস্র মুসলমান হত হয় এবং যাহারা এ স্থলে জীবৎমান ছিল, ভাহাদের মুথে শুকর-রক্ত এবং গোবর ইত্যাদি দিয়া কর্ণচেছদ করাইয়া নানামত তরবস্থা করে এবং ধেখানে ধেখানে মুদলমানের দেবালয় ছিল তাহাতে শুকর-ছেদন (ও) স্ত্রীগণের হরবস্থা প্রায় সন্ধ্যা পর্যান্ত করীতে অনেক মুদলমান দেশত্যাগ করে। পরে সাহেবগণ আসিয়া হিন্দুদিগকে স্থির করাইয়া কহিলেন. "তোমরা দিনভর যুদ্ধ করিয়া বহু ব্যক্তি হত করিয়াছ, আর যুদ্ধের প্রয়োজন নাই। তবে তোমাদের যে জাঁতা গিয়াছে তাহার পরিবর্তে তামার জাঁতা সরকার হইতে তৈয়ার করিয়া দিতেছি।" . এই কহিয়া তামার ভাঁতা তৈয়ার করিয়া দেন। সেই জাঁতা একণে আছে।

वांशीचती, धह, याराचत, जेचत गना, गरान, जमुरकचत,

মনাকিনী তীর্থ, ভৃত-ভৈরব, নিবাসেম্বর, কল্কেশ্বর, এক্ষেশ্বর, জোঠাগৌরী, জৈয়ঠেশ্বর, কাশীদেবী, সপ্তদাগর তীর্থ, করণ-উত্তর-মানসের প্রধান ঘাটতীর্থ, চিত্রঞ্প্রেশ্বর, চিত্রঘ্টা দেবী, পশু-

পেবদেবী পতীখর, লাজ লেখর, অবিমৃত্তেখর, অপ্সরেখর, ভারকেখর, নাজিকেখর, জ্ঞানেখর (ও) জ্ঞানবাপী। এই সকল প্রধান প্রধান প্রধান দেব, দেবী (ও) তীর্থগণের দর্শন, স্পর্শন পূজা করিলে উত্তর-মানসের যাত্রা হয়।

### পঞ্জীর্থ—

অনি সক্ষম তীর্থে লান-তর্পণাদি। তথায় সক্ষমেশ্বর শিব দর্শন (ও) পুজা।

দশাখনেধতীর্থে স্নান-তর্পণাদি, দশাখনেধেশ্বর দর্শন-পূজন ও শীতলাদেবী দর্শন।

বরণা-সঙ্গম-তীর্থে মান-তর্পণ, বরণা-সঙ্গমেখর দর্শন, স্পর্শন, পুজন (ও) আদিকেশব দর্শনাদি।

পঞ্চাঙ্গাতীর্থে স্নান-তর্পণ, পঞ্চাঙ্গেখর ও বিন্দুমাধব দর্শন (ও) গ পুজন।

মণিকৰ্ণিকা তীৰ্থে স্থান-ভৰ্পণাদি, মণিকৰ্ণিকেশ্বর শৈব দর্শন ও পুজন।

বিষেয়া, অন্নপূর্ণা, চুণ্টীরাজ গণেশ—এই সকল দর্শন, স্পর্শন, পূজা ও প্রদক্ষিণ।

পঞ্চকোশী তিন মতে হয়—প্রধান কর নয়ূদিবস, বিভীয় কর সাত দিবস, শেষ কর পাঁচ দিবস বাস করিয়া এবং যে স্থানে যে দিবস থাকিবার নিয়ম আছে, তথার আছোদি এএবং পথিমধ্যে দেবদেবী সকল দর্শন (ও) পুজাদি করিয়া গমন।

নয় দিবদৈর পঞ্জোশী-

যণিকর্ণিত স্থান-তর্পণ করিয়া জ্ঞানবাপীতে আসিয়া ঐ স্থানে চুন্টীগণেশ, বিখেশর ও অন্ধপুর্ণাদি সকল দেবদেবীর পূজা এবং মানস প্রদক্ষিণ করিয়া (ও) পঞ্চক্রাশীর পদ্ধতি মতে সঙ্কর করিয়া, তথা হইতে মণিকর্জিকাতে উক্তমত পূজাদি করিয়া, কেহ নৌকানেরাহণে মধ্যগঙ্গা দিয়া, কেহ বা তীরে গমন করিয়া তীরস্থ দেবদেবী তীর্থপণের পূজা ও দর্শন করিয়া, অসি-সঙ্গমে স্থান করিয়া, ছ্র্গাক্তও ভীরে বসে ম ইর্গা দেবী দর্শন (ও) শ্রাকাদি দিভীয় দিবস।
কিতায় দিবস—

ছুর্গাকুপ্ত হইতে কদৰেখর আড়াই ক্রোশ, তথার এক উদ্ভম সরোবর আছে, তাহার নিকটে হিতি (ও) শ্রাদ্ধানি। কদদেখর বৃশব দর্শন, সাধুগণের অনেক আশ্রম আছে। তথার প্রমানন্দ্রামী আছেন, বেদান্ত ইত্যাদি স্থতি শ্রতি প্রাণাদি সকল শাস্ত্রে স্প্পিতিত, প্রমহংস।

তৃতীয় দ্বিস—

কদৰেশ্বর হইতে লেঙ্গুটিয়া হন্মান্ তিন ক্রোণ। তথার অবস্থিতি (ও) আমিদি।

চতুর্থ দিবস—

ৰেঙ্গুটিলা হন্মান্ হইতে ভীষচঙী তিন ক্ৰোশ, এক প্ছরিণী এবং বাজারাদি আছে। তথার থাকিয়া শ্রাদাদি এবং চঙীবিনায়ক ও চঙী দেবী দুশন।

#### পঞ্চম দিবস---

ভীমচণ্ডী হইতে সিক্সাগর তিন ক্রোশ। স্বর্জ দিবস—

দিল্পাগর হইতে রামেখর চারি জাশ। বরণার ঘাট অতি অবসম স্থান, বরণার ঘাট প্রস্তবের সোপাদ-বল। উপরে রামেখর শিব দর্শন। বাগ-বাগিচা ভাল ভাল আছে, স্থশীতল স্থান, স্থানে স্থানে সাধু-তপস্থিগণের আশ্রম আছে, বাজার ও বসতি আছে। ঐ স্থানে থাকিরা শ্রাজাদি করিতে হয়। "এ স্থানে অনেক ধর্মানালা আছে।

#### সপ্তম দিবস---

রামেশ্বর হইতে তিন ক্রোশ শিবপুর, তথার অবস্থিতি ইত্যাদি। অফ্টম দিবস—

শিবপুর ইইতে সারঙ্গ তলাব চারি ক্রোশ, তথার এক উত্তম পুরুরিণী আছে এবং বাগ-বাগিচা ও বালার আছে। ঐ স্থানে স্থিতি করিয়া শ্রাদি দর্শন-পূজন, আর এই স্থানে দশ অবতারের ঝাঁকি হয়। সহরের অনেক মহন্ত ঐ মেলাতে একত্তিত হয়। দশাবতারের ঝাঁকি অর্থাৎ মহন্ত হারা নাট-বিস্থাতে সৃদৃশ মূর্ত্তি করিয়া দর্শনাদি। অতি চমৎকার দেখা হয়। উত্তম উত্তম মনোরম গীত-বাস্থাদি হয়।

#### নবম দিবস--

সারক তলাব হইতে কপিল-ধারার অবস্থিতি (ও) শ্রাদ্ধাদি। পুছরিণীর নিকটে বাস, কপিলেখর শিব দর্শন। কিপিল-ধারা তীর্থ এবং কুপ্ত, কুপ্ততীরে শ্রাদ্ধ। তথার বাজার জাছে। দশম দিবদে কাশীপুরী প্রবেশ, মণিকর্ণিকা-সান, বিখেবর-অন্নপূর্ণা দর্শন, মণিকর্ণিকাতে প্রাদ্ধ ইত্যাদি। পঞ্জোশী অস্তের কর্মাদি।

এই পঞ্জোশী ৰাতাতে মুখ্য মুখ্য এক শত একুশ দেবদেবীর পুজা-দর্শনাদি আছে।

#### দাত দিনের পরিক্রম—

প্রথম দিবসে ছ্গীকুণ্ডে ইভি, বিতীর দিবসে কদবেখরে, ভ্তীর দিবসে ভীম্চ গ্রীতে, চতুর্থ দিবসে রামেখরে বরণার, পঞ্চম দিবসে শিবপুরে, ষষ্ঠ দিবসে সারক্ষতলাব, দপ্তম দিবসে কপিলধারার, অষ্টম দিবসে কাশীধামে প্রবেশ।

### পঞ্চম দিবদে পঞ্জোশী-

প্রথম দিবদ ৩ ক্রোণ কদম্বেখরে ছিতি, বিতীয় দিবদ ভীমচণ্ডী ছুয় ক্রোণ, তৃতীয় দিবদ রামেখর সাত ক্রোণ, চতুর্থ দিবদ সারক্ষ-ভলাব সাত ক্রোণ, পঞ্চম দিবদ কপিলধারা ছন্ন ক্রোণ, ষষ্ঠ দিবদ কানীধামে প্রবেশ তিন ক্রোণ।

পঞ্চক্রেনীর নিয়ম সকলই উপরোক্ত মত। যে দিবদ বথার থাকিবার নিয়ম, সেই ছানেই আদাদি। একণে পাঁচ দিবদে পঞ্চ ক্রোনী করা, ইহাই সকলে করিতেছে। বাহার বথন ইচ্ছা হয়, সেই সময় পঞ্চকোনী হয়। সহরের ব্যক্তিগণ ফাল্কনের তার একা-দশীতে মারস্ক করে। মাবাদি চতুর্মাদে পঞ্চকোনীর ফ্লাধিকা।

কাশীধামে দেবদৈবী (ও) তীর্থ অসংখ্য আছেন। শ্রুতি, স্থৃতি, পুরাণ, তল্লাদি শাল্লেখত তীর্থ (ও) দেবদেবী ব্যক্ত আছেন, সকলেই কাশীধামে আহাছেন। ইহার মধ্যে মৃথা, মৃথ্য দর্শন, স্পর্শন ও পুজাদি।

#### ষোড়শ যাত্রার বিধি---

কাশীখণ্ডের মতে পঞ্চক্রোশী সপ্তাহে, পঞ্চরাত্তে, তিরোত্তে দ্বিরাত্তে, একরাত্তে—পঞ্চপ্রকার পঞ্চক্রোশী হয়।

পঞ্চকোশব্যাপী সনাতন জ্যোতিলিক, তল্মধ্যে হংগোরী। এই জ্যোতিলিক বেষ্টিত করিয়া ছাপাল বিনাধক, ঘাদশ আদিত্য, নব-গোরী, একাদশ রুদ্র, দশ দিক্পাল, নবগ্রহ, দশ অবতার, রামক্লঞ্চ, পঞ্চ প্রকৃতি, গৌর্ঘাদি ঘোড়শ শাভ্কা, আর তীর্থাদি আছেন। এই পরিক্রম করিলে সকল পরিক্রম হয় এবং কাশীকৃত পাপের ধণ্ডন হয়।

মৃক্তিমপ্তপে পঞ্জোশী বাঝার সহর করিয়া, সকল দেবদেবীর পূজা অক্ষ বারা মানসে করিয়া, পঞ্জোশীর দৃঢ় প্রতিজ্ঞা করিয়া সিদ্ধবিনারকের এবং বিশ্বেষ্টরের পূজা (ও) প্রদক্ষিণ করিয়া মৌনী হইয়া পঞ্জোশী করিতে হয়। ভাহাতে তিলমাত্র ছান ভ্যাগ করিবে না। বে বে স্থানে বে দিবস স্থিতি করিয়া ক্রিয়াদি করিতে হয়, ভাহার পদ্ধতি কাশীধ্ত মতে বিশেষবিধি আছে।

অন্ত তীর্থের কিখা জনান্তরের পাণসকল কাশীনর্শনমাত্র ভন্ম-রাশি হয়। কাশীকৃত দৈবঘটিত পাপ পঞ্চক্রোশী যাত্রাতে পরি-ত্যাগ হয়। পঞ্চকোশীতে যে পাপ জন্মে, নগর-ভ্রমণে ত্যাগ হয়। কাশী নগর-ভ্রমণে পাপ জন্মিলে অন্তর্গ্রে মুক্ত হয়। অন্তর্গ্রহ কৃত পাপ মণিকণিকাতে সানমাত্র মুক্ত হয়। মণিকণিকাতে পাপ করিলে বজ্ঞবেপ তুলা হয়। বারাণদী অর্থাৎ কাশী যাহাকে বেনারদ কছে, এই দহর অতি
প্রাচীন দহর, অধিক বদতি। পাঁচ ক্রোশ পর্যান্ত দহরের বদতি
এবং বাজারাদি।

সহরের মধ্যে প্রস্তর-নির্দ্ধিত ভবন সকল বৃহৎ বৃহৎ, তিনতলা চারিজ্ঞলা পাঁচতলা পর্যান্ত উচ্চ । বসতি এক আছে যে, ছই পার্মে বাটা সকল মধ্যে হন্দ দেড়ু হন্ত প্রমাণ পথ। এমত গলি পথ কত শত আছে তাহার সংখ্যা নাই। সকল গলির এবং ফটকের নাম লিখিতে অনেক কাগজ যায়। সহরে পাঁচ হাজার ফটক। এক এক ফটকের মধ্যে পাঁচ হাজার ফটক। এক এক ফটকের মধ্যে পাঁচ হন্ত সাত গলি আহে, গলি মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া পথ অমুসন্ধান করা অতি সুক্রিন। যদি আসিতে আসিতে গলির মোড়ে এক বাটার ফের পড়ে, তবে কত ভ্রমণ করিয়া পথ নিরূপণ করিতে হয়, তাহা কহিতে পারি না। এমত ঘটয়া উঠে, এক ক্রোশ বাহির হইয়া যাইতে হয়। বিদেশী মহ্যা পথ ভূলিলে শীঘ্র ঠিকানা করিতে পারে না। তাহার কারণ এই যে, সকল বাটী প্রায় এক্ষত। সকল গলিতে সমান বাজার।

সহর মধ্যে বেখানে বসতি, প্রতি মহলা মহলাতে নানামত খাপ্ত দ্রবা এবং পানের দোকান আছে। ইহা ভিন্ন স্থানে স্থানে কাশীর গল ও বালার নানা জাতীয় দ্রবাদির বালার। তাজির গোলা, গল, চক (ও) বালার আছে। ত্রিলোচনগল, বিশেষরগল, বাবুর বালার, চেংগল, বেজুরা, চক চাঁদনী, নৃতক্র চৌক, ঠঠেরি বালার, চৌধাখা বালার, বড়বালার, দালমণ্ডী, মছলিহাট্টা, রেশম কটরা, কেনারী পটি, জছরিপটি, কুলগলি, দেকেন্দ্রগল, গান্ধিকটরা, বাদসাহী বালার, বালালি-টোলার

বাজার, তরকারি বাজার, দশাখনেধের বাজার, মানসরোবরের বাজার ও সটীর বাজার। ত্রিলোচনগঞ্জে চাউল ও লবণের গোলদারী দোকান আর আর সকল, জ্বব্যাদি আছে। অন্ত অন্ত বাজার হইতে ত্রিলোচনের ওজন অধিক, এক শত বিকার ওজন।

বিখেবর-গঞ্জে সকল জব্যাদির আড়ত। তরিতরকারি শাকসব্জি মেওয়াদি অনেক আমদানী হয়, আশির ওজন। বারুর
বাজারে সকল রকম জিনিদ পাওয়া যায়। চেংগঞো নানারকম
দাল পাওয়া য়য়, গোলদারী দোকান। বিজ্য়ারত চাষী লোক
জব্যাদি আমদানী করে। ওখান হইতে মহাজনে থরিদ করে।
তরিতরকারি দের কি মণ দরে বিজ্য় হয় না, দেউড়ি অর্থাৎ
বাজরা মূলন। পানের বাজার হয়, গাট্টা দরে বিক্রয় হয়, ছই
শতে এক গাট্টা।

চক চাদনীতে সকল মত দ্রবাদি (ও) মনোহারীর দোকান আছে। চক মধ্যে জুতা, কাপড়, মালা, রুদ্রাক্ষ, ক্ষটিক, মনোহারী দোকানের যে সকল দ্রবাদি, লোহার দ্বিনিস, কাঠের দ্রবাদি, নয়চা, গদ্ধর পশারির আতর, ভরি কেনারি গেলাসওচারির দোকান (ও) সকল কুঠীয়াল আছে। চকের শোভা বৈকালে, নানামত দ্রবাদির দ্বির করে। বাহিরে পশ্চিমদিকে হ্কাপটি। পূর্কদিকে আচার মোরব্বা মেওয়ালাত ফলওয়ালার দোকান। দক্ষিণদিকে হল্চে গাল্চে সতরঞ্চি এবং কাপড়ের দোকান। পশ্চিম ফটকে কোতোয়ালি, দক্ষিণ আংশে ডাক্ডারখানা। নুতন চকে কাপড়ের দোকান সকল আর পুরাতন লোহার দ্রবাদি, খরিদ-বিক্রম হয়, বারা ওয়ালার দোকান। এ বালারে দালালি দল্পরি নাই।

ঠঠেরি বাজারে কাঁসা পিতল তামা ইত্যাদির বাসন। চৌখাঘার

ৰাজারে সকল দ্রব্যাদির দোকান, তামাকের দোকান ভাল আছে। ৰুড়বাজারে হালওয়াইয়ের দোকান, দরজিদিগের দোকান (ও) আর আর দ্রবাদি আছে। দালমণ্ডী বাইদিগের থাকিবার স্থান। উপরের ঘরে নীচে নানাজাঁতীয় দ্রবোর দোকান, পোস্তের অনেক দোকান আছে। বৈকালে সর্বদা গান বান্ত নৃত্য হয়, সদানন্দ স্থান। মচলি-হাটাতে মংস্থা বিক্রয় হয় এবং আর আর দ্রাবাদির দোকান আছে। রেশম কটরা-এস্থানে রেশমের দোকান সকল এবং জোলাগণ বারাণদী। কাপড তৈয়ার করে। আর এক স্থানে রামপুরার জোলাগণ রেশমী পীতাম্বরী ইত্যাদি বুনান করিতেছে। কেনারিপট্ট-গোটাকেনারি, কিরণ, জরি, পাল্লা, তিল্লা, গথক, বিনাবট ইত্যাদি দ্রব্য সকল। জহরিপটি—জহরতের অঙ্গুরি, মালা, বালা, বাজু ইত্যাদি সকল আভরণ, হীরা, পোকরাজ, লালপারা, মতি (ও) প্রবালাদির দ্রব্য । কঞ্জগলিতে নানাবিধ বস্তাদি, স্থতার রেশমের উলের পশমিনার তাসের সাদা রঞ্জিন ুনানাপ্রকার বিক্রের হয়। বড়বড়মহাজন সকল আছে। সাটিন, মধ্মল, বারাণদী তিলার কর্মের নীলাম্বরী পীতাম্বরী। দেকেন্দর গঞ্জে গম, যব, তিসি, সরিষা ইত্যাদি দ্রব্য সকল। গন্ধিকটরাতে আতর, পোলাপ, ফুলেল ইত্যাদি স্থগন্ধি দ্রব্য সকল। বাদসা-বাজার ইত্যাদি আর আর বাজার সকলে থাম্ম ক্রব্যাদির সমুদয় পাওয়া যায়। স্টীতে আমে বিক্রেয় হয়।

চৌথাম্বার পরে গোপাল-মন্দির গোকুলের গোম্বামীদিগের স্থাপিত। সেবাদির বরাদ্দ উত্তম আছে। গোপালের সদা-দর্কনা উত্তম উত্তম দ্রব্যের ভোগ হয়। কিন্তু প্রসাদ বিক্রম্ম সন ১২৬৪ সালের ১৭ বৈশাথ .

বান্ধালিটোলা হইতে অসিতে শ্রীপজগন্নথ জিউর মন্দিরের
নিকটস্থ শ্রীযুত গণপতি রাও মহারাষ্ট্রের বাটীতে পাকা হয়।
বান্ধালিটোলা হইতে আসিবার কারণ অভিশন্ধ মারিভন্ন হয়।
উলাউঠা ব্যাধিতে বহু মহুহোর মৃত্যু হয়। শ্রীযুত বাবু কালীপ্রানাদ
বোবের পাচকপ্রান্ধণ নবকুষ্ণ চট্টোপাধ্যারের ১১ বৈশাথ স্কার্যর
পর বারাম হইবা ক্রমে র্ছি হইরা ১২ বৈশাথ বৃহস্পতিবার
সন্ধ্যার সমলে কাশী প্রাপ্তি হয়। পরে ১৪ বৈশাথ কালীবাবুর
স্ত্রীর ব্যাম হয়, নানামত চিকিৎসাতে স্কুহন। এই সকল
কারণ জ্লন্থ তথা হইতে অসি-মোকামে থাকা হয়। জ্লন বাতাস
অতি উত্তম, সহর অপেকা শীতল ছান। এথান হইতে শ্রীপ্রিম্বধ্রের মন্দির এক ক্রোণ হইবে। প্রোভঃসানাদি করিয়া
বারার প্রবৃত্ত।

১৭ বৈশাখাবধি ৩০ বৈশাখ
অদিতে ন্নান-তর্পণাদি করিয়া দর্শন (ও) ঘাত্রাদি।

## ১৫ বৈশাখ, অক্ষয়-তৃতীয়া

জিলোচন শিবের দর্শন, ঐ স্থানে হংসতীর্থ, তাহাতে স্থান-তর্পণ, যব, ঘট ইত্যাদি দান (৩) প্রান্ধাদি। কাশীথণ্ডে ফলাধিক্য লিধিয়াছে।

২৭ বৈশাখ, পৌর্ণমাসী মণিকর্ণিকাতে স্নান্দানাদি করিয়া বাজা করা হয়।

664

- ৩১ বৈশাখ, দংক্রান্তি, মঙ্গলবার, তৃতীয়া
- পঞ্চীর্থে গমন। প্রথম অসিদলম-ন্থলে লানাদি, সলমেশর
  দর্শন, পরে দর্শাখনেধ, গ্রোদাবরী-দলম-স্থলে লানাদি, পরে
  বরণাদলনে ক্ষানাদি, বরণেশর, আদিকেশব দর্শন। তাহার পর
  পঞ্চগঙ্গাতে লানাদি, তদন্তে মণিকর্শিকাতে লান-তর্পণাদি করিয়া
  বিখেশর-অন্নপূর্ণা দর্শন করিয়া য়থাবিহিত তীর্থে তীর্থে দানাদি
  করিয়া পুনরায় বাদস্থানে গমন। আক্ষণাদি ভোজন করাইয়া,
  নিত্য নিয়মিত কর্ম সমাধা করিয়া আহারাদি করা হইল।

অসিসক্ষম কাশীর প্রান্তভাগ, সহর মধ্যে নহে, তিন দিকে মাঠ। পুর্বাহিকে উত্তর-বাহিনী গঁলা, তাহার পূর্বাণারে রামনগর, যাহাকে ব্যাদকাণী কহে। কাশীর রাজা চেৎসিংহের বাটী। উত্তর্দিকে লক্ষ্ণের নবাবের এক ভ্রাতার বাটী। অতি উত্তম মনোরম স্থান। জল বাতাদ সকলই ভাল। সহরের ভিতর যেমত গ্রম (এখানে) তাহার শতাংশের একাংশ নহে, তথাচ এমত গ্রীম হইত বে. সর্বদা পাথার বাতাস ভিন্ন তিষ্ঠিতে পারা যায় না। বেলা এক প্রহরের মধ্যে আহারাদি করিয়া ধার রুদ্ধ করিয়া থাকিতে হয়। রোদ্রের উত্তাপে বাহির হইবার ক্ষমতা নাই। অত্যস্ত গ্রীম হওরাতে মারিভয় অতিশয় প্রবল হইয়া উঠিল। ইহাতে অনেক মহুষ্য স্থানে স্থানে পলাইয়া গেল। আমাকে গাঞ্জিপুর বাইবার জন্ম আমার মধ্যম পুত্র প্রীযুত কাণীত্যাগের উদ্বোগ স্থ্যকুমার স্বাধিকারী ছই তিন পত্র ডাক-বোগে • লিখিলেন ৷ আমিও গমনোভোগ করিয়া এীযুত কালী-বাবুকে কহাতে (তিনি) কোন ক্রমে গমন করিতে দিলেন না, ক্ছিলেন, "আমাদিগকে বনবাদ দিয়া মহাশর কি গমন করিবেন ?

(60)

ষদি একান্ত গমনের ইচ্ছা হইয়া থাকে, তবে দশ পোনের দিবস পরে সকলে একত্র গমন করিব। এই কহিয়া কলিকান্ত;র উাহার দেওয়ান ঐীবৈশ্বনাথ সরকারকে পাঁচশত টাকা পাঠাইবার জন্ম পত্র পাঠান এবং বজুরা ভাড়ার জন্ম লোফ পাঠাইলেন।

ঙই জৈ ঠ কলিকাতা হইতে কালীবাবুর টাকা পছছিল এবং আমার মাসিক ধরচের টাকা গাজিপুর হইতে স্থ্যকুমার সর্বাধিকারী পাঠাইরা লিখিলেন, "বত শীঘ্র পারেন তথা হইতে আসিবেন।" এই পত্র পাইরা শীঘ্র গমনোদ্যোগে সকলে স্ব কর্ম সমাপন জন্ত বিহিত মনো্যোগী হইতে হইল। সকলে একতা দেশে আগমন করিবে, এই ব্যবস্থা হওয়াতে আমার একলা সকলের সক্ষ ছাড়িয়া গাজিপুর গমন হইল না।

ইতিমধ্যে কালীবাবুর পরিবারের ভেদবমি হইয়া অতিশ্র ব্যামোহ হইয়া বাটী গমনোজোগ রহিত হইল। সুস্থ ভিন্ন গমন হইতে পারে না, এই দ্বির হইয়া যে বজরা ভাড়া করা হইয়াছিল, তাহাকে জবাব দেওয়া হইল। এই মত ব্যামোহের গোলঘোগে ১০ জৈছি পর্যন্ত গত হইলে পর পুনরায় আদেশ গমনের উজোগী হইয়া, নৌকাদি ভাড়ার জক্ত ঘাটমাঝি কালুকে ডাকাইয়া এক বজরা (ও) এক পান্সীর কথা কহা হইল।

বাত্তা-ছাল বজা (ভ) এক গান্নার কথা করা হবল।

ঘাটমাঝি কালু কহিল, "একণে জলপথে
প্রথন করা উত্তম বিবেচনা হইতেছে না, বেহেতু একণে ঝড়-বৃষ্টি
আদির দিন, অভিশব তুফান হইবার সম্ভাবনা। বিশেষতঃ
বাহির গান্ধ দিয়া বাইতে হইবে। ইহাতে যুদি গমনের মনন
হর, তবে কহিলে নৌকা, বজরা বাহা চাহিবেন ভাহা আনিয়া
দিব; নচেৎ আবাচু মাহাতে জলের স্ফুলতা ইইলে গমন

করিবেন।" জলপথের এই মত কথা ওনিয়া, কালীবারু এবং জাহার পরিবার জলপথে গমনে নির্ভ হইয়া, ডাকের গাড়ীতে গমনের মনুন করিয়া কলিকাতানিবাসী প্রীয়ুত বারু হরিমোহন সেনের গাড়ীর আড়গড়াতে সিমুলানিবাসী প্রীয়ুত নবক্ষণ সেন গোমজার নিক্ট ডাকের গাড়ীর কথা কহিলে তিনি কহিলেন, "জছকার দিল্লীর সংবাদ পত্রে মিরাট ও দিল্লীর অঘটন ঘটনা সংবাদে সশক্ষিত আছি। বোধ ফরি, কলিকাতা গমনাগমনের পথ শীম্র কক্ষ হইবে।' এই কথোপকথন হইতে হইতে সংবাদ আইল।

# मिপाशे-विद्यादश्त<sup>'</sup> विवत्न

हैং ১৮৫৭, ১১ মে। সন ১২৬৪ সাল, ৩০ বৈশাখ

দিলীর ছাউনীতে যে দৈৱলগ হিল, ইহারা মতান্তর হইয়া গ্রেশনের রাজপুক্ষগণকে হত করিয়া দিলী-দিপাহী-বিলোহারভ খরের বৃহে মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া দিলীখরকে স্থাহায় জয়া কহে।

১০ই মে, ২৯ বৈশাখ, রবিবার,

মিরাটের ছাউনীতে রাত্রি পাঁচ ছয় ঘড়ির সময়ে ১১নং দেশীয় পদাতিক দলে কলরব হইয়া বৃন্দুকে গুলিপুরিয়া মহাদদ্দে ঘোররবে আয়েয়য়র নিক্ষেপ করিতেছে। ২০নং দেশীয় পদাতিকগণ (ও) ৩নং অঝারু সেনাগণ আসিয়া ১১নং পদাতিকগণের সহিত সংযুক্ত হইয়া মহারণারস্ত করিয়া কেবল সেনাপতিগণকে হত করিবার সম্পূর্ণ চেষ্টা করিতেছে। কর্ণেল ফিনিস্ প্রভৃতি অক্সাক্ত সেনাপতিগণ পদাতিকদিগকে শুতিবাক্যে সম্বরণার্থ বছতর মিনতি করিতে ছিলেন। এমতকালে ২০নং পদাতিকদল হইতে গুলি আসিয়া কর্ণেল ফিনিসের অব্যের উপর আঘাত করিল। অব্যোপরি আঘাত হওয়াতে অক্স সেনাপতিগণ ব্রিগেড-মেজরকে সংবাদ করিতে পরামর্শ দিতে ছিলেন, এমত সমরে কর্ণেলের পৃষ্ঠদেশে এক শুলির আঘাত হওয়াতে (তিনি) পতিত হইয়া প্রাণ পরিত্যাগ করিলেন।

অক্তান্ত দেনাপতিগণ প্রস্থান করিয়া বার্নিক-লাইনে প্রবেশ করিলেন। কৃষ্ণপক্ষ প্রতিপদের রাত্তি, রণধুমেতে শুকুপক্ষের প্রতিপদের স্থান্ন ঘোর অফকার হইনাছিল। তৎসমরে পদাতিকগণ
দাহেব লোকের বালালাতে অগ্নি দিল, ভীষণ ঘোরনাদে অগ্নি
প্রজ্ঞানিত ইইল, সকল দগ্ধ হইরা হত হইল। চতুদ্দিক ধ্যে
পরিপূণ হইল ৮ এই সকল কর্ম সম্পূর্ণ করিয়া ১০,২০,৬৮,৫৪ (ও)
৭৪নং এই কয়েক দল দিল্লী ভভিমুধে যাঝা করিল।

একণে দিলীতে বে তিন দল দেশীয় পদাতিক ছিল, তাহারা দিলী নগরে ঘে সমস্ত দেনাপতিগণ ছিলেন, তাহাদিগকে হত করিরা, দিলীখরের ব্যহ মধ্যে প্রবিষ্ট হইরা, দিলীখরের পুত্রকে সিংহাননে উপবেশন করাইয়া দিলীখর করিয়াছে।

১৯ ও ৩৪ নং পদচ্যত পদাতিকপণ বারাকপুর ইইতে বিদায় ইইলা রাণীগঞ্চ লুঠ করে।

আলিগড়, কোয়েল, মইনপুরী, বুলনসহর, ইটাওরা প্রভৃতি
লুঠ হইরাছে। কানপুর আগরা ইত্যাদি সশন্ধিত। দিলীর
আশপাশ দিপাহীগণ অধিকার করিয়া লইরাছে। ডাকের পধ
ক্ষিত্ত হইরাছে। আগরার পশ্চিম হইতে চিঠি আইসে নাই।

মধুরা সহরের বাজার ইত্যাদি ছই দিবদ বদ্ধ ছিল। সহরের সকল ফটক বদ্ধ, কেবল লাল-দরজা আর আগরা-দরজার থিড়কি থোলা ছিল। তরতপুর এবং গোরালিয়ারের রাজধালী হইতে পাঁচদল রাজদৈত্য (৩) চবিবশ কামান আদিয়া আগরা এবং মধুরা রক্ষা করিতেছে। লছমিটাদ শেঠ পাঁচশত মেওয়াতি পদাতিক সাহায্য জন্ত দিয়াছে। চণ্ডালগড়ের বাজার করেক দিন বন্ধ। কেলার ভিতরে সুকলে ছিলেন।

কাশীনগরে অতিশয় জয়য়ুক হইয়া ধনাচ্যগণ ধন সকল গোপন করিয়াছেন। বিণিকগণের দোকান বন্ধ। সাহেবগণ জাসিড হইয়া ছানে ছানে লুকায়িত, আপর আপন স্ত্রীপুত্রগণকে চ্থালগতে প্রেরণ করিয়া সহরে যত ফটকবলী চৌকিদার ছিল. ইহাদের কর্ম্মে অন্তলোক নিযুক্ত করিয়া ঐ চৌকিলারদিগকে থানার বরকন্ষাঞ্জি ভার (দিয়াছে)। থানার বরুকন্ষাজ সকল শিকরোলে পাহারাতে থাকে এবং কাশীধামের রাজা ঈশ্বরীনারায়ণ রায় বাহাতর পাঁচশত বন্দুকধারী লোক লইয়া স্বয়ং শিকরোলে আছেন। শিকরোলে অন্ত ব্যক্তিগণের গমনের ক্ষমতা নাই। সিপাহীগণের মতান্তর দেখিরা সিবিল ও মিলিটারি রাজপুরুবেরা বছতর স্থতিবাক্য কহিয়া কহিলেন যে. "টোটার বিষয়ে বে আমা-দিগকে দোষী করিয়া কহিতেছ যে, তোমাদের ধর্মনৃষ্ঠ করিতেছি, আমরাধর্মতঃ কহিতেছি, ইহাতে ধর্ম-নষ্টের দ্রব্য কিছু নাই। ইহাতেও বদি ভোমাদের বিশাস না হয়. তবে এ টোটা ভোমাদের ব্যবহার করিতে হইবে না। আমরা কদাচ কাহারও ধর্মনষ্ট ক্রিব না।" এই মত প্রবোধ বাক্য ছারা তাহাদিগকে অবাধ্য হইতে দেন নাই। তথাচ বিখাদ না করিয়া স্থলতানপুর হইতে কেভলরি সেনা আনাইয়া থাজনাথানা, বক্সীথানা পাহারাতে আছে। দানাপুর হইতে ২০০ শত গোরা আদিয়াছে। প্রতি দিবদ গোরা পূর্ব হইতে আদিতেছে। শিখদৈক্তগণ আবাধ্য হয় নাই, ইহা দেখিয়া দ্বির আছে।

মিরাট ইত্যাদিতে সেনাপতি এবং ব্রদম্পর্কীর ব্যক্তিগণ মধ্যে ২৬ জন হত (ও) ৮৮ জন আহত হইরাছে। তাহাদিগের নাম শিখিত আছে। ইতোমধ্যে বালালি কাহারও প্রতি আঘাত হর নাই। কেবল টোটার বিবাদে সাহেবদিগের সহিত ধর্মবিব্যক বিবাদ হয়।

অবোধাতে দেনাপ্তিগণ এবং প্রধান প্রধান সাহেবগণ একঅ
ন্ইয়া দেশীয় দেনাদিগকে এবং হাওয়ালদার জমাদার ত্বাদার
বাহাছরদিগকে নানামত তয়-মৈত্র প্রদর্শাইয়া এবং হিন্দু-মুসলমানের
ধর্মের প্রতি হুস্তক্ষেপ না ক্রিবার বিষয় ভ্রোভ্য়ঃ কহিয়া দেশীয়
পদাতিকগণকে তিন শত টারুার নান নহে (ও) হাজার মুল্রার অধিক
নহে, (এইরপ) পারিতোধিক বল্টন করিয়া তৎক্ষণাৎ তথাকার
পদাতিকগণকে সম্ভই করিলেন।

মিরাট, দিল্লী, অখালা, কোরেল, আঙ্মগড়, ইটাওয়া ইত্যাদির ছাউলীর সৈন্তগণ, সেনাপতিদিগের সহিত টোটার বিষয়ে মনাস্তর হইয়া, সেনাপতিগণকে এবং রাজপুরুষ সাহেবগণকে হত করিয়া, খাজনা লুঠ করিয়া ছাউলী এবং সাহেবদিগের বাঙ্গালা আলাইয়া দিয়া, জেলখানার বন্দীদিগকে খালাস করিয়া, কতক দিল্লীতে কতক স্থানে স্থানে থাকিয়া প্রজাদিগের লুঠ-ফ্সাদ করিয়া ভয় প্রদর্শন করিতেছে। ইদানীস্তন শুনা বাইতেছে, কোম্পানি বাহাছরের যুদ্ধ সম্পানীয় যে দেশে যেখানে দেশীয় পদাতিকগণ আছে, সকলে এক পরামর্শ করিয়া ইহাদিগকে রাজ্য-ভ্রের বিশেষ উপায় করিতেছে। কেবল আশি দল পদাতিক একযোগ হইয়াছে। কোন দেশের রাজা কি বাদসীহ কেহ সহযোগী হয় নাই। ইদানীস্তন জনশ্রুতিতে শ্রুত ছইতেছে, নেপালাধিপতির প্রধান সেনাপতি ভক্ষ বাহাছর ৪০০০ হাজার সৈম্ভ লইয়া পাহাড় হইতে নীচে আসিয়াছেন।

গোরালিয়র ছলকার বাহাছরের স্ত্রী রাজাবাই উজ্জনিনী হইতে
চল্লিও হাজার দৈক্ত সহিত গোরালিয়র নিজ রাজধানীতে আদিরা
বদিরাছেন। রাজাবাই ছই হাজার পদাতিক, এক হাজার
অধ্যয়ক শার্ত্তপাণি এবং বার কামান আগরার কেরাতে পাঠাইরা

কোল্পানি বাহাছরের তরফ মদতগিরি •করিরা আগরা রক্ষা করিতেছেন। কিন্তু আপন সৈক্ত ও তোপ কেলার ভিতক রাধিয়াছেন, গোরাদিগকে ছাউনীতে রাধা হইরাছে।

ভরতপুরের রাজা আনগরার ভাষ মধুরা রক্ষা করিতেছেন। কিন্তুরাজার বয়ক্রম অল, মন্ত্রী তাদুশ নাই।

## ২০ জৈষ্ঠ, ৪ জুন, বুহস্পতিবার

বেলা ছই প্রহর চারি ঘণ্টা পরে বারাণ্দীর সেনাপভিগণ দেশীয় পদাতিকগণকে অত্মতি করিলেন যে, "গবর্ণমেণ্ট হইতে কিছুন্তন হকুম আদিয়াছে, তাহা সকলের গোচরাথ প্রকাশ ক্রিব। অতএব তোমরা প্যারেড পর দুগুরমান হও।" এমত বাক্য কহিবার তাৎপর্যা এই যে, বলটেরি কাশীতে বিদ্রোহ দলের পদাতিকগণ উত্তম খোদ্ধা। কিয় ইহারা আপন আপন ছভাগ্যক্রমে টোটার বিষয়ে বিপরীত ' বোধ করিয়া, যত ন্যুনতা স্বীকার করিয়া সেনাপতিগণ স্থতি-বাক্য কহিয়াছিলেন, সে বাক্য কপট বোধ করিয়া ছরাচার পদাতিকগণের আদেশে সেনাপতিগণ এবং রাজপুরুষগণ্কে হত ক্রিয়া থাজনা লুঠিয়া গমন চেষ্টায় ছিল। ইহার বিশেষ কারণ বোধ হইল যে, পদাতিকগণের প্রহরীতে তোপ এবং মেগাঞ্জিন আর থাজনা ছিল। তাহাতে সর্বত্ত গোল্যোগ হইলে থাজনা স্থানাস্তর করিতে রাজপুরুষগণ চাহিলে পদাতিকগণ কহিলেক, "ভোপ মেগাজিন আর থাজনা আমরা কদাচ ছাড়িব না।" এই কথাতে অতান্ত সন্দেহ হইয়া শিথ-পদাতিক এবং অলতানপুর.

যাহাকে ছোট-কলিকাতা কহে, তথা হইতে স্ওয়ার আনাইয়া ভাহাদের পাহারা সর্বত হইল। বল্টরি পদাতিকগণের প্রহরী হইতে তোপে মেগাজিন লইবার তদ্বিরে কাশীর রাজা ঈশ্বরীনারায়ণ রায় বাহাত্রকে পদাতিকীগণকে বুঝাইবার জন্ত মধ্যন্থ স্থির করার রাজার বাক্য হারা পদাতিকগণ তোপ এবং মেগাজিন ছাডিয়া দেয়। ঐ সকল গোৱাদিগের প্রহরীতে দেন। পরে 8 জুন প্যারেডের ছকুম দেওয়াতে পশ্চিমদিকে শিথ-পদাতিকগণ, দক্ষিণ দিকে সওয়ার্রগণ, মধাস্থলে বলণ্টরি পদাতিক, এক পণ্টনের মধ্যে ছই কোম্পানি গাজিপুর ও জৌনপুরে ছিল, তম্ভিন্ন যত পদাতিক ছাউনীতে ছিল, সকলে বিনাম্ন প্যারেডে দণ্ডায়মান হইলে পর, সেনাপতিগৰ স্থৰীজীভূত হইয়া গোৱা-পদাতিকগণকে সঙ্কেত ষায়া তোপে পদাতিকগণকে হত করিতে অমুমতি করিলেন। পুর্বের আদেশ ছিল, সঙ্কেত মাত্রই আগ্নেয়ার নিকেপ হইতে আরম্ভ হইল। তাহাতে ভারত-যুদ্ধের স্থায় রণস্থল হইয়া, অভিমন্ত্য-বুধের ক্সায় বলন্ট্রি পদাতিকদলকে বেষ্টন করিয়া আগ্রেয়ার দাবা গোলা-ক্লপ বাণ নিক্ষেপ হইতে লাগিল। পদাতিকগণ রণপণ্ডিত (ও) স্থশিকিত। ইহাদের তুল্য দেশী পদাতিক কোন দল নহে। যৎকালে বগালা নিকেপ হইতে লাগিল, তৎকালে সৈঞ্চগণ ভূমিতে ভূমির ক্রায় মিশাইয়া বছ দৈত্র প্রাণরক্ষা করিয়া অখারোহীদিগের সহিত সহযোগে রণস্থল হইতে বরণা পার হইল। কতক সৈম্ভ কিঞ্চিৎ অবসরে ধাবমান হইয়া আপন আপন শিবির মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া অজ্ঞাদি লইতে গিয়াছিল। বৃটিশ দৈস্তগণ দেখিয়া ঐ শিবির মধ্যে অধি প্রজ্ঞানিত করিয়া দও করিল। তাহাতে অনেকে হত হইল। তন্মধ্য হইতে যেঁ কেহ অন্ত্রধারী হইয়া নির্গত হইল, তাহারা রণস্তলে

আসিয়া কতগুলি গোরা দেনা এবং দেনাপৃতিগণকে হত করিয়া, কেহ যুদ্ধে প্রাণ পরিত্যাগ, কেহ কেহ বা প্লায়ন করিল।

ইতিমধ্যে দৈবৰটনাতে এমত হইরা উঠিল যে, ,ভাহা কি কহিব। শিথ-সৈন্তগণ সেনাপতিদিগের সম্মতিতে ছিল। কেবল বিপক্ষ মতাস্তরী পদাতিকগণের প্রাণদ্যও জন্ত এই চক্রবৃহে, রচনা হইরা ছিল। তাহাতে বিধিক্ষত বলটির পদাতিক ছই শত হত হইরা বক্রী পলায়ন সমন্ব ভোপের ধূর্মে রণস্থল ঘোর কুক্সাটিকার জার অন্ধকার হইরাছিল। কিন্ত গোরাসকল ভোপ নিক্ষেপ নির্ভ্ত ছিল না। ঐ ভোপের গোলা ঘারা প্রান্ত দেড়শত শিথ-পদাতিক হত হইল। শিথ-সৈন্তগণ ইহাংদেখিরা, মনে বিবেচনা করিল য়ে, "কেবল বলটির পদাতিকগণকে ভোপে উড়ান নহে—কালা পন্টন মাত্র কিছু রাধিবে না। ইহা না হইলে আমাদের দলের সৈক্ত কিল্প হত হইতেছে।" ইহা কহিরা রণস্থলে প্রবিষ্ট হইরা রখী, পদাতিক এবং প্রধান সেনাপতি মেজর গাইস্কে গুলি ঘারা হত করিয়া বাছির হইয়া গেল। ইহাদিগের গমন দেখিরা অন্ধামেরাই। অন্ধাদির হয় এক সহম্র ছিল, ভাহার মধ্যে পাঁচণত ঐ সমভ্যারে গমন করিল।

এখানে গোরাগণ রণে উন্মন্ত হইরা, পদাতিকগণতে আবেষণ করিরা স্থানে স্থানে ভ্রমণ করিতেছে। যে কোন পদতিক প্রাণ ভয়ে কাহারও গৃহ মধ্যে পুকায়িত হইতেছে, তাহাকে গৃহস্থামী বাহির করিয়া না দিলে তৎক্ষণাৎ আগ্নি দিরা গৃহ দথ্য করিয়া দিতেছে।

ওথানে পদাতিকগণ মধ্যে বে কেহ পাইতেছে, সাহেবদিগের বাঙ্গালায় এবং গোরাবারিকে আর মিশনরীদিগের বাঙ্গালাতে আছি সংবোজন করিতেছে। "শিকরোল একেবারে অগ্রিমর হইরা হর্জের আমনল প্রজ্ঞলিত হুইল। পুনরার ত্রেতাবৃগ উপস্থিত! রাত্রি ছই প্রাহর পর্যক্তি এই ব্যাপার ছিল।

এই মত উপদ্রব উপত্তিত হওয়তে সাহেবদিগের বালক -বালিকা এবং বিবি সকল আর সরকারি থাজনা এক লক্ষ বায়ার হাজার বাহা মজ্ত ছিল, তাহা কাশীর রাজার যে কুঠা অর্থাৎ এক বড় বাটী ঐ শিকরোল, মধ্যে আছে, তাহাতে রাখিলেন। রাজা বাহাত্র আপন হাজার বন্দুক্চি লইয়া ঐ পুরী রক্ষা করিলেন। পরে তুই শত গোরা আর হিন শত তোপ পুরী রক্ষার্থ আদিলার রাজা সাহেবছক আপুন কেলা রামনগর রক্ষার্থ এরাত্রে আদিবার অক্সাতি হইল। তেঁতু তুই শত অন্থারোহী আর পাঁচজন সাহেবদিগকে লইয়া রাত্রি ছই প্রহর ছই ঘণ্টার সময়ে গঙ্গা পার ছইয়া রামনগরের কেলাতে গমন করিলেন।

বে সমন্ত বালালি এবং এতদেশী ব্যক্তিগণ চাকুরির জন্ত শিক্তিরালের আফিস সকলে (এবং) আপন আপন কর্ম্ম স্থানে স্থা স্থাক প্রবন্ধ প্রবন্ধ প্রবন্ধ বিষয়ে কর্ম দেবিয়া শুনিয়া জ্ঞানশৃত্ত হইয়া অনেকেই চিত্র প্রতালিকার জ্ঞায় দণ্ডায়মান রহিলেন। অনেকে জীত হইয়া পলায়ন করিয়া কোথায় গেল, তাহার তিকানা ছিল অবেষণ পাওয়া গেল না। কে কোথায় গেল, তাহার ঠিকানা ছিল না। কেহ কোন পথে বহু ক্লেশে গোপন পথ হইয়া নানাক্লেশে ক্লিষ্ট হইয়া রাত্রবোগে মৃত প্রায়, কেহ বা পর দিবস প্রাত্তে আপন আপনস্থানস্থানে উপস্থিত হইলেন। যে সমন্ত বালালি পরিবার লইয়া শিকরোলে বাদ করিয়াছিলেন, তাহাদের পরিবার লইয়া কিপ্রাত্ত ক্লেশ হইয়াছিল, তাহা বলা বায় না। একে স্ত্রীলোক,

তাহাতে বাঙ্গালি, তাহাদিগের নিকটে অন্ধ্রেশে মধ্যে রণস্থল তৎকালে যেমত ভয়ানক হইমাছিল, তাহা বিবেচনা করিয়া দেখ। আগমুক্ত হইমা কে কোথায় কি ভাবে লুকাইত হইল, তাহা বলা যায় না। স্থান বিবেচনা নাই, কেহ সবস্ত্র, কেহ বিবন্ধে, কেহ অচৈতভা, কেহ মুক্ত্রিগত হইমা ঐ রাত্রি ঐ স্থানে ছিল। পম দিবদ প্রাতে সকলে সপরিবার সহর মধ্যে আসিয়া রহিলেন। তক্রবারাবিধি রবিবার পর্যন্ত সকল কাছারি বন্ধু ছিল। সাহেবগণ স্থানে হানে গোপনে রহিল।

গোরাগণ তিন দিবদ পর্যান্ত রণসজ্জাতে ছিল। আহার-মিঠাই মক্ত আর কাঁচা মাংস। ইহাতে তিন দিবস ওঙ্গরান হইল। যে সমস্ত অখারোহিগণ রণস্থলে বাহ ছারের রক্ষক ছিল, তাহারা শস্ত্রপাণি হইয়া ছই দিবদ পর্যান্ত রণস্থলে পুরস্কার দান ছিল। তাহাদিগকে সাহেবগণ পারিতোষিক দিতে প্রবৃত্ত হইয়া কহিলেন যে. "তোমরা সরকারের খয়ের খাঁ। অতএব তোমাদের এক এক ব্যক্তিকে দশ দশ টাকা, আর এক এক সের মেঠাই পারিতোষিক দিতেছি। তোমরা কোমর খুলিয়া শ্রম দুর করিয়া আহারাদি কর।" তাহাতে সওয়ারগণ উত্তর করিল, "আমরা কোমর খুলিয়া নিরন্ত হইয়া প্যারেডের মাঠে যাইব না এবং চাকুরি করিব না। যেহেতু আমরা কালা দৈক্ত ভিন্ন গোরা নহি। যথন বলণ্টরি পদাতিকগণের টোটার আপত্তি, তথন সে আপত্তি আমাদের আছে। অতএব যাহা পারিতোষিক আমাদের প্রতি অফু-গ্রহ হইতেছে, তাহা গ্রহণ করিয়া শিরোধার্যা করিয়া লইতেছি।" এই কথা কহিয়া টাকা আর মেঠাই লইয়া প্যারেডের বাছির অর্জ-ক্রোণ মাঠের নিকট ঘাইরা কোমর খুলিয়া আহারাদি করিয়া,

সক্ষত্র স্বাহন স্থানাস্তরে গমন করিল। এইমত সৈঞ্চগণ ভলিগান দিয়াগেল।

যে সকল পদাতিক প্রহরীতে নিযুক্ত ছিল, ভাহারা যৎক্ষণাৎ
ক্রুত হইল যে, ভদ্দেলর পদাতিকগণকে তোপে উড়ান হইয়াছে,
তৎক্ষণাৎ তাহারা আপন আপন অস্ত্র-শস্ত্র পরিত্যাপ করিয়া
পলায়ন করিল।

মতাক্তরী দৈন্যগুণ বিষয় হইয়া বরণার পশ্চিম ... 😶

সকলে একত্র ইইরা স্থবেদার এবং প্রধান প্রধান
 নারকগণ একত্র ইইরা বুক্তি করিল যে,
 শিণপুর-বালার গ্র্ঠন
 এস্থানে আর থাকা ভাল হয় না। এই বিচার
করিয়া ঐ সকল ব্যক্তি একত্র ইইরা শিবপুরের প্রধান প্রধান
 দোকানদারদিগকে কহিল, "নামাদের রসদ দেও।" ভাহাতে
 ভাহারা অস্বীকার ইইরা পলাইবার উদ্বোগ করাতে সৈন্য গ্র্থ দোকানদারদিগের দোকান ইইতে দাল, আটা, ম্বভাদি

 -আপনাদিগের আহারের মত লইরা আহারাদি করিয়া তথা
 ইতে জৌনপুর অভিমুধে বাত্রা করিল।

৪ জুন পদাতিকগণের বিনাশ এবং পলায়ন সময়ে বরণা হইতে
অসি পর্যান্ত পঞ্চক্রোশের মহুষ্যগণ ধন-প্রাণের আশা পরিত্যাগ
করিয়াছিল। সহরে যত কটক এবং বাটা সকলের দরজা বন্ধ
করিয়া, সকলে শঙ্কপাণি (হইয়া) এবং গুলি টোটা বন্দুক কড়াবিন
নামাণদী-নাদিগণের ভূপিতাল ভরিয়া এবং ছাদের উপর ইট পাধ্র

নাবধানতা তুলিরা সকলে আপন আপন একতলা দোতলা তেতালা, বাহার যে ছাদ আছে, তাহার উপরে মারপালগণ মার কম করিয়া, ভিতর দিকে যুদ্ধ-সজ্জাতে রহিলপ হাট বাজার দোকানে
মহযোর গমনাগমন নাগাইদ সন্ধ্যা পর্যান্ত বন্ধ ছিল। তিন দিবস
পর্যান্ত অত্যন্ত গোলবোগ ছিল।

৮ জুন, সোমবার, রাজপুরুষণণ রাজকার্য্যের কাছারি করাতে দকলে সাহ্দযুক্ত হইরা বাজারে ছই এক করিরা কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ ক্রেয় লইরা সামান্ত সামান্ত দোকান খুলিল। কিন্তু সম্পূর্ণ থার খুলিল না। চারি পাঁচ তক্তাতে ছার ক্রম। তাহার এক তক্তা খুলিরা ঐ ঘারের বাহিরে সমূথে বিদিরা, চাউল দাল ছক আটাদি, হালপ্রয়াইদিগের যাহার হাজার বারশত টাকার দোকান, তাহারা এক আধ টাকার লাজু পেড়া লইরা দোকান করিল। আর কোন দ্রব্যের দোকান খুলিল না। পরে ক্রমে শৈথিলা হইলে কিছু কিছু দোকান দশ পোনের দিবদ গতে খুলিতে আরম্ভ করিল। ২৫ জুন পর্যন্ত কুঞালি জত্রিপটির বাজার্জ, কুঠীওয়ালা, সরাবগির, মহাজন সকল কেহ দোকান খুলে নাই। বাজার ইত্যাদি সকলই বন্ধ।

বে সকল পদাতিক জৌনপুরদিকে গমন করিয়াছিল, তাহারা আজমগড় লুঠ করিয়া, তথার বে সমস্ত সাহেব লোক ছিল, তাহা-দিগকে হত্যা করিয়া সরকারি থাজনাথানা লুঠ করিয়া কম বেশী ছই লক্ষ মুদ্রা লইয়া বালালা কাছারি জ্ঞালাইয়া, তথাকার আজমগড়ের সরকারি বদমায়েশ লোকদিগকে সমভ্যারে লইয়া থাজনাথানা লুঠন জৌনপুর গমন করিল। পথিমধ্যে নীলকর সাহেবদিগের কুঠী আর রাভাবন্দী সাহেবের কাছারি ছিল, ঐ ছানে প্রবিষ্ঠ হইবা মাত্র সাহেব লোকজ্বন প্লায়ন করিল। পদাতিকগণ কুঠীতে প্রবিষ্ট হইয়া যে টাকা প্রসা দেখিতে পাইল,

তাহা লইয়া এবং কুঠার বে সমস্ত আদবাব ছিল, তাহা নষ্ট করিয়া, তথা হইতে গমন করিল। পরে দুশ বার জ্বন যে বক্রী দৈল পশ্চাতে ছিল, তাহাদিগের সহিত ঐ স্থানের জমিদারগণ মিলিত হইরা, কুঠা মধ্যে আসিয়া যে স্থানে লোহার সিদ্ধুক মাটীর মধ্যে পোতা ছিল, তাহার সন্ধান দেখাইয়া, ঐ লোহ-সিন্ধুক ভালিয়া পাঁচ হাজার পাঁচ শত টাকা লইয়া গেল। তাহার মধ্যে নীলকর সাহেবের পাঁচ হাজার, রাস্তাবদীর জন্ম কোম্পানি বাহাছরের পাঁচশত টাকা ছিল। 🕏 সকল টাকা লইয়া সাহেবদিগের বালালাত্তে অগ্নি প্ৰজ্ঞলিত কবিয়া দিল। যে সমস্ত বালালি কৰ্ম-কারকগণ ছিলেন, ইহারা প্রাণভয়ে কেবল এক ধুতি পরিধান মাত্র করিলা অক্তিনীচ জাতিদিগের বাটী লুকাইলা প্রাণরক্ষা করিয়া-ছিলেন। একজন সাহেব আপন বিবি ও চুইটী বালক বালিকা লইয়া প্রাণ্ডয়ে অভিভূত হইয়া এক নর্দমার ভিতরে লুকাইয়া ছিল। কোন ছরাচার ব্যক্তি তাহাকে দেখিয়া ঐ সাহেবকে কুম্বান হইতে বাহির করিল। তাহার পরে একত্র হইলে, তথন সাহেব ও বিবি হুইজনে প্রাণরকা জ্বন্ত অনেক স্থাতি-বাক্য কহিতে লাগিল। তাহানা ভনিয়া সাহেবের প্রাণ নষ্ট জল গুলি নিক্ষেপ করিল। ভংকালে সাহেব ডাকিয়া কহিল, "আমার প্রাণ নষ্ট ক্রিলি, কিন্তু এই কর্ম্ম ক্রিদ-আমার বিবিকে মারিদ্ না।" এই কছিয়া সাহেব প্রাণ পরিত্যাগ করিল। পরে ছরাচারগণ শঙ্কাঘাতে বিবিকে ধরাতলে শয়ন করাইয়া, ঐ ছইটী বালক বালিকা লইয়া জৌনপুরের অতি নিকটে এক মুদলমান মাস্ত ব্যক্তি কাজি দাহেবু তাহার নিকট দিলেঁক। কাজি সাহেব ঐ ছই বালক বালিকাকে যত করিয়া রাবিল।

পদাতিকগণ তথা হইতে জৌনপুরের সহরে প্রবিষ্ট হইয়া, তথার যে দেশীর পদাতিকগণ ছিল, তাহাদিগকে আপন দলে মিলাইয়া এবং তদ্দেণীয় জমিদার ও বদমায়েশদিগকে সমভাাবে লইয়া প্রথমে বন্দিশালাতে প্রবেশ করিয়া, বন্দিগণের বেড়ি ইত্যাদি वसन **१** इंटें के नक्तरक मुक्त क्त्रियां नित्त । श्राह्य निर्शित বাঙ্গালায় প্রবেশ করিয়া সাহেব বিবি বালক জৌনপর লগন ও বালিকা অনেকের প্রাণদণ্ড করিয়া, বাঙ্গালার ক্রব্যাদি লঠ করিয়া, কাছারিতে প্রবেশ করিয়া রাজপুরুষগণকে শ্বলি এবং তরবারির ছারা হত্যা করিয়া সরকারি থাজনাথানা এবং • দেগের কুঠা, দোকান, ধনাঢ্য-সহরের ··· গণের বাটী লুঠ করিয়া, কম বেশী বিশ লক্ষ টাকা লুইল। সৈত্ত-গণ অধিক লইতে পারিল না, তদেশীর বদমাইশ জমিদারসৰ লইলেক। এইরূপ উপদ্রব উপস্থিত হইলে পরম্পরায় জৌনপুরস্থ সকল সাহেব সপরিবার ধরাতলে মহানিদ্রায় শয়ন করিলেন। কেবল জেলের সার্জ্জন আর কমিশনর চারি পাঁচ বিবি (ও) করেকজন বালককে লইয়া পলাইয়া কোন জমিদারের বাটীতে থাকিয়া প্রাণ-রক্ষাকরিয়াছিলেন। যে সমস্ত বাঙ্গালি তথার পরিবার সমেত ছিলেন, তাঁহারা অতিশয় প্রাণ্ডয়ে আসিত হইয়া স্ত্রীপুত্র পরিবার লইয়া. কেহ মালার ঘরে. কেহ বা চাষীর ঘরে, কেহ কাহারের ঘরে, কেহ ডোমের ঘরে, এই মত ছোট ছোট জাতির ঘরে যাইয়া জাতি-কুলের অভিমান পরিত্যাগ করিয়া, প্রাণরকা করিয়া রহি-লেন। এই মত সপ্তাহ পর্যান্ত গোপনে ছল্লবেশ ধারণ ুক্রিয়া दृष्टिलन ।

নৈজগণ থাজনা লুঠ করিয়া সাহেবদিগের বাঞালা, কাছারি,

পোঠাফিন, ডাক্টারথানা ইত্যাদি জালাইরা দিয়া লক্ষ্ণে জভিমুখে যাত্রা করিল।

দহ্যগৰু প্ৰবন প্ৰতাপ হইলা সহর প্ৰাম এবং নগরের পথে ভ্রানক বাপার করিলা রহিল। কাহারও কোথাও গমনাগমনের ক্ষমতা রহিল না। পথিক ব্যক্তি দেখিলেই তাহার সকল প্রবাদি কুঠ করিয়া লইলা, এক কোপীন পরাইলা বিদার করিয়া দের। জীলোক হইলে কোপীন দের না, বিবল্লা করিয়া পাঠার। তাহাতে জ্বোর জ্বরদ্ধি করিলে প্রাণক্ত করে। জৌনুপুর হইতে ডাক ইত্যাদি গমনাগমন রহিত হইল। সকল পথ ক্ষম্ক করিয়া দিল।

বে সমন্ত সাহেবপণ পলাইয়া প্রাণরকা করিয়াছিল, তাহার মধ্যে কমিশনর সাহেব বে জমিদারের ঘরে লুকাইয়া ছিলেন, ঐ বিয়োছিলণ কর্তৃক জমিদার বারাণদীর জল প্রীয়ৃত গবিক্ষ কমিদার বারাণদীর জল প্রীয়ৃত গবিক্ষ কমিদার বারাণদীর জল প্রীয়ৃত গবিক্ষ কমিদার হয়। সাহেবের নিকট আসিরা সকল বৃত্তান্ত জানাইলেন। সাহেব এই কথা শ্রুতমাত্র তাঁহাকে পাচনত টাকা পারিতোষিক দিবার অহ্মতি করিলেন। আর ঐ ব্যক্তিকে সমন্তাবে করিয়া, তিন শত গোরা দৈয় (৩) আট হল্তী লইয়া জৌনপুর য়াত্রা করিলেন। পথে প্রায় চারি পাঁচ হাজার দ্যুগণ একত্র হইয়া গবিক্স নাহেবের প্রাণদণ্ড করিবার সম্পূর্ণ চেটাতে থাকিয়া, তিন চারি শুলি চালাইয়া ছিল। বিধিক্ত দৈববক জল্প ঐ শুলি মাথার উপর দিয়া গেল। তাহার পর গোরা সকল বাড় ঝাড়িতে আরম্ভ করিলে, ঐ সকল বাজ্ঞি পলায়ন করিল। তাহার মধ্যে সাত্র ব্যক্তি মৃত হইল। তাহাদিগকে বারাণদীতে প্রেরণ করিয়া সাহিব জৌনপুরে উপন্থিত হইয়া

দেখিলেন বে, কমিশনর সাহেবের মৃতদেহ ধুনার ল্টিত আছে।
তাঁহাকে তথা হইতে উঠাইরা মৃত্তিকা দিবার জন্ত হতী' পরে তুলিরা
কাশীতে পাঠাইলেন। পরে সাহেব ও বিবিগণ কাঁহারা, জমিদারের
দরে লুকাইরা প্রাণ্ডক। করিয়াছিলেন, তাঁহাদিগকে সমস্তারে
করিয়া লইরা আসিলেন। যে জমিদার এই উপকার করিয়াছিলেন,
তাঁহাকে তাঁহার জমিদারির থাজনা চিরদিনের জন্ত মাক হইল
এবং সরকারের থরের বাঁ হইরা ক্রাতিপত্র পাইলেন।

্বে সকল ছ্রাক্সগণ মহ্যাদিগের এবন হরণ এবং প্রাণনষ্ট করিতেছিল, তাহার মধ্যে বে সাত ব্যক্তি ধৃত হইয়াছিল, গ্রণমেন্টের অনুমতি ক্রমে তাহাদিগের গলরজ্জু দিয়া প্রাণ হরণ ইইল।

গবর্ণমেনেটর এই আদেশ আইল, এমত জ্রাচার বদমারেশ এবং
কোম্পানি বাহাছরের অনিপ্রকারী, সরকারের মন্দকারী, পদাতিক-গণের সাহায্যকারী এবং মন্দকারী সৈত্তগণ যৎক্ষণাৎ গ্রেপ্তার হুইবে, তৎক্ষণাৎ গলরজ্জু, কি শল্পে, কিম্বা ভোপের গোলা মারা প্রাণ নষ্ট করিবে। এক্স বারংবার অস্থমতি লইবার প্রয়োজন করেনা।

এখানে ছ্টগণের দমন জন্ত স্থানে স্থানে অস্মন্ধানকারী লোক নিযুক্ত হইল এবং গোকুল থানাদার নামে এক ব্যক্তি বারাণসীতে পূর্বে থানাদারি করিত, তাহাকে জব্দ সাহেব অভিশর গ্রবশ্যকের গোরেশা থাতিরদারি করিয়া প্রধান গোরেশাতে

নিরোগ নিযুক্ত করিরা, বদমারেণ, শুণ্ডা এবং পুলাতক পদাতিকগণকে ধৃত করিতে অসমতি প্রদান করিলেন এবং বোষণা-পত্র বারা সর্বাত্ত বারণা দিলেন, যে (ব্যক্তি) সরকারের জনিষ্ট- कांत्री भगिकिकारनंत्र रकांन त्रकरम माहाया कतिरव, कि छाहाँ-দিগকে চাকর রাখিবে তাঁহাদিগের এবং প্রকাগণের লুঠ ইত্যাদি করিবে, কি যুদ্ধ বিষয়ে মিখা। গল্প করিবে, অথবা সরকার বাহাছরের রাজ্যের ব্যাঘাতের চেষ্টা—অন্তরে থাকুক বা না থাকুক, যদি মূথে বলে, কোম্পানির রাজ্য গেল—তৎক্ষণাৎ তাহার ফাঁদী হইবে । এই সকল ছকুম জারি হওয়াতে সকলে ভরুদা পাইয়া কর্মকার্য্য করিতে লাগিল। যে যেখানে উপরোক্ত ব্যক্তিদিগের অমুসন্ধান পাইতেছে, তৎক্ষণীৎ জ্ঞাত করিতেছে। দারগা ইত্যাদি পুলিস আমলাগণ যাইয়া তাহাদিগকে ধৃত করিয়া মাজিইরের নিকট পাঠাইতেছে। তাহাদিগকে দোরী জানিতে পারিলেই প্রাণ নষ্ট করিতে আর<sup>\*</sup>ভ হইন। এই মত শত শত ব্যক্তির প্রাণহত্যা इंडेएक्ट । वनकेवि शनीतात्र माश्रा योशात्रा योशात्रा नम्श्री खलात्व উপস্ত্রীর বশ জন্য প্লাইতে পারে নাই, তাহারা গোয়েনা দারা গ্রেপ্তার হইরা ফাঁদী পড়িয়াছে। আর কাশীর পার্যবতী গ্রাম ্সকলে দ্ব্যুগণ · · · · · হইয়া রাস্তা ঘাটে সকলের নুঠ ফসাদ করিতেছে। তাহাদিগের যথন যাহাকে পাইতেছে ভাহাকে আনিয়া ফাঁসী দিতেছে। এত শাসনেও (বিদ্রোহ) নিবুত্ত হয় না. ৰবং দিন দিন বৃদ্ধি পাইতেছে।

বে সমস্ত বাঙ্গালি এবং কিরিঙ্গি কেরাণী ও অন্ত অন্ত কর্ম-কারকগণ জৌনপুরে ছন্মবেশে ছিলেন, তাঁহারা পথের ভয়ানক ব্যাপার জন্ত কেহ আদিতে পারেন না। এথানে অর্থাৎ কাশীতে কাহার পিতা, কাহার ভাতা, কাহার মাতুল, কাহার খণ্ডর, অই মত অনেকের আছে। তাহারা ব্যাকুল হইরা কাশীক্ষক গবিষ্ঠা সাহেবকে কানাইলে ছই শত গোরা, পাঁচ

হক্তী এবং কালেক্টর সাহেব জৌনপুর যাইয়া সেথানে বজ বালালি ছল্মবেশে ছিলেন এবং ফিরিলিদিগের মর মর অবেষণ করিলা সকলকে একএ করিলা ১৮ জুন বেনারসে নিরুদ্বেগ পছছিরা দিরাছেন। তথাকার সহর জিলা ভল্ল হইরা উৎছল্ল হইরাছে, তথাকার জমিদার ... সকল ভারাপণ করিলা আসিরাছেন।

গোরধপুরের দৈঞ্গণ এই ১মত বেদেশ হইয়া থাজনা লুঠিয়া, সাহেবদিগকে হভাহত করিয়া, ছাউনী জালাইয়া দিয়া গমন করিয়াছে। অফুমান, দিলী যাইয়া পণ্টনের সহিত একত্র হইয়া বাদসাহের পানাপোতীতে আছে।

পণ্টনেরা এই মত ব্যবহার করাতে বেং সম্ম \cdots 🕠

এই সংবাদে নেপালাধিপতির প্রধান সেনাপতি প্রীযুক্ত জব্ব বাহাত্ত্ব দশ সহস্র সেনা লইয়া পর্কত হইতে নীচে নামিয়া আপন রাজ্য রক্ষার্থ রহিলেন। কিন্তু জব্ব বাহাত্ত্ব নীচে ছাউনী করাতে দক্ষাগণের প্রবশতা স্বল্ল হইয়াছে।

জৌনপুরের সহর, বাজার এবং পথিকগণের গতারাত বন্ধ হওরাতে, সকল প্রজাবর্গের অতিশর কট হর্জনাতে আহারের জ্ব্যাদি না পাওয়াতে প্রাণ্যকা হওয়া কঠিন জানিয়া তথাকার ধার্মিক বর্দ্ধিক্ কালিসাহের, তেঁচ আপন লোক ছারা
া গোনপুরের সোহরত দেওরাইলেন,—"মুলুকপতি সাহার
ভালিসাহেত্রের ঘোনা। তুকুম পঞ্চ জনার সকলে হাটবাজার-দোকান
পূর্ব মত খুলিরা ক্রম্ববিক্রীর করহ, কেহ কাহার প্রতি জনিট
করিত্রে পারিবে না। বে ইহার বিপরীত করিবে, পঞ্চ-বিচারে
দে ব্যক্তি দণ্ডিত হইবে। যিনি রাজ্যাধিপতি হইবেন, তাঁহার
নিকটে দণ্ড প্রাপ্ত ইইবে।" এইরুপ করিয়া বাজারের দোকানাদি
খোলাইরা সকলের হিউ করিয়াছেন, আর কেহ কাহার প্রতি
হঠাৎ অনিষ্ট করিতে পারিবে না।

অবোধ্যার সিংহাদনের রাজাদিগের মধ্যে মানসিংহ নামে এক রাজপুত্র (ছিলেন)। তেঁহ কতগুলি স্থাবংশীর ক্ষত্তিয় এবং দশ সহস্র দৈশ্য লইয়া জোনপুরে ছাউনী করিয়া আছেন, কেহ প্রজাগণের অনিষ্ঠ করিতে না পারে। যে সকল অনিষ্ঠকারী ছিল, তাহাদিগকে আপন বশীভূত করিয়া রাথিয়াছেন, কি মননে আছেন, তাহা প্রকাশ হয় না, ছই পক্ষেই সম্প্রীতি রাথিতেছেন। এ পর্যান্ত কোম্পানি বাহাছ্রের সহিত অহিতাচার করেন নাই, কেবল কহিতেছেন — "দেশের কেহ অনিষ্ঠ করিতে না পারে, এই জন্ম আৰি রহিলাম।"

এলাহাবাদের ছাউনীতে গোরাদৈন্তগণ এবং দেনাপতি সাহেব-গণ আর শিথদৈন্ত এক দল ছিল, কেলার মধ্যে ৬ নম্বরের দেশীর পদাতিক এক দল ছিল, ঐ পদাতিকগণ কেলা এবং থাজনা (৬) মেগাজিন রক্ষা করিয়াছিল।

··· জুন তারিখে এলাহাবাদের সরকারি থাজনা সুঠিয়া এবং কেলা হইতে গুলি গোলা বারুদ সইয়া, সেনাপতিদিগকে এবং আর আর অনেক কর্মকারক সাহেবদিগ্নকে হতাহত করিয়া ্ণলালারাদের সরভারি ছাউনী বাঙ্গালা সকল এবং পোষ্টাফিস ও খাগৰা লুঠ ডাক্তারথানা ইত্যাদি আলাইয়া রণোমত হইয়া (বিদ্রোহিগণ) চতুপার্শে ভ্রমণ করিয়া বেড়াইতে লাগিল-যেমন মুগেকু গজেকু আহেষণে ভ্রমণ করে তজ্ঞপ। ... . .--পদাতিকগণ · · দিগের অন্বেষণ করিতেছে। এই অবসরে যে সমস্ত সাহেব ও গোরা এবং বিবি ইত্যাদি পরিবারগণ জীবৎ-মান ছিল, সকলে কেলার ভিতরে প্রবিষ্ট ইইয়া ছার ক্ষ করিল। শিথ-পণ্টন রক্ষার্থ রহিল। ৬নং পদাতিকগণের এতাদুশ প্রবল পরাক্রম সেনাপতিদিগের প্রতি দেখিয়া, তথাকার বাসিন্দা অষ্টাদশ শত প্রধাগী একবোগ হইয়া এবং মীর সাহেব নামে এক মুদলমান, ছই হাজার স্বজাতি এবং ছই হাজার মেওয়াতি সমভাারে সহযোগী হইয়া পদাতিকগণের সহিত একত হইয়া কোম্পানি বাহাত্রকে রাজ্যভ্রষ্ট করিতে সম্পূর্ণ চেষ্টিত হইল। রাজপুরুষগণ শুপ্রভাবে থাকাতে অরাজক হওয়াতে দন্তাগণ, (৪) জমিদার আপন আপন দলবল লইয়া, গ্রাম সকল লঠ করিতে লাগিল। গ্রামে গ্রামে যে সমস্ত ক্ষতিয় রাজপুত জমিদারগণ (ছিল), তাহারা জ্মায়তবস্ত হইয়া স্থানে স্থাংন রহিল, এই মত প্রশ্নাগ হইতে বৈঞ্চবঘাটী গোপীগঞ্জের পশ্চিম তিন ক্রোশ পর্যান্ত। যে কেহ এই পথে গতায়াত করিতেছে, তাহারই প্রাণদত। কিবা যদি ইংরাজের রাজ্য বলিয়া মুথে আনিয়াছে. তৎক্ষণাৎ তাহার মন্তক ছেদন করিয়াছে। এইরূপ ভ্রানক ব্যাপার হইয়া ভাকাদি সকল পথ কক করিয়াছিল। এলাহাবাদ সহর মধ্যে মীর সাহেব আর মৌলবী সাহেবের ভুকুম প্রাচ-

লিত। নগর মধ্যে একত ঘোষণা দিলেক যে, মুলুক বাদসাহের ছকুম—মীর ও মৌলবী সাহেবের (এবং) হিলু ও মুসলমানিদিগের দিল রক্ষা জন্ত সকলে শর্পারী ইইরা ফিরিজির দলবল বিনাশ কর। এই মত চেটরা দিরা রণোনাত ইইরা হাট বাজার সহর পোলাগঞ্জ পথ ঘাট সকল লুঠ তরাজ করিতে লাগিল। গলা ও যমুনা ছই স্থানে যে হুই নৌকার দেতু ছিল, তাহাও ছেদন করিয়া দিল, তাহার কারণ কোম্পানি বাহাছ্রের সৈক্তাদি না পার ইইরা এলাহাবাদের কেলাতে প্রবিষ্ট ইইতে পারে। কেলার চতুম্পার্শে বেষ্টিত ইইরা উপরোক্ত সকলে রহিল। কেলার ঘার কোন-ক্রমে কেই প্রিয়া কিছু উপার করিতে না পারে। এই সকল ব্যক্তি কেলার ভিতর প্রবেশ করিয়া সকলকে বিনাশ করিয়া কেলা দ্বলের সম্পূর্ণ চেষ্টার ছিল।

বে সমস্ত গোরা-দৈক্ত কেলার মধ্যে ছিল, তাহারা যুদ্ধর
কিছুই উপার পার না। কেলার মূরচা হইতে তোপ করিলে
বিপক্ষ বিনাশ হয় না। ইহা দেখিয়া নিস্তকে কেলা মধ্যে
কিছুল।

বে সমস্ত সৈন্য পদবজে এলাহাবাদ যাইতেছে, তাহারা গোপীগঞ্জ পর্যান্ত গমন করে। তাহার অর্থ্যে গেলে একেবারে ছম সাত হালার মহুষ্য বন্দ্করারী আসিয়া বে স্বর সৈন্য যায়, তাহা নিপাত করিবার সন্তাবনা হয়। এজন্য সেনা-পতিগণ বিবেচনা করিয়া গোপীগঞ্জে গোরা-লাইন করিলেন। মধন হত গোরা পদবজে কাশী হইতে গমন করে, গোপীগঞ্জে একত্র হয়। এই মত ক্রমে ক্রমে এক হালার গোরা গোপী-গঞ্জে রহিল, তাহাদের প্রতি কিছু দৌরাস্থ্য নাই।

ষ্টিমারে যে গোরা-সৈন্য এলাহাবাদ শ্বাঠান হইতেছে, তাহাদিগের জাহাজ এলাহাবাদের পারে যাইতে দেয় না। তীরে
তীরে সহত্র সহত্র বন্দুকধারী ত্রমণ করিতেছে। এক এক
ষ্টিমারে ছই শত আড়াই শত গোরা যায়, ইহারা দশ সহত্র
সৈন্য মধ্যে কি করিবে ? ইহা বিবেচনা করিয়া ঝুশী গলার
পার তথায় রহিল। ক্রমে শত স্থীমারে সৈন্যগণ এক আ হইয়া
রহিল।

এখানে পদাতিকগণ চার পাঁচ দিবঁদ পর্যান্ত এলাহাবাদ সহরে ছিল, পরে তাহারা গোরা সৈন্যের আমদানি দেখিয়া তথা হইতে লক্ষ্মে মথে যাত্রা করিল। কেবল তদ্দেশীয় ব্যক্তিগণ জ্মায়েত হইয়া একাদশ দিবদ প্রয়ন্ত অতিশয় প্রাবল প্রতাপে ভয়ানক করিয়া ছকুম ইত্যাদি চালাইয়া দ্থল করিয়া শিখ-নৈজ্ঞের উত্তেজনা লইয়াছিল। যথন সরকার বাহাছুরের বার শত গোরা দৈন্য একত হইল এবং সেনা-পতিগণ সেনাদিগের নিকটম্থ হইয়া বিবেচনা করিলেন যে, এ ছষ্ট দ্স্যাগণের এত বৃদ্ধি রাখা আমার ভাল হয় না। তথন একজন ছন্মবেশীকে কেল্লাতে সংবাদ জন্য পত্র লিখিয়া প্রেরণ করিলেন। দে ব্যক্তি আতৃরের বেশ ধারণ করিয়া পদে অনেক ছেঁড়া কাপড় ও চট জড়াইয়া কৌপীন করক লইয়া ভক্ষভূষণ করিয়া নানা ছলেতে কেলার নিক্টভ হইয়া কৌশলে ছারপালকে পতা দিল। এতদ্বারা সাহেবদিগের নিকট প্রছিল। তথা হইতে যে সাঙ্কে-ভিক পত্ত দিলেন, ঐ ছন্মবেশী লইয়া আসিল। ইতোমধ্যে বে শিথ-দৈন্যগণ কেলার ঘারপাল ছিল, তাহার একজন বাজারে व्यानिशाहित। তাहारक अकाकी अदः नित्रश्च मिविशो भीत सोन्दीत

বাজিগণ আসিয়া শুলির ক্লারা হত করিল। এই সংবাদ শিখপন্টলে হটল। ভাহারা তৎক্ষণাৎ কেলার সেনাপতি সাহেবকে কচিল যে. "কি আপাত্র্য। আমাদের পণ্টন জীবিতমান থাকিতে চাবা-গণে একজন দোনাকে মারিল। অতএব চকুম দেন যে, আমরা এ সকল ব্যক্তিকে মারিব।", এই কথা শুনিয়া তিনি কহিলেন, "তোমরা পারিবে ?" শিখদল সকলেই কছিল, "কি বিচিত্র কথা। কণ্মাত্রে সকল বিনাশ করিব।" এই কথা শুনিয়া কহিলেন, "আছো তোমরা স্থদজ্জিত হও। <sup>®</sup> বে পোরা কেলাতে আছে, ইহারাও তোপ লইরা পশ্চাতে যাইতেছে। আর ঝুনী হইতে গোরাগণ নীম প্রছিবে। গোপীগঞ্জের গোরাগণ অগ্রগামী হইয়াছে, পুল ভর জন্ত পারের কট আছে। তাহাও শোধরান আবশুক। দে সকল গোরা-দৈল্প দে সব পথ থোঁলসা করিয়া তীরে প্রছিলেই হইবে।" এই কথা প্রবর্ণমাত্রে শিখনৈজ্ঞদল রণদজ্জা করিয়া কেলার বাহির হইয়া যেমত অজাপালে মুগেল প্রবিষ্ট হইয়া বিনাশ করে. ভদ্রপ শিথগণ গ্রাম্য যোদ্ধাগণের প্রতি আক্রমণ করিল। গ্রাম্য ূ সিপাহীগণ কমবেশ দশ সহল্ৰ একত্ৰ হইয়া শিথ ও সিপাহীগণে মুদ্ধ বুদ্ধ-সক্ষাতে উপস্থিত হইয়া উভয় দলে ংঘারতর বিণ আরম্ভ হইল। ছই দলের বন্দুকের শব্দে কভ মন্থার কর্ণে তালা লাগিল। গুলির সন্দনানি, তলোয়ারের চপ্চপ্, সঙ্গীনের আঘাতের শব্দে সকলে স্তব্ধ হইয়া দেহে প্রাণমাত্র অনেকের ছিল। শিথগণ রণোঝাদ হইয়া দিক্বিদিক্-জ্ঞান না করিয়া<কেবল হনুহন শব্দে গ্রাম্য বোদ্ধাপণকে নিপাত করিতেছে। যাদৃশ অভাগণকে শার্দ নট করে, তজ্ঞপ ইহাদের ক্ষিরে রদভূমিতে লোত বহিরাছিল। বিবেণী বিধারা ছিল, ভারাতে

আক্রর সা কাম্যক্পের উপর কেরা করার সরস্থতীধারা অংশভাবে আসিতেছে। ঐ স্থলে ক্ষির-ধারা প্রবল হইরা ঐ দিবস চতুর্ধারা হইরাছিল। এ ধারাতে ত্রিবিধ প্রকার ব্বল কানা বাইন্ড। রক্তধারা মিশ্রিত হইলে পর সকল ধারা গোপন হইরা রক্তধারা প্রবল হইরা বহিতে লাগিল। শিখগণ রাজনীত্যস্পারে ধছর্কেদে স্থানিক্ত, রণপণ্ডিত। ইহাদের সন্মুথে প্রাম্য নির্কোধ ছঠ হ্রাচার যোরাগণ কি যুদ্ধ করিয়া ব্রন্থী হইবে । কেবল মনে করিয়াছিল, নবাবী রাজ্য হইলে পূর্ব্ধনত লুঠ করিয়া লইয়া ধাইব। বাহার লোকবল অধিক থাকিবে, তাহারই রাজ্যপদ। কিন্তু জ্বাদীখর তাঁহার স্ক্র বিচার করায় এই অনিট্রকারী হ্রাচারী ব্যক্তিগণ অঘটন ঘটন আশাতে প্রাণ-আশা পরিত্যাগ করিয়া শিণহন্তে বহু ব্যক্তি রণভূমিতে ক্ষির-সজ্জার শয়ন করিয়া মহানিক্রার নির্দ্ধিত হইল। কতকগুলি সৈত্য এবং মীরসাহেব পলায়ন করিল।

এখালে শিখগণ এইরপ বীরত্ব প্রকাশ করিতেছে, ওখানে

অর্থানি ও জব্যানি সমুখে পাইল তাছা ... । গোলা-নিক্ষেপে বছ প্রাণী নষ্ট হইল। কিন্তু মীরসাহেব আপন প্রাণ লইয়া পলায়ন করিল।

(গোরাগুণ) সহরের তথনেক বাজারাদি ... দারাগঞ্জমুখে যাত্রা করিতেছিল। দারাগঞ্জনিবাদী পিক্ষল নামে একজন
ধনী ব্যক্তিদেনাপতিদিগের নিকট নানা প্রকার
ভাতবাকা কহিবাতে দারাগঞ্জ রক্ষা পাইল।
ভাহার কারণ ঐ ধনী ঝুক্তি সরকার বাহাহ্রের হিভার্থে দৈশ্রদিগের রুদদ জ্লু টাকা এবং গ্ম অনেক দিয়াছে, এ কারণ ভাহার
বাসস্থান রক্ষা পাইল। কিন্তু ভাহার নিকট যে সমস্ত বদমারেসের
ঘর ছিল, ভাহার মূল সমেত উৎপাটন করিয়া গলাজলে নিক্ষেপ
করিতে আরম্ভ করিল। ঐ দিবস ঐক্রপ মহামার করিয়া রণজর
হঠয়া মহানন্দে কেলা মধ্যে বহিল।

এথানে ঝুশী ও গোপীগঞ্জ হইতে গোরাগণ অথিবাণ
নিক্ষেপ করিতে করিতে · · · দগ্ধ করিয়া এবং দ্ব্যুগণকে
শুলিগোলা অন্ধ হারা নিপাত করিতে করিতে
দারাগঞ্জের পূল ভল
আনিতেছে । তমুধ্যে পঞ্চাশ জন গোরা
কেরাচিহত সওয়ার হইয়া শীঘ্র প্রয়াগের কেলাতে পছছিবার জন্ত
আইল। রেতির উপর অর্থাৎ বালুকাময় ভূমিতে কেরাচি না
চলাতে ঝুশীর নিকট রাখিয়া গোরাগণ বেলা ছই প্রহরের সময় প্র
বালুকাতে গমন করিয়া প্লের নিকট আদিয়া পছছিবামাত্র
দারাগ্রের মুন্সী পূল কাটিয়া দিলেক। গোরাগণ পার হইতে
গারিল না। প্রীপ্লের উপর আদিয়া নৌকা জন্ত মাঝিগণক
অনেক মত ভাকাভাকি করিতে লাগিল। কোনও জন্ম কালাকেও

মিলিল না। পরে তীরে তীরে দেখিতে দেখিতে কতক দূরে এক নৌকা দেখিতে পাইল। ঐ নৌকার নিকট বাইয়া দেখিল ভাহাতে নাবিক নাই। তথাচ ঐ নৌকাতে উঠিয়া নাবিকের ব্লুছ ভলাশ করিল। কোনমতে পাইল না। পরে আপনারা ঐ নৌকা বাহিতে লাগিল। কিন্তু জলস্রোতে কেল্লার পারে প্রছিল, না-ষে তীরে উঠিয়াছিল, ঐ তীরে পুৰরায় গেল। তাহা দেখিয়া গোরাগণ নৌকা হইতে তীরে নামিয়া রেতি 'পরে ভ্রমণ করিতে করিতে অভিশয় কেশযক্ত হইয়া কংপিপানীয় কভির হইল। এজন্ত আপন আপন কটা কেরাচিতে ছিল, তাহা আহার জ্বল গাডীর নিকট গমন করিল। তথা ঘাইয়া দেখিল, গাড়ীতে যে সমস্ত জব্যাদি ছিল সকল ঝুশিবাসী লোকগণ লুঠ ক্রিয়া লইয়া গিয়াছে। তাহা দেখিয়া দ্বিশুণ চঃখিত হইল। একে বালুকাময় ভূমি. ভ্রমণের ক্লেশ, তাহাতে ক্ল্পেপাসাতে ক্লাস্ক, পরে যে সমস্ত দ্রুব্যাদি ছিল তাহা লুঠ হইল, ইহাতে সকলেই ছঃখিত। একজন গোৱা দর্দিগর্ণিতে প্রাণত্যাগ করিল। স্থার সকলে তথা হইতে ছারা দেথিয়া পুরাণ ঝুশী গ্রামে বুক্ষতলে রহিল। তথাকার ব্যক্তিগণকে কহিল, 'শীতল জল দাও।' তাহারা অতি সুশীতল জল এবং কটী লইয়া সকলে উপস্থিত হইল। গোরাগণ কেবল জলপান করিল, আবার কিছু গ্রহণ করিল না। পরে তাহারা অবলকাল বিশ্রাম করিয়া পুনর্বার কেলার ঘাইবার জ্ঞাপার হইবার উপায় দেখিতে তীরে তীরে ভ্রমণ করিতে লাগিল। দেখিতে দেখিতে নজর হইল যে. দুরে এক ষ্টিমার আছে। ঐ স্থানে সকলে গমন করিয়া ষ্টিমারে সওয়ার হইয়া কেলাতে প্রছিল। এত ক্লেশে কেলায় যাইয়া কাপ্তেন সাহেবকে কহিল, "পার হইতে (গিয়া) যুদ্ধের চতুর্গুণ ক্লেশ হইল।

এত ক্লেশ দিবার মূলাধার দারাগঞ্জের প্রকাগণ। আমাদিগকে পুলের ধারে দেখিবামাত পুল ভালিয়া দিল। যদি অগ্রে এই ছষ্টগণের জ্ঞার ঝুশীর দত্মগণের দমন হর, তবে আমাদের জঃখ-মোচন হইবে, নচেৎ তোমীদের আর রাজ্যশাসন অসম্ভব হইবে।" এই কথা ভনিয়া দকল সাহেবগণে যুক্তি করিয়া প্রয়োজন মত ছুকুম দিলেন। ... ... এই ছুকুম হওয়াতে পোরাগণ প্রাতে উঠিয়া কেলার মুরচা ইইতে প্রথমে চারি পাঁচ গোলা নিক্ষেপ করিল, পরে ক্মান গুলি-গোলা বন্দুক ও কিরিচ ইত্যাদি শক্তধারী হইরা দারাগঞ্জে প্রবেশ করিয়া · · · · গ্রামে পলার্থন করিল। ইহাতে প্রায় শত শত ব্যক্তির প্রাণত্যাগ হইল। ··· °ইহা দেখিয়া দারাগঞ্জনিবাদী পিকুষল বিবেচনা করিল, কাপ্তেন সাহেবের গোচর ভিন্ন রক্ষার অন্ত উপায় নাই। তাহার পর শুনিল যে, কাপ্তেন সাহেব পুল ৰান্ধাইবার জ্বন্ত পুলের নিকট আসিয়াছেন। পিক্রমল গলবস্ত্র হইয়া সাহেবদিগকে জানাইল যে. "হে ধর্মাবভার! অত্যে আমার প্রাণ নষ্ট কর, পরে · · · · প্রজাগণের প্রাণ হরণ কর, নচেৎ আমি ভোমাদিগের সম্বাধ আবাহত্যা হইব।" ইহা শুনিয়া সাহেবগণ ভাহাকে প্রবোধ বাক্যে কহিলেন যে. "এক মুন্দীকৃত অপরাধে দারাগঞ্জের সকল প্রজার ধনপ্রাণ নষ্ট করা ভাল হয় না। বে কেছ অপরাধী থাকিবে পশ্চাৎ দেখা বাইবে।" ইহা মাজিইর ও সেনাপতি সাভেবলিগতে কঢ়াতে তৎক্ষণাৎ বিউগিলের ধ্বনি করিবামাত্র গোরাগণ বে বেখানে বে কর্ম্বেছিল, তাহা ত্যাগ করিয়া সেনাপতির নিক্ট

প্রছিল। সেনাপতি সাহেব দৈঞ্জণকে স্থাছির করিয়া দারাগঞ্চ ভিন্ন অন্ত দিক্ গমন করিতে হকুম দিলেন। পিকমল দৈঞ্জদিগের অন্ত তিন লক্ষ মণ রসদ অব্যাদি দিল। তাহাতে তাহার প্রতি সাহেবগণ বড় সম্ভট হইলেন।

এখানে গোরা ও শিখগণ সহর 🐺 · · সরাইয়ের ভিতরে আইবিট হটয়া দেখিল যে, মৌলবী সাহেব কম বেশ পাঁচ হাজার মুসলমান সৈক্ত (একত করিয়াছে), 'তাহাদের যুদ্ধসঙ্জা ঢাল তরবারি আর বরদি এবং কাহারও বন্দুক আছে। "ইহা' দেখিয়া দরাইয়ের ছারে উপস্থিত হইয়া দেখিল ছারক্তম করিয়াছে। তৎক্ষণাৎ ছই তোপে দ্বার ভাঙ্গিয়া ভিতরে প্রবিষ্ট হইয়া মৌলবীকে গ্রেপ্তার করিতে ষাইবার উদ্যোগ করাতে মুসলমান দৈলগণ যুদ্ধে প্রবৃত হইয়া মহারণ করিল। প্রথম দিবদ মৌলবীর প্রায় ছই শত দৈল্ল হত করিয়া গোরাগণ পিছিয়া আইল। পর দিবস যুদ্ধে যাইয়া প্রায় ছই প্রহর পৰ্যায়ৰ যোৱ যুদ্ধ হইয়াছিল, তাহাতে সাত আটে শত ব্যক্তি রুণে পতিত হয়। তাহার পর গোরাগণ কেলাতে আইদে। পরে ভূতীয় দিবস মুসলমান এবং মেওয়াতি সৈঞ্চগণ পুনর্কার স্থা বেশ করিয়া যুদ্ধ স্থলে আসিয়া প্রস্তুত হইয়াছে। কেলা হইতে শিথ ও গোরাগণ যুদ্ধ সজ্জা করিয়া ঐ সরাই-রণছলে আসিয়া যুদ্ধারস্ত কবিল। প্রথমে মৌলবীর সেনাগণ গুলি নিক্ষেপ করিতে আরম্ভ করিল। গোরাগণ পশ্চাতে থাকিয়া শিথদিগকে অগ্রগামী করিয়া উভয় পক্ষের শুলি এবং তরবারিতে ঘোরতর যুদ্ধ হইতে হইতে প্রায় দিবা ছুই প্রহর গত হইল, শিখগণ মৌলবীর বৃহদৈয় মিপাত করিল। ইহা দেখিয়া মেওয়াতি দল একেবারে আক্রমণ ্করিয়া শিথ্রসৈনা নিপাত জনা ব্ছমত উপায় ফরিল। তথ্ন গোহাগণ গোলা নিক্ষেপু ছারা মৌলবীর সকল সেনা হাত করিয়া
ভাহাকে যুত করিতে সন্ধান করিল। মৌলবী তথা হইতে
ছানাস্তরে পলায়ন করিল। মৌলবীকে না পাইয়া সাহেবগণ
ঘোষণা করিয়া দিলেন যে, হুম কেহ মৌলুবীকে যুত করিয়া দিবেক,
ভাহাকে পাচ শত টাকা প্রিভোষিক দেওয়া বাইবে।

এই মত যুদ্ধাদি করিয়া প্রয়াগের ছষ্টগণ নিপাত করিয়া, প্রয়াগী-দিগের মধ্যে যাহারা হুইতা করিনা সরকারের অনিষ্ঠ করিতেছিল, <sup>©</sup> তাহার মধ্যে যাহাকে যেখানে পাইতেছে বিজ্ঞোহিগণের শাদন লইয়া · · · · · যাইতেছে। এইরূপ শাদন প্রয়াগ হইতে কাশী পর্য্যন্ত করিয়া পথের কণ্টক ঘুচাইয়া ডাক চালাইতে 'ক্ষুক করিয়াছে। প্রয়াগ হইতে দশ ক্রোশ পর্যাম্ব চতুদ্দিকে যে সমস্ত গ্রাম আছে, তাহা প্রতি দিবস এক ছই করিয়া গ্রাম গোরাগণ ... বশে আনিতে লাগিল। ... প্রাম সকল ছিল্ল ভিল্ল হইরা মনুষ্য সকল দেশান্তরী হইরা গেল। প্রয়াগে যে সমস্ত বাঙ্গালী ছিলেন, তাঁহাদিগের প্রাণের আঘাত হয় নাই, বিষয় বাহা যে গোপন করিতে পারিয়াছিল তাহারই আছে, নচেৎ সকল দুঠ হুইয়া যায়। ভোজনপাত্ত জলপাত্তবিহীন হট্যা আপন আপন স্ত্রীপত্ত পরিবার সকলে এক বস্তু পরিধানে স্থানে স্থানে গোপনে থাকিয়া সকলে প্রাণরক্ষা করিয়াছে। গোল-এবানী বালালীগণের যোগ নিবারণ হইবার পর সকলে আসিয়া দারাগঞ্জোছেন। প্রয়াগের সব্ এসিষ্টাণ্ট সার্জেন্ তারাচাদ চক্রবর্তী বৎকালে দেশীয় পদাতিকগণ দৌরাক্ষ্য

ক্রিতে প্রবৃত্ত 'ইইল, তৎকালে তেঁহ ডাব্রুরিখানাতে ছিলেন। পদাতিকগণ ভীষণ মুর্ত্তিতে ডাব্রুরিখানার ভিতর প্রবিষ্ট হইয়া, বৈ দক্ষ ঔষধ ছিল, তাহা ভালিয়া ছুড়াইয়া ভছরূপ করিয়া চক্রবর্ত্তী ডাব্রুলারের উপর আঘাত করিতে পাঁচ ছয় জন সিপাহ্রী বন্দুক ও তরবারি লইয়া মার মার শব্দে সন্মুবেণ দাঁড়াইয়া ঘূর্ণিত লোচনে বিকট দশনে যমুদ্তের ন্যায় রহিল। তথন চক্রবর্ত্তী পদাতিকগণের পদানত হইয়া কহিলেন, "দেখ আমি ব্রাহ্মণ, আমার প্রাণদণ্ড করিলে তোমাদের কি লাভ হইবে। বরং বন্ধ-হত্যার পাণগ্রস্ত হইবে।" এই মত স্বস্তুতি করাতে তাহারা প্রাণদণ্ড কাস্ত হইয়া কহিল, "তোমার খাহা 'অর্থ এবং বাদায় ক্রবাদি আছে, সকল রাথিয়া একবন্ধ পরিধান করিয়া যাও।" (তিনি) তাহাই করিয়া প্রাণ লইয়া পলাইয়া গলাইয়া গ্রপ্রবেশে ছিলেন, ডাক্তার্থানা আলাইয়া দিয়া গেল।

ভিপ্টী পোষ্ট মাষ্টার বিশ্বনাথ দে "দেখিল বে, পদাতিকগণ সাহেবদিগের প্রাণধন হরণ (ও) বাঙ্গালা দাহন করিতে করিতে আসিতেছে। ইহা দেখিয়া বাঙ্গালা হইতে বাহির হইরা এক বস্ত্র পরিধানে কেলা প্রবিষ্ট হইয়া প্রাণরক্ষা করিল। এইমত সকলেনানা উপারে প্রাণরক্ষা করিয়াছিল। বাহাদিগের পরিবার সমভ্যারে ছিল, তাহাদিগের তৎকালে কি বিপদ্ উপস্থিত হইয়াছিল, তাহা অন্যে কি জানিতে পারিবে। বাহারা এ বিপদে বিপদ্গান্ত হইয়াছে, সেই জানে। হরি হরি এমত বিপদ কাহারও বেন না হয়।

সরকার বাহাত্রের সেনাপতিগণ সৈন্য ছারা পথের কণ্টক ঘুচাইরা প্রেরাগ হইতে ডাক গমনাগমনের পথ থোলসা করিরা নিকণ্টক করিয়াছিলেন। পরে গোপীগঞ্জের সরহক মধ্যে (ও) ভদই শুরগণার মধ্যে বে সমস্ত রঘুবংশীর ক্ষত্রিয় ক্ষমিরগণ আছে, তাহারা যুক্ত করিয়া ২য়ৢা জুলাই তারিথে প্রস্থাপের তাক মারে এবং পথিকদিগের প্রতি দোরাত্মা করে। এ সংবাদ মির্জ্জাপ্রের মাজিটর মোর সাহেব শুনিয়া সরে-জমিনতে বল গোরা আর দেশীয় পদাতিক থানা হইতে সমভ্যারে লইয়া তৎস্থলে বিশিষ্ট তদারক করিয়া দেখিলেন, রম্বুবংশী জমিদারগণ হইতে অনিষ্ট হইতেছে। (তিনি) তাহাদিগকে ধৃত করিবার জন্য উপায় করিতে লাগিলেন। তাহারা পলাতক হইল,তাহাদের প্রধান জমিদার গ্রেপ্তার হইল। গবর্ণমেন্ট হল আইনের ক্ষমতাহসারে তৎক্ষণাৎ অনিষ্টকারী জমিদারকে কাঁদি দিলেন, বক্রী ব্যক্তিগণকে ধৃত করিবার জন্য অস্চুচুরগণ ভ্রমণ করিতে রহিল। •

এখানে যে বাক্তিকে গলরজ্জু বারা হত করিয়ছিলেন, ভাহার স্ত্রী লক্ষোর বাদীন্দার কঞা। সেই স্ত্রী আপন লাভ্গণকে সংবাদ পাঠাইয়াছিলেন বে, "আমি মোর সাহেবকর্তৃক বিধবা হইয়াছি, আমার পতিকে অবিচারে বধ করিয়াছে! বদি তোমরা আমার লাতা হও, তবে ইহার উচিত দশু মোর সাহেবকে দিবে। তাহা হইলে আমার মনোহঃথ যাইবে, নচেৎ আমিও প্রাণ পরিত্যাগ করিব।" এ সংবাদ পাইয়া ঐ বিধবার লাভ্বর্গ আপন রম্বংশীগশকে একত্র করিয়া প্রায় তিন শত বন্দুকধারী ভদই যাত্রা করিল।

মোর সাহেবের অন্নতরগণ অন্নদ্ধান করিয়া ৪ জুলাই
মাজিটর সাহেবকে সংবাদ করে, তাহাতে মাজিটর মোর সাহেব
আর ভূপুটী মাজিটর সাহেব দশ জন গোরা আর থানার পদাতিকদিগকে লইষা ঐ হত জমিদারের ছই তাতাকে গ্রেপ্তার
করিয়া গোপীগঞ্জে নীলকর সাহেবের বালালাতে আসিয়া ধানা

थारेवात्र डेट्यार्ग हिल्लन। ५७ इंड्रे व्यक्ति मृह्वस्त भूमा-তিকগণের হস্তে রহিল। এমতকালে লক্ষ্মে হইতে রঘুবংশীগণ ঐ মৃত জমিদারের বাটীতে আদিয়া শুনিল যে, তাহার ছই ভ্রাতাকে ফাঁদী দিবার জন্ম লইয়া গিয়াছে। 'তাহাদের পুত্র ও ভ্রাতৃষ্প ত্র ও পৌত্রে আঠার জন, সকলে বলিষ্ঠ, হর্মল কেছ ছিল না, ইহারা আপন রঘুবংশী ক্ষত্তিগণের নিকট যাইয়া কহিল বে. "আমাদের আর রুথা জীবন ধারণ, যথন আমাদের পিতা-পিতৃব্যগণকে বধ করিল, তথন আমাদিগকেও আর রাখিবে না। যাহাকে পাইবে তাহাকে ধরিয়া ফাঁসি দিবেক, অতএব আমাদের বিবেচনাতে এমত ফাঁদীতে মরা অপেকা বৃদ্ধ করিয়া প্রাণত্যাগ করা ভাল।" এই কথা ভনিয়া প্রায় বার শত রঘুবংশী কহিল যে, "একঁথা প্রামাণ্য বটে. যথন যাহাকে যেথানে পাইবে তাহাকেই ফাঁদী দিবেক, অত-এব চল সকলে ফিরিঙ্গির সহিত লভিব।" এই কথাতে দশ বার গ্রামের সকল মহুষ্য পঞ্চায়তে ঐক্য হইয়া আপন আপন যুদ্ধের অক্রাদি লইয়া প্রস্তুত হইল। লক্ষ্ণো হইতে যে সকল বন্দুকধারী আসিয়াছিল তাহারা একযোগ হইয়া কোলাহল শব্দে গোপীগঞ নীলকর সাহেবের বাঙ্গালার মধ্যে প্রবেশ করিয়া দেখিল, সাহেব ও চারি পাঁচ জন গোরা খানা খাইতে বসিয়াছে। ঐ সময় গুলিতে ও তরবারিতে সকলের মস্তকছেদন ছার প্রাণ নষ্ট করিয়া বন্দী-দিগকে বন্ধন মুক্ত করিয়া লইয়া গেল, আপনাদিকে অভিশয় ধন্ত-বাদ করিয়া বাছ আক্ষালন করিতে লাগিল। ইহাদের এই মত বীরত্ব দেখিয়া নিকটবর্ত্তী সকল গ্রামের মহুষ্য সকল ইহাদিগের দলে মিশিয়া প্রায় বার হাজার মহুষ্য এক অ'হইয়া এক স্থানে রহিল। পথিকগণের ধনপ্রাণ হরণ ও ডাক র্মনাগমনের পথ

ক্ষ করিল, ছই দিবদ পর্যান্ত প্রবল প্রতাপান্তিত হইয়াছিল, পরে ৬ জুলাই বেণারদ হইতে তিন শত গোরা, ছই তোপ, এক জন সেনাপতি এবং কাশীর রাজার পাঁচ শত পদাতিক চলিল। ঐ গ্রাম সকল ভদই পর্গণায় কাশীর° রাজার রাজ্য। সরকার বাহাছরের পদাতিক্লগণ বিগড়াতে রাজা সরকারের পক্ষে থাকিয়া বলণ্টর পন্টনের দেনাপতিদিগের নিকট হইতে চাতুরিতে মেগাজিন (ও) থাজনা লইয়া সরকার বাহাত্নের হস্তগত করিয়া দেওয়াতে ঐ দিবদ দিপাহীগণের উপন্ধ তোপ দারা গোলা নিক্ষেপ করাতে, রাজা সাহেবের ভদই পরগণায় কমবেশ লক্ষ টাকা তহশীলের জমিদারীর প্রজাগণ বিগড়িয়া রাজার কর ইত্যাদি সকল বন্ধ করিয়া লুট ফ্রদাদ করিতৈছিল। তাহাদের শাসন জন্ত এক সহস্র অখারোহী বন্দুকধারী পাঠাইয়াছিলেন। প্রজাগণ প্রায় সকল দৈয়া নিপাত করিয়াছিল, ষৎকিঞ্চিৎ যাহা ছিল তাহারা প্রাণ লইয়া রাজার রামনগরের কেলাতে আসিয়াছিল। প্রজাগণ রাজ্পৈত্ত-গণের সহিত যুদ্ধে জন্নী হইনা মহানিষ্টকারী হওয়ার দৌরাত্মোর পথ ্প্রবল হইরাছিল। তজ্জন্ত প্রয়াগ-শাসন সময়ে প্রধান অনিষ্টকারী জমিদারকে ফাঁসী দেওয়াতে পুর্বোক্ত উপদ্রব হয়। তজ্জ্ঞ রাজ্বসৈক্সগ্র সরকার বাহাত্বরের সাহায্য জন্ম যাইয়া ভদই পরগণার · • ক্লান্সাদিগকে প্রাণদণ্ড করিয়া মিছণ্টক করিয়াছেন, আর সে পথে কিছু ভয় নাই।

কাশাধানের উত্তর দশ কোশ হইবে ত্বিনামে এক ক্ষুত্ত সহরের স্থার স্থারবর্থাম। তাহাতে অনেক চিনির মহাজন এবং ধনাঢ্য-গণ আর রঘুবংশী কবি জনিদারগণ আছে। তাহার মধ্যে গুমান-বিংহ নামে এক জন রঘুবংশী ওপ্রদেশের প্রধান জমিদার।

ভাহার ঘরে আপন ভ্রাতা পুত্রপৌক জ্ঞাতি কুটুমতে এক স্থানে হুই তিন শুর ঘর আছে। নিজ পরিবার একালে পঁচিশ জন বলিষ্ঠ অস্ত্রধারী উহার বশীভূত প্রায় বিশ পঁচিশ গ্রামের মহুষ্য এবং মহাজনগণ ৷ ইহারা জৌনপুরের ছরবন্থা এবং রাজ-পুরুষগণের হত হওয়া দেখিয়া সকল গ্রাম্য লোক এক প্রামর্শ হট্যা পথিকগণের প্রতি দৌরাত্মা আরম্ভ করিল এবং সরকার বাহাতুরের যে পুলিশ থানা ছিল তাহার অনাদর করিতে লাগিল। গ্রামের মধ্যে এক বৃহৎ তেঁতুল গাছ ছিল, তাহার উপরে এক নিশান এবং নাগারা বান্ধিল। সঙ্কেত বহিল ঐ নাগারা বাজাইলেই যে যেথানে যে কর্মে'থাকিবে, তাহা পরিত্যাগ করিয়া আপন আপন যুদ্ধ-সজ্জা লইয়া এই স্থানে প্রস্তুত হুইবে। এই মত নিরপণ করিয়াদশ বার হাজার মুদুষা একত হইরা রহিল, প্রকাশ করিল কাশী চড়াই করিয়া লুঠ করিবে। এই সংবাদ জজ এবং মাজিষ্টর কমিশন টগর সাহেব প্রভৃতি শ্রুত হইয়া তথ্য জানিবার জন্ত, এক জন জান্ত পাঠাইলেন। তথা হইভে ইহাদের উপরোক্ত বিবরণের সঠিক তথ্য আনিয়া দেওয়াতে ২৪ জুন (২১ আবিড়) পঞ্চাৰ জন সওয়ার, পঞ্চাৰ জন গোরা আর এক কামান লইয়া গবিষ্দ সাহেব ডুবিতে যাত্রা করিলেন। তথার দেখিলেন বহু মনুষ্য একতা হইরা 'গোল্যাগ করিতেছে, কিন্তু সকলই গ্রাম্য ব্যক্তি, সামান্ত যোদ্ধা সেনাপতি কেই নাই। ইহা দেখিয়া একেবারে তোপ ও বন্দুকের ধ্বনি আরম্ভ হইল, গোলাগুলি নিশিপ্ত হইতে লাগিল, কতকগুলি আহত ও স্বরু মহুবা পতিত হইল। ইহা দেখিয়া সকলে পলায়ন করিল। ক্রেম ংসৈম্পণ গ্রামের ভিতর প্রবিষ্ট হইল · · · সর্বাত্ত

ত্রমণ করিতে লাগিল। বাহারা প্রাণ লইয়া পলাইয়া পেল, তর্মধ্যে কুড়িজনকে গ্রেপ্তার করিলেন। গুমানসিংহকে ধরিবার জন্ম অনক অফুসন্ধান করিলেন, তাহাদের কাহাকেও পাইলেন না। ... ... গোরাদিগের বিকট মুর্বি দেখিয়া চারি জন স্ত্রীলোক কুপে পতিত হইয়া প্রাণত্যাগ করিল, ছইগণকে না পাইয়া গুমানসিংহের ছই বধ্কে ডুলি করিয়া কাশীতে আনিয়া রাখিল।

গুমানসিংহ এই সংবাদে অতিশয় ক্রদ্ধ হইয়া ঐ স্ত্রীলোক-मिर्गत शिकानम चर्याधात त्राक्धांनीत मर्धा. यथाम मानिनश्रहत রাজ্য, ঐ রঘুবংশীগণকে সংবাদ করিল। তাহারা ভনিয়া গুমান-সিংহকে বছু শিকার দিয়া কহিল, "আপন প্রাণভয়ে পলাইয়া ঘরের বহু বেটীকে বাহির ক্রিয়া দিয়া, এক্ষণে সংবাদ পাঠাইলে, দে অঁপমানের কি উপায় আছে, তবে যদি যুদ্ধ করিবার ইচ্ছা থাকে, তবে জ্বাপন আপন হস্তে প্রাণবধ কর। যদি এমত বিবেচনা কর যে, যাহাদের সস্তান-সন্ততি হইয়াছে তাহাদিগের প্রাণ হরণ করিলে ক্লেশ হইবে, এমত স্ত্রীলোক বাহারা আছে, তাহাদিগকে নবাবী রাজ্য মধ্যে পাঠাইয়া দাও. পরে আমরা ছই হাজার বন্দক সমেত ষাইয়া যুদ্ধ করিব।" ভুবিওয়ালা ঐ মত করিয়া স্ত্রী-বালক-বালিকা-গণকে স্থানাম্ভর করিয়া পর্ব্বোক্ত সকল গ্রামের মহয়া একতা হইরা যুদ্ধ-সজ্জার রহিল এবং মানসিংহের অধিকারের রঘুবংশীগণের সহিত সংযোগ হইয়া ডুবি হইতে পাঁচ ছয় ক্রোশ আসিয়া রাজেশ্বর নামক স্থানে সকল সৈম্ভগণ এক বাগানের আড়ে প্রায় দশ বার হাজার মহয় বৃদ্ধ-সজুলায় থাকিয়া একজন দৃত শিকরোলে সাহেব-দিগের নিকট পাঠাইল বে, "আমরা সন্মুখ সংগ্রামের জন্ত আসিয়াছি, গৰিশ দাহেবের কর্ত্তব্য আমাদের দহিত আদিয়া যুদ্ধ করে, নচেৎ

(\$3)

আমরা মঞ্জাবার পর্যান্ত শিকরোল পত্ছিব। পূর্বাহে সংবাদ করিলাম।"

সাহেবগণ এই সংবাদ পাইয়া সকলে আপন আপন পরিবার-গণকে সাবধান করিলেন এবং সকল বাঙ্গালীদিগকে তকুম দিলেন. 'অস্ত্রকার কাচাবি-দপ্তর সকল বন্ধ করিয়া সকলে বাঙ্গালীটোলার যাও।' এই কহিয়া সাঁডলী সভয়ার এক জনকে বুভাস্ক জানিবার জন্ত পাঠাইলেন এবং গোরা ও শিখদিগকে যুদ্ধ-সজ্জা করিতে আদেশ হইল। ইহারা সুসজ্জিত হইতে হইতে দৃতমূথে স্কল জ্ঞাত হইলেন। ইহাতে বিচার হইল যে, গ্রাম্য প্রজাগণ যুদ্ধাকাজ্ঞী হুইয়া আসিয়াছে। এক ভোপ, এক শত গোৱা (ও) পঞ্চাশ জন শিধ লইয়া গেলেই কর্ম্ম সম্পূর্ণ হইবে। কিন্তু আর তিন শত গোরা (ও) তিন তোপ বরণার পূলে প্রস্তুত থাকে, আর পঞ্চাশ জ্বন গোরা পশ্চাৎ থাকে। এই মত যুক্তি (করিয়া) যুদ্ধে যাত্রা করেন। রণগুলের নিকটবতী হইয়া এক তোপ দাগিল। ঐ শব্দে বিপক্ষগণ সতর্ক হইয়া আপন আপন যুদ্ধ-সজ্জা লইয়া রঙ্গভূমিতে প্রবিষ্ট হইয়া বলকের ছারা শুলি চালাইতে লাগিল। ছই দলে ঘোরতর বন্দকের আওয়াজ হইয়া ধুমের ঘারা অন্ধকার হইয়া কেহ কাহাকে দেখিতে পায় না। সরকার বাহাছরের শিথসৈত্তের সেনপিতি রাজা রণজিৎসিংহের সেনাপতি লহনাসিংহের খ্রামপ্রেত স্করতসিংহ ও গোরাদিগের সেনাপতি গবিষ্ণ সাহেব ইঁহারা অগ্রে ছিলেন, আর আর দেনাপতিগণ পশ্চাতে ছিলেন। বন্দুকের যুদ্ধ হইতে হইতে মধ্যে মধ্যে তরবারি চলিতে লাগিল। ইভোমধ্যে দৈবকর্ত্তক মেঘারস্ত হইয়া ঘোরতর বৃষ্টি হইল। ঐ বৃষ্টির জলে বিপক্ষ দলের ্রব্দুকের ব্যাঘাত হইতে লাগিল। 🙆 সময় কামানের গোলা ছারা

বিপক্ষগণকে নিপাতের বাণক্ষেপণ করিতে লাগিলেন। বিপক্ষগণ বাগানের ভিতর প্রবেশ করিয়া, গাছের আড়ে থাকিয়া গোলারূপ অধিময় বাণ হইতে প্রাণরক্ষা করিল, পরে গোরাগণ বাগান মধ্যে কামান লইয়া বাইকার এবং ফ্রাইয়া চতুদ্দিকে ভোপ করিবার জ্ঞুকামান চালাইতে মনন করিয়া ব্যেল হাঁকাইতে লাগিল, বিধিক্ত এমত বিপদ হইল যে, কামানের গাড়ীর চাকা এমত বৃদিয়া গেল যে, কোন জ্ঞানে বয়েলে টানিতে পারিল না। অনেক মত তদ্বির কীরিল কোন ক্রমে না চলে না ফিরে। ঐ স্থানে রাথিয়া ছই তিন গোলা নিক্ষেপ করিতে লাগিল। বিপক্ষগণ মধ্যে মহাসাহসী এবং মহাবলপরাক্রান্ত কুড়ি জন শস্ত্রপাণি হইয়া কামানের পার্ঘবর্ত্তী হইয়া কামানের উপর পড়িয়া রঞ্জক বন্ধ করিয়া কামান ছিনাইয়া লইবার চেপ্তায়<sup>®</sup> ছিল। তাহাতে গোরাগণের সহিত অস্তব্যুদ্ধ করিয়া বার জন গোরা ও শিখ-সৈম্ভকে হত করে এবং স্থরতসিংহকে সমুথে দেথিয়া তাহার সহিত যুদ্ধ আরম্ভ করিল। পুশ্চাৎ হইতে প্রায় চারি পাঁচশত ব্যক্তি শস্ত্রপাণি হইয়া মহাবল-বিক্রম প্রকাশ করিতে লাগিল। শিথগণকে লইয়া স্থরতসিংছ অন্তর্দ্ধে প্রায় ৫০ জনকে হত এবং বছ ব্যক্তিকে আহত করিল। ভন্মধ্য হইতে এক বৃদ্ধ এবং এক ষোড়শব্যীয় যুবা শস্ত্রপাণি হইয়া প্রতি লক্ষ্য করিয়া আদিয়া বহু ধোদ্ধুগণের সহিত যুঝিয়া নিকটস্থ হইয়া সাহেবের প্রতি আঘাত করে। এমত কালে বাবু **मिवनात्राह्म शास्ट्रवत्र मिक्क मिक् इहेरक समिदान य, के वृद्ध** গবিষ্ণা সাহেবের প্রতি আঘাত করে, সাহেবকে সতর্ক করিয়া দিলেন। তৎক্ষণাৎ শিথসৈক্তগণ আসিয়া বৃদ্ধ বাহাত্রসিংছের

স্থিত অনেক যুঝিয়া তাহাকে রণস্থলে শ্বন করাইল। যোড়শব্যীয় যুৱা হেমত্সিংহ অনেক দৈলকে আহত এবং দশ জনকে হত ক্রিয়া স্থরতসিংহকে হত করিবার জ্বন্ত অন্তক্ষেপ করিয়াছিল। স্থরত-সিংহ ধফুর্বিস্থায় স্থানিকিত। তাহার-সওয়ার সাবধান হইয়া প্রাণ রক্ষা করে, অল্ল অল্ল ছয় স্থানে আঘাত হয়, পেষে যে আঘাত করে, ভারাতে দক্ষিণ পদে অধিক আঘাত হয়। এইরূপ বীরত্ব প্রকাশ করিয়া রণস্থলে মণ্ডলাকারে ভ্রমণ করিতে লাগিল, তথন গোরাগণ মুহুর্ম্ বন্দুকের বাড় ঝাড়িতেছে। «এথানে কামান বিপাকে পড়াতে আর সকল বিপক্ষগণ গোরাদিগের প্রতি আক্রমণের জ্ঞ বাগান হইতে বাহির হইল। ইহা দেখিয়া গবিন্স সাহেব বিবেচনা করিয়া বিউগলে রণশন্দ করিলেন এবং রণধান্ত মাঞ্জিতে লাগিল. পশ্চাতে যে ৫০ জন গোরা ছিল, তাহারা অস্তর অন্তর চারি চারি জনায় থাকবন্দী হইয়া আসিতে লাগিল। দুর হইতে বোধ হইতে লাগিল, বছ সৈত্তের সমাগম হইতেছে। বিপক্ষগণ রণবান্ত এবং পশ্চাতে রণস্থলে সৈতাসমাগম ও গোরাদিগের বিক্রম দেখিয়া বাহাত্রসিংহের প্রাণনষ্ট ও হেমতিসিংহ রণমধ্যে ধৃত হওয়াতে স্কলে পলায়ন করিল। কমবেশ পাঁচশত মহুয় যুদ্ধে হত হইল। বিপক্ষগণের বিপুল আশা নিরাশ করিয়া সকলে আপুন আপন শিকরোলের শিবিরে আদিয়া রণশ্রম শান্তি, করিলেন। স্থরতিসিংহ ভাক্তার সাহেবের বাঙ্গালাতে যাইয়া কাটাপদে ঔষধ দিল, তিন দিবস মধ্যে পুনরায় অখারোহণ করিবার ক্ষমতা হইল।

বিপক্ষদলের বাহাদিগকে ধৃত করিয়া লইয়া আসিয়াছিলেন, তাহাদিগকে দৃত্বস্থনে বন্দিশালে বন্ধ রাখিলেন।

## ২২ আষাত, ২৫ জুন

• ভ্রিনিবাদিগণ পুনর্কার সংবাদ পাঠার দে, 'দাহেবদিগকে কহিবে ভাহারা' তৈয়ারি থাকেন, আমরা একদিন তাহাদের সহিত দক্ষ্থ সুংগ্রাম করিব ।' কিন্তু দিনের নির্দ্ধারিত কহে নাই। এই সংবাদে দেনাগতি এবং টগর সাহেব ও গবিন্দা সাহেব প্রভৃতি সকলে ব্যতিব্যক্ত হইয়া দৈছ-মমাবেশ করিয়া শিকরোল রক্ষার্থ বরণার প্রনের উপর তোপ এবং রাজ্বাটে তোপ এবং মাটার বে কেলা তৈয়ার করিয়াছেম, তাহার চতুসার্থে তোপ এবং গোরাগণের চৌকি রহিল। সহর রক্ষার্থ সরকার বাহাছ্রের প্রনিস আর রাজানাছাত্রের পাঁচশত বন্দ্কধারী অখারোহী থানার থানার রহিল। ইহারা দিবারাত্র নগর ল্লমণ করিতে লাগিল। এই মত বন্দোবক্ত বিপক্ষ-বিনাশ জন্ত করিবেলন।

ভূবিতে ধৃত হওয়া কুজি জনকে কাঁসী দিবার অস্থ কাছারিতে আনিয়া হেমতসিংহকে কহিলেন বে, "তোমাদিগকে যথন ধরিয়া আনিয়াছি, তথন যে প্রকারে হউক প্রাণনন্ত করিতে পারি, কিছ তোমরা সরকার বাহাছরের তরফ চাকুরি খীকার কর, তবে তোমাদের প্রাণরকা হয়।" "আমরা তোমাদের চাকুরিতে খীকার নহি, যথন রণইলে ধৃত হইয়ছি, তাহাতে যাহা ইছা হয় তাহা কয়।"— এই কথা বারংবার উল্লেখ পক্ষের উক্তি হইল। এই মত বাদাস্থবাদ করিতে করিতে এমত সময়ে কাশীর রাজা সংবাদ পাঠাইলেন বে, "ভূবির রণধৃত ব্যক্তিদিগের প্রোণদণ্ড স্থগিত থাকিলে ভাল হয়। যাহারা ধরা পড়িয়াছে সকলই রখুবংশী ক্ষত্রিয়। ইহারা অমিদার এবং আমার অমাত্য।" এই সংবাদে কাঁসী দেওয়া স্থগিত করিয়া উকিলের

ছারা ডুবিতে গুমানসিংহ প্রভৃতি প্রধান প্রধান রযুবংশী জমিদার-গণকে সংবাদ করিলেন যে, "আমার মানস সকলের সহিত্ একবার সাক্ষাৎ হয়। তাহার বিশেষ কারণ এই য়ে, রাজার সহিত যুদ্ধ-বিপ্রহ করিয়া কেবল ধনপ্রাণ হানি আৰু সম্পূর্ণ ক্লেশ ভিন্ন অন্ত কিছু মাত্র লাভ নাই। এত. ক্লেশ এবং ধন-জন-মান নষ্ট করিয়া ভূপতি হইতে পারিবে না। বে কেহ রাকা হইবে, তাহার ঋধীনে থাকিয়া কর দিতে হইবে, স্বাধীন হইবার কদাচ मञ्जाबना नाहे। यहि युद्ध अजी इश्वर्षा ना यात्र, अटव स्व कि छुववन्त्रा ঘটিবে, তাহা কহা যায় না। তাহার কারণ রাজা ক্লেশ পাইলে পশ্চাতে সহস্ত ওণে ক্লেশদায়ক হয় এবং ক্লাপরাধে প্রাণদও করে। ইতোমধ্যে কত · · · ব্যক্তির প্রাণদণ্ড করিয়াছে. তাহাও সকলে দেখিতে ভনিতে পাইতেছেন। তথা হইতে হেমত-সিংহ প্রভৃতি মহাশুর রঘুবংশী বত ক্ষত্রিয় তাহাদের সহযোগে আছে, তাহার মধ্যে মহাবলপরাক্রান্ত রণপণ্ডিত কুড়িজনকে ধ্রত করিয়া আনিয়াছে। ইহাদের প্রাণদণ্ডের অনুষ্ঠি হইয়াছিল, এ সংবাদ আমি গুনিরা বছরত্বে স্থগিত রাথাইয়াছি। যদি কান্ত हरेब्रा উভরের মনোমিলন হয়, তাহা হইলে ভাল হয়।" **এ**ই কথা তৃতীয় ব্যক্তি ছারা কহিয়া পাঠান।

শুমানসিংহ প্রভৃতি প্রভৃতির করিল, "রুধুন মানহানি হইরাছে, তথন ধনপ্রাণের ভর কি আছে ? সাহেবদিগের সহিত মিল করিতে হইলে ঘরের বহু-বেটী না দিলে হইতে পারে না। আমরা একবার ভাল করিরা চাকুব করিব। যাহাদের ধরিয়া লইয়া গিরাছে, ভাহাদের প্রোণদ্ও করিবে, তাহাতেও হঃখিত নহি। বে হেছু তাহারা ক্রিরের যে ধর্ম তাহা করিরাছে, রণে ভদ দেয় নাই, সমুধ্ সংগ্রামে গৃত হইরাছে। আর আনাদদের ধনদশ্যক্তি সকল লুঠ ক্রিরাছে। আরু কি আছে ? একণে জীবংমান থাকাতে কেবল ক্লেশ ভিন্ন নহে, অন দোবে লইয়া বাইয়া প্রাণন ও করিবে, তাহাতে ইংলোক প্রলোকে দোব আছে। তদপেকা যুদ্ধ করিয়া প্রাণভাগি হইলে ক্ষাত্তিব-ধর্মতে মোক্ষপদ পাইব—চিরজীবী কেহ নহে।"

এই মত বছতর বাদাহ্যবাদ পাঁচ দিবদ পর্যান্ত হইরা শেবে রাজা সাহেবের কথাতে সম্মত হইরা আপন ক্ষতিপূরণের কথার শেব হইরা ২৮ জুন, ১৫ আযাঢ় ডুবিনিবাসী প্রধান প্রধান জমিদার-গণ কালীধামের কামাধা। নামক স্থানে, যথার রাজা ঈশ্বরী নারা-রণের কোষাগার, ঐ স্থানে টগর সাহেব এবং গবিন্দ সাহেব এবং রাজা বাহাছ্র সকলে একত্র হইরা জমিদারগণকে সম্ভষ্ট করিরা কহিলেন, "তোমাদিগের সহিত আমাদের যুদ্ধের প্রায়েজন নাই। তোমরা লোকের প্রতি দৌরান্ম্য করিও না। তোমাদের গৃহাদি দগ্ধ এবং জ্বাদি সৈক্ষগণে পূঠ ফেদাদ করিরাছে, এজ্বন্ত তোমাদের মন ছংখিত হইরাছে। জ্বত্রব তোমাদের তিন বংসর খাজনা মহকুপ করিরা দিলাম। কিন্তু তোমরা এই স্বীকার কর বে, কোম্পানি বাহাছ্রের বিপক্ষে বে কেহ আসিবে তাহাদের সহিত তোমরা ব্রহাদি করিবে, তাহাতে সরকার বাহাছ্রের সাহাম্য হইবে।" এই কথা মুকলে স্বীকার করিল।

২৯ জুন রাজা বাহাছতের কামাথ্যার বাগানবাটীতে উভয় পক্ষে সকলে এক মিল হইরা সম্ভাই হইলেন। জমিদারদিগকে উভম রূপে আহারাদি করাইরা পঞ্চাশাবধি এক শত মুদ্রা পর্যান্ত পাগড়ির মূল্য — এমত পটিশ পাগড়ি আর ছই শত টাকা প্রতিব্যক্তিকে পারিতোবিক দেওবা ইইল। জমিদারগণ ৰথা-

বোগ্য ব্যক্তিবিশেষে কোনাকুলি, প্রশ্বাম, দণ্ডবং ও সেনাম করিয়া শেষে কহিল যে, "যে স্ত্রীলোকদিগকে আনুনা হইয়ছিল, তাহাদের গতি কি হইল ?" তাহাতে সাহেবেরা এবং রাজা কহিলেন, "একথা সকলই মিথা, স্ত্রীগপকে তথার তৃলাস করগে, এথানে আনা হর নাই।" ইহা শুনিয়া তাহারা প্রামে মাইয়া অফুসন্ধান করিয়া দেখিল, ছই জন কুপে পড়িয়া মরিয়াছে, আর ছই জন তাহাদের মাতুলালয়ে পুকাইয়াছিল, তাহার সংবাদ পাইল। এই মাতুলালয়ের সংবোগ রাজা কাহাছরের কৌশলে হয়।

# ১০ জুন, ৩০ জ্যৈষ্ঠ

কানপুরে যে এক দল দেশীর পদাতিক হিল, তাহারা বারাণসীর পদাতিকগণের আওহাল শুনিয়া বিবেচনা করিল যে, 'আমাদিগের প্রতিও এইরূপ হইবে, অতএব ইহার বিবেচনা মতে থাকিতে হইবে।' এইমত পরামর্শ করিয়া পদাতিকগণ আপন আপন বৃদ্ধ-সজ্জা লইয়া থাজনাথানা (ও) মেগাজিন বেটিত, হইয়া রহিল।

বেনারস হইতে যে পদাতিক ও অখারোহিগণ বেদিল হইরা তোপের সমুথ হইতে পনাইরা বার এবং এলাহাবাদের পদাতিক-গণ আর এলাহাবাদ হইতে মৌলবী সাহেরের সৈন্ত সহিত ঘাইরা সকলে একত হইরা বিঠুরে উপস্থিত হইল। পুনানিবাসী বাজিরাও সাহেব পুনা-সেতারার রাজা ছিলেন, বাঁহার নব লক্ষ অখারোহী সৈন্ত, এতত্তির পদাতিকগণ, বাঁহার ভাতা রাজা অমৃত্রাও। ইহারা পুর্বে দিলীর সিংহাসনাদি দথল করিরাছিল, পার্ণিপথ (ও) শোল-পথের র্ছে জনী হইরা কুক্ষেক্রাদি বে পঞাব গণ্ডলক্ষ নদীর

পূর্বপার, ইহাও অধিকার করিয়া অনেক রাজধানী লুঠ করিয়া লুইরাছিল। সুরকার কোম্পানী বাহাত্র ঐ রাজিরাও সাহেবকে রাজ্য ভুট্ট করিয়া তাহাকে সপরিবারে বিঠুরে বন্দীর স্থায় রাধিয়াছিলেন। ঐ বাজিয়াও সাহেবের পোবাপুত্র নানাসাহেবের শ্রাসাহেব নানাসাহেবের নিজ রক্ষক এক হাজার

পদাতিক ও অখারোহী দক্ষিণে-ছিল। বিগড়া দৈন্তগণের সহিত এগার তোপ ছিল, নানাসাহেবের দশ বার তোপ ছিল। দিপাহী-দিগের আগমন-সংবাদ ভনিয়া নানাসাহেব আপন দৈন্ত স্থদজ্জীভূত করিয়া ভোপের মুরচা বাদ্ধিরা রহিল।

নানাসাহেব একজন লোক পাঠাইয়া সংবাদ দিল, 'সিপাহীগণের কি মতলবে আসা হইয়াছে ? যদি আমার জ্ববাদি লুঠ জ্ঞু আসিয়া থাকে, তবে আমি সহজে লুঠিতে দিব না। আমি তাহাদের

সহিত বৃদ্ধ করিয়া দেখিব, পশ্চাৎ যাহা হয় হইবে।'

দিপাহীগণ এই কথা গুনিয়া কহিল, "আমাদের রদদ নাই এবং মালিক কেহ নাই। যদি আমাদিগকে রদদ দিয়া সাহায্য করেন, তবে আমরা কোম্পানির সহিত যুদ্ধ করিয়া সকল রাজ্য দখল করাইয়াপিব।" তাহাতে নানাসাহেব কহিলেন, "আমার নিকট অধিক ধন নাই, নুগুল-কৌদ লক্ষ টাকা আছে। ইহাতে কি প্রকার মুদ্ধ হইতে পারে ?" তাহাতে সৈঞ্জণ কহিল, "ইহাতেই হইবে, তোমাকে মালিক করিয়া আমরা যুদ্ধ করিয়া লুঠিয়া লইব।" এই কথা হুইয়া >> জুন রাত্রিতে কানপুর সহরে প্রবেশ করিয়া প্রথমতঃ সাহেবদিগের বালালাতে প্রবিষ্ট হইয়া, সাহেবদিগকে হত করিয়া জ্বয়াদি শুঠ করিল এবং বালালাতে অমি দিল। এই মত উপক্রব

হাক করাতে আর আর হানে হানে যে সমুস্ত সাহেব-বিবি এবং তাহাদের বালক-বালিকাগণ আর যে তুই শত গোরা ছিল, ইহারা পলাইয়া মৃত্তিকানির্শ্বিত এক গড় করিয়া রাধিয়াছিল, তন্মধ্যে প্রবিষ্ট হইয়া ছারে তোপ রাখিয়া রহিল। পদাতিকুগণ দেখিল, অফু ব্যক্তি আমিয়া দকল হত করিয়া লুঠ করে। দেশীয় পদাতিক-গণ ইহাদের সহিত যদ্ধ আরম্ভ করিল। তথন নানাসাহেব সহরে প্রবিষ্ট হইয়া মহাজনগণের কুঠী 'লুঠিতেছে। ইহাতে কম-বেশ দশ লক্ষ টাকা লুঠিয়াছে। শিথ-পদাতিকগণ পুরাদল ছিল না, পাঁচ শত ছিল, ইছারা দেখিল, বিপক্ষণণ দম্ভার ভারে আসিয়া লঠ ফদাদ করিতেছিল। তাহাদের মহিত ঘোরতর যুদ্ধ করিয়া উভয় পক্ষে প্রায় হুই তিন শত হত হইল, শিথ এক শত হত হয়। এই অবসরে গোরাগণ মেগাজিন আর থাজনা, যে তিন লক্ষ ছত্রিশ হাজার টাকা মন্ত্ৰুত ছিল, তাহা ঐ গড় মধ্যে আনিল। জ্বন্ধ মাজিষ্টর কালেক্টর প্রভৃতি সাহেবগণকে হত করিয়া যুদ্ধে জয়ী হইয়া সকল দথল করিয়ালইল। শিখগণ ঐ মুক্তিকার গড়ের নিকট আসিয়া ছার. রক্ষা করিয়া রহিল। দেশীয় পদাতিক ঘাহারা ছিল, তাহারা নানা-সাহেবের সহিত মিলিয়া গেল। কানপুর হইতে বিঠুর পর্যাস্ত যত জমিদার ক্ষত্রিরগণ ও আর আর প্রকাগণ (ছিল) সকলেই নানা-সাহেবের পক্ষ হইয়া পথ ঘাট গ্রাম সকল লুফিতে লাগিল। সহরের थाना हेजानि यठ आमननाति हिन, नकन छेठीहेबा निवा आपनारनत আমল দুখলজারি করিল। পূর্বেফ ডেপুর পর্যান্ত পশ্চিমে লাগাইদ দিল্লী সকলই বেদখল। ইহার মধ্যে যে যতদূর আমল ক্রিতে পারিয়াছে, কানপুরে দিপাহীগণের আর নানাদীহেবের দোহাই ফিরিতেছে। যদি কেহ কোম্পানি বাহাছরের দোহাই দেয়, তৎ-

ক্ষণাৎ তাহার শিরক্ষেন। এই মত প্রবল প্রতাপ করিয়া কেবল মার মার কাট্ ক্লাট্ এই শক্ষ সর্ব্বত, সাহেব ও বালালীদিগকে দেখিতে পাইলেই অধিক আক্রমণ। সাহেবেরা সপরিবারে গড়ের মধ্যে ও বালালী সকলে নানা হানে গুপুভাবে আছে। বাহাদের পরিবান সঙ্গে, তাহাদের অতিশন্ধ ক্লেণ। অব্যাদি সকলই লুঠিয়া লইয়াছে, ক্লপাত্র ভোজনপাত্রহিত, আহার বিনা প্রাণ গুলাগত। অনেক বালালী ব্রক্ষারী সন্নালী অবধৃত থাকীর বেশ ধারণ, কেহ বা পাগলের বেশ করিয়া পলাইয়া আসিয়াছে। বাহাদের কিছু অর্থ ছিল, তাহা কোন প্রকারে গোপন করিয়া কেহ চোলার ভিতরে রাধিয়া তাহার ছই মুঝু অগ্নিতে পোড়াইয়া তাহার মধ্যত্বে টাকা মোহর রাধিয়া ভাহার ভিতরে তামাক প্রিয়া নানা ছলা কলা দারা দ্ব্যাদিগের হস্ত হইতে অব্যাহতি পাইয়া কালীতে পৌছে।

কানপুরে গড় মধ্যে বে সমস্ত সাহেব বিবি গোরা শিথ ইত্যাদি ছিল, তাহাদিগের প্রাণ নই করিবার জক্ত বিপক্ষ পদাতিকগণ শ্বাহের নিকটস্থ হইয়া বাহ বিদীর্ণ করিবার তদ্বির করিতেছিল। এমত কালে একজন শিথ দেখিতে পাইয়া সাহেবদিগকে সংবাদ করিল। এই সংবাদ পাইবা মাত্র সকলে রব-সজ্জা করিয়া ব্যহ্বারে আসিয়া দৈখিল বে, বিপক্ষের বছ সৈত্ত বেটিত করিয়াছে, আর প্রাণরক্ষার কোন, উণার নাই, বাহা হউক ইহাদের সঙ্গে মৃদ্ধ করিতে হইবে। এই কহিয়া যুদ্ধ আরম্ভ করিল। উভর পক্ষের প্রশির শব্দে অন্ত মহুবের কর্ণে তালা লাগিল, ঘোর বৃদ্ধে প্রলি গোলা, তরয়ালের হন্ হন্ সন্ সনানিতে সহরের দোকান ইত্যাদি হাট বাজার বদ্ধ হয়। হই প্রহর পর্যান্ত বৃদ্ধা উভয় পক্ষের অনেক মন্থ্যা হত হইল। এই মত তিন দিবস পর্যান্ত সাহেবগণ

ষ্ক্ করিয়া বিপক্ষ দলের পনের বোল শক ব্যক্তি হত করিল। কিন্তু গোলাগুলি বাক্ষণ এবং আহারাদির স্ক্রব্য কিছুই রহিল না। রবশ্রম তাহাতে ক্ষ্মানল প্রস্ত্রলিত, ইহাতে বলবৃদ্ধি কিছু রহিল না। অনেকে ক্লেশ সহু করিতে না পারিয়া অগ্নিবাতী হইয়া প্রাণত্যাগ করিলেন। বিপক্ষগণ চতুর্দ্ধিকে সাহেকদিগের অবেষণ করিয়া ফিরিতেছে। বে বেখানে ইংরাজ সম্পর্কীয় স্ত্রী পুরুষ পাইতেছে, তৎক্ষণাৎ তাহার প্রাণ বধ করিতেছে। এমতে কত শত বধ করিয়াছে, ... ... জিপাহীগণ নির্দ্ধ রূপ ধারণ করিয়া বিবি এবং বালকবালিকাগণের বিষ্ণৃত রূপে প্রাণ নাশ করিয়াছে, তাহা দেখিলে অতি পাবস্তের মাহ জন্মে। সকল হত হইয়া বাহ মধ্যে (কেবল) পঞ্চাশ জন স্ত্রী, বালকবালিকা এবং আহত সাহেব জীবিত ছিল।

একজন কাপ্টেন এই উপদ্রব-কালে উপস্থিত হইল, সেই ব্যক্তি আপনার থাকিবার আবাদের সোপান ভগ্ন করিয়া তত্পরি রহিলেন। তাঁহার নিকট এক উত্তম পিন্তল আর শুলি বাকল ছিল। কাপ্টেন সাহেব ঐ ঘরের উপর হইতে একলা যুদ্ধ করিতে লাগিলেন, তাঁহার শুলির আঘাতে প্রতি দিবদ হুইশত ব্যক্তির প্রাণ নষ্ট হইত। এই মত তিন দিবদ যুদ্ধ করিয়া নানাসাহেবের সৈভ হত করেন। তিন দিবদের পর শুলি বাক্ত্ম কিছু ছিল না। চতুর্ব দিবদ গৃহ মধ্যে বত বোতল ও শিশি এবং বেলওয়ারি ঝাড় লঠন গেলাস ইত্যাদি ছিল, তাহা নিক্তেপ করিয়া শত ব্যক্তির অধিককে আঘাত করেন। এই মত চতুর্ব দিন পর্যান্ত একাকী বুদ্ধ করিয়া নিরন্ত্র হুইয়া দেখিলেন বে, আর প্রাণের আশা নাই। তথন দ্বেরাভিতর হুইতে বাহির বারান্দার দণ্ডার্মান হুইরা উটচেঃশ্বরে

কহিলেন, "হে বোজ্গণ • আমি এক্ষণে নিরক্ত হইরাছি। তোমাদের সহিত কিসে যুদ্ধ করিব ? দেখ, আমার গুলি বারুদের তুণ শৃষ্ঠ হইরাছে। • চারি দিবস অনাহারে যুদ্ধ করিবাছি। তাহাতেও রণ্প্রম হর নাই। • এখনও গুলি বারুদ পর্ণইলে সপ্তাহ পর্যান্ত দিবারাত্র সমান যুদ্ধ করিতে পারি। অতএব ঘদি আমার সহিত যুদ্ধ ইচ্ছা থাকে, তবে রাজনীতামুসারে অক্রাদি দাও, নচেৎ আমি এই বাহিরে দাঁড়াইলাম, যাহা ইচ্ছা হর কর।" এই রুণা শুনিরা সিপাইগণ শত শত গুলি নিক্ষেপ করিতে লাগিল, তাহাতে প্রাণ বধ করিতে পারিল না। কাপ্তেন সাহেব কহিলেন, "এমত হাজার ব্যক্তি গুলি নিক্ষেপ করিবে লাগিল, তাহাতে প্রাণ বাজি গুলি নিক্ষেপ করিবে, তাহাতে মরিব।" ঐ সময় কানপ্রের একজন রঘুবংশী ক্ষত্রির অমিদারের গুলিতে কাপ্তেন সাহেবের প্রাণবিয়োগ হইল। ঐ অমিদার সাহেবের হস্তের পিত্তল পাইল।

° এই মত মহাবলপরাক্রান্ত সেনাপতিগণ স্থানে স্থানে হত হৈছলন। সিপাহীগণ নানাসাহেবকে রাজা করিয়া কানপুরের নিকটবর্ত্তী সকল দেশে রাজ্য ভোগ করিতে লাগিলেন। রাজ্য মধ্যে এমত শাসন করিল বে, পথিক ব্যক্তির কি প্রজাবর্তের বে কেহ জ্ববাদি হরণ কি দৈহিক হু:খদায়ক হইবে, তৎক্রণাৎ তাহার শিরশেছদ হইবে, স্বন্ন দোবী হইলে হস্ত-পদ ছেদন করা যাইবে। এই মত শাসন করিয়া পথিকগণের পথ-কট দুর করিয়াছিল। বে কেহ দক্ষ্যের্ত্তি কুরিয়া ক্লেশদায়ক হইয়াছিল, তাহাদের প্রতি উপরোক্ত দণ্ড দেওয়া হইয়াছে।

্ এই মৃত রাজ্যাধিকারী হইয়া মৌলবী সাহেব প্রধান মন্ত্রীর
৫০৫ (৪৩)

মন্ত্রণাতে রাজ্য শাসন করেন। একমান গত হইলে পর কানপরের গড় মধ্যে বে কেহ আহত সাহেব ও বিবি ইত্যাদি ছিল, তাহাত্ৰা বিবেচনা করিরা দেখিল বে, 'আর আমাদের প্রাণরক্ষার উপায় নাই, এক্ষণে বিপক্ষের শর্ণাগত হইয়া প্রাণ লইয়া কলিকাতা গমন করিতে পারিলে ভাল হয়। শরণাগত হইলে কেহ প্রাণ নঠ করে না।' এই বিবেচনা করিয়া তন্মধ্যে একজন স্বতি প্রাচীন বিবি ছিলেন, তাঁহার সহিত দশজন শিখ-পদাতিক দিয়া নানাসাহেবের নিকট পাঠাইলেন। ঐ বৃদ্ধা জী কহিল যে, "আমরা নির্ক্ত হইরা ষদ্ধে হার মানিয়া তোমার জয় বলিয়া নিকটক্ত হইয়াছি। অবতএব তমি আমাদের প্রাণরকা কর। আমরা আহার বিহনে মারা যাইতেছি। আমাদের নিকট তিন লক্ষ ছত্তিশ হাজার টাকা মজুত আছে। আমাদের বে কেহ এ স্থানে জীবিত আছে, সকলে কলিকাতা পছছিতে পারি. এই আন্দান্ত খরচের টাকা দিয়া, বাকী টাকা তমি লহ। আমরা বালক-বালিকা আর স্ত্রীগণ এবং আছত সাহেবদিগকে লইয়া গমন করি। প্রাণের প্রতি আঘাত না হয়।" বদ্ধা বিবি এই মত বহুতর বিনয় বাক্যে স্তবন্ধতি করাতে নানা-সাহেব সম্মত হইয়া কহিলেন, "আচ্ছা, তোমরা ছত্তিশ হালার होका महेशा त्नोकांति कतिशा जकता अतन हरेएठ गमन कत. लामात्मत्र श्रान नहे हहेरव ना।" यहे कथा छनिया के श्राहीना ব্যহ মধ্যে আসিরা সকলকে কহিরা তিনধানি নৌকাভাড়া করিরা এক থানিতে আহত ব্যক্তিগণ, হুই নৌকাতে আর আর বিবি ও মিদ বাবা ইত্যাদি বাহারা জীবিত ছিল এবং বারক্সন সাহেব, ইহারা আপন আপন পরিধান-বল্প ভ ছত্রিশ হাকার টাকা ুলইরা নৌকা-রোহণ করিল। অজ্ঞাদি, জব্যাদি ও তিন লক্ষ্টাকা ব্যুহ মধ্যে

রহিল, তাহা নানাসাহেবের লোকে লইয়া গেল। সাহেবদিগের নৌকার মধ্যে আহতদিগের নৌকা অগ্রে খুলিয়া আদিতে ছিল, বাুকি গুইখানি পশ্চাতে খুলিয়া কিছু দূর আসাতে সিপাহীগণ ভূনিল যে, কানপুরের গড় মধ্যে যে সমস্ত সাহেবগণ ছিল, ভাছারা স্ত্রীপুরুষ পহিত নানাসাহেবকে খাজনার বেবাক টাকাও সকল জ্বব্যাদি দিয়া তাঁহার অনুমতিক্রমে প্রাণ লইয়া পুলাইতেছে। এই বাক্য শুনিবামাত্র সিপাহীগণ জ্রুতগতি গঙ্গাতীরে যাইয়া দৈখিল, ছই খানা নৌকাতে সাহেবদিগের পরিবার সমেত বাইতেছে। তৎক্ষণাৎ বন্দুকের অগ্নি ছারা নৌকা আলাইয়া গুলি বর্ষণ করিতে লাগিল। তথায় গঙ্গার জল অল্লই ছিল. সকলে অগ্নি-দগ্ধ গোলা-গুলির ভয়ে প্রাণরকার জন্ম জলে ঝাঁপ দিয়া পড়িল। নির্দিয় নিষ্ঠুর সিপাহীগণের হল্তে কাহারও প্রাণ রহিল মা। স্ত্রী ও বালক-বালিকাগণ প্রাণভয়ে ডুবিলে গুলি নিক্ষেপ করে, নিকটে আসিলে তরোয়ালে নিধন করে। এই মত ছই নৌকার . সকলকে নিধন করিয়া, অত্যে যে নৌকা গিয়াছিল ভাহাকে ধরিয়া তাহার আহত ব্যক্তিদিগকে নানাসাহেবের সন্মুথে আনিল। তাহাতে নানা হুকুম দিলেন, "ধাহাদের যুদ্ধের ক্ষতা আছে, তাহা-দিগকে 'তোপের সমূথে দেহ, যাহারা অক্ষম তাহাদিগকে তর-বারিতে বিনাশ কর।" -এই ছকুম পাইয়া নির্দর সিপাহীগণ সাহেব-কুল সকল দক্ষিণ মশানে বিনাশ করিল। দেখ কি অবিচার! याशामिशत्क चाछत्र मित्रा विमात्र कतित्राहिन, छाशामित थान नहे করিল। এই সকল বধ করিয়া বালালীদিগের প্রাণ নষ্টের জঞ্ मुन्तृत् हेम्हा इहेब्रीहिन। वात्रानीमिशटक धत्रवात अञ्च नर्सख पृष्ठ প্রেরণ করিল। ইহারা অতি স্মচ্তুর, নানা বেশ ধারণ করিয়া অঞ্চাতবাদ করিয়া রহিল। তাহার মধ্যে নীলকর দাহেবের কর্ম্মনারক শ্রীবৃত কর্মণামর ভট্টাচার্য্য নামে এক ব্রাহ্মণ, তাঁহাকে ধৃত করিয়া নানা নামাহেবের সন্মুপে আনিল। নানা বাসালী দেখিবামাত্র রাগান্বিত হইরা ছকুম দিলেন যে, 'হিহার প্রাণনাশ কর।'' এই কথা শুনিরা ভট্টাচার্য্যের দেহ হইতে প্রাণভ্যাবের ছায় হইল। কিন্তু সাহসে ভর করিয়া নানাকে নানামত স্থতি করিতে আরম্ভ করিলেন, 'হে পৃথীনাথ! তোমার পূর্ব্যপুর্করণ বহু পুণ্য করিয়া ব্রহ্মণান এবং ব্রাহ্মণালিপেকে বহুমূল্য জ্ব্যাদি দিয়াছেন। 'সকল তীর্থে কীর্ত্তি করিয়াছেন। অভাবধি কীর্ত্তি সকল সজীব আছে। অভএব আমি দীন হীন ব্রাহ্মণ, উদর-পোষণ (ও) পরিবারের জীবন-রক্ষার জ্ঞ্য সঞ্জাগর সাহেবের কর্ম্ম করিছে, রাজ্যাধিকারীর চাকর নহি। ভবে আমার প্রাণবধ করিয়া কি জ্ঞ্ঞ ব্রহ্মহত্যা জ্ঞ্য পাতক লাইবেন।'' এই মত স্তুতিবাদ করাতে এবং মন্ত্রিগণ দয়া প্রকাশ করিয়া বৃদ্ধবিদ্ধা বির্দ্ধর নির্ভুরের হস্ত হুইতে অব্যাহতি পাইয়া স্বদেশে বাত্রা করিলেন।

এখানে এলাহাবাদ কর করিয়া সেনাপতি হেড্লক্ সাহেব ও
দীল সাহেব ছই জন দেনাপতি আপন আপন পঞ্চ সহত্র সৈত্ত লইয়া
কামপুর বাত্তা করিলেন। কির্দুর গমন করিয়া দেখিলেন, পথিমধ্যে দত্ত্যগণ কণ্টক স্বরূপ হইয়া অতিশয় ফ্লেশুদায়ক হইয়াছে।
কানপুরে নানার সহিত ঐ পথ নিক্টকের প্রথমোডোগ। বে সমন্ত

ইংরাজের যুদ্ধ স্থানিকাপ বুদ্ধানাজ্ঞার দ্বার্তি করিতে-ছিল, তাহাদিগকে গৃত করিরা কাঁসি দেওরা। এই মত ক্রিতে ক্রিতে ফতেপুর পছছিলেন। তথার বহু বিপক্ষ সৈঞ্জের সমাবেশ ছিল। সরকার বাহাছরের সৈঞ্জ পছাইলৈ খোরতর

বৃদ্ধ আরম্ভ হইল। বিপক্ষগণের সঙ্গে দশ তোপ এবং পোনর হাজার পদাতিকগণ বন্দুক তর্মালের যোজক। সরকার বাহাছরের চাঁরি হাজার গোৱা-দৈন্ত, এক হাজার শিথ-দৈন্ত—এই পাঁচ হাজার দৈল সেনাপতিগণ লইয়া দেখিলেন. বিপক্ষগণ যুদ্ধ-সজ্জায় প্রস্তুভ আছে। তোপের গোলা মুহুমুহ কেপীণ করিতেছে, মধ্যে মধ্যে বলুকের গুলি নিক্ষেপণ। বিপক্ষে আপন আপন ক্ষমতা প্রকাশ করিতে কিছু ক্রটি করিল না. ে পর্যাস্ত তি ... গজের বাহিরে সরকার বাহাছক্রের ঝুটার্গ সৈন্যগণ ছিল, সে পর্যাস্ত কিছু গোলাগুলি নিক্ষেণ করেন না; ভিতর প্রবেশ হইবামাত্র যুদ্ধের অমুমতি দিলেন। বুটিশ সৈঞাগণ মুত্মুতি গোলাগুলি নিক্ষেপে রণভূমি ধূমে অব্যক্তার করিয়া বিপক্ষের কম বেশ ছই হাজার দৈয়া হত করিল। ইহাদের ছই শত একুশ জান হত হইল। বিপক্ষ দল গ্রামে প্লায়ন করিবার উপক্রম দেখিয়া গোরাগণ ধাওয়া করিয়া দশ তোপ ছিনাইয়া লইল। বিপক্ষগণ ফতেপুর হইতে পিছে হটিল। হেভ্লক সাহেব ফতেপুরের যুদ্ধ ফতে ক্রিয়া তথাকার বদমায়েসদিগকে শাসন করিয়া অগ্রে ষাইবার 'অফুসদ্ধান করিতে লাগিলেন। ইতোমধ্যে কানপুর হইতে করণাময়, ভট্টাচার্য্য কাশী- আগিতেছিলেন। তাঁহার সাক্ষাৎ হইল। ভট্টাচার্য্য-প্রমুখাৎ কানপুরের ছরবন্থা সকল জ্ঞাত হইয়া অনেক বিলাপ কঁরিতে লাগিলেন এবং কছিলেন "বদি ইহার শোধ তুলিয়া নানাকে নানী বানাইতে পারি, তবে আমার সেনাপতি কর্ম্মের সফলতা হইবে।" ভট্টাচার্য্য কহিলেন, "বদি কানপুর যাত্রা করিতে হয়, তাহার বিশ্ব করিবেন না। তাহার বিশেষ কারক এই বে. বিপক্ষাণ ••• নদীর পুল ভাজিয়া

দিবার উন্তোগে আছে। প্রায় বিশ হাজার মহুয় একত হইয়াছে।" সেনাপতি হেভ্ৰক্ ভটাচার্য্যের বাচনিক সমস্ত শুনিয়া কানপুর গমনের তারির করিলেন। পথিমধ্যে যে সমস্ত কণ্টক ছিল, তাহাঁ নিষ্ণটক করিতে করিতে পুলের পূর্ব্ব পারে সলৈভ উপত্তিত হইয়া **मिश्लन, विशक्कान महाद्वीनाहत्न शन्त्रिम शांदर मूत्रहा वाह्मिशाह्य ।** পুল ভালিতে আরম্ভ হইয়াছে। ইহা দেখিয়া অবিলয়ে গোলা নিক্ষেপের ছকুম দিলেন। বুটিশ দৈলগণ শিলাবৃষ্টির স্থায় গোলা-শুলি বর্ষণ করিতে লাগিল এবং রণবাল্পে, রশেনাত হইয়া দিক विभिक् खान बहिन ना। ইहा विशक्त गण (मिथवा नकरन शनावन করিল। রুটিশ দৈঞ্জগণ পূল পার হইয়া ছাউনী করিয়া কানপুর যাত্রা করিল। বুটিশ দৈক্তদিগের পরাক্রম দেখিয়া নানা সাহেব সদৈত্ত কানপুর হইতে পলায়ন করিয়া বিঠুরের নিকটে পাঁচ ক্রোশ অস্তরে যুদ্ধের মুরচা বান্ধিয়াছিল। বৃটিশ দৈক্তগণ এগার ক্রোশ ধাওয়া করিয়া কানপুর যাইয়া নানাকে না পাইয়া বিঠর অভিমুখে যাত্রা করিয়া পথিমধ্যে যুদ্ধের উদ্বোগ দেখিল। সৈত্তগণকে বিপক্ষগণ দেখিয়া, ঘোরনাদে রণভূমিতে বাছধানি করিয়া স্থসজ্জীভূত হইয়া রণোনাদে মন্ত হইয়া কামান ও বন্দুক ছারা গোলা-গুলি নিক্ষেপ করিতে লাগিল। তাহাতে বুটির দৈল-গণ তাসিত না হইয়া মদমত হজীর স্থায় প্রজ-দল দলন করিতে ब्रम्फूट्स अविष्ठे इरेक्षा यथन मिथिन त्य,...शत्मव सर्देश रिम्बनन धवः বিপক্ষ দল সমূহ আছে, তথন হেভ্লক্ ও নীল সাহেব ছই জন দেনাপতি আপন আপন দৈঞ্দিগের ব্যহ রচনা করিয়া যুদ্ধারস্ত করিলেন। উভয় পক্ষের অগ্নিময় অক্লাখাতে বহু দৈন্দ্র নিপাত ইইল। বিপক্ষগণের অখারোচী অন্তধারী এক সহস্র সৈত ছিব, ইহারা ব্যহ

ভঙ্গ জন্ম অনেক তারির করিয়া ব্যাহের পার্শ্ববর্তী হইয়া অল্পেকপ্র করিয়াছিব। বৃটিশ সৈভূগণ রণপণ্ডিত, কদাচিৎ বিপক্ষ অখারোহী-দিগকে ব্যহ প্রকোকরিতে না দিয়া ব**হু সৈন্ত আ**হত ও হত করিল। ইহাতে অখারোহিগণ পশ্চাকাামী হইয়া প্লায়ন করিল। সেনা-পতিগণ দেখিলৈন যে, বিপক্ষ নানা সাহেবের দৈলগণ মৃত্রু ছ গোলা নিক্ষেপ করিতেছে, তাহাতে রটিশ সৈক্তগণ তিষ্ঠিতে পারে না। সম্মুথে ধাওয়া করিছে তোপের মুধে বছ সৈত হত হয়। ইহা বিবেচনা কৰ্বিয়া •বিপক দলের দক্ষিণ পার্য দিয়া হেভ্লক সাছেবের পদাতিকগণ ধাওয়া করিয়া বিপক্ষের বচ সেনা হত করাতে বিপক্ষগণ পলাইবার পথাত্মদরণ করাতে নীলসাহেবের দল পদাতিকগণ অত্যগামী হইয়া গোলা-গুলি নিক্ষেপে বিপক্ষ-দলকো ব্যক্তিবাল্ক করিয়া এগারটা তোপ ছিনাইয়া লইল। বিপক্ষগণের স্বল সৈত্য যাহারা জীবিত ছিল, তাহারা ও নানাসাহেব প্রাণভয়ে বেগে পলায়ন করিল। সরকার বাহাছরের অখারোহী সৈত্ত তৎস্থানে ছিল না, এজন্ত ধাওয়া করিয়া ধরিতে পারিল না। সন্ধ্যা উপস্থিত হইল। বুটিশ দৈল এবং দেনাপতিদিগের ঐ দিবদ কত ক্লেশ হইয়াছে, তাহা কহিতে পারা যায় না। আঠার ফ্রোশ পথ গমন, তাহাতে অতিশয় অল-কাদা হেতু পথের হরধিগমতা, মধ্যে মধ্যে কণ্টক-বনজলল দেড় হাত ছই হাত ভালিতে হইয়াছে। এইরপে কটকর বুঁদ্দ করা হইয়াছিল। এত পরিশ্রমে বুদ্দে জয়ী इहेन, भाखि इहेन। धे तांख देमग्रांग निर्ताहादत त्रनश्रदन बहिन, সদা চমকিত, কি জানি যদি বিপক্ষণণ গোপনপথে আসিয়া আঘাত করে। এজন্ম পতর্ক হইয়া রহিল। পর দিবস প্রাতে বিঠুর যাত্রা ক্রিল। তথার সকল শৃত্যাগার, কাহাকেও পাইল না। সহর মধ্যে

হেজ্লক সাহেব তাহাদিগকে তরসা দিয়া জিল্ঞানা করিলেন বে, "বল দেখি কোন স্থানে সাহেব, বিবি, মিশ্ ও বাবাদিগকে হ্রাচার বিদ্রোহিগণ হত করিয়াছে? সে হান কোন স্থানে আমাকে দেখাইতে পার?" তাহারা কহিল, "এই সে সকল স্থান দেখ আসিয়া।" হেজ্লক্ সাহেব মশান-হান দ্রেখিয়া অত্যক্ত হাখিত হইয়া অশ্রুপূর্ণ লোচনে কহিতে লাগিলেন, "যদি এই ছ্রাচারগণকে যুদ্ধে ধৃত কিয়া বধ করিয়া যাইতে পারি, তবেই এ মহৎ হুংধের কিঞ্চিৎ নিবারণ হইবে।" এই কথা কহিয়া তিনি কানপুরে অবস্থিতি করিলেন।

# কাশী হইতে পাটনা

# ১৭ বৈশাখাবধি ৪ জাবন পৰ্য্যন্ত

অনিতে লোলার্ককৃত্রের দক্ষিণ তুলদীদাদের ঘাটের পশ্চিম গণপতি মহারাষ্ট্রের পিতা গোবিন্দ রাও · · · · গুনানিবাদী রাজা অমৃতরারের গোটা এবং দশ হাঁজার পদাতিকের মালিক, আর রাজা সাহেবের উজির তাহার বৈঠকখানা বাটা, তাহার নিজ বাটার, নিজ দক্ষিণ রাজার পার, ঐ বাটাতে অবস্থিতি করিয়া লান-তর্পণাদি, করিয়া বিশেশর অলপুর্ণা কেদার ইত্যাদি দর্শন যাত্রা করিয়া জগরাথদেবের আরতি দর্শনাদি করিয়া ৫ শ্রাবণ রবিবার লোলার্কে এবং অদিতে গঁলালান করিয়া বালালীটোলাতে ৺য়য় গোপাল বন্দ্যাপাধ্যারের বাটাতে, যে বাটাতে পূর্বে আদিয়া থাকা হইয়াছিল, ঐ বাটাতে আসা হইল।

# '৬ প্রাবণ, সোমবার, চতুর্দশী

চৌষটি ঘাটে স্নান-তর্পণাদি করিয়া প্রীপবিশেষর-অন্নপূর্ণাদর্শনাদি করিয়া কেদারঘাটে গৌরীকুণ্ডের সহযোগে গঙ্গায়
মার্জন দ্বানাদি করিয়া, কেদারনাথের দর্শন, স্পর্শন ও পূজন
ইত্যাদি করিয়া শ্রাবণের সোমবাসরে কেদার-দর্শনে ফ্লাধিক্য
জক্ত বহু মন্থার মেলা হয়, মেলা দেখিয়া বাসাতে গমন।

#### ৭ জাবণ, মঙ্গলবার, অমাবস্থা

ঐ মত লান-তপণ দর্শন-যাআদি হয়। এই দিবস বড় বাদল করিয়া তাবং দিবারাঅ বৃষ্টি হয়, কণমাত্র বিশ্রাম ছিল না। কাশীধামে উত্তরবাহিনী গদার দলবৃদ্ধি হইরা যে তীর্থে প্রবিষ্ট হর, সেই তীর্থ-দান-তর্পণে সর্ব্বতীর্থের ফল প্রাপ্ত হর।

#### ৭ ভাদ্র

জলর্দ্ধির হত্তপাত হয়। ঐ দিবদ মুহরি-দমন হয় অর্থাৎ কানীতে যত মুহরি আছে, সকল মুহরিতে গলাললের প্রোত হয়। ৯ ভালি

পুষরভাষর তীর্থ কারাথদেবের পশ্চিম দিকে আছে, তাহাতে আসি হইরা গলাজল ঐ তীর্থে বোগ হইলে ঐ সলমন্থলে স্নান-তর্পণ করিলে পুছরভাষরতীর্থে স্নানাদির ফল হর, এ বৎসর » ভাস্তা-বধি ১৫ ভাস্ত পর্যন্ত জল ছিল।

# ভাদ্র, মঙ্গলবার, ষষ্ঠী লোলার্ক কুণ্ডের মেলা হয়।

ঐ দিবদ জল-বৃদ্ধি হইরা ইক্সহায় হয়। মণিকর্ণিকাঘাটের চক্রতীর্থ উপরে এক অবথ বৃক্ষ আছে, তাহার মূলে ইক্সহায়েখর শিব
আছেন, গঙ্গা হইতে অনেক উচ্চ। ঐ শিবের মন্তক্তর
উপর জল হইলে ইক্সহায়তীর্থ হয়, তাহাতে স্নান-তর্পণ। এ বৎসর
গঙ্গার এত বৃদ্ধি হইয়াছিল বে, ইক্সহামের উপর প্রায় পাঁচ-হাত জল
হইয়াছিল। এই দিবদ ঘোরতর বৃষ্টি হয়, দিবারাত্র বিরাম ছিল
না, আইাহ বৃষ্টি হইয়া জলপ্লাবন হয়, এমত গঙ্গার জলবৃদ্ধি প্রায়
কুড়ি বৎসরের পর হইয়াছে।

#### ১১ ভাদ্র, বুধবার, সপ্তমী

ললিতাকুণ্ডের যাত্রা এবং ইব্রহ্যমে স্নান-তর্পণাদি করিরা মণি-কণিকেখর বিখেশর অরপুর্ণা কেলার ইত্যাদি দর্শন-বাঁজা।

# ১২ ভাদ্র, বৃহস্পত্তিবার, অফমী

লক্ষীকুণ্ডের মেলা নিত্যনিষ্মিত স্থান-তর্পণাদি দর্শনধাঝা সমাপন করিরা লক্ষীকুণ্ডে স্থান-তর্পণাদি করা হয়। এই মেলা যোল দিন হয়

ভাল মাসের ভক্লা তৃতীরাতে কাশী-প্রদেশে তিল্ভৃতীরা-ব্রত হয়। এবত অন্ত কোন দেশে দেখি নাই। এই ব্রতে স্ত্রীগণ উপবাসী থাকিরা রাত্রে হরপ্রোরী প্রকা করে। এই দিবদ অতিশর উৎসাহ দৃষ্ট হয়, নৃত্ন বস্ত্র অলকারাদি বাহার বেমত সক্ষতি তজ্ঞপ আপন আপন স্ত্রীপ্রপরিবারগণকে দিবে। নব নব বস্ত্রালকারে স্থাভিতা হইরা মকলাগোরী দর্শন-পূজনে সকলে গমন করে। এ বৎসর গুভাল্গ শনিবারে হয়।

# ৮ ভাদ্র, রবিবার, চতুর্থী

ইহার নাম গণেশ চৌথ। এই দিবদ গণেশ-পূকা রাত্রে হয়।

\*মহারাষ্ট্রদিগের প্রায় প্রতি ঘরে বেদপাঠ নৃত্যগীতবাঞ্চাদি অতিশয়
উৎসাহ।

বরণাধাত্রা ভাত্র মাহার শুক্লা-দাদশীতে। এ বংসর ১৭ ভাত্র মঙ্গলবার দাদশী হয়। বরণাসঙ্গমে সানতর্পণাদি আদিকেশব (ও) বরণেশবের যাত্রা।

#### ৩ আশ্বিন, শুক্রবার

্ব দশু দিবাগতে স্থাএহণ হয়। বহু মহুবা কাশীধামে উত্তর-বাহিনী গলাভীরে পশ্চিম তটে অসিবরণা পর্যান্ত। সকল হাটে দাটে প্রক্রমণ ইত্যাদিতে স্থাপাভিত। কিছু এ বংসর ঘাটীয়াল এবং গলাপুঞ্জিগের মৰলগ লোক্ষান। তাহার কারণ, নানাদেশের রাজ্ঞগণ এবং ধনিগণ বছ সমাধিতে স্থা্গ্রহণে লান দান করিতে আদিত, পাঁচ ছর লক মহ্বের সমাগম হইত, এক এক ঘাটীয়ালে হাজার টাকা পর্যন্ত পাইত, গলাপ্রজিলগের প্রাপ্তির কথা কি কহিব ? এক এক জন রাজা স্তর্বে মণ্ডিত ও ভূষিত অখ ও হস্তিগণকে দান করিত, এ বংসর যুদ্ধে নানা মত গোলযোগ হওয়তে এবং গ্রহণের লানোপলকে রাজ্ঞগণ এবং ছল্লবেশে বিগড়া দিগাহীগণ লক্ষ্মে দিল্লীর অভিমুখ হইতে কুমারসিংহ ও নানাসাহেব প্রভৃতি কালী প্রবেশ করিবে এই সংবাদ সরকার বাহাছরের কর্ম্মরক্ষণ পাইয় স্থানে স্থানে শুল বহু করিয়া জোপ বন্দুকে গোলাগুলি পুরিয়া গোরাগণ প্রস্তুত রহিল, ঘাটীঘাটী থানাদারগণ আপন আপন দল লইয়া সকল গমনাগমনের পথ এবং পারাপারের নৌকাপথ কন্ধ করিয়া রহিল, গলার পুর্বপারে কোন নৌকাদি রাখিল না। অন্ত কোন স্থানের মন্ত্র্যাকে কালীতে প্রবিষ্ঠ হইতে দিল না।

#### ৪ আশ্বিন, রবিবার

শারদীয়া মহাপুঞ্জার করারস্ক। এতদেশে নবরাত্রের মেলা প্রতিপদাদি অবধি মহানবনী ১২ আখিন পর্যান্ত হুর্গাবাটীতে মেলা হয়, বছ মমুব্যের সমারোহ। চণ্ডীপাঠ হোম পূঞা ইন্ড্যাদি আছে। কাশীধামে বালালী মহাশরদিগের হুর্গোৎসব হয়। কিন্তু বলিদান হুর্গাবাটীতে করিতে হয়, কাশীপুরীতে বলিদান করা বিষেধ্যেরর অনুসতি নাই। কেবল হুর্গাস্থ্রবধ স্থানে হুর্গাবাটীতে বালান হুইতে পারে।

#### ১৬ আখিন, রুহস্পতিবার

 কাশীধামে বালালীটোলার তরকারি বালারের উপর জয়গোপাল বল্টোপাধ্যায়ের বাটাতে থাকিয়া গলায়ান তপ্র দর্শনাদি করিয়৸সহরের বাজারাদিতে ভ্রমা।

# ১৭ আঁখিন, শুক্রবার

প্রাতে স্বেয়াদরে দেশাগমন্ত্রের বাতা করিয়া অন্তর্গৃহী অন্তে নৌকার আসিয়া কেলা ভশ ঘণ্টার সময়ে নৌকা খুলিয়া কাশী হইতে পাঁচ ক্রোশ আসিয়া থাকা হয়।

# ১৮ আখিন, শনিবার, পৌর্পমাদী

প্রাতে গোমতী, তাহার পর ছই ক্রোশ সৈয়দপুরের গঞ্জ, তথা হইতে তিন ক্রোশ পরে জাউলে গ্রাম, তাহার আড়পারে চড়াতে আহারাদির উদ্যোগ হইয়া প্রস্তুত হইলে পর ঝড়বৃষ্টি হয়। তৎকালে অয়বাঞ্জন সকল ঢাকিয়া রাখিয়া ঝড় জল নিবারণের পর আহারাদি হয়। বেলা ছয় দও থাকিতে নৌকা খুলিয়া আসিতে প্রিমধ্যে শ্রীষ্ত বাব্ কালীপ্রসাদ ঘোষ ভায়ার জীর পেটে বেদনা হইয়া বমন হইতে আরম্ভ হয়, পথিমধ্যে

গান্ধিপুর
তিন চারি বার বমন হয়। রাজ দেশ ঘণ্টার
সমরে গান্ধিপুরে, পহাঁছিয়া থরনেল সাহেবের ঘাটের পুর্বের
গোবিন্দ গুপ্তের ঘাটে নৌকা থাকে। আমি ও মুথোপাধ্যায়
মহাশর এক জন নৌকার দাঁড়ি সমভ্যারে প্রাণ্ডুল্য প্রীব্ড
স্ফারুয়ার সর্কাধিকারীর বাসাতে গমন করি। স্থ্যকুমার আমার
আসিবার সংবাদ, কল্টোলা-নিবাসী শ্রীক্ষচক্র দত্তের বন্ধরা অপ্রোপ্ছাতে ভাহার প্রমুখাৎ বেলা ছয় দও থাকিতে ভনিয়া বাসাতে

তাবৎ তরকারি ইত্যাদি রস্থই করাইয়া সন্ধার পর অবধি থরনেল সাহেবের ঘাটে আপন সন্ধার বেহারাকে বসাইয়া রাথিয়া রাত্র নয় ঘণ্টার পর স্থ্যকুমার বাদার ঘাইয়া আমাদের নৌকা না ছৌছান জন্তু চিন্তা করিতেছিল এবং রস্থই দ্রব্য থাহার জন্তু তথাকার চারি পাঁচ জনকে সংবাদ পাঠাইয়া আনাইয়াজিল, এমত কালে আমাদের নৌকা পহছিল। আমরা বাদার পহছিবামাত্র রস্ত্রে-রান্ধাকে বড় বাটল করিয়া ভাত চড়াইলে কহিল, তাহা শুনিয়া আমি কহিলাম, "পথে আহারাদি হইয়াছে, আমধ্রা রাত্রে অয়াহার করি না।" তাহা শুনিয়া পুরী তৈয়ার করিতে দিয়া আমি ও স্থ্যকুমার কালীবাব্কে সপরিবারে বাদায় লইয়া যাইবার জন্তু নৌকার করা হইল। বধুর ব্যারাম জন্তু নৌকা ইইতে বাদায় লইয়া যাইবার জন্য যত্র করাতে তিনি স্থীকার করিলেন। পরে পাল্কি আনাইয়া বাদায় লইয়া যাইয়া নানামত ঔষধ লারা কিঞ্জিৎ বিশেষ বেবাধ হইয়া নিলা হইল। আমরা পুরী ইত্যাদি আহার করিয়া শয়ন করিলাম, মুখোপাধায় নৌকায় আসিয়া শয়ন করিলেন।

#### ১৯ আশ্বিন, রবিবার, প্রতিপদ

প্রাতে নৌকা থুলিয় কলিকাতা আদিবার উন্থোগ ছিল, কালীবাবুর পরিবারের ব্যামহ বিশেষ না হওয়া জ্ব্র এবং রামপুর
বোয়ালিয়ার নিকট হরিপুরনিবাসী গোলোক চৌধুরীর আদিবার
অপেকায় গমন রহিত হইয়া গাজিপুরে স্থিত হইল। রোগিণীকে
জোলাপ দেওয়া হয়। গোলোক চৌধুরী সন্ধার সময় গাজিপুর
পহছিলেন। তাঁহার পুত্রবধ্বজরা মধ্যে প্রস্ব হইয়া এক পুত্র সন্ধান
হইল। বজরা মধ্যেই স্থৃতিকাগৃহ করিয়া টিকা গুল কয়লাতে আয়ি

প্রজ্ঞানিত করিয়া দিয়া ঝাথিল। এই দিবস বাসাতে পোলাও ইত্যাদি ঝাঞ্চ প্রব্য প্রস্তুত করিয়া গাজিপুরে যে কায়স্থ সকল আছেন, তাহাদিগেল সহিত রাত্রযোগে ভোজ হয়। ঐ দিবস রাত্রে আর আর সকলে নৌকায় আসিয়া রহিলেন। আমি কালীবাবু আর উহার পরিবার বাসাতে রহিলাম, ভোরে যাইয়া নৌকা খুলিব এই কথা হির্মাধাকিল।

#### ২০ আখিন, সোমবার

প্রাতে উঠিয়া গমন জন্ম বিবেচনা করিতে জ্বানা হইল বে, ব্যামহ
আরাম হয় নাই এবং চৌধুরীদিগের অভিপ্রান্ত ছয় দিবদ পর্যান্ত
থাকা হইলে ভাল হয় । ইহাতে সমভাারী সকল নৌকার সম্মতি
করিতে কেহ কেহ অপেক্ষায় রহিল, কেহ কেহ নৌকা খুলিয়া
গেল। আমাদিগের তিন নৌকা শনিবার পর্যান্ত গাজিপুরে থাকা
ছির হইল।

গাজপুর অতি উত্তম স্থান। বসতি কমবেশ গাঁচ হাঞার থর।
মুসলমানের দেশ। লালদরজা হইতে কোট পর্যস্ত চকবাজার।
আহারাদির সকল জব্য পাওয়া যায়। হালওয়াইদিগের পঁচিল
ছাবিবশ দোকান। রেউড়ি অধিক বিক্রম্ব হয়, পেড়া বরকি মুগদল
মতিচ্র গজা চাঁদুদাই নিমকি ইত্যাদি মেঠাই সকল দোকানে
দোকানে প্রস্ত থাকে। আর আর সকল মশলা ও মেওয়াদির
দোকান আছে। গোলাতে চাউল দাল ম্বত ইত্যাদির দোকান;
কাঁদাক্লিপটা, ঐ স্থানে বাঁশ দরমা দড়ির গোলা আছে। কাপড়ের
দোকান স্থানে স্থানে বাঁল প্রমা বড়ির গোলা আছে। কাপড়ের
দোকান স্থানে স্থান উত্তম।

আতর গোলাপ গান্ধিপুরে যেমত ক্রেনো, এমত কোথাও জন্মে না। গোলাপের বাগান (অসংখ্য), দশ হাজার বিঘাতে গোলাপ হইতেছে। আতর গোলাপ লইমা গলি'গলি ফিরিতেছে। ইস্তক চারি আনা নাগাইদ ৮০ টাঝা পর্যান্ত আভুতরের ভরি। গোলাপের আট টাকা পর্যান্ত বেকেল বিক্রয় হয়। চড়ি উত্তম হয়, কাঁচের চুড়িতে পুতির এবং গথরুর কাজ ছয় টাকা পর্যান্ত দামে বিক্রন্ন হইতেছে। 'গাজিপুরের পূর্বনাম গাধিপুর। এই স্থানে গাধিরাজার বাটী কেলা আছে, ইহাকে কোট কছে। এই স্থানে ডাব্রুগানা, ডিসপেন্সরি স্বএসিন্টাণ্ট সার্জন থাকেন, একণে স্থ্যকুমার স্বাধিকারী আছেন। অতি উচ্চ স্থান। ইাসপাতালের উপর হইতে তাবৎ সহর দেখা যায়। ইহার অধিক উচ্চ স্থান সহরের মধ্যে আর নাই। ইাসপাতালে দশজন রোগী থাকিয়া সরকার হইতে আহার পায়। ইহার ফটকের উপরে বাবু দেবীচরণের বৈঠকথানা, কোটের নীচে মহাজনদিগের গুদাম আছে। এই স্থানে তিসি ও সোরা এবং চিনির কুঠী আছে। কলিকাতার অনেক হৌদের গোমস্তাগণ কুঠী করিয়া প্রাম গ্রাম হইতে মাল আমদানি করিয়া কলিকাতায় চালান করে।

গান্ধিপুরের পশ্চিম সীমাতে ছাউর্নি, পূর্বাদিকে সহর। সহর মধ্যে কোভোরালি (ও) গোলাগন্ধ, গলাতীরে সহর বালার। ইহা ভিন্ন সকল মহলাতে বালার আছে। ছাউনিতে গোরাবারিক ছিল। প্যারে-ডের মাঠ ইহার নিকট। গলাতীরে লর্ড কর্ণওরালিসের টুম্ব অর্থাৎ গোরস্থান, এই টুম্ব প্রস্তরে অতি স্থানির্ম্মিত। টুম্ব-হলের যেমত্ থামনির্মিত, সেই মত বার থামে চাদনী। তাহার ভিতরে মর আছে, ঐ মরমধ্যে গোর, মর্ম্মরে মেজে বাধা। উপরে খেতপ্রস্তরের গোরা,

তাহার উপর উত্তম স্থানির্দিত খেতপ্রস্তরের এক ব্রহ্মণ এক মৌনবী পূর্বাদিকে, এক গোরা এক দিপাহা পশ্চিম দিকে। ইহার মধ্যে পাথরের হল্পকর্ম ভাল মত আছে। টুম্ব তৈয়ারিতে লক্ষ টাকা বার হয়, রেল গেট বাগিচা তৈয়ার করাইতে লক্ষ টাকা, সর্বাচ্চ হল্প টাকা বরচ হয়। অতি মনোর্ম স্থশীতল স্থান, নানামত মগারি পূলা, ফল এবং পাতার রক্ষণতা আছে। মালী এবং ধারপাল নিযুক্ত আছে। ইহার সমুদর ব্রহ্মপত্র গবর্গমেন্টের ব্রহ্ম। এই স্থলে সকল সাহেবলোক আইদেন, টুপি খুলিয়া আদিতে হয়। ইহার পশ্চিম এবং উত্তর্বদিকে ঘোড়ার আন্তাবল। এইখানে ভূকক-সভয়ারের ঘোড়া তৈয়ার হয়। বগুদর হইতে বাছড়া আদিয়া গাজিশুরে সভয়ারিতে তৈয়ার হয়। বগুদর হইতে বাছড়া আদিয়া গাজিশুরে সভয়ারিতে তৈয়ার হয়। বগুদর অহ্মতিক্রমে স্থানে হানে পাঠান হয়। এক্ষণে হালার ঘোড়া আন্তাবলে আছে। অতি উত্তম ঘোড়া, এক হাজার টাকার কম দাম নহে, অধিক মূল্যও আছে।

মৌবাগে আফিঙের কুঠী, এই কুঠীতে মবলগ টাকার মাল

মজুত আছে, ছয় সাত জোর টাকার আফিঙ মজুত আছে। বেগড়া

কিপাহীদিগের গোলবোগে সর্ব্ব প্রজানমেত বিগড়াইরা স্থানে

স্থানে যুক্ক করিয়া লুঠ-ফেসাদ করাতে এবং বগসরে আসিয়া কুমার
সিং প্রবল্গ হওয়াতে আফিঙের কুঠীও সহর রক্ষার্থ গোরাগণ লাইন

হইতে আফিঙের কুঠীতে চৌকী থাকে, অস্থাবিধি তাহাই আছে।

অধিকস্ক কুঠী বেষ্টিত করিয়া কেলা হইতেছে। ইহার ভিতরে আজকাল কাহাকেও প্রবিষ্ঠ হইতে দের না। এক কোম্পানি গোরাতে

বেষ্টিত আছে। কুঠীর সমূথে পাঁচশত গন্ধ ময়দান থাকিবে, এজন্ত্র

সমূথের মর-বার্টী বাগ-বাগিচা ইত্যাদি বাহা ছিল, তাহা ভন্ম ও

ছেদন হইতেছে। অতি উত্তম গোসাঞিয়ের বাগান ছিল, ভাহাতে

মানা জাতীর মেওরার বৃক্ষ এবং প্রপোম্বান ছিল, তাহা ছেদন করিরা মরদান করিরাছে। কুঠীতে · · জনা সাহেব লোক আছে। গাজি-প্ররের আফিঙের কুঠীর তুল্য কুঠী কোথাও নাই। এথানে উত্তম মাল জন্মে, অনেক বালালী কেরাণী প্রোমন্তা মোহরর আছে।

জল কালেক্টর-মাজিটর, ডিপুটা, সদরআমিন, সদরআলা ও মুন্দেফের কাছারি আছে। পোটাফিদ গোরা-বাজারের মধ্যে। আনেক বালালী আছে, গাজিপুনে সর্বজাতিতে ৬৪ ঘর বালালী আছে। ইহাদের পরস্পার মিলমেলাপ আছে'। পুর্ব্ধে আনেকের পরিবার নিকটে ছিল, উপস্থিত গোলবোগের জন্ত বিজয়াতে স্বদেশে ধাআা করিয়াছে।

গান্ধিপুরে ছই জন সব্ এদিন্টাক সার্জ্জন্। সহরের ডিদ্-পেন্দরিতে স্থাকুমার সর্বাধিকারী, কেলথানাতে শ্রীনাধদেন কবিরাজ, সিবিল এবং মিলিটরিতে ছই জন সাহেব ডাক্তার আছে।

হরবংশ লাল সরকারি উকিল এবং হনুমান্দাস, শিব সহায় প্রভৃতি শেঠগণ কুঠাওয়াল আছে, ইহারা অধিক ধনাতা। সহর মধ্যে বে সমস্ত বালালী আছে তাহাদের সহিত বিশিষ্ট আলাপ হইয়ছে, অতি সচ্চরিত্র স্থভব্য ব্যক্তি। প্রতি দিবস প্রাতে (ও) সন্ধ্যার হর্ষ্যের বাসাতে আসিয়া আহুগত্য করা হয়়।

১৮ আখিন শনিবার অবধি ২৫ আখিন শনিবার পর্যান্ত গাজিপুরে থাকিরা সহবের সর্ববে জনণ করিরা দেথা হইল। মুদলমানদিগের মস্জিদ স্থানে স্থানে আছে। সহবের মধ্যে এক উত্তম মস্জিদ
আছে, তাহাতে চারি ওক্ত নমান্ত পড়ে। সহরেও লোক অতিশর
ইক-বিতা জানে, জিনিসের দর দশ গুণ বৃদ্ধি কহে। বিশেষতঃ উম্

মমুখ্য হঠাৎ ঠকিয়া যায়ু। আতর গোলাপে গাজিপুরের ওজন এক শত পাঁচ দিকার।

বেলা ছুই দণ্ড গড়ে গাজিপুর হইতে বাহির হইয়া নৌকার

# ২৬ আশ্বিন, রবিবার

613

আদিয়া স্নান-তর্পণাদি সমাপন করিয়া বেলা চারি দণ্ড গতে নৌকা থুলিয়া গাজিপুর হইতে ২ ক্রোশ আসিয়া বাবলাবন, এই থানে অতিশয় দস্যাভয়<sup>9</sup> পরে ২ ক্রোশ বীরপুর, আড়পার বারা। পরে ¢ ক্রোশ চৌসর—কর্ম্মনাশা নদীর মুথ, এইথানে আড়গড়া, সাহেবের ৰান্ধালা আছে। গন্ধার তীরে এইখানে একজন বান্ধালী আছেন। তাহার পর <sup>\*</sup>দেড় কোশ বগদর। এই স্থানে এক কেলা আছে। বদতি বাজার ইত্যাদি আছে, খান্তদ্রব্য ৰগদৰ বা বস্থাৰ সকল পাওয়া যায়। ঘোডা তৈয়ারির সাত আন্তাবল আছে, আড়পার নারাণপুরে সাত আন্তাবল এই চৌদ আন্তাবলে ঘোড়ার বাচ্ছা মফ:স্বল হইতে আদিয়া তৈয়ারি হয়। এতদেশে গ্রামে গ্রামে জমিদারদিগের জিম্মাতে সরকারি ঘুড়ী সকল এবং উত্তম উত্তম ঘোড়া গ্রামে গ্রামে আছে। ঐ ঘোড়া-ঘুড়ীর সঙ্গমে যে বাচ্ছা হয়, তাহা এক বংসর পর্য্যস্ত রক্ষকগণ প্রতিপালন করিয়া সরকারি কর্মকারকদিগের সম্মুথে হান্ধির করিলে যাহার যেমত দীম তাহা নিরূপিত হইয়া পোষকগণ পাইবে। 👌 ঘোড়া হুই পারের আন্তাবলে আইদে। তিন ঘোড়া এক সহিদ, এই-মত প্রতি অশ্বশালাতে ছই শত আটাইশ ঘোটক আছে। বগদরের কেলাতে উপস্থিত কুমারসিংহের উপদ্রব। পরে ঐ কেলাতে তোপ ,বদাইয়া গোমার পাহারা বদান হয়। কেলাতে ছই শত গোরা

আছে। বগদরের পারে নৌকা ধরিতে দেয়ু না। ষ্টামার গ্যাদপুরা আছে। চৌকী জন্ম আড়পারে অবস্থিতি হইল।

সন ১২৬৪ সাল, ২৭ আখিন, সোমবার, দশসী

বগদর হইতে ৫ কোশ আদিয়া দক্ষিণপার ভোজপুরের রাজ্য, উত্তর পার বেলিয়া। পরে তিন ক্রোশ হরদি, দক্ষিণপার ছবলি গ্রাম, পরে ২ ক্রোশ টেকের উপরে হালিম্গ্রাম, অনেক বদতি আছে। পরে ১ ক্রোশ মানিম গ্রাম, পরে ৭ ক্রোশ ভবানিয়া গ্রাম, তাহার পর পদমিনা গ্রাম। এই স্থানে চাউলের গোলা আছে। মহাজনি ছই তিন নৌকা চাউল বোঝাই হইতেছে। ভোজপুরের সামিল গ্রাম। বেলা

তিভবানী চারিদণ্ড থাকিতে নৌকা লাগান করিয়া আহারাদি করিয়া রাত্রে অবস্থিতি হয়। গোলোক চৌধুরীর বজ্রা আমাদের নৌকার বহরে ছুটিয়া আসিতে পারিল না, পশ্চাতে রছিল। এই ত্রিভবানী গ্রাম ডোমরার রাজার অধিকার, এ গ্রাম হেঙ্গামার সময়ে লুঠ হয় নাই। এই চারি গ্রামের এক জন ক্ষুদ্র জমিদার আপন বাছবলে প্রজান্দিগকে রক্ষা করিয়াছিল। কুমারসিংহের হাসামার সময়ে কাহার ক্ষমতা ছিল না এ পথে জলে কি ভাঙ্গাতে গতারাত করে।

২৮ আখিন, মঙ্গলবার, একাদশী

অতি প্রভাবে ত্রিভবানীর চড়াতে প্রাতঃক্ত্যান্তর স্থানাদি করিয়া নৌকা খুলিয়া ২ ক্রোশ আদিয়া বাকের যথায় ... ... গ্রাম তথার বাজার আছে, নৌকা ধরিবার স্থান। পরে ২ ক্রোশ রিবিলগঞ্জ দক্ষিণপার। এখানে জল নাই, উত্তর পার সোগ্রাম ইহার নীচে দিয়া গলার ধারা পড়িয়াছে। পুর্বের রিবিলগী ... সারশ্

ছাপরার নীচে হইয়া পাটনার পথ ছিল, এক্ষণে যে নৃতন গঞ্চা হইয়াছে, তাহা হইতে রিবিশগঞ্জ চারিকোশ তফাৎ হইয়াছে। এই রিবিলগঞ্জ দারণ ছাপরা। এই সকল স্থান উত্তম স<del>ং</del>রতুলা, বাজার ইত্যাদি আছে। এই স্থানে, সকল দ্রবা পাওয়া যায়। এখানে অনেক মহাজনের কারবার আছে। ছাপরাতে জিলা আছে। ঐ স্থান হইতে নৌকা সকল দক্ষিণমুখে আসিক্লা গন্ধার সহিত মিলিত হইয়া পুর্ব মুথে পাটনায় গমনের পথ নৃতন গলা পাঁচ বংসর হইয়াছে। সাত ক্রোশ পরে ডুরিগঞ্জ। এথানে বান্ধার গোলাগঞ্জ আছে। এথানে সকল জব্যাদি পাওয়া যায়। পারঘাট এবঃ থানা আছে। ডুরিগঞ্জের ১ ক্রোশ नीरह वानूबा आत्मत्र हुए।, जाशास्त्र दिना मन घणीत्र ममत्त्र तोका ধরিয়া রুটী পুরী ভাত তৈয়ার করিয়া আহার করিয়া বেলা ২০ প্রহর গতে নৌকা খুলিয়া তিন ক্রোশ আসিয়া সেরগড়ের বাজার। শোণভদ্র ও দানাপুর এই থানে শোণভদ্র নদী আছে — প্রবলা নদী শোণভত্তা। ইহাতে জলের মহা প্রবল্তা। তাহার পরে দানাপুরের সীমানা। দানাপুর ছই ক্রোশ সহর। এথানে এক পণ্টন গোরা আছে। তিন পণ্টন কালাদিপারী, এক পল্টন সওয়ার ছিল। তীহারা · · · · বেগড়াইয়া দানাপুর হইতে বাহির হইয়া জিলা কালেকটরি লুঠ করিয়া কুমারসিংহের সহিত মিলিয়া বঁগদরের কেলা দথল করে। দানাপুর সহর পুর্ব্ব-পশ্চিমে লম্বা · · · গঙ্গাতীরে। পশ্চিম দিকে ছাউনী গোরাবারিক. পূর্ব্বে মেগাজিন ইত্যাদি তোপথানাতে কালাদিপাহী পাহারা ছিল। একণে সেই। সুব স্থানে গোরা পাহারা হইরাছে। সহর মধ্যে 'অনেক বস্তুবাটা দোকান বাজার আছে। এখানে যুদ্ধের সরঞ্জাম

এবং জেনারেল কর্পেল বিগেড্ মেজর ইত্যাদি সাহেবগণ আছে। গোরাবালার ইত্যাদি সওদাগারি জিনিস সকল অর্থাৎ বিলাতী জিনিস, সাহেবদিগের স্ত্রীপুত্রের দরকারী থেলনা ইত্যাদি জিনিসের দোকান ছাউনীর বাজারে আছে। ইটানার-অফিসের নীচে এক থানা সীমার আছে। সহর দক্ষিণদিকে, তাহাতে বাহালী এবং দেশোয়ালিদিগের বসতি ও চকের বাজার, তথায় নানামত খাল্প স্থার বাষ। ভোজপুর হইতে পাটনার বাঁকিপুর 

 ত্রেলাণাট, ঐ ঘাট হইতে দেওয়ান রামস্থলর মিত্রের বাটী এক জেলাণাট, ঐ ঘাট হুইতে দেওয়ান রামস্থলর মিত্রের বাটী এক

বাকিপুর সমূপে এক চড়া পড়িরাছে, একফু আফিডের গুলামের ঘাট হইরাছে। আড়পাড় চড়াতে সক্ষার সময় নৌকা লাগান করিয়া তিন নৌকা একএ থাকা হয়।

#### ২৯ আখিন, বুধবার

প্রাতে চড়াতে প্রাতঃক্বতা সারিষা স্থান-তর্পণাদি স্থাপন করিয়া নৌকাতে পার হইয়া গুদামের ঘাটে উঠিয়া প্রায় এক কোশ যাইয়া সব্জিবাগে রামইন্দর মিত্রের বাদাবাটা। ইহার নিজ-বাটা বারাসত। এতদেশে পর্মিটের দেওয়ান ছিলেন, এই চাকরি-সম্পর্কে তরফ বাকিপুর জমিদারি। একণে জমিদারি বন্ধক দিয়াছেন। শ্রীযুক্ত কালীপ্রসাদ ঘোষের খণ্ডরের খণ্ডর একণে এ বাটাতে (আছেন।) তাহারা নিজে কেহনাই, কেবল এক জন কর্মকারক আছে। ঐ বাটাটো ব্রাহনগর-নিবাদী শ্রীবৈকুঠ সরকার আছে, রাভাবন্দীর কর্ম করিতেছে।

ঐ বাটীতে যাইয়। ৺গয়াধাম যাইবার পথের অম্পদ্ধান লইবার
য়িশেষ তহির করা হইল। তৎকালে নানা গোলযোগ এবং বাড়ে
বেগড়া মিপাহীদিগের গোলযোগ শুনিয়া তৎকালে গয়াগমনের
বিবেচনা কিছুই স্থির করিতে না পারিয়া বৈকুঠ সরকার সহিত
নৌকায় আসিয়া আময়া চড়াতে আহায়াদি করিতে রহিলাম,
বৈকুঠ আপন কর্ম করিতে গেল। আময়া আহায়াস্তে চড়া হইতে
নৌকা খুলিয়া কয়লাঘাটের কেগলের ভিতর যাইয়া নৌকা ধরিয়া
সব্জিবাগে দেওয়ান মিত্রের বাটীতে সকলে গমন করা হইল,
(এবং) রাত্রে ঐ বাটীতে থাকা হইল। তাঁহাদের বাটীতে থাট
বিছানা কৌচু কেদায়া যত আছে ছায়পোকাতে পরিপূর্ণ। আমি
এক কৌচে শুইয়াছিলাম, ছায়পোকার কামড়ে তাবৎ রাত্র নিদ্রা
হইল না।

#### ৩০ আখিন, বুহস্পতিবার, ত্রয়োদশী

প্রাতে সব্জিবাগে প্রাতঃকৃত্য সমাপন করিয়া নৌকার যাইরা
, স্নান-তর্পণাদি সমাপ্ত করিয়। জ্বলংবাগাস্তে মিত্রের বাটাতে যাইয়া
গয়ার পথের অন্তস্কান করাতে মাজিষ্টরি আমলাদিগের বাচনিক
ভানা ইইল বে, ৮গয়াধাম গমনের পথে কিয়াধামে এক্লণে কিছু
গোল নাই। স্ত্রীলোক সমভ্যারে না লইয়া আপনারা ছ্রাবেশে
অর্থাৎ ভাল কাপড় ইত্যাদি, কি অধিক টাকা সমভ্যারে না লইয়া
গমন করিলে অনায়াসে গয়াতে পিঙপ্রদান করিতে পারিবেন।
ইহা ক্রনিয়া গয়াধাম গমনের তিছির এবং সহর ভ্রমণ করা
হইল।

পাটনা অতি প্রাচীন প্রধান সহর। পাঁচ ক্রোশ পর্যায়

সমান বসতি। হিন্দু মুসলমানে লক্ষ ব্যের ক্ষিথিক বসতি। ইস্তক
পাটনা
বাকিপুর নাগাইদ চকবাজার মেরুগঞ্জ পর্যাস
পাটনা সহর। অনেক ধনী মরুষ্যের বাণিজ্য
এবং কুঠা আছে, নানাদেশের জব্যসকল আমদানী এবং এতদেশের
নানা জব্য রপ্তানী হইতেছে। চাল দাল গম যব সরিষ্য তিসি
ইত্যাদি নানামত ভ্বি-জিনিস চকে বড় বড় গোলাতে আমদরপ্ত
হইতেছে। এক এক গোলাতে লক্ষ টাকার পর্যাস্ত ভ্বি-জিনিস
প্রস্তুত আছে।

চকের বাজার প্রায় ২ ক্রোশ পর্যান্ত স্থগোভিত মতে দোকান সকলের পরিছেদ আছে। দোকান সকল শ্রেণীবদ্ধ। উত্তম উত্তম খাল্পদ্রব্য হালওয়াই পটীতে লোকান সকলে দালান। কুমড়ার লচ্ছা এবং মেঠাই প্রায় সকল দোকানে আছে। কিন্তু দিল্লী এবং ফরকা-বাদে ক্ষমড়ার লচ্ছা যেমত উত্তম হয়, তজ্ঞপ নছে। পেড়া, ব্রফি, श्वक्रिया, मुगनन, शीनाविकाम, ठीनगारे, घडत, शका, थ्रमा, वैतन, মেঠাই, জিলাপি, অমৃতি, স্থত ফেনী, রদকরা ইত্যাদি নানাজাতীয় মিষ্টাল্ল প্রকালের দোকান সকল সাজান আছে। পুরী কচুরির খুলি সন্ধ্যার পূর্বে জালে. প্রয়োজন মতে প্রস্তুত করিয়া দেয়। ফল-ওয়ালালিগের লোকানে বথনকার যে ফল সময় সময় দোকানে প্রস্তুত থাকে। আনতা ডালিম পিয়ারা ইত্যাদি ফল সকল বড বড আছে। পশ্চিমদেশের মধ্যে পাটনাতে মর্ত্তমান রস্তা দেখিলাম. ইহাকে মোহনভোগ কলা কহে। এতদেশে কাঁচকলা পাকাই বিক্রম হয়, চাঁপাকলা আছে। তরকারি বাজারে সকল তর্কারি শাক্সব্জি ক্পি সাল্গম গাজর ইত্যাদি সক্ষই আছে। পদারিদিগের দোকান শ্রেণীমত সকল মসলাদিতে পরিপূর্ণ আছে।

ঠেটারি-বাজারে কাঁসা-পিতলের দ্রব্যাদিতে সাজান থাকে।
পাটুনাতে পিতলের হাঁড়ি ইত্যাদি উত্তম তৈয়ারি হয়, পিতলের
সকল জিট্টিস হয়। হলিচা, গালিচা, সতরঞ্জি দোকানে নানামত
স্পাকারে আছে। আসন উত্তম উত্তম প্রস্তুত হয়।) এই সকল
জিনিস জেলথানাতে ভাল তৈয়ারি হয়।

সব্ধিবাগে করণাঘাটে জ্বন্ধ, মাজিপ্টর, কালেক্টর, কমিশনর, সদর-আমীন, পণ্ডিতের কাছারি, কালেক্টরি (ও) কাছারিঘর অতি উত্তম। কালেক্টরির বেমত ইমারত পাটনার মধ্যে নাই। ঐ কাছারির নিকটে পোটাফিস। গঙ্গার তীরে তীরে সাহেবদিগের বাঙ্গালা সব্জিবাগ। বাঁকিপুরে সাহেবদিগের থাকিবার স্থান এবং বাঙ্গালীদিগের বাসাবাটী। সহর মধ্যে এত-দেশীর বাক্তিগের বাস ও দোকান আছে।

পাটনার আফিঙের কুঠীর অতিশর বাহল্য কারবার। এথানে অনেক টাকা দাদন হয়। এত দাদন মাল আমদানী আর কোন কুঠীতে হয় নাই। ইহার তাঁবে গয়া প্রভৃতি সকল স্থান। অনেক বিজ্ঞা প্রাচীন সাহেব লোক আফিঙের কর্মকারক আছেন। ফিরিন্সি বাঙ্গালী কেরাণী সকল আছে। আর আর আমলা হিন্দু- স্থানী ও বাঙ্গালী আছে।

সব্ এসিণ্টান্ট সার্জন সহবের মধ্যে থাকেন। ছাউনি দানাপুরে,
সহর হইতে তিন কোশ পশ্চিমে। দানাপুরের ছাউনিতে এক্ষণে
৫০০ শত গোরা (ও) ২০০শত শিথ-সৈত্ত আছে। দানাপুর সমেত
পাটনা সহর গণ্য। দানাপুরের ছাউনীতে অনেক বালালী কর্ম্বোপলকে আছে। বিগেড্ মেজরের কাছারি এবং যুদ্ধসম্পর্কীর সকল
আফিদ, ইঞ্জিনিয়ারের দপ্তর, জেনারেল এবং কাপ্তেনের আফিদ

(8€)

453

আছে। গোরাবাজার সদরবাজারে সাহেবদিপের বাবা-বিবির প্রয়োজনের জিনিসের দোকান সকল আছে। বাঙ্গালীবাজারে সহরের রীতিমত সকল স্তব্য পাওয়া যায়। ছানার সক্ষেশ পাটনা সহরে পাওয়া যায় না, দানাপুরের বাজারে পাওয়া যায়।

পাটনার পাটনদেবী ঠাকুরাণী আছেন। এই পাটনাকে,পুর্ব্বে পশ্চিম পাটন (কৃহিত।) সদাগরগণের সদাগরি ছিল, এজন্ত পাটনা কহে। এক্ষণে পাটনা সহরের দোকানদার সকল লুঠ-ছেদাদের হালামার দোকানে দ্রবাদি সাজাইরা রাথেনা। কাহারও অধিক ক্রমবিক্রম হয়না। কারবার প্রায় স্বব্বিক্রম হয়না। কারবার প্রায় স্বব্বিক্রম হয়না।

পাটনাতে রাত্রি দশ ঘণ্টারু পরে বিদেশী লোকের পথে গমনাগমন কঠিন। তিনবার জিজ্ঞাসার পর প্রত্যুত্তর না পাইলে তৎক্ষণাৎ গুলি করিবার ছকুম। পাটনাই জিনিদের প্রশংসা বাঙ্গালা দেশে, অতিশয় বড় বস্তু ছইলেই পাটনাই কহে। কিন্তু নিজ্ পাটনাতে কিছু জন্মে না, অন্ত অন্ত স্থান হইতে দ্রব্যাদি আমদানি হয়, সদাগরির প্রধান পাটনা।

দন ১২৬৪ দাল, ১ কার্ত্তিক, শুক্রবার, ভূত-চতুর্দ্দশী

পাটনার সব্জিবাগের দেওয়ান রামহৃদ্দর্মিত্রের বাটাতে সকল পরিবারকে ও কয়লাঘাটে নৌকা রাথিয়া প্রীযুক্ত বাবু কালীপ্রসাদ ঘোষ ও প্রীযুক্ত ভোলানাথ মুখোপাধ্যার সমভ্যারে তিন জান এবং বেহারা করেক জান পাল্কি লইল, আর কাহাকেও সমভ্যারে লওয়া হইল না। পথের গোলমাল জন্ত সামাগ্র বল্লাদি সমভ্যারে ছিল। পথের প্রাচু মত টাকা লইয়া প্রাতে রওনা হইয়া সহর ছাড়াইয়া জেলথানা, তাহার বি

পর ১ ক্রোশ যাইয়া রাজ্যা, বর্ষাতে ভাঙ্গিয়া ছিড়ে হইয়াছে, ভাহাতে প্রায় এক কোমর জল, তাহাতে নানা কৌশলে পালকি পার করিয়া গা। ক্রোশ যাইয়া প্রদার চটী। তাহাতে ১৫ থানা দোকান আছে। পরে ২ জ্রোশ যাইয়া পুনপুনা নদী। এই নদীতে কাষ্ট্রে পুল ছিল, তাহাতে তালের গাছের স্তম্ভ আছে। বর্ধাঞ্চল পুল ভাঙ্গিয়াছে। এজন্ত গাড়ী পাল্কি ডুলি একা গৰু ঘোড়া ছালা সমেত নৌকাতে পার\*হয়, মহুষ্যগণ হাঁটিয়া পার হইতে পারে। উরতের উপর জল। নদীর তীরে আসিয়া নৌকায় পার হইরা ঘাটের উপর চটী আছে, তাহাতে পাঁচ থানা দোকান আছে। পুলের নিকটে দাহেবদিগের থাকিবার বাঙ্গালা আছে, বটতলাতে গুলারের চাপরাশি এবং ফ ডির জমাদার থাকে। ঐ স্থানে পাল কি রাথিয়া পুনপুনাতে স্থান-তর্পণ করা হইল। এই পুনপুনা নদীকে व्यानिशका करह। शक्तिमामान तमा अवानी পুৰপুৰা যাহারা এই পথে গয়াকেতে গমন করে. , তাহারা এম্বানে প্রাদ্ধাদি করে। আমরা স্থান-তর্পণাত্তে জলযোগ করিয়া > ক্রোশ পরে ভ্বরিগ্রাম। মুসলমানের বস্তি, অনেক ধনী মামুধ্যের বাদ আছে। প্রায় ৩০।৪০ ইটকালয়, তম্ভির ছুই শত খোলার ও মাটার ঘর হইবে। এই গ্রামে লাল খাঁ বাহাছরের বাটী। • যে লাল খাঁ দিপাহীদিগের গোলযোগে দিল্লীর বাদসাহের প্রধান উজির জেনারল্-কমাওরইন্-চিপ হইয়া যুদ্ধে নিজ ক্ষমতা প্রকাশ করিতেছে। পূর্বে সরকার বাহাছুরের স্থবেদার বাহাছর ছিল, তাহার পর লেপ্টেনাট গ্বৰ্ণব্ৰের অভিক্যাম্প হইয়াছিল। ঐ শাল খাঁর বাড়ী ড্ৰবি 'গ্ৰামে, চতুষ্পীৰ্য গড়কাটা অতি উত্তম বাটা, বাগবাগিচা আছে।

লাল থাঁর লাথরাজ রাস্তার পশ্চিম দিকে গ্রামে গ্রামে থাইবার জন্ত এক পূল আছে। প্রাম মধ্যে ভ্রমণের পথ সকল ভাল আছে। গাড়ী পাল্কিতে অনারাসে গমন হয়, দোকান বাজার আছে। পরে ১ ক্রোল পিপুল্মুটীর চটী, ছয় দোকান আছে। চিঠির থবরের জন্ত এথানে সরকার বাহাত্রের ছই জন সওয়ার আছে। পরে ১ ক্রোল মুরহর নদী হাঁটিয়া পার হইতে হয়, নদীতীরে ছাড় চানা (ও) চাবেনার এক দোকান আছে। পরে ১ ক্রোল নাদওয়ানের চটী, ছয় দোকান এবং সাহেবদিগের থাকিবার বাজালা আছে। পরে ২ ক্রোল যাইয়া মশোড়ি প্রাম, চটীতে থানা আছে, আট থানা দোকান মণোড়

রাত্রে অবস্থিতি হইল।

#### ২ কার্ত্তিক, শনিবার, অমাবস্থা

মশৌজির চটী হইতে পাঁচ ক্রোশ জাহানা গ্রাম। এই গ্রামে ভালরপ বসতি আনছে। এই স্থানে থানা এবং ভাক্ষর। বাজারের

ঘরে থাকা হইল। এই স্থানে আহারাদি করিয়া

শ্বাদিকে ভাক্যরে সারদাপ্রসাদ সেন ভিপ্টি
পেটিমটার, জঁতি উত্তম মহন্তা। প্রামের
পশ্চিম দিয়া রাজা, গ্রামের প্রাস্তে দর্ধা নদী, নদীর উত্তরদিকে
রাজার ছই ধারে আট থানা দোকান আছে। নদীতে জল
আর । এই নদীতে লান-তর্পণ করিয়া জলবোগান্তর ২ ক্রোশ বাইয়া
টেটাগ্রাম, গ্রামের ভিতরে বাজার, রাজার উপরের চটীতে ছয়্ব থানা
দোকান আছে। পরে এক ক্রোশ মকদমপ্রের চটী প্রাক্তিবার পাঁচ
দোকান, এক হালওয়াই আছে। পূর্ক্ষিক্তি গ্রাম, ভাহতে বাজার

আছে। মকদমপুরের চুটীতে আহারাদি করিরা অবস্থিতি হইল।
এই গ্রাম গোলবোগের সময়ে কুমারদিংহের
ফালমে পুঠ হয়, প্রজাগণের হ্রবস্থা হইরাছে।
৩ কার্ত্তিক, রবিবার, পদূত-প্রতিপদ

প্রাতে মকদমপুর হইতে গমন করিয়া গ্রামের প্রান্তে ষমুনা নদী, ইহাতে কাঠের পুল আছে, এই পুলের উপর হইয়া পাটনা দানাপুর গ্মনাগ্মনের রিয়ালের রাস্তায় রিয়ালপাতা হইতেছে, গোল-যোগ জন্ত কর্ম্ম বন্ধ আছি। স্থানে স্থানে পুনপুনা অবধি লোহা রিয়াল ও কাঠ স্তৃপাকার আছে এবং দ্রব্যাদি বহনের গাড়ী সকল আছে। বালালা স্ব শুক্ত। ঐ যমুনার কার্চের পূলে পার হইয়াও ক্রোপ গমন হইলে পর বেলা-চটী। এই খানে থানা আছে। গ্রামের বসতি পশ্চিমদিকে. তাহার মধ্যে বাজার এবং কোতোয়ালি। বাজারে খাস্ত ज्यामि नकन পाउम्रा याम्, शन उम्राहेरम्ब माकान नन थाना चारह. সামান্ত মত দ্রব্যাদি পাওয়া বায়, রাস্তার উপর ছই পার্ষে দশখানা দোকান আছে, তাহাতে পথিকগণের থাকিবার স্থান। এই বাজারে চাউল দাল ঘত লবণ তরকারি লইয়া ১ ক্রোশ আসিয়ানেউনার চটী ৪ দোকান: পরে ২ ক্রোশ ঘাইয়া চাকনবাগ নামে এক আম্রবাগান। ঐ বাগানের বটতলাতে ছই খানা ছাতু চনা চাবেনার দোকান এবং কুরা আছে। ঐ বাগে গ্রাম হইতে হাঁড়ি (৪) কাঠ আনাইরা রস্কুই ছইয়া আহার হঁয়, আহারাত্তে গমন করিয়া ২॥ ক্রোশ ঘাইয়া ৮গরাক্ষেত্রে রামশিলার পাহাড়, পরে ১ ক্রোশ সাহেবগঞ্জ, পরে > ক্রোশ বিষ্ণুমন্দির। প্রথমে বামনী-ঘাটে

গ্রা
বরণ চৌধুরী গ্রালের বাটীতে যাইয়া

কুলাদইকে প্রণাম করিয়া বসিতে রুলির ভিলক দিয়া পেড়া

এবং তুলদী দিলেন। তথার বিদিয়া প্রী৮খামা প্রতিমা দশ বার থানা ফল্পতে বিদর্জন জন্ত লইরা যাইতেছে দেখিলাম। প্রতিমা দেখিরা জিজ্ঞাদা করিলাম যে, "কত দিন এতদ্দেশে, প্রতিমা নির্মিত হইরা এরূপ বান্তভাগু হইরা খ্যামাপুলা হইতেছে ? এ পূজা বান্দালীতে, কি তোমাদের দেশওরালিতে করিতেছে ?" তাহাতে কহিলেন, "খ্যামা এবং আখিন মাদে হুর্না পূজা প্রতিমা গঠিরা পাঁচ ছর বংসর এখানে হইতেছে। প্রথমে হুই থানি প্রতিমা বান্দালী হুই জন—একজন বাবু কালীচরণ মৈত্র পটনে থাকেন, বিতীয় মতিস্করী দাদী বারাদত-নিবাদী নীলমণি মিত্রের পুত্রবধু এই হুই বাটীতে পূজা হইয়াছিল। ক্রমে বংসর বংসর বৃদ্ধি হইয়া এক্ষণে বান্দালী ও হিন্দুস্থানী গরালিতে প্রায় কুড়ি বাইশ খানি খ্যামা (ও) দশ বারখানি ছুর্ণা প্রতিমা গঠিরা পূজা করিতেছে।"

সকল জ্বাদিতে স্থােভিত নাই, মস্থাগণের স্থা নাই, ব্যবদারিগণ অতিশর হুঃখিত আছে। সাহেবগঞ্জ পুর্বের বেমত চক-বাঞ্চার ছিল, তাহার কিছুই শোভা নাই এবং সাহেবদিগের থাকিবার বাঙ্গালা করার অবয়া
সকল কেছ দগ্ধ কেছ ভগ্গ এই মত হইয়াছে, কাছারির বাঙ্গাণা অগ্লি দগ্ধ, জ্লেগথানার ছার ভগ্ম, ডাক্রার থানার ঘর উৎপাটিত, বাঙ্গালীদিগের অনেকে স্থদেশ যাত্রা করিয়াছে, অনেকে স্ত্রীপ্ত্র-পরিবারদিগকে দেশে পাঠাইয়া একাকী আছে, ধনিগণ অনেকে নির্ধান ইইয়াছে, গয়ালিগের বাটীতে দরওয়ান চাকর বৃদ্ধি, অর্থ হানি, হাহাকার ধ্বনি। বিস্থাপদ দর্শনে সন্ধ্যার পর চারি দণ্ড রাত্রি ইইলে ক্র ক্র হয়, এই মত আসিত ইইয়া গয়াভুমে সকলে আছে। এতাবং ছয়বস্থ

গ্রাধামের বাজার সকল দেখিলাম শ্রীভ্রষ্ট, পর্ব্ব মত দোকান

দেখিয়া গ্যালদিগকৈ জিজাদা করিলাম. "ইহার বৃত্তান্ত কি ?" তাহাতে কহিলেন, "সন হালের ২০ শ্রাবণ ৩ আগষ্ট কমিশনর সাহেবের অনুমতিক্রমে জজু কালেকটর মাজিটর গয়া হইতে পাটনা আসিতে যাত্রা কব্লিলেন, কিন্তু পথিমধ্যে কালেক্টর মণি সাহেব বিবেচনা করিলেন—মবলগ টাকা খাজনাতে মজুত আছে, এ টাকা এক্ষণে রাথিয়া যাওয়া ভাল হয় না, এই বিবেচনা করিয়া পথ ছইতে ফিরিয়া আসিয়া বেবাক প্লাজনা কেরাচিতে বোঝাই করিয়া লইয়া গমন করিল। সাত্তবদিগের টাক! লইয়া গয়া ছাডিয়া যাওয়াতে সহরের সকল লোক ত্রাসিত হইল, দ্ব্যুগণ প্রফুল্ল হইয়া বহু সমাধায় সহর শুঠিবার মানসে একত হইল, তাহাদিগের সমভাারে ছই জন গয়াল মিলিল, ইহারা হাজার মাত্রুষ একত ২১ প্রাবণ ৪ আগষ্ট প্রথমে সাহেবগঞ্জের মহাজনদিগের দোকান সকল লুঠ করিল, কাহার কিছু রাখিল না. পরে সহর মধ্যে যেখানে যত দোকান ছিল. সকল বন্ধ হটল। দক্ষাগণ অতিশয় প্রবল হটয়া সহরের সকল ্মহুম্মগণকে ব্যতিব্যস্ত করিয়া গয়ালদিগের এবং বাঙ্গালী ও আর আর ধনিগণের নিকট হইতে পাঁচশত টাকার কম নহে (এবং) ছই ছালার টাকা পর্যাস্ত যেমত ব্যক্তি ধনবান তাহার নিকট তত টাকা লইয়া ক্রগিত রহিল, কিন্তু গ্রাল সকল আপন আপন মহলাও বাটী রক্ষার্থে এক শত দেড় শত অস্ত্রধারী বন্দুকচি, খোলা তলোয়ার ও বন্দকে প্রাল ভরিষা পলিতা জালাইয়া দিবারাত্র ছিল। এই মত উপক্রব ছয় দিবদ পর্যান্ত সহরে ছিল। বাসিন্দারা বাটী ছইতে বাহির হইয়া জল আনিতে যাইতে পারে না, সকলের ঘার রুদ্ধ ছিল, আহারাদি অনুকের হয় নাই। দ্যাগণ প্রায় মুসলমান আটশত. चाकि नीठ कांजि हिन्तू, हेरात्रा थाना ज्यात्रातन, कारात्र कारात्र अ হত্তে বর্দুক পিওল কড়াবিন গোলাগুলি পুরিত করিয়া সহরের চতুম্পার্ছে এবং সহর ভিতরে 'আলি আলি' শব্দ ভীষণমূর্ত্তিতে ঘোরনাদ করিয়া ছিল, এজন্ত বিক্তুমন্দির পর্যান্তও ফটক বৃদ্ধ ছিল, কাহারও দর্শনে গমনাগমনের ক্ষমতা ছিল না। প্রতি দিবস এক এক পিও দান হওয়া ছক্র হইঝাছিল, অতি প্রবল গোলঘোগের দিবসে একজন মহারাষ্ট্র রাহ্মণ পিওদান করে, আর কয়েক দিবস অতি কটে পিওদান হইত। ঐ পুরী মধ্যে যে পুজারী ও চর্দ্দ সওয়াইয়ের নায়েব গোমন্তা সিপাহী যাহারা ছিল, ভাহাদের মধ্যে কেছ একজন পিওদান করিত, এই মতে বিক্তুপদে পিও প্রদান হইয়া পুরাদি হয়।

গয়াভূমের সব্ এসিন্টান্ট সার্জ্জন গোবিন্দ দত্ত আপুন পরিবারদিগকে স্বদেশে পার্টার্য সহর-ঘাট হইতে পাল্কি করিয়া গয়াতে
ভিদ্পেন্সরিতে আসিতেছিলেন। পথিমধ্যে প্রবল গোলযোগ ভানিয়া
পাল্কি হইতে নামিয়া কাহারের বেশ ধারণ করিয়া পলায়ন
করিলেন, আর আর অনেকেই ছয়বেশে লুকাইয়া ধন প্রাণ রক্ষা
করিয়াছিল। সাহেবগণ গয়া হইতে পাটনা গমন করাতে গয়া
সহরের এতালৃশ হরবস্থার সংবাদ পাটনায় পাইয়া দানাপুর হইতে
পকাশ জন গোরা (ও) পকাশ জন শিব-সৈত্ত লইয়া কলেক্টর মিদ
সাহেব এবং জজ, মাজিষ্টর ও আর আর ন্সাহেবগণ গয়াভূমে
আসাতে দহাগণ ছয় দিবদ পরে পলায়ন করিল। ইহারা এই সহরের
মহায় ছিল, দহাদিগকে গত করিবার নানামত অহসক্ষান করিয়া
প্রধান প্রধান প্রায় একশত ব্যক্তিকে কাসী দিল, বাকি সকল
কোথায় গেল, তাহার সন্ধান পাইল না। এই মত দহাগণয় শাসন
হর্গতে সহর কিছু হির হইলে দোকানদার সকল দেকান খুলিয়া

কর্ম-কার্য্য চালাইতে স্থাগিল, সাহেবেরা পূর্ব্ব মত আপন আপন -রাজকার্যাদি করিতে লাগিল। প্রায় ১৫।১৬ দিন গতে সংবাদ হইল যে. এক দল পঞ্চণত অখারোহী মেদিনীপুর হইতে বিগড়িয়া অস্ত্র সহিত গ্রা, সহরে আণিতৈছে, ফতেপুরে ছাউনি করিয়াছে। এই সংবাদে সাতেবগণ সাতেবগঞ্চ হইতে প্লাইয়া মতিসেন আর বহরি-ভেন্না গন্নালের বাটীতে লুকাইরা রহিল। শিথ ও গোরাগণ আফিঙের কুঠী রক্ষা করিয়া রহিল, সহঁর ঘাটতে যে গোরা রহিল তাহারা স্ওয়ারণিগের সহিত যুদ্ধ জন্ত গমন করিল। স্ওয়ারগণ এমত লক্ষ্য করিল যে, এক বারে এক শত গোরাকে অস্ত্রাঘাতে আহত করিল, তাহাতে বাকি গোরাণণ অগ্রগামী হইতে পারিল না, অখারোহিগ্ণ গ্রাধামে আবস্থি হইয়া বিফুমন্দির বাহির হইতে প্রদ-ক্ষিণ কবিয়া সহব প্রবেশ কালীন অত্যে জেলথানা অর্থাৎ বন্দি-শালার প্রধান দ্বার মুক্ত করিয়া বন্দিগণকে শৃঙ্খলাবদ্ধ হইতে মুক্ত ক্রিয়াচির বৃন্দিগণকে সমভ্যারে ক্রিয়া লইল। স্বল্ল দিন পরে ব্লিগণকে কহিল, "তোমরা আপন গুহে গমন কর, প্রজার কদাচ অনিষ্ট করিবে না ।"এই কহিয়া সাহেবগঞ্জের কাছারি বরের নিকটে গমন করিল। এই সংবাদে মণি সাহেব বহরি-ভেগার বাটীতে থাকিয়া বাহির হইবার জন্ত অতিশন্ন বাস্ত হইতে লাগিল। সকলে অনেক নিবারণ করিল, কাহারও নিষেধ না গুনিয়া আপন ছয়নলা পিন্তল লইয়া একটি ছোট হস্তীর উপরে ছই কালকখলের কামানা-ক্বতি ক্রিয়া স্ওয়ারদিগের সমূথে গেলেন, অখারোহীরা দুর হইতে হস্তীর উ্পরে কৃতিম কামানকে কামান জ্ঞানে মণিদাহেবের স্মাধে কেই আসিতে পারে না, সকলে ভীত হইয়া পলায়নোমুধ হইল, পরে অখারোহিগণ বিবেচনা করিল যে, "আমরা মরিবার

আদে পলাইয়া যাওয়া ভাল হয় না. দেখিতে হইবে। কিন্তু একেবারে मकरण ना यारेबा इरे **करन व्या**धा निकार या । "रेश करिबा इरेकन ধাওয়া করিয়া গজারত সাহেবের সম্মুখে আসিয়া হস্তিওও ধরিয়া দেখিল ক্বত্তিম কামান। সাহেবকে সেলমি করিয়া কহিল,"তোমাদের অনেক নিমক খাইয়াছি, তোমার প্রাণদণ্ড করিব না। তুমি প্লাইয়া যাও।" তাহা মণিসাহেব না শুনিয়া পিন্তল চালাইয়াছিল, অখারোহি-গণ অতি সুশিক্ষিত, ঐ গুলি উপর হইয়া গেল। উহারা অখ্সমেত ভূমিতে লিপ্ত হইয়া রহিল, পরে সঙ্কেত শীক করিলে সকল অখা-রোহী চতম্পার্ম বেষ্টিত করিয়া আইল। তথন মণিসাহেব হস্তী লইয়া পলায়ন করিল। বিপক্ষগণ সাহেনগঞ্জে প্রবেশ করিয়া সাহেবদিগের থাকিবার যত বাঙ্গালা এবং জজ মাজিটুর কালেকটরি কাছারি ডাক্বর ডাক্রারখানা সকল হবে অগ্নি দিয়া প্রবল অগ্নি প্রজলিত করিয়া মহাপ্রলয় উপস্থিত করিল। ঐ সময়ে বন্দিগণ ধাহাদিগকে বনিশালা হইতে মুক্ত করে, তাহারা এবং সহরের বদমায়েদগণ একত্র হইয়া সাহেবদিগের বাঙ্গালা, যাহাতে অগ্নি দেয় নাই, তাহার দ্রব্যাদি কপাট পর্যান্ত ভাঙ্গিয়া লইল এবং সহরের ষত বাজার এবং কুঠী ওয়ালার কুঠা লুঠ করিতে লাগিল, কাহার কিছু দ্রব্য দ্বিতীয় বার লুঠে রাখিল না, অফান্ত জ্বিনিদ লওয়ার কথা কি কহিব ? পাথর ওয়ালার পাথর, আচার মোরব্বা শালপাতা পর্যান্ত ছষ্টগণ লুঠিয়া ভাঙ্গিয়া পোড়াইয়া তছরুপাত করিয়াছে, সওয়ারগঁণ সহর হইতে বাহির হইয়া গেলে পর দম্যাগণ পলাইয়াছে। এই সকল উপদ্রবে সহরের ছিল্লাবস্থা হইয়া ভগ্নভাব আছে।

এই সকল কথা তথায় শুনিতে সন্ধ্য উ্বীন্থিত হইল। তথা হইতে রৌদি নামক এক জন গয়ালের চাকর, তাহাকে সমভাবে করিয়া কালীবাবু আপন গয়াল উপডিহি মহলার মতিচাঁদ চেড়ির বাটাতে মুখোপোধ্যায় সমভাবে আদিয়াছিলেন, জ্ঞায় গমন করিলাম। ঐ স্থানে বাইয়া বিবেচনা হইল অক্ত স্থানে বাসা করা। এই কথা হইতে হইতে মতিটাদের পৌত্র রামহরি চেড়ির এক জন গোমন্তা আদিয়া সংবাদ করিল যে, পুনরায় এক পণ্টন বেগড়া সিপাহী আদিতেছে, মাজিটর সাহেব সহর-ঘাটিতে গোরা আনিতে গিয়াছেন, যে কিছু সৈক্ত গয়াঁতে ভিল, মণিনাহেব তাহাদিগকে লইয়া ধাওয়া করিয়া ফতেপুর গমন করিলেন। ইহা শুনিয়া আমরা চাঁদচকে মতিটাদের যে বাগান রাটী আছে, তাহাতে আদিয়া বাসা হইল। বহারগৈণ পাল্কি লইয়া বাগানের সম্মুখে দোকানে রহিল। এ দিবস তীর্গোপবাদ, রাত্রে শয়ন করিয়া থাকা হইল, অতিশয় মশা—গয়ার মশা, রাত্রে নিয়া হইল না।

## ৪ কার্ত্তিক, সোমবার, যমদ্বিতীয়া

প্রাতে উঠিয়া প্রাতঃকৃত্য সারিয়া গর্যালের বাটীতে যাইয়া কহা হইল, "আমরা পথের ভদ্ম জন্ম টাকা কিছুই লইয়া আসি নাই, অতএব কিছু টাকা দিতে হইবে, পাটনা-মোকামে টাকা দিব।" তাহাতে কালীবাবুর গয়াল রামহরি কহিলেন, "আমি নগদ এক পয়সা এক্ষণে দিতে গারিব না, তাহার কারণ লুঠ-মুসাদের গোলবোগের জন্ম আমাদের নগদ টাকা কিছা অব-ব্রোপ্যের দুরাাদি কিছুই বাহিরে নাই। সকল গজাগিরি করিয়া রাখিয়দিছ, পাইবে না।" ইহা কহিয়া কহিলেন যে, তোমরা নাও, যদি শীল্ল করিয়া আজকার মধ্যে পিওদান করিতে

পার, তবেই হইবে, নচেৎ যেমত গোলবোগ ভানিতেছি বিষ্ণু-মন্দির যাওয়াকঠিন হইবে।" এই কথা শুনিয়া আপন আপন গয়ালের চাকর আনচার্য্য অর্থাৎ পুরোহিত ব্রাহ্মণ লইয়া শ্রাদ্ধের দ্রব্যাদি ক্রেয় করিয়া পরিধেয় বস্ত্র অংল্বেষণ করিয়া দেড় পাই হাতের জেলে কাচা আডাই পাই হাত দিয়া ঐ কাপড লওয়া হইল, অনু রকম কাপড পাওয়া গেল না যাহা পাওয়া গেল তাহাই দকলে হাতাহাতি করিয়া লইয়া ফলতে যাইয়া স্নান-তর্পণাদি সমাপন করিয়া, প্রথমে কল্পতীর্থে শ্রান্ধাদি করিয়া প্রথামত পিগুদান হইল। পরে বিষ্ণু-মন্দিরে যাইয়া নাট-মন্দিরে প্রাদ্ধ করিয়া বিষ্ণুপদে পিগুদান করিয়া, পরে দানাদি করিয়া স্কল লওয়া হইল। বেলা আড়াই প্রহর গতে তথা হইতে বাহির হইয়া কালীবাবু ও মুখোপাধ্যায় বাদায় ব্রাহ্মণ-ভোজন করাইতে গেলেন, আমি গয়ালের বাটীতে যাইয়া ব্রাহ্মণ-ভোজন করাইতে এবং গয়ালকে বিদায় করিতে ও বিদার হইতে কিছু বিলম্ব হইল। তাহার পর চাঁদচকের বাগানের বাসাতে গ্রালের চাকর রৌদিকে সমভ্যারে করিয়া যাইতে যাইতে দেখিলাম ফটক সকল কপাট বন্ধ করিয়া ভাহাতে মাটা দিয়া ভরাট করিতেছে। তৎকালে লাল-দরজা আর মতিদেনের বৈঠকের নীচের ফটক—এই ছই ফটক রুদ্ধ হইয়াছে, বাকি হই-বার উদ্বোগ। ফটক দিয়া বাহির হইয়া বাদায় আদিবার পথ না পাইয়া গণিতে গণিতে প্রায় অর্দ্ধ ক্রোশ বেড় দিয়া বাহির রাস্ত। হইয়া বাসাতে প্রছিলাম। পথিমধ্যে দেখিলাম ষে, নগরের যত মহুষ্য সকলে প্লায়নোলুথ, আল্পন গ্রের अवामि वान-वृक्ष-पूरा-श्वी-शूक्य इत्क शर्छ मछत्क इत्छ कतिशा

রহিয়াছে, কেহ পর্বতে কেহ গ্রামাস্তে কেহ ফটকের ভিতরে লুইয়া বাইবার ত্রিরে আছে, সাহেবদিগের কাগজাত এবং এলবাস দ্রব্যাদি পর্বতে পাঠাইরাছে। সাহেবগণ বৃদ্ধ-সজ্জার সন্ধিপানে স্থানে আছেন. • কেহ পর্বত উপরে কেহ ছুরবীণ দিয়া পুথ নিরীক্ষণ করিতেছেন। বাঙ্গালী সকল আপন আপন তৈজন এবং যাহার যাহা অর্থাদি ছিল, তাহা মৃত্তিকা মধ্যে পুতিয়া তাহার উপরে ছুত ছাড়ি পাঁশ ছাই আবর্জনা ফেলিয়া কদাকার স্থান করিয়ী রাথিয়াছে, এক এক মলিন বস্ত্রে ছন্মবেশে রহিয়াছে। গয়াল কি আবে আব ধনাঢাগণ মহলার ভিতরে যাহাদের বাুস, তাহারা আমাপন ছারে বহুতর ছারপাল নিযুক্ত করিয়া খোলা তরোয়াল, পেশকবজ, কাটার, বল্লম, বন্দুক, পিন্তল, কডাবিনে বাৰুদ খালি ভবিয়া পলিতা জালাইয়া, ধানকী-গণ ধমুর্বাণ হত্তে লইয়া দার রক্ষা করিতেছে। বাটীর উপর-তলার ছাতের উপর ছোট বড় পাথর তুলিয়াছে, যদি দক্ষ্য-, গণ লুঠ করিতে আইসে, তবে উপর হইতে পাথর ফেলিয়া মারিবে, এই মত বন্দোবস্ত করিয়া রাখিয়াছে। এই সকল দেখিয়া চাঁদ্চকের বাগানে আদিয়া দেখিলাম, ত্রান্ধণ-ভোজনের দ্রব্য আনিয়া রাখিয়াছে। তিন জন বান্ধণের এক জন আসিয়াছে. দুট জন আসিতে পারে নাই। এক জনকে আহার করাইয়া ছই জনের ভোঁজন দ্রব্য পয়ালের লোক ঘারা পাঠান হইল। হাট্ঘাট বাজার দোকান সকলই বন্ধ, সরকারের হকুম মতে থানাদারগণ আহার ইত্যাদি মজুর লোক সকলকে বেগার ধরিতেছে, ওাহার কলরব। এই সকল গোলমোগে গয়াভূমি টলটল ক্রিতে লাগিল, বোধ হইল যেন পুনরায় গয়াছ্তর

(8%)

উঠিয়াছে. সেই মত মহাপ্রলয় উপস্থিত হইয়াছে। আমাদের অয়াদি আহার করা হইল না. জলযোগ করিয়া থাকিতে হইল ১ দিবাবসানে বাহিরে আসিয়া দেখিলাম যে. আমাদেক বাসার নিকটে গোদাবরী পাহাড়, তাহার ওপর তিন অন সাহেব দুরবীণ লইয়া প্রাতঃকালাবধি ছিল, সন্ধ্যার পূর্বে পাহাড় হইতে নীচে আইল। তাহাদিগকে জিজাদা করিতে কহিল. "পণ্টন এ পথে বঝি আসিতে পারিল না। পূর্বে আর দক্ষিণ এই তুই দিকে গোরাদৈক্তগণ, পশ্চিম আর উত্তর দিকে শিখদৈল পথকন্দ করিয়াছে। শোণভদ্রের মুথে পাঁচ শত গোরা তোপ সমেত আছে. কোনজনম এখানে প্রবেশ হইতে পারিবে না। ষে সকল সেনা লইয়া সেনাপতিগণ গিয়াছে, ইহাদিগকে নিপাত না করিতে পারিলে সহরে প্রবিষ্ট হইতে পারিবে না। আট ক্রোশ অস্তর ফতেপুর, তথায় আছে।" এই সকল কথা ভনিয়া কিঞিৎ ভয় ঘূচিয়া সাহস হইয়া সন্ধ্যাগতে ⊌বিফুপদ দর্শন করিতে গমন করিয়া দর্শনাদি চরণ-তল্পী লইয়া ৰাসায় আসিয়া পেড়া (ও) পাণ্যবাটী লইবার জন্ত অনেক ভ্রিব করিলাম, কিছুই পাইলাম না। পেড়ার দোকান বন্ধ, পাথরবাটীর দোকান মাত্র নাই, কেবল বাটী ইত্যাদি ভালিয়া স্ত্রীকার করিয়া রাথিয়াছে। ইহা দেখিয়া ক্ষান্ত হট্যা বাসাতে আসিয়া শয়ন করা হইল। কিন্তু রাজে চিন্তাতে নিদ্রা হয় নাই, তিন জনে ৰসিয়া ভাবিতে ভাবিতে রাত্র শেষ হইল।

#### ৫ কার্ত্তিক, মঙ্গলবার, ভৃতীয়া

অতি প্রত্যুবে চাঁদ চকের বাগানের বাসা ইইতে বাছির ইইয়া ৭ ক্রোশ আসিয়া বেলাচটী। এথানে দেখিলাম, কোম্পানি বাহাত্রের ৫০ জন শিথদৈয় জাহানা ইইতে গরা সহর
বুক্ষার্থ বাইতেছিল। ইতোমধ্যে সঞ্জার আদিরা সংবাদ দিল বে,
বেগড়া প্রন্টন পাহাড়ের পথে বেলার আদিতেছে, এজন্ত গোরা
৫০ জন মাঠের পথে বাইতেছে, শিথগণ বেলাতে থাক। এই
সংবাদ চিঠির মারার দিরা গেল। এই সকল
থবরাথবর জন্ত ঘাটাতে ঘাটাতে চারি জন
করিয়া সওয়ার ঘোড়া কদিরা কোনর বাদ্ধিরা প্রস্তুত আছে। এই
মত পথের গোলঘোগ দেখিয়া বেগাতে মুথ প্রক্রালন ও সানাদি
কর্ম্ম সমাপন করিয়া জলবোগান্তে ৩ জ্বোশ আদিয়া যমুনা নদীর
কাঠের পুল পার হইয়া মকদমপুরের চটীতে বেলা ছই প্রহর সময়ে
প্রচ্ছিয়া পাকাদি ইইয়া আহার করিয়া এই চটীতে থাকা হইল।

৬ কার্ত্তিক, বুধবার, চতুর্থী

অতি প্রাতে মকদমপুরের চটী হইতে রওনা হইরা কেনাশ আসিয়া দরধা নদী পার হইরা জাহানা, পরে ৫ ক্রোশ মশৌড়ি, বেলা দশ ঘণ্টার সময়ে থানার নিকট চটীতে প্রছিয়া স্থানাদি করিয়া রম্ব্যের উভোগ করিয়া রম্থই হয়। আহারাদি করিয়া অবস্থিতি হইল। ব্লাত্ত ছই প্রহর সময়ে মুখোপাধ্যায়ের অবে হইল, ডজ্জে রাত্তে নিজা হইল না।

# ৭ কার্ত্তিক, বৃহস্পতিবার, চতুর্থী

•প্রাতে মুখোপাধ্যারের জন্ত এক ডুলি (ও) তিন কাহার পাওরা গেল, তাহাড়েন্ট সওরার করাইয়া মশৌড়ি হইতে ২ জ্রোশ আসিয়া নালাওরানের চটীতে আর ছই জন কাহার করিয়া ৩ জ্রোশ আসিয়া প্রপ্না নদী, ভাহাতে সান-তর্পণাদি করিয়া জ্লঘোগাস্তে নৌকার পার হইরা থা • ক্রোশ আসিরা পড়দার চটী, তথার ১২ দোকান আছে। পরে ১ ক্রোশ রান্তার ছিড়ে, জল পার হইরা ১ ক্রোশ পাটনার সব্জিবাগ, মিক্রের বাটী। তথার বেলা আড়াই প্রহরের সমর পছছিলে পর আহারের উদ্ভোগ, হইরা রম্মই ইইলে পর আহার করিরা সন্ধ্যার সমর নৌকার বাইরা শ্রন হইল।

## ৮ কার্ত্তিক, শুক্রবার, পঞ্চমী

প্রাতে পাটনার রাণীঘাটের চড়াতে প্রাচঃক্ত্য স্থানাদি করিয়া নৌকাতে জ্বল্যোগ হইয়া, সহর ভ্রমণ করিয়া, সব্জিবাগের বাসাতে আহারাদি করিয়া, বৈকালে নৌকার আসিয়া রাত্রে জল ধাইয়া নৌকায় শয়ন হইল। এই দিবস গাজিপুরের চিটি পাই।

# ৯ কার্ত্তিক, শনিবার, ষষ্ঠী

প্রাতে গলাতে স্থান-তর্পণাদি করিয়া জ্বলযোগান্তর সব্জিবাগের বাসাতে গমন। প্রীকালীবাবু ঐ বাসাতে প্রথমাগমের আজ করেন, তত্পলকে ব্রাজ্ঞপনায়ন্ত ভোজনোদ্যোগ ছিল। দিবাতে আপনাদের করেকজনা, রাত্রে নিমন্ত্রিত ব্যক্তিগণের প্রকারে মিষ্টান্তে জ্বলপান হয়। অধিক রাত্র জ্বল্গ নৌকাতে যাওয়া হইল না, বাসাতে শ্বন হইল। এতদ্দেশের ছ্ট-ব্রত—শ্শা, কলা, কলাই, অস্কুর এবং প্রকার।

## ১০ কার্ত্তিক, রবিবার, সপ্তমী

প্রাতে বাসা হইতে নৌকার আসিতে গলার তীরে তীরে দেখিলাম বে, সহরের সকল স্ত্রীলোক বে বেমত ব্যক্তি সে সেইমত যানারোহী, কেহ পাল্কি, কেহ মহাপা, কেহ ডুলি, অনেকে পদবক্তে উত্তম উত্তম বক্তালকারে

ভূষিতা হইয়া বালিকা বৃদ্ধা যুবতীগণে রৌসনচৌকি টিকারা ুতাদা কড়া ইত্যাদি ধাহার ধেমত ক্ষমতা, দেই মত বাছ সমভ্যারে নানাজাতি ফল, পাঁচ কলাইয়ের অন্তর, নানামত প্রার পুরী কচুরি ইত্যাদি খান্তদ্রব্য জার কাঁদি কাঁদি পাকা কলা, অতি হুঃখী हरेरन अब के इड़ा कना, अक नृजन अनी अब का नाति कूना আলতা হরীতকী বয়ড়া লালস্থতা পান স্থপারি ইকু লইয়া খাটে ঘাটে সৰ্ব্বত্ৰে স্ত্ৰীগণ বসিয়া আছে। সুৰ্ব্যোদয়ে সকলে স্নান করিয়া স্থানারায়ণের প্রীজানি করিয়া বেলা চারিদণ্ড মধ্যে গলাতীর হইছে আপন আপন গ্রহে গমন করে। এ দিবদ দেশের কাহার বাটীতে त्रस्टे टेलापि किट्टे ट्टेर्प ना, श्रुर्सपित्नद्र रा ममल श्रकान्नापि আছে. দৈই সকল'ডব্যাদি ভোজন করিয়া থাকিবে। পুর্বাদিবদ বেলা তৃতীয় প্রহরের পর সন্ধার পূর্বাবধি গন্ধাতে উপরোক্ত মেলা হইয়াছে, পঞ্মীতে আরম্ভ সপ্তমীতে স্মাপন। পশ্চিম দেশে ন্তানে স্থানে ছট পূজার সময় ভিন্ন ভিন্ন। কাশী প্রদেশে চৈতাব্ধি আঘাত পর্যান্ত চারি মাদের শুক্লাষ্ঠীতে এই মত নিয়ম। বুন্দাবন প্রাদেশে প্রাবণ মাদের ষ্ঠীতে এই নিয়ম। গুজুরাট, বোদাই, रेजनक. साविष. भूना, माजाता, मागत, अव्यनभूत, नर्यमा, नागभूत ইত্যাদি দক্ষিণ-দেশের ক্রৈছা মাসের ষ্টাতে বাসী দ্রব্য ভোকন করে ৷

গলাতীরে ছটের মেলা দেখিরা নৌকাতে আসিরা সানাদি
ক্রিয়া সহর ভ্রমণ। কালীবাবু প্রভৃতি ও সকল স্ত্রীলোক ক্রমে
নৌকাতে আসিরা চড়া মধ্যে রহাই ইইয়া চড়াতে আহারাদি হইল।
রাজক্ষমিপ্রের স্ত্রী-পূত্র-কল্ঞা-ভাগিনী স্বদেশগমন কল্প নৌকাতে
আসিলেন, তথার রাত্রে হিতি ইইল।

# পাটনা হইতে কলিকাতা

मन ১২৬৪ माल, ১১ कार्खिक, (मामवात, अर्छंगी

প্রাতে পাটনার গলার ঘাটে লান-তর্পণাদি সমাপন ক্রিয়া तोका धूनिया **७ क्वांन जा**निया ठटकंद्र घाँठे, दिशास मान जामनानी রপ্রানীহয়। পরে > ক্রোশ আমিরা মারুগঞ্জ, এখানে বাজার এবং বদতি (ও) আব্দুত ভাল আছে। এখনকরি বরফি অতি-উক্তম। পরে ২ ক্রোশ আসিয়াবাব্যাজির বাগান। এই বাগানে এক অতি উত্তম বাউড়ি আছে, জ্লু মধ্যে এক প্রস্থ বাটী, বৈঠক-ধানা, অতি উৎকৃষ্ট, দেখিতে স্থসভ্য, অতি মনোরম। বাগানে নানা জাতীয় ফল ফুলের বুক্ষ লতা আছে, প্রায় দশ বিঘা জমিতে নারিকেল গাছ, সকল গাছ ফলবান, মৃচি মৃচি সমান ফলিয়াছে। অমত দ্ধপ নারিকেল গাছ এতদ্দেশে কোথাও নাই। বাগানের শুখালা কি মত আছে, তাহা কি কহিব ? এমত শ্রেণীমত প্রায় দেখা , বার না। এক এক রকম গাছ এক এক স্থানে আছে, তাহার চতুর্দিকে প্রাচীর মধ্যে এক বৈঠকখানা। এই মত ত্রিশ ব্রিশ श्वारन देवर्रकथाना, छाहार्छ वृक्तभग। अधान देवर्रकथानाव চতুষ্পার্য নানাজাতি স্থগদ্ধি পূষ্পে বেষ্টিত আছে। পরে ২ ক্রোশ ফতুরার ঘাট। এই ঘাটে গরালদিগের বাদাবাটী 'এবং গোমস্তা (ও) বরকদাক আছে। এই স্থান হইতে নৌকা-পথের যাত্রিগণ গ্রাধানে গমন করে। বাজার এবং বাত্রী থাকিবার ঘর আছে। গত বৎসরাবধি দম্যুভর ৰুম্ব ফতুরার পথে যাত্রীর গমনাগমন প্রার বন্ধ। বিশেষতঃ এ বংসর বিদ্রোহী পদাতিকদিগের উপজ্রবে

দস্থাভয় অতিশয় বৃদ্ধি হইয়াছে। পরে ২ ক্রোশ বৈকুণ্ঠপুর বাজার আছে, পরে ৩ ক্রোশ বেণীপুর গ্রাম। এই চড়াতে আহারাদি করিয়া ৬ কোশ আসিয়া রূপদ গ্রাম ! এখানে গলার ছই পারে সময়ে সময়ে অভিশন্ন বেগ হয়। সন ১২৫২ সালে এমন কঠিন বেগ ছিল বে, নৌকাদি উজান উঠিতে অনেক নষ্ট হইয়াছে। এই রূপদ উত্তর পারে, জালেম-জোলমের ঘর। তাহারা ছরাআন দক্ষা ছিল, দিবাতে নৌকা লুঠিয়া লইত, কাহাকেও কালেম-কোলম দহাব্র শকা ছিল না। মানবারোহী নৌকার চড়ন্দারকে কহিত যে, "আমার এই দ্রব্যের প্রয়োজন আছে দাও, না দাও সকল লুঠিয়া লইব।" তাহা দিলে আর কিছুই কহিত না, বরং চড়ন্দারের থোলদা জন্ত মহাজনকে এমত চিঠি লিখিত যে, "এত পরিমাণের দ্বব্য আমরা লইয়াছি, এজ ভ চড-লারের প্রতি যদি কিছু বদিয়ত কর, তবে তোমার সহিত ভাল করিয়া দেখা করিব।" এই মত দৌরাত্মা করিয়া মহাজন লোকের এবং পথিকগণের পথের বিশেষ কণ্টক ছিল। ইহা দেখিয়া শুনিয়া গ্রব্নেণ্ট বিশেষ মনোযোগী হইয়া ছরাআ৷ ছরাচারদিগের দমনের জন্ম সাহেব মাজিটরের প্রতি বিশেষ ক্ষমতা দেওয়াতে ঐ ছরাআয়া-দিগকে দানা কৌশলে ধত ক্রিয়া প্রাণদণ্ড করিয়াছেন। তদবধি পথ সকল নিষ্ণটক হইয়াছিল। এক্ষণে রাজ্জোহী পদাতিকগণের মহোপদ্রবে । ক্রিউ জালেম-জোলমের অধিক হইয়াছে। এই দক্ষিণপার দ্ধপেরে নিকট রাত্রে স্থিতি হইল।

১২ কার্তিক, মঙ্গলবার, নবমী

প্রাতে রূপসের ঘাটে দান-তর্পণাদি করিয়া নৌকায় রওমা হইয়া ৩ কোশ আসিয়া বাড় নামে গ্রাম। এখানে বাজার এবং বদতি আছে, থাজারা সকলই পাওয়া বার। পাটনা পর্যাপ্ত
পাকা রাজা, পরে ৫ কোশ আদিয় মকিয়াপুর মো। এই চড়াতে
আহার হয়। পরে ৪ কোশ আদিয়া দরিয়াপুর, এথাতে দোকান
আছে, জলের অতিশয় স্রোত, উজান নৌকাগুলিতে যে কই ছ:থ
ভাহা কহা বায় না। বাহায়া গুণ টানিতেছে, তাহায়া এমত ঝুঁকিয়া
আদিতেছে যে, মুথ প্রায় ভূমির সহিত লিপ্ত হইয়া বাইতেছে।
ভাহার পর ২ কোশ অস্তরে এক চড়াতে আফিঙের বহর লাগান
করিল। ভাহায় নিকটে নৌকা রাধিয়া রাক্তে স্থিত হইল।

#### ১৩ কার্ত্তিক, বুধবার, দশমী

চড়াতে প্রাভঃকৃত্য (৩) গঙ্গাতে স্থান-তর্পণাদি স্থাপন করিছা নৌকা খুলিয়া ৪ কোশ আদিলা স্থাগাড়া, পরে ৪ কোশ আদিলা এক চড়া। ঐ চড়াতে রস্থই করিলা আহার করা হইল। তাহার পর ৬ কোশ আদিলা মুক্লের, জরাসদ্ধগড়। এক্ষণে এক কেলা আছে, ২০০ শত গোরা থাকে। জল মাজিটর কালেক্টরের কাচারি সকল ডাক্ঘর ডাব্রুলাঝানা কোতোলালি সহরের ভিতর।. গলাতীরে কেলা, কেলার নিকটে কল্লাঘাট, তাহার পর বালার, পরে টীমার অফিস। গলাতীরের বালারে সকল এব্যাদি পাওলা

ষায়। সহবের শধ্য চকবাজার °তাহাতে
মূলের
শৃশ্বানামত দোকান সকল উত্তম উত্তম দ্রব্যে
স্থানোভিত, মনোহারী দোকানে নানামত দ্রব্যাদি, হালওয়াইপটী
মিষ্টারে পকারে সাজাইরা রাখিবাছে। বালের চাঙ্গারি, ভালা, ছোট
ধুচুনি, চুপড়ি (ও) রঙ্গবেরকের ভাল ভাল সাজি আছুছে, নানা জ্লাতীর
পক্ষী—মন্তনা, স্তানা, লালবুলবুল, টিরা, টুসী, ফরাজ, কাজলা,
মদনা, চন্দনা, সার, সারস ইত্যাদি অনেক রক্ম রক্ম পাহাড়িরা

পক্ষী সকলের শাবক কাধগণ লইয়া বিক্রন্ন করিতেছে। পাথরের ধালা রেকাব ভাল ভাল পাওয়া যায়, গঙ্গাতীরে দোকান সকল। এই সহয়ের কেরার নিকট কয়লাঘাটে অবস্থিতি হইল।

## ১৪ কার্ত্তিক, বুহস্পতিবার, একাদশী

প্রাতে মুঙ্গেরের করলাঘাট হইতে নৌকা খুলিয়া জলপথে ৬ ক্রোশ আসিয়া সীতাকুও যাইবার ঘাট। এখান হইতে > ক্রোশ দক্ষিণদিকে যাইত্তে হয়, তাহার পর পর্বতের নিকটে সীতাকুও। এই স্থানে সীতাকুও আছে, তাহার মধ্যে তিন কুণ্ডের মাহান্ম্য অধিক বলিয়া পাঙাগণ আছে। ইহার মধ্যে সীতাকুণ্ডের চারিদিকে

পাকা সি ড়ি, নিকটে ঘর আছে, প্রাটিরে হবর।। এই কুণ্ডের জলে গরম গুঁরা উঠিতেছে, জল অতি উষ্ণ, স্নানাদি করিতে পারা যায় না, কিন্তু জলে চাউল দিলে সিদ্ধ হয় না, ফুল দিয়া পুজা করিলে গরম জলে ফুল ফেলিলে যেমত সিদ্ধ হয় না, ফুল দিয়া পুজা করিলে গরম জলে ফুল ফেলিলে যেমত সিদ্ধ হয় না, ফুল দিয়া পুজা করিছে। রামকুণ্ড, লক্ষণকুণ্ডের জল মানকুণ্ডে পড়িয়া বাহির হইতেছে। রামকুণ্ড, লক্ষণকুণ্ডের জল মানকুণ্ডে পড়িয়া বাহির হইতেছে। রামকুণ্ড, লক্ষণকুণ্ডের জল মানকুণ্ডে পড়িয়া বাহির হইতেছে। রামকুণ্ড, লক্ষণকুণ্ডের জল মানকুণ্ডে পড়িয়া বাহির হইতে ডালাপথে হ জ্লোশ, জলপথে ৬ জ্লোশ। তাহার পর ২ জ্লোশ বুড়য়াডিমা গ্রাম, চল্লিশ বিয়াল্লিশ ঘর বস্তি। এই গ্রামের নীচে

কালিরা
চড়াতে আহার করিয়া তথা হইতে ৬ ক্রোশ
কুশুন্দির আএন কালিরা। এখানে বদতি এবং বাজার আছে।
এই স্থান ক্রুকুন্নির তপতার স্থান। জ্কুমুনি গলাকে গ্ডুষ্
ক্রিয়া পান করেন। পাহাড়ের চতুল্পার্য গলাবেটিত, গলার মধ্যে
পূর্বত, পর্বতোপরি জ্কুমুনির শিব-স্থাপন। এ পাহাড়ের

উপরে কেই থাকিতে পারে না, একজন উদ্যুগীন কুটীর করিয়াছিল, সর্পভরে থাকিতে পারে নাই। বৃহৎ বৃহৎ সর্পগণ আছে। জলের ভিতর অনেক পাথর আছে, জল অতিশয়, বেগবান, উজান-ভেটেল হুই দিকে যাওয়াই কঠিল, বিশেষত: প্রাবণ ভাজ ছুই মাসে এই জল এমত ভয়ানক হয় যে, ছুই কোশ থাকিতে ভেটেল নৌকার মাঝি হাল ছাড়িয়া বৈসে, কোন ক্রমে পাহাড়ের উপর নৌকা না পড়ে। বাজারেক নিকট এক থাল আছে, ভাহার ভাটিতে যাইয়া নৌকা রাতে বহিল।

# ১৫ কার্ত্তিক, শুক্রবার, দ্বাদশী

প্রাতে জাঙ্গিরার ঘাটে ম্নান-তর্গণাদি করিয়া ১০ জোশ
আনিয়া ভাগলপুর, গঙ্গা হইতে প্রায় দেড় জোশ অন্তর সহর।

পুর্ব্বে সহরের নীচে গঙ্গা ছিল। সহর মধ্যে
ভাগলপুর
অনেক ধনী আছেন, জজ্ কালেক্টর মাজিটর পোষ্টমাষ্টার ডাক্তারথানা আছে। এথানে গোরা-সৈক্ত
আছে। ভাগলপুরে থেশের আড়ন্দ, সহরে অনেক বদতি। ইহার
মধ্যে চড়াতে পাকাদি হইয়া আহার করিয়া, পরে ৫ জোশ
ইংলিসের বাজার, তাহার পর ৫ জোশ কহল-গাঁর বাজার,
থালের পারে। এথানে জলের মধ্যে তিনটা পর্বত আছে।
ইহাকে ভীমের বিক কহে। ইহা ভিন্ন হানে হানি অনেক ছোট
ছোট পাহাড় স্বরূপ আছে। গঙ্গা অতিশর বেগবতী, মৌকা
সামলান অতি স্কেঠিন। ভেটেল নৌকার প্রাবণ ভাল মাহে ছই
ক্রোণ থাকিতে সাবধান হইতে হয়, নচেৎ ঐ পর্ব্বত উপরে পড়িলে
মহাবিপদ ঘটে। উজান নৌকা অনেক কটে ভূলিতে হয়। তাবৎ

দিবা গুণ টানিয়া নঙ্গর ফেলিয়া হন্দ ১ ক্রোশ উঠিতে পারে এত জ্বল,

ধ্বল পা

ত্বা জলের প্রবল বেগ কোণাও নাই।
সন্ধ্যার সময়ে কহল-গাঁষের বাজারে নীচে অর্থাৎ ভাটী প্রায় এক
পুরা বাইয়া বে ঘাট, ঐ ঘাটে নৌকা ধরিয়া বাজার দেখিতে যাওয়া
হইল। বাজারে দোকান প্রায় ত্রিশ ব্রিশ থানি আছে, ভাল
দ্রব্য কিছু নাই, মোটা চাউল খেঁবারি মুস্থরির দাল চিড়ে মুড়ি
জলপান ইহাই অনেক। এই হানে রাত্রে অবস্থিতি হইল।

खवा किছू नारे, स्माता हाडेन व्यंगावि मूख्वित मान हिए मूड़ि ১৬ কার্ত্তিক, শনিবার, ত্রয়োদশী প্রাতে কুংল-গাঁয়ের ঘাটে 'স্নান-তর্পণাদি সমাপন করিয়া নোকা খুলিয়া ও ক্রে+শ আসিয়া পাণরঘাটা। ইহার জল মধ্যে অনেক পাণর আছে, জলের অতিশয় বেগ, নৌকা অতি সাবধানে আনিতে হয়। জল মধ্যে যে সব পাথর পাথর-ঘাটা আছে, তাহার উপর নৌকা পড়িলে রক্ষা হওয়া কঠিন, জল অতিশয় কড়া। উজান নৌকা কহলগাঁ ুহইতে হুই ঘণ্টার পথ হুই দিনের কম যাইতে পারে না। পরে २ त्काम आनिया कूमी नमीत त्याशना, शत ६ त्काम शौत्र शिंछ। এক্ষণে গঁকা পীরপৈতির নীচে নাই, প্রায় গীবগৈতি ১ ক্রোশ অস্তবে গঙ্গা হইয়াছে। উত্তর পারে যে নীলক্ষ্ঠী ছিল, ভাহা গন্ধার ভালনে গত হইয়াছে। পরে 

 কোশ আসিয়া গলাপ্রদান টিলার উপর এক সাহেবের বাঙ্গালা, আছে, নীটে বাজার (ও) দশ বার থানি দোকান আছে। পরে ৫ ক্রোশ সাঁকড়িগলির পাহাড়, গলার ভীরে বাজার। ইহার পরে ২ ক্রোশ আদিয়া পাহাড়ের নিকটে রাত্রে থাকা হইল। ১৭ কার্ত্তিক, রবিবার, চতুর্দ্দশী

পাহাড়ের নিকটে স্নান-তর্পণাদি করিয়া নৌকা খুলিয়া ও ক্রোল আসিয়া কুড়িখোল। গঙ্গাতীরে দোকান আছে। পঙ্গে ৫ জ্রোশ রাজমহল। পূর্বে থানার ঘাটে নৌকা লাগিত, একণে চড়া পড়িয়া বাজার প্রায় এক ক্রোশ অন্তর হইয়াছে । ঐ স্থানে নৌকা বাথিয়া বাজাবে গমন কবা চইল। পথিমধো বাক্তমঙল ডাক্ষর, তথার চিঠি দিয়া পরে যে রেলরোড হইতেছে, তাহা দেখিয়া বাজারে গিয়াছিলাম। বাজারে প্রায় তাবৎ দ্রব্য পাওয়া যায়। এস্থান দোভাষী দেশ, প্রায় বাঙ্গালা কথা কহে। জজ মাজিষ্টর কালেক্টরি কাছারি, রেলরোড-অফিস, ডাক্বর (ও) ডাক্তারখানা আছে। পূর্ব্বাপেক্সা এক্ষণে রাজ্মহল গুলজার করিতেছে, বন কাটিয়া মনেক নৃতন বাঙ্গালা হইতেছে। গুলাতীরে যে সকল ঝোড় জলল আছে, ভাহা কাটিয়া দোকান বদাইতেছে। ক্রমে সহর তলা হইবার সম্ভাবনা। দেখিয়া বোধ इहेन, शूर्व्स द्यान डेंखम हिन ना, वन अन्नन मरधा स्मना हिन, এক্ষণে শৃত্ধালা মতে বগতি বাজার হইতেছে। রাজমহলের মাটী, ঝেঁটা (ও) লোহার জিনিদ ভাল, মংস্ত দন্তা। রাজমহলের বাজারে হাট বাজার করিয়া ৮ কোশ আদিয়া নিমতলা গ্রাম। এই স্থানে নীলকর সাহেবের কুঠা আছে। এই স্থানে জেলার কাছারি হইয়া-ছিল, পর্বতের জ্বল-প্রবাহে ডুবিয়া যাওয়াতে রাভ্মহলে কাছারি হইয়াছে। এই নিমতলাতে সন্ধার পর আহার করিয়া রাত্রে

১৮ কাত্তিক, দোমবার, পৌর্ণমাদী, ত্রাহম্পর্শ প্রাতে নিমতলা হইতে নৌকা খুলিয়া ৪ ক্রোল আসিয়া

অবস্থিতি হয়।

লক্ষীপুর, এ স্থানে স্নালি সমাপন করিয়া ৪ ক্রোশ পরে এক
চফ্রাতে আহার করা হয়। তাহার পর ৫ ক্রোশ আসিয়া
কানসাটের বালার, অনেক কলার বাগান আছে। ছোট ছোট
পাহাড়, অতিশুর জঙ্গল, তাহাঁর ভিতর বসৃতি আছে। মধ্যে মধ্যে
বাঘাই ভূর হয়। ইহার ১ ক্রোশ পরে শিবগঞ্জ। এই বালারে
চাউলের আড়ত (আছে) এবং তসরের
কাপড় দক্তাঁ। এই গঞ্জ হইতে মহাজনগণ
চাউল (ও) তসর কাপড় লইয়া পশ্চম-দেশে ব্যবসা জন্ম বার্ছি
ইহার পরে গলাতে প্লাতে সক্ষম। এই থাতে গলার পাড়ি
দিরা প্লাতে ্বাইতে হয়। প্লাত্ব থাকা হইল। যে স্থানে সক্ষম
ঐ স্থল হইতে শ্রাম্বর ছলনা করিয়া গলাকে লইয়া যায়।

## ১৯ কার্ত্তিক, মঙ্গলবার, দ্বিতীয়া

প্রাতে পদাতে সান-তর্পণাদি করিয়া ২ কোশ আসিয়া ভাগীরথীর পুরাতন মোহানা, জল অতি অয়, নৌকা-পথ রুদ্ধ। পরে
> কোশ আসিয়া আর এক মোহানা, তাহাও বন্ধ হইয়াছে।
ভাগীরথীর ছই মোহানা বন্ধ হইলে পর

পন্ন।

ত্যাগ্রখার হৃহ মোহানা বৃদ্ধ হুহলে পর
পন্ন।

ত্যাগ্রখার হুই মোহানা বৃদ্ধ হুইতে ধাল কাটিরা
অর্দ্ধ কোশ আদিরা গলাতে মিশাইরাছে, তাহাতে নৌকা
গতায়াত করিতেছে। মোহানা হুইতে অর্দ্ধ কোশ ছাপঘাটীর
বাজার । কোশু পরে শহরের বাজার, ২০ দোকান আর বসতি
আছে। পরে ৪ কোশ আসিয়া জ্লপুর, মাফ্লঘাটা। এই
বাটের মাফ্ল তুহশীল জন্ত একজন,সাহেব আছে, এক দারগা

সেরেস্তাদার, মোহরের, থাকাঞ্চি, পোতদার (ও) ছই জন কেরাণী আছে। ইহা ভিন্ন কুতের মোহরের, চাপরাশি জঙ্গিপর-মাস্ত্রহাটা (ও) গল্পের পানসী অনেক আছে। প্রায় এক কালেকটরির কাছারির ভার। সওয়ারি ্রৌকার দাঁড মাত্রল (লয়)। ফি দাঁড তিন আনা, মাল বৌঝাই কুতে শতকরা ৩০ বার আনা মান্তল দিতে হয়। এই মান্তল বাটে দাঁডের মান্তল দিয়া সাহেবের সহি চেক লওয়া হইল, কিন্তু বাহারা নৌকা দেখিতে আইসে, তাহার। কিছ বইবার জন্ম নানামত ফেলাদ উপস্থিত করে। নৌকার ভিতর ভহরা খুলিয়া মাল তদারক করিবার মছিলাতে লণ্ডভণ্ড করে এবং অনেক বিলম্ব করিয়া কৃত-ছাড়-চিঠি দেয়। কৃত্ছাড-চিঠি নাপাইলে মাফুল দাখিল হইয়াছাড় পায় না। এই সকল কারণে সওয়ার ভীত হইলে কৃত মুছরিদিগকে কিছু দিয়া জিনিদ-পত্র তুলিতে না দিয়া ছাড় করিয়া চিঠি লয়। আমাদের নৌকাতে আসিয়া সিন্দক সকল ও আর আর দ্রব্যাদি পাথর ইত্যাদি দেখিয়া নৌকার কৃত মামুল করিতে উন্থত, তাহা হইলে পাঁচশত মণের . মাক্রল দিতে হয়। কত-মৃত্রির নানামত গোলযোগ দেখিয়া খোদ সাহেবের নিকট ৰাইয়া জানান হইল বে. 'আমাদের সভয়ারির নৌকা, আপনাদিপের আসবাব সকল নৌকাতে আছে, তাঁহাতে সিন্দক পেটরা বাক্স ইত্যাদি আছে, তাহাতে সকল রকম জিনিস আছে। এ সকল খুলিয়া দেখাইবার কি কারণ ? দেবল অনর্থক ক্রেশ দিয়া বিশ্ব করিতেছে।' ইহা শুনিবামাত্র সাহেব এবং কাছারির আমলাগণ চাপরাশিকে কহিল, "জিনিপ তুলিবার কি প্রবোজন ? ভদ্রলোকের সওয়ারি, বিশেষতঃ স্ত্রীলোক নৌকাতে আছে, শীম ছাড়-চিঠি করিতে কহগে।" সাহেব ধনকাইরা কহিরা

দিল, তবে কুত মুছ্রিকে নিরন্ত করিয়া চিঠি লওয়া হইল, চিঠি লইয়া
দিবা মাত্র চেক পাওয়া গেল। পরে বাজার বাইয়া বাজারের
সকল জিনিস লওয়া হইল। তাবৎ দ্রব্য পাওয়া যায়, অনেক দোকান
এবং চক-বাজার আছে, রাস্তার ছই ধারে কাপড় চাউল দাল তৈল
ছত আটা ময়দা ইত্যাদির এবং চনা চাবেনা দ্বি ছয়ের দোকান
সকল এবং মৎক্ত তরকারি ফল-ফুলারির বাজার। এই প্রমণ
বাজারের কিঞ্চিৎ অক্তরে নৃত্ন বাজার, অনেক ভদ্রলোকের বসতি
আছে। গলার তীরে এক উত্তম বৈঠকখানা বাগান আছে,
তাহাতে আমলাদিগের বাগা। এই বৈঠকখানা মুনিদাবাদ-নিবাসী
মাধববাবুর, আড়পারে নারিকেল বাগান আছে, তাহাতে অতিথিশালা, বে কেছ অতিথি হয় তাহাদিগকে উত্তম আহার্য্য দিয়া সভট
করে। ছই পারেই সমান বসতি আছে। এই ঘাটে রাত্রে
ভিত হইল।

## ২০ কার্ত্তিক, বুধবার, তৃতীয়া

প্রাতে অলিপুর হইতে নৌকা খুলিয়া ৎ ক্রোপ আদিয়া নৃত্ন বাজার। এথানে অল্লাদির তল্লাদী আছে, এক দারগা চারি চাপরাশি আছে। তাহাকে পরওয়ানা দেখাইতে ছাড়িয়া দিল। তাহার পর হ ক্রোশ আদিরা গাদীর বাজার, পরে ২ ক্রোশ ঝলাগাছি। এই চড়াতে আহার করিয়া অর্দ্ধ ক্রোশ পরে বালানগরক বালানগর, পরে ০ ক্রোশ গ্রসাবাদ, বাজার গ্রসাবাদ আছে। রাত্রে এই স্থানে থাকা হইল। অলিপুর হইতে ডাকা পথে গ্রসাবাদ ৮ ক্রোশ। ২১ কার্ত্তিক, বুহস্পতিবার, চতুর্থী

প্রাতে গ্রুমাবাদ হটতে রুওয়ানা হট্যা ২ ক্রোশ আসিয়া সহত মশিদাবাদের জিয়াগঞা। এই বাজারে লবণ, তুলার গোলা। বাল্চর, এখানে চেলি গ্রদের আড়ত। ইহার পরে বৃষ্তি, বাজার আছে। পরে ২ ক্রোশ আসিয়া মুর্শিদাবাদ খাস সহর। নবাবের ইমামবাডী, তাহার পরে নিজবাটী। উত্তম মৰ্শিদাবাদ তিন তলা বটীতে হাজার জানলা দরজা আছে সাত দেউডি। এক এক দেউডিতে এক এক জন দারগা আছো। প্রায় এক ক্রোশ পর্যান্ত নবাবের পরিবারদিগের থানা-বাটী। ইহার মধো চাঁদনী চক ! ইহাতে নানাদেশীয় সওদাগর সকল উত্তম উত্তম দ্রবাদি লইয়া দোকান স্থগোভিত করিয়া ্আছে। রাস্তাতে লঠন এবং ছই পার্ম্বে দোকান সকল, গলার তীরে বৈঠকথানার ঘর সাজান আছে। গঙ্গাতীরে কামান পাতা ছিল, দিপাহীদিগের গোলযোগে রাজ্যে গোলযোগ হওয়াতে ঐ সকল কামান এবং বন্দক পিস্তল তরোয়াল ইত্যাদি যে কিছু যুদ্ধের অক্তাদি বাহার বাটীতে ছিল, তাহা সমস্ত সরকার বাহাতর উঠাইয়া লইয়া আপন অস্তালয়ে রাথিয়াছেন, কাহার বাটীতে কিছু অস্ত্র মাত্র নাই। নবাব নিজামতের বাটীতে যে সব প্রহরিগণ আছে. তাহার। নিরস্ত হইয়া ষ্টিহত্তে ছার রক্ষা করিতেছে। নবাবের একশত বেগম আছে, তাহাদের মহলে থোঞাগণ প্রহরী। থোকাদিগের অত্যন্ত প্রাধান্ত পর্ব্ব পূর্ব বৃদ্ধ নবাবদিগের নিকট ছিল, এক্ষণে অনেক থকা হইয়াছে। বিশেষতঃ ,নবাবের নিকট ছুই জ্বন সাহেব থাকিয়া রাজ্বীতি এবং বিশ্বাভাাস করাইতেছে। নবাবের স্থলতনাৎ পূর্ববিৎ সকলই আছে, দরবারে গমনের আদুব-

কান্নদা বিলক্ষণ আছে, পদে পদে সেলাম বাজান এবং নকিবের ফুকারাতে অগ্রপশ্চাৎ পা বাড়াইতে হয়, তাহাতে কিছু জেটী নাই। নানা রক্ষের বাহন প্রস্তুত আছে।

:

বেগমদিগের ঘাট গলা পর্যান্ত উচ্চ কানাতে বেরা আছে। জ্বল-মধ্যে পিনেশ, এক দিকে আবরণ আছে। নিজামতের সকল বুতাত অলক্ষণে দেখা হয় না।

তাহার পর কাশিমবাজার। মনোহারী দ্রব্যাদির আনেক দোকান, পরে সর্মাবাদ। এস্থানে কুঠাওয়ালা বড় বড় মহাজনের গদি, শালদোশালা বনাত পট্ পশমিনাদি বিক্রন্ন হয়। থাগড়ার বাজার ইহাকে বড় বাজার কহে। সকল স্রব্যের দোকান আছে। কাঁদার জিনিস আর থাগড়ার মুড়কির অতি প্রশংসা। কিন্তু মুড়কি সমদাঝাৰ ও খাগড়া পৰ্মাৰ লোকানে তৈয়ার থাকে না, ফরমাইস দিলে তৈয়ার করিয়া দেয়, টাকায় এ বংসর দেড সের। মুড়কির প্রশংসা। এই দেখিতে চিনির মুড়কি। থাইতে দম্ভের চাপ দিলে মচু করিয়া শব্দ হয়, পরে রুসে পরিপূর্ণ, স্বতপকে তৈয়ারি হয়। ময়রার দোকানে ছানাবড়া পাস্তমা রসগোলা গোলা মণ্ডা সন্দেশ মতিচুর পেলাও জিলাপী অমৃতি বঁদে থাকা গৰা ব্দক্রা বাতাদা (ও) পাটাল্কি পাওয়া যায়। বাজারে বে চক আছে। তাহার মধান্তলে মংস্তের দোকান, নানাজাতি মংস্থ আছে, কিছ ছুৰ্মুল্য। মংফু কৃট্বার যে এক এক বঁট প্রতি দোকানে দোকানে আছে তাহা দেখিতে অতি ভয়ানক। একে মেছনি-দিগের দোকান উচ্চতে, তাহাতে পাটা দেওয়া, তাহাতে মৎক্সের माकान त्माकान, विभवात मिक्न श्टखत मिटक तुरु व है. काशात ছই, কাহার সাতপুষা লখা অর্দ্ধ হাত চৌড়া তীক্ষধার বঁটি, খাঁড়া

অপেকা ভয়ানক, এই বঁটিতে মংস্ত ছেদন করে। মংস্ত সের দরে বিক্রম্ব নহে। চুনা কিশ্বা কোটা মংস্ত ভাগাদরে, বড় মংস্ত থোক দরে বিক্রম্ব হয়। তরকারি বাজার চতুর্দিকের বারান্দাতে, আলু বার্জাকু কচু কাঁচকলা থোড় মোচা শাক কাঁচান্তেতুল করেদবেল, কাঁচালি মর্জমানরস্তা আতা শশা ইকু পানিফল ইত্যাদি সকল জিনিস পাওয়া বায়। মুড়ি মটর ছোলাভাঙ্গার দোকান (৩) কাপড়ের দোকান রাজার ছই ধারে। কাঁসংরি-পটী থাগড়াতে। থাগড়াই পাউলি, বাটা, বাটা, বগিথালা, ভিবে উত্তম উত্তম পাওয়া যায়, ২০০ অবধি পাঁচ টাকা পর্যন্ত সের বিক্রম্ম হয়। ব্যক্ত গঠন তাহার তেমন মুল্য। থাগড়ার পর বহরমপুর। এই স্থানে ছাউনি এবং মালদেওয়ানি মাজিইরের কাছারি, ডাক্বর, ডাক্বর, ডাক্বর, চাক্রারখানা, ইাজনিয়ার-

বহন্তমপুর অফিন, মিলিটরি-দপ্তর। ছাউনিতে আট শত গোরা আছে, দেশী পদাতিক যাহারা পুর্বাবধি এই ছাউনিতে পন্টন ছিল, তাহাদের যুক্ত-বিক্রমের বন্দুক তরবারি ইত্যাদি যাহা ছিল, সকল লইয়া নিরস্ত্র করিয়া এক এক সক্ষ ছড়ির স্থায় লাঠি দিয়াছে, লাঠি হত্তে প্রহরীর কর্ম করে। তদ্মে সর্বাদা সশঙ্কত। ছাউনির নিকটে গোরাবাজার। সদরবাজার সাহেবদিগের প্রয়োজনের জব্য সকলের সপ্ আছে। এথানে স্ব-এসিন্টান্টনার্জন অভয় নিওগী, জাতিতে সন্গোপ, অতি সচ্চরিত্র, গ্রার তীরে ভিস্পেনসরি, তাহার উপর স্কুরে বাসা।

মূর্ণিদাবাদ সহর ১২ ক্রোশ কছে, ইহার মধ্যে অনেক ধনাঢ়াগণ আছে। জগৎশেঠ, রাজা হরিনাথ কুমার, রাম্নাহের প্রস্তৃতি বড় বড় ধনাঢাগণের বাটা। ইহাদিগের ভাল ভাল দোমহলা, তেমহলা, চৌমহলা ইইকনির্শ্বিত চুল্মার্জিত ভবন, ঝাড়-লঠন আরুনাদিতে, ছবিতে (ও) কোঁচ কোলার। মেজে বৈঠকথানা সাজান। এ সহর অতি প্রাচীন সহর। অনেক হীরা জহরৎ পারা মতি বছমূল্যের ধনীদিগের ভবনে আছাছে। মুসলমান সকল ধনী। এ সহরে মুসলমানের অতিশর প্রতাপ। অনেক মৌলবী অর্থাৎ পারদী-আরবীতে পণ্ডিত
আছে। বহরমপ্রের ঘাটে নৌকা রাশিরা সহর-ভ্রমণ, এজন্ত এই ঘটে হিতি হইল। সহরের স্বর্জ বাজার আছে।

#### ২২ কার্ত্তিক, শুক্রবার, পঞ্চমী

প্রাতে বহরমপ্রের ঘাট হইতে নৌকা খুলিয়া ২ ক্রোশ আসিয়া লান-তর্পনাদি কেরিয়া পরে ২ ক্রোশ মৌল রাঙ্গামেটে, ২ ক্রোশ পরে কাঠালের বাজার, মাটার বাদন ভাল পাওয়া যায়। পশ্চিমে চঙালগড়। বাঙ্গালাদেশে কাঁঠালে মাটার সকল বাদন ভাল ভাল জন্মে। তাহার পর সাটুইয়ের বাজার, রেশমের কুঠী আছে।

আনেক ভক্ত ভক্ত মন্ত্রের ব্যবাস আছে।

সাট্ই পরে মালঞা গ্রাম, বাজারাদি আছে। মুর্শিদা-

বাদ হইতে মালঞা পর্যান্ত গঙ্গা অতিশন্ন চড়া হওনাতে নৌকা আসা সুকঠিন, মধো মুধ্যে মদিনা আছে। হই দিকে চড়া মধ্যে জুলি, ভাগুর নাম মদিনা, তাগতে অথাই জল। ঐ জান্নগাতে নৌকা পড়িলে নৌক। উপুড় হইবার সম্ভাবনা। তাহার পর ৩ কোশ আদিন্না কপোলেশ্বর বাজার আছে। কপোলে-

ু কণোলেম্বর শ্বর, বাজার আছে। কণোলেম্বর শিব এই নামে গ্রাম। শিবের জাত অর্থাৎ মেলা

চৈত্রমাসে হয়। এই বাজারের ঘাটে রাত্রে থাকা হইল।

#### ২০ কাত্তিক, শনিবার, ষষ্ঠী

কপালেখবের ঘাট হইতে অতি প্রত্যুবে নৌকা খুলিয়া ২ ক্রোক্ষ আদিয়া চড়াতে স্থান-তর্পণাদি করিয়া ৮ ক্রোক্ষ পরে কাদ্সীগল্পের বাজার এবং বসতি আছে। ইহার আর্ডপার চড়াতে আহারাদি করিয়া পরে ২ ক্রোক্ষ আদিয়া শিরণি, গ্রাম। পরে নলেপ্রের বাজার। ১ ক্রোক্ষ আদিয়া বেলহারিগঞ্জ বাজার ও বসতি আছে। পরে চারি ক্রোক্ষ আদিয়া অজ্য়নদের মোহানা, তাহার পর কাটোয়া গঞ্জ। অনেক ধনাচ্যগণের বসতি এবং অনেক দেশের মহাজনদিগের

কাটোগ প্রাণাপ্ত গদি আছে। বাজারে সকল জিনিষ পাওয়া যায়, হাস্তার ছই ধারে দোকান সকল।

সহর তুলাস্থান। শৃঙ্খলামতে দোকান সকল স্থাপিত আছে, অনেক পাকা দোতলা একতলা আছে। চাউল দাল কলাই সরিষা ভামান ইত্যাদি ভূষিমালের এবং মৃত গুড়ের আড়ত। এই কাটোরাতে মহাপ্রভূ প্রীগোরাঙ্গ মৃগুন করিয়া ভারতী গোদাঞির নিকট দণ্ড-গ্রহণ, মন্ত্রগ্রহণ করিয়াছিলেন। মহাপ্রভূর মূর্ত্তি মন্দিরে আছে, সমুথে নাট-মন্দির বাটার। বাহিরে বকুলগাছ আছে, কিছু অন্তরে ষড়ভূজ গোরাঙ্গের ও রাধাকান্তের রাধামাধ্বের বাটা। এই ঘাটে নৌকা রাধিয়া রাজে স্থিতি হইল।

#### ২৪ কার্ত্তিক, রবিবার, সপ্তমী

প্রাতে কাটোয়ার ঘাটে স্নান-তর্পণাদি করিয়া ২ ক্রোশ আসিয়া
দক্ষিণণার দাইহাট-দেওয়ানগঞ্জ। এই স্থানে প্রিত্তার ইাড়া
ইত্যাদি তৈয়ার হয়, তসবের আড়ঙ্গ। পরে ১ ক্রোশ আসিয়া
মাটিয়ারি। উত্তরপার রাম-সাতার বাটা, সেবার বরান্ধ ভাল •

আছে, মুর্ত্তি অতি চমৎকার। পরে ২ ক্রোশ থোগালপুরের চড়া। এই গ্রামে দক্ষ্য অধিক, ইহারা দিবাতে নৌকা লুঠিয়া লয়। পরে ১ ক্রোঞ্চ অগ্রন্থীপ, যেখানে বাস্থাঘাযের গোপীনাথ স্বন্ধং অস্থাবধি বাস্থাবোষের প্রান্ধ করেন। অতি সুগঠিত মূর্ত্তি। এখানে অনেক বৈষ্ণৰ আছে। পুৰিৰ যে অগ্ৰহীপ ছিল, তাহা গঙ্গাগত। অগ্রন্ধীপের তিন দিকে গঙ্গা, কিন্তু যে গলা প্রবলা আছেন, তাহা \*হইতে অগ্রহীপ অর্দ্ধ ক্রোশ অন্তর হইয়াছে। পরে ২ কোশ আদিলা ঝাউডাঙ্গার চড়াতে ভোজন হয়। তাহার পর ১ ক্রোশ পাটুলীগ্রাম—অনেক ধনী ভদ্রলোকের এবং উত্তরবাটীর কামত্ত প্রাহ্মণের বাদ, বাজার হাট আছে। এই গ্রামে ॥ / • আনি মহাশয়দিগের পূর্ব্ব বাদস্থান। দেবালয় সকল আছে। পুরের পাট্লী গ্রামের নীচে হইয়া পাটলী গঙ্গা ছিল, একণে এক ক্রোশ অন্তর হইয়াছে। পরে ২ ক্রোশ আদিয়া বিভগ্রাম, এ গ্রামে অনেক ব্রাহ্মণের বদতি। এই চড়াতে রাত্রে স্থিতি হইল।

# ২৫ কার্ত্তিক, দোমবার, অফমী

প্রতি বিব্ঞানের চক্চাতে স্থান-তর্পণাদি করিয়া ১ ক্রোশ পরে আলুনে কছ্কড়ে প্রাম। পরে ১॥ ত্রোশ আদিয়া ক্রকন্পুরের আক্ষার, বির্ফু প্রাম। প্রামের ভিতর থানা আছে। পরে ১ ক্রোশ মেট্তলা। তাহার পর ১ ক্রোশ কাঁকশিনি, অনেক ধনাট্যু আন্ধানকায়ত্বের বাদ, নীলের কুঠী ভগ্ন হইয়া আছে। ইহার ভিতর এক থাল আছে, তাহা হইয়া বর্ষার সময় নব্বীপেনোকা গতায়াত করে। পরে ১ ক্রোশ বেলভালা। তাহার

পর ছই কোশ বেলপুর্রিয়া প্রাম। অনেক ভদ্রগোকের বাদবেলপুর্রিয়া কড়া, নালার আছে। গলার জল অভিশয়
কড়া, নিনা আছে। অনেক নৌকা বেগালঠে
ডুবিয়া গিয়াছে। অনেক কৌশলে নৌকা পার করিয়া অর্ন
কোশ আসিয়া সোণাভালার আড়পারে চ্ডাতে আহারাদি করিয়া
১ কোশ আসিয়া কেশেডালা। পরে ১ কোশ মাতাপুর। এই
মাতাপুরের নীচে হইয়া গলা নববীপ আসিতে মজিয়া গিয়াছে।
পরে ১ কোশ আসিয়া এক সোতা ছিল, তাহা প্রবল হইয়া
খড়িয়া নদীর সহিত বোগ হইয়া গলাতে মিলিয়া ত্রিমোহানী
হইয়াছে। এইথানে খ'ড়ের মুখ ছিল, নববীপের উত্তর দিয়া
আসিয়াছে। এই উত্তরদিকে বৈক্রবটোলা ভালনে অনেক বাটী
গলাগত হইতেছে। ত্রিমোহানীর আড়পার মাধ্বগলা, প্রতিন
পার নববীপের পার্বাট। এই ঘাটে নৌকা রহিল। বাজার এবং
নববীপ দেখিতে গমন করিলাম।

ঘাট হইতে চড়া দিয়া অর্দ্ধ ক্রোশের পর শুরুদাস বাবুর (বাটী)।
ইনি জাতিতে কাঁসারি, নবৰীপের মধ্যে এক্ষণে ধনবান্ ক্রিয়াবান্।
তাহার বাটীর দক্ষিণদিকে বাদশ শিবস্থাপন।
নবৰীপ তত্মধ্যে বাগান তাহার দক্ষিণে বাজার।
সর্বারক্ষমে পোনের বোল ধানা দোকান আছে, তাহাতে সকল
জ্বব্যাদি পাওয়া যায়। ময়য়য়র দোকানে সন্দেশ মেঠাই বাজারচলনমত প্রস্তুত থাকে। ফরমাইদ দিলে উত্তম উত্তম দিনিস
তৈয়ার করিয়া দেয়। মৎক্র তরকারির প্রতি দ্বৈদ বেলা এক
প্রহরে পর ত্ই প্রহর পর্যন্ত বাজার হয়। বৈকালে চারি পাঁচ
ধানা মৎক্রের দোকান বৈদে, রাত্র এক প্রহর পর্যন্ত থাকে। চাউদ,

দাল, কলাই, লবণ, ঘৃতু সকল দোকানে পাওয়া যায়, তৈলের আুলাহিদা দোকান আছে। হাটবারে অধিক দুরের বেপারি সব দ্রব্যাদি লইয়া আইসে। নবদীপে তিন বাজার আছে. তাহার মধ্যে এই বাজার প্রধান। । বত ময়রার দোকান আছে, তাহার মধ্যে ক্লফ্ষময়রার দোকান মাতব্বর। এই বাজারে বাজার করা হইল। পাড়ায় পাড়ায় দোকান আছে। নবদীপ গ্রাম বুহৎ, অনেক বদতি। প্রামে ১৪০০ শত বাহ্মণ (ও) ১২০০ শত ঘর বৈষ্ণব। ইহা ভিন্ন তিলি, তাম্বলি, মঞ্জা, কাঁদারি, কুমার, কামার, গন্ধবণিক ইত্যাদি নবশাথ প্রায় ১০০০ হাজার ঘর। তদ্ভিন্ন আর আর নীচ হিন্দ জাতি এবং মুদলমানদিগের বদতি আছে। গ্রাম ১ জ্রোশের कम (वाध है में ना। উछत्रिक देवश्वत्राष्ट्रा, मिक्कि पिरक बाक्यान-**থ**্রিতদিগের পাড়া—ঁচতু**স্পা**ঠী সকল। পঞ্চাশ চতুস্পাঠী আছে। পশ্চিমদিকে কাজিপাড়া, পূর্বাদিকে কাঁদারিপাড়া, এই চারিদিকে চারি পাডা। তত্তির অস্তঃপাতী পাড়া সকল আছে। গ্রামে অতিশয় বাঁশের বন, মধ্যে মধ্যে অনেক বৃহৎ ইষ্টকালয় এবং গ্রামের মধ্য-স্থলে রাজা কুষ্ণচন্দ্রের রাজভবন, যেস্থানে পণ্ডিতগণ লইয়া রাজ-দ্ভা করিতেন। একণে মহারাজ গিরিশচন্দ্র কৃষ্ণনগরে উত্তম ব্যক্তত্ত্বন নিৰ্ম্বাণ করিয়া তথায় আছেন। এই নবধীপ গঙ্গার ভাঙ্গনে প্রস্থান প্রায় গঙ্গাগত হইরাছে। নবদীপ ত্রীগোরাক মহাপ্রস্তুর অবতীৰ্ণ স্থান ক্লুগল্লাথ মিশ্ৰের গৃহে। কিন্তু সে স্থান গলাগত। ভক্তগণে মহাপ্রতু শ্রীগোরাঙ্গের এক স্থগঠিত প্রতিমৃত্তি প্রস্তুত করিয়াছে। কাঁ্যুরি-পটার পশ্চিমে মহাপ্রভুর বাটা। তাহাতে এক মন্দির, এক দালান, সমূথে নাটমন্দির আছে। দালানে মহাপ্রকু বিরাজিত। মন্দিরে চাবি বন্ধ থাকে। বার ঘর

গোস্বামীর পালামত সেবা আছে। মহাপ্রভর এই প্রধান বাটী। ইহাতেই ভক্তবন্দ দর্শনার্থে আইদে। ইহার নিকটে এক বাটীতে শ্রীনিত্যানন্দ মহাপ্রভ, তাহার পর এক বাইতে সীঅট্রৈড প্রভ। এই তিন প্রভু নিকটানিকটি তিন বাটীতে আছেন। ইহার পশ্চিম প্রায় ১ পৌয়া মালঞাপাড়া। তথায় জ্বলয়াথ মিশ্র, শচীমাতা, বিফুপ্রিয়া, লক্ষীপ্রিয়ার প্রতিমৃত্তি আছে। তংবেষ্টিত করিয়া বহু বৈষ্ণবগণ আছেন। নবদ্বীপে যে স্ব বৈষ্ণব আছেন, ইঁহারা অনেকে মহা মহা পাণ্ডত, ব্যাকরণ এবং গোস্বামীশান্ত্রে স্থাশিক্ষিত, অনেকের চতুপাঠী আছে এবং ইষ্টক-নির্ম্মিত কটার এবং দেবালয় এক একটা আছে। নবন্ধীপের বুড়া-শিব এবং পাটলদেবী বড় জাগ্রত। পূর্কো এ স্থানের অতিশয় শোভাছিল, মহারাজ কৃষ্ণচক্ত পণ্ডিতগণের কল্পবৃক্ষ ছিলেন্ এীগোরাঙ্গ ভক্তবন্দ লইয়া নবদীপে পূর্ব্ববং সকল লীলা করিয়া হরিনাম বিতরণে জীব উদ্ধার করিয়াছেন। এক্ষণে ছই অন্তর্হিত হইয়া সোণার-ন'দে অদ্ধকার হইয়াছে। এই নবদীপের সদর-ঘাটে রাত্রে অবস্থিতি হইল।

# ২৬ শে কার্ত্তিক, মঙ্গলবার, নব্যী

প্রাতে নবদীপের ঘাটে মান-তর্পণাদি ছরিয়া নগর-অনন্ দেবদেবী সকল দর্শন করিয়া বেলা > প্রছর গতে নৌকা খুলিয়া ২ কোল পরে নলেপুর। পরে > কোল হাড়ডেকা, তাহার পর ২ কোল আসিয়া চড়াতে আহারাদি করিয়া ২ কোল স্থান্তর, নাদন্দাট বাইবার ধাল। পরে ২ কোল মথুরাপুর, তাহার পর ১॥• কোল কাল্নার গঞ্জ রাত্তি ৪ দণ্ড গতে প্রছান হইল। নৌকা বাটে ভিড়িতে পারিল,না। ছই থাক করিয়া নৌকা ধরিয়া আছে, অন্ধকার এবং নৌকার ভিড়, বাটের উপর ভাল স্থান নাই, এক্সন্ত পার্শ্বে স্থিতি হইল।

#### ২৭ কার্ত্তিক, বুধবার, দশমী

অতি প্রত্যাধে ঐ পাশের ঘাট হঁইতে আড়পার মধ্যে এক চড়াতে প্রাতঃক্বত্য ও গঙ্গাতে স্নান-তর্পণাদি করিয়া পুনরায় পাড়ি দিয়া পাথরের বাজারের ঘটেট নৌকা রাখিয়া বর্দ্ধমানাধিপতি রাজাধিরাজ মহারাজ তেজটাদ সমসেরজঙ্গ বাহাত্রের অধিকার দেবালয় দর্শনার্থে গমন। মহারাজের দেবালয় অধিকার দেবালয় গঙ্গার ঘাট ,হইতে একণে এক পোরা অন্তর হইয়াছে। এই পথের ছই পার্বে দোকান সকল। ইহাতে নানামত ভুব্রাদির দোকান আছে, সকল জিনিস পাওয়া যায়। মধ্যে এক বালিকা-বিদ্যালয় আছে। তাহার পর শ্রীখলালজির বাটী। অম্বিকা সহর, কালনার গঞ্জ লালজির দেবোত্তর। দেবালয়ে ্ এক দারগা, একজন স্থপারিণ্টেণ্ডেণ্ট এই ছই প্রধান আমলা, ইহা ভিন্ন আর আর আমলাগণ আছে। প্রথমে সদাবত, তাহার পর দেউডিতে শক্তধারী দারপাল আছে। এই মহলের ভিতরে দ্যাব্রতের ভাগ্ডাত্ব এবং ভদ্র অতিথির অতিথিশালা, ভূত্যগণের বাদা ী পরথণ্ডে শ্রী ৮ ক্লফচল্লের মন্দিরে ঘাইবার ছার. তাহার পরে প্রাক্তরিণী, পরে ৺লালজির মন্দির। তাহার সন্মুখে গোবৰ্দ্ধন পৰ্বত আছে। লালজির দর্শন ও অতি চমৎকার আসবাব. রাজার ঠাকুর : পুরথণ্ডে রাসমণ্ডপ, তাহার পর রাজার বৈঠকথানা-রাজ-পরিচ্চদে সুসজ্জিত আছে। প্রহরিগণ অস্ত্র লইয়া ছার রক্ষা করিতেছে, দেখিবার নিষেধ নাই। তাহার পরথতে শিবস্থাপন।

eve<sub>3</sub> (87)

প্রথমে ৭৪ মন্দির মণ্ডলাকৃতি, তাহার মধ্যে এক খেত-পাথরের শিব, এক কাল-পাথরের শিব। এই মত ক্রমশঃ আছে। তাহার পরে ৩৪ মন্দির, ঐ মণ্ডলাকৃতি। তাহার সকল মন্দিরে খেত-পাথরের শিব আছে। ছার্বে চারিটা আছে, তাহাও, মন্দিরাকৃতি দর্শন, অতিশর সৌন্দর্য। রাজার সেবা সর্রপ্রকারে উত্তম। মাসিক দেবাদির বরান্ধ আছে।

কালনার গঞ্জে কমবেশ হাজার গঁদিয়ানের গদি আছে। শুভালানত জ্ব্যাদির গোলাসকল কমবেশ ১ ক্রোশ পর্যান্ত। গোলাগঞ্জে আমদানি-রপ্তানির নৌকা, গাড়ী, বলদ সকল যথাস্থানে প্রস্তুত আছে। ভূষি জ্ব্যাদির আড়ত (আছে)। নানাদেশের ম্হাজনগণের গোম্বা সকল 
আছে।

অন্বিকাতে শিবালয়ের নিকট মংস্তা-তরকারির বাজার ্ত্রে:

এক প্রহরের পর হয়। ময়রার দোকান অনেক আছে, মেঠাইওয়ালা
রাহ্মনের ছই দোকান আছে, থাক্সরা সকল পাওয়া যায়। এইথানে হাট-বাজার করিয়া বেলা ছই প্রহর গতে নৌকা খুলিয়া এক
কোশ পরে সাতগেছে, ২ কোশ পরে গুপ্তিপাড়া। আড়পার
শান্তিপর, অতি রহৎ গ্রাম, অনেক রাহ্মণ-

শাভিপুর প্রিভের বাদ। শান্তিপুরে অবৈত প্রভ্র অভিভাবক গোস্বামীদিগের বাটী। কাপড় অভি উত্তম করে। অনেক তাঁতি আছে, অতি মিহি কাপড় হয়। অনেক ধনাঢ়া মহুষা শান্তিপুর গুপ্তিপাড়াতে আছে। সকল হুভক্র গ্রাম। প্রায় ছই কোশ মধ্যে, এক ক্রোশ এক চড়া হইরাছে। ছই দিক্তবু ছই গুলার প্রবাহ। শান্তিপুরের নীচের গঙ্গা হইরা মাথাভালার মোহানা দিরা বাইতে হয়। এই গুপ্তিগাড়ার নীচে চড়াতে আহারাদি করিয়া ২ জোশ আদিয়া গুপ্তিপাড়ার বাজারের ঘাটে সন্ধার পূর্বের লাগান ক্রিয়া থাকা ইইল।

২৮ কার্ত্তিক; বুহস্পতিবার, একাদশী

প্রাতে গুপ্তিপাড়ার ঘাট্টু হইতে নৌকা খুলিয়া পরে ২ ক্রোশ জিরেট-বলাগুড়া পুর্বিপার হরধামের বাল মাথাভাঙ্গার মোহানার মুথ। ১ ক্রোশ ं ... প্রাণ চাকদহগঞ্জ। গঙ্গা

ানক্ষহ

নাক্ষর

ক্ষার ভাঙ্গিয়া গঙ্গার তীরে নৃতন চাক্ষর

বাজার হইরাছে। এ বাজারে দোকান সকল, বেশুদিগের (ও)
পথিকদিগের থাকিবার ভাল ভাল বর আছে। পরে ২ জ্রোশ স্থান
সাগর। অই স্থানে নীলকুঠী এবং বাজার ছিল, সকল গঙ্গাগত হইয়া

গ্রিয়াছে, পুনরায় " ... অস্তরে বাজার হইয়াছে। বাজারে ময়য়ার
দোকান ১০৷১২ থানা আছে। চাউল দাল ত্বত লবল তৈলের সাতথানা দোকান। বেণের মদলা, তামাক পান মৎসা তরকারির
দোকান সকল আছে। দধির দোকান বাজারে অনেক বৈলে; দধি
ভাল নহে, ভিতরে থালি জল, উপরে ছ্য়ের সহিত মনসা-আঠা
দিয়া মাথা আঁটিয়া রাখে, দেখিতে উত্তম দধি, ভিতরে কিছু নাই
কেবল-ছানার জল। এইমুত দধির ঠকবিছা। এই বাজারের
নিকটের চড়াতে আহারাদি করিয়া পশ্চিমপার শিক্ষেডুমুরদহ,

শিলেড্ম্রক্ষ্ট্র বাংলার কোন কেশবরার, গুমানরায়ের বাটা,
বাংলার ভারে নৌকাপথে কেই স্থির থাকিতে
পারিত না, নৌকার ডাকাতির স্থাইকর্ত্তা। কলিকাতার বাগ্যবার্কীরের ঘাট পর্যান্ত তাহাদের বোখেটের নৌকা বেড়াইত। তাহার
প্রার ২ ক্রোশ আদিয়া নসরাইরের থাল, পুল আছে। তাহার পশ্চিমে

মগরার পূল, বে স্থান হইতে বালি লইয়া যায়। নসরাইয়ে বাজার আছে। পরে ১ ক্রোশ আসিয়া ত্রিবেণার বাঁধাঘাট, কাউতলাতে -বাজার।

मुक्तदनी - किन्मूर्थ शका, शक्तिममुख मत्रवती, श्रुर्वमूर्थ বমনা এই স্থানে মুক্ত হইয়াছেন। এথানে মান্তপণ-শ্ৰাদ্ধাদি করিতে হয়। তাহার পর ১ ক্রোশ বাঁশ-ত্রিবেণী ও বাশবেড়িয়া বেডিয়াবাজারের ঘাট। এই ঘাট হইতে এক পোয়া পথ পশ্চিমমুখে ঘাইয়া তাহার পর এক পুন্ধরিণী ঝিল মত লম্বা আছে, তাহাতে তালকাঠের রিয়াল। তাহার পরে বাদামতলা হইয়া ঘাইতে হয়। এী৮হংদেশ্বরী ঠাকুরাণীর বাটী, নুসিংহদেবের স্থাপিত। অতি উত্তম মূর্ত্তি। মহাকালের নাভি হইতে এক পদোর মূণাল আছে, তাহাতে পদা নিকটে হংস, তৎপুষ্ঠে পদাসন। ঐ পদাসনে চতুত্বি দেবী বিরাজিতা, যোড়শবরীয়া কল্লার লাগ বোগাদনে বদিয়া আছেন, অতি হুগঠিত মূর্ত্তি। মন্দির মধ্যে নুসিংহদেবের প্রতিমর্ত্তি চিত্রপটে আছে। মন্দির ষম্ভাক্তি উত্তম নির্দ্মিত। উপরে এক এক দলে এক এক শৃক্ষ, দলে দলে সকল দেবদেবীর মৃত্তি স্থাপিত। গড়পারের মন্দিরে বিষ্ণু স্থাপিত, এক মন্দিরে দশভূজা। সকল দেবদেবীর আরতি -দর্শন করিয়া নৌকাতে আদা হইল। বাঁশবেডিয়া সুক্র এয়াম, অনেক ব্রাহ্মণ-কারম্ব ভদ্র ভদ্র লোকের বাস আছে। এই ঘাটে রাত্রে থাকা হইল।

২৯ কার্ত্তিক, শুক্রবার, দ্বাদশী প্রাতে বাশবেড়িয়ার ঘাটে স্থান-তর্পণাদি করিয়া ২ ক্রোশ শুসিয়া ... ... ... ... ...

প্রাণক্ষ হালদারের নাচম্বর, যাহাতে একণে হুগলী-কলেজ, আরু কত-. শত ইষ্টকালয় কাছে। এখানে গোৱা-বারিক হণলী-চুঁচড়া আছে,। হণলীর মধ্যে মহম্মদ মশীনের ইমামবাড়ী অঁতি উত্তম। চুঁচুড়ায় নাচৰর। তাহার পর ছই জোশ আসিরা ফরাসভার। এই সহর ফরাসীদিগের রাজ্য, ফরাসী গবর্ণর প্রভৃতি দকল আছে। ইহাদের রাজ্যের মোকদ্মা অক্স রাজা করিতে পারে না। ফরাস্ডাঙ্গা উত্তম সহর, অনেক বসতি এবং বাজার উত্তম, উত্তম বাটী সকল, রাস্তা ভাল আছে। ইহার > ক্রোশ পরে ভদ্রেখবের গঞ্জ, দাল কলাই ঘৃত সরিষা হরিদ্রা শণ পাট ঋড় পিঁয়াজ চিনি মিছরির গোলাগঞ্জ, (ও) অনেক ধনিগণের ু আছত গদি আছে। তাহার আডপারে কাউগাছি। এই চডাতে আহারীদি করিয়া ১ ক্রোশ আসিয়া গরুটির বাগ, পূর্ব্বপার নবাব-গঞ্জ তাহার পর পাশুার ঘাট, পরে এক ১ ক্রোশ বৈষ্ণবাটী, তরকারির হাট। এই স্থান নিমাই-তীর্পের ঘাট, দিগঙ্গ কছে। কলা আলু অধিক বিক্রন্ন হয়। পূর্বপার টিটাগড় বাগান, পশ্চিম পারে সেওড়াপুলি, নিস্তারিণীর বাটী। পুর্ব্বপারে মণিরামপুর। আড়পার কানাই দেওয়ানের দহ, অতি প্রস্তীর জল, অথাই। তারপর দেবগঞ্জ, সাতৃবাবুর বাজার। পরে ১ ক্রোশ শ্রীরামপুর, মার্শম্যান সাহেবের ছাপাথানা, কাগজের কল, সহর মধ্যে উত্তর উত্তম বাটী দক্ষী আছে। পূর্ব্বে দিনেমারের ছিল, এক্ষণে কেছপানি বাহারুরের রাজ্য। মাজিষ্টর আছে। শ্রীরামপুরে প্রথমে ... ... র্ণোস্থিয়ের বাটা পরে ফিরিন্সিটোলা, আড়পার ... ... চাণক। পরে সাবেক রাধাবলভের মন্দির, নিজ গঙ্গাতীরে বল্লভজিউ।

এক্ষণে ঐ মন্দিরে ছিপিথানা ইইয়াছে। রাধাবল্লভ গ্রামের ভিতরে অধিকারীদিগের বার্টীতে শ্রীমন্দির হইয়াছে। পরে মাহেশ, যে স্থানে জগরাথজিউ। আড়পার বিশালকীর দহ, এথানকার জল অভিশন্ন কড়া, সর্বাদা বোরপাক দিতেছে। তাহার পর অর্ককোশ রিস্ডা, আড়পার থড়দহ, শ্রামহরি বিখাদের বাদশ শিবছাপন, বাদ্ধা টা। পরে শ্রামন্থন্দরের ঘাট। তাহার পর হ্রথচর, পরে পাশিহাটা, আড়পার কোরগর। পুরে কোতরক্ষ, পূর্বপার আগড়-পাড়া, পরে দক্ষিণে এড়িয়াদহ, আড়পার উত্তরপাড়া। এড়িয়াদহর পাকা ঘাটে নৌকা রাধিয়া রাত্রে অবস্থিতি হইল।

## ৩০ কার্ত্তিক, শনিবার, ত্রয়োদশী

প্রাতে এঁড়িয়াদহের ঘাট হইতে নৌকা খুলিয়া পূর্ব্বপার নসরাই, যে স্থানে মেগাজিন এবং রাসমণির নবরত্ব-শির্বালয় । পরে বরাহনগর কাশীপুর, পশ্চিম পার ভক্রকালী, উত্তরপাড়া, বালি। এই বালির গাদি সাহেবের ঘাটে নৌকা ধরিয়া প্রাতঃকত্য গঙ্গাতে স্থান-তর্পণাদি সমাপন করা হইল। ঘাটে থাকিয়া কাশীবারুর ... তৃতীয় প্রহর পর রওয়ানা হইয়া পশ্চিমপার বারাকপুর, শালকাটের আমদানী-রপ্তানী, পরে ঘুসড়ি, পরে শালিখা, পোলাবাড়ীর ঘাট, নিমকের গোলা সকল বাজার ইত্যাদি। পরে হাবড়া, যে স্থান হইতে রেলরোড, পরে রামক্ষপুর, শিবপুর পূর্ব্বণার কাশীপুর, পরে চীৎপুর তাহার পর স্বরের বাজার। পরে বাগ্বাজরের বাজাবা। তারপর অরপুর্ণার ঘাটে নৌকা রাধিয়া সক্ষার সময়ে বাটে উঠিয়া সকলে একত্র হইয়া প্রথমে শ্লামবাজার-নিবাসী ঞীত্বত

মাধবচন্দ্র বস্তুর বাটীতে যাইয়া প্রাণতুল্য শ্রীযুত প্রসন্ধুমার স্কাধিকারীর কোন্ স্থানে বাদা, তাহার তদস্ত লইয়া, তথা হইতে গমন করিয়া রাত্র ছয় দণ্ড গতে অবেষণ করিয়া, বহুবাজারের দক্ষিণ মলস্বায় রাস্তার পশ্চিম দিকেঁ মদন বড়ালের রাস্তা, তাহার কিঞ্চিৎ দুরে এক ময়রার দোকান আছে, ভাষার নিকট হইয়া দক্ষিণমথের গলিতে যাইয়া ঐ গলির প্রাদিকে গলাধর চন্দের ৩ নম্বর বাটী, অভয় হালদারের বাটীর উত্তর, ঐবাটীর দ্বারে প্রবিষ্ট হইয়া ডাকিতে শ্রীযুত রাজ-কুমার দর্কাধিকারী, আমার চতুর্থ পুত্র, শব্দ শুনিয়া অতি বেগে আসিয়া দার থলিয়া ... হর্ষযুক্ত : হইয়া প্রণাম করাতে শিরশ্চম্বন আলিম্বনাদি করিয়া ্উপরের ঘরে নাইতে পঞ্চম পুত্র শ্রীযুত অক্ষয়কুমার ও লাতা শ্রীয়ত কেদারনাথ আদিয়া প্রণামাদি করিল। জ্যেষ্ঠপুত্র শ্রীয়ত প্রদলকুমার দর্বাধিকারী (৪) তৃতীয় শ্রীয়ত আনন্দকুমার তৎসময়ে বাদায় ছিল না, অন্ত বাদাতে গিয়াছিল। আমার প্রছান সংবাদ তাহাদিগকে কহিবার জন্ত অক্ষরকুমার বেগে গমন করিয়া হুই জনকে সংবাদ জানাইল, শ্ৰুত মাত্ৰ ছুই জনে শীঘ্ৰ আসিয়া প্ৰণামাদি করিয়া, আদিবার বিলয় হওয়ার কারণ জিজ্ঞানা করিতে লাগিলেন। আমি শিরোচ্ছন আলিঙ্গনান্তর পথের বিলম্বের কথা কৃহিতে আরম্ভ করিলাম, তরম্ভে সর্বতি সকলের শারীরিক কুশলাদি জিল্লাদা করিয়া নানা প্রকার কথোপকথনে প্রায় রাত্র এগার ঘণ্টা গুতু হইল, তাহার পরে পুরী কচুরি ইত্যাদি জলবোগ ক্রিয়া

# ১ অগ্রহায়ণ, রবিবার

প্রাতে বাসা ইইতে বাগ্রাকার অন্নপুর্ণার ঘাটে নৌকাতে গমন করিয়। ঐ ঘাটে গলা-লান তর্পণাদি সমাপন করিয়। নৌকাতে জলবোগ করিয়া বে সমস্ত দ্রব্যাদি ছিল, তাহা লইয়া এক থানা গাড়ী ভাড়া করিয়া কালার্টাদ চাকরকে সমভ্যারে দিয়া বাসার পাঠান হইল। আমি এবং ভোলানাথ মুখোপাধাার ছই জনে নৌকার সকল দ্রব্যাদি যাহার হাহা তহার বাটীতে পাঠাইয়া একত্ত মুখোপাধ্যারের বাটীতে আদিয়া, পরে আমি পাল্কি লইয়া বেলা আড়াই প্রহর গতে বাসায় পছছিয়া আহারাদি করিয়া বাসায় থাকা হইল। পরে জামাতা ও জগবদ্ধ এবং প্রীষ্ঠ রামকানাই ঘাষ বৈবাহিকের সহিত সাকাং হইয়া তীর্থাদির কথোপকথনে রাত্র ছই প্রহর গত হইল, তাহার পর জলবোগ করিয়া শয়ুন্ম-

### ২ অগ্রহায়ণ, দোমবার

প্রাতে স্থানাদি করিয়া টুক সাহেবের বাগানে প্রীযুত কাণীবাব্র বাটতে গমন, তথার তাবং দিবা থাকিয়া মধ্যাক্তে ভোজনাদি
করিয়া যে বে স্থানে দ্রব্যাদি সকল পূর্ব্ধুপাঠান মত ছিল, তোহা
একত্র করিয়া গাড়ীতে কালাটাদ চাকরের সমজ্যারে বাসাতে
পাঠাইয়া সন্ধ্যার সময়ে তথা হইতে বাসার গমন, রাত্রু চারি দও
সমরে বাসায় প্রছিয়া ক্রফন্সরনিবাসী প্রীযুত রাম্টার্দ গোস্বামী
আমার সহিত সাক্ষাং জন্ম প্রাতঃকালাবিধ বাসায় ছিলেন, তাহার
সহিত সাক্ষাং হইয়া প্রীর্কাবন ধামের এবং ভাঙীরবটের
কথোপকথন প্রবণ প্রেমানকে ময় হইয়া অক্রপাত হইতে লাগিল।

এই আনাপে রাত্র হুই প্রহর গত হইল, তদন্তে জলবোগ করিয়া বিশিষোগে নিজা হইল।

# ৩ অগ্রহায়ণ, সঙ্গলবার

### ৪ অগ্রহায়ণ, বুধবার

প্রাতে গলাতে মান-তর্পণাদি করিয়া বাসায় কনিষ্ঠ প্রতা প্রীয়ত কেদারনাথ সর্বাধিকারীকে এবং ধর্মদাস ও তিতির মাতাকে সমজাারে দিয়া ... ... ... ... রাধানগরের বাটীতে লইয়া যাইবার জক্ত আনিতে পাঠান হইল, শীল্ল তথার পছছুনর জক্ত রেলের গাড়ীতে কোন্নগর পর্যান্ত যাওয়া হর, তাহার পর সন্ধাার সময় শ্রীমতী কৃষ্ণকামিনী এবং তাহার ঝালিকা শুদ্ধ প্রছিয়া আমাকে বহু দিনান্তে দেখিয়া প্রেমানন্তে মগ্ধ হইয়া বারিপূর্ণ চক্ষ্বয় করিয়া গদগদভাবে ভাষিতে লাগিল বে, "আমাদের এমত দিন হবে ইহা মনে ছিল না। বাবা, ভূমি আমাদিগের সকলকে ভূলে কি প্রকারে ছিলে, একেবারে কি আমাদের মায়া কাটাইয়াছিলে ?" এই মত মহামায়া আবির্ভাবের সম্পূর্ণ মায়া প্রকাশিত কথা কহিয়া ছল ছল চক্ষ্ করা দেখিয়া আমার মায়ামোহে শরীর আর্দ্র হইয়া চক্ষে জল আসিতে লাগিল, ক্ষার ক্যা দেহিত্রীকে ক্রোড়ে লইয়া মহামায়ার মহাজালে প্রবিষ্ট হইলাম, পরে নানামত কথোপকথনে প্রায় রাজ ছই প্রহর গত হইল, রাজে ক্ষী থাইয়া ...

# ৫ অগ্রহায়ণ, বৃহস্পতিবার

প্রাধানগরে স্মানির কল্প নৌকা অবেষণ করিতে প্রিয়নাথ মিত্রকে পাঠাইয়া আহারাদি করিয়া প্রীযুত কালীবাবুকে বাটী গমনের কথা কহিতে গমন করি। তথার ষাইয়া দেখিলাম, তাঁহার যত দ্রব্য পুর্পের কুলাবন ও কালীধাম হইতে পাঠাইয়াছিলেন (এবং) কর্ম্মকারদিগের নিকটে নিজ বাটীর ছলিচা গালিচা কোচ কেদারা ইত্যাদি যাহাছিল, তাহাদের অনবধান জল্প সকল লোকসান হইয়াছে। তাহার পর স্প্রান্থ ব্যক্তিগণ আসাতে তীর্থাদির এবং নানা দেশ-অ্মণের গল্পাদি করিতে করিতে সন্ধ্যাগত হইল। বাটী গমনের কথা কংহতে একদিন থাকিয়া গমন করিতে কহিলেন। আমি বাসার আমিরা ভানিলাম নৌকার সাত টাকা ভাড়া হইয়াছে, ভিনিয়া রাত্রে সকল

### ৬ অগ্রহায়ণ, শুক্রবার

প্রাতে স্থান-তর্পণাদি করিয়া যে নৌকা ভাড়া ইইয়ছিল, তাহা দেখিতে কালবিনের ঘাটে যাইয়া দেখিতে পছন্দ না হওয়া জন্ত প্ররায় অক্ত নৌকার জন্ত লোক পুঠাইবার উন্তোগ করিতে ছিলান, এবত কালে প্রীযুক্ত ঈশরচন্দ্র ঘোষ ভায়া সাক্ষাৎ করিতে আসিয়া নৌকার কথা জিজ্ঞানা করাতে তাহার প্রতি ভায়ার্পণ করায় চারি টাকা ভাড়া ও ইনাম স্বরূপ আট আনা দেওয়া স্থির করিয়া মাঝি সমেত ধর্মদাসকে পাঠানতে ঐ নৌকা স্থির করিয়া আহারান্তে কালীবাবুর নিকট বাইয়া, তাহার দেশাগমনের ব্যবহারিক বক্সাদি পাঠাইয়া দিয়া স্থাদেশবাত্রার বিদায় হইয়া বাসায় প্রছিয়া শ্রীমতী ক্লফ্রকামিনী থিদিরপুরে তাহার মাতুলদিগের বাটতে আমার আদেশ মতে আসিয়াছেন ভনিয়া, রাত্রে আহারাদি করিয়া নিজা হইল।

# স্বগ্রাম রাধানগরে

### ৭ অগ্রহায়ণ, শনিবার

প্রাতে প্রথম ভাগ বারবেলা পরিত্যাগ করিয়া গাঁড়ীতে আপন সমভাারী দ্রবাদি বোঝাই করিয়া নৌকাতে কেদারনাথ ...... ··· কে সমভারে দিয়া পাঠা<sup>ই</sup>য়া পশ্চাতে প্রাণাধিক বালক-দিগের সহিত কথোপকথন করিয়া গঙ্গাভীরে বমশালের ঘাটে নৌকাতে দ্রব্যাদি উঠাইয়া গঙ্গায় স্নান-তর্পণাদি করিয়া কেদারনাথ সর্ব্বাধিকারী ভাষাকে বাদায় পাঠাইয়া ধর্মদাসকে সমভাারে লইয়া নৌকা থলিয়া পশ্চিমপার রামক্লঞপুর শিবপুর রাখিয়' জাহাজ সকলের ভিতর হইয়া চাঁদপালের ঘাটে ( আদা, এথানে) কলে জল উঠিতেছে, তাহার পরে কেল্লার নিকট হইয়া প্রিন্সেপ সাহেবের ঘাট পুর্বাদিকে রাথিয়া কুলিবাজার,পরে খিদিরপুরের গঙ্গাদার পুল দেথিয়া थिनित्रशूरतत वानिवारि तोका धतिया धर्मानामरक औयुक नननननन ঘোষজ্ঞার বাটী হইতে শ্রীমতী ক্লঞ্চকামিনীকে আনিতে পাঠাইয়া পাথের ধরতের দ্রব্যাদির ক্রম্ব জন্ম মাঝিদিগের ছাই জনকে পাঠাই-লাম। প্রায় বেলা দশদও গতে ক্লফকামিনী পছছিলে পরে নৌকা থুলিয়া পূর্ব্বপার বলাট, গুদাম, কিট সাহেবের ইয়ার্ড. ডক ইত্যাদি, পশ্চিম পার শিবপুর রাথিয়া দক্ষিণ মুথে বাহিয়া এক কোশ সাহেবদিগের কুঠী সকল এবং উত্তম উত্তম বাগান-বাটী, পশ্চিম পারে কোম্পানির বাগান, যাহাকে বোটানিকেল গার্ডেন কহে, এই বাগান মধ্যে সর্বারকমের বৃক্ষ-লতাদি আছে, নীলপদ্ম সহস্রদল্ল

পলাদি স্থাপিত আছেঁ, নানা জাতীয় ফল-পূপে স্থাণাভিত অতি মনোরম স্থান, তাহার পরে পুর্বাপারে সাহেবের হাট বদরতলা, পশ্চিমে রাজগঞ্জ শাঁকরাল, পরে আথড়া বারুদ্ধানা পুইছাল, পরে পশ্চিমপারুবাউড়িয়া, যে স্থানে হতা কাপড় ইত্যাদির কল আছে, আছপার বন্ধবঁজ, তাহার উত্তর লাঙ্গির বাজার। এই স্থানে জোয়ার वानाट तोका धतिया वाकाद व्याहातानित क्छ याहेया तिथिनाम, দোকানে চাউক দালু ইত্যাদি পাওয়া যায়, নিকটে এক পুষ্করিণী আছে, রম্বন্ধের স্থান নাই। প্রায় দিবা তৃতীয় প্রহর হইয়াছে; রম্বরের এক উপার দেখিলাম—হাটের চালা আছে তাহাতে লোহার ... আহারাদি করা হইল, পরে চারি দণ্ড দিন থাকিতে নৌকা থুলিয়া বন্ধবন্ধ বাউড়িয়া ছাড়াইয়া ৪ ক্রোশ আসিয়া উলুবেড়িয়া আসিতে চারি দণ্ড রাজি হইল। তাহার পর চাঁপার-থাল, ভাঁডার-দহ দামোদরের মুথ, মুরপুর, মিঠেকুগু – মাকড়া পাথর, দক্ষিণপার গেঁওথালির বাজার--উলবেডিয়া হইতে ১২ ক্রোশ, তথায় আসিয়া জোয়ার হইল। এই জোয়ারে রূপনারায়ণের ভিতর প্রবিষ্ট হইয়া তমলুকের চড়া। গাঙ্গের গতিকে সময়ে সময়ে গাঙ্গ স্থানে স্থানে হয়। এ বংশ্বর ছই পারে গান্দ, মধ্যে চড়া, দক্ষিণপারে তমলুক রাজ্য, বর্গভীমার মন্দির, তুলার মহাজ্ঞন অনেক আছে। বাজার, হাট; বুসতি ইত্যাদি ভাল আছে । তাহার পর কাঁটাপুকুর ইঙ্যাদি পশ্চাৎ করিয়া প্রাতে কোলাতে প্রছান হইল। পরে প্রাত্তঃক্রত্য-সানাদি করিয়া নৌকা ধুলিয়া ঋণে এবং ধ্বজিতে ৬ ক্রোশ আসিরা মুনসীর হাট। ঐ হাটে ব্লেথাবার এবং

### ৮ অগ্রহায়ণ, রবিবার

পরে বক্সীর

খালের উপরে ছই দোকান আছে, তাহাতে প্রবাসী ব্যক্তি-গণের চারিথানা রস্থদের হর আছে। আহারাস্তে নৌকার আসিয়া জোয়ার সময়ে নৌকা খুলিয়া ভাটরা, ধনভাকা পশ্চাৎ করিয়া পানসিউলির বাদের নিকট হেনরখাটে নৌকা রাখিয়া মাঝি ও দাঁড়ি সকল আপন আপন বাটীতে বাইয়া আহারাদি করিয়া রাতে নৌকায় আইল। এই রাত্র এই ঘাটে বাস হইল।

### ৯ অগ্রহায়ণ, সোমবার

প্রাতে নৌকা খুলিয়া জগৎপুরের তিত্র পাড়ার ঘাট ছাড়াইয়া গড়ের ঘাটে বে স্থানে ধাল্ডের খটা আছে, ঐ বাটের কিঞ্চিৎ অন্তরে নৌকা রাখিয়া প্রাতঃকৃত্য-মানাদি করিয়া জলবোগ করা হইল । পূর্ব্ব দিবদ ভাটরা হইতে ধর্ম্মান্য চাকরকে রাধানগরের বাটীতে বেহারা পাল্কি মুটের জন্তু পাঠাইয়াছিলাম, তাহারা বেলা এগার ঘণ্টার সময় বোলজন বেহারা, ছই পাল্কি, মুটে না পাইয়া ছই জন মুটে লইয়া আদিল।

আমি বাটী আদিবার জন্ম অতিশর বাস্ত হুইয়, নৌকাতে যে সমস্ত পুচরা দ্রবাদি ছিল, তাহা একত্র করিতে যাইয়া নৌকা মধ্যে আশুনের হাঁড়ী ছিল, তাহার উপরে কোঁচা পড়িয়া পুড়িয়া গেল। তাহা দেখিয়া মন অতিশর চঞ্চল বে, দৈবাৎ এমত অমঞ্চল ঘটিল কি কারণ ? বুঝি বাটীতে কোন অমঞ্চল হইয়াতে। এই ভাবিয়া অম্বিকানাথকে নৌকার জিনিদ সকল আনিতে কহিয়া আমি ও শ্রীমতী ক্রঞ্জামিনী ছই জনে ছই পাল্কিতে

আবোহণ করিয়া রাজতমাঠ পার হইয়া নন্দনপুর বেড়বাড়ী হইয়া রাজহাটির হাটে পাল্কি নামাইয়া বেহারাদিগকে জলপান জভ চারি আনা দিয়া, আপনাদিগের জলথাবার জন্ত নারিকেলের রসকরাসন্দেশ লইয়াপুছরিণীহইতে জল আনিয়া জল থাওয়া হইল। পান তামাক থাইয়া পাল্কি তুলিয়া সেনহাট, কুমারহাট, চক্রপুর, অনন্তন্গর, শাইলান, থানাকুল, রামনগর, বিল্লক, নারায়ণপুর, গোপালনগর পার, হইয়া আড়পারে কোঠরা, দক্ষিণ দিকে গোয়ালাপাড়া এবং জগদন্ত চক্রবন্তীর অর্দ্ধেক কাটা পুদ্ধবিণী রাখিয়া কোঠরাগ্রাম হইয়া রাধানগরের নন্দীপাড়ার পরে ক্লফমোহন ভূরিশ্রেটের এবং ভরত কামারের বাটীর সমুথ হইয়া ভোজ পুর্কারণীর পুর্বি পাহাড় হইয়া শঙ্কর চট্টোপাধ্যায়ের বাটী, ষাহাতে ু গৌরমোহন ভূরিশ্রেষ্ঠ বাটী করিয়াছেন, তাহার পূর্ব্ব এবং সরথেল পুক্রিণীর পশ্চিম রাস্তা হইয়াঐ পুক্রিণীর উত্তর পাহাড় দিয়া চোক্ষদার ডাক্ষার পূর্বে সরখেল ডাক্ষার পশ্চিম দিয়া পঞ্চানন্দের . পুষ্করিণীর দক্ষিণ-পূর্ব্ব পাহাড়ের নীচে হইয়া মুখোপাধ্যায়ের বাটীর দক্ষিণ নিজ পুক্রিণীর উত্তরের পাহাড়ের উত্তর হইয়া নিজ বাটীর সম্মুথ ছারে আমার পাল্কি, ভিতরে কামিনীর পাল্কি রাখিল। পাল্কি হইতে বাহির হইয়া দেখিলাম, · · · · · · মনের অতিশয়' উলাক্ত হইয়া শ্রীপজিউদিগকে প্রণাম করিয়া বিষয় হইয়া দরজা উপরে চৌকী ছিল, তাহাতে বদিয়া ভাবিতে লাগিলাম যে, কি বিপদ ঘটিয়াছে যে, ভায়াদের কাহাকেও দেখিতেছি না 🛺 এই ভাবিতে ভাবিতে এমতকালে বাটীর ভিতর ছইতে মধ্যমা মাতাঠাকুরাণী ক্রন্দন করিয়া উঠিলেন। ক্রন্দন শুনিয়া ' জিজাসা করিলাম, কি জন্ম ক্রন্মন হইতেছে ? তাহার উত্তর না

#### তীর্থ-ভ্রমণ

পাইতে পাইতে ব্রন্ধনাথ ভারা বাটীর লিতর হইতে কান্দিতে কান্দিতে আদিতেছে এবং "বৈকুণ্ঠনাথ কোথায়" কহিয়া সকলে কান্দিয়া উঠিতে তথন বোধ হইল যে, মধ্যম ভ্রাতা বৈকুণ্ঠর বৈকুণ্ঠলাভ হইরাছে। এই শ্রুতমাত্র শাহ্দণ শেলের ভ্রায় বক্ষঃস্থলে আঘাত হইরা বোধ হইল বক্ষঃ বিদীণ হইরা গেল, আর শত
সহস্র শেলাবাত হইতেছে—এই আশস্কাতে ভাবৎ শরীরে কম্প
হইরা চৌকী হইতে পড়িয়া বাইবার উপক্রম হইল।

( সমাপ্ত )

# টিপ্পনীর পরিশিষ্ট\*

১ পৃঁটা, রাধানগর— তুগলী জিলার **থানাকুল থানার অধীন** কৃষ্ণনগর-স্মীজান্তর্গত, এই প্রামে মহাক্সা রাজা রামমোহন রায় জন্মপ্রহণ করেন i রাজার জন্মখানের দক্ষিণ-পশ্চিম ৫০০ হাত দ্রে প্রস্তৃক্তার আবাদ-স্থান।

০ পৃষ্ঠা, এ ৺রাধ ঋষাত্ত দেব ঠাকুরের প্রীমন্দির। ইহা প্রস্থ-কর্ত্তার সদর-বাটীতে অবস্থিত। ইহা উাহার জোষ্ঠতাত-পুত্র রাজা সীতানাথ প্রস্তুত করান। ইহার উপরে এইরূপ থোদিত আছে— "প্রীপ্রাধ।কান্ত •ঠাকুর জিউর প্রীমন্দির ১৭৬২ শকে সমাপ্ত ইহা, সন ১২৪৭ সাল ৩•শে কাত্তিক"।

৫ পৃষ্ঠা, প্রীরামকানাই ঘোষ—ইনি আলিপুর-জল্পাদালতের নাজীর ছিলেন। ইহাঁর বাসহান বাঁকুড়া জিলার অন্তর্গত বিষ্ণুপুরের একক্রোশ পশ্চিম রাম্যাগর নামক গ্রাম।

৯ পৃঠা, রড়ার ধার—অর্থাৎ রড়া নদীর ধার। রড়া "রড়াকর" শব্দের অপত্রংশ। পুর্বের কৃষ্ণনগরের পশ্চিমে রড়াকর নামে

শ প্রথমে সক্ষম ছিল যে, তার্থ-লমণের বিবরণের প্রত্যেক পৃঠার পাদটিপ্পনীতে জ্ঞাত্ত বিষয় লিপিবল্প করিব, তদকুলারে ১২ কর্মা পর্যন্ত পাদটীকা
দেওবা হইয়াছে । বৃক্তু পরে দেখা গেল যে, একই বিষয়ের হনেক স্থানে পুনকৃত্তি
রহিংগছে এবং পান-টাকায় পাছে ঐরপ পুনকৃত্তি ঘটে, সেই জ্ঞাত তৎপরে আর
পান-টাকা না দিনা গ্রন্থপরে পরিশিষ্ট অরপ এই টিপ্পনা প্রকাশিত হইল।
উক্ত ১২ কর্মার মধ্যে যে যে বিষয়ের টিপ্পনা পরিত্যক্ত হইয়াছে, তাহাও এই
পরিশিষ্টে প্রাযুক্তমে ধরা হইল।

একটা বড় নদী ছিল। ঐ নদীর তারে প্রণেটখর অনাদিলিদ্ন অবস্থিত। মহালিদ্যার্জনতন্ত্রে প্রীহর-পার্বতী-সংবাদে শিবশত-, নাম স্থোত্রে উক্ত আছে:—

"ঝাড়খণ্ডে বৈজ্ঞনাথ: বক্তেখরন্তথৈব চ। বীরভূমৌ সিদ্ধনাথো রাচে চ তারকেখর: ॥২৪ ঘণ্টেখরশ্চ দেবেশী রত্নাকর-নদীতটে। ভাগীরথী-নদী-ভীরে কাপালেখর ঈরিত: ॥২৫

কিম্বদন্তী আছে যে, ৮ অভিরাম গোস্বামীর অভিশাপে রছাকর
নদীর তেজ কমিয়া গিয়া কানানদী নামে থাতে হয়। ই অভিরামশীলামত প্রস্তের ৫ম পরিচেন্দে এই রূপ বর্ণনা আছে —

"এতেক লাগিয়া শীঘ্র করেন গমন।'
মান লাগি নদীতে গেলেন তথন ॥
রত্মাকর নদী দেই সদা প্রবাহিত।
গোঁদাইএর কৌপীন দেই হরে আচিছিত ॥
কোধেতে গোঁদাই তারে দিল অভিশাপ।
করপুটে রত্মাকর করে যে বিলাপ ॥
না জানি করিস্থ দোষ ক্ষমহ আমারে।
সাধ্য আছে কার তব বাক্য প্রতিবারে ॥
অব স্তুতি করি বহু করিলা বিনয়। '
তবে অভিরাম পুন বলেন তাহার ॥
অক্ষ হ'রা থাক তিন শত বংসর।
প্রে একচক্ষু তুমি পাবে রত্মাকর ॥"

১০ পৃষ্ঠা, সোনামুখীর গদাধর শিবোমণি—ইনি বর্তমান কথকতার প্রবর্ত্তক বলিয়া পরিচিত। ০৬ পৃষ্ঠা, বাবু রম্মুপ্রদাদ রায়—ইনি রাজা রামমোহন রারের
কনিষ্ঠ পুত্র এবং দদর-দেওয়ানী আদালতের থাাতনামা উকিল ছিলেন। দদর-দেওয়ানী আদালত উঠিয়া গিয়া হাইকোর্ট স্থাপিত হয়। ইনি ইথার সর্ব্ধপ্রধান দেশীয় অবজ মনোনীত হন।

ু পূর্চা, সেকেলরা বা সিক্লরা—যুক্ত-প্রদেশের আগ্রা জেলাস্থ আগ্রা-তহদীলের অন্তর্গত একটা প্রাদিদ্ধ গণ্ডগ্রাম। জৌনপুররাজ সিকলর লোদী এই নগর স্থাপন করিয়া ১৪৯৫ খৃষ্টান্দে এখানে একটা প্রাদাদ নির্মাণ করান। সমাট্ আক্রর প্রাণবিয়োগের পর তাঁহার দেহরক্ষা করিবার উদ্দেশে এখানে একটা অপূর্ক সমাধি-মন্দির প্রস্তুত্ব করান। ১৬১৩ খুইান্দে তৎপুত্র জাহাঙ্গীরের যদ্ধে অবশিপ্ত নির্মাণ-কার্য্য স্থসম্পন্ন হয়। সমাট্ অক্বর আর যে সকল অটালিকা প্রস্তুত্ব করাইয়াছিলেন, তাহা হতে এই সিকলরার সমাধি-মন্দির সম্পূর্ণ নৃত্ন ধরণের। ইহার স্থাপত্য-শিল্প প্রাটান হিন্দু বা বৌদ্ধ-স্থাপত্যর অস্করণে স্থগঠিত। ইহার উচ্চতা ও শুসুত্ব আরও একটু বড় হইলে ভাক্লমহলের সমকক্ষ হইত। এই সমাধি-মন্দিরের জন্তই এই স্থানের প্রসিদ্ধি। তীর্থ-ভ্রমণকার এই অকবরের সমাধি-মন্দিরকেই ভ্রমক্রমে ১৯১ পূর্চায়, "দেকল্পর বাদশাহের মস্জিদ্ধ" বলিয়া উল্লেখ করিয়াছেন। ত্ব

১২৪ পৃঠা, গ্রন্থকার রূপ গোষামীর তিরোভাব-শক লিথিয়া অন্ধু বসাইয়াখোঁন নাই। গৌড়ীয়-বৈঞ্চবাচার্য্যগণের মতে "১৪৮৬ শকে" রূপ শ্লেমীর তিরোভাব হইয়াছিল।

১২৭ পৃঠা শ্রামানন্দ—তাঁহার পিতার নাম এক্রিক্সমণ্ডল, -ক্লাতিতে সদ্যোপ। মাতার নাম ছবিকা। তাঁহার পূর্ববাসন্থান গৌড়ের অন্তর্গত দণ্ডেমার। পূর্ববাদ পরিত্যাগ করিয়া উৎকলে ধারেন্দা বাহাত্রপুর গ্রামে যাইয়া বাদ করেন।

বাল্যকালে তিনি ছ্থী কৃষ্ণদাস নামে পরিচিত ছিলেন। প্রেমবিলাস ও ভক্তিরত্বাকরের বহস্তুদ্ধে, ইনি আপুনাকে 'ছ্থী কৃষ্ণদাস' নামে পরিচিত করিয়াছেন। 'রসিক্মঙ্গল' গ্রন্থপাঠে জানা যার যে, 'গ্রামানন্দ' নামী ইহার গুল্ল ক্ষানন্দ-প্রদ্ভ। কিন্তু ভক্তিরত্বাকরে নিথিত আছে যে, তিনি শ্রীর্লাবনে দিবানিশি মনে মনে শ্রীরাধারক্ষ সেবা করিতেন। এইরূপে তিনি গ্রামস্করের আনন্দ জ্বাইয়াছিলেন বণিয়াই, তাঁহাকে শ্রীজীব 'গ্রামানন্দ' নামে অভিহিত করেন।

ভক্তিরন্ধাকরে লিখিত আছে, শ্রামানন্দের বাল্যকালেই ক্র্নিয়ে ভক্তি ও বৈরাগ্যাদের হইরাছিল। বাল্যকালেই তাঁহার এরপ বৈরাগ্যভাব দেখিয়া মণ্ডলমহাশয় একটা রপবতী বালিকার সহিত শ্রামানন্দের পরিণয়-কার্য স্থাস্পদ করিলেন। কিন্তু শ্রামানন্দ জগৎ অন্ধকার দেখিতে লাগিলেন, বিষয় সম্পদ বিষবৎ প্রতীয়মান হইতে লাগিল। এই অবস্থায় তিনি দিবানিশি "হা ক্রন্তু। হা ক্রন্তুত বিলিয়া রোদন করিতেন।

কছুদিন পরে খামানক গৃহত্যাগ করিয়া প্রথমে অনুবা নগরে (অধিকা-কালনা) উপথিত হন। এথানে তিনি বৈশ্ববার্গায় স্বর্গানকের চরণে আয়ুসমর্পন করিয়া কহিলেন, "প্রভো! আমি আপানার দাদ, আমাকে রূপা করিয়া ক্লতার্থ করুন।" গৌরীদাদ-শিষ্য স্বর্গানক খামানককে শিষ্যারপে প্রহণ করিতে নামত হইলেন। অই কারনী-পূর্ণিমায় কুঞ্চনাদ স্বদ্ধানকের নিকট দীক্ষিত হইলেন। এই সমন্ত্র তিনি শুক্কত খামানক' নামে অভিথিত হইলেন।

শতঃপর তিনি জীর্থ-পর্যাটনে বহির্গত হইয়া বজেশ্বর, বৈছ
•নাথ, সেতৃবন্ধ, অবস্তী, পুরুহবাত্তম, নবন্ধীপ প্রভৃতি বহু তীর্থস্থান

সন্দর্শন ক্রেরা অগ্যহে প্রত্যাবর্তন করেন।

তিনি কিছুদিন গৃগাধ্বমে থাকিয়া পুনর্বার শ্রীর্ন্দাবন-যাঝা করেন। শ্রীর্ন্দাবন-সন্দর্শনে শ্রামানন্দির হৃদয়ে কৃষ্ণপ্রেম উপ-লিয়া উঠিল, র্ন্দাবনে রাধাকুও ও শ্রামকুও সন্দর্শন করিয়া নয়ন-জলে বক্ষঃস্থল ভাগিতে লাগিন। রঘুনাথ দাস গোস্থামী শ্রামা-নন্দকে আপনার নিক্ট একদিন রাথিয়া ভক্তিশাক্র অধ্যয়নের কল্প ভাঁহাকে শ্রীজাব গোস্থামীর নিক্ট প্রেরণ করিলেন; এইস্থলেই শ্রীনিবাস ও নরোভ্যের সহিত শ্রামানন্দের প্রথম পরিচয় হয়।

শ্রামানল বাল্যকালেই সংস্কৃত ব্যাকরণাদি শাস্ত্রে ব্যুৎপত্তি
লাভ করিয়াছিলেন। এক্দে দার্শনিক প্রীন্ত্রীর গোষামীর পদপ্রান্তে আশ্রম লইমা অচিরে বহু ভক্তিশাস্ত্রে অধিকার লাভ করেন।
প্রীন্ত্রীর কুলার শ্রামানল মানস-সেবার অধিকার লাভ করেন।
প্রই সময়ে তিনি প্রিকাবনত্ব প্রভুগাদ গোষামী মহোদরগণসহ
শাস্ত্রালাপে কাল্যাপন করিতেন। এইরূপে দীর্ঘকাল ব্রক্তে বাস
করিয়া তিনি পুনরায় উৎকলে প্রত্যাগমন করেন। ভক্তিরয়াকরে
লিথিও আছে, প্রীনিবাসাম্রার্য্য, নরোভম ও শ্রামানল তিনকনে
ভক্তিরায় লইমা বুলাবন হইতে যাত্রা করেন, তথা হইতে তাহারা
লোকজন সমভিব্যাহারে দীর্থপথ অভিবাহিত করিয়া বনবিষ্ণুপর
পর্যায় আগ্রমান করিলেন। তথাকার দক্ষ্য-দলপতি রাজা হানীর
গ্রন্থপ্র সম্পুট প্রতিরা মন করিয়া রাত্রিয়োগে তাহা
আপহরণ করেন। কিন্তু সম্পুট খুলিয়া দেখিলেন, ইহা গ্রন্থে পরিপুর্ণ
প্রীগ্রন্থানি দর্শনেই তাহার মন পবিত্র হইল, হুদর ভক্তিরসে

আপ্ল'ত হইল, তিনি ভক্তিগ্রন্থাধিকারীকে অব্রেষণ করিয়া আনিতে অনুচর্দিগকে আদেশ করিলেন। এদিকে শ্রামানন প্রভৃতি<sup>3</sup> ভক্তবৃদ্ধ জাগিয়া দেখিলেন, গ্রন্থসম্পুট অপস্তত হইগ্নাছে। ইহাতে তাঁহারা শোকে অধীর হইয়া পড়িলেল। এই স্ময়ে কোনও ব্যক্তি তাঁহাকে গ্রন্থচরির 'সংবাদ দেয়। শ্রীনিবাদ নরোক্তমকে শ্রামানল্যহ থেতরি হইয়া অভিকার পথে উৎকলে পাঠাইতে আদেশ করিলেন। তাঁহারা ষ্থাকালে খেতরিতে পৌছিলেন। তথা হইতে শ্রামানলকে উৎকলে প্রেরণ কবিবার ক্রম নথাত্ম ও তণীয় শিষা রাজা সভোষ পদাতট পর্যন্ত প্রামাননের স্কে আদিলেন। শ্রামানল পরাপার হইয়া কাঁটোরার পৌছিলেন। অতঃপর নবন্বীপ, শান্তিপুর প্রভৃতি নানা স্থান দর্শন করিয়া সহস্র শহস্র লোককে গৌর-নিত্যানন্দভক্ত বৈষ্ণব করিয়া'উৎকলে ভক্তির প্রবল তরজ তুলিয়াদিলেন। শ্রামাননের যে সমস্ত শিষা হইয়া-ছিলেন, তন্মধ্যে রসিকানন্দ সবিশেষ প্রসিদ্ধ। ভক্তবর রসিকানন্দের আদেশে তাঁহার পত্নী ইচ্ছাদেবী ভাষান্দের নিকট মলগ্রহণ করিয়া 'শ্রামানাদী' নামে থ্যাত হন। তৎপরে শ্রামানন্দ শিষাসহ প্রক্ষোর্য্যে গ্রমন করেন।

অতঃপর শ্রামানন্দ দারা প্রীগোপীধরভবিগ্রহ প্রতিষ্ঠিত হন। বে গ্রামে প্রীগোপীবরভ বিগ্রহ সংস্থাপিত, শ্রামানন্দ দেই গ্রাম ধানিকে 'গোপীবরভপুর' নামে অভিহিত করেন।

সিদ্ধ মহাপুরুষ আমানন্দের প্রভাবে উৎকলের ধনী, নির্ধন, কুল, মহৎ, রাজা, প্রজা, বালক, বৃদ্ধ সংস্ক্র কালের অবে তরে হরিনামের মহাবল্লা প্রবেশ করিয়াছিল।

ভাষানন্দের তিন পদ্ধী—ভাষপ্রিরা, ব্যুনা ও গৌরাকদানী।

স্থামানদের শিষ্কাগণ মধ্যে ছাদশ শিষ্যের নাম ও পাট সবিশেষ প্রসিদ্ধ । স্থামানন্দ জীবনের শেষভাগ উৎকলে 'ধুরিয়া' নামক ক্রামে বাদ করেন।

১৫২ পুঠা, কৃষ্ণগড়—বাজপুতানার অন্তর্গত একটা দেশীয় রাজ্য। কৃষ্ণগড় ইহার প্রধান নগর। যোধপুরের মহারাজ উদর্বাদংহের থয় পুত্রের নাম কৃষ্ণান্থহ। তিনি পিতৃরাজ্য পরিত্যাগ করিষ্ধা এই প্রদেশ অধিকার করেন। তাঁহার নামায়-দারে এই রাজ্যের নাম কৃষ্ণগড় হইয়াছে। তিনি ১৫৯৪ খুটাসে সমাট অকবর শাহের নিকট হইতে আপনার নামে সনন্দ লইয়া আদেন, সেই পর্যান্ত কৃষ্ণগড় তাঁহার বংশের অধিকারেই রহিয়াছে। ১৮১৮. খুটান্দে বৃত্তীশ গবর্ণমেণ্ট পেরারী দন্তাদলনে কৃতসঙ্গল হইলে তথনকার রাজা কল্যাণসিংহের সহিত বৃত্তিশ-পর্বামেণ্টের সন্ধি হয়, তাহাতে বৃত্তীশ পর্বামেণ্ট রাজ্যরকার ভারগ্রহণ করিলেন। দ্বির হইল, গর্বামেণ্টের অম্বর্শতি বাত্তিত কৃষ্ণগড়াধিপ কাহারও সহিত রাজ্যসম্বন্ধীয় প্রাদি লিখিতে পারিবেন না। ভদবধি কৃষ্ণগড়রাজ্য বৃত্তীশপলিটিকাল এজেন্টের শাসনাধীন। কৃষ্ণগড়ের অধিপতি বৃত্তীশ গর্বামেণ্ট হইতে সম্মানার্থ ১৫লৈ পাইয়া থাকেন।

্রণ পূঠা, বংশীবটের নিকট প্রামবাজারনিবাসী ৮ক্টবস্থর পূত্র দশুক্রপাদ বস্থর "কুঞ্জা" গ্রন্থকার এখানে যে ক্ষ্ণবস্থ ও তৎপুত্র শুক্রপাদ বস্থর উল্লেখ করিয়াছেন, উভরেই প্রাতঃ-শরণীর বাঁজি। ৮ক্ষণবস্থ 'দেওয়ান ক্ষ্ণরাম বস্থ' নামেই পরিচিত ছিলেন। ১৬৫৫ শকে ১১ই পৌষ (১৭০০ খুটাম্বে) হগলীজেলাভ তড়াগ্রামে জন্মগ্রহণ করেন। তাঁহার পিতামহ 'বীরেশ্ব বস্থ একজন অবহাপর লোক ছিলেন। বীরেশ্বের

চারিপুত্র সহস্ররাম, দয়ারাম, তিলকরাম ও শেয়ারাম। দয়ারামের ছুই পুত্র বেচারাম ও কৃষ্ণরাম। দয়ারাম গৃহবিবাদে বিরক্ত হুইয়া। তড়া পরিত্যাগ করেন এবং প্রথমতঃ বালিতে আদিয়া কিছুদিন বাস করেন। এ সময় কৃষ্ণরামের বয়সং১২।১৩ বর্ষ মাত্র: এই অল্ল বয়সেই তিনি রামায়ণ, 'মহাভারতের পল্ল শুনাইয়া ভগুহৃদয় বুদ্ধ দ্যারামের হৃদ্যে শান্তি-বারি বর্ষণ করিতেন। তাঁহার মুখে জ্ঞানগর্ভ উপদেশপ্রদ গল ভনিয়া "প্রামের ভদ্রলোকেরা বড়ই প্রীত হইতেন। এই সময় একজন সাধু আসিয়া ক্রঞ্রামকে দেখিয়া বলেন-'এই বালক একজন বড় লোক হইবেন।' সাধু দয়ারামের অহুমতি শইয়া সেই বালককে দীক্ষা দিয়া যান। ১৪/১৫ বর্ষ বয়সের সময় কুঞ্জাম পিতার সহিত কলিকাতায় আসিলেন। পিতার নিকট কিছু অর্থ লইয়া স্বাধীনভাবে ব্যবসা চালাইতে লাগিলেন। কোন সময়ে ইষ্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানী কলিকাতার যে লবণ আমদানী করেন, ক্লঞ্রাম সেই সমস্ত একচেটিয়া থরিদ করেন, পরে তাহা বিক্রয় করিয়া ক্রফরামের ১০০০, টাকা লাভ হয়। এই টাকা হাতে পাইয়া ব্যবসার ছারা অল্লদিন মধ্যেই তিনি প্রভৃত অর্থস্ঞায় করেন। কিছুদিন পরে ব্যবসা ছাড়িয়া মাসিক ছই হাজার টাকা বেতনে বুটাশ-গবর্ণমেণ্টের অধীনে ছগলীর দেওয়ান হইলেন। •তদব্ধি তিনি "দেওয়ান ক্লফরাম" নামেই পরিচিত হইলেন।

সুথ্যাতির সহিত কর্ত্তব্য কার্য্য সম্পন্ন করিয়া কৃষ্ণীরাম নিজেই
পদত্যাগ করিয়া কলিকাতার আনসেন এবং এথানে ভাষাবাজ্বারে
আসিয়া স্থায়িভাবে বাস করিতে থাকেন। অত্যাপি এই ভাষাবাজারে
ভাষার বংশধরের বাস করিতেচেন।

৬ক্লফরাম ছগল ে যশোর ও বীরভূম জেলায় বহু জমি-•দারী থরিদ করিয়াছিলেন •এবং ঐ সকল স্থানে বছ দেবকীর্ত্তি স্থাপন একরিয়া যথেই দেবদেবার বন্দোবক্ত করিয়া গিয়াছেন। যশোরে মদ্নগোপাল, বীরভূমে রাধাবল্লভন্নীউ, কাণীতে কএকটী শিবমুন্দির, ভাগলপুর জেলায় জীহাসীরা গ্রামের নিক্টস্থ পাহাড়ের উপর এক বিরাট শিবলিঙ্গ ও তাহার স্থলার মন্দির, তড়া হইতে মধুৱাবাটী পৰ্যান্ত পাকা-ব্যস্তা ( অন্তাপি 'রুঞ্চ-জাঙ্গাল' নামে খাত ), গয়ার রামশিলা পাহাড়ে উঠিবার সিঁড়ী, কটক হইতে পুরী পর্যাস্ত জগরাথ যাইবার পথের ছই ধারে আমেরুক্ষ-রোপণ, জগলাথে প্রবেশের পথে স্তব্হৎ দীর্ঘিকা, এবং মাহেশ ও পুরীতে জগনাথদেবের রাদ্যাতার থরচের জন্ম বছ অর্থ বলোবস্ত করিলা যান। আজিও তাঁহারই প্রদত্ত দেবদেব। হইতে মাতেশের রথযাতা মহাসমারোহে অসম্পন্ন হইতেছে। ৭৮ বর্ষ বয়দে কৃষ্ণরাম বস্থর মৃত্যু হয়। তাঁগার হুই পুত্র — জ্যেষ্ঠ মদন-গোপাল ও কনিষ্ঠ গুরুপ্রদাদ। পিতার মৃত্যুর এক সপ্তাহ পরেই মদনগোপাল ইহলোক পরিত্যাগ করেন। মদনগোপালের বন্ত বংশধর এখন নানা স্থানে ছড়াইয়া পড়িয়াছেন, কএক ঘর মাত ভামিবীজারে বাস করিভেছেন। গুরুপ্রসাদ বস্থ তিন ।ববাহ করেন, ১মা পত্নীর পুতাদি হয় নাই, ২য়া পত্নীর গর্ভে গোরাচাঁদ ও কালাচাঁদ নামে হুই পুত্র জন্মে। উহাদের বংশধর শ্রামবা**জারে স্ব**তস্ত্র বুদৎ অট্টার্ক্সিয় বাস করিতেছেন। ৩য়া পত্নী ও তৎপুত্রসহ গুরু-প্রাদ উড়িবদার আদিয়া কিছুদিন বাদ করেন, এখানে বালেশ্বর জেলায় তিনি বিস্তর ভ্রমিদারী করিয়া গিয়াছেন। বয়োবুদ্ধির সময় ' ্তাহার ধর্মভাবও বৃদ্ধি হয়, তিনি কাশী, গয়া প্রভৃতি তীর্থ-ভ্রমণে

বাহির হন। এবং সর্ব্রেই যথেষ্ঠ দান, ও পুণাকর্ম করিয়া পিতার উপযুক্ত পুত্র বলিয়া পরিচিত হইয়াছিলেন। বৃন্দান্বনের সৌন্দর্য্যে তিনি কিছু বেণী মুগ্ধ হইরাছিলেন এবং জীবনের অবশিষ্ঠ কাল এথানেই তাঁহার রাস করিবার সঙ্কর ছিল, আর সেই জন্মই তিনি বংশীবটের নিকট একটা স্থন্দর কুঞ্জ প্রস্তুত্ত করাইয়াছিলেন। কিন্তু মান্ত্রের ইচ্ছা সকল সমর্য পূর্ণ হয় না। তাঁহাকে কার্য্যগতিকে উড়িব্যার ফিরিয়া আসিতে হইল। তিনি মান্ত্র্যুর বিরন্ধান্দেত্রে বিন্দুমাধ্ব ও রার্ধান্মহন এই ছই পুত্র রাথিয়া দেহত্যাগ করেন। বিন্দুমাধ্বের পুত্রই উৎকলের সর্ব্রে প্রসিদ্ধ শরার নিমাইচরণ বস্থু বাহাত্রর ও কটকের সরকারী উকীল শরার ছরিবল্লভ বস্লু বাহাত্র।

১৬৪ পৃথা,—আজমীর-প্রসঙ্গে গ্রন্থকার মুসন্নমান কণীরের হিন্দুপ্রীতি ও শিবভক্তির কথা উল্লেখ করিরাছেন। এই সঙ্গে আর একটা বিশেষ কথা উল্লেখ করিতেছি। এই আজমীরের তারাগড় পাহাড়ের এক কোণে একটা মস্জিদ্ বিভ্যমান। প্রাচীন হিন্দুমন্দিরের মাল-মসলায় এই মস্জিদ্ নির্মিত হইয়াছে। এই মস্জিদ্-গাত্রে পাণরের উপর ছই খানি প্রাচীন সংস্কৃত নাটক খোদিত আছে, তাহার একখানি মহাকবি সোণদেব-রচিত "ললিত-বিগ্রহরাক্ষ নাটক' এবং অপরথানি শাকস্তরীর মহারাজাধিরাজ বিগ্রহণাল-রচিত 'হরকেলি নাটক' উভয় নাটকেই অনেক ঐতিহাসিক কথা পাওয়া যায়। শেহাজ নাটক খানি ২২১০ সংবতে (১৯৫০ খুইাকো) রচিত হয় দি হন্দুরাজ্বল নাটকের কিরপ আদের করিতেন, তাহা উক্ত খোদিত লিপি হুইতে প্রমাণ পাওয়া যায়। এরপ নিদর্শন জগতে নিতাত্ব বিরল।

১৭৪ পৃষ্ঠা, কালা বাব্র ক্ঞ-কলিকাতা খ্রামবাজারনিবাদী বনামধ্য তর্কগুরাম বস্তুর ২য় পুত্র গুরুপ্রদাদ। এই গুরুপ্রদাদর র পুত্র কালাচাদ বস্তুর নামানুদারে 'কালা বাব্র ক্ঞ' হইয়াছে। গ্রন্থকার যে সমন্ন বুলাবনে গিয়া এই কালা বাব্র ক্ঞে বাদা করেন, তৎকালে এখানে কালাচাদ বস্তুর মাতা, ভগিনী ও ক্যা বাদ করিতেছিলেন।

১৭৫ পৃষ্ঠা, লালাবাবুর শ্ঞ-কলিকাতার উপকণ্ঠ পাইক-পাড়াক রাজবংশে লালা বাবুর জন্ম, ইংার আদল নাম দেওয়ান রুষ্ণ চল্র দিংহ। স্থনাম প্রদিদ্ধ উত্তররাটীয় কায়স্ত-সমাজপতি দেওয়ান গঙ্গাগোবিন্দ দিংহের পৌত্র এবং প্রাণক্ষঞ দিংছের পুত। "দেওয়ান গঙ্গাগোবিনের নাম বাঙ্গালার ইতিহাসে প্রসিদ্ধ। তিনি মাননীয় ইষ্ট-ইণ্ডিয়া-কোম্পানীর আমলে বড় লাট ওয়ারেণ্ট হেষ্টিংসের দক্ষিণহস্তস্বরূপ ছিলেন। স্থবা বাঙ্গালার সমস্ত বন্দো-'বস্তের ভার তাঁহারই উপর ছিল। তিনি এত অর্থোপার্জন করিয়াছিলেন যে, তাঁহার মাতৃপ্রাদ্ধে বহুলক্ষ টাকা বায় করিতে কাতর হন নাই। উাহার পুত্র প্রাণকৃষ্ণও জমিদারী বিষয়-বৃদ্ধিতে বিশেষ পারদর্শী ছিলেন। তিনি পিতৃবৈভবে ও নিজের বিষয়বৃদ্ধিতে বাঙ্গালার একজন প্রধান জমিদার বলিয়া" গণ্য হইলেও একমাঁত পুত্র লালা বাবুকে কিছুদিনের জন্ত বর্দ্ধান ও কটকের কালেক্টরের দেওয়ান রাথিয়াছিলেন, এসময় লালা বাব দেওয়ান ক্লুফ্চতন্ত্র দিংহ নামে পরিচিত হন। কিন্তু তাঁহার দেওয়ানী কাৰ্য্যভাল লাগে নাই। পিতার মৃত্যুর পর তিনি অতল বৈভবের অধিকারী হইলেও তাঁহার বিষয়-বৈরাগ্য উপস্থিত হয়। থৌবনকালেই তিনি ধনজন-সহায়-সম্পদ পরিত্যাগ করিয়া বৈরাগ্য অবলম্বন করেন। এই সময় তিনি আপন পৈতৃক জন্মভূমি কান্দির রাজবাটীতে বিপুল দেবসেবার ব্যবস্থা করিয়াছিলেন। বাঙ্গালাদেশে কোন জমিণারীর এরূপ বিরাট দেবসেবার ব্যবস্থা নাই। অল্পিন মধ্যেই তিনি আত্মীয়স্বজনের মায়া কাটাইয়া রুন্ধাবনে গিয়া বাস করেন। প্রবাদ আছে, এখানে তাঁহার ভগবানের সাক্ষাংলাভ ঘটিয়াছিল। জয়পুরের ফুলর মর্ম্মর প্রস্তরে তিনি আপনার আরাধ্যদেবের অপুর্কানন্দির নির্মাণ এবং রামাক্রের চারিধার পাথব দিয়া বাধাইয়া দিয়া গিয়াছেন। বুন্ধাবনের লালাবারুর কুঞ্জেই লামাবারু দেহরক্ষা করেন। এথানেও তিনি দেবসেবার জন্ম বিপুল ভূসম্পত্তি দান করিয়া গিয়াছেন, তাহার আ্রে আজও ভগবান্ কুক্ষচন্দ্রের রাজভোগ চলিতেছে এবং তাহার উপ্যুক্ত বংশধ্রেরা আজও কান্দি ও বুন্ধাবনে তাহার নির্মিষ্ট দেবসেবা চালাইয়া আগিতভছন।

১৭৬ পৃষ্ঠা, বৃদ্ধাবনে ঝুলন,—এমন আর কোথাও নাই। প্রাবণের শুরুপক্ষে দোলনয়ত্ত্বে ভগবান্ প্রীক্তক্তের দোলনরূপ উৎসব, প্রাচীন নাম হিন্দোল। প্রাবণমাসের শুরু একাদশী হইতে পূর্ণিমা পর্যান্ত এই উৎসব অনুষ্ঠিত হয়। মতান্তরে অর্থোদশী হইতে পূর্ণিমা পর্যান্ত তিন দিনও উৎসব হইয়া থাকে। ঝুলুদ্ধ বৈষ্ণবৃদ্ধির একটা প্রধান উৎসব। হরিভক্তিবিলাস প্রভৃতি গ্রন্থে ইহার উল্লেখ নাই, কিন্তু পুরীর "নালান্তি-মহোদয়ে" এই উৎসবের উল্লেখ আছে। প্রাচীন বৈষ্ণবগ্রন্থে এই উৎসবের উল্লেখ না থাকায় কেহ কেহ মনে করেন যে, এই উৎসব সেরুপ প্রাচীন নহে। বান্তবিক এ সংস্কার ক্রমান্ত্রক। বাংস্থায়নের ক্রমান্তব্র এই হিন্দোলের উল্লেখ থাকায় এই উৎসব যে 'তুই হাজার বর্ধের পূর্বেণ্ড প্রচলিত ছিল, তাংতে সন্দেহ নাই।

>৮০ পৃঠার—"বার আধ্জা" শক্ষ থাকিলেও এছকার ১০টা নাত্র আধ্জার; উল্লেখ করিরাছেন, ছইটার নাম কাঁক রাধিরা গিরাছেনু। এথানে ১২ আধ্জার নাম দেওরা ইইল,—

> দিগম্বী, ২ পরমার্থ্য, ৩ বলভন্ত্রী, ৪ মালাধারী, ৫ নির্মোহী, ৬ নির্মোণী, ৭ বিজ্ঞ্বামী, ৮ হন্ত্রমান্বারা, ১ ধ্রিবাল, ১০ মূলুক্জী, ১১ থাকী ও ১২ সম্ভোগী।

২৬৭ পৃঠা, মাট—মণ্রা পহর হইতে প্রায় ১ মাইল উদ্ভৱে অবহিত। এখন ইহার পূর্ব-সমৃদ্ধির কিছুই নাই বটে, তিন বর্ষ পূর্বেও গ্রাম-মধ্যে কতকগুলি উচ্চ চিবি হর্মকের দৃষ্টি আকর্ষণ করিত। তিন বর্ষ হইল, সরকারী প্রাতশ্ব-বিভাগের বন্ধে তন্মধ্যে একটা বঁড় চিপি খোঁড়া হইয়াছিল, তাহাতে পুরাকীর্তির উজ্জ্বল নিদর্শন বাহির হইয়াছে, তন্মধ্যে শকসমাট কনিকের মন্তকহীন প্রমাণ মূর্তির কথা ঐতিহাসিক-লগতে প্রকাশিত হইয়াছে। এই মূর্তির চাপকানের নিয়াংশে রাক্ষা অকরে "মহারাক্ষা রাক্ষাতিরাক্ষা দেবপুরো কানিকো" খোদিত থাকার, ইহা যে সম্রাট্ কনিকের মূর্তি, তাহাতে কোন সন্দেহ করিবার নাই। স্মৃতরাং শকাধিকার-কালে এই ক্রুল মাট গ্রামে প্রাচীন সমৃদ্ধির বথেই পরিচর ছিল। এথানকার, চিপি থননের ক্লে অপরাণর ক্রুণীণ্রাক্র ও বহু কীর্তির পরিচর-চিক্ত বাহির হইয়াছে।

২৭৪ পৃষ্ঠা,—গোবৰ্জন-পরিক্রমার শাল্পীয় প্রমাণাদি সাহিত্য-পরিষৎ হইতেঁ,প্রকাশিত 'ব্রজ-পরিক্রমা' গ্রন্থে জষ্টব্য ।

২৮৪ পৃষ্ঠ, — অভিরাম গোপান। এটেতজ্ঞাবভারে ইনি এদানের অবভার ও বাদশগোপালের অক্ততম বলিরা গৌড়ীর বৈহুত্ব-সমাজে পুজিত। গ্রন্থকারের জন্মভূমি রাধানগরের নিকট খানাকুল-কৃষ্ণনগরে এই অভিরাম গোল্পানীর পাট আছে। অভিরাম-লীলামুতে ইঁহার চরিতাখাাগ্রিকা বিবৃত হইরাছে।

২৯৫ পৃষ্ঠা,—কুককেত। আব্যাবর্জের সর্বাপেকা প্রাচীন পুণাস্থান। এই জন্ম ইহার একটু বিশেল পরিচয় দেওয়া হইল। পুর্কালে কুক নামক রাজ্যি এই ক্ষেত্রের কর্মণ করিয়াছিলেন, এই নিমিত্ত ইহার নাম কুককেত্রে ইইয়াছে।

> "পুরা চ রাজ্যবিবরেশ ধীমতা, বহুনি বর্ধাণ্যমিতেন তেজদা। প্রকৃষ্টমেতৎ কুরুণা মহাজুনা, ততঃ কুরুক্কেঅমিতীহ প্রথে।"

> > (ভারত, শলা, ৫৩/২)

খংগদীয় ঐতবেদ্ধ-ব্রাহ্মণ ৭।০০, শুক্ত বন্ধুর্বেদীয় শতপথ-ব্রাহ্মণ
১)।৫।১।৪, কাত্যাদ্দন-শ্রোতস্ত্র ২৪।৬।৪, পঞ্চবিংশ ব্রাহ্মণ,
শান্ধাদ্দন-ব্রাহ্মণ ১৫।১৬।১২, তৈত্তিগীয়-আরণ্যক ৫।১ প্রভৃতি
বৈদিক গ্রন্থেও কুরুক্তেরের উল্লেখ আছে। শতপথ-ব্রাহ্মণের
মতে এখানে দেবগণ বক্ত করিতেন,—

"কুক্লক্ষেত্ৰেহমী দেবা ৰজ্ঞং তন্বতে।"

( শন্তপথ ব্রাণ, ৪।১।৫।১৩ )

ইহার অপর নাম সমস্তপঞ্চ । মহাভারতে লিখিত আছে,—

শ্রজাপতেরুত্তরবেদিরুচ্যতে সনাতনী রাম সমস্থপঞ্জম্। সমীজিরে বত্র পুরা বিবৌকসো বরেশ সত্রেশ মহাবরশদাঃ ।"

( भनाभर्त, १०) )

দীমা,---

"উত্তরেণ দূৰকতা। যক্ষিণেন সরস্বতীমূ।
বে বসন্তি কুক্সেক্তে তে বসন্তি ত্রিপিষ্টপে।
ব্রহ্মবেদী কুক্সেক্তাং পূণাং ব্রহ্মবি-সেবিভম্।
তরম্ভকারস্কক্তার্বন্ধবার স্বাম্থ্যবালাঞ্চ সচকুক্ত চ ।"

কুৰুক্তে -তীৰ্থ-নিৰ্ণৃত্ব গ্ৰন্থের মতে—কুৰুক্তে ক্রের ঈশান কোণে
,তরম্বক বা রত্বক্ষ। বাযুক্তাণে অরম্বক, নৈগত কোণে কপিল (ইহার নিকট রামহ্রদ) এবং অগ্নিকোণে মচকুক অবস্থিত।

মংশিতারতোক্ত তর্ম্বক এখন 'রতনবথ' নামে প্রসিদ্ধ। ইহা সরস্বতী নদী-তীরবর্ত্তী পিপলি নামক স্থানের সন্নিকট।

জরন্ত্রকের বর্ত্তমান দাম বাহের, কৈথল গ্রামের উত্তর-পশ্চিমে অবস্থিত।

রামহদ ও <sup>®</sup>ক্ষিলাতীর্থ ঝিন্দের ২॥ ক্রোশ দক্ষিণ-পশ্চিমে বর্ত্তমান রামরায় নামক স্থানে অবস্থিত।

মচজুক বর্তমান শিল্প নামকু স্থান, ইহা পাণিপথ ও বিলের ঠিক মধ্যতলৈ অব্স্থিত।

উপরোক্ত কান-নির্দেশামুসারে কুরুক্তেরের ভূ-পরিমাণ এইরূপ নির্ণীত হয়.—

পূর্ব্বে তরন্ত্বক হইতে মচকুক ... ২৭ কোশ।
পশ্চিমে রামহন হইতে অরন্তবক ... ২০ ,
উত্তরে অরন্তবক হইতে তরন্তবক ... ২০ ,
দক্ষিণে মচকুক হইতে রামহন ... ১২॥ ,
কুক্ষক্রেনাহান্ম্যের মতে উক্ত সীমার মধ্যে ৩৬৫টা তীর্থ
অবহিত । \*\*

কুকুক্ষেত্রের পরিমাণ বাদশ যোজন বা ৪৮ ক্রোশ।

 আবিপ্রাচীন ৩২টী তীর্থের মাহাত্ম্য মহাভারতে এইরূপ বর্ণিত আছে—

আপগা—(বর্তমান ছোটল নদীর একটী শাখা) তী্র্থ-এমণে আপগরা বা অপগরা নামে পরিচিত। খুগেদে এই নদী 'আপরা' নামে বর্ণিত হটবাচে।

"নিছা দংশ বর আ পুৰিব্যা ইলায়াপদে হানিতে অহাং।
দুববত্যাং মামুৰ আগনানাং সরস্বভাং রেবদমে দিবীছি।"
( বক. ৩২৩০)

হে অগ্নি! স্থানন লাভের আশায় ইলাক্ষণ পৃথিবীর উৎকৃষ্ট হানে তোমাকে রাখিতেছি। তুমি দৃষ্বতী, আপরা ও সরস্বতী-তীরস্ত মন্থ্যোর গৃহে ধনশালী হইরা দীপ্ত হও।

অধিকতর বিশ্বরের বিষর এই বে, ঝথেদের উক্ত মন্ত্রে 'পৃথিবী', 'ইলাম্পদ', 'স্থদিন', 'জহং', 'দৃষণতী', 'মাহ্ন', 'আপরা' ও 'গরস্থতী' এই বে কয়টী শক্ত আছে, মহাক্রারতে উক্ত শক্তপ্রলির প্রত্যেক শক্তের নামে এক একটী স্থতন্ত্র তীর্থ বণিত হইরাছে: বধা.—

"ভতো পছেত রাজেলা! মানুবং লোকবিজ্জ । বল কুক্মুপা রাজন । ব্যাধেন পরণীড়িভা: ।৩৪ বিশাহ তমিন সমিন মানুবৰমুপাৰ্শভা: । ভামিন তাবেঁ নর: মাধা বজচারী সমাহিত: ।৩৫ সর্বপাপবিভ্জামা বর্গলোকে মহীরতে। মানুবল তু পূর্বেণ কোনমাত্রে মহীপতে ।৩৬ আপেনা নাম বিধ্যাতা নবী সিজ্বিবেবিভা:" "কুর্জোট্যাং ভ্রথা কূপে ব্রেক্ত্র চু মহীপতে ।। ইলাব্যক্ত তাবের তাবিং ভ্রক্তসন্তম । ।৭৬ তত্র সাঘাক্রিয়ো চ দৈবতানি পিতৃন্ধ। ন হুসতিষ্বাধোদিত বাজপেরক বিন্দতি।"৭৭ "অহক হৃদিনকৈর ৰে তীর্বে লোক্রিক্সতে। তরো: সাথ। নরব্যাস ! হুর্যালোক্ষরাধারাং।" ১১, বন, ৮৩ আঃ।

পৃথদক—( বর্ত্তমান নাম পেহেবা)। এই তীর্থ চী সর্ব্রলোক-বিথাত। ইহাতে স্থান করিরা পিড়লোক ও দেবতাগণের অর্চনা করিবে, স্ত্রী কিছা পুরুষ অক্সান বা জ্ঞানপূর্বক জন্ম-জনাস্তরে যে কেইন ১পাপকার্য্যের অষ্ট্রান করিরাছে, এই তীর্থে গমন করিলে বা মান করিলে তাহা বিনষ্ট হয় এবং অখ্যমেধের ফল লাভ করিয়া স্থর্গলোকে গমন করিতে পারে। এই মহীমগুলে কুরুক্ত্রে ভ্রত্তিপ্র প্রাময় স্থান, সরস্বতীর তীর্থ সরস্বতী নদী হইত্তেও প্রাজনক। এই পৃথদক সমস্ত তীর্থের মধ্যেও শ্রেষ্ঠতম। ইহাতে পরীর-ত্যাগ করিলে তাহার আর জন্ম বা মৃত্যু থাকে না। সনৎকুমার ও ব্যাস্করিল তাহার আর জন্ম বা মৃত্যু থাকে না। সনৎকুমার ও ব্যাস্করি পবিত্র ও প্রাময়। নিতান্ত হ্রাচার ব্যক্তিগণও স্থানমাত্রে স্থ্য সমন করিতে পারে। (বন, ৮০)৪২-৪৭)

"পূৰ দৰ্মতি থ্যাতং কাৰ্ত্তিকে যন্ত বৈ নূপ।

তথ্যতিষেক্ত কুৰ্মীত পিতৃদেবাৰ্চনে মতঃ ঃ২২
অজ্ঞানাজ জ্ঞানতো বাপি গ্ৰিথা বা পুক্ৰেণ বা।

ব্যক্তিকৰতত কৰ্ম কুতং মাতৃষ্যুদ্ধনা। ৪৩

- তৎ দৰ্কং নক্ততে তত্ৰ স্নাতমাত্ৰক্ত ভারত।
- অব্যেধ্যক চান্ত বর্গলোক চ কছতি। ৪৪
  প্রামাহ: কুফকেন কুফকেনাৎ সরবতী।
  সরবত্যাক তার্থানি তার্থেত্যক প্রাকং। ৪৫

ष्ठियः मर्ककोबीनाः रकादनगञ्जलम् । পृथं मदक स्नशांभातां देनव रवासवर्गः ठराभः । ८७ भोठः मनरक्षादान द्यारम् । स्वरं म निवरः ॥ ८०

তৈজন তীর্থ—( বর্তমান নাম উজনঘাট )। থানেখারের অর্থ্ন ক্রোল পশ্চিমে অবস্থিত। তীর্থ-ত্রমণে প্রথমণ নামে পার্টিত। এই তীর্থে ক্রন্না দেবগণ ও ধ্বিগুণের সহিত মিলিত হইরা কার্ত্তিকরকে দেব-সেনাপতি-পদে অভিষ্ক্ত করিয়াছিলেন। এথানে ক্রান-দানে অন্ত ফল হয়। (বন,৮৩৯৪-৯৫)

> "তৈৰদং বাদ্ধণ তীৰ্থ দীপ্যমানং বতেৰদ। । বত্ৰ ব্ৰহ্মাদিভিদে বৈ 'ৰবিভিন্ত তপোদনৈ: । দৈনাপত্যেন দেবানামভিবিকো শুহৰদা। তৈৰদত্ত ভু পূৰ্বেণ কুকতাৰ্থং কুকৰহ।"

পঞ্চবটী—( বর্ত্তমান "কোপর" নামক গ্রাম, থানেখর হইতে ১ ক্রোল দক্ষিণ-পশ্চিমে অবস্থিত)। ইন্তিরসংবম ও ব্রহ্মচর্ব্যা-বলম্বন করিরা এই তীর্থে বাস করিলে ব্রহ্মাদি উৎকৃষ্ট লোক-প্রাপ্তি হয়। এই তীর্থে বোগেখর নামে এক শিব আছেন, উাহাকে অর্কনা করিলে মনোভাঁষ্ট পূর্ণ হয়। (বন, ৮০)৬১-৬২)

> "বিমোচনমূণস্থ জিতমমূৰ্চিকেজিলঃ। প্ৰতিগ্ৰহকুতৈশে বিং নৰ্কেং ন পরিমূচ্যতে। ভক্ত: পঞ্চনীং গছা বন্ধচারী জিতেজিলঃ। পুশ্বেন মহতা যুক্ত: সভাং লোকে মহীয়তে ।" ৬২

ব্রন্ধবোনি—পূধ্দক তীর্থের নিকটবর্তী। ব্রহ্ণা এই তীর্থকে নিশ্বাপ করেন। ইহাতে সান করিলে ব্রন্ধলোক প্রান্তি হয় এবং সমত কুলের উদ্ধার হয়। (বন, ৮৩/৬৮-৩৯) ''বন্ধবোনিং সমাসান্ত শুচিঃ প্রবতমানসঃ।
ভক্ত মান্তা নরবাার বন্ধলোকং প্রপদ্ধতে।s
পূপান্তাসপ্তমং চৈব কুলং নান্তাক্র সংশন্তঃ।
ভক্তে। গচ্ছেত রাজেক্র তার্থং কৈলোকাবিশ্রুতম্।

মুঞ্জ ট্রা— (বর্ত্তমান পানেখর, এখানে বৃদ্ধিন ক্ত আছে।)
ইহা মহাদেবের আবাদকান। উপবাস করিরা এ স্থানে একরাত্র
বাস করিলে গাণপত্য-প্রাপ্তি হয়। এই তীর্থে এক বৃদ্ধিনী
বাস করে, ক্লাহার আর্থনা করিলে কামনাসিদ্ধি হয়। এই
মুঞ্জবঁট কুক্তকেত্রের হার বলিরা প্রসিদ্ধ। (বন, ৮০)২২-২৪)

''ওতে। মুঞ্জবটং নাম হাবোং হ'লং মহাত্মৰ: । উপোষ্য রজনীমেকাং পাণপত্যমবাগ রাও । ওঠেবে চ মহারাল ৰক্ষিণীং লোকবিঞ্চান্। মাডাভিপম্য রাভেল স্বধান্ কামাৰবাগু যাও ।"

স্থাণ্তীর্থ—( বর্তমান নাম থানেশর। ) অপর নাম মুঞ্বট। (বন, ৮৩।২২)

"ততো মুঞ্জবটং নাম স্থাণোঃ স্থানং মহাস্থনঃ।"

বাৰুণতীৰ্থ—ইহার অপর নাম তৈজ্বসতীর্থ। দেবগণ কার্স্তি-ক্ষেক্তে অভিষিক্ত করিয়া এই স্থানে সেনাপতি-পদে বরণ করেন। (ব্ন,৮০),৬৪)

স্বন্ধিপুর — কর্ত্তমান নাম অন্তিপুর। কাহারও মতে কুককেজের মহাসমরে নিহত বীরগণের অস্থি এ স্থানে রক্ষিত হইরাছিল বুলিয়া ইহার নাম অস্থিপুর। কিন্তু কুক-পাণ্ডব-পক্ষার বীরগণের মৃত্তমুহ বে কেবল এই ক্ষুদ্র প্রামে স্থিত হইরাছিল, তাহার কোন প্রমাণ পাওয়া বায় না। এই তার্থে সাম ও প্রদক্ষিণ করিলে সহত্র গোদানের ফল হয়। (বন, ৮৩),৭৫)

"তত্রোপশর্পনং কুড়া নিয়তো নিয়তাশনঃ। পোসহস্রকলং পুণাং প্রাপ্তোতি ভরতর্বভ ॥"

কুফতীর্থ-ন বর্জমান নাম কুরুধরজ। তৈজস-তীর্থের পুর্বেজ অবস্থিত। এখানে ব্রহ্মচারীও জিতেজ্বির হইরা স্নান করিলে সর্ব্বপাপ-বিমুক্ত হইরা ব্রহ্মলেইক-লাভ হয়। (বন, ৮০১৮৭)

দধীচ-তীর্থ—(থানেখরের নিকট)। এই তীর্থটি অতি পরিত্র ও পরিত্রকারী, এই স্থানে তপোনিধি শ্রুপিরা জন্মগ্রহণ করেন। এখানে মান ও দান করিলে অখনেধ-বজ্ঞের তুর্গ্য ফললাক হর এবং সরস্বতীলোক-প্রাপ্তি হয়। (বন,৮০)১৮৭-১৮৮)

এই তীর্থটীই বেদোক্ত শর্যণাবৎ সরোবর বলিয়া অন্তমিত হয়। ঋকুসংহিতায় লিখিত আছে,—

''ইন্দ্রো দধীচো শ্বন্থিভি: বৃত্রাণ্যপ্রতিক্ ত:। .
জ্বান নবতীর্থন।" কক্, ১৮৮৪১০ ।
''ইজ্কুর্মন্ত যজ্জ্বা: পর্কতেষপশ্রিত:।
ত্রিদহুর্বপাবতি।" কক্, ১৮৪১৪।

প্রতিঘদ্দি-রহিত ইক্র দধীচি ঋষির অখাকৃতি মন্তক্রের অস্থি দারা বৃত্তগণকে ৯৯ বার বধ করিলাছিলেন। গিরি-গহ্বরে লুকা্মিত দধীচির অখমন্তক পাইবার ইচ্ছা করিলে ইক্র সেই মন্তক শর্মণাবতে প্রাপ্ত হইলাছিলেন।

মহাভারত-পাঠে জানা বায়, এই দধীচের নিকট সোমতীর্থ।

"সোমতীর্থে নর: মালা তীর্থনেরী নরাধিপ:।

নোমলোকমবাগোতি নরো নাত্যক্র সংশব্ধ:।

ততো গল্পেত ধর্মজ্ঞ দ্বীচন্ত মহাশ্ধন:।

তীর্থং প্রাতমং রাজন্ পাধনং লোকবিঞ্চন্ ॥"

( वन, ৮२।১৮७-১৮१ )

তীর্থবাত্তী পোমৃতীর্থে মান করিলে সোমলোক প্রাপ্ত হয়। তৎপরে মহাত্মা দধীচির পূণ্যতম তীর্থ।

ঋুগেদেও বর্ণিত আছে,---

"বে দোক্ষদঃ পরাবতি বে অববিতি হৃদিরে। বে বাদঃ শর্মাবতি।" (ঝকু, মেডংবং)

দে সকল সোমরস অতি দূরে বা অনতিদূরে প্রস্তুত হইরাছে, অথবা দে সোম শর্ণাবুতে প্রস্তুত ইইয়াছে।

"প্ৰণাৰতি গোমমিল্লা পিবতু ব্ৰহা" (বৰ্, মাং২৩))
শ্ৰ্ণাবতে যে গোম আছে, তাহা ব্ৰুসংহারকারী ইল্ল পান করন।
সম্ভবতুঃ শ্ব্ণাবতের নিকটারে গোম ছিল, অথবা যেখানে ইল্ল গোম পান করেন, মহাভারতে সেই স্থান সোমতীর্থ বলিয়া লিখিত
হইয়াছে।

অগ্নিতীর্থ — বর্জমান নাম অগ্নিকুপ্ত। পানেখর হইতে ৭ কোশ পশ্চিমে পৃথ্দক নামক প্রাচীন নগরের পার্ষে অবস্থিত। হতাশন এই স্থানে ভ্রুমাপে ভীত হইয়া সমীগর্জে লুকায়িত হইয়াছিলেন। এই তীর্থে সান করিলে অগ্নিলোক-লাভ হয়। (শল্য, ৪৭।১৬-২২, বন, ৮৩।১৩৮)।

> "অগ্নিতীৰ্থ ক্লুতো গচ্ছেৎ তত্ৰ স্নাদা মর্বভঃ। আগ্নিলোকমবাগ্নোতি কুলং চৈব সমুদ্ধরেৎ ।"

স্থাপ্ৰট,—বদরীপাচন তীর্থের নিকটবর্তী। এই স্থানে যথা-নিয়মে স্নান করিয়া এক রাজি বাস করিলে ক্ষুত্রোক-প্রাপ্তি হয়। (ব্ন, ৮৩।১∮ঃ)

> "তত্ৰ স্নান্ধা স্থিতো রাত্রিং ক্ষকোক্ষৰাপু রাৎ। বছরীপাচনং গড়েছসিগুন্তাশ্রমং গড়ঃ।

বদরীং ভক্ষয়েন্তক কিরাকোপোষিতো নরঃ। সম্যুগ্রাদশবর্ধাণি বদরীং ভক্ষয়েত্ যঃ॥"

ইক্রতীর্থ — বর্ত্তমান নাম ইক্রবারি, থানেশ্বর .ও পেহেবার ঠিক মধ্যস্থলে সরস্বতী নদীর তীরে অবস্থিত। দেবরাজ ইক্র এই স্থানে মজামুদ্রান করিয়াছিলেন। সেই জন্ত ইহার নাম ইক্র-তীর্থ, ইহা সর্ব্বপাপনাশক। (শল্য, ৪৯০)

এথানে ইন্দ্র ভর্মাজের কন্তা শ্রুমাবতীর ভক্তি পরীকা ক্রিয়াছিলেন। (শৃল্য, ৪৮।১৮)

স্থার্থনিখারের অনভিদুরে অবস্থিত। এখন সাধারণে স্থার্থী বলে। নরকতীর্থের নিকটবন্তী। সংবতেঞ্জির হইয়া এই স্থানে গমন করিলে স্থাগোক কিছা এখালোক প্রাপ্তি হয়। (বন,৮৩)৬৮)

বলিঠাপবাহ-তীর্থ—থানেখবের নিকট। স্থাণ্তীর্থের নিকটবন্ধী। এই স্থানের প্রবাহ অতি ভীষণ। মহর্ষি বলিঠ ও বিশ্বামিত্র
পরস্পরে বৈর-ভাব ছিল। এক দিন বিশ্বামিত্র বলিঠকে তাঁহার
সমীপে উপস্থিত করিবার জন্ম সরস্বতীকে অস্থমতি করিলেন।
সরস্বতী দেখিলেন, বিষম সঙ্কট, মহাক্রোধী বিশ্বামিত্রের আদেশ
প্রাতিদালন না করিলে রক্ষা নাই। কি প্রকারেই বা মহর্ষি
বিশিঠকে আনয়ন করেন। পরিশেষে অনেক ভাবিয়া চিন্তিয়া
বলিঠের নিকট উপস্থিত হইলেন এবং অতি কাতরভাবে
আভোপাস্ক সমুদার নিবেদন করিলেন। মহর্ষি বিশিঠ বলিলেন,—
ভক্রে! তুমি আমাকে লইয়া চল, তাহা না হইরে বিশ্বামিত্রের
হত্তে ভোমার নিস্তার নাই। সরস্বতীতীরে বিশ্বামিত্রের
করিভেছিলেন, সরস্বতী সেই সমরে বশিঠকে আনিয়া বিশ্বামিত্রের

সমীপে উপস্থিত করিলেন। বিখামিত তাঁহার বিনাশের জন্ম অস্তান্সন্ধানে প্রবৃত্ত হইলে পুনর্বার বশিষ্ঠকে বথাস্থানে লইনা গেলেন,। বিখামিত সরস্বতীর চাত্রী বুবিতে পারিয়া তাঁহাকে অভিশাপ করিলেন। দেই শাপে এক বংসর পর্যান্ত সরস্বতীর জল শোণিত হুইয়াছিল। এইরূপে বীশিষ্ঠাপবাহ হইল। (শল্য, ৪২ আ:)।

কৌবের ত্বীর্থ বর্তমান নাম ক্বের, থানেখরের নিকট।
মহারা ক্বের এই তীর্থে তপস্যা করিয়াছিলেন, তাহাতেই তিনি
ধনাধিপতি ও মহাদেবের সথা হইয়াছেন। এই স্থানে ক্বেরের
একট মনোহর কানন আছে। সমস্ত দেবগণ এই স্থানে ক্বেরের
অভিবেক করিয়া তাঁহাকে পূষ্পক রথ প্রদান করিয়াছিলেন।
(শলা, ৪৭২২-২৪)

বদরীপাচন তীর্থ—থানেশ্বর হইতে ১৮ ক্রোশ ও পৃথ্দক
হইতে ১১ ক্রোশ পশ্চিমে, বের নামক গ্রামস্থ সরস্বতীতীরে।
এথানে অক্টাপি বিস্তর বদরীবন দৃষ্ট হয়। মহর্ষি ভরনাজের
শ্রুবাবতী নামে একটি কল্পা ছিল। শ্রুবাবতী ইক্তকে পতিত্বে
বরণ করিবার অভিপ্রাহ্নে ঘোরতর তপদ্যা করেন। তাঁহার
তপদীর সম্ভই হইরা দেবুরাজ বশিটের মুর্ত্তি ধারণ কারয়া তাঁহার
নিকটে উপস্থিত হইরা বিললেন,—"স্থালরি! আমি তোমাকে এই
পাঁচটি বদরীফল প্রদান করিতেছি, তুমি পাক করিয়া প্রস্তুত কর।
আমি আদিতেছি।" শ্রুবাবতী তাঁহার আদেশে বদর পাক
করিতে আরক্ত করিলেন। দিবা অবদান হইল, লোহার বদর
কিছুতেই দিদ্ধ হইল না। শ্রুবাবতী বে সকল কাঠ সংগ্রহ
করিয়াছিলেন, তাহা ত্রাইল। শ্রুবাবতী চিন্তিতা হইলেন।

পরিশেবে আপনার হস্ত-পদই কাঠ করিয়া পাক করিতে আরম্ব করিলেন। ইন্দ্র সাতিশর সম্ভই হইরা আপনার মূর্ভিতে পুনর্বার উপস্থিত হইলেন এবং বলিলেন,—"শ্রুবাবতি! আমি ভোমার প্রতি সম্ভই হইয়াছি। এই স্থান "বদরীপাচন তীর্থ" বলিয়া বিধ্যাত হইবে, তোমারও অভীই সিন্ধ হইবে।" ইন্দ্র প্রস্থান করিলেন ও অনতিপরেই শ্রুবাবতীর পাণিগ্রহণ করিলেন। (শল্য, ৪৮ আঃ)

রামতীর্থ—থানেখরের নিকট ইক্রতীর্থের অনভিদুরে অবস্থিত।
মহাত্মা পরশুরাম একবিংশতিবার পৃথিবী নিঃক্রির করিরা এই
স্থানে শত অর্থমেধ-যজ্ঞ সমাপন করেন, সেই জ্বন্ত ইহা রামতীর্থ
নামে থ্যাত। এ স্থানে স্নান-দান করিলে অনস্ত কল হয়।
(শল্য, ৪৮।১৮)

যমূনাতীর্থ—এই তীর্থটির কোন সন্ধান পাওরা বার নাই, বোধ হয়, লুপ্ত হইয়াছে। মহর্ষিগণ এই তীর্থকে অর্থহার বলিয়া বর্ণন করিয়াছেল। মহারাজ ভরত এই স্থানে অর্থমেধ-বজ্ঞের অস্থচান করিয়াছিলেন, তাহাতে তিনি সসাগরা পৃথিবীর আধিপত্য লাভ করেন। মকত রাজাও এই স্থানে মজ্ঞ করেন। এ স্থানে মান করিলে সমগ্র পাপ বিনই হয় ও পরিণামে সদ্গতি লাভ হয়। যমূনাতীর্থে জলাধিপতি বেরণ সমুদ্র দেবগণের সহিত মিলিত হইয়া একটি বৃহৎ বজ্ঞের অস্থচান করিয়াছিলেন। সেই সময় দেবগণের সহিত অস্থরকুলের ঘোরতর সংগ্রাম ইইয়াছিল। (বন, ১২৯০)-১৭)।

একরাত্তর্থ — ধানেখরের নিকট। এ স্থানে মিঠত সত্যবাদী হইরা একরাত্তি বাপন করিলে ব্রহ্মলোক-লাভ হয়। (বন, ৮০/১৮৩) সোমতীর্থ—সোমতীর্থ ছুইটি। একটি সথ সারস্থতের নিকট- বর্ত্তী, অপরটি দধীচি-তীর্থের অনতিদ্রে অবস্থিত। উভর তীর্থে ুলান করিলেই চক্রলোক-আধি হয়।

সরস্থী-সম্ম—এই হালে চৈত্র মাসের শুক্লা-চতুর্পশীর দিনে ব্রক্ষাদি দেবগণ, তপোধন ও মহর্বিগণ আগমন করেন। সরস্থী-সম্মনে মান করিলে বহুতর স্থব্দান্ত হয়। তীর্থসেবী সকল পাপ হুইতে সুক্তিলাভ করিয়া ব্রন্ধলোকে সমন করেন। (বন, ৮২।২৫-২৭)

স্থতীর্থ-প্রক্ষাণর্ধের নিকটবর্তী। এইহানে দেবগণ ও পিতৃগণ সর্বাদা উপস্থিত। স্থতীর্থে দেবগণ ও পিতৃলোকের অর্চনা করিলে অখনেধ-বজ্ঞের ফল ও পিতৃলোক্-প্রাধি হয়। (বন, ৮৩)৫০-৪৪)।

বৃদ্ধক তিবঁ—থানেখরের নিকট। কুণিগর্গ নামে এক মহরি তপোরতা একটি মানদী-কল্পার অন্তি করেন। কল্পাটী আপনার অল্পুরুপ পতির অভাব দেখিরা এইস্থানে তপক্তা আরম্ভ করিলেন। ক্রমণঃ তাঁহার বার্দ্ধকা উপস্থিত হইল, চলিবার পাক্তির অভাব হইল। তখন পরলোকগমন করিবার মাননে কলেবর পরিত্যাগ করিতে কুতসভল্পা চইলেন। এই সমরে নারদ উপস্থিত হইলা বলিলেন, "কল্যাণি! অনুঢ়া কল্পার সন্পতি ইইবার সভাবনা নাই, তুমি কিল্পপে পরলোকগমন কলিকেশ্প বৃদ্ধা-কল্পা ভিত্তিতা হইলোন এবং বলিলেন, বৃদ্ধি ক্রেকে স্থামার তপস্যার আর্দ্ধাণ প্রালান করিব। শৃদ্ধিবান বৃদ্ধা-কল্যার পাণিএছণ করেন। বৃদ্ধান করিব। শৃদ্ধিবান বৃদ্ধা-কল্যার পাণিএছণ করেন। বৃদ্ধান করিব। শৃদ্ধিবান বৃদ্ধা-কল্যার পাণিএছণ করেন। বৃদ্ধান করিব। তাহার সহবাদ করিবা কলেবর পরিভাগর করিলেন। সেই হইতে এই জীর্থের "বৃদ্ধকলক্তিনীৰ কলেবর পরিভাগর করিলেন। সেই হইতে এই জীর্থের "বৃদ্ধকলক্ত্রনীর বুইলাছে। বিশ্বা, ৪২ আঃ)

-

গলাইদ— (বর্তমান নাম গলাতীর্থ, নাগ্ছ হইতে ও কোশ দক্ষিণ-পশ্চিমে ছসেন নামক গ্রামে অবস্থিত) এথানে লান করিলে অর্থনোক-লাভ হয়। (বন,৮৩/১৭৭)

পবনহদ—(বর্ত্তমান নাম পবনাব, ছোটালি নদীর তীরে)
এই হ্রদে বর্ধানিয়নে স্থান করিলে বায়ুলোক-প্রাপ্তি হয় এবং
বিষ্ণুলোকের অনির্ব্বচনীয় স্থুওভোগ হয়। (বন, ৮৩)৫)

"পৰনস্ত হলে স্নাড়া মক্ষতাং জীৰ্থমুড্ৰং। তত্ৰ স্নাড়া নৱব্যাত্ৰ বিকুলোকং মধীরতে ৮ -

অমরত্রদ—( বর্ত্তমান নাম অমৃতকুপ, থানেখর হইতে ৫ ক্রোশ দক্ষিণ-পশ্চিমে চন্দলান গ্রামে অবন্ধিত ) এ স্থানে সান ও ইন্দ্রের পুজা করিলে স্বর্গলোক লাভ হয়। (বন,৮৩)১০৫)

> ''অসরাণাং হ্রদে স্নাড়া সমভ্যর্চ্চামরাধিপং। অমরাণাং প্রভাবেন বর্গলোকে মহীবতে ঃ"

নরকতীর্থ-তীর্থ-ভ্রমণে 'অনরক' নামে পরিচিত। বর্ত্তমান নাম নরকতীর্থ বা অনরক, থানেশর হইতে এক ক্রোশ দক্ষিণে, সরস্বতী-তীরে। ব্রহ্মা, নারারণ প্রভৃতি দেবগণের সহিত এইস্থানে অবস্থিতি করেন। তীর্থবাজী এই স্থানে স্থান করিয়া ছুর্গতি হইতে মুর্জ্জ 'ইইরা থাকেন। এথানে বিশেশর, নারারণ ও রুদ্রপত্নী দেবীর অর্চনা করিলে বিষ্ণুলোক-প্রাপ্তি হয়। (বন, ৮৩৭১-২০)

ব্রন্ধতীর্থ—বর্তমান রসাপু প্রামে অবস্থিত। কভাতীর্থের নিকটবর্তী। ইহাতে মান করিয়া নীচবর্ণও ব্রাহ্মণম প্রাপ্ত হন। ব্রাহ্মণ মান করিলে তাঁহার সম্পতি হয়।

সর্বন্দেরতীর্থ-১ফলকীরনের মধ্যবর্ত্তী একটি তীর্থ। ইহাতে দ্বান করিলে সহস্র গৌ-দানের ফল হয়। দেবগণ এই স্থানে বজের ০ অন্নষ্ঠান করেন বুলিয়া ইহার নাম সর্বদেবতীর্থ হইরাছে। (বন,৮৩৮৭)

কুককেট্রের অন্তর্গত উপরোক্ত তীর্থগুলি ব্যতীত মহাভারতে অম্বাজন, অধুমতী, প্লারম্ভক, অরুণাসঙ্গম, অদ্ধিকীল, অশ্বিনী-তীর্, আদিত্যতীর্থ, একহংসতীর্থ, ওববতী, ঔশনসতীর্থ, কলাশ্রম, কপিলাতীর্থ, কলসীতীর্থ, কাম্যকবন, কারশোধন, কারবপন, কাশীখরতীর্থ, কিন্দত্তকুপ, বিন্দান, কুঞ্চীর্থ, কুলুম্পুন, কত-শেচ. কণিলকেনীরতীর্থ, কোটিতীর্থ, কৌলিকীসক্ষম, গোভরন, জন্নতী, ত্রিবিষ্টপ, দশাখমেধ, দৃষদতী, দেবতীর্থ, নাগতীর্থ, নাগোডেদ, পঞ্চনদতীর্থ, পাণিথাত, পরীণহ, পারিপ্লব, পুঞ্জরীক-छीर्थ, श्रृकंत्रछीर्थ, शृथिबीछीर्थ, कनकौछीर्थ, मक्ष्पक, मधुविन, মধুঅবতীর্ধ, মাতৃতীর্থ, মিশ্রকতীর্থ, মৃগধ্ম, বাবাত চীর্থ, বকাশ্রম, রামহদ, রেণুকাতীর্থ, লোকোদ্ধারতীর্থ, বটতীর্থ বা বটাশ্রম, বরাহতীর্থ, বংশমূল, বামনক, বিশামিত্রতীর্থ, বিষ্ণুপদ, বেদবতী, বৈতরণী, ব্যাস্বন, ব্যাস্থলী, বন্ধাবর্ত্ত, শন্ধিনী, শত্রাবর্ত্ত, শতসহস্ত, শালিহোত, শীতবন, শীতীর্থ, খাবিলোমাপহ, সলিহতী, সপ্তদারস্বত, সরক ও সর্পদেবী তীর্থের মাহাত্ম্য বর্ণিত আছে। ( বৰপৰ্বা, ৮৩ অধ্যায় )

উপরোক্ত তাঁর ও পুণাস্থান বাতীত নারদ-পুরাণে উপবিভাগ-থণ্ড ৯৪ ও ৬৫ অধ্যারে মাধবাচার্য্য-বিরচিত কুরুক্তেএ-মাহাত্ম্য, রামচক্রণ সরস্বতী-প্রণীত কুরুক্তেএতীর্থ-নির্ণয়, কুরুক্তেএ-রত্নাকর ও ভটোক্লিকিত-শিব্য রুষ্ণদন্ত-রচিত কুরুক্তেএ-প্রণীপ প্রভৃতি প্রছে আরও অনেক তীর্ণের বিবরণ লিখিত হুরুদ্ধে ত্রহারে, তাহার অধিকাংশ অপ্রাচীন ও আধুনিক। তন্মধ্যে কুরুক্তে-মুদ্ধে নিহত বীরগণের নামান্থসারেও বর্তমান অনেক তীর্থের নামকরণ হইরাছে। এথনও কুরুক্তেত্রের সীমা-মধ্যে এই সকল তীর্থ আছে।

৩১২ পৃঠা—"রাজা রগজিৎ সিংহের শুরু নানকের এক গদি
আছে।" গ্রন্থকার এথানে শিধদিশের ধর্ম্ম-প্রবর্ত্তক শুরু
নানককে মহারাজ রগজিৎ সিংহের শুরু মনে করিরাছেন,
বাত্তবিক তাহা নহে। ১৭৮০ খুটাব্দে ২রা নবেম্বর পঞ্চাবকেশরী
রগজিৎ সিংহের জন্ম এবং ১৮০৯ খুটাব্দে ২৭শে জ্ন তাঁহার
মৃত্যু হয়। তাঁহার বহুশত বর্ধ পূর্বে ১৪৬৯ খুটাব্দে শুরু নানকের
আবির্তাব এবং ১৫০৮ খুটাব্দে তাঁহার তিরোভার মটে, এরপ
হলে শুরু নানক ও মহারাজ রণজিৎ সিংহের মধ্যে তিন শত বর্বের
ব্যবধান।

এখানে ৩ক নানক ও মহারাজ রণজিৎ সিংহের সংক্ষিপ্ত পরিচর দেওরা বাইতেছে,—

শুক্ত নানক ১৫২৬ সংবৎ বা ১৪৬৯ খুটাকে লাহোর জেলার সরকপুর তহনীলের অন্তর্গত ইরাবতী নদী-তীরত্ব তলবন্দী (বর্তমান রারপুর) প্রামে জন্মপরিপ্রাহ করেন। ইহাঁর পিতার নাম কালু। ইনি ছ্লীদিশের মধ্যে বেদি-সম্প্রদারত্ক ছিলেন। যে গৃহে নানক জন্মপ্রহণ করেন, তাহাকে "নানকানা" কদে, এখনও সুকলে সেই জানে উপাসনা করিয়া থাকে।

নানক শিখনিগের ধর্ম-প্রবর্জক। ঈশরাম্প্রহে ব্ণাসকাল হইতে তাঁহার ধর্মে অতিশর আসজি ছিল এবং ধর্মচির্ডা-বিষয়ে তাঁহার প্রাণাট্য অন্তর্গা লক্ষিত হইত। ঈশর ধেঁ "একমেবা-বিতীরং" এই বিশাস অতি শিশুকাল হইতে নানকের ক্ষয়ে বৃদ্ধান্য হইয়াছিল। সপ্তমবর্ধ বরসে নানক বিজ্ঞাশিক্ষার্থ বিজ্ঞালয়ে প্রেরিত হন।
তাঁহার শিক্ষক-মহাশর ধর্মসম্বন্ধীর বে সকল উপদেশ প্রদান
করিতেন, তাহা তিনি অতি মনোবোগের সহিত প্রবণ করিতেন,
এবং সমরে সমরে ঈশ্ব-সম্বন্ধে বে সকল প্রশ্ন করিতেন, তাহাতে
তাঁহার শিক্ষকও স্থমীমাংসা কঙ্কিতে পারিতেন না। তিনি
জীবনের অধিকাংশ-সমর নির্জ্জনবাস ও ধর্মচিন্তার অতিবাহিত
করিতেন এবং সমর সময় গৃহত্যাগ করিয়া গ্রহন-কাননাভ্যন্তরে
গম্ন করিয়া স্থানীচন্তা করিতেন।

নবম বংসর বয়সের সময় নানকের পিতা তাঁহাকে উপবাতধারণ করিবার ব্যবস্থা করিলেন, উপনয়নের পূর্ব-কর্তব্য অন্তঠানের পর প্রোহিত নানককে উপবীত ধারণ করিতে আদেশ
করিলে নানক উপবীত-ধারণে তাঁহার অবস্থার কিছুমাত্র উন্নতি
হইবে না বলিয়া নিরস্ত করেন।

নানকের পঞ্চদশ বংসর বয়ঃক্রেমের সময় উাহার পিতা 
তাঁহাকে দোকানদারের কার্য্য শিখাইবার জক্ত ৪০ টাকা দিয়া 
লবণ কিনিতে পাঠাইরা দেন। কিন্তু নানক পথিমধ্যে একদল 
কুধার্ক্ত ক্ষকির দেখিরা তাহাদিগকে ঐ সমস্ত টাকা দিয়া খাদ্যদ্রবাণ কিনিরা ভোজন করান। ইহা দেখিরা তাহার সলী ভূত্য 
তিরক্কার ক্ষরিলোঁ তিনি বলিয়াছিলেন, "আমি বাহা খরিদ 
করিলাম, পরজ্ঞরে ইহার উপসম্ব ভোগ করিব। মন্ত্রের সহিত 
ক্রেম-বিক্রেরে যে লাভ, ঈশ্বরের সহিত ক্রেম-বিক্ররে তদপেকা 
অধিক লাভ ১" এইরপে তিনি সমরে সময়ে ক্ষরিবদিগকে নানা 
দ্রবা বিতরণ করিতেন।

সাংসারিক-বিষয়ে নিতাও বৈরাগ্য দর্শন করিয়া নানকের

পতা তাঁহাকে যোড়শবর্ধ বন্ধদে বিবাহ-বন্ধনে আবদ্ধ করেন।
কিন্ত ইহাতেও পিতার মনোরথ সিদ্ধ হয় নাই। তিনি পুর্ফের
ভারই সকল বিবন্ধে বীতস্পৃহ ছিলেন। ইহার পর তিনি কার্যাবাপদেশে কর্পুরতলা প্রেরিত হন।

তং বৎসর বয়দে নানকের এটাদ নামক পুত্র জন্মগ্রহণ
করেন। তৎপর গন্ধীদাস নামে আর একটি পুত্র হয়। লন্ধী
দাসের শৈশবাবস্থায় নানক সংসারের মায়া ছেদনপূর্বক ককিয়বেশে দেশ-ভ্রমণে বহির্গত হন। এই সময়ে মরদানা, লহনা,
বালা ও রামদাস এই চারি ব্যক্তি তাঁহার সহচর ছিলেন। কথিত
আছে, তিনি ধর্মপ্রচারার্থ সমস্ত ভারতবর্ষ, কাবুল, পারস্য এবং
এসিয়ার অক্সাক্ত হান এমন কি মক্কা পর্যান্ত গমন করেন।

নানাথান পরিভ্রমণের পর গুরু নানক স্থীর জন্মভূমি তাগবন্দী গ্রামে প্রত্যাবর্ত্তন করিলে তাঁহার বৃদ্ধ পিতা-মাতা ও আস্মীয়-স্কল তাঁহাকে ক্ষকিরবেশ ত্যাগ করাইতে বিশেব চেষ্টা করেন, কিন্তু তাঁহারা তাহাতে ক্রতকার্য্য হইতে পারেন নাই।

নানক জীবনের শেষভাগ ইরাবতী নদীর তীরে গৃহাদি নির্দ্ধাণ করিয়া হারিয়পে বাস করিয়াছিলেন। তাঁহার গৃহে সর্বব্বাতীর দোক আশ্রম পাইত। তাহারা সকলে তাঁহাকে ধর্ম্মোপদেষ্টা নলিয়া মান্য করিত। তিনি জালদ্ধর জেলার কর্ডারপুর নপুর সংস্থাপন করিয়া তথায় ধর্ম্মালা প্রস্তুত করেন। এই স্থানে ১৫৩৮ খুটাজে ৭১ বংসর বরসে তাঁহার মৃত্যু হয়। জীবনের শেষ ৪৮ বংসুর ধুমান ৭ দিন তিনি 'শুরু' থ্যাতি পাইয়াছিলেন।

महाताक वर्गाजर प्रिःह—১٩৮० थुंडोटक व २ वा नाटक व श्रवांव-टक्न वो वर्गाकर प्रिःह कन्मधेर्ग करवन । हिन वीववव महा प्रिःटहव পুত্র। মাতার নামু মহি মণবাই। রণজিতের জন্মোৎসব-উপলক্ষে তাঁছার পিতা সমস্ত সর্জারকে আমন্ত্রণ ও দীন-ছঃখীকে বছ অর্থ দান করিয়াছিলেন। শৈশবকালে রণজিৎ কঠিন বসস্তরোগে আক্রান্ত হওরার তাঁছার একটি চুকু নই হয়। তৎসঙ্গে শশাঙ্কধবল স্থানার চিহার একটি চুকু নই হয়। তৎসঙ্গে শশাঙ্কধবল স্থানার চিহার একটি চুকু নই হয়। তৎসঙ্গে শশাঙ্কধবল স্থানার চিহার করা। পাতার জীবিতাবস্থার ১৭৮৫-খুটাকে তিনি পরিণয়স্ত্রে আবদ্ধ হন। তৎপর ১৭৯২ খুটাকে মহা সিদ্ধে পরলোক-গমন করেন। অরবয়্যে পিতার মৃত্যুহেত্ র্নজিজতের বিভাশিকার কোন স্থানারত হয় নাই। রণজিৎ ঘাদশবর্ষ বয়দে নামেমাত্র সন্ধারপদে অভিষক্ষ হন; এই সময়ে তাঁহার জননী, রাজমন্ত্রী ও দেওয়ান কর্তৃ ক নাবালকের অভিভাবিকা নিয়োজিতা ইইয়ারাজকার্য্য পরিচালনা করিতে খাকেন। তৃৎপরে তিনি সপ্তদশ বর্ষ বয়দে সহত্তে রাজ্যশাসনভার গ্রহণ করেন এবং ক্টনীতি, বৃদ্ধিকোশা ও উল্পান্তরের একছত্ত্রী রাজা হন।

১৮০ খুটান্দে রণজিৎ অব্ প্রভৃতি নানাস্থান জয় করেন।
ইহারই অলকাল পরে বৃটিশ গবর্ণমেন্ট সহস্রাধিক টাকার উপটোকন ও মিত্রভাস্টক পত্র দিয়া দৃত প্রেরণ করেন। রণাঞ্জিৎ
অতি সমান্ধরের সহিত্য বৃটিশদ্ভকে গ্রহণ করেন এবং উপটোকনের
বিনিময়ে অরাজ্যোৎপন্ন মূল্যবান বছজব্য বৃটিশ গবর্ণমেন্টকে
উপহার প্রেরণ করেন।

১৮০১ শুট্টাব্দে রণজিৎ মহাসমারোহে দরবার করিয়া "মহা-রাজ" উপাধি গ্রহণ করেন। এই দরবারে সমস্ত সন্দার, চৌধুরী, শুম্বদার ও মান্তগণ্য দেশীর ব্যক্তিগণ উপস্থিত ছিলেন। এই দিনেই লাহোর-টাকশাল হাপিত হয় এবং মহারাজের নামাজিত মুদ্রাও প্রচলিত হয়। ইহার পর তিনি বছরাজা কর করিয়া নিজরাজ্যের , সীমা বৃদ্ধিত করেন। ১৮০২ খুটাজে নকাই সৃদ্ধার অকান সিংহের কলা রাজকুমারীর পর্কে মহারাজের এক নবকুমার ভূমিষ্ঠ হন। এই পুত্রের নাম অভাসিংহ কং ধরকসিংহ।

১৮১৩ খুষ্টাব্দে রণজিৎ সিংহ কাশীর-বৃদ্ধে বন্দীরুত শাহস্থলার
নিকট হইতে কৌশগজনে বিশ্ব-বিশ্বস্থল "কোহিছ্ব" হীরক প্রাপ্ত
হন। ১৮০০ খুষ্টাব্দে মহারাজের স্বাস্থাভক হৈতে নানাবিধ
চিকিৎসায় তিনি আরোগ্য-লাভ করেন বটে, কিন্তু পূর্ব্বের
স্তায় স্বাস্থালাভ করিতে পারেন নাই। তৎপরে কয়েক বৎসর
নানাস্থানে যুদ্ধকার্য্যে বাপ্ত থাকিয়া ১৮০০ খুষ্টাব্দে ২৭শে ভুন্
ভারিবে পক্ষাবাভরোগে দেহভাগে করেন। মৃত্যুর পূর্ব্বে তিনি
জ্যোষ্ঠপুত্র থ্ডাসিংহকে রাজসিংহাসন প্রশান করিয়া বান।

৩০০ পৃষ্ঠা, মণিকণ। গ্রন্থকার লিখিয়াছেন বে, ব্রহ্মাগুপুরাণে এই মণিকর্ণের মাহাক্ষ্য বর্ণিত হইরাছে। কিন্তু ব্রহ্মাগুপুরাণে মণিকর্ণের প্রসক্ষ পাওয়া পেল না, স্কল্পুরাণীয় হিমবংখণ্ডে মণি-কর্ণের পরিচয় আছে।

#### ত ৩৫১ পৃষ্ঠা-- রাজা সংসারচন্দ্র ।

১৭৮৫ খুটান্ধে রাজপুতরাজ সংসরিচর্দ্র বা সংসারটান্ধ কালড়া-রাজ্যে রাজত্ব করিতেছিলেন। ইতিপুর্বে ১৭৭৪, খুটান্ধে জরসিংহ নামক একজন শিথ-সন্থার কৌশক্তমে কালড়া-চুর্ব অধিকার করেন। কিন্তু ১৭৮৫ অব্যে তিনি ঐ হুর্গত গংসারচক্রকে ছাড়িরা দেন। ইহার পরে কভোচ-রাজ সংসারটাদ পূর্বপূক্ষ-গণের ভার পূনরার স্বাধীনভাবে রাজত্ব করিতে থাকেন। কালড়ার পার্ক্তীর প্রাদেশের নানা স্থানের সন্ধারগণ তাঁহাকে
কর দিতে বাধ্য হন। তিনি বধন দিখিজয়ে বহির্পত হইতেন,
তখন দুর্দারগণ সদৈয়ে তাঁহার অনুবর্তী হইতেন। প্রতিবর্বে
একবার কুরিয়া প্রত্যেক সন্দারকে রাজদর্শনে আসিতে হইত।
তিনি ২০ বংসর প্রবেল পরাক্রমে রাজদ্ব করেন। ১৮২৪ খুটাজ্বে
সংসারটাদের মৃত্যু হয়। তৎপরে তাঁহার প্র অননিক্রমটাদ
রাজা হন।

০০ং৪ পৃঠা, গোগা পীর—একজন দিছ বীরপুক্ষ। হিমালর 
হইতে নর্ম্মলটে পর্যন্ত কি হিন্দু, কি মুসলমান সকলেই এই 
মহাপুক্ষকে ভক্তি—শ্রদ্ধা করিয়া, থাকে। হিন্দুরা ইহাকে "গোগাচৌহান" বা "গোগাবীর" এবং মুসলমানেরা গোগা পীর' বা 'জাহির-পীর' বলিয়া জানেন।

৩৫ • পৃষ্ঠা, জালদ্ধর পীঠ—ইহা ৫১ পীঠস্থানের মধ্যে একটা মহাপীঠ, এইস্থানে ভগৰতীর বামস্তন পতিত হয়। এথানে ভৈরবীর নাম ত্রিপুরমালিনী ও মহাকালের নাম ভীষণ। ভগৰতীর বিশ্বমুখ মর্ত্তি এইস্থানে বিরাক্ষিতা আছেন। বধা.—

> "কালকরে বিষমুখী তারা কিছিকা পর্বতে।" (দেখী-ভাগৰত ৭৩০।৭২)

৩৮৪ পৃঠা, হস্তিনাপুর—চক্রবংশীর হস্তিনামক রাজনির্দ্ধিত নগর। মহাভারতে ইহা পাগুবদিগের রাজধানী বলিয়া কথিত আহছে। কুকক্ষেত্র-মুদ্ধের পরেও হস্তিনাপুর পরীক্ষিতের রাজধানী ছিলু!

৩৯৫ পৃষ্ঠা, সোমনাথ—বোৰাই প্রেসিডেন্সির অধীন কাঠিরা-বাড়ের অন্তর্গত জুনাগড়-রাজ্যের অন্তর্জু ক্ত একটা প্রাচীন নগর। ইহা কাঠিয়াবাড় উপথীপের দক্ষিণ-উপসাগদেরাপক্লে অবস্থিত।
সাগর-কুলে সাগর হইতে কিয়দ্বে বিশালায়তন ও উচ্চ
সোমনাথের মন্দির প্রতিষ্ঠিত। এই মন্দিরে ভগবান সোমনাথের
(শিবের) লিক্ষমূর্তি স্থাপিত আছে। সেমনাথ শিবের মন্দিরের
জন্মই এই স্থান সমধিক প্রাসদ্ধ। হিন্দুদিগের নিকট ইহা একটা
পরম পবিত্র তীর্থস্থান। এই মন্দির কোন্ সময়ে কাহা কর্তৃক
প্রতিষ্ঠিত হয় তাহা অভ্যাপি নিশীত হয় নাই।

সংবাদশবার ভারতাক্রমণকারী হংলতান মান্ধুদ ১৬শ নবার ভারতাক্রমণকালে ১০২৪ পৃষ্টাব্দে সোমনাথ আক্রমণ করিয়া সোমনাথ জয় ও বিধ্বস্ত করিয়া প্রভূত ধন-রত্ন লাভ করেন। হংলতান সোমনাথের মন্দির বিধ্বস্ত ও সোমনাথের প্রতিমূর্তি চারিথতে বিভক্ত করিলে একথন্ত মকায়, একথন্ত মদিনায় এবং ছই খণ্ড গজনীতে প্রেরিত হয়। তৎপরে মান্ধুদ গজনী বাত্রা করেন। বাইবার সময়ে তিনি সোমনাথের চন্দনকাঠনির্দ্বিত কপাট পুলিয়া লইয়া বান।

৪৪১ পৃঠা, পঞ্জোশী ও অন্তর্গ্ হ—কাশীর মধ্যত্তি দীর্ঘ ও বিস্তৃতিমুক্ত ৫ ক্রোশ স্থান লইয়া পঞ্চক্রোশী ও তন্মধ্যে সপ্তৰ্থীবরণমুক্ত স্থান অন্তর্গ্ হ। কাশীও নত্তে, কাশীতে পাপকার্য্য করিলে পঞ্চকোশীতে বিনষ্ট হয়, পঞ্চকেশীকৃত পাপ অন্তর্গ্রহে নাশ হয়।

"ৰাৱাৰস্তাং কৃতং পাপং পঞ্চক্ৰোষ্ঠাং বিনশুতি। পঞ্চক্ৰোষ্ঠাং কৃতং পাপং অৱগৃতি বিনশুতি।" • গ্ কাশীখঞ্চ)

২২৪ পৃঠা, ভাষরা (ভুমরাওন্) শাহাবাদ জেলার অর্ত্তর
একটা প্রাচীন সহর। এখানে ভুম্রাওনের রাজবংশ রাজব

করেন। ডুম্রাওনের রাজ্বগণ 'পুরার' নামক রাজপ্তবংশোদ্ভব।

ইহাঁদের পূর্বপুরুষগণ উজ্জয়িনীনগরে বাস করিতেন, তৎপরে
তথা হইতে নধ্যভারতে ছড়াইয়া পড়েন। মহারাজ সিজোন্
সিংহ স্ব্রপ্রথম বেহারে আসিয়া বাস করেন। তিনি স্বীয় প্র ভোজসিংহকৈ স্থোপার্জ্জিত রাজ্য দার করিয়াধান। ভোজসিংহের নামাঁহুলারে তাঁহার অধিকৃত জনপদ ভোজপুর নামে থ্যাত হয়।
তন্মধ্যে প্রধানবংশ আপনাদের পূর্বপ্রস্কাণ্যর রাজ্ধানী ডুমরাওনে,
এক শাধা বলাইর উ অপর শাধা জগদীশপুরে বাস করেন।

ইংরাজি ১৮১৬ খৃষ্ঠাকে ভূম্রাগুন রাজবংশোদ্ধ কর প্রকাশ বড়লাট লর্ড মার্ক ইস ক্ষক হেটিংস কর্ত্ক "মহারাজ বাহাছর" উপাধিতে ভূষিত হন। তৎপর ভূম্রাগুনরাজ মহেখরবল্প সিংহ বাহাছরের রাজগু-কালে জগদীশপুরনিবাসী ইহার জ্ঞাতি কুমার-দিংহ বিজ্লোহী হন।

# বর্ণাত্মক্রমিক নাম-স্থচী

| 7.                    |                       |                      |  |
|-----------------------|-----------------------|----------------------|--|
| ুনাম ়                | পৃষ্ঠা                | নাম                  | পৃষ্ঠা                                       |
| অ                     |                       | অভিয়াম গোণ          | বি ২৮৪                                       |
| অক্বর বাদসাহ          | L/ W•                 | অভিয়াম গোৰ          | ামী 🔍  |
| অকু রুষ্টি            | 293                   | অমৃতকুমার            | •/•  |
| অক্ষুকুমার সর্বাধিকা  | वी १/०, ६१०,          | অব্ভ রার             | ۹۵۵, و۰۰, وړه                                |
|                       | 693                   | অহালা                | २१०, ७/०, ७०७, ७७८                           |
| অক্ষয়চন্দ্র সরকার    | on/.                  | অভিকা-কাল্ন          | 1  |
| थकप्रवर्षे ।∕∙,२৮०,   | 82¢, 826, 88 <b>2</b> | অধিকাদেবী            | 933  |
| অগন্ত্যকুপ্ত '        | 7#•                   | <b>ৰ</b> ষোধা        | 10., 40, 48, 811                             |
| <b>च</b> 1रा १५       | 43                    | অরক্ষরেব             | . 3.3  |
| অগ্ৰহীপ               | (4)                   | অর্বিশ্বন            | २৮   |
| <b>অপ্ল</b> নাদেবী    | 330, 033              | অক্সগ                | <b>ં.</b> 8 • ૧                              |
| <b>অটমটে</b> ₹র       | 242                   | অগ্ৰন্শ!             | ₹1/•, <b>२०</b> ३, <b>२०४</b> , २ <b>०</b> २ |
| অটলবন                 | 34                    | অশ্বপদ               | ą,   |
| <b>অ</b> ওাবৃ         | 1/0, 30               | অষ্ট স্থীর কুৱ       | ્વર  |
| অনস্তকুমার            | 2 1/0                 | অধি                  | 8°F, €3°                                     |
| <b>चनस्र</b> প्द      | (1)                   | অসি-বাট              | 9/0  |
| অরপূর্ণা              | 88, २०), 88२          | <b>অ</b> সিকুপ্ত-ঘাট | 48   |
| অশ্রাকৃত্             | •12                   | অসি-মঠ               | ₹₫•, ₹0৯, ₹86                                |
| <b>অবিমৃ</b> ক্তবাট   | 18                    | অসি-দক্ষ             | 847  |
| <b>অবিমুক্ততী</b> র্থ | 9€                    | অহিপুরা              | •••  |
| <b>অ</b> বিমৃক্তেশর   | 88•                   | व्यश्नागिह           | 31   |
| 95)                   | (€₹)                  |                      |  |

## ' তার্থ-ভ্রমণ

| নাম               | পুটা                     | নাম                       | পৃষ্ঠ।                  |
|-------------------|--------------------------|---------------------------|-------------------------|
|                   | আ                        | আরইন •                    | 824                     |
|                   | ઞા                       | আলাউদ্দিন হোৱ             | স্ৰ ৪৮/•                |
| र्थांद्यंत्र घाटे | 28, 300                  | আলি সাহেবের               | হাওয়াধানা • ৩০         |
| আওরঙ্গদেব         | 883                      | আশধীর •                   | . 3.3                   |
| আকড়ি             | 93                       | আশাপুরী দেবী              | . 88.                   |
| আকবর সাহ          | 8₹€                      | আস্লি ইডেৰ                | 10.0                    |
| আধড়া             | 499                      | আহ্তনীয় পদ               | ર⊁                      |
| আগড়পাড়া         | e9+ '                    | •                         | • •                     |
| আপ ্রা            | <i>•⊍•</i> , <i>•</i> ≥ર |                           | ₹ •                     |
| আগ্ৰাম্           | €₹8                      | ইচলার খাল                 | 38                      |
| আৰু মীর           | 348, 368, 369, 386       | ₹हेवा                     | . 0,•, 8•8              |
| আট্কা             | <b>२</b> २               | ইটুপারা                   | <b>७/^,</b> 8२ <b>৯</b> |
| আদি-গরা           | 2,5                      | <b>रे</b> ख ठी <b>र्थ</b> | ٥٠)                     |
| আদি-মণিকৰি        | <b>41</b> 880            | <b>रे</b> खकुश्र          | 678                     |
| আদোৰী             | o •, 8••                 | ইন্দ্রপদ                  | 4,9                     |
| আনওয়ার           | >>5                      | रे <b>ल १</b> इ           | <b>0</b> ,/•, ৩9৮       |
| আনন্দ-কানন        | 82                       | <b>हे</b> त्सुबढ़         | ۵)،                     |
| আনদকুমার স        | ৰ্কাধিকারী ৫, ৫৭১        | ইমামগঞ                    | 1.4., 85                |
| व्यानमो क्ख       | ₹►8                      |                           | ₹ ·                     |
| আনোর গ্রাম        | २१६                      |                           | <b>अ</b> •              |
| <b>ভাগগা</b>      | • •€                     | ঈশ্বরচন্দ্র কণ্ডবি        | ٠, ١, ١, ١              |
| জাবজো             | 896                      | देवद्रहतः (वाव            | *1*                     |
| আবস্থ্য প্ৰ       | २৮                       | ঈশরচক্র বিদ্যাস           | াগর শে                  |
| আবাহনী পদ         | २৮                       | नेपत्रहत्त मिज            | ., . 4.                 |
| আসবাস             | २।•, २१३, ७३७            | ইশ্রী নারায়ণ             | রার বাগাহুর (রাজ?)      |
| আয়াৰ ঘোৰ         | 1 <b>3</b> F3            |                           | 824, 846                |
|                   |                          |                           |                         |

| নাম                     | ?                   | পৃষ্ঠ1       | নাম                    | नुहे।             |
|-------------------------|---------------------|--------------|------------------------|-------------------|
|                         | ₹                   | • `          | अ <b>क</b> पृष्ठे      | ٠<br>٤٧           |
| st. c                   | Ŭ                   |              | এলাহ <b>াব</b> াদ      | 1,√•, 8₹          |
| উঠাথপির<br>ই———         |                     | ٤٠)          |                        | ঐ                 |
| উত্তর <b>কো</b> টী      |                     | ٧.           | 5-1                    | ·                 |
| উত্তরপাড় <b>।</b><br>_ | •                   | • 64•        | ঐরাবত-কুপ              | २৮১               |
| উত্তর-মানস              | •                   | २४, ४४४      |                        | છ                 |
| উ <b>ন্তর</b> াগণ্ড     |                     | ۶ <b>4</b> ۰ | ७४। नही                | રા•               |
| উৰককুপ্ত                |                     | ₹88          | 341 441                | 4,                |
| উদীচী                   |                     | २४           |                        | ক                 |
| উ <b>দ্ধ</b> ব-টিলা     |                     | ₹98          | কংস্টীলা               | 10, 60            |
| উন্নাত্ত                | •                   | ७३१, ७३৮     | কংস-মেলা               | ,                 |
| উপে <u>ল</u> কুমার      | <b>স</b> ৰ্কাধিকারী | e/•, »       |                        | 10,24,323,200,208 |
| উমেদচন্দ্র              |                     | रा/•, ७२১    | कश्चन-शहि              | 18                |
| উ <b>লুবেড়িরা</b>      |                     | * 77         | ক <b>খ</b> ল-ভার্থ     | 16, 323           |
| উশাৰী                   |                     | h•, er       | क हि                   | 963               |
|                         | 5                   |              | ক্ষমধন্তি<br>ক্ষমধন্তি | 5F2               |
|                         | €                   |              | ক্ৰিংহাম               | -                 |
| উৰ্ছয়েত-কুণ্ড          |                     | २६३          | কানহোম<br>কপাল-গীঠ     | 19/•              |
| <b>উ</b> ধাহর <b>৭</b>  |                     | 81./•        |                        | ;<br>967          |
|                         |                     |              | কপাল <u>ী</u>          | 482               |
| 1                       | • ৠ                 |              | কপিল-কুণ্ড             | >4.               |
| ववि-चांटें•             |                     | 98           | কপিল-ধারা              | 86.               |
| ব∫বতীৰ্ব <sup>°</sup>   |                     | 10, 96, 92   | কপিল মুনি              | . W.              |
|                         |                     |              | <b>ৰূপোলেশ্ব</b>       | ***               |
| <b>.</b> _              | এ                   |              | করলা প্রাস             | 98₺               |
| এঁড়িয়াদহ              |                     | •1•          | করণাময় ভট্টাচার্য     | j •• <b>•</b>     |
| একংল                    | •                   | N•, €*       | <b>ৰ</b> রোড়ি         | 3.3, 384          |
| eće                     |                     |              |                        |                   |

| ভীর্থ-ভ্রমণ |
|-------------|
|-------------|

| নাম                 | 981                 | নাম                      | পুঠা                                    |
|---------------------|---------------------|--------------------------|---|
| <b>ক</b> ৰ্ণখেডা    | 229,026             | <u>কাম্যকৃপ ∙</u>        | 1/•, 828                                |
| কৰ্ণপদ              | 23                  | কাম্যবন                  | ١ ١١٤, ૨٩٦                              |
| কৰ্পগ্ৰাপ           | २ १ ४               | কামাণ্যা                 | • 8>>                                   |
| <b>क</b> र्ग शावद्र | ٩                   | কাৰ্ত্তিক-পদ             | • २৮                                    |
| <b>ক</b> ৰ্ণাল      | ١٠٠٠, ٥١٠, ٦٨٥, ٥٥٤ | কালকাদেবী                |   |
| কৰ্মনাৰা            | (J., 8., e20        | কাল্না •                 | 148, 144                                |
| কলিবুগ টীলা         | ۲.                  | <b>কাপ্</b> শী           | ৩/•, ৪•৭                                |
| <b>∓ল।(বপুর</b>     | ી•, 87F             | কালবিনের <b>বা</b> ট     | e1c •                                   |
| <b>ক লিপ্ত</b> র    | <b>9</b>  /•, 80•   | কালাবাব্র কুঞ            | 598                                     |
| <b>平</b> 剪          | 969                 | কালীদহের ঘাট             | *;                                      |
| কছলগাঁ।             | ***                 | कानोपुत •                | . 3.733                                 |
| কাউড়ি              | 260                 | কালীপ্ৰদাৰ ঘো <b>ৰ</b> ৮ | /·, >h·, >i/·                           |
| কাকশিনি             | (+)                 |                          | • |
| কাগড়া              | ७, ७১৯, ७२১, ७৪৯    | কালীয় নাপ               | *5                                      |
| কাটাপুকুর           | 411                 | কালীয়-মর্দ্ধনের মেলা    | *4                                      |
| <b>কাক</b> ৰন       | २৮                  | কালেখর                   | ه(د ۱۹۵۰                                |
| কাজিকাপুর           | 34. ، ١٨٤           | কাণী                     | 1.J., OlJ., 87                          |
| কাটোরা              | 64.                 | কাশীপুর                  | २।/•, २७२, १११                          |
| কা <b>নি</b> পুর •  | 14., 82, 6.2; 6.2,  | কাগুপনাধ                 | • %                                     |
|                     | e, 1, e.r           | কাগুণণঃ • •              | • **                                    |
| কাৰ্গাট             | ***                 | কিঙ্কর অধিকারী, বং       | y 81•                                   |
| কানাগির চটি         | <b>₹</b> //•        | কিঙ্কর দর্কাধিকারী       | εh•                                     |
| <b>কান্ত</b> কুন্ত  | I√•, ••             | কিশোর রার                | 816/•                                   |
| कारवनी पत्रव        | . %                 | কিশোরী কুও               | *                                       |
| <b>কাৰ্ভাপুর</b>    | 833                 | কুঙরপুর                  | ام، وم                                  |
| কামপুর              | l₀⁄•                | কুঞ্জনাৰ                 | •)a •                                   |

| নাম                    | পৃষ্ঠা                              | নাম                      | 981                         |
|------------------------|-------------------------------------|--------------------------|-----------------------------|
| কুঞ্চবাদী              | ,<br>и•                             | কুশী                     | ١٠٠, ٥٠٠, ٢٢١, ٥١٠          |
| কু ড়ি <b>ংগ্ৰা</b> লা | ***                                 | কৃষ্ণক্ষল ভ              |                             |
| কুপপ্ৰীৰৱণ             | ٠,                                  | কুঞ্কামিনী               | 414                         |
| কুস্তীশর *             | ৩৮৪                                 | কুঞ্কুত্ত                | २१२, २৮२                    |
| কুমাদ                  | <b>ર</b> ષ્ત્ર√•ે, ૭ <b>૭</b> ૨     | কুঞ্গঙ্গা                | 18, 2.                      |
| কুমার <sup>°</sup> চটি | ٩١٠, २৪٢, २८७                       | <b>কুকগ</b> ড়           | 40. see, ser, 859           |
| কুমারদিংহ              | » ,                                 | কৃষ্ণচন্দ্ৰ ঘোৰ          | াল /•                       |
| কুমার্সামী             | 880                                 | कृषध्य पर                | 431                         |
| কুমারগাট               | <b>(</b> 9a                         | কৃষণাস বহু               | 810/0, 810                  |
| কুমুদ্বন               | <b>૨</b> ૧ૃ૨                        | কৃষ্ণনগর                 | ৫৩৯                         |
| কুন্তমেলা              | ١٠٠, ١١٠, ١٩٩, ١٨٨                  | কৃষণপুর                  | 6€                          |
| ⊈স্ভীর।                | h/•, ১0e, ১09                       | <b>কু</b> ক্ষব <i>ন্</i> | 548                         |
| কুরঞ্পদ ( ক্রে         | কপদ) ২৯                             | কুঞ্চাৰন্দ হত্ত          | 203                         |
| কুঞ্গ <b>ক্ষে</b> এ    | ₹1.00, ₹28, ₹2€,                    | কেতকী বন                 | »e                          |
|                        | २३४, ७१२                            | Corta                    | 88                          |
| <b>কুরুংবজতীর্থ</b>    | <b>₹</b> ≈ <b>9</b>                 | কেদারবাট                 | وره و ۱۷۰ و ۱۷۰ و ۱۷۰ و ۱۷۰ |
| কুৰ্মিনী               | <b>્ર</b>                           | কেবারনাথ                 | ٩,, ٤/٠, ١/٠, ١/٠           |
| কুলপী                  | 8•9                                 |                          | ह७, २७ <b>१</b> , २ह€       |
| কুলান্ত-পীঠ            | રણજ∕•                               | কেদাঃ <b>নাথ</b> বি      | া (৬)                       |
| কুলিন্দ                | ે રાજ∕∙                             | কেনারনাথ স্              | ৰ্বাধিকারী ৫৭১, ৫৭৩         |
| কুলু সহয়              | રષ/•, ર <b>ષ્ત∕</b> •, ૭ <b>૪</b> ১ | কেদার-রাজ                | re                          |
| কুবের তীর্ব            | ৩•২                                 | কেদারেখর                 | <b>া/•, ২</b> ১৮            |
| ক্শধ্বজ                | ье                                  | <b>८क्</b> भव(१व         | >.8                         |
| কুশুলানদী.             | ₹8                                  | কেশবপুর গ                | 7.8                         |
| কুশাৰৰ্ভ               | >; •                                | কেশব ব্রার               | **                          |
| কুশাবর্ত্তের ঘাট       | . 369                               | কে <b>শী খা</b> ট        | ae, 260                     |
| 2.2                    |                                     |                          |                             |

#### ু তীর্থ-ভ্রমণ

| নাম               | পুঠা                | নাৰ                                   | পৃষ্ঠা                                  |
|-------------------|---------------------|---------------------------------------|---|
| কেশেডাঙ্গা        | 165                 | . খ                                   |   |
| কেশেল             | Ŋ•                  | 4'43                                  | 30,303                                  |
| <b>কৈ</b> পলা     | ٠ ده                | च च च च च च च च च च च च च च च च च च च | 410                                     |
| কৈলাস পৰ্বভ       | रहर                 | प्रकृत<br>पहिन्नु                     | . (45                                   |
| কোকিল বৰ          | <b>ર</b> ৮ર         | याण्यू।<br>श्रान्त्र यम               | . રંકર                                  |
| কো-গ্ৰাম          | 68, 256             | ধরত্রা                                | 8.1                                     |
| <b>কোটগ্রা</b> ম  | 069, 96.            | বর <b>ু</b> ।।<br>থাকী • •            | ₹•७                                     |
| কোটবৰ             | oJ∙, 9≥•            | ৰাকা<br>ৰাগ্ডা                        |   |
| <b>ৰোটাভী</b> ৰ্ব | 18, 16, 11, 12, 248 | ৰাগ্ড়া<br><b>ধালা</b> সাহেব          | 200                                     |
| কোঠরা প্রাম       | 413                 |                                       | [ <sub>1</sub> /•, 8≽                   |
| কোতয়ক            | 41.                 | খাজুরা<br>খাদানী                      | ولايره.<br>المارية                      |
| কোতলপুর           | >>                  | ৰাণাণ।<br>ধানাকুল                     | 810. 692                                |
| কোনর              | ৩৬২                 | খানাকুল কুঞ্নগর                       | • •,                                    |
| কোলগর             | e1-                 | यामाक्त ४कनगप्र<br>वामानी             | w•                                      |
| কোরেল             | २।/•, २७८           | খুরজা<br>খুরজা                        | >J.                                     |
| কোরণি             | <b>া•</b>           | মুখল।<br>থিদিরপুর                     | 84/·                                    |
| কোররি             | 36. 363             | থোন সমূদ<br>থোসালপুর                  | 465                                     |
| কোলছেৰ            | ૧٠, <b>8</b> ১•     | Calallatia                            |   |
| কোলা <sup>4</sup> | <b>e</b> 11         | ু গ                                   | •                                       |
| कोनगा महो         | ₹€≥                 | • •                                   |   |
| ক্ষরপকা           | २०४, ७३३, ८०१, ०८८  | গঙ্গা                                 | • ২৩১                                   |
| कोरत्राह          | ৩৩৭                 | <b>গঙ্গাদা</b> র                      | . (16                                   |
| ক্ষেত্ৰপাৰ        | 284, 261, 21.       | <b>नंदक्</b> षत                       | • |
|                   | •                   | গঙ্গোন্তরী 📍                          | ` >W/•, ₹₹٩                             |
|                   |                     | গুজ করণপদ                             | 69                                      |
|                   |                     | <del>গ</del> ড় প <b>≄কো</b> ট        | 21.                                     |

| নাম                   | পৃষ্ঠা                   | নাম                              | পুঠা                         |
|-----------------------|--------------------------|----------------------------------|------------------------------|
| গড়মুক্তেশর           | o∂•. 9⊦8                 | <b>গা</b> র্গি                   | ٧.                           |
| গড়হা                 | 839                      | <b>গা</b> ৰ্গ্যতীৰ্ <del>থ</del> | 13, 300                      |
| গড়াক্ত               | ৩)•. ৪১৯                 | <u> বার্হপত্যপদ</u>              | २०                           |
| গড়ের বাট             | 272                      | পাহ হ্যপদ                        | २৮                           |
| গণেশহাট               | 18; 060                  | গিরনার পর্বত                     | ٥٠, ١٩٥                      |
| ગલન દોષ               | e) e                     | <b>পিরিধারী</b>                  | >>>                          |
| <b>গণেশ</b> জি        | 3 885                    | পিরী                             | २०७                          |
| न्या ।।ज<br>न्यानानान | * •                      | <b>ভ</b> ড়গ্ৰাম                 | ৩৮২                          |
| <b>अस्</b> थित        | ર ૧                      | শুণাকর ভারতা                     | 5 <b>ल</b> >∙                |
| গদাধর শিরোম           | િ <b>/</b> •, <b>১</b> ૭ | গুৱকাণী                          | ગષ્ય∕•, ૨૭১                  |
| গদালোক•               |                          | গুরগক!                           | २७३                          |
| •                     | 82, 820, 820, 829        | <b>শুপ্ত</b> পর্বব্              | ર•¢                          |
| গ্রসাবাদ              | ***                      | গুধিপাড়া                        | €66                          |
| পরাকুপ                | <b>રક</b> . ૭૭           | শুমান রায়                       | 669                          |
| গুয়াধা <b>ম</b>      | २ <b>०. ७१२, १</b> ७०    | শুমান সিংহ                       | 825, 820, 826                |
| श्रद्धां व            | ∘ •                      | গুরুদাস                          | *1/m/•                       |
| পরাশির                | 4>                       | গুৰু নানক                        | <b>%</b> )ج                  |
| পরাহর                 | 1-/-                     | গুরুপ্রসাম বহু                   | <b>১৭</b> ৪, ২৮১             |
| গরুটি                 | (42                      | গুরুভেদ                          | . 32•                        |
| গরুড় <b>গ</b> রা     | , ; ২√•, ₹88             | গেঁওগানির বা                     | জার ৫৭৭                      |
| গহড্ৰাল °             | 45                       | পেকারোরা                         | 80.                          |
| পাহৰ য় •বন           | 14                       | গো!                              | ৩৮                           |
| শাগর আলি              | ١٠, ١٩٥                  | গোকর্ণেগর                        | . >•8                        |
| <b>বাজিপু</b> র       | ા⊍∙, €১৯                 | পৌক্ল                            | w∕•, ७•, ७১, <b>३</b> •, २৮৪ |
| <b>গা</b> ধিপুর       | <b>e</b> ? •             | গোকুলানীস্ব                      | >0.                          |
| গারতী                 | >41                      | গোপাপীর                          | ७/•, ७१६                     |
|                       |                          |                                  |                              |

| নাম                          | পৃষ্ঠ।           | নাম                  | <b>पृ</b> ष्ठे।      |
|------------------------------|------------------|----------------------|----------------------|
| গো-ঘাট                       | ٠, ٩٩ .          | গোরকনাথ              | ७১१, ७२०             |
| গোদাৰরী পাহাড়               | 482              | গোরকপুর              | 896                  |
| গোদাৰ নী-সঙ্গ                | 869              | গোরাটাদ কওড়ি        | • ১, ২               |
| গোপালঘাট                     | 20               | পোলাচি •             | ₹₫•, ১৮२             |
| পোপালনগর                     | 413              | গে৷কামীপুর           | ¶₀/∘,₀8₩             |
| গোপালপুর 🗸 •, ২1./           | •, 38, 34,       | গোলোক চৌধুরী         | 475                  |
|                              | 80•              | গোড়ৰ আশ্ৰম          | . 222                |
| গোপালভট্ট ৮৬, ৮৮, ১          | ۶२, ۶२۶,         | গৌতম মূৰি            | २२৯                  |
|                              | 256              | গৌ-প্রচার            | ₹>                   |
| গোপাল দিংছ                   | 7+9              | পৌমুখ কুণ্ড          | >4•                  |
| গোপীশল ।                     | •, 86, 810       | গৌরহাটী '            | ;                    |
| গোপীনাথ                      | >6+              | গৌর <b>াঙ্গপূর</b>   | •                    |
| গোপীনা <b>ধ পুরন্দর ব</b> হু | 81.              | গৌরাঙ্গের পদচিহ্ন    | . >>1                |
| গোপীমোহন ঘোৰ                 | •/•              | গৌরীকুণ্ড ২১         | , २८०, ३৯०, २०६,     |
| ণোপীশ্বর মহাদেব              | 34               |                      | 130                  |
| গোৰ্বৰ্দন                    | २१८, २१६         | গৌরীপীঠ              | 82                   |
| গোবিশক্ঠী                    | २ <b>६</b> १     | গৌরীর জন্মস্থান      | २ <sub>५</sub> , २०८ |
| গোবিশক্তী                    | \$80             | <b>লৌরীশক্ত</b> র    | <b>া</b> •           |
| গোৱিন দান 🔹                  | <b>63</b>        | গ্রাউদ <b>সাহে</b> ব | ۵./۰                 |
| গোবি <del>ন্</del> দদেব      | 3.8, 3. <b>e</b> | ••                   | •                    |
| গোবিন্দ পণ্ডিভ               | . 7.9            |                      |                      |
| গোবিন্সপুর                   | 1/•, 32          |                      | ঘ                    |
| গোবিন্দরাও,                  | 670              |                      | •                    |
| গোমতী ৩৮                     | ٠, ٤૨, ٤٤٩       | ঘণ্টাভরণ ঘাট         | 18, 6.               |
| গোমা ২৬৪, ৩৪৩,               | રા/•, રાષ્ટ્ર/•  | ঘাট্∢ে≉া             | ৩)•, ৪•৪             |
| গোমুখ                        | २०১              | <b>যু</b> শ্ড়ি      | 490                  |
|                              |                  |                      |                      |

| নাম                          | পুগা                           | নাম                  | পৃষ্ঠা           |
|------------------------------|--------------------------------|----------------------|------------------|
| ***                          | ٠.                             | চাকদহ                | 469              |
|                              | U                              | <b>हां</b> नैक       | (45              |
| •<br>চক্তীৰ্থ ৪২.২           | ۹8, ٥٠٠, ٥٠٠,                  | চালাৰবাগ             | 3 J•             |
| DE 214 94,                   | • 052, 005,                    | চিত্ৰকৃট             | 822              |
| চক্রতীর্থ-ঘাট                | 98, 54, 438                    | চিত্রগুপ্তেশ্বর      | 886              |
| চক্রপুর                      |                                | চিত্ৰঘণ্টা           | 886              |
| চক্রব্যহ                     | • ২৯৬                          | চিভাম¶ি ঘাট          | 18               |
| চণার<br>•                    | • %/•                          | চিন্ধা               | <b>۱/۰, ۱۵</b> ۶ |
| চণ্ডাৰগড                     | ण/•, ७३ <b>१</b> , ४७ <b>१</b> | চিনবাস               | ٥١٠, 8٠١         |
| ठखाया गङ्<br><b>ठखीर वरो</b> | 310, 320                       | চি <b>স্ত</b> াপুরণী | o/o, 008, 000    |
| ष्ठवादन्य।<br>इक्षांनी       | • ৩।•, ৪১৬                     | চীৎপুর               | 693              |
| চতুত্জ নারায়ণ               | ٥١٦, 88٤                       | <b>চীর</b> ঘাট       | 38, 240          |
| ठपूर्वनाशश<br>हल्लकोस्ट •    | ¢1 <sub>0</sub> /•             | চেৎসিংহ              | 8 ( )            |
| চন্দ্রক্ষার দে               | 8                              | চেল্লাভারা           | ৩ ∘, 8১8, 8১€    |
| ठ±र थ्य<br>इ.स. थ्य          |                                | চোটাগ্ৰাম            | 966              |
|                              | 396                            | চোপার•               | ૨ ૭              |
| চক্ৰনাথ                      | ۹۵.                            | চোবেপুর              | **               |
| Б <u>न्</u> य <b>्रा</b>     | \",<br>9 <b>6</b> 3            | চৌড়াকুঠী            | 200              |
| চন্দ্র ভাগা                  | 806                            | চৌধ্রীর সরাই         | • 14.a, 8¥       |
| ठ <u>ज्</u> यद्वीषा          | • • 11. 938                    | চৌৰে                 | 44, 11           |
| P===1                        | ৩ •, ৪৽৬                       |                      | ·, ৩৮·, ২৮৯, ৩৯· |
| চম্বল<br>•                   | ৩,•, ৪১২, ৪১৬                  | চৌমুরিয়া            | ৩৶৽, ৩৮৯         |
| চরধা-মরখা                    | 393                            | ८ होबंदि चाउ         | • (1)            |
| চ্রণ পহিছ                    | 91/0                           | চৌষট্টি মোহাত্ত      | 66               |
| চরণাত্রিগড়                  |                                | চৌধটি বোগিনীর ঘ      | nট ৩ <b>/</b> /• |
| <b>\$</b> ানপালের ঘাট        | en                             | চৌদর                 | <br>eqo          |
| টাপার খাল ,                  | <b>\$</b> 11                   | 441-14               | - • •            |

#### তীর্থ-ভ্রমণ

| -                            | બુફા                     | ৰাম ,                    | পৃষ্ঠা                             |
|------------------------------|--------------------------|--------------------------|------------------------------------|
| চ্                           | ` .                      | জয়সিংহপুর <sup>*</sup>  | *8                                 |
| ,                            |                          | <b>জরাসংশ্বর গ</b> ড়    | ₹•, २ <b>३, €</b> 8৮               |
| <b>ছ</b> ট্ <u>ৰ</u> ত       | €88                      | জরিগ্রাম                 | રષ્ય∙, ંગ•                         |
| <b>ছাপ<b>য</b>াটী</b>        | (00                      | লক-কৃষ≄                  | ર <b>ા</b> ં, ૭કર                  |
| ছোকরাবার                     | 3/•, 393                 | <b>জনাপু</b> র           | 38, 389, 290                       |
| ছোট-ৰূলিকাতা                 | <b>ा/•, 8</b> ७ <b>१</b> | লহ মুনির আঞ              | ų (8a                              |
|                              |                          | सात्रिजी                 | . (8)                              |
| জ                            |                          | জাবট                     | २৮১                                |
| লগৎপুর                       | 294                      | জালন্ধর পীঠ              | २८, २। /•, ७८,                     |
| <b>জগং</b> শেঠ               | ***                      |                          | ۵۵۴, ۵۵۵, ۵۶۵,                     |
| লগৎসিংহ                      | ೨೨೨, ೮೨৯                 | ৰাগুলা<br>আগুলা          | • • • •                            |
| জপদীশ मदाह                   | ı√•, 8•                  | লাহানা                   | ৩ ৶•                               |
| জগৰন্বস্                     | <b>e</b> 90              | कांशनायाम                | J., 3 02, ee                       |
| জ <b>ল</b> বাহাহুর           | 896                      | ভাহৰা ঠাকুরাণী           | <b>&gt;&gt;</b> , 33>, 32•         |
| জঙ্গিপুর                     | ***, ***                 | জিয় <b>াগঞ্জ</b>        | 446                                |
| জন্মেরর বস্থ                 | 81/., 8W/.               | জিৰেট-বলাগড়             | e 4 9                              |
| জমদ্গ্রিকুও                  | >4.                      | জীবগোস্বামী              | <b>৮७, ৮</b> ٩, ३०৮, ३३२,          |
| ধয়গোপাল বন্দ্যোপাধ          | jta :e30, e36            | <b>۶</b> ۲۰,             | <b>১२১, ১२२, ১</b> २৪, <b>२</b> ৮० |
| অয়টাল •                     | 65                       | জুভানন                   | ٠ ٦٧                               |
| <b>ब</b> द्रश्री <b>ए</b> वी | . 929                    | জেলো •                   | • ,৩৫৬, ৩৬১                        |
| জয়স্তা পৰ্বত                | ۷۱)                      | জেদি-আড়া                | ***                                |
| জয়পুর ৸৵∙                   | , 3/•, 383,              | জোয়ালাজি                | , 030                              |
| •                            | 387, 390, 330            | <b>ভো</b> ৰীমঠ           | ર <b>∂•, રા•ૄકર</b> ૦કે, ર લ્ઇ,    |
| জরপুর পুৰুর                  | w∕•,                     | জোহারপুর                 | * . બ • , કરુ                      |
| জয়পুরের ঘটি দরজা            | ŋ/•, >8•                 | কৌনপুর                   | 862, 892, 8 <b>16</b>              |
| <b>ब</b> द्रशिः ह            | W/•, >•»                 | জ্ঞান <del>গু</del> ধড়ি | - >••                              |
|                              |                          |                          |                                    |

|                     |                                       |                                    | ~                           |
|---------------------|---------------------------------------|------------------------------------|-----------------------------|
| -<br>নাম            | পৃষ্ঠা                                | নাম                                | পৃষ্ঠ।                      |
| জ্ঞান বাপী          | 860,883                               | ডুমরি চটী                          | २, २১                       |
| জানসিংহ             | ર‰/•, ૭৪১                             | ডেরা গ্রাম                         | <b>७€</b> 8                 |
| ৰালাগেৰী •          | ৩১৫                                   | ডোমরা                              | ગ√•, ૧૨૪                    |
| कानामूथी -          | <sup>1</sup> २१•, ७১৪                 | ভোশ্চি :                           | રાષ્ટ્ર/•, ७৪≯              |
|                     | ঝ ·                                   | ঢ                                  |                             |
| ৰ পোন               | 3265                                  | ঢাকু <b>ৰি</b> য়া                 | २।•                         |
| বারখণ্ড             | ٠ م                                   | টি <b>ক</b> লি                     | २।/•, २७১                   |
| ঝিল্মিল্ চটি        | २,, २७४, २४७                          | ঢ়ণ্ডি গ <b>েশ</b>                 | 88, 882                     |
| <b>ब्र्</b> नी<br>• | 1•, 86, 826, 860<br>,                 | <i>.</i><br>ভ                      |                             |
| টগর সাহেব<br>টগরি   | 822, 829                              | ডপোবন<br>তথ্যকুণ্ড                 | e•, २२४<br>२४३, २८७         |
| টকারি               | ₹€                                    | তমলুকের চড়া                       | 499                         |
| টিটাগড়             | . (4)                                 | ভালগঞ্জ<br>ভালবিবির রোজা           | 8                           |
| টিরা                | وره                                   |                                    | 939                         |
| টুক সাহেব           | 492                                   | ভাক্ষ্ৰ                            | ۹ ده                        |
| টেরি,               | २ <b>२ •, २</b> २७, २२ <b>१</b> , २७৯ | ভাষাদাবাদ বা ভাষেদাবা<br>ভাষেদাবাদ | ] [• <sub>.,</sub> 8¢<br>8¢ |
|                     | <b>ঠ</b> •                            | তাঃকেশ্ব                           | 4/0, 1                      |
| ঠাকুর দাস           | er                                    | তারাকুমার কবিরছ                    | on/•                        |
|                     | _                                     | ভারাগ্রাম                          | 834                         |
| <b>3</b> .          | ড .                                   | তারাচাদ চক্রবর্ত্তী                | 819                         |
| ডুব;ৰি              | 603                                   | <b>ভারাপুর</b>                     | 82.                         |
| , ডুৰি              | 014.833                               | ভারামণি "                          | >                           |
|                     |                                       |                                    |                             |

# তীর্থ-ভ্রমণ

| নাম                    | পৃষ্ঠা                     | ata                             | • পৃষ্ঠা                           |
|------------------------|----------------------------|---------------------------------|------------------------------------|
| ভারিণীচরণ চটো          | ণাধ্যায় ১০৮               | •                               |                                    |
| তাল্বন                 | <b>२</b> १२                |                                 | <b>म</b>                           |
| তালেশ্বর-ভৈরব          | २७७                        | _                               |                                    |
| তি <b>ন্ৰ</b> খাট      | 48                         | <b>শ</b> ক্ত                    | • ৩१२                              |
| ভি <b>ন্দু</b> কভীৰ্থ  | 10, 12                     | দক্ষিণকোটী                      |                                    |
| তিলকরাম                | 8 <b>и/•</b>               | ৰক্ষিণ-মাৰ্স                    | २४, 8७, 888                        |
| ভিলভা <b>ভেশ</b> র     | 88€                        | <ul> <li>▼কিণীগ্রিপদ</li> </ul> | • •                                |
| তিধার৷                 | ১१•, ८७, ১৯৩, २ <b>•</b> € | <b>म्टक्</b> षद्र               | • २०६                              |
| <b>ত্ৰিভ</b> বানী      | ાં/•, ૧૨૭                  | দওপাণীশর                        | 88•                                |
| তিযুগ নারায়ণ          | २,, २००, २०४               | <b>मम</b> त्रिया                | 8>•                                |
| তীর্থ-ভ্রমণ            | and.                       | <b>पश</b> ीहिशप                 | • • २৯                             |
| ভীৰ্থ-মঙ্গল            | /•                         | দরিহাপুর                        | €8₩                                |
| তীর্থ-রাজ              | 10                         | দশাৰমেধ-ঘাট                     | 18, 20                             |
| ভূকনাথ                 | <i>ડાખ∙, <b>૨</b>૦</i> ૨   | দাইহাট                          | € % +                              |
| তুলনারায়ণ             | २७७                        | দাইলান                          | (9>                                |
| তুল্দী                 | b 6                        | দাউনগর                          | . OF                               |
| ত্লদীদাদের <b>খা</b> ট | وره                        | দানপুর                          | રા/•                               |
| তেওড়া                 | २१०, ७०७                   | দানাপর                          | ٠١٠, २७৪, <b>१२१</b> , <b>१२</b> ३ |
| তেজ্চাদ সম্পের         | লক বাহাছর ৫৬৫              | দাবানলকুও                       | • 24                               |
| ভেলি আড়া              | २।८०, ७७७                  | দামোদর                          | . 38                               |
| ত্ৰৈলোক্যন্থ           | ٠,5                        | দামোদরের সু                     | 4 * 277                            |
| ভোপচাঁচি               | ۹۰                         | <b>ৰা</b> রকাধী <b>ণ</b>        | 15, 10                             |
|                        |                            | দালিপটী                         | , 5, <b>%</b>                      |
|                        | থ                          | দাসগোঝামী                       | 225                                |
| बोरनस्व                | ٥.২                        | দিগক                            | (4)                                |
| পুৰগ্ৰাৰ               | ৩৫৭                        | দিপ্ৰবী                         | ۶۵۲, ۲۰۴ °                         |
| <b>₩</b> ₹ <b>₩</b>    |                            |                                 | •                                  |

| ৰাম                      | <b>१</b> हे।       | নাম                  | পৃষ্ঠা                      |
|--------------------------|--------------------|----------------------|-----------------------------|
| विज्ञी २/J•, ७)          | ٠, ځ/٠,            | ধ                    |                             |
| ગ⊬∙, કલ                  | , २३३, ७७३         | ধনডাকা               | 492                         |
| <b>বী</b> গঞাম           | ₹11, <b>₹1</b> 3   | ধরমলা                | ٩                           |
| দীননাথ চটোপাখ্যায়       | ં સ•               | ধ্রমণ                | ∘e•                         |
| দীৰেশচন্দ্ৰ সেৰ'( রার সা | হেব) ৶•            | ধর্মারণ্য            | २८, २৮                      |
| ছহ                       | >/•, >٩2           | ধামী-ভ্রাহ্মণ        | ٠.                          |
| ছুধগঙ্গ!                 | 201                | ধারাণতন ঘাট          | 98, 4.                      |
| ছ্ধলি '                  | 91 <sub>6</sub> /• | ধীরসমীর              | >>                          |
| ছুৰ্গাকু <b>ও</b>        | 884                | <b>ধোরপু</b> র       | ৩∣∙, ৪১€                    |
| ছুৰ্গাকূণ                | ٠.                 | ধৌ তপদ               | રુ, ૭૭                      |
| ছৰ্গাগুল "               | I√•, 8⊬            | ঞ্বৰাট               | 18, 18                      |
| ছুৰ্গাৰেবী               | 88                 | <u>ঞ্</u> বটীলা      | ۹۹, ۲۰                      |
| ছলাইপুর                  | ₩·, 8·             | <del>ধ্</del> ৰতীৰ্থ | 10, 16                      |
| দেওয়ান নশসুমার বহ       | >h•                | -                    | त्र                         |
| দেবপঞ                    | (6)                |                      | , 820, 808, 800             |
| দেবনারারণ                | 824                |                      | مراء الاه                   |
| দেবপ্ররাগ ১৮৮, ২২        | ११, २२७, २२४       | ন্ওয়েস্বাদ<br>নুক্ট | 818                         |
| দেৰপ্ৰসাদ সৰ্কাধিকারী (  | (ডাঃ) ৴•           |                      |                             |
| CT**                     | h/•                | নকুড়চ <b>ল বহ</b>   | ৩/•                         |
| দোলগোবিশ মিত্র • প্      | 1                  | নগর<br>              |                             |
| লোপ <b>।</b>             | 3/•, 39•           | নগরেটিগ্রাম          | o <sub>j</sub> , <b>∞≥8</b> |
| ত্রাবিড়ী                | <b>₽</b> ₹         | নৰকুমার বহ           | >>•, >>•, >>•,              |
| বৈপায়ুন হয়             | 9.2                |                      | २२•, २७ <b>१</b> ,          |
| ব্যুদশ-গোপান             |                    | নৰকুমার বহর কু       | * .                         |
| वादनवाट                  | <b>دد</b> .        | নৰপ্ৰাম              | \$P\$                       |
| वारभदन                   | •                  | नगर्गि               | 320, 328, 2Vo               |
| <b>€</b> ₹≽              | (44                | 9)                   |                             |

# ু তীর্থ-ভ্রমণ<sub>ু</sub>

| নাম                   | পৃষ্ঠা           | নাম                          | . 981                 |
|-----------------------|------------------|------------------------------|-----------------------|
| वन्द <b>न</b> पुत्र   | 113              | নাৰক '                       | રા•, જેર              |
| नमशूत                 | ৩৫৭              | নানাসাহেব গ                  | d., e., e.s, e.z,     |
| নন্দ প্ৰয়াগ          | ર∣•, <b>૨</b> ૯૧ |                              | eis, e.4, ese         |
| नमीपद                 | 88•              | ৰাভা °                       | • >>>                 |
| নবকুঞ চট্টোপাধ্যাং    | >N•              | নাভিভীৰ্                     | ٠ . جمع               |
| নবতীৰ্থঘাট            | 98               | নারদকুপ্ত                    | २१२, २६७, २१८         |
| নবৰীপ                 | € ७२ €           | না ব্ৰীষাট                   | • 0/•                 |
| নব্রঙ্গ               | ·84/•            | নারারণপুর<br><u> </u>        |                       |
| ন্বসঙ্গম              | ٠.               | নারে                         | <b>ં</b> ૧            |
| नदनभौर्ध              | २४०, ७२१, ७१३    | নিকুঞ্জবন                    | 3+3, 343              |
| <b>ৰহ্মনাদে</b> বী ২৮ | , 002, 004, 004  | নিগমবোধের ঘাট                | • 269                 |
| নরহরি চক্রবর্তী       | 3·/·             | <b>ৰি</b> ত্যাৰ <del>ৰ</del> | o/., 84., 333         |
| নরোক্তম দাস           | 201              | নিজানৰ সৰ্বাধি               | কারী <sup>®</sup> চ৸∙ |
| নশ্বদেশর              | وره, ۱۷۶۰        | নিধুবন                       | ১ <b>٠</b> ٠, ১৩২     |
| নলেপুর                | £68              | <b>ৰিম্ভলা</b>               | (63                   |
| ন বাৰগঞ্জ             | 649              | নিমাই-তীর্থের স্বাট          | (4)                   |
| <b>ন</b> ীপুর         | <b>ા</b>         | <b>ৰিমাৎ</b>                 | ₹• 5                  |
| ৰদরাই                 | € •              | নিরাম <b>তপু</b> র           | 1/0, 39, 34           |
| নস্রাইরের বাল         | 267              | नि <b>द्रश्चनो</b>           | . 826                 |
| নাগকুও                | >6+, २€>         | निर्द्शानी 📍 🕯               | 4 2.6, 824            |
| নাগর-মল               | 966              | निर्दर्श                     | * >*<                 |
| <b>নাগরী</b> গা       | 91. 8.3          | নি <b>শ্বা</b> নী            | ું ૨٠૯                |
| নাট-আল                | 8•9              | <b>বি</b> ন্তারিণী           | _ {                   |
| নাদন্বাট              | ***              | बोन वर्ष्ट चंद्र             | , 7I+, §88            |
| ৰাগাওৰ                | ₹14. 679' €80'   | নীলগলা                       | 249                   |
| নাৰনা                 | 989 رپ           | नोनशका                       | 210, 224, 228         |
|                       |                  |                              |                       |

| 4              | Ä              | পৃষ                     | নাম              | পৃঠা          |
|----------------|----------------|-------------------------|------------------|---------------|
| નોનબ           | ৰ্বিত          | ર્ગા•, <b>૩</b> ૦૦, ૨•૬ | পদ্মা            | ***           |
| নীলাহ          | র মুখোপাখ্য    | e eld.                  | পরওলঞ্জাম        | 23., 086, OFB |
| नोत्नर         | •              | 7#5                     | পরদেশিঙ!         | ৩,٠           |
| মুরপুর         |                | *089, €99               | পরগুরামের মন্দির | રાઈ રાજ્ય છે. |
| न्ठइ           | গৌকুল •        | in/•, +>                | পরমার্থী         | २-६           |
| <b>ৰূ</b> সিংহ | -চভূৰ্দশীর মে  | al ore                  | প্ৰমানন্দৰামী    | 88>           |
| मृ भिः इ       | टमव            | ****                    | পরাপর            | 40)           |
| নেখে!          | <b>a</b> .     | ٥/.                     | প্রীকিভ কুমার    | •             |
| •<br>নেহান     | া <b>দিং</b> হ | રા⊿•                    | পরেশ <b>নাথ</b>  | ۲)            |
| रेमनिय         | stन            | र।/•, २७२, २७०          | পরেশনাধের পাহাড় | 1/•, २•       |
| निभि           | 191            | ٠ الماء و و             | প্ৰন-সংগ্ৰহ      | 26)           |
|                |                |                         | পশ্বন্দৰ হ'ট     | 20, 550       |
|                |                | ተ                       | পাধরহাটা         | ***           |
| পথ <b>দ্রা</b> |                | 38                      | পাটৰ চটি         | २,, २०७       |
| পঞ্ৰ           | गंडे           | V•                      | ণাটৰদেবী         | 40.           |
| প <b>ক্তে</b>  | ननो<br>ननो     | 187                     | ণাটনা            | ٥١٤٠, و١٩     |
| পঞ্চ           | rl             | <b>28</b> £             | ণটিনীমল          | 60, 106       |
| পঞ্জী          |                | 88                      | পাটলদেবী         | 46, 63, 306   |
| পঞ্চৰ          |                | 3(+, 320                | পাটুলী           | (4)           |
| পঞ্চৰ          |                | ۸.                      | পাড়             | hd., ses      |
| পঞ্চান         | নপুর           | · 9r                    | পাৰারঘাট         | (+)           |
| গড়াই          | _ `            | २३७                     | পাও কেশ্বর       | ٩٠, २३٢, २८२  |
|                | Pil,           | 3/•, 369                | পাও দাস          | ₹ •           |
| <b>∜</b> ড় রা | •              | ود 8 ، او               | পাৰিষাট          | २৮८           |
| भरक्रा         |                | الاه الاه               | ণাণিপৰ           | ٠,٠٠٠         |
| প্দমি          |                | √•, € <b>₹</b> 8        | পাণিহাটী         | e1.           |
|                |                | ,                       |                  | • • •         |

# ' তার্থ-ভ্রমণ

|                    |   |                    | •                        |
|--------------------|---|--------------------|--------------------------|
| নাম                | পূচা                                    | নাম                | 981                      |
| পাতালগন্ধা         | <i>د</i> ره                             | পুলিন •            | >                        |
| পা <b>তালেব</b> র  | ٥١٥, ٥٤٥                                | পুক্র              | 31                       |
| পাত্রসায়ের        | 7.0                                     | পুকরবাট            | >4.9                     |
| পাৰচাকি            | ₹ 30 •                                  | পুদরতীর্থ 📍        | 468, 54.                 |
| পানসিউলি           | 616                                     | পুৰুৱের পাণ্ডা     | 719                      |
| পালা               | 1., 9.0                                 | পৃষয়-ভাস্কর       | 678                      |
| পারকলি             | • • • •                                 | প্ৰাদিগ্ৰায        | રાઇ•, રઢ•                |
| পারমতী             | ₹₩/•, ७७•                               | •                  | ৩৬৬                      |
| পাৰ্কভীপদা         | રષ∕∙, ૭૭૭                               | পূৰ্ণমাদী          | <b>১</b> ২৩, ১২১         |
| পালপুর             | 8२•                                     | পৃথ্দকতীৰ্থ        | 286                      |
| পিঠু               | <b>२</b> ¢>                             | পূৰ্বালার কেলা     | 6/•,.063                 |
| পিথোরা-কা-বি       | rলা <b>৩</b> /•                         | পৃথ্যবাজ           | ٠, ٠                     |
| পিপড়কু <b>ঠী</b>  | ١٠, ١٠, ١٤٩, ١٤٥                        | প্রতাপনারারণ       | * sw/•                   |
| পিপ <b>লি</b>      | રાતા. ૭/٠, ૭٠૯, ૭૯૯                     | প্রতাপপুর          | <b>g</b> ₹•              |
| পিপুড়েশ্বর        | 92,.90                                  | প্রতাপাদিত্য       | nd., 284                 |
| iপপুলেশ্বর         | 10                                      | প্ৰদ্ৰ             | 878                      |
| পিক্সন             | 810                                     | প্রাগ              | 1-                       |
| পীরপৈতি            | ***                                     | প্রাপ-খাট          | 18, 1>                   |
| পুই <b>জু</b> লি ( | • | <b>এ</b> য়াগভীৰ্থ | 80, 96, 522, <b>3</b> 28 |
| পুছরি              | . २१६                                   | •                  | * 856, 849, 849          |
| পৃথিবাসা           | ₹84                                     | এরাগী 📍            | 10, 40, 825              |
| পু <b>ৰ্পুৰা</b>   | ٥١٤٠, ٥٢, ٤٥٦, ٤٤٥                      | প্ৰস্কু মায়       | e /+, e[/e, e]d+,        |
| পুষা-দেতায়া       | (.)                                     | th.                | , b, 2×1/8+4, e15        |
| প্রক্ষর খা         | 81-/•                                   | প্ৰাণকৃষ হালদার    |                          |
| পুরা               | . 3/•                                   | প্ৰিয়নাথ মিত্ৰ    | 698                      |
| <b>બુકો</b>        | ₹.•}                                    | প্রেডশিলা          | 21, 9.                   |

|                     |                              |                                  | 1.              |
|---------------------|------------------------------|----------------------------------|-----------------|
| নাম                 | • . 981                      | নাম                              | পৃষ্ঠা          |
|                     | ফ                            | বৰ্গসর                           | ه ۱۹۰٬ د ۱۹۰    |
|                     | •                            | বংগদৈর                           | २,              |
| <del>ক</del> তুরা ° |                              | <b>व</b> छ द <i>छ</i>            | 411             |
| ফভেপ্র ●            | ٠٠٠, ٤٠٠, ١٠/٠               | বক্ত                             | 3+¢             |
| করাসভা <b>সা</b>    | . (4)                        | यञ्जन दो                         | 0,, 033, 083    |
| ক্রিপ্রাম           | અ., કર્ડ                     | বস্ত্ৰধাতীৰরী                    | . •             |
| क्तिनावान           | عيل مل، ١٤٠٠ و١٠٠            | • বটুকনাথ                        | 10              |
| <b>ক্তৃপ</b> সিরর   |                              | व <b>ट्टॅ क</b> टेंडब्र <b>व</b> | 80)             |
| क्रबंदोर            | **                           | ৰটেন গ্ৰাম                       | 547             |
| করেদপুর             | >+                           | ব্টেশ্বর                         | <b>ા•</b> , ક•ર |
| करत्र-मदा <b>३</b>  | ٠٠, ٥٧٠)                     | বড় চরণ-পাহাড়                   | रमर             |
| क्ह                 | <b>44, 44, 08, 0.6, 06</b> 2 | বড়শী                            | ***             |
| কান্ত এয়াড়া       | २१०, ७३०, ७७२                | বড় হতুমান                       | 888             |
| ফুটাখন              | રાષ્ટ્ર/•, ૭૬૨               | বড়ু গ্ৰাম                       | >>•             |
| ফুলদোল              | 3e/•                         | বড়েৰা                           | 3/0, 340        |
| ফুলাড়ি             | 228                          | বদ্রতলা                          | 111             |
| ফোলবের              | 4.3                          | ব্দরপুর                          | ು∂.             |
|                     | -                            | হদর-প্রাচী-ভীর্থ                 | ₹\$€            |
| •                   | ব                            | ववत्रीनादाद्रव                   | ² ₹⁄•, ₹⁄/•,    |
| यः नी वर्षे         |                              |                                  | tes, ter        |
| ৰক্সার              | • 140                        | বনচারী প্রাম                     | ७८०, २३०, ५३०   |
| ৰক্ষীর পাদ          | 296                          | दम्की                            | 861             |
| 4 <b>4</b> 5        | 16/0, 363, 363               | বরকাটা                           | . સર            |
| ুব্€ুরা             | • 143                        | रकद्रभूद                         | ora             |
| ৰগড়                | 3/•                          | वश्त्रপूत्र ,                    | 949             |
| वश्रम               | e/•, era                     | ব্যশালের ঘটি                     | 416             |
| A. C.A.             |                              |                                  |                 |

#### তার্থ-ভ্রমণ

| নাম                  | <b>न्</b> वे1          | ৰাম               | <b>न्</b> हे।                     |
|----------------------|------------------------|-------------------|-----------------------------------|
| বর্মপুর              | 969, 960               | ৰহর <b>মপুর</b>   | eer                               |
| বরশোভ                | <b>ે ર ર</b>           | বাঁকিপুর          | 626                               |
| ব্রদাল               | <b>34.</b>             | বাঁকেবিহাুরী      | 30 <b>8</b> , 300                 |
| বর্হি                | ২৩                     | বাঁদরিহুদরি       | ำผ∕•, ১¢১                         |
| বরা                  | 830, 842               | বাঁশবেড়িয়া,     |                                   |
| বরাকর                | 29                     | বাউড়ি            | >/•, >٩•                          |
| বরাহক্ষেত্র          | r.•                    | বাউড়িয়া         | (11                               |
| বরাহদেব              | >69                    | বাউলদাস           | 690                               |
| ৰৱাহ <i>নপ</i> র     | <b>e</b> 9•            | বাগীৰৱী           | 889                               |
| বরুণা                | 83, 800                | বাজিয়াও          |                                   |
| বরণার ঘাট            | 84.                    | ৰাড়              | 968, eξ1, e81                     |
| ৰ <b>ৰ্গভী</b> মা    | e11                    | বাণগঙ্গা          | 310, 221, 000,                    |
| ৰৰ্জমাৰ              | 28                     |                   | 933, 963                          |
| ৰলছেৰ                | e>, >·8                | वाननग             | 3,, 340                           |
| वनरमरवद्ग अस्मित     | 10                     | বাণেশ্বর          | 4(6                               |
| বলভক্তমাট            | 18                     | বান্দা            | 822                               |
| বল <del>ভ</del> ক্তী | ١ <b>٥</b> ٠, २٠٤,-२১२ | বামদেবকুও         | 24.                               |
| ৰ <b>লিটীলা</b>      | ٧.                     | বাসনরাকা          | •                                 |
| ব <b>র্ল</b> ভগড় •  | २।७०, २३०              | ৰামনিঘাট          | * २७                              |
| বলভাচারী             | • •>                   | বামনি চটি         | • ૨૭, ૨૬૬                         |
| বলাষগড়              | •ು/•                   | বাযুৰকোঠী         | રમૃ/•, ૭૭•                        |
| বলের সরাই            | श•                     | বারু <b>ভীর্ব</b> | * 90, 21                          |
| ৰশিষ্ঠ-প্ৰাচী        | 483                    | বারা              | <b>પ</b> /•, <sup>૧</sup> ૨૭, ૧૨૦ |
| <b>ৰ</b> শেনী        | स/•                    | বারাকপুর          |                                   |
| বহুশ্ব-বাট           | , v.                   | <b>बाबाबजी</b>    | 85,                               |
| वङ्शास्त्रवी         | **                     | বাহৰধাৰা          | 611                               |
|                      |                        |                   |                                   |

| নাৰ্থ            | , পৃষ্ঠা          | নাম                     | পৃষ্ঠ।                             |
|------------------|-------------------|-------------------------|------------------------------------|
| বাস্দী           | ١٠, ১১, ۶২        | বিরাট                   | >>                                 |
| বালাজি           | 8.7               | বিলাসপুর                | 969                                |
| বালানগর          | • ""              | বিৰ ক                   | e 1>                               |
| ব লি             | 29-               | विवदक्षत्र १। •,        | <b>۵۵۰, ۲۰۴, ۵۵۹</b> , ۵۲ <b>۰</b> |
| বালিটাল।         | . 10              | বিশড়া                  | 703                                |
| বাবলাবৰ          | ગ√•ુ, ૬૨૭         | বি <b>শালক্ষীর দহ</b>   | e9+                                |
| বাহাছুরপুর 🍨     | • રા•, જાર, જ્હ   | বিশ্ৰান্তৰাট            | 44                                 |
| বাহাপুর •        | 493               | বিশ্ৰা <b>ন্তিভীৰ্ব</b> | 10                                 |
| বিওড়            | ઝકર               | বিশ্রামবাগ              | >6                                 |
| विकानीयु         | 330, 338          | বিখনাথ তাভি             | •                                  |
| বিক্রমপুর        | 8.0               | বিশ্বনাথ দে             | 886                                |
| বিক্রমসিংহ ,     | 943               | বিখনাথ বহু              | 1/•                                |
| বিগৱাই           | Ŋ+, <b>e</b> 9    | বিশ্বনাথ সিংহ           | ଡା•, ୫୪୫                           |
| বিজনীপ্রাম       | 3 kg/•            | বিশেশর                  | o/•, 88, <del>2</del> 0), 802      |
| বিজলীখর মহাকেব   | ર ૧૫√•, ૭ક•       | বিশেষর বহু              | 8 J•                               |
| বিজনৌর           | <b>૨</b> •૭       | বিষ্ণুকুপ্ত             | રાખ•, ૨૯૦, ૭૭૭,                    |
| বিজ্ঞরকাম বিশারদ | <i>)</i> •        |                         | ರ್ಲ, <b>೨</b> 8೨                   |
| বিজয়রাম হালদার  | 1 84·             | বিষ্ণুচক্র              | ्रव्र                              |
| <b>বিঠো</b> র    | 1,/-, e-, e>-, e> | বি <b>ঞ্প</b> ৰ         | ્ર<br>રક, રસ્                      |
| বিৰ্ভা •         | • • •/•, •••      | বিফুপন্থা               | २8२                                |
| বিভা <u>পু</u> র | 360               | বিক্ <b>প্র</b> য়াপ    | 281                                |
| বিন্দুপারী       | रभ∙               | বিঞ্-সম্পির             | ₹ <b>৮</b>                         |
| বিস্বাসিনী       | 9 /•, 80•         | বিহু ৰামী               | . 4.4                              |
| বিদ্যাচৰ         | 91/., 80., 80)    | বিঃার-বাট               | 38                                 |
| বিমলকুও          | 293               | বিহা <b>র•ভীর্থ</b>     | ७०२                                |
| विषमुद्द वी      | 213               | বীৰপুৰ                  | ગ∂∙, દર૭                           |
| •                |                   |                         | •                                  |

# জীৰ্থ-ভ্ৰমণ

| मध्य                           | 성취                  | নাম                 | পৃষ্ঠ1                                      |
|--------------------------------|---------------------|---------------------|---|
| বীরবল                          | 8₹€                 | বেশ্বতী             | 16  |
| বীরভক্ত                        | aa, 838             | বেরাশপুরা           | 9/-   |
| বীর্দিংহ                       | ₹€                  | বেলডাঙ্গা           | • •   |
| বুকানন হামিলটন্                | la/•                | বেলপুধুরিয়া        | ,<br>€७ <b>२</b>                            |
| বৃড়াকেশার                     | રા∕•, ર¢ઢ           | বেশবন               | · ২60                                       |
| বুড়া-পু <b>ছ</b> র            | २६०                 | বেলাচটী             | oj/•, <b>e</b> oa, <b>es</b> 2, <b>e</b> 82 |
| <b>ब्र</b> वर                  | >€                  | <b>ং</b> ৰ[লয়া     | . • • • • • • • • • • • • • • • • • • •     |
| বৃদ্ধধাট                       | 98                  | বেৰুড়              |   |
| বুন্দেলখণ্ড                    | 822                 | বেৰ্গ               | «ر <i>ه</i>                                 |
| বৃদ্ধি-তীর্থ                   | 13                  | বেশেড়া             | ٥/, २١/٠, ३٩٥, २४४                          |
| বৃ <del>ন্দ</del> া            | re, 220             | বেহারি <b>পু</b> র  |   |
| <b>इम्मा</b> यन                | 10, 3/0, 20         | বেহালা              | . સ•  |
|                                | ۵۰, ۱۱۶, ۱۹۵        | <u>ৰেছলাবন</u>      | ર ૧૨  |
| বৃন্দে-সরঙা                    | ₹8                  | বৈকুণ্ঠ-ঘাট         | ۲.  |
| বৃষভামু-কুণ্ড                  | २৮.                 | বৈৰুঠনা <b>ৰ</b> সং | र्वाधिकांद्री ८५/०, २४१                     |
| বেউর গ্রাম                     | >₩•, €७             | दिकमाथ              | રાજ્ય∙                                      |
| বেগমপুরা                       | ৩৮)                 | বৈদ্য <b>নাপ</b>    | રામ/•, ૭১৯, ૭8૭, ૭88                        |
| বেপশ্ব                         | 10                  | <b>ৰৈ</b> দ্ধবাদী   | (4)   |
| বেজগুর ২৮/•,                   | રાષ્ટ્રી•, ૭૭૦, ૦૪૭ | বোগড়া              | . 20  |
| বেজোড়ার কেলা                  | . 964               | বোটা                | • ২া • , ৬১৩                                |
| বেট্যা                         | 410, 833            | বোধগহা              | ١٠٠, ٩٤                                     |
| বেড়ৰাড়ী                      | 613                 | ব্যাদ-আশ্রম         | ડાં⊌ે∙, વર¢                                 |
| বেড়া '                        | रा√•                | ব্যাদ-কাশী          | <b>्।/ व ह</b> ुष्, इंद                     |
| বেড় হা-ৰাট                    | প•                  | ব্যাসকী-চট্টি       | • 48  |
| <b>ৰেণী</b> মা গৰতী <b>ৰ্থ</b> | • 10                | ব্যাস-গঙ্গা         | २२६   |
| <b>ং</b> ৰ্                    | 1., 84              | ব্যাদ-ঝোলা          | . ***                                       |

| -                  |              |                         |                          |
|--------------------|--------------|-------------------------|--------------------------|
| মাম                | পৃষ্ঠা       | নাম                     | পৃষ্ঠা                   |
| ব্যাসদেব           | . 266        | ভাগত                    | ৩্, ৩৪৬                  |
| गामाननी            | ૭૭૨, ૭૮૬     | ভাগীরথী                 | 3W.                      |
| (बाबोद्रदी         | ৹্, ৩ঃ৬      | ভাড়ারদহ                | 199                      |
| রজভূম ∙            | , 28, 878    | ভারা                    | <i>و</i> زو              |
| ব <b>ন্দ</b> পাত্ত | २१२          | ভারাহার                 | રષ્/•, ૭૪૭               |
| ব্ৰহ্মকু গু        | ₹₽, 830      | ভাটরা                   | 616                      |
| বন্ধন(ল            | ર৸∕∙,•૦૦૧ •  | ভাঙীবৰৰ                 | २৮७                      |
| <b>ভ্ৰ</b> শ্নপদ   | ₹₩           | ভাণড়িয়া               | oj., 8.0, 8.8            |
| <b>বৰ</b> পহা      | रक्षर        | ভাৰুক্ও                 | २ १ ८                    |
| <u>র</u> ক্ষপুঙ্গ  | 748          | ভারতী                   | २.७                      |
| বন্ধগুনি °         | ₹€           | <b>ो</b> मगढ़:          | ર√•, ૨૭७, ૨ક¢            |
| বন্ধলোক্ষাট        | 18           | ভামগৰা                  | २३, ७८                   |
| এক্ষদরোবর °        | ₹₩           | ভীমচণ্ডী                | 88>                      |
| ব্ৰহ্ম ও-ঘাট       | h/+, ++, ++e | ভो <b>ম</b> দে <b>ন</b> | २०७                      |
|                    |              | ভীমেৰবীৰ গোষ।           | 43+                      |
|                    | ਓ            | ভोग्र ‡ख                | . 421                    |
|                    | V            | ভূতেখর ৭২,১০            | e, २१), ७२৮, <b>७</b> ८) |
| ভদ্ৰকাৰী           | ••           | ভূধরের দরাই             | 1.å 8b                   |
| <b>७.इ.द</b> न     | ۵۰, ۹۶۰      | ভূরিবাবা                | 384                      |
| ভদেশর              | 693          | ভৃগকু <b>ও</b>          | >4•                      |
| ভন্ত ক             | *>           | ভেল্য                   | २७, ४)२                  |
| ভবানিই।            | ગાં/•, ૧૨8   | टेबबर-बीटी              | 889                      |
| উরত 🔹              | 805          | ভৈরবনাথ                 | . 88•                    |
| ভ্রতপুর            | ૨૧ક, ૨৯૭     | ভোৰনী                   | **                       |
| ভরে                | જં∘, 8 • ઇક  | ভোহৰ টুলা               | ७।८∙, १२८                |
| ভাগলপুর            | tt.          | ভোট                     | २५०, २८६                 |
| •                  |              |                         |                          |

|                         |                         | 1                   | • .                     |
|-------------------------|-------------------------|---------------------|-------------------------|
| নাম                     | পৃষ্                    | নাম                 | পৃষ্ঠ।                  |
| ভোরাগ্রাম               | 80.                     | মধুবৰ '।∕∙, ১৬, ২   | 15, 60, 20, 292         |
| ভোলানাথ মুথোপা          | ধ্যায় ১৮•              | মধুপণ্ডিত ঠাকুর     | 22, 3.9, 226            |
|                         | _                       | <b>মধ্প্রী</b>      | • • 12                  |
|                         | ম                       | মনসাদেবী *          | • ৩66                   |
| মইগ্ৰাম                 | 8 %                     | मम।किमो <b>२</b> ∕∙ | , १२७, २०४, २०४         |
| মওয়া                   | ७१०, ४२১                | মনোহর দাস           | 63                      |
| মকদমপুর                 | <b>्रात्र, ६०५, ६००</b> | ময়না               | •                       |
| মকর ননগর                | e e                     | ম <b>ল</b> কা       | · •.                    |
| মকরাণা                  | >>+                     | মৰৌড়ী              | १८०, ६०२, ६८०,          |
| মকিয়াপুর-মৌ            | 117                     | মন্তরাম বাবা        | ٠, ٥٤٧                  |
| মঙ্গ লাগোৱী             | 474                     | মহকাত গঞ            | . 20:/                  |
| সঞ্চঃকরনগর              | ١٤٠, ١٢٤                | মহকাদ ধ্।           | e.                      |
| মড়ওরি                  | 878                     | মহম্মদ ভোগলক        | 81/-                    |
| মণিকরণ                  | ೨३৯, ೨೨೨                | মহাকালী             | 8.05                    |
| মণিকরণ তীর্থ            | ₹W/•                    | <b>মহাকু</b> ভ      | २.৮                     |
| মণিকা <b>ণিকা</b> তীৰ্থ | 82, 80, 884, €38        | সংচীন               | २४०, ७२१                |
| মণিকৰিকেশ্বর            | 88                      | মহাদেৰকী চট্টি      | 254                     |
| <b>শ</b> ণিরামপুর       | 643                     | মহপেছা              | ₹8•                     |
| মূর্বী                  | ৩২৭                     | <b>ৰহা প্ৰ</b> সাদ  | <b>۲۱۰٫۰</b> ۹۴۵        |
| মতপ্ৰাপী                | . २৮                    | মহাবন 🗸 %           | /•, <b>[2</b> , 248 244 |
| মধুরা ৸∕∙,              | hdo, 3/0,0d0,63         | মহাবিদ্যাদেবী       | 90                      |
| মধুরাণুর                | 4+8                     | মহেন্দ্ৰনারায়ণ দেব | 8 <b>14•</b>            |
| মথুরামওল                | 65, 65                  | মহেন্দ্রনারারণ রায় | 814.                    |
| মথুরামোহন               | 8 Ma/ •                 | মংশ্রেদিংছ          | , <b>દ.</b> •           |
| ষদনংম∤হৰ ৪৷             | V·, ১·», >>8, >86       | মাকড়া পাধর         | 697                     |
| मन्त्रम्।               | 919                     | মাৰ্ক ওপৰ           | جه                      |
|                         |                         |                     |                         |

#### ৰাম-সূচী

| ৰাম                      | পৃষ্ঠা                        | নাম                    | পৃষ্ঠা               |
|--------------------------|-------------------------------|------------------------|----------------------|
| মাপধ                     | . ৮২                          | মিঠেকুও                | 493                  |
| মাঘমেলা                  | 1/•                           | মিঠেপুর                | h+, <b>e</b> 1       |
| মাটিয়ার্চর              | es.                           | মিত্রমিশ্র             |                      |
| মাঠগ্রাম •               | ১८०, ১৮১, २७१                 | মিখিল।                 | ĭJ•, €8              |
| মাতাপুর, •               | 663                           | মিরাট ১৮               | , 0,0/•, 3৮২, 8৬২    |
| মাতৃকীবাপী               | ·                             | মিৰ্ছন কালে            | 916                  |
| মাধান্ত(ক)               | • 650                         | মি জাপুর               | 648                  |
| মাথুর                    | 99                            | মীর সাহেব              | 845                  |
| মাথুঁরী ভ্রান্তণ         | ۹۹, ۶২                        | মুকুন্দ ব্ৰদ্যচারী     | 1/•, 828, 880        |
| মাধ্ৰচন্দ্ৰ বহু          | 8'4, (1)                      | মুক্ত বেণী             | 144                  |
| - মাধ্বেক্ত পুরী         | • 505, 21e                    | <b>र्</b> च            | <b>∘</b> ℓ€          |
| মান তলাব                 | ৩৩৭                           | <b>শৃংক</b> র          | 682                  |
| মাৰপুর •                 | ৩৬১                           | <b>মুড়কাটা</b>        | २७ с                 |
| মানসরোবর                 | <b>२७१</b> , <b>२১</b> ৪, ७०१ | মুভকাটা গণেশ           | ٨,                   |
| মানসিংহ ৸৵∙, ১∙          | ৮, ১১৮, ৩০৯, ৪৭৭              | <b>মূ</b> ওপৃ <b>ঠ</b> | ۲۵                   |
| মানসীপ্রগ                | २ १ 8                         | म्बोजनाथ मर्काधिक      | ারী ৩৮৮.             |
| মানিমগ্রান               | 438                           | মুকাগঞ্জ রোড           | 8 y <sub>0</sub> / • |
| মানিরা                   | 91J.                          | মুন্সীর হাট            | <b>611</b>           |
| মান্তগঞ                  | €8%                           | মুরচা                  | . an8∜t              |
| সালাধারী                 | ₹•€                           | মুরলী-মনোহর            | هزه                  |
| মাৰ্শমান্ সাহেব          | (+)                           | মুরংর নণী              | 193                  |
| মাহলঘাটা •               | ***                           | মূৰ্শিদাধাদ            | 114                  |
| *মাহিন <del>গ</del> র *ু | 81/•                          | মুশমপুর                | • •                  |
| মাহেশ                    | e1.                           | মূ <b>হ</b> রি         | ¢38                  |
| মাহেশরী দেবী             | 293                           | মূজাপুর                | 31/0, 800            |
| বিছবিপুর                 | 87•                           | (माउँ मिं म्राव        | 1/0, 21              |
| 2                        |                               |                        | 9541                 |

|                     |  |                             | তীৰ্থ-ভ্ৰমণ                    |
|---------------------|--|-----------------------------|--------------------------------|
|                     |  |                             | •                              |
| নাম                 | 커<br>카                                   | নাস                         | পৃষ্ঠা                         |
| মেট্যাপাহা          |  | যাদৰ কহ                     | 8  ₀/•                         |
| মেড়ু য়াডিহি       | ţ+, 8¢                                   | <b>যুগ</b> লঘাট             | 28                             |
| মেলচৌরী             | २।•, २०४                                 | <b>ৰোগঘটে</b>               | • • •                          |
| মৈথিলি              | <del>७</del> २                           | যো <b>গভা</b> র্থঘটি        | • 1>                           |
| মোওই                | ণ্•, ৪ <b>৪</b> ১                        | বোগপীঠ                      | 33.4, 334, 436                 |
| মোক্ষয় ট           | 98                                       | যোগ <b>না</b> য়া           | 8-02                           |
| মোকভীৰ্থ            | 16, 16, 12                               | বো <b>ণ</b> পুর             | • >>>                          |
| মোগলপুর             | ৩,৽                                      | যোষী মঠ                     | २७৯                            |
| মোর সাহের           | ₹ 8৮৯                                    |                             | •                              |
| মোহনপুরা            | W. 8., 39.                               | •                           | র                              |
| মোহনরায়            | 81,/•                                    | রুব্নাথ গো <b>ষামী</b> °    | ** **6, *1.                    |
| মোহনিয়া            | 10., 02                                  | রঘুনা <b>থ দা</b> স         | be, bb, 323                    |
| মৌ                  | w/., 30b                                 | রঘুনাথ কর                   | . 81/-                         |
| মোগকা               | २०৮                                      | রঘুনাপ ভট                   | >5>                            |
| মৌনীবাবা            | 249                                      | রঘুবংশীক্ষতির               | 844, 897                       |
|                     |  | রকেশর                       | 12, 15                         |
|                     | য  | রড়া                        | *                              |
| <b>বভিপু</b> রাগ্রা | <b>4</b> 296                             | রণজিৎসিংহ                   | <i>્, ১৯૭</i> , ૨૨১,           |
| বছুনাথ সৰ্ব         | र्वावकात्री ४५%, १८०, ११०                |                             | ७ <b>)२, ७</b> 8৯ <b>,</b> 8७⊬ |
| বমুনা               | ৩) -, ৩৭, ২৩১, ২৮৩, ৪০৯                  | রড়েশর রহ                   | 814., 814., 814.               |
| <b>ৰম্</b> নাশ্ৰৰ   | ٠ل:١                                     | त्राष्ट्रचाद्र गर्स्साधिकार | al 84.                         |
| ব্যুনাকুও           | २७२                                      | রমাঞ্চদাদ রার               | • 0.                           |
| <b>য</b> মুনোভগী    | ડાપ√•, <b>૨૨૧,</b> ૨૨૪                   | রলামেছর                     | <b>●</b> 8 <b>%</b>            |
| <b>ব</b> শোদাকুণ্ড  |  | द <b>ो</b> नि               | 0/0, 000                       |
| য <b>ে</b> ।বৈনগর   | 381                                      | র্ত্লাবাদ                   | · φ /•, 8₹≥,                   |
| वरनारत्रवर्त्र      | 16 16 16 16 16 16 16 16 16 16 16 16 16 1 | - রাই                       | ₹ √•, 966                      |
|                     |  |                             |                                |

₩8.

| •                            |                     |                       |                             |
|------------------------------|---------------------|-----------------------|-----------------------------|
| নাম                          | পৃষ্ঠা              | . নাম                 | পৃ                          |
| রাইপুরিয়া                   | . 809               | রাধাবাপ               | 34                          |
| রাওড়                        | 872                 | রাধিকা                | **                          |
| রাওল গ্রাম                   | * 546               | রাব <b>ণ</b>          | રમા/•                       |
| রাজকুমার সক্রাধিকারী         | e/+, ets            | রামকানাই বোধ          | •                           |
| রা <b>লগঞ</b>                | . २०, ६११           | রাষকুণ্ড              | ₹ <b>₽</b> , ७०₽, ७€₹       |
| রাজখাট                       | .>e                 | রামকুঞপুর             | e1., e16                    |
| রাজনারায়ণ সর্বাধিকাঠী       | 84.                 | <sup>®</sup> রামগরা   | ₹ <b>≥, •</b> ∘             |
| রাজমূহল                      | લ્લર                | রামহাট                | 13                          |
| রাজহাটি                      | 613                 | রামচরণ চক্রবর্তী      | >h•                         |
| রালপুরা ২০০, ৩০৭             | , 938, 948,         | রামচাদ গোখামী         | 41/+, 412                   |
| •                            | 874' 875            | রামধন সিংহ            | ٥, २                        |
| রা <b>জস্থা</b> ন            | 1./•                | রামনগর ২৬             | ), 899 869 82)              |
| রাজা বাই                     | 860                 | র!মনগবের বাজার        | ۹//۰                        |
| রাজার টাল                    | ŋ+, २r+, <b>e</b> ٩ | রামনারায়ণ            | 84y/•                       |
| র <b>াজার ভলাও</b>           | 8 <b>१, ७२२</b>     | রামনৃসিংছ সিংহ        | 8 N •                       |
| রাজেন্দ্রলাল মিত্র (রাজা)    | ) hd•               | রামপুর                | <b>৹।∕∙, ৪৩</b> ০           |
| রাজেশ্বরী                    | 416                 | রামপুর বোরালিয়া      | 626                         |
| त्रांशांकांख (स्व (त्रांकां) | 8H., 4/.            | রামপুরা               | 360                         |
| রাণীবাশ                      | ડાય√•, ૨૨»          | রামভ <b>র</b>         | • **                        |
| রাধাকুও                      | <b>₹</b> €1, €1¥    | রামসোহন রায়          | 8h/•                        |
| রাধানগর *                    | 493                 | রামশিকা               | ₹ <b>৮, ৩</b> ٠, <b>৩</b> ₹ |
| ৰুগোনাপ চট্টোপাগাৰ           | >∻€                 | রাম <b>গাগ</b> র      | •                           |
| রাধারমণ 🔭                    | श•                  | রাম <i>ফল</i> র মিত্র |                             |
| ন্ধীবলভন্তি -                | 300, 30B            | রাষ্চ্রি বিখাস        | 49.                         |
| রাণবিলভপুর                   | 1, 20               | রামাৎ .               | २०७, ४२७                    |
| রাধাবমুক্তী                  | 240                 | রামান <del>স</del>    | 814/+                       |
| 487                          | (¢                  | 8)                    |                             |

#### তীর্থ-ভ্রমণ

|                       |                 |                     | •  |
|-----------------------|-----------------|---------------------|--|
| <b>ল</b> [ম           | <b>शृ</b> ष्ठे। | নাম                 | পৃष्ठे।                                  |
| র <b>ামেবর</b>        | 84.             | লক্ষণকৃত্           | <b>૭</b> ૯૨                              |
| রারদাহেব              | 666             | লক্ষণের তপোবন       | 34e/• 1                                  |
| রাসম্পির নবরত্ব-শিব   | লয় ৫৭٠         | লক্ষে               | 1√•, e₹, 86°à, 8à•                       |
| রিবিলগঞ্জ             | ા√•, €ર8        | লক্ষীকৃণ্ড          | • २৯৮, ৫১৫                               |
| রিমা                  | 833             | লন্দ্রীপুর          |  |
| রিমা∈য়ালা            | 9.              | লছমন্-ঝোলা          | ડ₩•, ≈રર                                 |
| <b>রি</b> শড়া        | <b>€</b> 9••    | লছমী চাঁদ           | • 62, 52                                 |
| <b>কু কৰপু</b> র      | 667             | লভেটাগ্রাম *        | ۵۱۰ <u>.</u> 814                         |
| क्रुंंक्              | ١٩٠, ١٩٤, ١٨٩   | লমুড়ু              | રાજ-                                     |
| <del>ক</del> ুদ্রকৃপ  | 9.7             | ললিভাকু <b>ও</b>    | 678                                      |
| রন্ত্রনারায়ণ         | <b>२७</b> )     | লক্ষর               | 38৮, ৩৬૩                                 |
| রু <u>ত্র</u> পঞ্     | २৮              | লন্ধরের স্বাই       | *1•                                      |
| কু <b>ন্ত্ৰপ</b> স্থা | 282             | লছনা সিংহ           | 8 2 8                                    |
| क्रम भाग              | shd., 20.       | লহরসিংগ             | •⊌•                                      |
| রপগোস্বামী ৮৬, ৮৭     | , ১•७, ১२১, ১२२ | লাঙ্গির বাজার       | <b>e</b> ¶9                              |
| রূপস                  | €89             | লাটভৈরব             | 886                                      |
| রূপ সরোবর             | २१৮             | লাঠাবন              | 299                                      |
| <b>েওরাড়েশ্বর</b>    | रा,, २५०, ७२२   | লাল খাঁ             | o.J., (0)                                |
| কেঁওয়াড়েশরেঁর কুণ্ড | <b>०</b> २२     | লালাবাৰু            | • २१७                                    |
| <b>ৰেভক্</b> ণ        |                 | नानादुभ्यूद दृश्च । | • • 51¢                                  |
| রেহানা                | ૭৬૨             | <b>বৃক্ৰুক্ড</b>    | • २१३                                    |
| বোপড়                 | રમ./•, ૭৪১, ૭৬১ | <b>লু</b> থিয়ানা   | रा, ७/०, ७०४, ७७७                        |
|                       | _               | লেক্টিয়া হৰুমাৰ    | 88>                                      |
| ਵ                     | I               |                     | 3,                                       |
| লকট্ল।                | ، ۱۷/۰, ۶۶۵     |                     | য় বেখানে লাল'বব্র<br>র প্রকৃত পাঠ কালা- |
| <b>लकन</b> भूत        | 87.             | বাবুর কুঞ্চ হইবে    |  |

#### ৰাম-সূচী

| পৃষ্ঠা                 | , নাম              | পৃষ্ঠা            |        | নাম               |
|------------------------|--------------------|-------------------|--------|-------------------|
| 84+, 862, 414          | <b>বিবপুর</b>      | . 225             | ামী    | লোকনাথ গোষাই      |
| >u•                    | শিবরতন বাবু        | ૦૨৬               |        | লোমশম্নি ু        |
| ه.٠                    | [শ্ৰুমাগ্ৰ         | e>0, e>8          |        | লোল <b>কিক্</b> ও |
| રાષ્ટ્∕∙               | শিবালয়            | 884               |        | লোগাৰ্ক ভীৰ্য     |
| 200                    | শিষকুঠী            | २।/•, २८३         | •      | লেহি গড়          |
| ્ર <b>ા/•, ર</b> હ્    | শিরসা              | ₹ 8               |        | লোহাবন            |
| ડામ્⊌•, ૨૭•            | শিরোবগড়া          | ₹৮8●              | • •    | <i>লোহাহ</i> র •  |
| W., W., 386            | <b>मिला(मर्वो</b>  |                   | •      | _                 |
| 88, 03>                | শীতলাদেবী          |                   | ¥ţ     | •                 |
| २ा,∕०, ७२२, ७€१        | শীমূল্যা           | _                 | -1     | _                 |
| 877                    | <b>હા</b> નાનો     | 40, 69            | •      | শকুয়াবা <b>ৰ</b> |
| 40                     | শ্র:সন             | 808               |        | <b>শ</b> কুরা     |
| 16                     | শৃকার-মাট          | 8.0               | •      | শৰ্মৰণ •          |
| <b>6</b> a             | শেঠ                | 882               |        | শলৈক্য            |
| •                      | শেরদাহ             | 839               |        | শ্রশা             |
| ·~/•                   | শৈৰ মোহন্ত         | W/+, 300          |        | শশাগ্ৰাম          |
| २৮२                    | শেষশারী            | (11               |        | শাক্বান           |
| W/0, 210, 200, 292     | শেক                | .√∙, २ <b>१</b> २ |        | শাক্যবৃদ্ধ        |
| 3 304                  | <b>C</b> 111       | <b>૨</b> ૧૨       |        | শাস্তিমুকুও       |
| •••                    | শোণপথ              | ٠٠٠ - ١٠٠٠        | ••,    | শান্তিপুর         |
| ગ⊌∙, દરદ, દ8ર          | শোণভন্ত            | रा⊍∙, २३७         |        | শামহাল •          |
| २ऽ१                    | শোমমতী             | . 899             |        | শিকরোল            |
| •                      | ভামকুও             | श•                |        | শিখ-ক্ঠী          |
| श•                     | ভাষপুত্র           | 469               | ,<br>ξ | ্র্রে-ড মুরদহ     |
| >€                     | ভাষৰাল ,           | eto               |        | <b>बिर्वश्र</b>   |
| 3 <b>29, 398, 89</b> • | <del>ভাষহল</del> র | 248               | •      | শিব্ঘাটু          |
|                        |                    |                   |        |                   |

|                                |                       |                            | তীৰ্থ-ভ্ৰমণ          |
|--------------------------------|-----------------------|----------------------------|----------------------|
| নাম                            | পৃষ্ঠা                | নাম _                      | • <b>•</b><br>পৃষ্ঠা |
| ভাষা <i>নন্দ গো</i> সামী       | ۰۰, ۱۶۶,<br>۱۰۶, ۱۶۶, | সঙ্গীতল*গুৱী               | 45/•                 |
| ~11111 <b>•</b> 1111 1         | 329, 324, 323         | সভলেজ                      | ৩-৯, ৩ং৭             |
| ভাষামোহন                       | 8Na/•                 | সতীকু <b>ও</b>             | • • ,,,,             |
| শ্ৰবণনাথ গোখামী                | 599                   | সভাপ <b>দ</b>              | • 44                 |
| अवगानम (मारुख                  | ۲۲۶ ، ۲۶۰ کاد         | স্নহুদ                     |                      |
| প্রাবক                         | . , ,                 | স্নাত্ন গোষামী             | rb, r9, 338          |
| শীকুফের জন্মভূমি               | 90                    | - সম্ভেকিগড                | . 009                |
| শীদাম গোপাল                    | २৮8                   | সপ্তৰ্মি-টীলা <sup>*</sup> | 92                   |
| শীধরাচার্বঃ                    |                       | সপ্তধারা                   | ٠<br>١٠, ١٥٥ ع٠٤     |
| ≛। নগর                         | ડેમ√∘, ૨૨≥            | সমরনাথ                     | 9/. 89.              |
| এীনাথ সর্কাধি <b>কা</b> লী     | 8 M •                 | -<br>সমকুট                 | રાષ્ટ્ર              |
| <u>এ</u> বুন্দাবন              | 6, 60, 50             | <b>সমেত</b> শি <b>থ</b> র  | ٠.                   |
| <u>-</u><br>শীরামপুর           | 38, 642               | সম্বল মুরাদাবার            | • २/.,२७०            |
| শীরামপুরের ঘাট                 | /•                    | <b>म</b> श्रनावाम          | **                   |
| শ্রীরাম বহু                    | 8140, 8100            | সরদর্ভি                    | هه.                  |
| শীরাম মিত্র                    | e                     | <b>দর</b> ধঙী              | 819                  |
| এরাম সর্কাধিকারী               | -810-                 | সর্গরাম                    | ৩৯                   |
| <b>শাসকু</b> ও                 | <b>{k</b> }           | সরযু                       | 12                   |
| শুশীনৈখর '                     | 888                   | সরাবগি                     | 1/•••                |
|                                |                       | দৰ্কাণিকু 🖺                | · • 81•              |
| 7                              | I                     | <b>সর</b> যু <b>তী</b> র্থ |                      |
| সংসারচন্দ্র                    | ৩/০, ৩২১, ৩৫১         | <b>সরস্বতী-সক্ষ</b>        | ٠.                   |
| সঙ্ভা •                        | 91.                   | সবেশা                      | ં રા•, હં•           |
| সঙ্কেত- <b>৭ট</b>              | <b>₹F</b> 3           | <b>স্বজিম্ভী</b>           | . 000/               |
| স <b>ল্</b> মতী <b>ৰ্থ-ৰাট</b> | 18                    | সমা                        | 3/0, 590             |
| সক্ষেশ্বর                      | 801                   | সহ <b>রপানা</b>            | . 99                 |
| ₩83                            |                       |                            | •                    |

| -                        | بد.         | -10                     | পৃষ্ঠা                         |
|--------------------------|-------------|-------------------------|--------------------------------|
| নাম                      | পৃষ্ঠা      | ় ৰাম                   | 81/- 814-                      |
| দহরধারা                  | •           | কুরেশ্বর বহ             | 31., 330, 260, 293,            |
| সাওয়া গ্রাম             | 542         | সূৰ্যকুণ্ড              | 247, 243, 246, 012             |
| সা <b>ক</b> ড়িপীলি      | • (()       |                         |                                |
| সা <b>তু</b> ই • ৩/৬     | , 03+, 442  |                         | গ্ৰিষিকারী ৩:√•,€/•,€1•<br>€৪৮ |
| সাতুৰাব্ <i>ৰ</i> ৰাজার° | . 165       | স্থ্যগাড়া              |                                |
| <b>স</b> াবিত্রী         | 369, 369    | সুধ্যৰাট                | 98, 93, 33                     |
| সাবিত্রীপাহাড়           | 261         | •প্ৰ্য্যতীৰ্থ           | 10                             |
| সারক-ভলাব<br>•           | 84.         | স্থ্যনারায়ণ            | 883                            |
| <b>শাঃসী</b>             | ٧.          | সূৰ্ব্যপদ               | 43                             |
| সার্থ-ছাপরা              | o.J. ete    | দে <del>ও</del> ড়াপুলি | 603                            |
| সারদাচরণ মিত্র           | 8 M-/•      | দেকেন্দ্ৰ বা            | দশাহ <b>দ</b> •                |
|                          | W., •»      | সেকেন্দ্রাব             | (मर्क्सी ५०,५/०,३/०,           |
| সাদেরাম                  | ١١٠٠, ٦٠٠٥  | •                       | e, ۱۹۵, ۱۹۵, ۵۵۵, ۵۸۹          |
| সাহরণপুর                 | 3100, 210   | সেকেন্দ রীবা            | গ্ ৩১                          |
| সাহাবাৰ                  | <b>393</b>  | <b>সেধ</b> দরাই         | 473                            |
| সিংহমু <b>ধ</b>          |             | সেতারা                  |                                |
| সিঙ্গারখাট               | >8          | দেনপুর '                | • • •                          |
| িসদ্ধনাথ                 | 473         | সেনহাট<br>সেনহাট        | 243                            |
| সি <b>জু দাপ</b> র       | gt•         |                         | ર. હું ૭૨૨, ૭૬૧                |
| দিপাহী-বিসোহ             | ∘ ,/•       | দেপাটু                  | 86/•                           |
| দি <b>ম্ল্য</b> া        | २🙈 ७२२      | দেবকরাম                 | _                              |
| সীভাকুণ্ড •              | ₹৯, ♦৩, €8৯ |                         | ৩;৽, ২৮২                       |
| मोडानाथ मर्खांशिकाती     | 814/·       | দৈঃস্পুর                | <i>•⊍</i> :•                   |
| युष्टब                   | e9•         | দৈয়ৰপুরে?              |                                |
| - শুনাগর                 | 693         | দোণাডাক                 | 1 463                          |
| ফুল্বকাল                 | >6:         | নো <b>ৰামু</b> ৰী       | · 1/·                          |
| কুর <b>ত</b> সিংহ        | \$>8,8>     | : সোৰতীৰ্থ              | र्गांडे १६                     |

#### তার্থ-ভ্রমণ

| নাম                 | পৃষ্ঠ৷                | নাম                 | <b>पृ</b> ष्ठे।                            |
|---------------------|-----------------------|---------------------|--|
| দোমনাথের চন্দন-গে   | हि ७३०                | হরেন্দ্রগঙ্গা       | 300  |
| সোমে <b>শ</b> রনাথ  | 83.                   | হরেন্দ্রণর্ব্ব ভ    | २५/०, ७७७                                  |
| <b>দোরাত</b> নদী    | 000,060               | হলধয় চৌঙৰার        | · «1/•                                     |
| হানেশ্বর            | 236                   | হণ্ডিনা             | • o <sub>2</sub> /•, o⊬8                   |
| হ                   |                       | হাড়ডারা            |  |
| হংসতীর্থ            | २ <b>∘</b> ⊬          | হাড়িয়া            | 86   |
| হটম্পুর             | ৩,৽, ৪১৬              | হাপর •              | • ১४०, ১৮২                                 |
| হনুমানওরারা         | ₹•€                   | •                   | /•, ৩ <sub> •</sub> , ৩২১ <sub>,</sub> ৪১۰ |
| হনুমানগঞ            | 1., 86                | হালিম গ্রাম         | o √•, €₹8 ·                                |
| হুর <b>দি</b>       | <b>ા</b> ∂• , €₹8     | <b>रिन्</b> रशद     | •••  |
| হরদেব               | 3.8                   | হিমলিকেশর           | ₹,/•, ₹8•                                  |
| <b>হ</b> রধাম       | 669                   | হার।বাগ             | • ₹₩/•, 080                                |
| হরপীড়ির ঘাট        | ١٠٥, ١٩١, ١٠٥         | হগলী                | 6.99                                       |
| হরপ্রদাদ শালী (মহ   | (মহোপাখায়)           | হমায়্ন             | •>   |
|                     | J., Oh/.              | হমায়ুৰ লা          | 8 Ma/ •                                    |
| <b>হরিদা</b> স      | 3.5                   | হল্ক।র              | 860  |
| হরিবার              | 5d•, 5N•, 5₽₽         |                     | ०/•, ७३२,७११,७७১                           |
| হুরিৰাপক্ষাুর (রাজ  | al) cer               | হৰয়গম বাড়ুৰো      | €.•  |
| হরিপুর              | 672                   | श्र्वो(कन           | , as, etc., ees                            |
| ছরিবংশ গোস্বামী     | 700                   | হেড়ৰি আম           | 80.  |
| হরিবংশ হিতগী        | 200                   | হেৰরশাট             | •    |
| হরি <b>শ্চ</b> ন্দু | 24                    | হেভল্ক সাহেব        | • •••, •••                                 |
| হরিশ্চল্রশেধর       | 1/0,30                | হেলেৰাগ্ৰাম         |  |
| হরিহর খামী          | >.>                   | <b>ং</b> ক্তিলগ্ৰাম | عالم و ماله                                |
| हरदन                | <b>६१०, ७३</b> ३, ७७२ | হোদেন সাহ           | 81.  |
|                     |                       |                     |  |

#### ভ্ৰম-সংশোধন

|            |               | •                                 |                         |
|------------|---------------|-----------------------------------|-------------------------|
| পৃষ্ঠা     | <b>পংক্তি</b> | <b>অভদ</b>                        | <b>3E</b>               |
| ₹          | २०            | আবাহিনী ·                         | व्यागहमी                |
| 42         | ь             | পৌঞ্চার                           | গোপ্রচার                |
| , or •     | રર            | চা <b>ৰন</b> ক্তাশ্ৰমাতিং         | চ্যব <b>নস্তা</b> শ্ৰমং |
| 43         | • >>          | •<br>ব্ৰন্থ                       | বক্ত                    |
| 12"        | ২৩            | ক্ৰে <b>টতী</b> ৰ্থ               | কোটিভী <b>র্ব</b>       |
| <b>V</b> 8 | ٠ ٠٠          | हाक्ष्र च                         | २৮ देवार्ठ              |
| •,         | २०∙           | _ বল •                            | বজ্ৰ                    |
| 398        | >8            | • লালা <b>বা</b> বুর কুঞ্         | কালাবাব্র কুঞ্          |
| 24×        | ٤5            | ধ্তপালা                           | ধ্তপাপা়া               |
| ₹•8        | •             | <b>ঝ</b> ডি <b>র</b>              | <b>ক্ল</b> ড়ির         |
| ٠.٠        | . • >•        | মণ্ডি সেপাটু, কুল                 | মণ্ডি, দেপাট্, কুল,     |
| २२०        | 59            | ভদাকার                            | ভদারক                   |
| २८०        | ٧             | <b>নান্ত</b> ীব                   | নাস্ত্যেব               |
| <b>226</b> | ٠.            | অপগয়া                            | আপগা                    |
| 365        | >>            | শ্বানবট                           | <b>ছাণু</b> বট          |
| 9.9        | >>            | রামপুর!                           | র <b>াজপুর</b> া        |
| 969        | 9             | বরপুর                             | বরমপুর                  |
|            | २२            | <b>क</b> हो दि                    | क् व 🥉                  |
| ৩৮২ •      | ٠             | ব্যুনা ৯ জেশি                     | যমুনা ১ ক্রোপ           |
| ৩৮৪        | , >:          | ছব্দিনা <b>৩</b> ০ ক্রোশ          | হস্তিনা ৩ ক্ৰোশ         |
| 875        | . ২৩          | কাকুই                             | মা <del>কু</del>        |
| 80.        | , 24          | বি <del>ন্</del> যুবা <b>সিনী</b> | বিক্যবাসিনী             |
| **>        | ه و           | বেলভা <b>ল</b> া                  | বলাডাঙ্গা •             |
| 145        | , 30          | গব্দটির                           | গরিটির                  |
| (1)        | ,             | রাজতমাঠ                           | মাঠ                     |